

श्रीयादवप्रकाशाचार्यविरचितः

# वैजयन्तीकोषः

सम्पादकः

पं० हरगोविन्दशास्त्री

वैजयन्तीकोषः

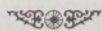
सम्पादकः

पं० हरगोविन्दशास्त्री



जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

२



श्रीयादवप्रकाशाचार्यविरचितः

# वैजयन्तीकोषः

सलिङ्गनिर्देशं शब्दानुक्रमणिकासहितः

सम्पादकः

व्याकरण-साहित्याचार्य-साहित्यरत्न

श्री पं० हरगोविन्दशास्त्री



चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी



प्रकाशक  
**चौखम्भा भारती अकादमी**

आकर ग्रन्थों के प्रकाशक एवं वितरक  
'गोकुल भवन', के. ३७/१०९, गोपाल मन्दिर लेन  
वाराणसी-२२१००१ (भारत)  
फोन : +९१ ५४२ २३३०३४५, २३३०३४९ (ऑ.)  
+९१ ५४२ २३३२६३७, २३३२७०२ (नि.)

© चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी  
पुनर्मुद्रित : सन् २००८  
मूल्य : रु. ४००.००

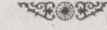
शाखा  
**चौखम्भा बुक्स**  
५ यू. ए. जवाहर नगर  
(जवाहर नगर पोस्ट ऑफिस के पीछे)  
मलकागंज, दिल्ली-११०००७  
फोन : +९१ ११ २३८५३१६६

अन्य प्राप्ति स्थान  
**चौखम्भा विश्वभारती**  
भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक व वितरक  
के. ३७/१०९, गोपाल मन्दिर लेन  
वाराणसी-२२१००१ (भारत)

मुद्रक : सुरभि प्रिंटर्स, वाराणसी

Jaikrishnadas-Krishnadas Prachyavidya Granthamala

2



# VAIJAYANTĪKOṢA

OF  
ŚRĪ YĀDAVAPRAKĀŚĀCĀRYA

Edited with Introduction and Index

by  
**Śrī Pt. Haragovind Śāstri**  
*Vyākaraṇa-Sāhityāchārya, Sāhityaratna*

**CHAUKHAMBHA BHARATI ACADEMY**

VARANASI



Publisher

**CHAUKHAMBHA BHARATI ACADEMY**

*Publishers & Distributors of Monumental Treatises of the East*

'Gokul Bhawan' K. 37/109, Gopal Mandir Lane

Varanasi-221001 (India)

Phone : +91-542-2330345, 2330349 (O)

+91-542-2332637, 2332702 (R)

© Chaukhambha Bharati Academy, Varanasi  
Reprint Year : 2008

*Also can be had from*

**CHAUKHAMBHA BOOKS**

5. U. A. Jawahar Nagar

(Behind Jawahar Nagar Post-office)

Malkaganj, Delhi-110007

Phone : +91-11-23853166

*Branch*

**CHAUKHAMBHA VISVABHARATI**

*Oriental Publishers & Distributors*

K. 37/109, Gopal Mandir Lane

Varanasi-221001 (India)

Printed at : Surbhi Printers, Varanasi

**प्रस्तावना**

लोकव्यवहृतिहेतु शारदराकेशविमलतमम् ।

सारस्वतं महोऽहं शब्दब्रह्माभिधं वन्दे ॥ १ ॥

चन्द्रांशुसितभस्माङ्ग चन्द्राङ्गिनिविलोचन ।

चन्द्रास्योमाचितार्द्धाङ्ग चन्द्रचूड नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

अपने-अपने पूर्वजन्माजित शुभाशुभ कर्मोंके अनुसार चौरासी लक्ष योनियों-में-से नानाविध योनियोंमें जन्म लेकर इस कष्टमय संसारमें विविध दुःखोंको भोगनेके लिए जीव बाध्य हुआ करता है। देव-यक्षादि कुछ योनियां उनमें सुखद भी हैं, किन्तु उनमें भी उत्पन्न जीव अपने शुभ कर्मोंसे उपलब्ध सुखोंका भोगमात्र ही करता है, पुनः पुण्यकर्माजन-द्वारा अपने सुखद भोगोंमें लेशमात्र भी वृद्धि नहीं कर सकता, क्योंकि वे सभी भोग-योनियां हैं, कर्मयोनियां नहीं। कर्म-योनि तो केवल मनुष्य-योनि ही है, इसीमें उत्पन्न प्राणी अपने-अपने कर्मजन्य सुखप्रद भोगोंको भोगता हुआ भी शुभकर्माजन-द्वारा धर्मार्थकामरूप पुरुषार्थत्रय प्राप्तकर मोक्षरूप परम पुरुषार्थ भी प्राप्त कर सकता है। इसी कारण इस मनुष्य-योनि को सर्वश्रेष्ठ योनि माना गया है। इसे प्राप्त करनेके लिए देवराज इन्द्र भी तरसते हैं और चाहते हैं कि सौभाग्यवश यदि मुझे दुर्लभ मनुष्य-योनि प्राप्त हो जाय तो मैं मोक्ष-लाभकर परमानन्दकन्द परब्रह्म परमात्मा में लीन होकर कष्टमय संसारके आवागमनसे सदा सर्वदाके लिए मुक्त हो जाऊँ।

**मनुष्य-योनि-प्राप्तिके साधन—**

परमदुर्लभ मनुष्य-योनि-प्राप्तिके मुख्यसाधन दो प्रकारके हैं—प्रथम कठोरतम तपश्चरणादि तथा द्वितीय सुखमय जीवन व्यतीत करते हुए सत्काव्य-सेवन। इनमें-से प्रथम साधन नानाविध विघ्न-बाधाओंसे भरा हुआ अतिशय कष्ट-साध्य है तथा सत्काव्य-सेवनरूप द्वितीय साधन पूर्वपेक्षया अधिक सरल एवं सुख-साध्य है। अत एव जीवमात्रको सत्काव्य-सेवन-द्वारा यश, धन तथा व्यवहार-ज्ञानकी प्राप्ति करते हुए दुःख-निवृत्ति एवं कान्तोपदेशसम्मित सद्यः परमसुख-प्राप्ति करनी चाहिए। शास्त्रकारोंने भी डिण्डिमघोषपूर्वक इसी बातका समर्थन किया है। यथा—

‘काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरत्तये ।

सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततथोपदेशयुजे ॥’



तथा—

‘धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षणं कलासु च ।  
करोति कीर्तिं प्रीतिं च लाभकाव्यनिषेवणम् ॥’

इसी सत्काव्य-सेवनद्वारा व्यास, वाल्मीकि, कालिदास, भास, भवभूति, माघ मयूर, बाण, श्रीहर्ष, धावक, दण्डी आदि महामनीषियोंने स्व-स्व-लक्ष्यानुसार अर्थ, धर्म, काम और मोक्षतक प्राप्त किया, यह सर्वविदित है। मनुष्य-योनि लाभ करनेपर भी विद्या, कवित्व और कवित्व-शक्तिका लाभ करना उत्तरोत्तर दुर्लभ है। यथा—

‘नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा ।  
कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा ॥’

( अग्निपुराण २३७।३-४ )

भगवान् पतञ्जलिने तो सम्यक् प्रकारसे ज्ञात एवं सुप्रयुक्त एक शब्दको भी इहलोक एवं परलोकमें कामदुष्ठा ही बतलाया है। यथा—

‘एकः शब्दः सम्यग्ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके च कामधुग्भवति ।’

( महाभाष्य पस्पशाह्निक )

इसी कारणसे शास्त्रकारोंने व्याकरणशास्त्रके अध्ययनपर विशेष जोर दिया है। यथा—

‘यद्यपि बहु नाधीषे पठ पुत्र व्याकरणम् ।

स्वजनः स्वजनो मा भूत् सकलं शकलं सकृच्छ्रकृत ॥’

उपयुक्त वचनसे यह सुस्पष्ट हो जाता है कि अर्धमात्रात्मक एक व्यञ्जनका व्यतिक्रम होनेसे अर्थका कितना अनर्थ हो जाता है।

### कोषकी आवश्यकता—

शब्द-शास्त्रके ज्ञानके बाद भी कवित्व-शक्ति-प्राप्त्यर्थ बहुशब्द-सञ्चय करना परमावश्यक होता है, वह सञ्चय उत्तमोत्तम कोषद्वारा ही हो सकता है, क्योंकि कोष-हीन पुरुष तथा भूपाल जिस प्रकार प्रजोत्पादन एवं प्रजा-रक्षणमें सर्वथैव असमर्थ रहते हैं, उसी प्रकार कोष-हीन विद्वान् भी उत्तम काव्यकी रचना करने या उसका यथावत् रसास्वादन करनेमें सर्वथा असमर्थ ही रहता है। यथा—

‘नरभूपौ विना कोषं प्रजोत्पादनरक्षयोः ।

नैव क्षमौ यथा, तद्वत् कविः काव्यकृतावपि ॥’

शब्द-दारिद्र्याक्रान्त कवि उपयुक्त शब्द-चयन करनेमें ही सदा व्यस्त रहनेसे उन्नतोन्नत-कल्पना-पूर्ण कविता करनेमें कदापि समर्थ नहीं होता है। अतः कोष-संचय करना सत्कविके लिए परमावश्यक है।

### वैदिक कोषकी सर्वप्रथम रचना—

सृष्टिकर्ता ब्रह्माने सर्वप्रथम अपने मानसपुत्रोंको वेदोंका अध्ययन कराया, उन्होंने उन वेदोंको सुनकर कण्ठस्थ कर लिया और पुनः उनका स्मरणकर अपने शिष्योंको अध्ययन कराया। श्रुति-गोचर ( श्रवण ) कर स्मरणद्वारा अध्ययन करानेकी यह परम्परा अनेक शताब्दियों तक चलती रही और हस्तामलकवत् त्रिकालदर्शी महर्षि लोकोपकारार्थ वेद-सम्मत अन्यान्य शास्त्रों ( ब्राह्मण, उपनिषद्, धर्मशास्त्रादि ) की रचनाकर अपने-अपने योग्यतम शिष्योंको अध्ययन कराते रहे।

आगे चलकर समय बदला और उन महर्षियोंके यम-नियम-संयमादिमें शैथिल्य होनेसे उनकी बुद्धिका भी ह्रास हो गया, श्रवणमात्रसे वेदको स्मरण रखने एवं समझनेकी क्षमताका अभाव देखकर कश्यप मुनिने वेदज्ञानार्थ निघण्टुकी रचना की, किन्तु कालचक्रके आगे बढ़ते रहनेसे अन्न-पान-संसर्गादिक बुद्धिवैश-द्यावरोधक दोषोंके कारण तपोबलका ह्रास उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। तत्फलस्वरूप वेदार्थप्रतिपादक निघण्टुका आशय समझना भी अशक्य हो गया, यह देख यास्क ( ई० पू० ७०० वर्ष ) ने निघण्टुके भाष्यरूप ‘निरुक्त’ ग्रन्थकी रचना की। वेदोंमें आनेवाले शब्दोंका निर्वचन करनेसे इसके द्वारा वेदार्थ-ज्ञान करना सरल हो गया। इसके विषय ये हैं—

‘वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ ।

धातोस्तदर्थान्तिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम् ॥’

निघण्टुके भाष्यस्वरूप इस निरुक्तमें यास्कने ‘एके, परे, अपरे, अन्ये, आचार्याः’ आदि शब्दों-द्वारा अज्ञात-नामा आचार्योंका सङ्केतकर इन बारह आचार्योंका स्पष्ट रूपसे नाम-निर्देश किया है। उनके नाम ये हैं—१ औदुम्बरायण, २ औप-मन्यव, ३ वार्षायणि, ४ गार्ग्य, ५ आग्रहायण, ६ शाकपूणि, ७ और्णनाभ, ८ तैट्टिकी, ९ गालव, १० स्थोलाष्ठीवी, ११ क्रौष्टु और १२ काथक्य। जिस प्रकार वेदाङ्ग व्याकरण, छन्द, ज्योतिष, शिक्षा और कल्प कोई एक-एक ग्रन्थ-विशेष न होकर सभी अनेकानेक ग्रन्थात्मक हैं, उसी प्रकार निघण्टु या निरुक्त भी कोई स्वतन्त्र एक-एक ग्रन्थ-विशेष नहीं; अपितु वे दोनों (निघण्टु और निरुक्त) भी अनेकानेक ग्रन्थरूपात्मक ही हैं। ५० श्रीभगवद्भक्तजीने एक लेखमें वेदोंके भाष्यकार यास्कदिके भाष्य-ग्रन्थोंमें उद्धृत लगभग १७ निघण्टुओंके अस्तित्वका उल्लेख किया है, किन्तु इस समय वे सभी अप्राप्य हैं। ( श्रीवाचस्पति गैरोलाकृत सं० साहित्यका इतिहास, पृ० १८७-१८९ )

### लौकिक कोषोंकी रचना—

संयम-नियम, आचार-विचार, अन्न-पान, रहन-सहन आदिके शास्त्र-बहिर्भूत होनेसे बल, वीर्य, मेधा, विद्या, तपश्चरणादिके और अधिक ह्रास होनेपर लौकिक



शब्दोंके अर्थ-ज्ञानको भी दुर्बोध होता हुआ देखकर आचार्योंने शास्त्र-ज्ञानार्थ 'लौकिक शब्दकोषों'की रचना की। प्राचीनाचार्योंमें अपने ग्रन्थोंमें समय, निवास तथा देशादिका परिचय देनेकी परम्परा नहीं रहनेसे किस आचार्यने कौन-सा लौकिक शब्दकोष सर्वप्रथम रचा, यह निर्णय आज तक इतिहासकार नहीं कर सके हैं। इसके कारण निम्न-लिखित हैं—

( क ) 'शब्दकल्पद्रुम'के रचयिता 'स्यार राजा राधाकान्त देव बहादुर'ने उक्त ग्रन्थके मुखबन्ध ( पृ० ४ ) में अग्निपुराणमें वर्णित अभिधानको सर्वप्रथम कोष माना है। इसका प्रकरण-क्रम इस प्रकार है—पहले स्वर्गपातालादिवर्ग, नानार्थवर्गके बाद भू-पुर-अद्रि-वनोषधि-सिंहादि-नृ ( मनुष्य )-ब्रह्म-क्षत्र-वैश्य-शूद्र-वर्गका वर्णनकर अन्तमें सामान्यलिङ्गका वर्णन है। किन्तु अमरसिंहने स्व-रचित अमरकोषमें उक्त क्रमका व्यत्यासकर अग्निपुराणोक्त 'सामान्य-नामलिङ्गों'के स्थानमें विशेष्यनिघ्नवर्ग तथा सङ्कीर्णवर्गको समाविष्टकर 'लिङ्गादिसंग्रहवर्ग'को पृथक् कर दिया है। उक्त अमरसिंहका ही अनुकरण 'जटाधर' ने अपने.....ग्रन्थ में और 'पुरुषोत्तमदेव'ने 'त्रिकाण्डशेष' में किया है।

इसके बाद उक्त राजा सा० ने निम्नलिखित कोषों एवं उनके रचयिताओंका नाम-निर्देश किया है। यथा—

ग्रन्थकार	कोष
१. अमरसिंह	: नामलिङ्गानुशासन
२. अजयपाल	: नानार्थसंग्रह
३. गदसिंह	: नानार्थध्वनिमञ्जरी
४. चक्रपाणि	: शब्दचन्द्रिका
५. जटाधराचार्य	: पर्यायनानार्थकोष
६. दण्डाधिनाथ	: नानार्थरत्नमाला
७. दुर्गादासविद्यावागीश	: धातुदीपिका
८. धनञ्जयकवि	: नाममाला
९. धनिकदासब्राह्मण	: सारसंग्रहनामक अनेकार्थसमुच्चय
१०. नरसिंह कालीपण्डित	: निघण्टुराज ( राजनिघण्टु )
११. नारायणदत्तकविराज	: राजवल्लभ
१२. पद्मानाभदत्तद्विज	: भूरिप्रयोग
१३. पुरुषोत्तमदेव	: एकाक्षरकोष
१४. ,,	: द्विरूपकोष
१५. ,,	: त्रिकाण्डशेष

ग्रन्थकार	कोष
१६. पुरुषोत्तमदेव	: हारावली
१७. भावमिश्र	: भावप्रकाश
१८. मयुरेशपण्डित	: शब्दरत्नावली
१९. महेश्वरवैद्य	: विश्वप्रकाश
२०. मेदिनीकरवैद्य	: नानार्थशब्दकोष
२१. रामेश्वरशर्मा	: शब्दमाला
२२. रत्नमालाकरवैद्य	: आयुर्वेदार्णवोत्थित पर्यायरत्नमाला
२३. वोपदेवमिश्र	: कविकल्पद्रुम
२४. श्रीनन्दनभट्टाचार्य	: वर्णाभिधान
२५. श्रीरामशर्मा	: उणादिकोष
२६. सि. कौ. संक्षिप्तसारकार :	उणादिवृत्ति
२७. " "	" "
२८. हलायुधभट्ट	: अभिधानरत्नमाला
२९. हेमचन्द्रजैन	: अभिधानचिन्तामणि

इनके अतिरिक्त (१) विश्वकोषमें—

१. भोगीन्द्र, २. कात्यायन, ३. साहसाङ्क, ४. वाचस्पति, ५. व्याडि, ६. विश्वरूप, ७. मङ्गल, ८. शुभाङ्क, ९. बोपालित और १०. भागुरिके द्वारा रचे गये—

तथा ( २ ) मेदिनीकोषमें—

१. उत्पलिनी, २. शब्दार्णव, ३. संसारावर्त, ४. नाममालाख्य, ५. वररुचि, ६. शाश्वत, ७. रत्तिदेव, ८. रत्नापरनामहर, ९. गोवर्धन, १०. रभसपाल, ११. रुद्र, १२. अमरदत्त, १३. गङ्गाधर, १४. वाभट, १५. माधव, १६. घर्म, १७. तारपाल, १८. वामन, १९. चन्द्र, २०. विक्रमादित्य और २१. गोमि'के रचित कोष तथा २२. पाणिनि-पदानुशासन कोष; इनके कोषग्रन्थोंका नामोल्लेख है।

( ख ) पुरुषोत्तमदेव-रचित 'त्रिकाण्डशेष'नामक कोषकी 'सारार्थचन्द्रिका' नामकी संस्कृत व्याख्याके कर्ता 'श्रीशीलस्कन्ध यतिवरने' प्राप्ताप्राप्त एवं ज्ञाता-ज्ञात नामवाले कोषों तथा कोष-रचयिताओंके निम्नलिखित १९२ नामोंका उल्लेख-कर 'दैवज्ञ'मुखमण्डन, सरस्वतीनिघण्टु, और सिद्धीषधनिघण्टु,—इन तीन ग्रन्थों-के लङ्काद्वीपमें सिंहलाक्षर लिपिमें मुद्रित होनेकी चर्चा की है। उनकी तत्रत्य

१. उपरिलिखित २९, १० तथा २२ नामोंके अतिरिक्त भी कतिपय नाम और ग्रन्थ अर्वाचीन हैं तथा कुछ नाम कोषभिन्न हैं।



पुस्तकालयीय ग्रन्थ-संख्या क्रमशः १४६, १८७ और १९२ है, यह भी उनका कथन है। उल्लिखित १९२ कोष एवं कोषकारोंके ये नाम हैं—

**प्राप्तकोष :**

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
१. नामलिङ्गानुशासन	: अमरसिंह
२. कल्पद्रु	: केशव
३. शब्दार्णव	: दुर्गादास
४. प्रमाणनाममाला	: धनञ्जय
५. त्रिकाण्डशेष	: पुरुषोत्तमदेव
६. हारावली	: "
७. एकाक्षरकोष	: "
८. द्विरूपकोष	: "
९. "	: भरतसेनमल्ल
१०. मातृकानिघण्टु	: महीदास
११. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	: महाक्षपणक
१२. अव्ययकोष	: महादेव
१३. विश्वप्रकाश	: महेश्वर
१४. शब्दभेदप्रकाश	: "
१५. नानार्थमञ्जरी	: भेदिनीकर
१६. वैजयन्ती	: यादव
१७. लिङ्गविशेषविधि	: वररुचि
१८. पञ्चतत्त्वप्रकाश	: वेणीदत्त
१९. नानार्थसमुच्चय	: शास्त (?)
२०. लक्ष्मीनिवास	: शिवराम
२१. गणितनाममाला	: हरिदत्त
२२. अभिधानरत्नमाला	: हलायुध
२३. शारदीयनाममाला	: हर्षकीर्ति
२४. अनेकार्थसंग्रह	: हेमचन्द्र
२५. अभिधानचिन्तामणि	: "
२६. अभिधानचिन्तामणि—	
नाममालापरिशिष्ट	: "
२७. लिङ्गानुशासन	: "

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
२८. अभिधानरत्नमालाशिलोच्छ्रः	: जिनेन्द्रमुनीश्वर
२९. मदनपालनिघण्टु	: मदनपाल
३०. मुक्तावली	: श्रीधर
३१. रत्नमाला	: दण्डाधिनाथोपनाम इरुगप्प
३२. शब्दसंग्रहनिघण्टु	: अगस्त्य
३३. नानार्थसंग्रह	: अजयपाल
३४. नामसंग्रहमाला	: अप्पयदीक्षित
३५. एकाक्षरनाममाला	: अमरसिंह
३६. प्रयुक्तपदमञ्जरी	: कालिदास
३७. शब्दार्णव	: काशीनाथ
३८. लघुनिघण्टुसार	: केशव
३९. लोकप्रकाश	: क्षेमेन्द्र
४०. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	: गर्दसिंह
४१. शब्दमाला	: गोपीनाथ
४२. नामावली	: गोवर्धन
४३. शब्दसागर	: गोविन्दशर्मा
४४. शब्दचन्द्रिका	: चक्रपाणिदत्त
४५. अभिधानतन्त्र	: जटाधराचार्य
४६. निघण्टु	: जैमिनि
४७. कोमलकोषसंग्रह	: तीर्थस्वामी
४८. गीर्वाणभाषाभूषण	: त्रिविक्रमाचार्य
४९. नानार्थरत्नमाला	: दण्डनाथ या भास्कर
५०. नाममाला	: दुर्ग
५१. वैष्णवाभिधान	: देवकीनन्दन
५२. नानार्थसमुच्चय	: धरणीश
५३. कविजीवन	: धर्मराज
५४. बालप्रबोधिका	: नत्तिकरकवि
५५. वर्णाभिधान	: नन्दनभट्टाचार्य
५६. राजनिघण्टु	: नरसिंहपण्डित
५७. राजवल्लभ	: नारायणदास
५८. रत्नकोष	: नरसिंहमुनि
५९. भूरिप्रयोग	: पद्मनाभ



ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
६०. शीघ्रबोधिनीनाममाला :	पुण्डरीकविट्ठल
६१. वर्णदेशन :	पुरुषोत्तमदेव
६२. रत्नकोष :	पृथ्वीधराचार्य
६३. शब्दचन्द्रिका :	बाणभट्ट
६४. निघण्टुकैकाध्याय :	बालिकेयमिश्र
६५. त्रिरूपकोष :	बिल्लण
६६. नामसंग्रहनिघण्टु :	भार्गवाचार्य
६७. नाममाला :	भोजराज
६८. मङ्गलकोष :	मल्ल
६९. शब्दरत्नावली :	मधुरेश
७०. पदचन्द्रिका :	मयूरभट्ट
७१. अनेकार्थतिलक :	प्रदीप
७२. शब्दरत्नाकर :	"
७३. एकाक्षरनिघण्टु :	माधव
७४. सुप्रसिद्धपदमञ्जरी :	मुरारि
७५. आयुर्वेदपर्यायरत्नमाला :	रत्नमालाकर
७६. शब्दार्थनिर्णय :	राक्षस
७७. कविदर्पणनिघण्टु :	राम
७८. उणादिकोष :	रामशर्मा
७९. शब्दमाला :	रामेश्वर
८०. रूपमञ्जरीनाममाला :	रूपचन्द्र
८१. नाममालानिघण्टु :	वरदराज
८२. ऐन्द्रनिघण्टु :	वररुचि
८३. कविमञ्जरी :	वल्लभ
८४. शब्दरत्नाकर :	वामनभट्ट
८५. कविदीपिकानिघण्टु :	विक्रमादित्य
८६. शब्दार्थचिन्तामणि :	विट्ठलाचार्य
८७. कोषकल्पतरु :	विश्वनाथ
८८. शब्दार्थकल्पतरु :	वेङ्कट
८९. शाब्दिकविद्वत्कवि- प्रमोदक :	"
९०. दशदीपनिघण्टु :	वेदान्ताचार्य

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
९१. संयमिनाममाला :	शङ्कर
९२. शिवकोष :	शिवदत्त
९३. द्विरूपकोष :	श्रीहर्ष
९४. इलेषार्थपदसंग्रह :	"
९५. एकाक्षरनिघण्टु :	सदाचार्य
९६. लिङ्गप्रकाश :	सारेश्वर
९७. भुवनप्रदीपिका :	सार्वभौममिश्र
९८. शब्दरत्नाकर :	सुन्दरगणि
९९. अनेकार्थतिलक :	सोमभव
१००. एकार्थनाममाला :	सीभरी
१०१. द्व्यक्षरनाममाला :	"

### अविदित-ग्रन्थ-नामवाले कोषकार

१०२. अमरदत्त	११७. राजमुकुट
१०३. कृत्य	११८. रुद्र
१०४. गङ्गाधर	११९. धरणीधर
१०५. चन्द्रगोमि	१२०. वाग्भट
१०६. तारपाल	१२१. सर्वधर
१०७. दामोदर	१२२. वाचस्पति
१०८. धर्मदास	१२३. राजदेव
१०९. वोपालित	१२४. वामन
११०. भागुरि <sup>१</sup>	१२५. मुकुट
१११. भोगीन्द्र	१२६. विक्रमादित्य
११२. मङ्गल <sup>२</sup>	१२७. विश्वरूप
११३. मार्तण्ड	१२८. भट्टमल्ल
११४. रन्तिदेव	१२९. व्याडि
११५. रभसपाल	१३०. विश्वलोचन <sup>३</sup>
११६. राजशेखर	१३१. शुभाङ्क

१. इनका रचित 'त्रिकाण्डकोष' है। ( द्रष्टव्य : वाचस्पति गैरोला-रचित सं० साहित्यका इतिहास, पृ० ६२० )

२. इनकी रचना 'मङ्गलकोष' है।

३. इनका रचित 'विश्वलोचनकोष' है, जो सूरतसे प्रकाशित है।



१३२. सोमनन्दी	१३५. हट्टचन्द्र
१३३. सज्जन	१३६. हर
१३४. साहसाङ्क	१३७. कात्यायन

### अविदित कर्तृनामक, विदित-ग्रन्थनामक कोष

१३८. अमरमाला <sup>१</sup>	१६२. बृहदमरकोष <sup>३</sup>
१३९. असालतिप्रकाश	१६३. महाखण्डनकोष
१४०. आनन्दकोष	१६४. पदरत्नावली
१४१. एकवर्णसंग्रह	१६५. राजकोषनिघण्टु
१४२. एकाक्षरकोष	१६६. पुद्गलकोष
१४३. उत्पलिनौ	१६७. लिङ्गप्रकाश
१४४. ऊष्मविवेक	१६८. मुनिकोष
१४५. अजय	१६९. वर्णप्रकाशकोष
१४६. अरुण	१७०. पालकोष
१४७. इन्दुकोष	१७१. वात्स्यायनकोष
१४८. कल्पतरुकोष	१७२. कोषसार
१४९. ग्रहाभिधान	१७३. शब्दतरङ्गिणी
( देवज्ञमुखमण्डन )	१७४. गङ्गाधर
१५०. जकारभेद <sup>२</sup>	१७५. शब्ददीपिका
१५१. दण्डिकोष	१७६. गोवर्द्धनकोष
१५२. सुभूतिकोष	१७७. शब्दरत्नसमुच्चय
१५३. धन्वन्तरिनिघण्टु	१७८. शब्दसारनिघण्टु
१५४. नक्षत्राभिधान	१७९. चन्द्रकोष
१५५. देशीकोष	१८०. संसारावर्त
१५६. नानार्थमञ्जरी	१८१. चरककोष
१५७. नामनिधान	१८२. सकलग्रन्थदीपिका
१५८. पद्मकोष	१८३. सकारभेद <sup>४</sup>
१५९. भुम्रकोष	१८४. सज्जीवनी
१६०. चकारभेद	१८५. सन्मुखविवृतिनिघण्टु
१६१. बीजकोष	१८६. सरसशब्दसरणि

१. कतिपय विद्वान् इसे 'अमरसिंह' रचित कोष मानते हैं।

२., ४. कतिपय विद्वान् इसे 'बाणभट्ट' की रचना मानते हैं।

३. कुछ विद्वान् इसे 'अमरसिंह' की कृति मानते हैं।

१८७. सरस्वतीनिघण्टु	१९०. सारस्वताभिधान
१८८. साध्यकोष	१९१. हनुमन्निघण्टु
१८९. रत्नकोष	१९२. सिद्धौषधनिघण्टु

( ग ) श्री वाचस्पति गैरोला जीने अपने संस्कृत साहित्यके इतिहासमें पाणिनि-द्वारा एक 'द्विरूपकोष' लिखे जानेका उल्लेख किया है ( पृ० ६३४ )। इस आधारपर यह कहा जा सकता है कि उन्हीं गैरोला जीके उक्त इतिहासमें ( पृ० ६३३ ) उद्धृत 'सत्यव्रत सामश्रमी'के मतानुसार पाणिनिका सत्ता-काल ई० पू० २४०० वर्ष मान लिया जाय तो पाणिनि-रचित उक्त 'द्विरूपकोष'-का रचना-काल आजसे लगभग साढ़े चार सहस्र वर्ष पूर्व ही होना सिद्ध होता है। इतना ही नहीं, अपि तु श्री गैरोला जीने उसी इतिहासमें 'भागुरि'की कृतियोंमें 'त्रिकाण्डकोश' होनेका उल्लेख किया है। उक्त 'भागुरि' का समय ई० पू० ३१०० वर्ष ( उक्त इति० पृ० ६२० ) होनेसे यह स्पष्ट हो जाता है कि कम-से-कम आजसे लगभग ६००० वर्ष पहले ही लौकिक-कोष-रचनाका श्रीगणेश हो चुका था।

इसके अतिरिक्त महावैयाकरण आपिशलि, शाकटायन, व्याडि, पतञ्जलिने भी कोषोंकी रचना की थी ( वही इतिहास पृ० ७७७-७७९ )।

लौकिक-कोष-रचनामें जैनाचार्योंका भी प्रमुख हाथ रहा है। इनके रचित उपलब्ध कोषोंमें 'हरिषेण'रचित 'बृहत्कथाकोष' सबसे विशाल एवं प्राचीन कोष है। इनका समय शक ८५३ ( ई० ९६९ ) है। इनका रचित उक्त कोष १२५०० श्लोकोंमें पूर्ण हुआ है। ( गैरोला, सं० सा० का इति० पृ० ७८१ )।

### आचार्य यादवप्रकाश—

इसी लौकिक-कोष-रचनाके सन्दर्भमें आचार्य 'यादवप्रकाश'ने प्रकृत 'वैजयन्तीकोष'की रचना की। आप विशिष्टाद्वैतवादी ब्राह्मण थे। ये 'तामिलनाडु' राज्यान्तर्गत 'काञ्चीपुरम्' या 'काञ्जीवरम्'के निकटवर्ती 'तिरुप्पुटकुलि' या 'गृध्रसरस' ग्रामके निवासी थे। पहले आप कट्टर अद्वैतवादी श्रीशङ्कराचार्यके मतानुयायी थे। इन्होंने 'ब्रह्मसूत्र'पर एक 'यादवभाष्य' लिखा था और उसे ये 'शङ्करभाष्य'के साथ-साथ अपने शिष्योंको पढ़ाया करते थे। कहा जाता है कि 'तिरुप्पुटकुलि'में स्थित 'विजयराघव स्वामी-मन्दिर'में दो साधुओंकी मूर्तियाँ हैं, उनमें-से एक मूर्ति एक दण्ड धारण किये हुए अद्वैतवादी आचार्य 'यादवप्रकाश'की है और दूसरी त्रिदण्ड धारण किये हुए विशिष्टाद्वैतवादी 'रामानुजाचार्य'की है। एक बार अपने शिष्य रामानुजाचार्यके साथ शास्त्रार्थ होनेपर आचार्य यादवप्रकाश विशिष्टाद्वैतवादी होकर त्रिदण्ड धारण कर लिये।



इसका प्रमाण यह दिया जाता है कि 'काञ्चीपुरम्' में स्थित 'वरदाचार्य स्वामी'-के मन्दिरकी भित्तिपर एक चित्रमें त्रिदण्ड धारण किये हुए आचार्य 'यादव-प्रकाश' अपनी शिष्य-मण्डलीके साथ चित्रित हैं। शिष्य-मण्डलीमें रामानुजाचार्यका भी चित्र है।

आचार्य यादवप्रकाशने 'पिङ्गल छन्दःसूत्र'पर भी भाष्य लिखा था। इनके रचे हुए 'यतिधर्मसमुच्चय' नामक ग्रन्थका वैष्णव-सम्प्रदाय में बहुत आदर है। आप जीवनके अन्तिम दिन तक वैष्णव संन्यासीके रूपमें 'काञ्चीपुरम्' में ही रहे।

उपर्युक्त द्विशताधिक कोषोंके अतिरिक्त भी अन्यान्य-कोषोंके प्रमापक वचनों-का उद्धरण यत्र-तत्र संस्कृत ग्रन्थोंकी व्याख्याओंमें उपलब्ध होनेसे उक्त कोषा-तिरिक्त अन्य कोषग्रन्थोंका अस्तित्व भी सिद्ध होता है। एतदतिरिक्त अर्वाचीन कतिपय विद्वानोंने और भी संस्कृत कोषोंकी रचना की है, जिनमें कुछ निम्नलिखित हैं—

१. उपनिषद्वाक्यकोष :	कर्नल जी० ए० जाकोव
२. उपनिषद्वाक्यमहाकोष :	गजाननके पुत्र शम्भु साधसे
३. कविकर्पटिका :	वादीन्द्रकवि
४. कोषकल्पतरु :	विश्वनाथ
५. कोशकौमुदी :	रामदत्तत्रिपाठीशास्त्री
६. कोषसंग्रह :	
७. कोषावतंस :	राघवकवि
८. तिङन्ताणवतरणि :	
९. धर्मकोष :	श्रीलक्ष्मणशास्त्री
१०. भोटसंस्कृताभिधान :	लोकेशचन्द्र
११. मीमांसाकोष :	केवलानन्दसरस्वती
१२. शिवकोष :	शिवदत्त
१३. आख्यानकमणिकोष :	
१४. बाङ्मयाणव :	पं० रामावतारशर्मा
१५. वाचस्पत्यम् :	तर्कवाचस्पति तारानाथभट्टाचार्य
१६. शब्दकल्पद्रुम :	राधाकान्तदेवबहादुर
१७. वास्तुरत्नकोष :	
१८. देशीनाममाला :	हेमचन्द्राचार्य

### वैजयन्ती कोषका वैशिष्ट्य—

यह कोष कुल आठ काण्डोंमें पूरा हुआ है। इसे दो भागोंमें विभक्त किया जा सकता है—एक पर्याय-भाग तथा दूसरा नानार्थ-भाग। प्रथम पर्याय-भागमें

पाँच काण्ड हैं—१ स्वर्गकाण्ड, २ अन्तरिक्षकाण्ड, ३ भूमिकाण्ड, ४ पाताल-काण्ड और ५ सामान्यकाण्ड। उनमें क्रमशः ३, ४, ९, ४ और ४ अध्याय तथा कुल २३७० श्लोक हैं। द्वितीय पर्याय-भागमें तीन काण्ड हैं—१ द्व्यक्षरकाण्ड, २ त्र्यक्षरकाण्ड और ३ सामान्यकाण्ड; इनमें क्रमशः ४, ४ और ९ अध्याय तथा कुल ८४२ श्लोक हैं। ग्रन्थकारने अन्तमें ग्रन्थप्रशस्तिके ४ श्लोक दिये हैं, इस प्रकार सम्पूर्ण ग्रन्थकी श्लोक-संख्या ३२१६ अर्थात् अमरकोषसे द्विगुणाधिक है।

महाकाव्यों एवं कोषादिकोंके संस्कृतव्याख्याकार मल्लिनाथ, नारायण, क्षीरस्वामी, भानुजिदीक्षित, सर्वदेव, महेश्वर, मुकुट आदिने 'इति यादवः, इति वैजयन्ती' लिखकर अपनी-अपनी व्याख्याओंकी पुष्टिके लिए स्थान-स्थानपर इस कोषके बहुशः उद्धरण दिये हैं। इन उद्धरणोंमें अधिकांश नानार्थ-भागोक्त अंशों-का ही प्रयोग किया गया है।

यादवप्रकाश जिसका पर्याय कहना आरम्भ करते हैं, उससे सम्बद्ध समस्त विषयोंका साङ्गोपाङ्ग वर्णन कर देते हैं। उदाहरणार्थ इसका कुछ दिग्दर्शन नीचे कराया जाता है—

(क) 'अग्निवैश्वानरः.....' ( १।२।१४ ) से आरम्भकर 'अग्नि'-के पर्यायवाचक शब्द कहनेके उपरान्त तत्सम्बद्ध 'अग्निप्रिया, स्कन्धाग्नि, काष्ठाग्नि, तुषाग्नि, करीषाग्नि, मेघाग्नि, प्रेतदाहा ( चिता )ग्नि, दैत्याग्नि, पित्र्यग्नि, यज्ञाग्नि, ऋत्वग्नि, विवाहाग्नि आदि समस्त अग्नियोंका पृथक्-पृथक् नाम-निर्देश किया गया है।

(ख) ब्राह्मणादि वर्णचतुष्टयका पर्याय वर्णन करनेके बाद 'उपवर्णास्तु सङ्कीर्णाः.....' ( ३।५।२ ) से आरम्भकर वर्णसङ्कर जातियोंकी उत्पत्ति एवं उनके नामोंका निर्देश विशद रूपसे किया गया है। तदनन्तर 'एषां लक्षणसिद्धयर्थं केषाञ्चिद् वृत्तिरुच्यते.....' ( ३।४।६४ ) से 'गरानलप्रयोगादच प्रोच्यन्ते दस्युजातयः' ( ३।५।१०८ ) तक प्रकरणागत इन वर्णसङ्कर जातियोंकी जीवि-कादिका विस्तारके साथ वर्णन किया गया है।

(ग) इसी तृतीय काण्डके षष्ठाध्यायमें कापोत, औदुम्बर, भिक्षु, व्युष्टि, सौमिक, बलिक, नोस, पुष्पाव्य, द्विकालिक, शीर्णिक, मूलिक, पातालमूलिक, अवभाव-काशिक, शिवव्रती, रुद्रव्रती, अहिब्रती आदि-आदि व्रतियों एवं तत्पृच्छ, अतिकृच्छ, चान्द्रायणादि बहुविध व्रत साङ्गोपाङ्ग वर्णित हैं। ( ३।६।१२५—१४९ )

(घ) 'शुक्ले शुभ्रशुचिश्येताः.....' क्रिमिरः सितलोहितः' ( ५।३।१०—५।३।२५ ) द्वारा श्वेतादि वर्णोंका पृथक्-पृथक् पर्याय एवं दो-दो, तीन-तीन वर्णों ( रङ्गों ) के मिश्रणसे बने हुए वर्णोंके नामोंका अत्यन्त विस्तारके साथ



वर्णनकर 'मधुरस्तु रसज्येष्ठो.....'( ५।३।२५ )से षड्रसोंका सामान्यतः पर्याय-निर्देश करनेके पश्चात् एकाधिक ( दो, तीन, चार और पांच ) रसोंके सम्मिश्रणसे निष्पन्न रसों ( स्वादों ) के नाम अलग-अलग '—त्रिषष्टिस्तु ततो रसाः' ( ५।३।४५ ) कहे गये हैं, इस प्रकार छः रसोंके मिश्रणसे बने ६३ रसोंका नाम-निर्देश करना ग्रन्थकारकी प्रतिभाका अनुपम उदाहरण है।

उपर्युक्त दिग्दर्शनमात्रसे 'स्थालीपुलाक' न्याय-द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि विषयान्तरोंके समाविष्ट होनेसे अन्यान्य कोष आकृति एवं श्लोक-सङ्ख्याकी दृष्टिसे विशाल भले ही हों, किन्तु ऐसा विशद वर्णन किसी भी कोषमें उपलब्ध नहीं है।

### आधुनिक संस्कृत-साहित्यके इतिहास-ग्रन्थोंमें कोषकी उपेक्षा ?

संस्कृत साहित्यके इतिहासोंके लेखक महानुभावोंने अपने-अपने ग्रन्थोंमें इतिहास, वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, पुराण, काव्य, नाटक, छन्द, चम्पू, आख्यायिका नीतिशास्त्र आदिके विषयमें तो स्वतन्त्र शीर्षक देकर सैकड़ों पृष्ठ लिखनेका कष्ट किया है, किन्तु इतनी बड़ी संख्यावाले ( लगभग २२५ से भी अधिक ) लौकिक संस्कृत कोषोंके विषयमें उन इतिहास-लेखक महानुभावोंकी वाच्यमिता तथा बद्धमुष्टिता देखकर महान् आश्चर्य एवं खेद होता है। कोषके विषयमें और विशद विवेचन करनेके लिए मैंने बड़े-बड़े धुरन्धर विद्वानोंके लिखे दर्जनों संस्कृत साहित्य-के इतिहास-ग्रन्थोंके पन्ने उलटे, किन्तु किसीमें भी उपर्युक्त लौकिक संस्कृत कोषोंके विषयमें प्रायः कुछ नहीं पा सका। संभवतः इसका प्रधान कारण यह है कि वैदिक एवं अन्य संस्कृत साहित्यके अनुसन्धानमें अधिकतम द्रव्य-राशि एवं समय लगाकर उक्त सं० साहित्यका उद्धार करनेका प्रशस्त श्रेय प्राप्तकर भी अमर-भाषा संस्कृतको मृत भाषा कहनेवाले संस्कृत साहित्यके कुछ अंग्रेज इतिहास-लेखकोंका अनुकरण करनेवाले हमारे भारतीय, संस्कृत साहित्यके इतिहास-लेखकोंने भी लौकिक संस्कृत कोषोंपर कुछ लिखनेकी कृपादृष्टि करना उचित या आवश्यक नहीं समझा। मैं श्रीवाचस्पति गैरोलाजीको धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने अपने 'संस्कृत साहित्यका इतिहास' ग्रन्थमें 'कोश'को स्वतन्त्र शीर्षक देकर इसके विषयमें विशदरूपसे तो नहीं, किन्तु कुछ लिखनेकी उदारता प्रदर्शित की है।

### आत्म-निवेदन—

अध्ययन-कालसे ही कोष-ग्रन्थोंकी ओर अपना प्रबल झुकाव होनेसे मैंने सर्व-प्रथम 'अमरकोष'की, राष्ट्रभाषा हिन्दीमें 'मणिप्रभा' व्याख्या, 'अमरचन्द्रिका' नामक टिप्पणीके साथ लिखी, प्रकाशन होनेपर विद्वत्समाजने उसे अपनाकर

अन्यान्य ग्रन्थ लिखनेके लिए मुझे प्रोत्साहित किया। फलस्वरूप 'हेमचन्द्राचार्य'कृत 'अभिधानचिन्तामणि'की भी राष्ट्रभाषा हिन्दीमें ही 'मणिप्रभा' व्याख्या लिखनेके बाद मैंने श्रीभानुजिदीक्षित-विरचित 'व्याख्यासुधा' (रामाश्रमी) सहित 'अमरकोष'-के सम्पादनका कार्य हाथमें लिया। उक्त व्याख्यामें उद्धृत सूत्रों एवं ग्रन्थान्तरीय प्रमापक वचनोंको उपलब्ध तत्तद्ग्रन्थोंसे मिलानकर उन सबोंका स्थल-निर्देश तथा त्रुटिपूर्ति करते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दीमें 'प्रकाश' व्याख्याके साथ उसका सम्पादन किया। इन दोनों ग्रन्थोंको भी अपनाकर गुणग्राही विद्वद्गणने मेरा द्विगुणित उत्साह बढ़ाया। ये दोनों ग्रन्थ बहुत समयसे अप्राप्य थे।

इनके अतिरिक्त, अपने गुरुजनोंके आदेश, सुहृद्द्वगंकी सद्भावना एवं सहानु-भूति पूर्ण प्रेरणासे उत्साहित होकर मैंने महाकवि कालिदास रचित 'रघुवंश' महाकाव्य, माघ-रचित 'शिशुपालवध' महाकाव्य, श्रीहर्षरचित 'नैषधचरित' महाकाव्य, मनु-प्रणीत 'मनुस्मृति' ग्रन्थोंकी गुत्थियोंको 'विमर्श'में स्पष्ट करते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही 'मणिप्रभा' व्याख्या लिखी। उपर्युक्त सभी ग्रन्थ 'चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी'के द्वारा यथासमय प्रकाशित होकर सर्वजन-सुलभ हो गये हैं और नीर-क्षीर-विवेकी हंसके समान गुणैकपक्षपातपरायण विद्वत्समाजने इन्हें अपनाकर मुझे तथा प्रकाशकको अपने-अपने कार्यमें उत्तरोत्तर आगे बढ़ते हुए संलग्न रहनेके लिए समय-समयपर प्रोत्साहित किया है।

### प्रकृत ग्रन्थका सम्पादन—

महाकाव्य आदिके संस्कृत व्याख्याकारोंके द्वारा प्रकृत 'वैजयन्तीकोष'के उद्धारण देख-देखकर इसे भी सर्व-जन-सुलभ करानेकी मेरी प्रबल आकाङ्क्षा बहुत दिनोंसे हो रही थी। इसे उपलब्ध करनेके लिये स्वयं तथा मित्रों-द्वारा बम्बई, झालरापाटन, व्यावर आदि स्वपरिचित बड़े-बड़े पुस्तकालयोंके साथ पत्राचार करनेपर भी मैं सफल नहीं हो सका। किन्तु सुलतानगंज (भागलपुर)में स्थित राजकीय संस्कृतोच्च विद्यालयसे स्थानान्तरित होकर जब मैं 'आरा'में आया, तब कुछ वर्षोंके उपरान्त वार्ता-प्रसङ्गमें इस कोषकी चर्चा आनेपर मेरे अन्यतम मित्र डॉ० नेमिचन्द्रजी शास्त्री एम० ए० (संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी), ज्योतिषाचार्य, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, "जैन महाविद्यालय, आरा"ने इस 'वैजयन्तीकोष'की अत्यन्त प्राचीन प्रति मुझे देनेकी कृपा की। जो अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण होनेके कारण प्रेसमें मुद्रणार्थ देने योग्य नहीं थी। अतः मैंने बड़ी सावधानीसे इसकी पाण्डुलिपि तैयार की है। लिङ्गनिर्देशपूर्वक इसकी शब्दसूची तैयार करनेमें मुझे अनेक कोषोंका अध्ययन करना पड़ा है। पाठकोंको इससे अधिक सोविध्य प्राप्त होगा। सर्वांगपूर्ण पाण्डुलिपि तैयार हो जानेके बाद



मैंने सहस्रों अलभ्य संस्कृत ग्रन्थ-रत्नोंके प्रकाशक 'चीखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी'के संचालक महोदयको प्रकाशनार्थ इसे दी और उन्होंने इसको प्रकाशित करनेकी सहर्ष स्वीकृति दे दी, जिसके फल-स्वरूप अत्यन्त दुर्लभ एवं महत्त्वपूर्ण इस ग्रन्थ-रत्नको सर्व-सुलभ होनेका सत्सीमाग्य प्राप्त होने जा रहा है।

मैं 'अमरकोष' तथा 'अभिधानचिन्तामणि' कोषद्वयके समान ही इसकी भी राष्ट्रभाषा हिन्दीमें विशद व्याख्या लिखना प्रारंभ कर दिया था, किन्तु सांसारिक विविध कारणोंसे मेरी इच्छा त्वरित पूरी नहीं हो सकी—प्रस्तुत संस्करणमें हिन्दी व्याख्याका समावेश नहीं हो सका। अगले संस्करणको हिन्दी व्याख्यासे समन्वित कर अपनी चिराकांक्षा पूर्ण करनेका प्रयास कहेगा।

### आभार-प्रदर्शन—

सर्वप्रथम 'डा० श्री गुस्ताव आपर्ट, पी० एच्० डी०, अध्यापक संस्कृत तथा तुलनात्मक भाषाविज्ञान, प्रेसीडेंसी महाविद्यालय, मद्रास'का बहुत आभारी हूँ, जिनके द्वारा सम्पादित ग्रन्थको आधार मानकर मैं इस ग्रन्थका सम्पादन-कार्य करनेमें समर्थ हो सका हूँ। तदनन्तर अपने स्नेही डॉ० नेमिचन्द्रजी शास्त्री, डी० लिट०, का तथा उन्हींके सनामा, 'जैन सिद्धान्त भवन, आरा'के वर्तमान पुस्तकालयाध्यक्ष श्री नेमिचन्द्र शास्त्री, एम० ए०, साहित्याचार्य'का अतिशय आभार मानता हूँ, जिनकी कृपासे इस पुस्तककी मूल प्रति उपलब्ध हुई, और ग्रन्थके प्रकाशनान्ततक मेरे पास रहकर प्रमादादि दोषवश उपस्थित सन्देहोंका निराकरण करनेमें सहायिका होती रही। 'संस्कृत साहित्य-का इतिहास' ग्रन्थके लेखक श्री वाचस्पति गैरोलाका भी मैं आभारी हूँ, जिनका ग्रन्थ इस भूमिकाके लिखनेमें सहायक हुआ है। चीखम्बा संस्कृत सीरीजके प्रमुख कार्यकर्ता एवं मेरे परम मित्र व्या० आ० प० श्रीरामचन्द्र झाजीको भूरिशः धन्यवाद देता हूँ, जिनकी देख-भाल एवं सहयोगमें यह ग्रन्थ अपेक्षाकृत शीघ्र और शुद्ध प्रकाशित हो रहा है। इस ग्रन्थके सम्पादन-कालमें अपना निरन्तर सहयोग देनेवाले स्नेहभाजन अपने आत्मज चि० श्री रामकिशोर मिश्रको बहुशः आशीर्वाद-प्रदान करता हूँ।

अन्तमें अत्यन्त दुर्लभ या अमुद्रित परमोपयोगी सहस्रशः संस्कृत ग्रन्थोंके प्रकाशक 'चीखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस' तथा 'चीखम्बा विद्याभवन, वाराणसी', के वर्तमान प्रमुख व्यवस्थापक बन्धुयुगल ( चि० श्री मोहनदास गुप्त एवं श्री विट्ठलदास गुप्त )को भी साशीर्वाद भूरिशः धन्यवाद देता हुआ मैं भगवान्से प्रार्थना करता हूँ कि उक्त दोनों बन्धु अपने परिवारके सहित

स्वस्थ, सुखी एवं उत्तरोत्तर ऐश्वर्य-सम्पन्न होकर चिरायु हों तथा अपने पूर्वजोंके समान संस्कृत साहित्यके उद्धारमें सदा संलग्न रहें। इस ग्रन्थके सम्पादन एवं प्रकाशनमें अन्यान्य जिन महानुभावोंकी कृतियों या प्रकारान्तरसे सहायता मिली है उन सबोंके प्रति आभार-प्रदर्शन करता हूँ।

इस सृष्टिमात्रमें जगन्निघन्ता परात्पर परब्रह्म परमात्माके अतिरिक्त कोई भी प्राकृत प्राणी सर्वथा निर्भ्रान्त नहीं हो सकता, अतः इस ग्रन्थके सर्वतोभावेन शुद्ध होनेका दावा करना मुझ-जैसे अल्पज्ञके लिए सर्वथा अशक्य है। इस कारण मैं गुणग्राही विद्वज्जनोंसे करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि मेरे लिखने, अत्यन्त सूक्ष्माक्षरोंके संयोजन एवं संशोधन करनेमें प्रमाद या मानव-सुलभ भ्रान्ति-वश कोई अशुद्धि रह गई हो तो वे मुझे क्षमा करते हुए सूचित करें, जिससे उसका निराकरण अग्रिम-संस्करणमें किया जा सके। क्योंकि—

‘नैवानवद्यं जगतीह किञ्चिन्न

वाऽप्यवद्यं किल वस्तुजातम् ।

ततो बुधा आददते गुणान् हि

हंसा यथा क्षीरपयोविवेकात् ॥

तथा—

‘गच्छतः स्वलनं कापि भवत्येव प्रमादतः ।

हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥’

इति शम् ॥

‘गोविन्द-कुटीर’

केसठ ( शाहाबाद )

हरिप्रबोधिनी ११

सं० २०२८ वि०

विद्वज्जनविधेयः—

मिश्रोपाह्व हरगोविन्द शास्त्री



## विषय-सूची

विषय	पृष्ठाङ्क
प्रस्तावना	७-२३
१. परिभाषा	१
( पर्याय-भाग : काण्ड १-५ )	२-१५८
( १ ) स्वर्गकाण्ड—	२-१०
१. आदिदेवाध्याय	१
२. लोकपालाध्याय	२
३. यक्षाध्याय	१०
( २ ) अन्तरिक्षकाण्ड—	११-२४
१. ज्योतिरध्याय	११
२. मेघाध्याय	१७
३. खगाध्याय	१८
४. शब्दाध्याय	२२
( ३ ) भूमिकाण्ड—	२५-१०७
१. देशाध्याय	२५
२. शैलाध्याय	२९
३. वनाध्याय	३२
४. पशुसंग्रहाध्याय	४७
५. मनुष्याध्याय	५२
६. ब्राह्मणाध्याय	६०
७. क्षत्रियाध्याय	७५
८. वैश्याध्याय	८९
९. शूद्राध्याय	९९
( ४ ) पातालकाण्ड—	१०८-१३६
१. सरीसृपाध्याय	१०८
२. जलाध्याय	११२
३. पुराध्याय	११६
४. भूताध्याय	१२७



( ५ ) सामान्यकाण्ड	...	१३७-१५८
१. गणाध्याय	...	१३७
२. धर्मकर्माध्याय	...	१४२
३. गुणाध्याय	...	१४५
४. अर्थवलिङ्गाध्याय	...	१४९
( नानार्थभाग : काण्ड ६-८ )	...	१५९-२२४
( ६ ) द्व्यक्षरकाण्ड—	...	१५९-१७२
१. पुंलिङ्गाध्याय	...	१५९
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	१६४
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	१६८
४. अर्थवलिङ्गाध्याय	...	१७१
५. नानालिङ्गाध्याय	...	१७३
( ७ ) त्र्यक्षरकाण्ड—	...	१८०-१९८
१. पुंलिङ्गाध्याय	...	१८०
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	१८६
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	१८८
४. अर्थवलिङ्गाध्याय	...	१९१
५. नानालिङ्गाध्याय	...	१९३
( ८ ) शेषकाण्ड—	...	१९९-२२४
१. पुंलिङ्गाध्याय	...	१९९
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	२०४
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	२०६
४. अभिधेयवलिङ्गाध्याय	...	२०८
( अर्थवलिङ्गाध्याय )	...	२०८
५. नानालिङ्गाध्याय	...	२१०
६. पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्याय	...	२१३
७. अनेकार्थाव्ययाध्याय	...	२१५
८. अव्ययपर्यायाध्याय	...	२१८
९. लिङ्गसंग्रहाध्याय	...	२२०
ग्रन्थोपसंहार	...	२२५
परिशिष्ट	...	२२७
शब्दानुक्रमणिका	...	१-१७०

॥ श्रीः ॥

## वैजयन्तीकोषः

### अथ परिभाषाध्यायः

ओंकारार्थाय तत्त्वाय वाच्यवाचकशक्तये ।  
 ब्रह्मसंज्ञाय पूर्वेषां गुरुणां गुरवे नमः ॥ १ ॥  
 प्रकार्याष्टविधं लिङ्गं निर्लिङ्गं वचनानि च ।  
 वैजयन्तीति विख्यातं क्रियते नामशासनम् ॥ २ ॥  
 स्त्रीपुंसपुंसकं लिङ्गं संकीर्णं तच्च पञ्चधा ।  
 नृस्त्री नृषण्डषण्डस्त्री त्रिलिङ्गं वाच्यलिङ्गकम् ॥ ३ ॥  
 समासलिङ्गाद्विधितः साहचर्यात् पृथक्कृतेः ।  
 लिङ्गं विद्यात् प्रयोगाच्च क्तिन् सर्वत्रापि च स्त्रियाम् ॥ ४ ॥  
 यत्प्रवृत्तं समासस्य लिङ्गं तत्स्यात् समासिनाम् ।  
 विशेषविधितः कापि लिङ्गं तत्राप्ययं क्रमः ॥ ५ ॥  
 स्त्रीलिङ्गे स्त्रीत्ययं शब्दः पुंलिङ्गे ना पुमानिति ।  
 षण् क्लीनपुमिति क्लीबे ये च षण्डार्थवाचिनः ॥ ६ ॥  
 त्रिधित्युक्तिर्वाच्यलिङ्गे त्रयीशब्दस्त्रिलिङ्गके ।  
 अस्त्रीत्यादि निषेधेषु नृषण्डादीतरद्वयम् ॥ ७ ॥  
 ज्ञातैर्लिङ्गैः साहचर्यात् कचित् स्याल्लिङ्गनिश्चयः ।  
 एकत्र सव पुंलिङ्गाः स्त्रियोऽन्यत्रान्यतो नपुम् ॥ ८ ॥  
 इत्येकस्यापि पर्याया लिङ्गायात्र पृथक्कृताः ।  
 प्रयोगात् प्रायशो लिङ्गमुदन्तः संशये पुमान् ॥ ९ ॥  
 सन्दिग्धद्विवचोऽन्तं स्त्री ना स्याद्बहुवचोऽन्तकम् ।  
 समासे स्युः पृथक् सर्वे शब्दा बहुवचोऽन्तके ॥ १० ॥  
 न पूर्वशब्दभागत्र पुनस्त्वन्तमथादितः ॥ १० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यां परिभाषाध्यायः ।



## १. अथ स्वर्गकाण्डः

आदिदेवाध्यायः ॥ १ ॥

स्वर्गो नाकः सुरावास ऊर्ध्वलोकः फलोदयः ।  
 सौरिको भोगभूमिः स्त्री दिवि द्यौश्च त्रिविष्टपम् ॥ १ ॥  
 अमर्त्यभवनं गौश्च त्रिदिवः स्यात्स्वरव्ययम् ।  
 देवा निलिम्पा मरुतो गीर्वाणा वायुनाः सुराः ॥ २ ॥  
 आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना विवस्वन्तो दिवौकसः ।  
 आदिदेवा दिविषदो लेखा अदितिर्नन्दनाः ॥ ३ ॥  
 सुपर्वाणः क्रतुभुजो निर्जरा अमृताशनाः ।  
 बर्हिर्मुखा विट्पतयस्त्रिदशा हव्ययोनयः ॥ ४ ॥  
 अमर्त्याश्चाथ न स्त्री स्याद्देवतं देवता स्त्रियाम् ।  
 त्रय एवादिदेवाः स्युर्ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ५ ॥  
 आजानजाः स्वतोदेवाः कर्मदेवास्तु कर्मभिः ।  
 ब्रह्मा विधाता विश्वात्मा धाता स्रष्टा प्रजापतिः ॥ ६ ॥  
 हिरण्यगर्भो द्रुहिणो विरिञ्चः कश्चतुर्मुखः ।  
 पद्मनाभः सुरज्येष्ठश्चिरजीवी सनातनः ॥ ७ ॥  
 शतानन्दः शतधृतिः स्वयंभूः सर्वतोमुखः ।  
 परमेष्ठी विश्वरेताः पुरुषो हंसवाहनः ॥ ८ ॥  
 पद्मभूः प्राणदो वेधा द्रुघणो नाभिजो विधिः ।  
 वाग्वाणी भारती भाषा गौर्गीर्वाह्मी सरस्वती ॥ ९ ॥  
 विष्णुर्नारायणो बभ्रुश्चक्रपाणिर्जनार्दनः ।  
 दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षस्त्रिकुट्टिष्ठश्चराः ॥ १० ॥  
 पीताम्बरो हृषीकेशो विष्वक्सेनश्चतुर्भुजः ।  
 श्रीवत्सः श्रीपतिः शार्ङ्गो श्रीवत्साङ्कोऽच्युतो हुणः ॥ ११ ॥  
 वासुदेवः स्वभूश्चक्री वैकुण्ठः पुरुषोत्तमः ।  
 अरिष्टनेमिरजितः श्रीधरो यज्ञपूरुषः ॥ १२ ॥  
 मुञ्जकेशी मुररिपुर्गदापाणिर्धोऽक्षजः ।  
 अनन्तशायी वृन्दाको मुकुन्दो धरणीधरः ॥ १३ ॥  
 शतानन्दः शतावर्तो युगावर्तः सुरोत्तमः ।  
 कालकुन्धो रन्तिदेवः केशवो गरुडध्वजः ॥ १४ ॥  
 पद्मनाभो विश्वरूपः कृष्णो हरिरसंपुषः ।  
 कैटभारिर्ब्रह्मनाभो गोविन्दो मधुसूदनः ॥ १५ ॥  
 आचारा वैष्णवी सूक्ष्मा लक्ष्मीः पुष्टिर्निरञ्जना ।

जीवनी मोहनी माया नवैता विष्णुशक्तयः ॥ १६ ॥  
 कौस्तुभोऽस्य मणिलक्ष्म श्रीवत्सो नन्दकस्त्वसिः ।  
 चापः शार्ङ्ग पाञ्चजन्यः शङ्खश्चक्रं सुदर्शनम् ॥ १७ ॥  
 कौमोदकी गदाऽथास्य मत्स्याद्यैः समनामकाः ।  
 अवतारा नृसिंहस्तु हिरण्यकशिपुद्विषन् ॥ १८ ॥  
 उपेन्द्र इन्द्रावरजो वामनो बलिकण्ठकः ।  
 आदित्यो द्विपदस्तार्क्ष्यस्त्रिविक्रम उरुकमः ॥ १९ ॥  
 विष्णुश्च जामदग्न्यस्तु रामो दाशरथिः पुनः ।  
 राघवो जानकीकान्तो रामो रावणसूदनः ॥ २० ॥  
 दूषणारिः खरारिश्च कुम्भकर्णारिरेव च ।  
 राक्षसघ्नः सुखकरः कौसल्यानन्दवर्धनः ॥ २१ ॥  
 पार्थिवेन्द्रो धनुष्पाणिर्बलिर्दशरथात्मजः ।  
 रामः संकर्षणः पौरो बलदेवो हलायुधः ॥ २२ ॥  
 बलभद्रः प्रलम्बारिः कालिन्दीकर्षणो हली ।  
 तालाङ्को रेवतीकान्तः सात्त्वतो मुसली बली ॥ २३ ॥  
 भद्राङ्को भद्रवदनः कामपालः सितासितः ।  
 बलो नीलाम्बरश्चाथ तस्य संवर्तकं हलम् ॥ २४ ॥  
 सौनन्दमस्य मुसलं कृष्णो दामोदरोऽद्रिधृत् ।  
 दाशार्हो नरकारातिर्वनमाली गदाग्रजः ॥ २५ ॥  
 शैनिः कंसरिपुः शौरिः सारथिस्तस्य दारुकः ।  
 वसुदेवोऽस्य जनको दुन्दुरानकदुन्दुभिः ॥ २६ ॥  
 प्रद्युम्नो मन्मथः कामो मारो मनसिजः स्मरः ।  
 कन्दर्पो दर्पकोऽनङ्गो मीनाङ्को मकरध्वजः ॥ २७ ॥  
 पुष्पधन्वा रतिपतिः शंबरारिरनन्यजः ।  
 शूर्पकारिर्मधुसखः पञ्चेष्टुर्विषमायुधः ॥ २८ ॥  
 बन्धुर्वामो जराभीरुर्हृच्छयो मधुसारथिः ।  
 ब्रह्मसूरनिरुद्धः स्याद्दृश्यकेतुरुपापतिः ॥ २९ ॥  
 अथान्ये ह्यवताराः स्युर्नरनारायणावृषी ।  
 अश्वो हयशिराः शेषः कपिलो व्यास इत्यपि ॥ ३० ॥  
 दत्तात्रेयश्च कल्की च बुद्धश्चेत्येवमादयः ।  
 कपिलस्तु महाविष्णुर्व्यासः सत्यवतीसुतः ॥ ३१ ॥  
 पाराशर्यो द्वैपायनः कृष्णद्वैपायनोऽपि च ।  
 बुद्धस्तु श्रीघनः शास्ता बोधिसत्त्वो विनायकः ॥ ३२ ॥



समन्तभद्रः सर्वज्ञो मारजिल्लोकजिज्जिनः ।  
 षडभिज्ञो दशबलो धर्मराजस्तथागतः ॥ ३३ ॥  
 मुनीन्द्रः सुगतः शाक्यो मुनिरद्वयवाद्यपि ।  
 शाक्यसिंहस्तु सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिर्गुरुः ॥ ३४ ॥  
 गौतमश्चार्कबन्धुश्च जिनस्त्वर्हस्त्रिकालदृक् ।  
 अष्टकर्मपरिभ्रष्टो वीतरागश्च केवली ॥ ३५ ॥  
 लक्ष्मीः पद्मालया शक्तिर्मा क्षीरोदमुतेन्दिरा ।  
 रमाब्धिजा भार्गवी च स्त्रीलिङ्गाश्चाभुजाह्वयाः ॥ ३६ ॥  
 गरुडः काश्यपसुतो गरुत्मानुरगाशनः ।  
 सुपर्णातनयस्तादुर्यो वैनतेयो महेन्द्रजित् ॥ ३७ ॥  
 पन्नगारिविष्णुरथः सुपर्णो विहगाधिपः ।  
 महेश्वरः पशुपतिः श्रीकण्ठः पांसुचन्दनः ॥ ३८ ॥  
 शङ्करो गिरिशो रुद्रो गिरीशः शशिभूषणः ।  
 महेश्वरश्चन्द्रमौलिः पिनाकी शशिशेखरः ॥ ३९ ॥  
 कपर्दी धूर्जटिः शर्वः कपाली नीललोहितः ।  
 ईश ईश्वर ईशानो भर्गो मृत्युञ्जयो मृडः ॥ ४० ॥  
 व्योमकेशो महादेवः प्रमथाधिपतिः शिवः ।  
 शूली दक्षाध्वरारातिः कामारिः परमेश्वरः ॥ ४१ ॥  
 कृत्तिवासा अहिर्बुध्न्यो नीलम्रीवस्त्रिलोचनः ।  
 गङ्गाधरो विरूपाक्षो वामदेवो वृषध्वजः ॥ ४२ ॥  
 भूतेशः खण्डपरशुः स्थाणुरन्धकसूदनः ।  
 भगनेत्रान्तको भीमस्त्रिपुरारिर्हंगायुधः ॥ ४३ ॥  
 कटाटङ्को जटाटीरो जटाभाटो महानटः ।  
 मिण्डीकान्तो रेरिहाणः सर्वज्ञो नन्दिवर्धनः ॥ ४४ ॥  
 स्थालो डिण्डीश उड्डीशः कण्ठेकालो महाव्रतः ।  
 कृतानुरेता जोटिङ्गः कङ्कटीक उमापतिः ॥ ४५ ॥  
 खट्वाङ्गी मन्दरमणिरुलन्दो वृषवाहनः ।  
 उमः कटप्रदिग्वासा भाण्डः षाण्डोऽकुतश्चनः ॥ ४६ ॥  
 बहुरूपोऽर्धमकुटो दशबाहुर्दशाव्ययः ।  
 ज्ञानं वैराग्यमैश्वर्यं तपः सत्यं क्षमा धृतिः ॥ ४७ ॥  
 स्रष्टृत्वमात्मसम्बन्धोऽप्यधिष्ठातृत्वमित्यपि ।  
 अव्ययानि दशैतानि शम्भोरव्ययमस्त्रियाम् ॥ ४८ ॥  
 वामा ज्येष्ठा शिवा रौद्री चित्तोन्मादकरी सुखा ।  
 काली कलेवरा भूतदमनी चेशशक्तयः ॥ ४९ ॥

कपर्दोऽस्य जटाजूटः खट्वाङ्गोऽस्य सुखङ्घ्रिणः ।  
 पिनाकोऽजगवं युग्यमजगावमजीगवम् ॥ ५० ॥  
 प्रमथाः स्युः पारिषदा नन्दी स्यान्नन्दिकेश्वरः ।  
 अथ कूर्माण्डकः केलिकिलो गणपतिप्रियः ॥ ५१ ॥  
 भृङ्गरीटः पुनर्भृङ्गी चर्मी भृङ्गिरिटिः शला ।  
 वृषाणो लूनदोर्बाणो भेलुकस्तु कृतालकः ॥ ५२ ॥  
 वीरभद्रस्तु देवाजो विघ्नेशस्तु विनायकः ।  
 लम्बोदरो हस्तिराज एकदन्तो गजाननः ॥ ५३ ॥  
 द्वैमातुरः परशुभृदाखुयानो गणाधिपः ।  
 कुमारः शरजः स्कन्दस्तारकारिरुमासुतः ॥ ५४ ॥  
 महासेनो महातेजाः शक्तिपाणिर्गुहोऽग्निभूः ।  
 वैजयन्तः सिद्धसेनः सेनानीः शिखिब्राह्मणः ॥ ५५ ॥  
 स्वामो गाङ्गेयगौरेयब्रह्मचारिमहौजसः ।  
 षाण्मातुरः कार्तिकेयो ब्रह्मगर्भः षडाननः ॥ ५६ ॥  
 सुब्रह्मण्यो नीलदंष्ट्रः क्रौञ्चारिः कुक्कुटध्वजः ।  
 अस्य शाखो विशाखश्च नैगमेषश्च पृष्ठजाः ॥ ५७ ॥  
 उमा मेनात्मजा रौद्री रुद्राणी सर्वमङ्गला ।  
 आर्याऽद्रिजा महादेवी शर्वाणी पार्वती शिवा ॥ ५८ ॥  
 भ्रामरी रेवती षष्ठी गौतमी बाभ्रवी सती ।  
 अपर्णाऽपरुजा जारी शण्डिली वारुणी हिमा ॥ ५९ ॥  
 बर्हिध्वजा शतमुखी योगिनी परमेष्ठिनी ।  
 सुनन्दा नन्दिनी नन्दा नन्दयन्ती कपालिनी ॥ ६० ॥  
 कालरात्री महारात्री रक्तदन्त्येकपाटला ।  
 एकपर्णा भद्रकाली महाकाली करालिका ॥ ६१ ॥  
 दुर्गा कात्यायनी चण्डी कैटभी सिंहवाहना ।  
 यमेन्द्रकृष्णमैनाकरामाणां भगिनी स्वसा ॥ ६२ ॥  
 विन्ध्यमन्दरकान्तारमलयेभ्यश्च वासिनी ।  
 चर्ममुण्डा तु चामुण्डा चर्चा मार्जारकर्णिका ॥ ६३ ॥  
 कर्णमोटी महाचण्डी महागन्धा कपालिनी ।  
 ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री वाराही नारसिंहद्यपि ॥ ६४ ॥  
 कौमारी वैष्णवी चेति ता एताः सप्त मातारः । ६४३

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरजितायां वैजयन्तां

स्वर्गकाण्डे आदिदेवाध्यायः ॥ १ ॥



## लोकपालाध्यायः ॥ २ ॥

इन्द्रो दुश्श्वनो वज्री वृत्रारिर्वासवो वृषा ।  
 वृद्धश्रवाः शुनासीरः सहस्राक्षो दिवस्पतिः ॥ १ ॥  
 वास्तोष्पतिर्बलरिपुः पुरुहूतः पुरन्दरः ।  
 मघवान् पूर्वदिक्पालः पृतनाषाद् सुराधिपः ॥ २ ॥  
 संक्रन्दनो हरिहयो गोत्रभृत् पाकशासनः ।  
 पुलोमशत्रुर्हरिवानूर्ध्वधन्वा शचीपतिः ॥ ३ ॥  
 कारुर्जम्भरिपुर्जिष्णुर्मरुत्वान् हरिवाहनः ।  
 स्वाराड्भुक्षाः सुत्रामा विडौजाः सितकुञ्जरः ॥ ४ ॥  
 भूरिश्रवाश्चित्ररथः सुनासीरो युधिष्ठिरः ।  
 परमन्युर्वज्रपाणिः शतमन्युर्विभीषणः ॥ ५ ॥  
 आखण्डल उग्रधन्वा मेषाण्डोऽप्सरसां पतिः ।  
 खदिरो माहिरो दाल्मिः शयीचिर्वियुनो जयः ॥ ६ ॥  
 गौरावस्कन्दिवन्दीकौ वारणो देवदुन्दुभिः ।  
 महेन्द्रो बाहुदन्तेयस्तुराषाड् वज्रदक्षिणः ॥ ७ ॥  
 वृषण्वसु धनाद्यस्य पुराजः शान्तिकर्मकृत् ।  
 सुतो जयो जयन्तश्च जयदत्तोऽप्यथो सुता ॥ ८ ॥  
 जयन्ती देवनन्दी तु द्वाःस्थः सूतस्तु मातलिः ।  
 प्रासादो वैजयन्तोऽस्य वैजयन्तो ध्वजोऽपि च ॥ ९ ॥  
 अमरावत्यस्य पुरी स्यात् सुदर्शनमित्यपि ।  
 अश्वोऽस्य वृषणश्च स्यादारामस्त्वस्य नन्दनम् ॥ १० ॥  
 क्रीडासरो नन्दिसरः क्रीडाभूस्त्वस्य नन्दिका ।  
 पुलोमजा शचीन्द्राणी पौलोमी जयवाहिनी ॥ ११ ॥  
 ऐरावतो राथन्तरिरभ्रनागोऽभ्रमुप्रियः ।  
 ऐरावणश्चतुर्दंष्ट्रः सूर्यभ्रातारिमर्दनः ॥ १२ ॥  
 अस्त्रियौ वज्रकुलिशौ भिदुरं शतधारकम् ।  
 व्याधामः पुंसि दम्भोलिः शतकोटिः पविर्भिदुः ॥ १३ ॥  
 वह्निर्वैश्वानरो घासिः कृष्णवर्मा समन्तभुक् ।  
 जातवेदा बृहद्भानुर्वीतिहोत्रस्तनूनपात् ॥ १४ ॥  
 दहनो ज्वलनः शुष्मा रोहिताश्च उषर्बुधः ।  
 शोचिष्केशस्त्रिधामाऽभिरुदधिः पावकोऽनलः ॥ १५ ॥  
 हिरण्यरेताः सप्तार्चिर्वसुरेता हुताशनः ।  
 कृपीटयोनिरर्चिष्मान् धूमकेतुर्दुरासदः ॥ १६ ॥

मन्त्रजिह्वः सप्तजिह्वः सुगिज्जो हव्यवाहनः ।  
 आश्रयाशो वातसखः कृशानुर्वीतसारथिः ॥ १७ ॥  
 वभिर्भुजिः पचिः साचिश्चिरिर्वैश्वतिरश्चतिः ।  
 जागृविः सहुरिः सद्विर्दमुना हवनो हवः ॥ १८ ॥  
 सृदाकुर्भरथः पीथो जुहुराण्येषिराशिराः ।  
 तेजोऽपिस्तमपांपित्तं स्वाहाऽग्नायी च तत्प्रिया ॥ १९ ॥  
 स्कन्धाग्निः स्थूलकाष्ठाग्निर्मुर्मुस्तु तुषानलः ।  
 छागणस्तु करीषाग्निर्मेघवह्निरिर्मदः ॥ २० ॥  
 कुक्ष्यग्निर्हृच्छ्रयोऽथौर्वे द्वौ संवर्तकवाडवौ ।  
 सहरक्षा दवो दुधस्ताणैश्च क्षामतरत्समौ ॥ २१ ॥  
 क्रव्यात्तु प्रेतदाह्माग्निर्देवाग्निर्हव्यवाहनः ।  
 सहरक्षास्तु दैत्यानां पितृणां क्रव्यवाहनः ॥ २२ ॥  
 अपोनपात्तु यज्ञाग्निः क्रत्वग्निः स्यादपान्नपात् ।  
 शुक्रान्वाहार्यपचनावध्वरे दक्षिणानिले ॥ २३ ॥  
 गार्हपत्यो गृहपतिः पवमानश्च पश्चिमे ।  
 शंस्य आहवनीयश्च पूर्वोऽभिर्हव्यवाहनः ॥ २४ ॥  
 सभ्यावसथ्यौ तत्पूर्वावायुः स्यात् पाशुबन्धिकः ।  
 पृथिकृद्धर्महोमेषु पदहोमेष्वाग्नीकवान् ॥ २५ ॥  
 आधानादिष्वहस्तानः सुरभिर्यूपकर्मणि ।  
 ब्रह्मौदनाग्निर्भरतो यविष्ठः सवनाहुतौ ॥ २६ ॥  
 महिमास्तु विवाहप्रिवैश्वदेवाभिरहुतः ।  
 व्रतान्ते बहुरभ्रादः सुलभः पाकयज्ञिकः ॥ २७ ॥  
 सव्यस्तु मृतके वह्निरपसव्यस्तु सूतके ।  
 धूमस्तरिर्मेघवाही धूपोऽसौ गन्धवासितः ॥ २८ ॥  
 शिखा जिह्वार्चिरपुमान् कीला ज्वाला च नृक्षियोः ।  
 भलका तु महाज्वाला प्रवर्यो नीलकोऽपि च ॥ २९ ॥  
 सप्त जिह्वा पुनः काली कराली विष्फुलिङ्गिनी ।  
 धूमवर्णा विश्वरुचिलोहिता च मनोजवा ॥ ३० ॥  
 त्रयी स्फुलिङ्गोऽपुष्पो ना खट्वाङ्गश्चाथ संस्वरः ।  
 सन्तापः स्यात्प्रकाशस्तु द्योत आलोक आतपः ॥ ३१ ॥  
 दीप्ताग्रं काष्ठमुल्का स्यात् क्रमकोऽलातमुल्मुकम् ।  
 अङ्गारोऽस्त्रा प्रशान्तार्चिरिङ्गालः कारिकाभिविद् ॥ ३२ ॥  
 भसितं भस्म भूतिः स्यादग्न्युत्पात उपाहितः ।



यमः पितृपतिर्दण्डधरो महिषवाहनः ॥ ३३ ॥  
 यमराड् यमुनाभ्राता मन्दे वैवस्वतोऽन्तकः ।  
 सावित्रेयः श्राद्धदेवः समवर्ती परेतराट् ॥ ३४ ॥  
 कालः कृतान्तः शमनः कीनाशो दक्षिणाधिपः ।  
 धर्मराजः पुराणान्तः कालकुन्थो विशीर्णपात् ॥ ३५ ॥  
 पत्नी यमस्य धूमोर्णा चित्रगुप्तस्तु लेखकः ।  
 पञ्जिका त्वग्रसन्धानी कालीची तु विचारभूः ॥ ३६ ॥  
 नरको नारकोऽप्येष निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् ।  
 अवीच्यन्ता रौरवाद्याः प्रायशो नरका नरि ॥ ३७ ॥  
 नारका जन्तवः प्रेता यात्या अप्यातिवाहिकाः ।  
 प्रेताः परेता वेताला गन्धर्वाः सत्त्वका ग्रहाः ॥ ३८ ॥  
 यातना कारणा दुःखं त्वामनस्यं प्रसूतिजम् ।  
 स्यात् कष्टं कृच्छ्रमाभीलं त्रिष्वेषां तद्वदर्थकाः ॥ ३९ ॥  
 अथ रक्षांसि यातूनि राक्षसा अललोहिताः ।  
 रात्रिञ्चरा रात्रिचराः क्रव्यात्क्रव्यादनैर्ऋताः ॥ ४० ॥  
 कैकसेया यातुधानाः पुरुषादाः प्रवाहिकाः ।  
 अनुषा विधुरा रक्तग्रहाः शङ्खव आशराः ॥ ४१ ॥  
 अलक्ष्मीर्निर्ऋतिर्ज्येष्ठा रावणस्तु हरान्तः ।  
 दशास्यो विंशतिभुजश्चतुष्पान्मानमन्दिरः ॥ ४२ ॥  
 लङ्केश्वरो यातुपतिः सन्नाहोऽस्य विचोलकः ।  
 चन्द्रहासस्तु खड्गोऽस्य क्रीडाभूस्त्वमरावली ॥ ४३ ॥  
 अशोकवनिकोद्यानं त्रिशिराः समनीपदः ।  
 इन्द्रजिन्मेघनादः स्यात् ग्रहस्तः स्यादलम्बुसः ॥ ४४ ॥  
 वरुणः शीतलो वामो दुन्दुभिः संवृतोऽप्पतिः ।  
 अम्बुवासोऽम्बुकान्तारः पाशी मकरवाहनः ॥ ४५ ॥  
 प्रचेता यादसान्नाथः प्रत्यगाशापतिस्तथा ।  
 जलभूषण उद्दामो गौरी तु वरुणप्रिया ॥ ४६ ॥  
 वातो वायुर्जगत्प्राणः शुषिलः श्वसनोऽनिलः ।  
 गन्धवाहो गन्धवहो मातरिश्वा समीरणः ॥ ४७ ॥  
 युजिनो लघुगो वातिर्ध्वजप्रहरणो जगत् ।  
 दैत्यदेवो बहः प्राणो नभः प्राणोऽङ्कतिः सरः ॥ ४८ ॥  
 आशुगः पवनः स्पर्शः पवमानः प्रभञ्जनः ।  
 मरुद्गुलिध्वजो मर्कः समीरोऽग्निसखश्चलः ॥ ४९ ॥

शुष्मिर्महाबलो वेगी नभोजातः सदागतिः ।  
 नभस्वान् मारुतः शीघ्रः पृषदश्वः प्रकम्पनः ॥ ५० ॥  
 सङ्क्रावातः सवृष्टिः स्याद्वात्या वातस्तु मण्डली ।  
 मृदुवातश्चिञ्चलिको लेढा लिट् सौरतोऽपि च ॥ ५१ ॥  
 मध्यमो हारितो नेरी यौनिकः स्वेदचूषकः ।  
 खरः स्वरिङ्गणोऽथासौ ग्रीष्मोऽभ्रभानिलोऽनिलः ॥ ५२ ॥  
 पयोदान्तस्तु पवनो वसन्तेऽमलपालिकः ।  
 गरवायुर्निदाघेऽल्पः शिशिरे सपुटानिलः ॥ ५३ ॥  
 जारवायुस्तु हेमन्ते शारदः शारणः शरः ।  
 गोगन्धनः पुरोवात उत्तरस्तु हिमानिलः ॥ ५४ ॥  
 रंहस्तरः क्ली प्रसभो जवो वेगः स्यदो रयः ।  
 कुबेरो यक्षराड् यक्षः कुतनुः किन्नरेश्वरः ॥ ५५ ॥  
 मनुष्यधर्मैलविलः पौलस्त्यो धनदो धनी ।  
 कैलासनाथस्त्रिशिरा धनाध्यक्षो वटाश्रयः ॥ ५६ ॥  
 निधिपालो वैश्रवणो वित्तेशो नरवाहनः ।  
 राजराजः पराविद्धः किशाली गुह्यकेश्वरः ॥ ५७ ॥  
 एकपिङ्गो रुद्रसखः कुडः पुण्यजनेश्वरः ।  
 इच्छावसू रत्नगर्भो रत्नहस्तः सितोदरः ॥ ५८ ॥  
 अस्योद्यानं चैत्ररथं पुत्रस्तु नलकूबरः ।  
 पुरी कैलाससारास्य विमानं पुष्पकोऽस्त्रियाम् ॥ ५९ ॥  
 निधानं गूढकोशो ना निधिः शेवधिरस्त्रियाम् ।  
 भेदाः पद्मो महापद्मः शङ्खो मकरकच्छपौ ॥ ६० ॥  
 मुकुन्दकुन्दनीलाश्च चर्चश्चेति निधेर्नव ।

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 स्वर्गकाण्डे लोकपालाध्यायः ॥ २ ॥



## यक्षाद्यध्यायः ॥ ३ ॥

स्पर्शानन्दास्त्वप्सरसः सुमदाश्च रतेमदाः ।  
 स्वर्वेश्याश्चाथ स्वापेयो यक्षोऽथ सुरगायनः ॥ १ ॥  
 गन्धर्वो गातुगान्धर्वौ सिद्धाः स्युः सनकादयः ।  
 भूतापुत्रास्तु भूतानि भूताश्च शिवपार्श्वगाः ॥ २ ॥  
 किन्नराः स्युः किम्पुरुषा मयवोऽश्वमुखाश्च ते ।  
 गुह्यका माणिचरयस्तथा देवजनाः सुताः ॥ ३ ॥  
 विद्याधरास्तु शुचराः खेचराः सत्ययौवनाः ।  
 पिशाचः स्यात्कापिशोयोऽनृजुर्दर्वश्च पिण्डकः ॥ ४ ॥  
 देवयोनय एते स्युः स्वर्वेश्याद्याः सरक्षसः ।  
 नासत्यदस्रौ नासत्यावश्विनौ वरवाहनौ ॥ ५ ॥  
 आश्विनेयौ यज्ञवह्नौ देववैद्यौ वरान्तकौ ।  
 नासिक्यावाश्विनौ दस्रौ विश्वकर्मा शुबर्धकिः ॥ ६ ॥  
 त्वष्टा नाम स देवानां मयो नाम सुरद्विषाम् ।  
 सनत्कुमारो वैधात्रो नारदः कलहप्रियः ॥ ७ ॥  
 रुद्रा वसव आदित्या विश्वे साध्या मरुद्गणाः ।  
 तुषिता भास्वराद्याश्च बहवो देवतागणाः ॥ ८ ॥  
 मन्वन्तरेषु भिद्यन्ते देवाः सप्तर्षिभिः सह ।  
 असुरा दानवा दैत्या दैतेया देवशत्रवः ॥ ९ ॥  
 पूर्वदेवाः शुक्रशिष्याः रसागेहा हरिद्विषः ।  
 ईदृज्वेत्यादिभिर्मन्त्रैः सदा प्रोक्ता मरुद्गणाः ॥ १० ॥  
 स्वानभ्राडिति गन्धर्वगणा एकादशोदिताः ।  
 सुधर्मा स्याद्देवसभा दिव्य उच्चैःश्रवा हयः ॥ ११ ॥  
 मेरुः सुमेरुः स्वर्णाद्रिर्मणिसानुः सुरालयः ।  
 महामेरुर्देवगिरिर्गोधुक् चाथापरेऽद्वयः ॥ १२ ॥  
 तालाङ्का मेरुगण्डाश्च ये मेरुं परितः स्थिताः ।  
 मन्दाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्नदी सुरदीर्घिका ॥ १३ ॥  
 पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः ।  
 सन्तानः कल्पवृक्षश्च हरिचन्दनमस्त्रियाम् ॥ १४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

स्वर्गकाण्डे यक्षाद्यध्यायः ॥ ३ ॥

प्रथमः स्वर्गकाण्डः समाप्तः ॥ १ ॥

## २. अथान्तरिक्षकाण्डः

### ज्योतिरध्यायः ॥ १ ॥

अन्तरिक्षं नभो व्योम गगनं सुरवर्त्म खम् ।  
 वियद्विष्णुपदं दिव्यं वायुवर्त्म विहायसम् ॥ १ ॥  
 तारावर्तमम्बरं मेघवर्त्म चाकाशमस्त्रियाम् ।  
 दिग्दिशाशा ककुब्दीर्णा हरिदेववधूः सरिः ॥ २ ॥  
 अव्ययीभावोऽपदिशमवान्तरदिशा विदिक् ।  
 क्रमात् पूर्वादिदिक्नाथा इन्द्राद्याः शङ्कराष्टमाः ॥ ३ ॥  
 लोकपालास्ततो प्राह्णा दिक् चैन्द्रीत्यादयो भिदाः ।  
 आनेयी तु चराशा स्यान्नैर्भृती तु दिगन्धकी ॥ ४ ॥  
 मारुत्यनन्ता शार्वी तु शालाक्षायपराजिता ।  
 कौबेर्यादिषु तूदीची प्राच्यवाची प्रतीच्यपि ॥ ५ ॥  
 ब्राह्मी तूर्ध्वोऽथ नागी स्यान्नारकी चाधरा ककुप् ।  
 दिक्मण्डलं चक्रवालं दिगन्तः करिशोलुकम् ॥ ६ ॥  
 दिक्मध्ये करिणीचारं दिग्युग्मे मण्डपीठिका ।  
 अभ्यन्तरं त्वन्तरालमवकाशोऽन्तरं पदम् ॥ ७ ॥  
 ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ।  
 पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ॥ ८ ॥  
 करिण्योऽश्विनः कपिला पिङ्गलाऽनुपमा क्रमात् ।  
 ताम्रपर्णी शुभदती चाङ्गना चाञ्जनावती ॥ ९ ॥  
 अर्कः सूर्योऽर्थमा सूर्यो द्वादशात्मा दिवाकरः ।  
 मार्तण्डः सविता भानुर्भातुः पूषा दिनप्रणीः ॥ १० ॥  
 सप्तसप्तिः पद्मबन्धुस्तपनोऽनूरुसारथिः ।  
 शुभणिर्हरिदश्वोऽद्विरशीतांशुर्विकर्तनः ॥ ११ ॥  
 शुमान् कुमुद्वतीशत्रुस्त्विषांपतिरहर्षतिः ।  
 भास्करोऽहस्करो भास्वान् विवस्वाञ्जलतस्करः ॥ १२ ॥  
 रश्मिमाली दृगध्यक्षः कर्मसाक्षी त्रयीवतुः ।  
 तर्षुर्मार्तण्डमुण्डीरपाथिपेरुगभस्तयः ॥ १३ ॥  
 पासिर्दृशानो रात्रिद्विद् प्रभाकरविभाकरौ ।  
 खाध्वनीनः खतिलकः खगः खाङ्कस्तमोरिपुः ॥ १४ ॥  
 चण्डांशुरंशुमानंशुः सहस्रांशुः सदागतिः ।  
 आदित्यो मिहिरो मित्रो रविः प्रत्यूषदम्बरः ॥ १५ ॥



घृष्टिपादमयूखांशुस्तान्ध्योद्योगमस्तयः ।  
 किरणोस्त्रौ च रोचिः क्ली रश्मिरक्ली मरीचिवत् ॥ १६ ॥  
 तासां शतानि चत्वारि रश्मीनां वृष्टिसर्जने ।  
 शतत्रयं हिमोत्सर्गे तावद्धर्मस्य सर्जने ॥ १७ ॥  
 आनन्दनाश्च मेध्याश्च नूतना पूतना इति ।  
 शतं शतं वृष्टिवहास्ताः सर्वा अमृताः स्त्रियः ॥ १८ ॥  
 ता एव भन्दना मन्दाः कातनाः कोतनाः क्रमात् ।  
 अथ मेध्यश्च पोष्यश्च ह्लादिन्यश्च शतं शतम् ॥ १९ ॥  
 हिमोत्सर्गाय ताः सर्वाः सर्वाश्चन्द्राश्च नामतः ।  
 ता एव रेश्यो वाश्यश्च मेध्याश्चेति यथाक्रमम् ॥ २० ॥  
 अथ रुद्रा विश्वभृतः ककुहाश्च शतं शतम् ।  
 घर्माय शुक्रास्ताः सर्वा माण्ड्यः शक्य इत्यपि ॥ २१ ॥  
 आलोकस्तु प्रभा भा रुप्रुचिदीधितिदीपयः ।  
 अथातपो रौद्रमिद्धं मृगतृष्णा मरीचिका ॥ २२ ॥  
 संज्ञास्य रेणुर्द्युमयी त्रसरेणुः सुवर्चला ।  
 त्वाष्ट्री प्रभाऽप्यथच्छाया विष्णुभा भूमिमय्यपि ॥ २३ ॥  
 हिमद्युतिः शशी चन्द्रश्चन्द्रमाः शशभृद्विधुः ।  
 परिष्मा रोहिणीकान्तो निशानाथो निशाकरः ॥ २४ ॥  
 पुनर्युवा दशाश्चो ग्लौरिन्दुः कुमुदबान्धवः ।  
 ओषधीशो निशाकेतुर्मृगलक्ष्माऽत्रिनेत्रजः ॥ २५ ॥  
 हृद्यांशुरंशुरब्जारिरमृतांशुः कलानिधिः ।  
 यजतस्तपसः क्लेदुः स्यन्दः स्पन्दो यथामुखः ॥ २६ ॥  
 प्राचीनतिलको जर्णो व्याध्वः सृप्रस्तृपिस्तृपत् ।  
 उडुराजः शशाङ्कश्च समुद्रनवनीतकम् ॥ २७ ॥  
 चन्द्रपादास्तु संवाला ज्योत्स्ना च शशिनः प्रभा ।  
 चन्द्रिका चन्द्रिमा चान्द्री कौमुदी चन्द्रगोलिका ॥ २८ ॥  
 अङ्कश्चिह्नमभिज्ञानं लाञ्छनं लक्ष्म लक्षणम् ।  
 पुष्पवन्तौ सहैवोक्त्यां सूर्याचन्द्रमसावुभौ ॥ २९ ॥  
 परिग्रहोपरक्तौ तु प्रस्तार्केन्द्रोरथ ग्रहे ।  
 उपप्लवोपरागौ द्वौ स तु सन्निहितो रवेः ॥ ३० ॥  
 गजच्छायाऽप्यथार्केन्द्रोः परिधिः परिवेषकः ।  
 कुजारमङ्गलाङ्गारा लोहिताङ्गो धरासुतः ॥ ३१ ॥  
 कर्षको कथिरो भौमः प्रव्यालोऽप्यथ हर्षुलः ।

बुधः श्यामाङ्ग एकाङ्गः सौम्यश्चान्द्रमसायनि ॥ ३२ ॥  
 वाचस्पतिरनिर्वापः सुराचार्यो बृहस्पतिः ।  
 गीष्पत्याङ्गिरसौ चक्षाश्चारुश्चित्रशिखण्डिजः ॥ ३३ ॥  
 प्रचक्षा दीदिविश्वाथ शुक्रो दूतो दिवाचरः ।  
 तिर्यग्गाम्यसुराचार्य उशना भार्गवः कविः ॥ ३४ ॥  
 मन्दः खोडोऽसितः क्रोडश्छायापुत्रः शनैश्चरः ।  
 सौरिः स्थिरगतिः कोणो दीर्णाङ्गो युगवर्तकः ॥ ३५ ॥  
 श्रुतकर्मा नीलवासा वक्रः कोलः स्थिरः शनिः ।  
 स्वर्भानुर्ग्रहकल्लोलः सैहिकेयो विधुन्तुदः ॥ ३६ ॥  
 राहुरभ्रपिशाचश्च केतवो विकचाः कुशाः ।  
 धूमजाः शिखिनो ब्रह्मपुत्राः श्रीमन्त आहिकाः ॥ ३७ ॥  
 तारा भं रात्रिजं विष्ण्यं सन्नक्षत्रमुडुर्न ना ।  
 मृगशीर्षं मृगशिरो मार्गायण्याग्रहायणी ॥ ३८ ॥  
 इन्वकास्तच्छिरोदेशे तारका इत्वला मताः ।  
 योग्यः सिध्यश्च पुष्यः स्याद्यामकौ तु पुनर्वसू ॥ ३९ ॥  
 निष्ठया स्वाती विशाखे तु राधे आर्द्रा तु कालिनी ।  
 श्रवणे श्रोणा मूले तु मूलवर्हण्यथ श्रविष्ठासु ॥ ४० ॥  
 मन्दाग्राश्च धनिष्ठाश्च भरण्योऽपभरणीषु योग्याश्च ।  
 ज्येष्ठा ज्येष्ठप्री स्यात्प्रोष्ठपदाः पुष्ययोः सभाद्रपदाः ॥ ४१ ॥  
 अश्विन्यौ वालिन्यावश्चयुजावाश्चकिन्यौ च ।  
 यथाप्रयोगमेतेषु वचनं स्याद्वचवस्थितम् ॥ ४२ ॥  
 अषाढाकृत्तिकाश्लेषामघा भूमिनि स्त्रियश्च ताः ।  
 फल्गुन्यौ तु द्वित्वभूमनोर्हस्तः शतभिषक् च सा ॥ ४३ ॥  
 अनूराधास्तु पुंभूमिनि शेषं सर्ववचः स्त्रियाम् ।  
 वीध्यो नवैव नक्षत्रैरश्विन्याद्यैस्त्रिभिस्त्रिभिः ॥ ४४ ॥  
 त्रिवीथिका त्रयो मार्गा दक्षिणोत्तरमध्यमाः ।  
 उत्तरो देवयानः स्याद्योगियानस्तु मध्यमः ॥ ४५ ॥  
 दक्षिणः पितृयाणः स्यात्तत्राद्या नागवीथिका ।  
 रोहिण्याद्याजवीथी स्यात्तत्तत्स्त्वैरावती परा ॥ ४६ ॥  
 मार्गोऽयं देवयानाख्यो मघाद्या पुनरार्षभी ।  
 हस्तादिका तु गोवीथी ततो जारद्वी परा ॥ ४७ ॥  
 मार्गोऽयं योगियानाख्यो मूलाद्या गजवीथिका ।  
 श्रोणाद्या मृगवीथी स्यात्ततो वैश्वानरी परा ॥ ४८ ॥



मार्गोऽयं पितृयाणाख्यः स्थानान्येषां पथां दिवि ।  
 ऐरावतं जारद्वयं वैश्वानरमिति क्रमात् ॥ ४६ ॥  
 सप्तर्षयस्तु खे तारारूपाश्चित्रशिखण्डिनः ।  
 ज्योतिषामयनं ज्योतिःशास्त्रं राशिर्ग्रहाह्वयः ॥ ४७ ॥  
 पूर्वपश्चिमराश्यधौ सन्दालवलयौ क्रमात् ।  
 संज्ञा द्रेक्काणहोराद्याः शास्त्रे ज्ञेयाः सलिङ्गकाः ॥ ४८ ॥  
 कालोऽनेहा च दिष्टश्च स सूक्ष्मः स्त्री तुटिस्तुटिः ।  
 द्वे तुटी लघुक्षरकस्तौ द्वावक्षरपातकः ॥ ४९ ॥  
 तौ निमेषो लिप्तिका तु तौ द्वौ काष्ठा तु ता नव ।  
 ते द्वे लवो लवाः पञ्च कला दश च तद्द्वयम् ॥ ५० ॥  
 लेशो लेशाः पञ्चदश क्षणो नाडी तु षट् क्षणाः ।  
 तौ तु नाडी मुहूर्तोऽस्त्री घटिका धारिकेति च ॥ ५१ ॥  
 त्रिशता तैरहोरात्रः पक्षाङ्गोऽप्यथ वासरः ।  
 दिवसं चास्त्रियौ भानुर्घृणिर्घस्रो रविध्वजः ॥ ५२ ॥  
 पद्मबन्धुः कोकहितो द्युश्च क्ली स्यादहर्निशम् ।  
 रजनी यामिनी याम्या त्रियामा क्षणदा क्षपा ॥ ५३ ॥  
 तमी तमस्विनी रात्रिर्निशा घारिर्विभावरी ।  
 तमिस्रा क्षणिनी क्षाणी शर्वरी वासतेय्युषा ॥ ५४ ॥  
 निशीथिनी निशीथ्या च ज्योत्स्नी ज्योतिष्मती निशा ।  
 पूर्णेन्दुस्तु दिनम्मन्या गर्भितं तु निशाद्वयम् ॥ ५५ ॥  
 बह्वयस्तु गणरात्रं च चिररात्रं च रात्रयः ।  
 पक्षाभ्यामिव याऽहोभ्यां युक्ता सा पक्षिणी निशा ॥ ५६ ॥  
 तामसी सात्त्विकी चित्रा चित्रोपमा च राजसी ।  
 खण्डिता चेति शर्वयः प्रावृडाद्युतुषु क्रमात् ॥ ५७ ॥  
 या सप्तसप्ततितमे वर्षे मासि च सप्तमे ।  
 सप्तमी प्राणिनां घोरा रात्रिर्भैरव्यथी हि सा ॥ ५८ ॥  
 ध्वान्तस्तिमिरमासक्तं तामिस्रं शार्वरं तमः ।  
 आततिश्चान्धकारोऽस्त्री तत्तु सन्तमसं यदि ॥ ५९ ॥  
 परितोऽथावतमसं लघ्वन्धतमसं महत् ।  
 छदो व्यवधिरन्तर्धिर्वरणं चापवारणम् ॥ ६० ॥  
 अपिधानतिरोधानपिधानाच्छादनानि च ।  
 दिनादौ प्राह्णपूर्वाह्नौ ततः संगतसंगवौ ॥ ६१ ॥  
 मध्यन्दिनं तु मध्याह्न उच्छ्रस्तु विकालकः ।

सायाह्नोऽप्यपराह्नोऽस्त्री प्रदोषो मैथिलः समौ ॥ ६२ ॥  
 साम्बाधिकः परस्तस्मात्त्रिशीथस्त्वर्धरात्रकः ।  
 मध्यरात्रो महारात्र उच्चन्द्रोऽपररात्रकः ॥ ६३ ॥  
 ब्राह्मोऽप्येते क्रमाद्यामा यामे प्रहरयातुकौ ।  
 पुण्याहमहि पुण्योऽशस्त्रिसन्ध्यं तूपवैणवम् ॥ ६४ ॥  
 विहानोऽस्त्री प्रविसरो गोसर्गप्रत्युषावुषः ।  
 व्युष्टं विभातं प्रत्युषं संयात्रिकमहर्मुखम् ॥ ६५ ॥  
 काल्यं प्रभातं स्त्री वोषः सन्धा सन्ध्या पितृप्रसूः ।  
 तिथिर्न षण् कर्मवाटी प्रतिपत्त्वेकपक्षतिः ॥ ६६ ॥  
 पक्षतिश्चाथ पादूरो भूतेष्टा च चतुर्दशी ।  
 निष्पक्षतिर्द्वितीया स्यादृशोऽमावास्यमावसी ॥ ६७ ॥  
 अमावस्याऽप्यमावास्याऽप्यमामस्याऽप्यमामसी ।  
 सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली नष्टचन्द्रकला कुहूः ॥ ६८ ॥  
 पिथ्या तु पूर्णिमा चान्द्री चन्द्रमाता निरञ्जना ।  
 पूर्णा तु पूर्णमासी च पौर्णमासी च पूर्णिका ॥ ६९ ॥  
 चन्द्रे कलोनेऽनुमतिः सैव राका तु पूरिते ।  
 पर्वणी पञ्चदश्या द्वे पक्षान्तौ नन्दिवर्धनौ ॥ ७० ॥  
 आग्रायणी शङ्कमूली पौर्णमास्याग्रहायणी ।  
 पौषी तु महिषी माता माघी स्यादग्निपूर्णिमा ॥ ७१ ॥  
 फाल्गुनी दण्डपाता स्याच्चैत्री तु मदनध्वजा ।  
 विश्वविस्ता तु वैशाखी ज्यैष्ठी तूपनिवेशिनी ॥ ७२ ॥  
 आषाढी कृत्तिमाचारी श्रावणी तु द्विवेदिनी ।  
 अथ प्रौष्ठपदी गाङ्गी स्यादाश्विन्यवराबिला ॥ ७३ ॥  
 वत्सरान्ता त्वरिष्रेणी धैनुकी चापि कार्तिकी ।  
 मासाख्याकूर्चनक्षत्रयोगश्च गुरुणा यदा ॥ ७४ ॥  
 महाग्रहायणीत्याद्यास्त एव तिथयः क्रमात् ।  
 जयन्तीत्यादिकाः संज्ञाः पुराणे तिथिषूदिताः ॥ ७५ ॥  
 पक्षोऽर्धमासः पूर्वस्तु शुक्लाख्योऽन्योऽसिताह्वयः ।  
 क्षीयमाणतिथिप्रायः पक्षो रिक्तोऽपरस्त्वणिः ॥ ७६ ॥  
 अणिकूर्चस्त्वमावास्या भूतेष्टा प्रतिपत्क्षयात् ।  
 मासः सांवत्सरस्तान्तः संक्रान्त्या तु स तारणः ॥ ७७ ॥  
 ज्योतिषः पुनराचारात् सावनो दिनसंख्यया ।  
 आग्रहायणिको मार्गशीर्षो वर्षमुखः सहाः ॥ ७८ ॥



सहस्ये स्युस्तैषपौषसैधा माघे तु शानकः ।  
 शातरश्च तपाश्चाथ द्वौ फल्गुनिकफल्गुनौ ॥ ८२ ॥  
 तपस्ये फल्गुनालश्च चैत्रे मौहनिको मधुः ।  
 चैत्रिको मन्मथसखो वैशाखो राध उच्छुनः ॥ ८३ ॥  
 ज्येष्ठामूलीय ईजानो ज्यैष्ठश्च खरकोमलः ।  
 ते शुके स्युरथाषाढे शुचिः श्रावणिको नभाः ॥ ८४ ॥  
 श्रावणश्च नभस्ये तु भाद्रो भाद्रपदोऽपि च ।  
 अपि प्रौष्ठपदस्तस्मिन्नाश्विनाश्वयुजाविषे ॥ ८५ ॥  
 कार्तिके स्यात् कार्तिकिको बाहुलः शैलकौमुदौ ।  
 कृबेऽप्येषु सकारान्ता ऋतुर्बीजं सतेरकम् ॥ ८६ ॥  
 हेमन्तः प्रसवो लोभः शैखस्तु शिशिरोऽस्त्रियाम् ।  
 मधुर्वसन्तः सुरभिर्वलाङ्गः पुष्पसारणः ॥ ८७ ॥  
 पुष्पकालोऽपीधमस्त्री श्रीधमस्त्वाखोर ऊष्मकः ।  
 शुचिरुष्णागमः पात्म उष्ण ऊष्माऽप्यथ क्षरी ॥ ८८ ॥  
 प्रावृड् वर्षी भूमिर्न वर्षाः कालोक्षी च घनागमः ।  
 घनात्ययः शरत् स्त्री स्याद्विसर्गो दक्षिणायनम् ॥ ८९ ॥  
 उत्तरायणमाग्नेयं विषुवान् विषुवोऽस्त्रियौ ।  
 संवत्सरोऽब्द आग्नेयो वत्सरः परिवत्सरः ॥ ९० ॥  
 वत्सवायव्यसौर्याश्च वर्षोऽस्त्री स्त्री शरत् समाः ।  
 कृतं सत्ययुगं सौम्यं त्रेतामेयी द्विसर्गिका ॥ ९१ ॥  
 द्वापरे यज्ञियाग्नेयौ पुण्यो भर्भरकः कलिः ।  
 त्रियुगं तु युगासारं द्वायायोगं तु युगद्वयम् ॥ ९२ ॥  
 मन्वन्तरं त्वन्तरं स्यात् कल्पभागे चतुर्दशे ।  
 चतुर्युगसहस्रं तु कल्पस्तद् ब्रह्मणो दिनम् ॥ ९३ ॥  
 तद्वात्रौ तु महासुप्तिः समसुप्तिर्जगत्क्षयः ।  
 महाप्रलयकल्पान्तौ युगान्तो भूतसम्प्लवः ॥ ९४ ॥  
 प्रतिसर्गस्तु संहारः प्रलयः प्रतिसञ्चरः ॥ ९४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्या-  
 मन्तरिक्षकाण्डे ज्योतिरध्यायः ॥ १ ॥

### मेघाध्यायः ॥ २ ॥

मेघोऽब्दो जलदो नभ्राट् तटित्वान् जलमुग्धनः ।  
 धाराधरो वारिधरो धूमयोनिर्बलाहकः ॥ १ ॥  
 तटित्पतिः पयोगर्भो नदनुर्मुदिरोऽम्बुभृत् ।  
 कादम्बिनी मेघमाला काली कृष्णनवाम्बुदः ॥ २ ॥  
 इन्द्रायुधं विन्द्रधनुस्तदीर्घमृजु रोहितम् ।  
 ऐरावतं च विद्युत्तु चञ्चला चपला चला ॥ ३ ॥  
 आकालिकी शतावर्ता जलदा जलपालिका ।  
 क्षणांशुः क्षणिका चम्पा तटिहीना शतहृदा ॥ ४ ॥  
 सौदामिन्यैरावती च तद्भेदेऽप्यन्तिमत्रयम् ।  
 गर्जितं स्तनितं शीर्णं वज्रे ह्यादुनयः स्त्रियः ॥ ५ ॥  
 वज्रपातस्तु निर्घातश्चण्डकोऽप्यशक्तिर्न षण् ।  
 स्फूर्जथुर्वज्रनिष्पेषो न स्त्री वज्रोऽशक्तिर्न षण् ॥ ६ ॥  
 वर्षोऽस्त्री वर्षणं वृष्टिः शीकरोऽस्त्रयम्भसः कणः ।  
 घनोपलस्तु करकः पुष्पिका मचटीति च ॥ ७ ॥  
 विप्रुट् स्त्री पृपतो विन्दुः स्तोको द्रप्सः पृषन्न पुम् ।  
 अनावृष्टिरवप्रादो मेघच्छन्नेऽहि दुर्दिनम् ॥ ८ ॥  
 अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुदिनं हिमम् ।  
 प्रालेयं मिहिका चाथ हिमानी हिमसंहतिः ॥ ९ ॥  
 कुहिदोऽस्त्री कुहेलिः स्त्री कुहेडिर्धूमिका त्रयी ॥ १० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे मेघाध्यायः ॥ २ ॥



## खगाध्यायः ॥ ३ ॥

पक्षी पत्ररथः पत्री पित्सन् पिपतिषन् पतन् ।  
 पतङ्गः पतगः प्लावी पतत्र्यङ्गुपतत्रयः ॥ १ ॥  
 विहङ्गमो विविहङ्गो विहङ्गो नभसङ्गमः ।  
 नीडोद्भवः शुको नीडी मल्लको विप्रुषो भस्मन् ॥ २ ॥  
 वशाकुर्मदनः पीतुर्मशाको मदुरो द्विजः ।  
 ऊकः शकुन्तः शकुनिः शकुन्तिः शकुनः खगः ॥ ३ ॥  
 शलको विकिरस्तुण्डी नीडजो वातगाम्यपि ।  
 पक्षिपोतस्तु चिल्लाकश्चम्पुकः पीलुकावटौ ॥ ४ ॥  
 गृह्याश्लेकाश्च गेहेषु संसक्ता मृगपक्षिणः ।  
 हंसो मरालो नीलाशश्चक्रपक्षः सितच्छदः ॥ ५ ॥  
 मानसौकाः परिप्लावी वक्राङ्गो जालपादकः ।  
 सृतिः सङ्कुचितः शङ्कुर्ज्येष्ठः प्रास्थितधोरणौ ॥ ६ ॥  
 क्षीराशश्चाप्यसौ राजहंसो रक्तैः पदाननैः ।  
 मलिनैर्मल्लिकाश्चस्तेर्धातिराष्ट्रः सितैतरैः ॥ ७ ॥  
 कादम्बः कलहंसश्च हंस आधूसरच्छदः ।  
 वरटा हंसकान्ता स्याद् वरालाव रलाऽपि च ॥ ८ ॥  
 हंससाचिः क्षुद्रहंसः क्षयिस्तु कुवलायिकः ।  
 चक्रवाको रथः कोकश्चक्रश्चक्राह्वयाह्वयः ॥ ९ ॥  
 बको बकोटः कङ्कोऽथ बलाका विसकण्ठिका ।  
 बकजातिर्द्वितुण्डो दर्विः क्रौञ्चश्च दर्विदा ॥ १० ॥  
 मदुस्तु जलकाकः स्यादातिस्त्वाटिः शराटिका ।  
 कारण्डवो महापक्षो जलरङ्गुस्तु वञ्जुलः ॥ ११ ॥  
 दात्यूढश्चाथ शकटात्रिले प्लवपरिप्लवौ ।  
 अन्वथन्नामधेयौ द्वौ जालपादाम्बुकुटौ ॥ १२ ॥  
 कुक्कुटो दीर्घवागदक्षः शिखी चूलिक आरणी ।  
 कृकवाकुर्वित्ताक्षस्ताम्रचूडः शिखण्डिकः ॥ १३ ॥  
 मयूरश्चटकः शौण्डः पादायुधनखायुधौ ।  
 पारावतः कलरवो रक्तदृष्टिर्मदोत्कटः ॥ १४ ॥

काकस्तु द्विक एकाक्षश्चिरजीवी दिवाटनः ।  
 आत्मघोषो महानेमिः कण्टको मौकलिः कुणः ॥ १५ ॥  
 बलिपुष्ट उल्लकारिर्नाडिजङ्घोऽप्रहृष्टकः ।  
 धूलिजङ्घोऽन्यवापश्च परभृद्वायसोऽन्यपुट् ॥ १६ ॥  
 द्रोणः सकृत्प्रजोऽरिष्टो ध्वाङ्गः करट इत्यपि ।  
 कृष्णकाको वृद्धकाक ऐन्द्रः काकोल आसुरः ॥ १७ ॥  
 धूङ्गणा तु श्वेतकाकोऽथ चटको वर आटकः ।  
 बलिभुक् कलविङ्कश्च सेव्यस्तिलककण्टकः ॥ १८ ॥  
 कलविङ्कस्त्वसौ पीतमुण्डः श्यामा तु पोतकी ।  
 व्याघ्राटस्तु भरद्वाजः क्षिप्रः श्येन सुपर्णकः ॥ १९ ॥  
 श्येनायां प्राचिका चित्रपक्षे शरुकपिञ्जलौ ।  
 वाचाला मुखरा शारिः कोयष्टिः शिखरी समौ ॥ २० ॥  
 कुलालकुक्कुटो गर्तकुक्कुटः पेचिका पुनः ।  
 उल्लकचेटी हिका स्यात् कनकाक्षी च पिङ्गला ॥ २१ ॥  
 उल्लकः पेचकः कोण्टः काकारिर्हरिलोचनः ।  
 नक्तञ्जरो घर्घरको निशादर्शी बहुस्वनः ॥ २२ ॥  
 महापक्षी च कृष्णोऽसौ नक्तकः कृतमालकः ।  
 कपोतो बालवत्सः स्यात् खञ्जरीटस्तु खञ्जनः ॥ २३ ॥  
 मिथुनी चञ्चलश्चाथ सुमोऽस्मिन् कृष्णवक्षसि ।  
 गोलनिका खञ्जरीटी शार्ङ्गः कीर्शा च पिप्पिका ॥ २४ ॥  
 शुक्लिकेतुर्मेधावी श्रीमान् वाग्मी फलाशनः ।  
 दरणो दण्डिकीरौ च लोपालोपायिके समे ॥ २५ ॥  
 पात्रं तु कुण्डूणाची स्त्री कण्ठपालस्तु वञ्जुलः ।  
 काकपुष्टस्त्वन्यभृतस्ताम्राक्षः कोकिलः पिकः ॥ २६ ॥  
 वसन्तघोषो मधुवाक् कलकण्ठो वनप्रियः ।  
 भृङ्गः कलिङ्गो धूम्राटो राजभृङ्गस्तु बुद्धिमान् ॥ २७ ॥  
 मान्धीरी वाग्गुदस्तुल्यः स तु मान्धीलवो महान् ।  
 आतापी चिल्लिकोऽथ स्यात् स्वस्तिकः पुष्टिवर्धनः ॥ २८ ॥  
 किकिदीविः स्वर्णचूडश्चापो राजविहङ्गमः ।  
 मणिकण्ठश्चित्रवाजो विशोकः पूर्णकूटकः ॥ २९ ॥  
 गृध्रस्तु पुरुषव्याघ्रो दूरदर्शी सुदर्शनः ।  
 दाक्षाय्यश्चाप्यथ श्येनो वर्तुलाक्षः शशादनः ॥ ३० ॥  
 कङ्कस्तु कर्कटस्कन्धः पर्कटः कमलच्छदः ।



दीर्घपादः प्रियापत्यो लोहपृष्ठश्च मल्लकः ॥ ३१ ॥  
 पूर्णकूटे कुटपुरिः शकुन्ते भासकुक्कुटौ ।  
 चातकस्त्वम्बुजोऽनम्बुः पौरेन्द्रः स्तोककः खगः ॥ ३२ ॥  
 सारसो मैथुनी कामी गोनर्दः पुष्कराह्वयः ।  
 दार्वाघाटे शतपत्रो लक्ष्मणा सारसप्रिया ॥ ३३ ॥  
 क्रौञ्चस्तु कुङ्कुथोऽक्रोशः कुररो मत्स्यनाशनः ।  
 टिट्ठिभस्तु कटुकाण उत्पादशयनोऽण्डुकः ॥ ३४ ॥  
 तित्तिरिस्तु खरकाणो वरिष्ठश्चैव प्रियः ।  
 चकोरस्तु चलच्चक्षुरुत्पिबश्चन्द्रिकाप्रियः ॥ ३५ ॥  
 कृकरो त्वथ्यकृकणौ दात्यूहे कालकण्ठकः ।  
 मयूरो बर्हिणो बर्ही शुक्लापाङ्गः शिखावतः ॥ ३६ ॥  
 वर्षामदः शिखी केकी शिखण्डी चित्रपत्रकः ।  
 भुजङ्गारिः शापटिको मयूकश्चित्रपिङ्गलः ॥ ३७ ॥  
 मार्जारकण्ठः केकालिर्विष्करो तर्तनप्रियः ।  
 मेघनादानुलासी च दार्वण्डश्चन्द्रकीति च ॥ ३८ ॥  
 शब्दोऽस्य केका बर्हस्तु प्रचलाककलापकौ ।  
 शिखण्डः पिच्छमप्यस्य मेचको बर्हचन्द्रकः ॥ ३९ ॥  
 पक्षिभेदाः खिलिखिलश्रीकर्णायकवर्तकाः ।  
 लावकुक्कुटहारीतजीवस्त्रीवादयोऽपि च ॥ ४० ॥  
 हंसादयो जलचरा ग्राम्याः स्युः कुक्कुटादयः ।  
 वनजाः पीतमुण्डाद्या भृङ्गाद्याः क्षुद्रपक्षिणः ॥ ४१ ॥  
 भृङ्गे भ्रमरभृङ्गाणमधुलिणमधुपालिनः ।  
 अलिद्विरेफो लोलम्बो भसलः पुष्पलोलुपः ॥ ४२ ॥  
 इन्दिन्द्रो मधुकरश्चञ्चरीको मधुव्रतः ।  
 शिपुटः षट्पदश्चाथ पतङ्गः शलभः समौ ॥ ४३ ॥  
 जतुकाऽजिनपत्रा स्यात् परोष्णी तैलपायिका ।  
 मलिम्लुचास्तु मशका भम्भराली तु मक्षिका ॥ ४४ ॥  
 चर्वणा मक्षिका नीला सरघा मधुमक्षिका ।  
 अरण्यमक्षिका दंशो दंशी तज्जातिरल्पिका ॥ ४५ ॥  
 कषायिका तु जलजा घोणा कुम्भीरमक्षिका ।  
 गण्डोली वरटा न ह्री गृहिणी गृहकारिका ॥ ४६ ॥  
 अन्वर्थाख्या कोष्ठकारी कण्टका कण्टकानना ।  
 निशामणिर्भान्तमणिः खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ॥ ४७ ॥

भृङ्गारी मीरिका चीरी भिक्षिकाऽथ प्लुषिः पुमान् ।  
 पुत्तिका च पतङ्गी च पूत्यण्डाः क्षुद्रपक्षिणः ॥ ४८ ॥  
 छदः पत्रो गरुडाजश्छदनं च तनूरुहम् ।  
 पतत्रं च कुलायस्तु पञ्जरं नीडमस्त्रियाम् ॥ ४९ ॥  
 पेशी कोशश्च डिम्बोऽण्डं त्रोटिश्चञ्चुः स्तृपाटिका ।  
 डयनं गतिरुड्डीनसण्डीनादि विशेषकम् ॥ ५० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यःमन्तरिक्षकाण्डे खगाध्यायः ॥ ३ ॥



## शब्दाध्यायः ॥ ४ ॥

शब्दो व्योमगुणस्वानस्वननिस्वाननिस्वनाः ।  
निर्हादो रवणो नादो दवेडो ध्वानो ध्वनिः कवः ॥ १ ॥  
कणिर्हादो रसो ध्रूणा घोषो गुञ्जनमुञ्जने ।  
गञ्जनं मशनं कानं गानं कोरणरेभणे ॥ २ ॥  
कूजनं कूजितं गर्जा न क्लीबे गर्जना न ना ।  
क्रोश उच्चस्वने प्राणिस्वने त्वाराव आरवः ॥ ३ ॥  
रवो विरावः संरावो रुतं चेत्यथ वाशनम् ।  
वाशितं च तिरश्चां स्यात् ध्वाङ्क्षी स्त्री घोरवाशितम् ॥ ४ ॥  
घोरितं तुरगादीनां नासापुटभवे ध्वनौ ।  
तन्दनं रम्भणं रम्भा रम्भितं च गवां ध्वनिः ॥ ५ ॥  
बुक्कनं श्ववृकध्वाने भषणं भषितं शुनः ।  
वृकस्य रेषणं रेषा हेषा हेषा च वाजिनाम् ॥ ६ ॥  
बृंहितं करिणां शब्दो राणोऽस्त्री मणितं रतेः ।  
काकुः स्त्री भिन्नकण्ठोत्थः शोककोपादिवैकृतात् ॥ ७ ॥  
डक्कनं हात्कृते पत्रवस्त्रादीनां तु मर्मरः ।  
पर्दनं गुदजे शब्दे कर्दनं कुक्षिकूजिते ॥ ८ ॥  
विष्फारो धनुषः स्वानो भूषादीनां तु शिञ्जितम् ।  
प्रणादस्वनुरागोत्थश्चित्कृतं स्यन्दनध्वनौ ॥ ९ ॥  
स्रोतसां खरको युद्धध्वाने क्रन्दनयोधने ।  
माजना मुरजध्वाने गुन्दिलो मर्हलध्वनौ ॥ १० ॥  
वाणं हुडुकहिकायां भेरीनादे तु टट्टरः ।  
कणनं कणितं काणो निक्काणो निक्कणः कणः ॥ ११ ॥  
वीणायाः कणतेः प्रादेः प्रकाणप्रकणादयः ।  
स्त्री प्रतिश्रुत् प्रतिध्वाने तुमुलो व्याकुले भृशम् ॥ १२ ॥  
गम्भीरे मन्द्र उच्चे तु तारो रम्यास्फुटे कलः ।  
समाहितस्तु निर्दोषवर्णे दोषयुताः परे ॥ १३ ॥  
अत्युच्चारणगर्वेण पीडितोऽपि समाहितः ।  
एणीकृतः प्रतिध्वानदन्तुरो माहिषश्च सः ॥ १४ ॥  
कल्हस्तु गलमूलस्थो गद्गदः स मनाक् स्फुटः ।

लालको बालानुकृतौ लल्लरो जिह्वया हतः ॥ १५ ॥  
शिथिलोऽस्पष्टसंयोगस्तुम्बुकः सानुनासिकः ।  
सान्त्वं स्यान्मधुरं वाक्यं स्यादवाच्यमनक्षरम् ॥ १६ ॥  
अनिर्बद्धं तूचावचमक्लिष्टार्थं तु सङ्कुलम् ।  
अनृते वितथालांकावाहतं तु मृषार्थकं ॥ १७ ॥  
अम्बूकृतं सनिष्ठीवं स्यादबद्धमनर्थकम् ।  
कल्या तु वाचि कल्याण्यां रुशती तद्विपर्यये ॥ १८ ॥  
छलवाक्यं निरानन्दा शोकभारे तु तीरिता ।  
क्रोधगर्भा तु वैद्योता दैन्यगर्भा तु नश्वरी ॥ १९ ॥  
निर्वेदगर्भा निस्सङ्गा स्नेहगर्भा तु मालुकी ।  
विरहे खण्डिता मोहे शून्या लोभे तु जाङ्गली ॥ २० ॥  
निष्ठुरा परुषा क्षेपे त्रिषु स्युस्तुमुलादयः ।  
अस्त्रियौ वर्णमर्णं च वाक्यं तु वचनं वचः ॥ २१ ॥  
आग्नेडितं द्विस्त्रिरुक्तं गुणितं घोषितं समे ।  
अरार्णनां मुहुः प्रोक्तमनुलापश्च वर्तनम् ॥ २२ ॥  
सम्भाषणं त्वाभाषणमालापः कुरुकुञ्जिका ।  
उपसम्भाषणं साम्नि तत्तूपच्छन्दनं यदि ॥ २३ ॥  
धनादि स्यात् प्रतिज्ञातं गुह्ये तदुपमन्त्रणम् ।  
विभाषणं विवादे स्यादनुवादोऽनुभाषणम् ॥ २४ ॥  
आख्यायनी तु सन्देशो दिष्टं संवदनं च तत् ।  
संवादनं वाचिकं च बलना त्वतिचाटुवाक् ॥ २५ ॥  
लुञ्जना पिञ्जना वेति सूत्रिते वचनद्वयम् ।  
भञ्जना स्याद्विवरणे पोटना तूत्कटं वचः ॥ २६ ॥  
कोलाहलः कलकलः कुञ्जनाऽस्मिन्नपक्रुधि ।  
चर्चरी चर्भटिस्तुल्ये रथ्यावादे तु कोहलम् ॥ २७ ॥  
उद्धूमस्तु कौरकया विगर्वा गर्वहारिका ।  
लोचना तु विचारोक्तिर्लोटना सानुसारवाक् ॥ २८ ॥  
विप्रलापो विरोधोक्तिः संलापो भाषणं मिथः ।  
काका वर्णनमुल्लापो विलापः परिदेवनम् ॥ २९ ॥  
प्रलापोऽनर्थकं वाक्यमपलापस्त्वपह्वः ।  
अपठ्ययोऽप्यवज्ञाऽपि हूतिस्त्वाकारणा हवः ॥ ३० ॥  
हकारामन्त्रणाह्वानं संहृतिर्बहुभिः कृता ।  
अभिधानं नामधेयं नामाख्याऽऽह्वाऽभिधाऽऽह्वयः ॥ ३१ ॥



मिथ्याऽभियोगोऽभिख्यानमभिशापोऽभिशंसनम् ।  
 शापोऽधिपक्षेप आक्रोशः परिवादोऽप्यवर्णवत् ॥ ३२ ॥  
 अवर्णवादो निर्वादोऽप्यपवादो विरुक्षणम् ।  
 क्षारणं गर्हणं निन्दा जुगुप्सागालिकुत्सनाः ॥ ३३ ॥  
 जनवादस्तु वचनं भर्त्सनं प्रतितर्जनम् ।  
 आक्षारणं विधुवनमाक्रोशो मैथुलं प्रति ॥ ३४ ॥  
 उत्साहः स्यादुपालम्भः परिवाग्भाषणीति च ।  
 श्लाघा शंसा प्रशंसा च स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ ३५ ॥  
 यशो जयोदाहरणं साधुवादो गुणावली ।  
 ख्यातिः कीर्तिः समज्ञा च सन्देशगिरि वाचिकम् ॥ ३६ ॥  
 अर्थवादः परार्थोक्तिः प्रश्नः पर्यनुयोगवत् ।  
 अनुयोगश्च पृच्छा च प्रतिवाक्यं तदुत्तरम् ॥ ३७ ॥  
 कथा त्वाख्यानिकाऽऽख्यानं पुराणं पञ्चलक्षणम् ।  
 इतिहासः पुरावृत्तमैतिह्यमितिहाऽव्ययम् ॥ ३८ ॥  
 वार्तोदन्तोऽपि वृत्तान्तः किंवदन्ती जनश्रुतिः ।  
 प्रवल्हिका प्रहेलिका प्रजल्पनं बहुदितम् ॥ ३९ ॥  
 विकल्पना पृथक्क्रियाऽवधारणाऽन्यनिहुतिः ।  
 समस्या तु समासः स्यात् सङ्क्षेपः स्यादविस्तरः ॥ ४० ॥  
 उपोद्धात उदाहार उपन्यासः पुरोवचः ।  
 प्रस्तावः पुनरुद्धातः सोऽधिकार उपक्रमः ॥ ४१ ॥  
 गद्यपद्यमयी चम्पूः सारणी पद्यमात्रिका ।  
 शृङ्गाराद्यधिकं काव्यं समासाढ्यं तु दण्डकम् ॥ ४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे शब्दाध्यायः ॥ ४ ॥

द्वितीयोऽन्तरिक्षकाण्डः समाप्तः ॥ २ ॥

### ३. अथ भूमिकाण्डः

देशाध्यायः ॥ १ ॥

भूमिरुर्वी घनश्रेणी स्थगणा गिरिकर्णिका ।  
 क्षोणी सर्पभृता दक्षा कुः क्षमा क्षान्तिः क्षमा क्षरिः ॥ १ ॥  
 धरित्री धरणी धात्री भूतधात्री धरा स्थिरा ।  
 वसुन्धरा वसुमती वसुधा विपुला रसा ॥ २ ॥  
 रमा विश्वा पृथिवी पृथ्वी हेमा सर्वसहा मही ।  
 अन्धिवस्त्रा नगाधारा मेदिनीला गिरिस्तनी ॥ ३ ॥  
 अचला कीलिनी पेरा बीजसू रत्नसूः स्वसूः ।  
 रत्नगर्भा काश्यपी भूः कुह्यवनिर्बरा ॥ ४ ॥  
 द्यावापृथिव्यावेकोक्तौ रोदस्यौ रोदसी इति ।  
 नाभीदं भारतं वर्षं हिमाद्रिस्तच्च दक्षिणम् ॥ ५ ॥  
 तेन हैमवतं नाम पराण्यप्येवमुन्नयेत् ।  
 हेमकूटं किम्पुरुषं हरिवर्षं तु नैषधम् ॥ ६ ॥  
 इलावृत्तं सौमेरवं सुमेरुं परितो हि तत् ।  
 भद्राश्वं तु ततः पूर्वं केतुमालं तु पश्चिमम् ॥ ७ ॥  
 वर्षावेतौ क्रमात् पूर्वगन्धिकपरगन्धिकौ ।  
 उदक् तु रम्यकं नैलं नीलाद्रिरुत्तरं हि तत् ॥ ८ ॥  
 ततो हिरण्यं श्वेतं तच्च श्वेताद् गिरेरुदक् ।  
 कुरुवर्षं शार्ङ्गवतं कुरवश्च त उत्तराः ॥ ९ ॥  
 जम्बूद्वीपः कुमारी स्याद्यत्रेमे भारतादयः ।  
 लावणो लवणोदः स्याद्येनासौ वेष्टितोऽन्धिना ॥ १० ॥  
 प्लक्षद्वीपादयोऽप्येवं वृता इक्षूदकादिभिः ।  
 मन्थोदधिस्तु क्षीराब्धिः क्षीरोदः कलशोदधिः ॥ ११ ॥  
 अथाप्यन्येऽन्तरद्वीपा भारतात् सप्त दक्षिणाः ।  
 एको वैद्युत्वतो नाम विद्युत्वान् यत्र पर्वतः ॥ १२ ॥  
 मालं मैनं व्रतं जालं नारासङ्गे पराणि षट् ।  
 अनुद्वीपाश्च षट् तेषामङ्गद्वीपादयो यथा ॥ १३ ॥  
 अङ्गद्वीपं यवद्वीपं मलयद्वीपमित्यपि ।



शङ्खद्वीपं कुशद्वीपं वराहद्वीपमित्यपि ॥ १४ ॥  
 अङ्गद्वीपं चाक्रगिरं मध्ये पश्चिमवारिधिः ।  
 पूर्वार्धौ तु यवद्वीपं यत्र कालोदकोऽर्णवः ॥ १५ ॥  
 मलयद्वीपमर्धौ स्यादक्षिणे तच्च दार्दरम् ।  
 मालयं माहामलयं तत्पार्श्वे तु चतुर्थकम् ॥ १६ ॥  
 अतः पूर्वं कुशद्वीपं चम्पकद्वीपमप्यदः ।  
 यतः पुरो रक्तवहो लोहित्यो नाम वारिधिः ॥ १७ ॥  
 अथ प्रतीच्यां वाराहं वराहद्वीपमायतम् ।  
 यत्र यज्ञवराहोऽसौ हरिरद्यापि तिष्ठति ॥ १८ ॥  
 बर्हिणं सिंहलं हेमकुड्यं द्वारवतीपदम् ।  
 पारसीककुलं स्वर्णद्वीपं वैद्युतमार्षभम् ॥ १९ ॥  
 अयोमुखं तार्णसौमं स्यात्तार्णं ग्रामणीकुलम् ।  
 इत्याद्या भारते वर्षं क्षुद्रा द्वीपाः सहस्रशः ॥ २० ॥  
 नीवृज्जनपदो देशस्तद्भेदाः पुंसि भूमिनि च ।  
 स्त्रियो वरेन्द्री स्त्रावस्तीराढाद्या नैव भूमनि ॥ २१ ॥  
 प्राग्दक्षिणः शरावत्याः प्राच्योऽस्याः पश्चिमोत्तरः ।  
 उदीच्यो मध्यदेशस्तु देशो यो मध्यमस्तयोः ॥ २२ ॥  
 आर्यावर्तो ब्रह्मवेदिर्मध्यं विन्ध्यहिमागयोः ।  
 अथोदीच्या जनपदास्तत्र चीनाः खरम्भराः ॥ २३ ॥  
 गान्धारास्तु दिहण्डाः स्युर्यवनास्तु हुरुण्डकाः ।  
 सम्भालाः स्युः शूरसेना अपि ते शूरसेनयः ॥ २४ ॥  
 मध्ये तु शूरसेनानां मधुरा नाम वै पुरी ।  
 लम्पाकास्तु मुरुण्डाः स्युस्तोक्षारास्तु युगालिकाः ॥ २५ ॥  
 जालन्धरास्त्रिगर्ताः स्युर्होलाः स्युः खरटी स्त्रियाम् ।  
 प्रत्यग्रथास्त्वहिच्छत्रास्त्वैतुलास्तु कलिङ्गकाः ॥ २६ ॥  
 टर्कवादीककाश्मीरतुरुक्केषु ससिन्धुषु ।  
 बाल्लीका बाल्लिकाः कीराः शाखयो दारदाः क्रमात् ॥ २७ ॥  
 कुमालकास्तु सौवीरा यौधेयास्तु नृगालिकाः ।  
 अप्यन्ये पारदाः किङ्गाः कुल्या इत्यादिनीवृतः ॥ २८ ॥  
 अथ प्राच्या जनपदास्तत्र मुद्रकाः कुजाः ।  
 प्राग्येतिषाः कामरूपास्तथा प्राग्जालिका अपि ॥ २९ ॥  
 विदेहास्तीरभुक्तिः स्त्री स्त्रावस्ती तु परञ्जका ।  
 राढा तु सुद्धाः पुण्ड्रास्तु वरेन्द्री पुण्ड्रलक्षणा ॥ ३० ॥

भौरिकाः स्युः समतटा अङ्गाश्चम्पोपलक्षणाः ।  
 वङ्गास्तु हरिकेलीया मगधाः कीकटाः स्मृताः ॥ ३१ ॥  
 अप्यन्येऽन्ध्रा व्रताः सात्वा इत्याद्या नीवृतः पृथक् ।  
 विन्ध्यास्तु दक्षिणा देशा दक्षिणापथसंज्ञिताः ॥ ३२ ॥  
 तत्र पाण्ड्याः पाण्डियाः स्युः कुन्तलाः स्तूपहालकाः ।  
 चोलाः स्युरुत्पलावर्ता महाराष्ट्रास्तु दण्डकाः ॥ ३३ ॥  
 अप्यन्ये केरलाः कुल्याः सेतुजाः कुलकालकाः ।  
 इषीकाः शबरारट्टा इत्याद्या नीवृतः पृथक् ॥ ३४ ॥  
 अपरान्तास्तु पाश्चात्यास्ते च सूर्यारकादयः ।  
 अथेमे मलदाद्याख्या विन्ध्यपर्वतवासिनः ॥ ३५ ॥  
 तत्र स्युर्मलदाः स्थौराः करुशास्तु बृहद्गृहाः ।  
 त्रैपुरास्तु दहालाः स्युश्चैद्यास्ते चेदयश्च ते ॥ ३६ ॥  
 दाशाणीः स्थुर्वदिपरा मालवाः स्युरवन्तयः ।  
 अप्यन्ये मेकला भोजाः कोसलाद्याश्च नीवृतः ॥ ३७ ॥  
 अथ देशा मध्यदेशे मरवस्तु दशेरकाः ।  
 सात्वास्तु काङ्कुत्सीयास्तेषां त्ववयवाः परे ॥ ३८ ॥  
 उदुम्बरास्तिलखला महाकारा युगन्धराः ।  
 हुलिङ्गाः शरदण्डाश्च षट् सात्वावयवा इमे ॥ ३९ ॥  
 अप्यन्ये कुन्तलाः कुल्याः कलिङ्गाः काशिकोसलाः ।  
 मेकलाः कुलटाः सौरा जाङ्गलाः पृथवो वृकाः ॥ ४० ॥  
 पटञ्जरादयश्चान्ये मध्यदेशस्य नीवृतः ।  
 उक्तानामन्तरालेषु बहवः क्षुद्रनीवृतः ॥ ४१ ॥  
 मरवः पुंसि धन्वान आसारी तु स्थली स्थलम् ।  
 कचङ्गला तु नीलिङ्गी भूर्नानाजन्तुसंयुता ॥ ४२ ॥  
 पङ्किलः पङ्कवान् देशो वेतस्वान् बहुवेतसः ।  
 शाद्वलः शादहरितः कुमुद्वान् कुमुदाधिकः ॥ ४३ ॥  
 सनलो नडवलो नडवाब्धार्करः शर्कराधिकः ।  
 देशः शर्करिलोऽप्येवमुन्नेयौ सिकतावति ॥ ४४ ॥  
 कृष्णभूमः पाण्डुभूमः कृष्णा पाण्डुश्च यत्र मृतः ।  
 अनूपः साम्बुरन्यस्तु जाङ्गलः शून्य उच्चटः ॥ ४५ ॥  
 स्फुटिते सारणारट्टौ राजन्वास्तु सुराजनि ।  
 अन्यत्र राजवान् वृष्टिजीवनो देवमातृकः ॥ ४६ ॥  
 स्यान्नदीमातृको देशो नद्यम्बूत्पादसस्यकः ।  
 पद्यः पदाङ्गयोग्यः स्यात् त्रिष्वेते पङ्किलादयः ॥ ४७ ॥



श्मशानं स्यात् पितृवनं स्त्रीवासः किमिपर्वतः ।  
 शतमूर्धा वामक्षरो नाकुर्वल्मीकमस्त्रियाम् ॥ ४८ ॥  
 मार्गोऽध्वा पदवी पन्थाः पद्या चैकपदी सृतिः ।  
 सुपन्था अतिपन्थाश्च सत्पथश्च शुभे पथि ॥ ४९ ॥  
 विपथः कापथो व्यध्वो दुरध्वश्च कदध्वनि ।  
 अपन्थास्त्वपथं दूरशून्ये प्रान्तरमध्वनि ॥ ५० ॥  
 वृत्तिमार्गस्त्वर्धपदः प्राग्वंशः पदिकोऽपि च ।  
 संक्रमस्तित्तिरिस्तुत्यौ शृङ्गाटं तु चतुष्पथः ॥ ५१ ॥  
 जङ्घापदं चतुष्पादस्त्रिपादस्तु गृहान्तरम् ।  
 अङ्गुलोऽस्त्री यवा अष्टौ समस्तु चतुरङ्गुलः ॥ ५२ ॥  
 धनुर्ग्रहश्च दिष्टिश्च स्यातामष्टाङ्गुलावुभौ ।  
 दशाङ्गुलः क्रकचिको वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलाः ॥ ५३ ॥  
 किष्कुः स्यादवटो हस्तश्चतुर्विंशतिरङ्गुलाः ।  
 बद्धेन मुष्टिना हस्तः स्याद्विनिर्मुष्टिको वसुः ॥ ५४ ॥  
 अरविर्निष्कनिष्ठोऽसौ स प्रजापतिहस्तकः ।  
 कुत्सश्चाप्यथवाकुत्सः सधनुर्मुष्टिरेव सः ॥ ५५ ॥  
 अथ वर्धकिहस्तः स्याद् द्वाचत्वारिंशदङ्गुलः ।  
 तस्मिन् विकिष्कुः क्रकचः किष्कुःक्रकचिकोऽपि च ॥ ५६ ॥  
 हस्तद्वयं तु सत्किष्कुर्हस्तत्रयमलीमकम् ।  
 चतुर्हस्तो धनुर्दण्डो धनुर्धन्वन्तरं युगम् ॥ ५७ ॥  
 ऐश्वरं नालिका चाथ पञ्चहस्तोऽर्धहस्तकः ।  
 अष्टहस्ता तु रज्जुः स्यान्नवहस्ता तु नालिका ॥ ५८ ॥  
 दशहस्तः पितृनखो दीर्घदण्डो निदेशकः ।  
 स प्राणेशानिकश्चाथ परिवेषो द्विरज्जुकः ॥ ५९ ॥  
 निवर्तनं तु तिसृभौ रज्जुभिर्बलिशं च तत् ।  
 नल्विकः किष्कुभिः षष्ट्या नल्वः किष्कुचतुश्शतम् ॥ ६० ॥  
 दशधन्वन्तरं स्तोमो दशस्तोमस्तु वंशिकः ।  
 दशवंशिक आनाहो दशानाहो नलान्तरः ॥ ६१ ॥  
 धन्वन्तरसहस्रं तु क्रोशो गव्या तु तद् द्वयम् ।  
 स्त्री गव्यूतिश्च गव्यूतं गोरुतं गोमतं च तत् ॥ ६२ ॥  
 गव्यूतानि तु चत्वारि योजना कोसलादिषु ।  
 गव्यूतिद्वयमेव स्याद्योजनं मगधादिषु ॥ ६३ ॥  
 इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां  
 वैजयन्त्यां भूमिकाण्डे देशाध्यायः ॥ १ ॥

## शैलाध्यायः ॥ २ ॥

शैलोऽगः पर्वतः दमाभृत् सानुमान् दुर्गमोगिरिः ।  
 अहार्यगोत्रकुटीरकुटारा भूधरोऽचलः ॥ १ ॥  
 बन्धाकिः फालिकः कुध्रः प्रपात्यद्रिः शिलोच्चयः ।  
 सुवेलः स्याच्चित्रकूटस्त्रिकूटस्त्रिकुच सः ॥ २ ॥  
 लोकालोकश्चक्रवालो लोकान्ताद्रिः पराचलः ।  
 मलये त्रिकलापार्थो विन्ध्यस्तु जलवालकः ॥ ३ ॥  
 हिरण्यनाभो मेनाकः सुदारुः पारियात्रकः ।  
 मायवांस्तु प्रस्रवणो हिमावांस्तु हिमाचलः ॥ ४ ॥  
 रजताद्रिस्तु कैलासो त्राद्रिर्महितश्च सः ।  
 वेङ्कटो वृषभः सिंहः केशरः केशवप्रियः ॥ ५ ॥  
 उदयस्तूदयाद्रिः स्यादस्तस्त्वस्तमयाचलः ।  
 दरी गुहा कन्दरोऽक्ली प्रपातस्तु तटो भृगुः ॥ ६ ॥  
 उःसः प्रस्रवणं तोयप्रवाहे भरनिर्भरौ ।  
 स्तुर्वप्रोऽस्त्री सानुरस्त्री पादाः पर्यन्तपर्वताः ॥ ७ ॥  
 कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गं नितम्बः कटकोऽस्त्रियाम् ।  
 पाषाण उपलोऽश्मा च प्रस्तरश्च शिला दृपत् ॥ ८ ॥  
 गण्डशैलास्तु पाषाणाः स्थूलाः प्रगलिता गिरेः ।  
 उपत्यका त्वधोभूमिगिरेरुर्ध्वमधित्यका ॥ ९ ॥  
 कुडङ्गोऽस्त्री निकुञ्जोऽस्त्री कुञ्जो वृक्षवृत्तान्तरे ।  
 आकरः स्त्री खनिर्गञ्जा रुमा तु लवणाकरः ॥ १० ॥  
 गैरिकं पीतधातुः स्यात् कुनटी तु मनःशिला ।  
 रोचनी रज्जनी हृद्या रसनेत्री महासना ॥ ११ ॥  
 करवीरा कला विद्युन्नागमाता विगन्धिकः ।  
 शिला मनोऽभिधा काला नागजिह्वा च ताः समाः ॥ १२ ॥  
 शुक्रधातौ पाक्शुक्रा कठिनी कक्खटी खटी ।  
 हरितालं तु खर्जूरं पिञ्जरं नटभूषणम् ॥ १३ ॥  
 तालमालं वंशपत्रं पीतनं रोमद्वयम् ।  
 सौगन्धिकस्तु पामारिः पीतो गन्धाश्मगन्धकौ ॥ १४ ॥  
 बोलो गोलः शशः पिण्डः प्राणो गन्धरसो रसः ।



अभ्रकं व्योममेघाख्यं चक्रसंज्ञं तु माक्षिकम् ॥ १५ ॥  
 शिलाजतु तु गौरैयमर्थ्यमश्मजमद्रिजम् ।  
 सौराष्ट्री पार्वती काक्षी कालिका पर्पटी सती ॥ १६ ॥  
 आढकी तुवरी काली भूनामा च मृदाह्वया ।  
 सुराष्ट्रजाऽप्यथो गोला नैपाली कुनटीति च ॥ १७ ॥  
 रुक्मं कार्तस्वरं स्वर्णं महारजतमोजसम् ।  
 चामीकरं जातुरूपं तपनीयं शिलोद्भवम् ॥ १८ ॥  
 लोभनं कनकं शुक्रं सुवर्णं चन्द्रकाञ्चने ।  
 दाक्षायणं श्रीमकुटं गारुडं तारजीवनम् ॥ १९ ॥  
 अग्निबीजं रत्नवरं गैरिकं हेम कर्बुरम् ।  
 जाम्बूनदं शातकुम्भं हाटकं भूरिखिगौ ॥ २० ॥  
 वैष्णवं कर्णिकाराभं वेणूतटजकाञ्चनम् ।  
 सुवर्णद्वीपजाः स्वर्णशुक्तिकाभ्रकसन्निभाः ॥ २१ ॥  
 रसविद्धं तु देवार्हं पवित्रं वज्रधारणम् ।  
 अलङ्कारसुवर्णं तु शृङ्गीकनकमाशु च ॥ २२ ॥  
 रूप्यहेम्नी तु संश्लिष्टे घनगोलकमस्त्रियाम् ।  
 रजतं त्रापुपं रूप्यं चन्द्रभीरु यकीयसम् ॥ २३ ॥  
 सौधं सुभीरुकं शुभ्रं खर्जूरं वङ्गजीवनम् ।  
 ताम्रं शुल्बं मर्कटास्यं रक्तं व्यष्टं कनीयसम् ॥ २४ ॥  
 म्लेच्छं वरिष्ठं म्लेच्छास्यं श्रेष्ठं काम्यमुदुम्बरम् ।  
 रिरी तु रीतिरुत्साहा पातलोहं सुलोहकम् ॥ २५ ॥  
 लोह्यमप्यारकूटोऽस्त्री पित्तलं त्वारमस्त्रियाम् ।  
 राजरीत्यां ब्रह्मरीतिः स्वर्णरीतिर्महेश्वरी ॥ २६ ॥  
 काञ्चनी कपिला राज्ञी ब्राह्मणी कपिलोहकम् ।  
 मीलिकायां तु सरटी निष्ठुरं दारुकण्टकम् ॥ २७ ॥  
 गुरुज्येष्ठं सिंहमलं पञ्चलोहान्यलोहके ।  
 कांस्यं तु कृत्रिमं नाट्यं प्रभासमसुराह्वयम् ॥ २८ ॥  
 घण्टास्वनं भूरिलोहं रवणं लोहजं मलम् ।  
 सौराष्ट्रं चाथ सीसोऽस्त्री योगेष्टं भुजगाह्वयम् ॥ २९ ॥  
 यवनेष्टं समोलुकं हेमघ्नं भूतलोद्भवम् ।  
 त्रपु नागं चीनपट्टं रङ्गमप्यथ पिच्छटम् ॥ ३० ॥  
 रङ्गं वङ्गं त्रपु क्षोभ्यं मृदङ्गं नागजीवनम् ।  
 परासं सिंहलं ज्येष्ठं वक्राख्यं मुखभूषणम् ॥ ३१ ॥

कस्तीरं शोभनं नागमरिजं हेमजं शठम् ।  
 गुरुपत्रं तमरकं घनं मलवणं रजः ॥ ३२ ॥  
 अयः कृष्णायसं चीनं शस्त्राख्यं विषमायुधम् ।  
 धीवरं धीमकं लोहं लौहकालदृढानि च ॥ ३३ ॥  
 स्त्री कुटिनी पारशवो गिरिसारोऽश्मसारकः ।  
 अथ कालायसं तीक्ष्णं सुलोहं रुक्षमासुरम् ॥ ३४ ॥  
 वैकृन्तः स्याद् रसवरो रसज्ञो व्योमधारणः ।  
 रसकम्बवयसः सारो विकारो लोहजः कुशी ॥ ३५ ॥  
 धूर्तमण्डूरसिंहाणविष्टाख्यानि त्वयोमले ।  
 लोहं तु तैजसं सर्वं वसु रत्नं मणिनं पण ॥ ३६ ॥  
 स्फटिकाऽर्का रविप्रावा सूर्यकान्तोऽनलोपलः ।  
 चन्द्रकान्तश्चन्द्रमणिः सुसामोऽथ त्वयोमणिः ॥ ३७ ॥  
 अयस्कान्तस्तद्विशेषाश्चुम्बकभ्रामकादयः ।  
 गारुत्मतं मरकतमश्मगमं हरिन्मणिः ॥ ३८ ॥  
 शोणरत्नं लोहितकं पद्मरागोऽरुणोपलः ।  
 विद्रुमो ना प्रवालोऽस्त्री वज्रोऽस्त्री हीरकः पुमान् ॥ ३९ ॥  
 इन्द्रनीलं महानीलं वैडूर्यं बालवायजम् ।  
 कुरुविन्दास्तु कुलमापा रत्नभेदास्तु मौक्तिकम् ॥ ४० ॥  
 माणिक्यं पौष्पकं शङ्खः पुलको विमलादयः ।  
 रसाञ्जनं तार्क्ष्यशैलं शैलेयं रसगर्भकम् ॥ ४१ ॥  
 स्त्रोतोऽञ्जनं तु सौवीरं कपोताञ्जनयामुने ।  
 तुल्याञ्जनं शिखिप्रावं वितुन्नकमयूरके ॥ ४२ ॥  
 रीतिपुष्पं पुष्पकेतुः पौष्पकं कुसुमाञ्जनम् ।  
 तुत्थं तु दार्विका काथसम्भवं कर्परीति च ॥ ४३ ॥  
 कुलत्थिका तु चक्षुष्या कुम्भकारी कुकालिका ।  
 रसस्तु पारतः सूतो हिङ्गुलो दारदो रसः ॥ ४४ ॥  
 हिङ्गुलं हंसपादं च कुरुविन्दं च के चन ॥ ४५ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यां भूमिकाण्डे शैलाध्यायः ॥ २ ॥



## वनाध्यायः ॥ ३ ॥

अटवी काटिकाऽरण्यं विपिनं काननं वनम् ।  
 कदम्बं कुन्दिलं वार्क्षं वनी गहनमित्यपि ॥ १ ॥  
 महाटवी त्वरण्यानी प्रस्तारस्तु तृणाटवी ।  
 कृत्रिमं वनमारामोऽपवनोपवने आपि ॥ २ ॥  
 तदेव राज उद्यानमाक्रीडश्चाथ तस्य तत् ।  
 सान्तःपुरस्य प्रमदावनं गेहस्य निष्कुटः ॥ ३ ॥  
 पुष्पवाटी त्वमात्यादेख्यी वाटी फलाय चेतु ।  
 वृक्षो द्रुमो भूरुहो द्विविडपी विष्ट्रोऽङ्घ्रिपः ॥ ४ ॥  
 अलोकहो जगो भूरुहो तरुः शाखी कुटः कुजः ।  
 वसुः करालिकोऽगच्छो जर्णो रुक्षः पुलाक्यपि ॥ ५ ॥  
 बानस्पत्यः पुष्पफली फली त्वेव वनस्पतिः ।  
 ओषधिः फलपाकान्ता ह्रस्वशाखाशिकः क्षुपः ॥ ६ ॥  
 अप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मावुलपस्तु प्रतानिनी ।  
 गुमिन्यपि च वल्ली तु व्रततिव्रतती लता ॥ ७ ॥  
 बन्ध्यो वृक्षोऽवकेशी स्यादबन्ध्यस्तु फलेग्रहिः ।  
 पुष्पितः स्यात् कुसुमितः फलितः फलिनः फली ॥ ८ ॥  
 फुल्ले प्रफुल्लसम्फुल्लव्याकोचविकचस्फुटाः ।  
 उत्फुल्लोन्मिषितोन्निद्रा उदबुद्धोन्मिलितस्मिताः ॥ ९ ॥  
 फलमामं शलाढुः स्याद् वानं शुष्कतरं फलम् ।  
 त्रिपु बन्ध्यादयोऽथ स्यादङ्कुरोऽङ्कुरमस्त्रियौ ॥ १० ॥  
 प्ररोहश्चाथ वंशः स्याद् योऽङ्कुरः पर्वसूत्थितः ।  
 परुः पर्व पुमान् ग्रन्थिर्निर्यासः खपुरो लशः ॥ ११ ॥  
 शिफाजटाऽवरोहस्तु सा शाखाजा वटादिपु ।  
 मूलं बुध्नोऽङ्घ्रिनामास्मादास्कन्धात् स्यात्प्रकाण्डकम् ॥ १२ ॥  
 स दारुमात्रः स्थाण्वस्त्री दारु काण्डमथ त्रयी ।  
 छल्ली त्वक् स्त्री त्वचा न ह्री वल्कलं चोलकोऽस्त्रियौ ॥ १३ ॥  
 चोचं वल्कं च सारस्तु मज्जा सारः किनाटकम् ।  
 निष्कुटः कोटरो न स्त्री विदलं दारु पाटितम् ॥ १४ ॥  
 स्कन्धः प्रघाणोऽथ शिखा शाखाऽथ शिखरं शिरः ।  
 स्कन्धशाखा तु शाला स्यात् प्रवालः पल्लवाङ्कुरः ॥ १५ ॥

विस्तारो विटपः स्तम्ब उच्छ्रायस्तु समुन्नतिः ।  
 छदस्तु छदनं पत्रं पलाशं पतनं दलम् ॥ १६ ॥  
 पर्णं बर्हं पतत्रं च त्रयी शुङ्गास्य कोशिका ।  
 पल्लवोऽस्त्री किसलयं किसलोऽपि नवे दले ॥ १७ ॥  
 पत्रमध्यशिरा माढिः पुष्पोऽस्त्री कुसुमं सुमम् ।  
 मणीचकं प्रसूनं च सूतं सुमनसः स्त्रियः ॥ १८ ॥  
 मकरन्दो मरन्दोऽस्य रसे जालं तु जालकम् ।  
 कलिका कोरकश्चाथ कुट्मलो मुकुलोऽस्त्रियौ ॥ १९ ॥  
 गुच्छो गुलुच्छः स्तम्बको मञ्ज्यां मञ्जरिवल्ली ।  
 प्रसवः पिप्पलं सस्यं फलं वृन्तं तु बन्धनम् ॥ २० ॥  
 पण्डास्त्वाम्रादयः शब्दा आम्रादिफलपुष्पयोः ।  
 हरीतक्यादिकं स्त्री स्यादश्वत्थादिफले पुनः ॥ २१ ॥  
 आश्वत्थमैङ्गुदं प्लाक्षं नैयप्रोधं च बार्हतम् ।  
 वैणवं शैप्रवं चाथ जम्बूः स्त्री जम्बु जाम्बवम् ॥ २२ ॥  
 जात्यादयः स्वलिङ्गाः स्युः पुष्पार्थे व्रीहयः फले ।  
 विदार्याद्यास्तु मूलेऽपि पाटला कुसुमे न ना ॥ २३ ॥  
 सप्तम्यन्तपदारम्भाः पर्याया इह कुत्रचित् ।  
 सप्तम्यन्तं च पुंलिङ्गं विज्ञेयं संशये सति ॥ २४ ॥  
 आम्रे कामाङ्गमाकन्दौ चूतो वेलोऽङ्गनाप्रियः ।  
 करको वलयश्चाथ श्रेष्ठेऽत्र सहकारकः ॥ २५ ॥  
 अथ श्यामलके लाला लवली लावली फला ।  
 केसरे वकुलो मद्यलालसः सिंहकेसरः ॥ २६ ॥  
 द्राक्षाफलो गुडश्चाथ न्यग्रोधो बहुपाट्टः ।  
 श्रीवृत्ते पिप्पलोऽश्वत्थः प्लक्षश्चलदलोऽङ्गुलः ॥ २७ ॥  
 उदुम्बरे प्राणिफलो मशकी हेमदुग्धकः ।  
 प्लक्षस्तु पर्कटिजटिकलापिगिरिलक्ष्मणाः ॥ २८ ॥  
 पलाशे किशुकः पर्णो वातपोथस्त्रिपर्णकः ।  
 आस्फोटो ब्रह्मवृक्षश्च हस्तिकर्णदले कृती ॥ २९ ॥  
 बिल्वे मादूरमङ्गल्यौ श्रीफलो गोहरीतकी ।  
 परिव्याधे बालभीरुभीरुबालोऽम्बुवेतसः ॥ ३० ॥  
 शीतेऽभ्रपुष्पो वानीरो वज्जुलो वेतसो रथः ।  
 विदुले प्रिय आम्राते द्वौ पीतनकपीतनौ ॥ ३१ ॥



कपित्थे स्युर्दधिकलो दधित्थग्राहिमन्मथाः ।  
 हृद्यो दन्तशठः पुष्पफलोऽरिष्टे तु फेनिलः ॥ ३२ ॥  
 मातुलुङ्गे तु रुचको वराम्लः केसरी शठः ।  
 बीजपूरे मातुलुङ्गो लुङ्गः सुफलपूरकौ ॥ ३३ ॥  
 देविकायां महाशल्का दूष्याङ्गी मधुकुङ्कुटी ।  
 अथात्यम्ला मातुलुङ्गी पूतिपुष्पी वृकाम्लिका ॥ ३४ ॥  
 छागे तु करुणो लक्षो मल्लिकार्जुनप्रियः ।  
 जम्बीरे जम्भको दन्तशठो जम्भीरजम्भलौ ॥ ३५ ॥  
 नागरङ्गे तु नारङ्गो नार्यङ्गस्तक्रवासनः ।  
 त्वग्गन्ध एलको योगी मुचुलिन्दे तु निम्नकः ॥ ३६ ॥  
 न्युब्जे कर्मफलो भव्यः कर्मरङ्गः शठेश्वरौ ।  
 महीपतिर्दन्तशठः कर्ता नेता च कर्म च ॥ ३७ ॥  
 विकङ्कते ग्रन्थिलः स्याद्द्वयाग्रपात्र मधुच्छदः ।  
 सर्जेश्वकर्मणः साले तु कार्प्यकः सस्यसंवरः ॥ ३८ ॥  
 पीतसाले गौरसर्जप्रियकासनपीवराः ।  
 रक्तपुष्पोऽप्यथो सिन्धुसर्जे बाणः खरोऽर्जुनः ॥ ३९ ॥  
 रोहिते रौहिषो रोही रक्तो रौहितकोऽपि च ।  
 स्त्रीप्रिये वज्रुलोऽशोकः कङ्कलिः कर्णपूरकः ॥ ४० ॥  
 हेमपुष्पोऽप्यथाङ्गोले निचोलोऽङ्गोदशोधनौ ।  
 रसाले वरणः सेतुस्तिक्तशाकोऽश्मरीरिपुः ॥ ४१ ॥  
 दोषग्रहे तु कतको द्रावणः स्रवणः सरः ।  
 उल्लेखनीयो लक्ष्मीवांस्तेरस्तोयप्रसादनः ॥ ४२ ॥  
 राजादने फलाध्यक्षः प्रियकश्च मधुस्रवः ।  
 मधुपुष्पे मधुष्ठीलो वानप्रस्थो मधूकवत् ॥ ४३ ॥  
 गुडपुष्पोऽप्यद्रिजेऽस्मिन् गौरशाको मधूलकः ।  
 पारिभद्रस्य भेदे च मन्दारः पारिजातकः ॥ ४४ ॥  
 भूर्जपत्रे भुजो भूर्जो मृदुत्वक् चर्मचर्मिकौ ।  
 पीलौ गुडफलः खंसी श्यामश्चाथात्र शैलजे ॥ ४५ ॥  
 अक्षोडः कर्परालश्च नेमीये त्वतिमुक्तकः ।  
 चित्रकृत् तिमिशो नेमी वज्रुलोऽथायुगच्छदे ॥ ४६ ॥  
 सप्तपर्णो विशालत्वक्छारदो विषमच्छदः ।  
 कोविदारे चमरिको रक्तपुष्पो युगच्छदः ॥ ४७ ॥  
 काञ्चनारोऽप्यार्ग्वधे तु व्याघातश्चतुरङ्गुलः ।  
 आरग्वध आरेवतः शम्याकः प्रग्रहोऽर्ग्वधः ॥ ४८ ॥

कृतमालः सुपर्णश्च मदने तु फणी रसः ।  
 पिण्डीतके मरुवक इक्ष्वाकुर्गालवामनौ ॥ ४९ ॥  
 विचुलः पिचुलो राक्षः कैडर्यो विषपुष्पकः ।  
 काकदर्शश्छदनश्चीनो गरलः कण्टकीति च ॥ ५० ॥  
 कालस्कन्धे तिन्दुकोऽक्ली स्फूर्जकः शितिसारकः ।  
 काकेन्दौ कालपीलुः स्यात् कुलकः काकतिन्दुकः ॥ ५१ ॥  
 सिते लोध्रे महालोध्रः शवरश्चाथ लोहिते ।  
 तिरीटो मार्जनश्चिल्वः कृष्णेऽस्मिन् लोध्रगालवौ ॥ ५२ ॥  
 गुग्गुलौ कालनिर्यासो देवधूपो महेश्वरः ।  
 श्रीमान् स्निग्धः सर्वसहः श्लेष्मी तिक्तः कटुर्लघुः ॥ ५३ ॥  
 कामः पुरो जटायुश्च कुम्भोल्बखलकं वरम् ।  
 रज्जुदाले नीचुदारः कच्छुदारो गृहद्रुमः ॥ ५४ ॥  
 गूढवृक्षः श्लेष्मफलो विषघ्नो द्विजकुत्सितः ।  
 उदालो बहुवारो ना सेलुः श्लेष्मातकी न षण् ॥ ५५ ॥  
 शोभाञ्जने तीक्ष्णगन्धः शिग्रुः काशीवमोचकौ ।  
 उष्णो मुरुङ्गी रक्तेऽस्मिन् मधुशिग्रुः सुभञ्जनः ॥ ५६ ॥  
 गृञ्जनः स्वादुगन्धा च प्रियालुस्तु धनुः पटः ।  
 काष्मर्ये गोपभद्रा स्यात् काष्मरी कृष्णवृन्तिका ॥ ५७ ॥  
 श्रीपर्णी कुमुदा गृष्टिर्गम्भारी भद्रपर्णिका ।  
 कैडर्यं कटफलः कुम्भी श्रीपर्णी कुमुदेति च ॥ ५८ ॥  
 सुपार्श्वे स्यात् कन्दरालो गर्दभाण्डः कपीतनः ।  
 ताम्रपाकी फलेपाकी प्लक्षको गन्धमुण्डकः ॥ ५९ ॥  
 कदम्बे पुलकी श्रीमान् प्रावृषेण्यो हलीमकः ।  
 महाकदम्बके नीपो धूर्तो धूर्तारदीपनौ ॥ ६० ॥  
 वासन्ते स्यात् कुरवकस्तिलकः कुवको मधुः ।  
 शुक्लपुष्पः कुरुवको मदनो धूर्तनागरौ ॥ ६१ ॥  
 करञ्जे स्यान्नक्तमालः प्रकीर्यश्चरिबिल्वकः ।  
 कालिङ्गे पूतिकरजः पूतिके कलिकारकः ॥ ६२ ॥  
 बालपत्रे तिक्तसारः खदिरो दन्तधावनः ।  
 सिते तु तस्मिन् कदरः शल्यकश्च मरुन्धवः ॥ ६३ ॥  
 मरुद्भवे विटखदिरोऽप्यरिमोऽप्यरिमेदकः ।  
 कण्टकी चाप्यथैरण्डे हस्तपर्णोऽप्यलम्बकः ॥ ६४ ॥



रुवुः पञ्चाङ्गुलश्चञ्चुरामण्डस्तरुणोऽम्बुकः ।  
 गन्धर्वहस्तो रुवुको वातघ्नो व्याघ्रपुच्छकः ॥ ६५ ॥  
 प्रियके तु प्रियङ्गुवाख्या कारम्भा फलिनी फली ।  
 विष्वक्सेना बला वृन्ता गुन्दा गोबन्दिनी लता ॥ ६६ ॥  
 भावज्ञा सर्षपी स्त्र्याख्या वृत्ताङ्गी सुयमावनी ।  
 कन्या चापि कदम्बस्तु निचुलोऽम्बुज इज्जलः ॥ ६७ ॥  
 स्योनाके शोणकट्वाङ्गौ दीर्घवृन्तः कुटन्नटः ।  
 मण्डूकपर्णः पत्रोर्णो भल्लुकः शुकनाशकः ॥ ६८ ॥  
 भूतपुष्पो नटो ढङ्क ऋक्षण्डुण्डुक आरलुः ।  
 तिलके फलकः श्रीमान् सुगन्धो मुखमण्डनः ॥ ६९ ॥  
 कर्णपूरोऽल्पपुष्पश्च पुन्नागे सुरवल्लभः ।  
 किदिरे दीनकम्बोजौ तद्भेदे सुरपर्णिका ॥ ७० ॥  
 पारिभद्रे दुकिलिमं देवदारु सुराह्वयम् ।  
 पूतिकाष्ठं भद्रदारु पीतदारु च दारु च ॥ ७१ ॥  
 वृक्षोत्पले कर्णिकारः परिव्याधोऽथ भण्डिले ।  
 कपीतनः शिरीषश्च करके दाडिमी त्रयी ॥ ७२ ॥  
 कुटजे कुटचो वत्सः शक्राख्यो गिरिमल्लिका ।  
 एतस्यैवास्त्रियाविन्द्रयवभद्रयवौ फले ॥ ७३ ॥  
 पनसे कण्टकिफलः पयोऽण्डो जघनेफलः ।  
 कर्कशी मधुबीजश्च सरले पूतिकाष्ठकम् ॥ ७४ ॥  
 निम्बे पार्वतकैड्यद्वेषिच्छर्दनमाधिकाः ।  
 रोमशः पिचुमन्दश्च लकुचे लिङ्कुचो डहुः ॥ ७५ ॥  
 पिचुले भावुकः शाके पृथुच्छदहलीमकौ ।  
 उन्मत्ते धूर्तधुत्तूरधुस्तूरकितवाः शठः ॥ ७६ ॥  
 धूर्धूरः काञ्चनाह्वोऽथ त्रिपुरे मदमत्तकः ।  
 प्रेतालये तु तिक्तीकः शाखोटो गन्धमालहा ॥ ७७ ॥  
 कूसरे भीरुमार्जारकिंशुका इङ्गुदी न षण् ।  
 पिण्डारके तु पिण्डीकः कृष्णे त्वस्मिन् वलाहकः ॥ ७८ ॥  
 पुत्रजीवे त्वक्षफलो रुद्राक्षे तु महामुनिः ।  
 एकास्ये त्वत्र माभीदो द्विमुखे तु वरार्गलः ॥ ७९ ॥  
 चतुर्मुखे ब्रह्मसंज्ञः पञ्चवक्त्रे हराह्वयः ।  
 षण्मुखे तु गुहाख्योऽथ किम्पाके काकमर्दकः ॥ ८० ॥  
 तिन्तुडीकेऽम्लिका चिञ्चा शुक्तिनारी कपिप्रिया ।  
 तिन्त्रिणी चाप्यथो हेमपुष्पे चाम्पेयचम्पकौ ॥ ८१ ॥

हरणः शीतलः कान्तः कमनीयः पचम्पचः ।  
 हीने त्वङ्गिः कुम्भफलश्चाम्पेयो नागकेसरः ॥ ८२ ॥  
 करमर्दे वशश्चोलः कृष्णपाकफलैः पदैः ।  
 व्यस्तैः समस्तैर्युग्मैश्च पुंसि पञ्चदशाभिधाः ॥ ८३ ॥  
 शुषेणो विप्रकोऽप्यल्पफलेऽस्मिन् करमर्दिका ।  
 वन्दाके वृक्षको वन्दा जीवन्त्यपद्रोहिणी ॥ ८४ ॥  
 वृक्षादनी वृक्षरुहा सेव्यास्मिन् क्षीरवृक्षजे ।  
 तनुस्तुष्टो जयः कान्तः कुणिः कातुलको हुमः ॥ ८५ ॥  
 अग्निमन्थे हविर्मन्थोऽप्यरणिः पावको वशा ।  
 गणिकार्यप्यथो देवताडे वेणी खरागरी ॥ ८६ ॥  
 कालस्कन्धे तमालोऽस्त्री तापिच्छे काकतुण्डिका ।  
 बदर्या कुवली कोलिः कूली क्रूरा तिरीटिका ॥ ८७ ॥  
 लताकोलौ तु खलकी गिरिकोलौ तु सौरसा ।  
 हस्तिकोलौ महाघोष्ठा गोपघोष्ठा महाफला ॥ ८८ ॥  
 जलकोलौ तु सङ्गाली नरकोलौ तु कर्कशी ।  
 सृगालकोलौ हिंसाऽथ शमी सक्तुफला जया ॥ ८९ ॥  
 काकस्थात्यां कुबेराक्षी कृष्णवृन्ता फलेरुहा ।  
 आमोघा पाटलिर्न क्ली पूरण्यां शाल्मलिर्न षण् ॥ ९० ॥  
 काष्ठीला तूलिनी तूलफलाऽथ कूटशाल्मलौ ।  
 रोचनः शिशपायां तु तीक्ष्णधूमावसादनी ॥ ९१ ॥  
 कपिला पिच्छिला भस्मगर्भा मण्डलपत्रिका ।  
 जम्बवां त्रिसारा विरजा महाजम्बवां महाफला ॥ ९२ ॥  
 सुरसाथो राजजम्बवां सुफलः सुरभिच्छदः ।  
 काकजम्बवां तु मेघाभः शिवेष्टः शीतपल्लवः ॥ ९३ ॥  
 जम्बूदनीलजम्बूटौ शफर्या श्लक्ष्णपत्रकः ।  
 शिलीन्द्राश्मन्तकाम्लोटा धवे गौरधुरन्धरौ ॥ ९४ ॥  
 भस्मातक्यां त्रिलिङ्गायामग्निमुख्यप्यरुक्करः ।  
 कम्पिल्ले रोचनी गुण्डा रक्ताङ्गश्चन्द्रकर्कशौ ॥ ९५ ॥  
 सल्लक्यां सुरभिर्हस्तिप्रिया हस्त्यशना ध्रुवा ।  
 वैजयन्त्यां तु तर्कारी नादेयी च जयन्त्यपि ॥ ९६ ॥  
 घातक्यामनलज्वाला सुभिक्षा धातुपुष्पिका ।  
 स्नुषां समन्तदुग्धा स्नुग्वा नन्दासिपत्रिका ॥ ९७ ॥



सिद्धगुण्डः सिन्धुरण्यस्यां विपत्रायां त्रिकण्टकः ।  
 वज्री गण्डर्यथो घण्टारवायां शणपुष्पिका ॥ ६८ ॥  
 तुण्डिकेर्या रवा शीरा केसरा बदराफला ।  
 कार्पास्यकल्यत्र वन्यायां भारद्वाज्यपि कुष्ठनुत् ॥ ६९ ॥  
 विषण्ण्यां भञ्जिका भाञ्जी विष्टा ब्राह्मणयष्टिका ।  
 ब्रह्मदण्डी च पद्मा च सारपण्यां स्थिरा ध्रुवा ॥ १०० ॥  
 कोकिलाक्षस्तु काण्डेश्वरिभुरः क्षुरकः क्षुरः ।  
 वासके त्वाटरूपः स्यात् सिंहास्यो वाजिदन्तकः ॥ १०१ ॥  
 वाशा सिंही वैद्यमाता वार्ताक्यां दुष्प्रधर्षिणी ।  
 वातिङ्गनस्तु भण्डाकी वार्ताकुर्हिङ्गुलुः स्त्रियाम् ॥ १०२ ॥  
 गोष्ठवातिङ्गने त्वेला परुका जलजम्बुका ।  
 हस्तिवातिङ्गने त्विभ्या विशाला ददुनाशिनी ॥ १०३ ॥  
 बृहत्यां प्रसहा काली वार्ताकी हिङ्गुदी कुली ।  
 लतावृहत्यां सुस्निग्धा धन्या प्रसहनी लता ॥ १०४ ॥  
 निदिग्धिकायां सन्धानी महासन्धा गिरिप्रिया ।  
 कण्टकाल्यां परिकूरा कुल्या कुल्यस्पृशी वरा ॥ १०५ ॥  
 दुःस्पर्शा राष्ट्रिका सिंही कण्टकाली निदिग्धिका ।  
 दण्डोत्पले सहा देवा तलपोटे प्रमेहनुत् ॥ १०६ ॥  
 हयपुच्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा ।  
 मार्कवे भृङ्गराजः स्यात् पर्पणस्तु श्वपामनः ॥ १०७ ॥  
 कालमेघ्यां कृष्णफला वागूची वसुवञ्जिका ।  
 सोमवल्ली पूतिफली सोमराजिरवत्गुजः ॥ १०८ ॥  
 पारित्राण्यां त्रायमाणा त्रायन्ती बलभद्रिका ।  
 रेवत्यां रामदूती स्याद्धारुणी नागदन्त्यपि ॥ १०९ ॥  
 श्रीफल्यां क्लीतकी नीली नीलकेशी महारसा ।  
 ग्रामीणा रञ्जनी तुत्था कारवाही च नीलिनी ॥ ११० ॥  
 फल्गुः काकोदुम्बरिका बलयूर्जघनेफला ।  
 दास्यां षडश्रा शार्ङ्गष्टा काकजङ्घा विलोमिका ॥ १११ ॥  
 काकनासा तु काकाङ्गी जीवनीया शिरोरुहा ।  
 तृङ्घ्न्यां वयस्या काकोली काकमाची तु वायसी ॥ ११२ ॥  
 प्रत्यक्छ्रेण्यां सुतश्रेणी द्रवन्ती शम्बरी वृषा ।  
 चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी रण्डा मृषिकपर्ण्यपि ॥ ११३ ॥  
 देव्यां मूर्वा धनुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्णिका ।  
 मधूलिका तिक्तवल्का पीलुनी तेजनी स्रवा ॥ ११४ ॥

प्रत्यक्पर्णी तु शिखरी किणिही खरमञ्जरी ।  
 अपामार्गः शैखरिको धामार्गवमयूरकौ ॥ ११५ ॥  
 अजशृङ्गायां विषाणी स्याद् गोजिह्वादाविके समे ।  
 शङ्खिनी चोरपुष्पी स्यात् केशिनी चाप्यथो लघु ॥ ११६ ॥  
 वर्षा लङ्कायिका स्पृक्का मरुमाला लता मरुत् ।  
 कच्छूरके द्राविडकः काल्यको वेधमुख्यकः ॥ ११७ ॥  
 निर्गुण्ड्यामिन्द्रसुरसः सिन्धुवारश्च सिन्दुकः ।  
 कुठेरके तु पर्णासो मालोर्जरकठिञ्जरौ ॥ ११८ ॥  
 सितेऽस्मिन् मञ्जरी तीक्ष्णस्तीक्ष्णगन्धोऽर्जकोऽत्रः तु ।  
 सुगन्धौ श्वेतसुरसा भारती तुलसी शिवा ॥ ११९ ॥  
 अल्पपत्रस्तु जम्बीरः फणिर्जकसमीरणौ ।  
 अस्मिन् सुगन्धौ सौवासो मञ्जरीकमयूरकौ ॥ १२० ॥  
 तीक्ष्णे तीक्ष्णार्जको गौरी भूतघ्नी देवदुन्दुभिः ।  
 अल्पमात्रे तु वैकुण्ठो बिल्वगन्धो वचाच्छदः ॥ १२१ ॥  
 कालपर्ण्यां तु सुरभिः करालः कालमालकः ।  
 मालो ब्रह्मजटायां तु सलज्जं दानवाञ्जनम् ॥ १२२ ॥  
 पुण्डरीकं दमनकं कान्तं दान्तं मुनिः पुमान् ।  
 विष्णुकान्ता तु सुमुखी गवसी स्यान्महारसा ॥ १२३ ॥  
 ऋषणी द्रोणिका छत्रा चक्षुष्या द्रोणपुष्पिका ।  
 सूर्यावर्ते पणिकायां मोरटा मूलपुष्पिका ॥ १२४ ॥  
 मुण्ड्यां मुण्डितिका मुण्डा श्रमणी श्रमणी बुधा ।  
 रोदन्यां कच्छुरानन्ता ताम्रमूला दुरालभा ॥ १२५ ॥  
 यासो यवासो दुस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ।  
 वृश्चिकाल्यामुष्ट्रधूम्रपुच्छिका नागवृन्तिका ॥ १२६ ॥  
 सर्पदंष्ट्रमरा काली विषघ्नी वृश्चिकच्छदा ।  
 वाटपुण्यां बला वाट्या सम्मासा चान्नसंज्ञिका ॥ १२७ ॥  
 वाट्यालोऽतिबलायां तु पुष्पवीर्या जनी सहा ।  
 अश्वकन्दस्त्वश्वगन्धी तिक्ते तु कटुपर्पटौ ॥ १२८ ॥  
 ऋषभी त्वजहाध्यण्डा कण्डूरा प्रावृषायणी ।  
 कपिकच्छूः शूकशिम्बिरात्मगुप्ता च कच्छुरा ॥ १२९ ॥  
 अस्थिमांस्त्वस्थिसङ्घातोऽप्यस्थिसन्नहनोऽपि च ।  
 एकाष्टीला पापचेली स्थापनी वनतिक्तिका ॥ १३० ॥



पाठाम्बुषा विद्वकर्णी प्राचीना श्रेयसी रसा ।  
 गुडूच्यां कुण्डली धीरा छन्ना छिन्नरुहा धरा ॥ १३१ ॥  
 वत्सादनी सोमवल्ली विशल्या चक्रलक्षणा ।  
 जीवन्ती खरुहा देवी विषघ्न्यमृतवल्लिका ॥ १३२ ॥  
 दीर्घवल्ल्यां वेत्रवन्यौ कुरुवेत्रश्च भूरदः ।  
 गवाक्ष्यां किणिही जैत्री प्रत्यक्छेप्यपराजिता ॥ १३३ ॥  
 विष्णुकान्ता परास्फोताश्वसुरी शीतलात्र तु ।  
 श्वेतायां चारिणी सूर्या गिरिकर्णी गवादिनी ॥ १३४ ॥  
 नीलायां तु महाश्वेता निष्ठयान्ता स्थूलपुष्पिका ।  
 जिह्वायां समङ्गा विकसा मञ्जिष्ठाञ्जनवल्लिका ॥ १३५ ॥  
 पृथिनपर्ण्या पृथक्पर्णी लाङ्गली पदपर्णिका ।  
 गुहा कलशिधावन्यौ दीर्घा सा चित्रपर्णिका ॥ १३६ ॥  
 सिंहपुष्पी फेरुविन्ना चित्राङ्गी क्रोष्टुमेखला ।  
 नागर्था केशिका त्र्यशना त्रिपुटा त्रिपुटी त्रिवृत् ॥ १३७ ॥  
 रेचनी महती श्वासा माया कुठरुणात्र तु ।  
 कृष्णायां रोचनी श्यामा काला चित्रा सुषेण्यपि ॥ १३८ ॥  
 गोपा तु शारिवा भद्रा नागजिह्वा सुगन्धिका ।  
 व्योतिष्मत्यां पीतरसा लगणा कटभीङ्गुदी ॥ १३९ ॥  
 पारावतपदी पिण्या जीवन्ती स्फुटवल्लिका ।  
 नागवल्ली तु ताम्बूली तथा ताम्बूलवल्लिका ॥ १४० ॥  
 क्षुरे तु कण्टकिफलः स्त्रीगोभ्यां कण्टकः परः ।  
 गोक्षुरः स्थलशृङ्गाट इक्षुगन्धा पलङ्कषा ॥ १४१ ॥  
 श्वदंष्ट्रा भीरुपर्ण्या तु शतमूली शतावरी ।  
 इन्दीवरी बहुसुताप्यहेरुः पीवरीति च ॥ १४२ ॥  
 सुदर्शनायां चक्राङ्का दध्याली वृषपर्ण्यपि ।  
 जीवन्त्यां जीवनी जीवा जीवनीया मधुश्च सा ॥ १४३ ॥  
 चर्मपर्ण्या तु शार्ङ्गाष्टा सुताह्वयामुपोदिका ।  
 ब्रह्म्यां सत्यवती ब्राह्मी मत्स्याक्षी सोमवल्लरी ॥ १४४ ॥  
 मण्डूकपर्ण्या भण्डोरी भाण्डी योजनवल्ल्यपि ।  
 शोफघ्न्यां पूरणा पूरी वर्षाभ्वी जीवबोधिनी ॥ १४५ ॥  
 पुनर्नवा च रक्तायां तस्यां योग्या कटिल्लिका ।  
 श्वेतायां वृश्चिकोऽल्पायां दीर्घपत्री विटाटिका ॥ १४६ ॥  
 अस्या जात्यन्तरे स्वल्पे पूरणी हस्तिपूरणी ।  
 तुण्डिकेयां रक्तफला बिम्बोष्ठी पीलुपर्ण्यपि ॥ १४७ ॥

लज्जालुस्तु नमस्करी बदर्यञ्जलिकारिका ।  
 गण्डकाली खदिर्या तु लज्जालुः स्याच्छमीफला ॥ १४८ ॥  
 कलम्ब्यां शतपर्वा स्यात् कलम्बूर्वायसी वधा ।  
 पटुञ्चिकायां तु शिवः शान्तः स्वस्तिककुट्टौ ॥ १४९ ॥  
 निद्रालुः करुणो मानी वनालुः सुनिषण्णकः ।  
 मारिषे जीवशाकः स्यादत्राल्पे तण्डुलीयकः ॥ १५० ॥  
 मेघनादो विगण्डीरमथ स्युर्देवमारिषे ।  
 विभाजनो रसोत्सृष्टौ काणमारिष ओलकः ॥ १५१ ॥  
 लतामारिषतुवरौ वरशाकोलताटिकाः ।  
 जलजोऽसौ चञ्चटकः कुकुण्डे कबकोऽस्त्रियाम् ॥ १५२ ॥  
 भूवल्लूरमहिच्छत्रं भूस्फोटं भूमिकन्दकम् ।  
 छत्राकश्च सिलिन्धश्च मुकुलेऽस्मिन् पलाण्डुकम् ॥ १५३ ॥  
 सृगालवास्तुके त्वारुर्वास्तुके क्षारपत्रकः ।  
 प्रवालौ वीरशाकश्च श्रूषायां कासमर्दकः ॥ १५४ ॥  
 हरिपर्णे मल्लकोऽस्त्री सेकिमं बुस्तिका न षण् ।  
 नीलकण्ठोऽथ मरुजे शिवं चाणक्यमूलकम् ॥ १५५ ॥  
 मत्स्याक्ष्यां शालशालीनौ पत्तरो लोहमारकः ।  
 अगस्त्ये मुनिमार्जारावैगस्तिर्वज्रसेनकः ॥ १५६ ॥  
 शुक्रनासोऽप्यथो पश्चात् सुन्दरो ग्रीष्मसुन्दरः ।  
 कपित्थपत्र्यधःपुष्पी व्रणघ्नी भरसी भरा ॥ १५७ ॥  
 प्रपुञ्जाडे त्वेडगजो दद्रुन्नश्चक्रमर्दनः ।  
 घोषे कोशफला घण्टा घण्टाला फलिनी फली ॥ १५८ ॥  
 जाली पटोली भण्डाली कोशातक्यपि चात्र तु ।  
 पृथौ महाकोशातकी मृदङ्गः कृतवेधनः ॥ १५९ ॥  
 व्योस्न्यां स्वल्पफला ग्राम्या मृदङ्गः कृतवेधनः ।  
 अथ जिह्वा दीर्घफला मागधी मलनोत्तमा ॥ १६० ॥  
 बहुजाल्यां कोशफला वन्या तिक्तपटोलिका ।  
 कर्कोटक्यां कोशफला राजकोशातकी फला ॥ १६१ ॥  
 महाजाली पीतघोषा क्षोडो धामार्गवोऽपि च ।  
 हस्तिघोषे तरङ्गोऽल्पे त्वादाली देवदाल्यपि ॥ १६२ ॥  
 चाङ्गेर्या चुक्रिका दन्तशाठाम्बष्ठामल्लोप्यपि ।  
 सुषण्यां तिक्तच्छदनः कारवेल्लः कटिल्लकः ॥ १६३ ॥



राजवल्ल्युखवल्ल्यम्बुवल्ली रञ्जनवल्ल्यपि ।  
 सुगन्धके तु कर्कोटः किलासन्नः पटुच्छदः ॥ १६४ ॥  
 बृहत्कर्कोटके त्वैहो हस्तिकर्कोटको बली ।  
 पटोलके तु राजीवान् रवणः कर्कशः पटुः ॥ १६५ ॥  
 राजी राजामृतापाण्डुभूतेभ्यश्च फलः परः ।  
 तिक्ते राजपटोलश्च भीरुस्त्विर्वारुकर्कोटः ॥ १६६ ॥  
 चोदन्युर्वारुवालक्योऽप्यल्पा सा राजकर्कोटिः ।  
 तुम्ब्यां पिण्डफलालाबूः कटुतुम्ब्यां नृपात्मजा ॥ १६७ ॥  
 इक्ष्वाकुर्वासनी निम्ना वृन्ततुम्ब्यां तु तुम्बुका ।  
 अल्पतुम्ब्यां कुक्कुटाक्षो वृन्ते कर्कोलिचित्रलौ ॥ १६८ ॥  
 कालिङ्गोऽल्पेऽत्र चेक्ष्माणचेन्नालौ क्रोष्टुकर्कोटिः ।  
 कालिङ्ग्यां छत्रकः सोमः कर्कारुर्धनवासकः ॥ १६९ ॥  
 कूश्माण्डकः पुष्पफलः पीतपुष्पो नृपात्मजः ।  
 महाफला शाकफला सुभद्रा शङ्कुलापि च ॥ १७० ॥  
 सुखवासे शीर्णवृन्त उग्रगन्धः सुवासकः ।  
 त्रिलिङ्गे त्रपुषे तालुः छर्दनी हस्तिपर्णिनी ॥ १७१ ॥  
 चिद्भिटे पुनरुर्वारुर्मुगाद्यां गजचिद्भिटा ।  
 विटङ्कोऽतिमृगेर्वारुर्विशालैन्द्रीन्द्रवारुणी ॥ १७२ ॥  
 अथो गवाक्ष्यां गोडुम्बा चित्रा च कदले पुनः ।  
 वृषा वारवुषा रम्भा काण्ठीलानंशुमत्फला ॥ १७३ ॥  
 कदली दीर्घपर्णी च रम्भा सा गौरपर्णिका ।  
 कृष्णा तु लम्पा कदली माहेन्द्री तु बृहत्फला ॥ १७४ ॥  
 सुगन्ध्यल्पफला मोचा साण्ठी काण्ठी कदल्यसौ ।  
 बिभीतकखिलिङ्गः स्यात् कलिस्तिष्ठ्यः कलिद्रुमः ॥ १७५ ॥  
 बिभीदकः कर्षफलो भूतवासो वहेटकः ।  
 वैत्यः पापस्तुषः कल्पः कालेयस्तुमुलाक्षकः ॥ १७६ ॥  
 संवर्तश्च षडश्रायां त्रिलिङ्ग्यामलकी शिवा ।  
 धात्री कर्षफला तिष्या सेठ्याध्यण्डा भटा दृढा ॥ १७७ ॥  
 हरीतक्यां शुक्रसृष्टा नन्दिनी साधिकाभया ।  
 अव्यथा चेतकी पथ्या धारणी कालकूणिका ॥ १७८ ॥  
 गुञ्जायां कृष्णला ताम्रा शार्ङ्गश रक्तिका वरा ।  
 मूडामणिः कपिक्रोडा कालवृन्ती परा नव ॥ १७९ ॥  
 काकशब्दात् पीलुपीथ्यौ चिञ्चाणन्यदनी नखी ।  
 जङ्गा तिका च दक्षा च सा शुक्रा चेन्मधुस्रवा ॥ १८० ॥

द्राक्षायां कृष्णिका स्वाद्वी प्रियाला कालमेषिका ।  
 हारभूरा दारुफला मृद्वीका गोस्तनी रसा ॥ १८१ ॥  
 मालत्यां रेवती जातिर्युधिकायां मनोज्वला ।  
 मानवी चात्र पीतायां वासन्ती हेमपुष्पिका ॥ १८२ ॥  
 मल्लिकायां विचकिलो भूपदी मुक्तबन्धना ।  
 शीतभीरुर्मदयन्ती गवाक्षी तृणशून्यकम् ॥ १८३ ॥  
 देवमाल्यां धरारोहा गोधामाल्यां तु सेवनी ।  
 सुरुपायां तृणं वेश्यं काकमाल्यां बनोद्भवा ॥ १८४ ॥  
 आस्फोता चैकपटलमाल्यां बालाऽथ रक्तकः ।  
 बन्धूको बन्धुजीवश्च सप्तलायां विभावनी ॥ १८५ ॥  
 सुगन्धा ग्रैष्मिकाताना मालिका नवमालिका ।  
 शोफालिका तु निर्गुण्डी नीलिका निवहात्र तु ॥ १८६ ॥  
 सितायां श्वेतसुरसा वासन्त्यां माधवी लता ।  
 निस्सङ्गजा कान्तनाला प्रहसन्ती कुटुम्बिका ॥ १८७ ॥  
 अतिमुक्तश्च कन्यायां कुमारी तरुणी सहा ।  
 महासहायामल्लानः पीताम्लाने कुरण्डकः ॥ १८८ ॥  
 शोणे बली कुरवको भाटेऽस्मिन् कलशोदकः ।  
 किङ्किराते किङ्किराटः प्रलोही चापि लातकः ॥ १८९ ॥  
 सैरेयके तु फिण्टी स्त्री तस्मिन् कुरवकोऽरुणे ।  
 दासी सहाऽप्यार्तगलः कुरण्डश्च सनीलकः ॥ १९० ॥  
 पीतेऽव्ययः कुरवकः सहा स्त्री सहचर्यषण् ।  
 कुन्दे माष्यः शुक्रपुष्पो वासोऽथ करवीरकः ॥ १९१ ॥  
 प्रतिहासः शतप्रासः शितिकुम्भोऽश्वमारकः ।  
 चण्डालोऽश्वरिपुः श्वेते मरालोऽत्रातिलोहिते ॥ १९२ ॥  
 भुज उग्रविषः काकनासायां शिवमल्लिका ।  
 बकपुष्पस्तूलपुष्पः काकशीर्षः शिवप्रियः ॥ १९३ ॥  
 वसुभट्टः पाशुपत एकाग्रिलोऽम्बुको वसुः ।  
 नन्द्यावर्ते तु तगरस्तारावटनभोऽङ्गणौ ॥ १९४ ॥  
 जपायामोदपुष्पं स्यादत्र पद्ममादयोऽपि च ।  
 विदार्या भूमिकुम्भाण्डः सा तु कृष्णा पलाशिका ॥ १९५ ॥  
 कोष्टिका क्षीरशुक्लेक्षुगन्धिके क्षुविदारिका ।  
 श्वेता क्षीरविदारी सा महाश्वेतर्क्षगन्धिका ॥ १९६ ॥



शारद्यां लाङ्गली तोयपिप्पली शकुलादनी ।  
 गोलोभ्यां जटिलोग्रोग्रगन्धा तीक्ष्णा जया वचा ॥ १६७ ॥  
 मङ्गल्या चाथ शुक्ला सा षडग्रन्था जललम्बिका ।  
 श्यामा तु सा घुणाभीष्टा काश्मीरी देवदुन्दुभिः ॥ १६८ ॥  
 कैवर्ती मुस्तकेत्वासौ गुन्द्रायां भद्रमुस्तकः ।  
 महोदरी वरारोहा नादेयी बलयो वरम् ॥ १६९ ॥  
 मुस्तायां मुस्तकं न स्त्री सुगन्धः कर्णपूरकः ।  
 शकुलाक्षः श्वेतमध्ये हंसः पीठरदुन्दुभे ॥ २०० ॥  
 जलमुस्ते तु प्लवनं गोदर्भं परिप्लवम् ।  
 कुटन्नटं दशपुरं गोपुरं वर्तकं प्लवम् ॥ २०१ ॥  
 बालं तु पिङ्गलं वज्रं ह्रीवेरं दीर्घरोमकम् ।  
 चामरं चमकं ज्येष्ठं बहिष्ठं जटिलं जटा ॥ २०२ ॥  
 शैलमूलं तु कञ्जोरं पलाशो हिमजा जटी ।  
 अशोभ्यां मुसली ताली तालमूली फलिन्यपि ॥ २०३ ॥  
 खञ्जेऽरिष्ठो गुहोच्छिष्टो रसोनो गृञ्जनः कटुः ।  
 कायाङ्गं लशुनं दिव्यं महाकन्दाभृतोद्भवे ॥ २०४ ॥  
 जीर्णकञ्जं पलाण्डुस्तु श्वेतकन्दो मुकुन्दकः ।  
 हरितेऽस्मिन् लतार्कः स्यात् फरुण्डो दुद्रुमो रसः ॥ २०५ ॥  
 स्वल्पकन्दे हरिद्रक्ते गृञ्जनो गर्जनो गुजः ।  
 लशुनं दीर्घपत्रं च पिच्छनद्धो महौषधः ॥ २०६ ॥  
 फरुण्डश्च पलाण्डुश्च लतार्कश्च परारिका ।  
 गृञ्जनो यवनेष्टश्च पलाण्डोर्दश जातयः ॥ २०७ ॥  
 कन्दं त्वक्नी चित्रदण्ड उत्लुः कण्डूरसूरणौ ।  
 अशोभो दैत्यमदनः कचूस्तु दलकूर्चिका ॥ २०८ ॥  
 शकटश्चाथ कालार्चं नूतनं वेष्टितं दलम् ।  
 शोथशत्रौ महापद्मो मोहो माणो बृहच्छदः ॥ २०९ ॥  
 वराहकन्दे वाराही चक्रोष्ठ्यां मालुवा स्त्रियाम् ।  
 मध्वालुको मधुरसः कन्दलः कन्दली समौ ॥ २१० ॥  
 गौर्या हरिद्रा रात्र्याख्या हेमघ्नी काञ्चनी परा ।  
 रोचनी रञ्जनी पीता पिञ्जा पिण्डा मनशिशला ॥ २११ ॥  
 तोषणी वर्णिनी बाला विटकान्ता तरङ्गिणी ।  
 दाव्या दारुहरिद्रा स्यात् पीतदारुश्च पर्जनी ॥ २१२ ॥  
 पचम्पचा कर्कटिनी पर्परा पर्पटी वरा ।  
 कटक्कटेरी कालेयः प्रकोट्यां तु कटूकटम् ॥ २१३ ॥

कटुभृङ्गं शृङ्गिवेरमाद्रमाद्रकमस्त्रियौ ।  
 वेणौ तु वंशकर्मारौ मृत्युपुष्पस्तृणध्वजः ॥ २१४ ॥  
 त्वचिसारो यवफलः खेलस्तेतनमस्करौ ।  
 चपश्च तेषु पवनोद्धूतध्वनिषु कीचकाः ॥ २१५ ॥  
 निस्सुषौ विषमो वेणौ क्षुद्रे लगुडवंशिका ।  
 तृणराजे तलस्तालो महापत्रः फलेरुहः ॥ २१६ ॥  
 क्रमुके वाटिका घोण्टा गुवाकः क्रूर आसवः ।  
 कषयो रागवान् पूगः फले पर्कटमस्य तत् ॥ २१७ ॥  
 पकं जोडं खरं शुष्कं चिकणे चक्कचक्केण ।  
 दीर्घवृन्ते रामपूगो लतापूगो तु योजनः ॥ २१८ ॥  
 भूपूगो लघुकः क्षुद्रफले पाधोवकापि च ।  
 पूगे गैरेयकः शैलजातेऽथ स्याल्लताङ्कुरः ॥ २१९ ॥  
 हिन्तालस्तृणराजश्च नालिकेरे तु लाङ्गली ।  
 दाक्षिणात्योऽफलोऽबालः सुतङ्गः कूर्चकेसरः ॥ २२० ॥  
 सदाफलो बली चास्मिन् ह्रस्वे स्यात् खुड्डकोऽत्र तु ।  
 रक्ते स्वर्णोऽग्निकश्चाथ परिकोणास्य पट्टके ॥ २२१ ॥  
 खपुरः पूगपट्टोऽथ मधुक्षीरो महारसः ।  
 परुषः पाण्डुखर्जूरौ तस्मिन् खर्जूरिकाऽल्पके ॥ २२२ ॥  
 हलीमे केतकी न क्ली दीनो व्यञ्जनजम्बुलौ ।  
 स्त्रीभूषणो रजःपुष्पो गुप्तरागो बलीनकः ॥ २२३ ॥  
 ताल्यां दृढदला ताडी पत्रताली वराङ्गना ।  
 पत्रला फलपाकान्ता तालाद्याः स्युस्तृणद्रुमाः ॥ २२४ ॥  
 सवेणवस्ते त्वक्सारास्तृणानीक्षुयवादयः ।  
 इक्षुवृष्टयो मधुतृणो मृत्युपुष्पो महारसः ॥ २२५ ॥  
 खड्गपत्रोऽप्यथानिक्षुर्वायसालीक्षुपालिका ।  
 इक्षुभेदास्तु कान्तारवंशपुण्ड्रादयो नरि ॥ २२६ ॥  
 दर्भोऽश्ववालः काशिर्ना काशोऽस्त्री स्त्रीक्षुगन्धिका ।  
 कुशे मुनिः कुथो दर्भो वीनाहो यज्ञजागरः ॥ २२७ ॥  
 लताकुशो तु शीरी स्त्री धमने शुषिरो नलः ।  
 शरो मुखो भद्रमुञ्जो गुन्द्रस्तेजनकः खरः ॥ २२८ ॥  
 मुञ्जस्तु यज्ञियो मेध्यो मृदुत्वग्रहमेखलः ।  
 उत्लुकस्तूलपो दर्भ ऊर्ध्वमूलः खरच्छदः ॥ २२९ ॥



बालकेश्यां दृढदला जूर्णा कृकणपत्रिका ।  
 पुंभूभि बल्वजा वात्यां त्विल्कटः स्यात् पराशकः ॥ २३० ॥  
 स्याद्वीरणं वीरवृणं मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् ।  
 सेव्या मृणालनलदलामज्जानि जलाशयम् ॥ २३१ ॥  
 नियुतस्तम्बजट्टदैत्यगौरकुदानवम् ।  
 अभयं चावदाहं च दूर्वा तु हरितालिका ॥ २३२ ॥  
 वरा सहस्रवीर्या च भार्गवी चाथ सा सिता ।  
 गोलोमी शतवीर्या च गोऽर्गलस्त्वेरका वृणम् ॥ २३३ ॥  
 सौगन्धिकं देवजग्धं ध्यामकं कत्तुणं पुरम् ।  
 छत्रातिच्छत्रापालघ्नौ मालावृणकभूस्तृणे ॥ २३४ ॥  
 पुण्ड्रजीलस्तु वृणस्तम्ब इषीका तूलिका समे ।  
 शष्पं बालवृणं शादः सर्वं तु वृणमर्जुनम् ॥ २३५ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्या  
 भूमिकाण्डे वनाध्यायः ॥ ३ ॥

### पशुसङ्गहाध्यायः ॥ ४ ॥

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यः पारीन्द्रः श्वेतपिङ्गलः ।  
 व्यादीर्णास्यो महानादः शार्दूलस्तुत्यधिक्रमः ॥ १ ॥  
 कण्ठीरवो मृगरिपुः सुगन्धिहरितो हरिः ।  
 हलीचणस्तृणसिंहः स्यात् कूटरुर्मृगर्हिसकः ॥ २ ॥  
 व्याघ्रो मृगारिः शार्दूलो हिंसारुश्चन्द्रकी मृगात् ।  
 हुण्डश्चाल्पस्त्वयं द्वीपी चुलुको भेलमेहिनौ ॥ ३ ॥  
 तरक्षुस्तु मृगाजीवस्तिर्लत्सकमृगादनौ ।  
 पिण्डारकस्तु चित्राङ्गो महादंष्ट्रो वरोत्कटः ॥ ४ ॥  
 वराहः सूकरो घोणी वक्रदंष्ट्रो जलप्रियः ।  
 पीनस्कन्धः स्तब्धरोमा कामरूपी तलेक्षणः ॥ ५ ॥  
 भूदारः कुमुखो घृष्टिः स्थूलनासो बहुप्रजः ।  
 पङ्कक्रीडनकः पोथी किटिराखनिकः किरिः ॥ ६ ॥  
 भङ्गूको दीर्घरोमर्धो भङ्गाटो वृकधूर्तकः ।  
 विकरालोऽच्छभङ्गश्च गण्डके खड्गखड्गिनौ ॥ ७ ॥  
 वार्ध्रणसो गणोत्साहः कोकस्त्वीहामृगो वृकः ।  
 महिषः सैरिभोऽश्वारिर्जलात्मा गद्रवस्वरः ॥ ८ ॥  
 लुलायः कासरः शृङ्गी हेरम्बः कृष्णशृङ्गकः ।  
 जरन्तः कलुषः पोथी वीरस्कन्धो रजस्वलः ॥ ९ ॥  
 स्कन्धशृङ्गो यमरथः कटाहो दंशालालिकः ।  
 हंसकालीसुतश्चाथ सृजया महिषोऽसितः ॥ १० ॥  
 गवलश्च परस्वांश्च महिषः स्यादरण्यजः ।  
 मृगः प्लावी भीरुचेता वननो मरुको लिगुः ॥ ११ ॥  
 नित्यशङ्की च कृष्णस्तु कृष्णसारो निरञ्जनः ।  
 यज्ञाङ्ग एणस्ताम्रस्तु हरिणस्तृणसंवरः ॥ १२ ॥  
 राजीवस्त्वेष राजीमान् सितफोडः स चीनकः ।  
 शम्बरस्त्वल्पहरिणः पृषतस्तु स बिन्दुमान् ॥ १३ ॥  
 रुर्महान् कृष्णसारः कुरङ्गो हरिणो महान् ।  
 रोहिदृश्यो हरिणवन्मृदुशृङ्गः प्रतापसः ॥ १४ ॥



न्यकुस्तु शम्बराकारस्त्रिकेण विपुलोल्लसतः ।  
 परम्परस्तु गोकर्णः पोटरूपस्तु तत्समः ॥ १५ ॥  
 रौहिषो गर्दभाभासो रोहितः श्वेतराजिमान् ।  
 वातायुः स्याद्वातमृगो जवी वातप्रमीः शिवः ॥ १६ ॥  
 प्रियको रोमभिर्युक्तो मृदूश्चमसृणैर्घनैः ।  
 नीलः स श्वेतरखावानथवा श्वेतचन्द्रकः ॥ १७ ॥  
 कदली तु बिले शेते मृदुरूक्षोच्चकवुरैः ।  
 नीलाग्रै रोमभिर्युक्ता सा विंशत्यङ्गुलायता ॥ १८ ॥  
 श्यामिका तु श्वेतबिन्दुः श्यामला षोडशाङ्गुला ।  
 चतुरा तु घनस्निग्धरोमा श्यामा सचन्द्रका ॥ १९ ॥  
 कालिका त्वसिता यद्वा कपोता पिङ्गबिन्दुका ।  
 सामूना तु समूर्नुर्ना सार्धहस्तसमायता ॥ २० ॥  
 गोधूमाभाऽथवा कृष्णा स्निग्धोच्चमृदुरोमिका ।  
 चीनस्तु चीनसी स्त्रीत्वे कपोता त्रिंशदङ्गुला ॥ २१ ॥  
 मरुजा तूच्चमसृणमृदुपाण्डुरोमिका ।  
 रोमराजीमती मध्ये द्वादशाङ्गुलसंमिता ॥ २२ ॥  
 चनका तु चमूर्नुर्ना सिताभा यदि वासिता ।  
 कृष्णरोमानुविद्धा वा पुच्छोऽस्या न भवत्यपि ॥ २३ ॥  
 सेलिमस्तु मृदुश्वेतरूक्षोच्चघनरोमकः ।  
 चमूरुस्तु महाग्रीवः सितः केसरवान् जवी ॥ २४ ॥  
 कदली तु श्यामवर्णा हस्तायामा महोदरी ।  
 एते स्युः कृष्णसाराद्या मृगा अजिनयोनयः ॥ २५ ॥  
 शशतुल्या विजातिश्च रक्ताभा मृगमातृका ।  
 बिलेशया तु कृमिरा कुमारी तु हिमद्युतिः ॥ २६ ॥  
 कुचारुश्चारुपुच्छः स्यात् सुविषाणो वृषाकृतिः ।  
 कृतारुस्तु न निष्पुच्छो जायते हिमवत्तटे ॥ २७ ॥  
 रुचुस्तु शुक्लो मेषाभः स पीतः सूकराकृतिः ।  
 कृष्णे शृङ्गे च तस्याथ कृतमालो वृकाकृतिः ॥ २८ ॥  
 सृमरः स्याद्वालमृगः परुर्ना चमरी न षण् ।  
 कालपुच्छस्तु तत्प्रायो नामार्थेनैव भिद्यते ॥ २९ ॥  
 चारुकस्तु किशोराभः कन्दरस्तूच्चजानुकः ।  
 मृगाः स्युः कृष्णसाराद्यास्त एव पशवः सह ॥ ३० ॥  
 सिंहाद्यैश्च शशाद्यैश्च ग्राम्यैश्चैव गवादिभिः ।  
 शशस्तु रोमकर्णः स्यान्मृदुरोमा च शूलिकः ॥ ३१ ॥

गन्धर्वः स्याद्गोलपुसो रामस्तु वृकधोरणः ।  
 शरभस्तु गजारातिरुत्पादश्चाष्टपादपि ॥ ३२ ॥  
 गवयः स्याद् वनगवो गोवाही वाह्वारणः ।  
 कोलाङ्गकस्तु जलको भालुको भल्लुकाकृतिः ॥ ३३ ॥  
 पुरोही स्यात् कुलचरो ललनाक्षो वृकाकृतिः ।  
 कोटङ्गः स्याज्जन्तुधरो मार्जारी चमराकृतिः ॥ ३४ ॥  
 शालिजातस्तु खट्वासः पूतिः खट्वासिकापि च ।  
 शिवेव स्याद् गन्धमृगः कस्तूरी मृगपालिका ॥ ३५ ॥  
 अण्डौ तु तस्याः कस्तूरी राजार्ह शितिचन्दनम् ।  
 मार्जारिका वेधमुख्या मदनी गन्धचेलिका ॥ ३६ ॥  
 श्वाविच्छललशल्यौ तल्लोम्न्यना शलली शलम् ।  
 सृगालो भरुजः क्रोष्टा श्वभीरुर्मृगमत्तकः ॥ ३७ ॥  
 शयालुः सूचको घोरः फेरुफेरुण्डफेरवाः ।  
 मृगधूर्तो भूरिमायो गोमायुर्वृकधूर्तकः ॥ ३८ ॥  
 किखिः स्त्री क्रोष्टुभेदेऽल्पे पृथौ लोपाशगुण्डिवौ ।  
 वानरो मर्कटः कीशः कपिः शाखामृगो हरिः ॥ ३९ ॥  
 महावेगो दधिमुखः कुरङ्गो भल्लुकः पृथुः ।  
 वलीमुखो वनौकाः स गोलाङ्गुलोऽसिताननः ॥ ४० ॥  
 नीलशीर्षोऽप्यथ द्विवङ्को वानरो रोहिताननः ।  
 शृङ्गिणी सौरभेयी गौरर्घ्या माहेय्युषा शुभा ॥ ४१ ॥  
 अनड्वाह्यनड्वाह्यस्त तम्बा तम्पा निलिम्पिका ।  
 रजःपूता च कृष्णाऽसौ बहुला क्षितिसम्भवा ॥ ४२ ॥  
 सिता तु धवला पुण्ड्रा सुनन्दा जलसम्भवा ।  
 कपिला त्वग्निजा दाक्षी सुरभिः कामरूपिणी ॥ ४३ ॥  
 रक्तवर्णा रोहिणी स्याच्छीतला वायुसम्भवा ।  
 शबली तु प्रक्षराङ्गी सुमना व्योमसम्भवा ॥ ४४ ॥  
 वराङ्गा तु चतुर्वर्षा द्विवर्षा तु द्विहायनी ।  
 एकहायन्येकवर्षा बहुक्षीरा तु वज्रुला ॥ ४५ ॥  
 नैचिकी गौर्गवां श्रेष्ठा भद्रा गौर्गोमतल्लिका ।  
 काल्योपसर्या प्रजने पलिकनी बालगर्भिणी ॥ ४६ ॥  
 पष्ठौह्यन्या वशा वन्ध्या वेहद्रर्भोपघातिनी ।  
 अवतोका स्रवद्रर्भा वत्सकामा तु वत्सला ॥ ४७ ॥



चिरसूता वण्कयणी गृष्टिः सूतवती सकृत् ।  
 समांसमीना सा गौर्या प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥ ४८ ॥  
 पीनस्तनी तु पीनोद्धनी सुखदोद्या तु सुव्रता ।  
 दुःखदोद्या तु करटा प्रस्तुता प्रसवोन्मुखी ॥ ४९ ॥  
 द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा बहुसूतिः परेषुका ।  
 वेनुर्नवप्रसूता गौर्धेनुष्या बन्धके स्थिता ॥ ५० ॥  
 अभिवान्यान्यवत्सा गौर्वृषाकान्ता तु सन्धिनी ।  
 आपीनमूधो वृन्तं तु स्तनो वत्सस्तु तर्णकः ॥ ५१ ॥  
 विषाणी वृषभः शृङ्गी बाहो गौरक्षधूर्तिलः ।  
 उक्षा गौर्वृषलोऽनङ्वान् बाह्यः स्कन्धवहो वही ॥ ५२ ॥  
 सौरभेयो बलीवर्दो बाडवेयश्च शाकरः ।  
 षण्डस्तु गोपतिः श्रीमान् डङ्क इट्वर ईश्वरः ॥ ५३ ॥  
 ककुदी गोवृषो घोणः ककुद्धान् मदकोदलः ।  
 जातोक्षो जातमात्रोक्षा दम्यो वत्सतरः समौ ॥ ५४ ॥  
 महोक्षः स्यादुक्षतरो वृद्धोक्षस्तु जरद्वयः ।  
 आर्षभ्यः षण्डतायोग्यो नैचिक्याः प्राक् परे त्रिषु ॥ ५५ ॥  
 भग्नशृङ्गपशुः कूटः प्रष्टवाङ् युगपार्श्वगः ।  
 स्थूरी पृष्ठयः पृष्ठवाह्यः स्कन्धिकः स्कन्धवाहकः ॥ ५६ ॥  
 नस्योतो नस्तिते षोडन् षड्देऽथो धुरन्धरे ।  
 धुरीणधुर्यधौरेयाः प्रासङ्गादेस्तु वोदृषु ॥ ५७ ॥  
 प्रासङ्ग्यः शाकटो युग्यो हालिकः सैरिकदयः ।  
 एवं सर्वधुरीणैकधुरीणैकधुरा अपि ॥ ५८ ॥  
 कर्णः कर्णविहीनः स्यात् षण्डस्तु च्छिन्नपुच्छकः ।  
 गोमान् गोमी च गोस्वामी गोविन्दोऽधिकृतो गवाम् ॥ ५९ ॥  
 नैचिकी गोः शिरोदेशः सास्ना तु गलकम्बलः ।  
 गोशकृद्गोमयो न स्त्री गोग्रन्थिः शुष्कगोमयः ॥ ६० ॥  
 दोहलं तु करीषोऽस्त्री गोकुलं गोधनं समे ।  
 गोमहिष्यादिकं जीवधनं स्यात् पाशबन्धनम् ॥ ६१ ॥  
 छगस्तु छगलश्छागो लम्बकर्णः स्तभः पशुः ।  
 बस्तोऽजश्च छगी मञ्जी सर्वभक्षा गलस्तनी ॥ ६२ ॥  
 चुलुम्पा चित्रला हृद्या पर्णादा पलिकिन्यजा ।  
 इलिकस्तु वनच्छागो वालवीज्यो निरायसः ॥ ६३ ॥

मेधे शृङ्गिणसम्फालवृष्टिणपेत्वहुलुहदाः ।  
 एडकोऽप्युरणो मीढ उरभ्रो रोमशोऽप्यविः ॥ ६४ ॥  
 मेधी तु कुररी वेणी जालकिन्यविला रुजा ।  
 खररासभचकीवद्वाहबालेयगर्दभाः ॥ ६५ ॥  
 रुक्षस्वरो धूककर्णो नेमिर्भोरसहः शलः ।  
 चिरमेही गोर्दनकः कोलिण्टो बडबापतिः ॥ ६६ ॥  
 करभश्च मयस्तूष्ट्रो महाप्रीवः क्रमेलकः ।  
 दाशेरकश्च रवणः करभः स्यादसौ शिशुः ॥ ६७ ॥  
 करभाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः ।  
 श्वा सारमेयः शुनको भषणो मृगदंशकः ॥ ६८ ॥  
 दीर्घनादी गृहमृगः कुकुरः क्रोधनः शुनिः ।  
 यक्ष इन्द्रमहश्चालः कपिलो मण्डतः शुनः ॥ ६९ ॥  
 जिह्वापानः पुरोगामी कृतज्ञो रात्रिजागरः ।  
 कौलेयकोऽस्थिखादश्च भवनो भलुहोऽपि च ॥ ७० ॥  
 शुनी तु सरमा श्वाली विट्चारो ग्रामसूकरः ।  
 ओतुर्बिडालो मार्जार आखुमुक् पृषदंशकः ॥ ७१ ॥  
 जाहको गात्रसङ्कोची मण्डली नखरायुधः ।  
 पशुस्तु मलुको मोकः कपः शुद्धो जडश्चरिः ॥ ७२ ॥  
 बाले तु बर्करः सूता तूबरः शृङ्गवर्जितः ।  
 हिंस्रो व्याघ्रादिको व्यालः श्वापदो मरुलः शरिः ॥ ७३ ॥  
 पुच्छोऽस्त्री लूम लाङ्गूलं बालहस्तश्च बालधिः ।  
 खुरः शफः शको विष्ठा घासस्तु यवसः शरिः ॥ ७४ ॥  
 रोमन्थनन्तु रोमन्थो रोमोर्णोर्णास्तुकोऽपि च ॥ ७५ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे पशुसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ४ ॥



## मनुष्याध्यायः ॥ ५ ॥

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नरः ।  
 द्विपादो नहुषा गोधा त्राताः पञ्चजना नराः ॥ १ ॥  
 ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रा इति वर्णाश्चतुष्टये ।  
 उपवर्णास्तु सङ्कीर्णा विवर्णास्त्वन्त्यजातयः ॥ २ ॥  
 एकवर्णाः सवर्णाः स्युर्हीनवर्णास्तु जङ्गिताः ।  
 सवर्णं ब्राह्मणाद्राज्ञी सूते मूर्धावसिक्तकम् ॥ ३ ॥  
 वैश्याऽम्बष्ठं निषादं तु शूद्रा पारशवश्च सः ।  
 एते विवाहजाः पुत्रा व्यभिचारसुताः पुनः ॥ ४ ॥  
 अभिषिक्तः कुम्भकारः शूलिकश्च यथाक्रमम् ।  
 विप्रादावृतमुग्रस्त्री निषादी तु मनोजवम् ॥ ५ ॥  
 अम्बष्ठकन्या त्वाभीरं खञ्जमन्तावसायिनी ।  
 आयोगवी धिग्वनकं कुक्कुटी तु पराजकम् ॥ ६ ॥  
 भृज्जकण्ठी तु सौधातं शनकी तु बहिर्गरम् ।  
 वैदेहकी कारुविन्दं मैत्री रन्ध्रं भटी सटम् ॥ ७ ॥  
 चण्डाली तु श्वचण्डालं शबरी तु परिच्छदम् ।  
 कालकिञ्चं तु करणी यवनी यावशादनम् ॥ ८ ॥  
 नटी भटं खवी द्रोहं मागधी तु दमण्डकम् ।  
 पराजकी तु सिद्रुण्डं कारुविन्दी कुविन्दकम् ॥ ९ ॥  
 रथकारी रथाश्मानमावृती तु खरुञ्जकम् ।  
 सूता पारावतं सूते श्वपाकी पालुखञ्जनम् ॥ १० ॥  
 पुलकसी भर्मिणं सूते धीवरी तीवरं ततः ।  
 एते ब्राह्मणपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ११ ॥  
 सूते विप्रा नृपाद्वैश्या माहिष्यं यवनश्च सः ।  
 अश्वपण्यमनूढा सा शूद्राऽनूढैव शूलिकम् ॥ १२ ॥  
 उग्रमूढा निषादी तु वेणुकं कुक्कुटी कुटम् ।  
 तीवरी महिषं वेनी रट्टासं पुलकसी बकम् ॥ १३ ॥  
 चण्डाली रुचिटं मल्ली पल्लमुग्री भूषा परम् ।  
 श्वपाकी कलुषं सूता कीलुषं घर्घरी मिषम् ॥ १४ ॥  
 सिद्रुण्डी डिण्डिकं जल्ली भ्रुकुञ्चं शनकी कचम् ।  
 कची भ्रेणं भ्रुकुञ्ची तु पागलं पागली गिलम् ॥ १५ ॥

एते क्षत्रियपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ।  
 वैश्याद्वैदेहकं विप्रा क्षत्रकन्या तु मागधम् ॥ १६ ॥  
 शूद्रा तु करणं सैव जारात् कटकं ततः ।  
 कटकर्मा स वेनी तु वागुरं वेणुकी वटम् ॥ १७ ॥  
 अम्बष्ठी कोहलं रन्ध्री घर्घरं विन्दकी भ्रषम् ।  
 कारुविन्दी पराविद्धमुग्रीवेशं कुटी सटम् ॥ १८ ॥  
 कुक्कुटी पलिनं मेदी मालुकं मालुकी मकम् ।  
 चण्डाली नीलिकं वाटी मेणकं करणी वशम् ॥ १९ ॥  
 रथकारी सनालिङ्गं वैदेही वानवासिकम् ।  
 श्वपाकी पाणिशं मल्ली विबुकं डिण्डिकी कशम् ॥ २० ॥  
 मैत्री वाटं नटी भोलं प्रसूते कीलुषी कटम् ।  
 घर्घरी धर्मिणं घोलमित्येते वैश्यसूनवः ॥ २१ ॥  
 चण्डालं ब्राह्मणी शूद्रात् क्षत्रिया पारधेनुकम् ।  
 वेलवं सैव चौर्येण वैश्या त्वायोगवं ततः ॥ २२ ॥  
 चौर्यात् सा चाक्रिकं वेनी वंशिकं फलिनी कुथम् ।  
 निषादी कुक्कुटं भिल्ली शबरं कोहली नसम् ॥ २३ ॥  
 पुलकसी कवटं वाटी मञ्जनं मालुकी मलम् ।  
 वैदेहकी नीवलकं धीवरी कलशीनकम् ॥ २४ ॥  
 भृज्जकण्ठी कुवादुष्कं करणी कालशीनकम् ।  
 सूता मालसुपर्णाण्डौ सैरन्ध्री रथवारकम् ॥ २५ ॥  
 नटी भ्राणञ्जकं वाटी विमण्डं द्रमिडी द्रुहम् ।  
 कैवर्ती धीवरं रन्ध्री कलशं यवनी क्षुदम् ॥ २६ ॥  
 कारावती सुललिकं कुवादुष्की वशामखम् ।  
 चण्डाली पाण्डुकं द्रोही छाणकं महिषी पुरम् ॥ २७ ॥  
 वरुटी रुण्डकं घोली वीलकं कवटी पुटम् ।  
 एते शूद्रस्य पुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ २८ ॥  
 निषादाब्राह्मणी भेकं क्षत्रिया कालकुण्डकम् ।  
 वैश्या सूचिं हरिं शूद्रा सोऽपि चायोगवः कचित् ॥ २९ ॥  
 कैवर्ती बुरुलं भिल्ली शनकं शनकी रसम् ।  
 श्वपाकी गर्मुटं घोली घर्घरं द्रमिडी कणम् ॥ ३० ॥  
 वैदेही कलशं द्रोही भ्रेणकं छाणकी लुषम् ।  
 रथकारी मन्दुपालं मागधी मड्डुकैरिकम् ॥ ३१ ॥



आयोगवी तु कैवर्त निषादान्मार्गरश्च सः ।  
 एते निषादपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३२ ॥  
 जालं वैदेहकाद्विप्रा क्षत्रिया रथकारकम् ।  
 वैश्या धन्ववनं शूद्रा गैरुषं करणी कृमिम् ॥ ३३ ॥  
 अम्बष्ठी बेनमुग्री तु गर्गरं शनकी हनुम् ।  
 आयोगवी तु मैत्रेयं पुलकसी कणकुक्कुटम् ॥ ३४ ॥  
 निषादी मेदमन्धं तु सैव चेन्नान्यपूर्विका ।  
 एते वैदेहपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३५ ॥  
 मैत्रेयाद् ब्राह्मणी लालं क्षत्रिया जालभूषणम् ।  
 वैश्या छण्डभटं शूद्रा निषादी लोहमालकम् ॥ ३६ ॥  
 आयोगवी तु मधुकं घण्टिकं नान्यपूर्विका ।  
 एते मैत्रेयपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३७ ॥  
 विप्रा नाविकमम्बष्ठादस्मिन् कापि श्वपाकवाक् ।  
 वैणवं सैव माहिष्याद्रजकं पारधेनुकात् ॥ ३८ ॥  
 श्वपचं सैव चण्डालाश्चर्मकञ्चुकजीवनम् ।  
 मागधात्ताग्रजीवं सा तक्षार्णं करणादसौ ॥ ३९ ॥  
 आयोगवाश्चर्मकारं राज्ञी वार्मिकसूचकौ ।  
 माहिष्याश्चर्मकारं सा खनकं मागधादसौ ॥ ४० ॥  
 उद्बन्धं खनकाच्छूद्रा स्पृश्यमम्बरनेजकम् ।  
 अधोनापितमम्बष्ठी करणान्मत्स्यबन्धकम् ॥ ४१ ॥  
 वैश्या सामुद्रमाजीवेत् पण्यं सामुद्रमेव सः ।  
 निषादी धिग्वनाश्चर्मकारं कारावरोऽपि सः ॥ ४२ ॥  
 कारावरो निषादेन वैदेह्यामिति केचन ।  
 वैदेही पाण्डुसोपाकं चण्डालात् कुङ्कुणश्च सः ॥ ४३ ॥  
 आहिण्डिकं निषादात् सा कवटी तु दुरिञ्जकम् ।  
 निष्ठयाच्छूद्रा मधुश्रेणि शौण्डिकं मण्डहारकम् ॥ ४४ ॥  
 उग्री क्रमेलकं तस्मान्निर्णक्ता रजकश्च सः ।  
 सोपाकं पुलकसी निष्ठयाश्चण्डालादिति केचन ॥ ४५ ॥  
 अन्ध्री तु शबरान्निष्ठयं भिन्नं सा निष्ठयपूर्विका ।  
 किरातं पर्णशबरी शबरान्निष्ठयपूर्विका ॥ ४६ ॥  
 पुलिन्दपर्णशबरौ किराती निष्ठयपूर्विका ।  
 पुलिन्दश्वपचौ निष्ठयात् किराती नान्यपूर्विका ॥ ४७ ॥  
 रथकारं तु माहिष्यात् करणी माहिषाङ्गकम् ।  
 पुलकसं सैव चण्डालात् किरातात् पलगण्डकम् ॥ ४८ ॥

चण्डालात् पुलकसी डोम्बं निषाद्यन्तावसायिनम् ।  
 डोम्बी खपं सैव निष्ठयाद् बिभेणं हड्डिकं खपी ॥ ४९ ॥  
 तीवरी धीवरात् पौण्ड्रं बबरं यवनादसौ ।  
 पुलकसात् पामरं वेनाच्छुषं डोम्बाद्वाराणकम् ॥ ५० ॥  
 श्वपाकं क्षत्रुग्रस्त्री केचिदाहुविषयम् ।  
 चूचु किराती शबराद्वैदेहात् पुलकसात् कचित् ॥ ५१ ॥  
 निष्ठयात्तु वरुटी मदगुं बह्मरं तु किरातिका ।  
 निषादपुलकसाद्यास्तु पूर्वोक्ता इह नोत्तरे ॥ ५२ ॥  
 विप्रा ब्राह्म्याद् भृज्जकण्ठमावन्त्यं विप्रपूर्विका ।  
 अध्युढा वाटधान्यं सा शैखं सा नान्यपूर्विका ॥ ५३ ॥  
 सा पुष्पवं पुष्पवती सम्यगूढा द्विजन्मना ।  
 लिच्छिवि क्षत्रिया ब्राह्म्याज्जल्लं सा विप्रपूर्विका ॥ ५४ ॥  
 ब्राह्म्यपूर्वा तु सा मल्लं क्षत्रपूर्वा तु सा नटम् ।  
 प्राक्प्रसूतस्वजातिः सा वरुटं करणश्च सः ॥ ५५ ॥  
 सा वैश्यपूर्वा द्रमिडं शूद्रपूर्वा तु सा खषम् ।  
 वैश्या ब्राह्म्यात् सुधन्वानमाचार्यं विप्रपूर्विका ॥ ५६ ॥  
 सुधन्वाचार्य एको वा मैत्रं सा वैश्यपूर्विका ।  
 शूद्रपूर्वा द्विजन्मानं सात्त्वतं क्षत्रपूर्विका ॥ ५७ ॥  
 अपूर्वा भारुषं कारुं ब्रह्मक्षत्रविशाममी ।  
 ब्राह्म्यानां क्रमशः पुत्राः शूद्रा ब्राह्म्याच्छूकण्टकम् ॥ ५८ ॥  
 कुर्वन्त्यनुपनीता ये विवाहं ब्राह्मणादयः ।  
 ब्राह्म्या ब्राह्म्याश्च ते सर्वे तत्सुताश्चावृतासु ये ॥ ५९ ॥  
 अवरेटः सवर्णायां जाराज्जातः सवर्णकात् ।  
 पत्यौ जीवति कुण्डोऽसौ भर्तार्यसति गोलकः ॥ ६० ॥  
 अविवाह्यासु जाताश्च तथा स्युः कुण्डगोलकाः ।  
 ये च प्रव्रजितापुत्रास्तथा प्रव्रजितस्य ये ॥ ६१ ॥  
 क्षत्रकुण्डः पट्टबन्धो भोजः क्षत्रियगोलकः ।  
 देवप्रैष्यो विप्रकुण्डो ग्रामप्रैष्यस्तु गोलकः ॥ ६२ ॥  
 मणिकारो वैश्यकुण्डः शङ्करास्तु गोलकः ।  
 शूद्रकुण्डो मालवको घासहारस्तु गोलकः ॥ ६३ ॥  
 एषां लक्षणसिद्धयर्थं केषाञ्चिद् वृत्तिरुच्यते ।  
 उक्ता प्रागेव केषाञ्चिन्नान्ना केषाञ्चिदूच्यते ॥ ६४ ॥



मूर्धावसिक्तः सेनेशो धनुर्वेद्यस्त्रधारकः ।  
मणिमन्त्रौषधिज्ञश्च सोऽम्बष्ठो यानशिक्षया ॥ ६५ ॥  
चिकित्सागणितज्योतिर्ज्ञानी स्यादभिषिक्तकः ।  
अम्बष्ठो भृज्जकण्ठोऽस्य चिकित्सा शस्त्रसाधना ॥ ६६ ॥  
कट्याजीवात्स दौष्पन्तो निषादो ध्वजघोषणात् ।  
कुम्भकारो भाण्डवृत्तिरेष स्यादूर्ध्वनापितः ॥ ६७ ॥  
नाभेरूर्ध्वं वपन् पुंसां सूतकप्रेतकादिषु ।  
चित्रमर्हलनृत्तज्ञः कालीं पारशवोऽर्चयेत् ॥ ६८ ॥  
शूलिको दण्डयेदण्ड्यान् शूलारोपादिकर्मणा ।  
निषादो मृगघातात् स माहिष्यो नृत्तगीतवित् ॥ ६९ ॥  
स एव मङ्कुशोऽथासौ निषादः सस्यरक्षया ।  
जीवन् सवर्णा नक्षत्रैः सोऽम्बष्ठो वैद्यशास्त्रवित् ॥ ७० ॥  
महानर्मा च मदगुश्च स श्रेष्ठी वैश्यवृत्तितः ।  
अश्वपण्यस्त्वाश्विकाख्यः सोऽश्वव्यापारजीवनः ॥ ७१ ॥  
उग्रो दण्ड्यान् दण्डयेत् स दौष्पन्तो मत्स्यघातनात् ।  
निषादो व्यालादिवधाद्यवनः कुञ्जरग्रहात् ॥ ७२ ॥  
पुरो धावन् पारशवो राज्ञः शस्त्रञ्च धारयन् ।  
धनान्तःपुररक्षश्च शूलिकः शूलिकोपमः ॥ ७३ ॥  
करणो लेखको राज्ञां वारकः शकनामकः ।  
चुचूकः शाकताम्बूलक्रमुकादिकविक्रयात् ॥ ७४ ॥  
रथकारो निधिप्रभ्रद्यूतापणनिरूपणात् ।  
रथकारो व्यालमृगहिसावृत्तिरिति क्वचित् ॥ ७५ ॥  
उग्रः पारशवो दुर्गधनान्तःपुरपालनात् ।  
अन्वर्थः स्यात् कटकरो द्वादशैतेऽनुलोमजाः ॥ ७६ ॥  
इतिहासपुराणज्ञः सूतो देवांश्च पूजयेत् ।  
सूत ऊढासुतः पक्ता स्थानालङ्कारादिकृत् ॥ ७७ ॥  
सोऽनूढाजो रथाश्वानां वाहको रथकारकः ।  
वैदेहकस्य स्त्रीरक्षा स वन्दी स्तुतिजीवनात् ॥ ७८ ॥  
मौकल्यो रामको वस्त्रस्यूतिरञ्जनजीवनात् ।  
मागधोऽसावनूढाजो जङ्घाकरिकवृत्तिकः ॥ ७९ ॥  
वाण्याद्यवतरेच्छुद्धयै क्षालयेन्मलिनाम्बरम् ।  
वणिक्पथे मागधस्य वाग्भो राजप्रबोधनम् ॥ ८० ॥

चूचुको वेधनेनासौ स वन्दी स्तुतिकर्मणा ।  
वैतालिको बोधनया वेणुवीणादिवादनैः ॥ ८१ ॥  
धीवरो मार्गसन्त्राणाद् रामको दौत्यजीवनात् ।  
आयोगवः पुलकसश्च स वासःकांस्यजीवनात् ॥ ८२ ॥  
चौर्याज्जातः पुलिन्दोऽसौ स हन्ता दुष्टसत्त्वकान् ।  
चण्डालो भल्लरीकक्षो वद्ध्रीकण्ठो मलं हरेत् ॥ ८३ ॥  
स्यात् पारधेनुको वेनो गोधादिवधबन्धकृत् ।  
स निषादो मत्स्यघातान्मद्गुराघोषणेन सः ॥ ८४ ॥  
क्षत्ता दौत्यद्वारपाल्यात् पुलकसो मद्यविक्रयात् ।  
पेलवः पुनरस्पृश्यो जम्भको नृत्तगानवित् ॥ ८५ ॥  
आयोगवस्तैजसकृद्भूमिजम्भमणिवेधकृत् ।  
स तक्षा तक्षणाज्जीवन् स्थपतिर्नगराधिकृत् ॥ ८६ ॥  
अन्तावसायी वपनान्मागधश्चित्रकर्मणा ।  
स वैदेहः पाशुपाल्यात् तद्रसानां च विक्रयात् ॥ ८७ ॥  
पुलकसस्तान्तवेनासौ चाक्रिकस्तैलविक्रयात् ।  
लवणक्रीतकोऽसौ स्याल्लवणस्यैव विक्रयात् ॥ ८८ ॥  
एवमेकादश प्रोक्ता वर्णानां प्रतिलोमजाः ।  
गोधादिवधबन्धास्तु हरीणां पुलकसाश्च ते ॥ ८९ ॥  
रथकारो वास्तुवृत्तिरिज्याधानोपनीतिमान् ।  
आवृतानां तु हस्त्यश्वस्यन्दनेष्वधिकारिता ॥ ९० ॥  
शूर्पच्छत्रादिकर्माणि सूचीनां ते च पुलकसाः ।  
कैवर्तानां पक्षिपशुमृगघातनजीवनम् ॥ ९१ ॥  
आन्ध्राणां तु गृहद्वाररथ्यावस्करशोधनम् ।  
मेदानां चक्रवृत्तित्वं विष्णुमूत्रग्रहणोऽभिनमम् ॥ ९२ ॥  
आहिण्डिकानां कारासु बहिः स्थित्वाऽभिरक्षणम् ।  
मेदान्प्रचूचुमद्गूनामारण्यपशुर्हिसनम् ॥ ९३ ॥  
मैत्रेयकः प्रशंसेन्नृन् घण्टाताडोऽरुणोदये ।  
पारावरश्छत्रधरो दीपधृद्वाहको नृणाम् ॥ ९४ ॥  
कुर्यादासनरक्षां च चर्मच्छेदनसीवनम् ।  
कुक्कुटानां शस्त्रकृती राज्ञां कुक्कुटखेलनम् ॥ ९५ ॥  
मागधादपि शूद्रायां कुक्कुटो नाम जायते ।  
योऽन्वेष्टोद्यानवप्रादेवैश्याज्जातोऽपि कुक्कुटः ॥ ९६ ॥



निषाद्यां तन्तुवायोऽसौ वृक्षच्छेदावरोपकृत् ।  
 धिग्वनानां तु कार्मार्यं वेनानां भाण्डवादनम् ॥ १७ ॥  
 वेणः कुरीलिवश्चासौ लङ्घनप्लवनादिभिः ।  
 वेणो राज्ञीसुतोऽप्युग्रान्मायासम्मोहनादिकृत् ॥ १८ ॥  
 वैदेह्यम्बुजो वेनो नाट्यरङ्गावतारकृत् ।  
 आभीराणां जीवधनं कूटानामश्मतक्षणम् ॥ १९ ॥  
 नौवाहो मार्गरो नद्यां नाविकस्त्वन्धिनौगमः ।  
 शैखोऽभिचारं कुर्वीत कार्मणं भृजकण्ठकः ॥ २० ॥  
 मन्त्रौषधैर्द्विषत्सेनां वशीकुर्वीत पुष्पवः ।  
 आद्यन्त्यो वाटधानश्च स्वसेनाचित्तवृत्तिवित् ॥ २१ ॥  
 ब्राह्म्याः क्षत्रसुताः शत्रुकोशमन्त्रादिवेदिनः ।  
 खषाणां तोयाहरणं द्रमिलानां प्रपाकान्तः ॥ २२ ॥  
 नटानां करणानां च चारवृत्तिः स्फुटास्फुटा ।  
 भारुषस्त्वर्चयेन्मातृः श्मशानादि चतुष्पथम् ॥ २३ ॥  
 सुधन्वाचार्य ईशानं शाक्यचैत्यादि मैत्रकः ।  
 भूतप्रेतपिशाचांस्तु विजन्मा सूतिवेश्म च ॥ २४ ॥  
 सात्त्वतः पूजयेद्विष्णुमुक्तो भागवतश्च सः ।  
 सन्ति भागवताश्चान्ये ब्राह्मणा भगवत्पराः ॥ २५ ॥  
 श्वकण्ठकस्य शूद्रादि मालवस्याश्वपालनम् ।  
 वैणवीं पाण्डुसोपाकः सोपाको मूलवृत्तिकः ॥ २६ ॥  
 श्मशानचेलरक्षादिवृत्तयोऽन्तावसायिनः ।  
 वनश्मशानरक्षा तु चण्डालान्तावसायिनाम् ॥ २७ ॥  
 गानलप्रयोगाश्च प्रोच्यन्ते दस्युजातयः ।  
 ब्राह्मणस्य त्रयः पुत्रा वर्णस्त्रीष्वनुलोमजाः ॥ २८ ॥  
 शूद्रस्य च त्रयः पुत्रास्तास्वेव प्रतिलोमजाः ।  
 त्रयस्त्रयः क्षत्रविशोः प्रतिलोमानुलोमजाः ॥ २९ ॥  
 एते द्वादश वर्णानां पुत्रा एकैकशस्तु ते ।  
 चातुर्वर्ण्ये प्रसूयन्ते चतुरश्रतुरः सुतान् ॥ ३० ॥  
 ते चत्वारिंशदष्टौ च पूर्वैर्द्वादशभिः सह ।  
 ब्राह्मणाद्यैश्चतुर्भिश्च चतुष्पष्टिर्हि जातयः ॥ ३१ ॥  
 ते सर्वे दस्यवो दोषैश्चौर्याद्यैः सद्बहिष्कृताः ।  
 आसाविकस्तु सैरिन्द्रो दस्योरायोगवीसुतः ॥ ३२ ॥

दस्यूनां बहुजातित्वाद् बह्वयः सैरिन्द्रजातयः ।  
 प्रसाधनोपचारज्ञा मृगादिवधजीवनाः ॥ ३३ ॥  
 शाकपुष्पफलानां च विक्रेतारो बहिष्कृताः ।  
 राजस्त्रीणां सूतिकानां द्वास्थ्याः प्रेताम्बरावृताः ॥ ३४ ॥  
 विक्रेतारः सुरां कृत्वा सैरिन्द्राः स्युर्यथोचितम् ।  
 दस्युम्लेक्षणानां तु कृषिशस्त्रोपजीवनम् ॥ ३५ ॥  
 म्लेच्छाः स्युर्विप्रकृष्टा ये म्लेच्छवाचो वनौकसः ।  
 कार्या क्षत्रुप्रवैदेहैरन्या वृत्तिरगर्हिता ॥ ३६ ॥  
 मेदान्ध्रैर्गर्हिता वृत्तिरनुक्ताः कुलवृत्तयः ।  
 तत्रापि मातृकीं वृत्तिं गर्हितामनुलोमजाः ॥ ३७ ॥  
 भजेरन् प्रतिलोमास्तु पैतृकं कर्म गर्हितम् ।  
 अनुलोमा निकृष्टायामुत्कृष्टादुद्भवन्ति ये ॥ ३८ ॥  
 प्रतिलोमा विपर्यस्ता ब्राह्म्यास्तत्प्रतिलोमजाः ।  
 अनुलोमप्रतिलोम्यादान्तरालिकसंज्ञिताः ॥ ३९ ॥  
 वर्णमात्रानुलोमा ये षट् तेऽपशदसंज्ञिताः ।  
 षडपध्वंसजा ये स्युर्वर्णानां प्रतिलोमजाः ॥ ४० ॥  
 रजकश्चर्मकारश्च वेनो बुरल एव च ।  
 कैवर्तमेदभिह्लाश्च सप्तैता अन्त्यजातयः ॥ ४१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे मनुष्याध्यायः ॥ ५ ॥



## ब्राह्मणाध्यायः ॥ ६ ॥

ब्राह्मणो मुखजो विप्रो भूदेवो मैत्र एतशः ।  
 अग्रजन्मा वेदगर्भो बाडबश्च त्रयीपुषः ॥ १ ॥  
 संस्कारास्तु निषेकाद्याः श्मशानान्ता द्विजन्मनाम् ।  
 गर्भाधानं तु यौनं स्यात् प्राजापत्यं च मौलिकम् ॥ २ ॥  
 आधानिकं पुंसवनं पौस्नमप्यथ गार्भिणम् ।  
 सीमन्तोन्नयनं नामकर्मात्मन्त्रणिके समे ॥ ३ ॥  
 चौले तु चूडाकरणं क्षुरकर्म तु मुण्डनम् ।  
 मौण्डिकं भद्राकरणं वपनं परिवापणम् ॥ ४ ॥  
 सशिखं वपनं तोडं निशिखं भिक्षुलोचकम् ।  
 ओद्वितं त्वतिघृष्टं स्यात् पञ्चचीरोद्वितं पुनः ॥ ५ ॥  
 आडिण्डिकं त्रिषु परे मुण्डः स्यान्मुण्डितोऽशिखः ।  
 शिखावानवमुण्डः स्यात् पञ्चचूडस्तु सारणः ॥ ६ ॥  
 उपनायस्तूपनय आनायश्च वदकृतिः ।  
 ब्रह्मचारी व्रती वर्णी नैष्ठिकस्तु स आश्रमी ॥ ७ ॥  
 गायत्रस्तूपकुर्वाणो वैदिकोऽधीतवेदकः ।  
 प्राजापत्यः कृतोद्वाहः स एवौदुम्बरायणः ॥ ८ ॥  
 वर्णिलिङ्गी लिङ्गवृत्तिर्निस्स्वाध्यायो निराकृतिः ।  
 वान्ताशी भोजनार्थं यो गोत्रादि वदति स्वकम् ॥ ९ ॥  
 उच्छिष्टभोजनो देवनिवेद्यबलिभोजनः ।  
 जात्रिमात्रोपजीवस्तु यः स स्याद् ब्राह्मणब्रुवः ॥ १० ॥  
 अजपस्त्वसदध्येता देवाजीवस्तु देवलः ।  
 अघायवो बधरता विगीताः ख्यातगर्हणाः ॥ ११ ॥  
 अवगीताश्च हन्ता तु गुरुणां नरकीलकः ।  
 शिशिवदानो दुराचारो निषिद्धैकरुचिः खरुः ॥ १२ ॥  
 त्यक्तात्मा त्यक्तसंवासो ह्यवकीर्णी क्षतव्रतः ।  
 शाखारण्डोऽन्यशाखास्थो वर्णिलिङ्गयादयस्त्रिषु ॥ १३ ॥  
 वानकं तु ब्रह्मचर्यं नियमप्रथमौ व्रते ।  
 अग्नीन्धनं त्वमिकार्यमाग्नीध्री चामिकारिका ॥ १४ ॥  
 ग्रासे तु पावनी भिक्षा पुष्कलस्तच्चतुष्टयम् ।  
 ते चत्वारो हन्तकारो हन्तकारद्वयं घनः ॥ १५ ॥

मुष्ट्यष्टकेऽव्ययं किञ्चित् पुष्कलं तु तदष्टके ।  
 पुष्कलानि तु चत्वारि पूर्णपात्रकमस्त्रियाम् ॥ १६ ॥  
 भिक्षाचारः कौक्कुटिकस्त्रिषु स्यादौर्ध्वरथ्यकः ।  
 मौञ्जी तु मेखला क्षोणी मौर्वी त्वेकलमात्रिका ॥ १७ ॥  
 सौत्री तु धटिनी रम्भा दण्डस्तु दमयन्तिका ।  
 पालाशो दण्ड आषाढो व्रते राम्भस्तु वैणवः ॥ १८ ॥  
 बैल्वः सारस्वतो रौच्यः पैलवस्त्वौपरोधिकः ।  
 आश्वत्थस्त्वजितनेमिरौदुम्बर उल्लखलः ॥ १९ ॥  
 द्विजायनी ब्रह्मसूत्रं सूत्रं यज्ञोपवीतकम् ।  
 पवित्रञ्चोपवीतं तु प्रोद्धृते दक्षिणे भुजे ॥ २० ॥  
 प्राचीनावीतमन्यस्मिन्निवीतं कण्ठलम्बितम् ।  
 कृष्णाजिनं कर्णिकं स्यात् कृत्तिः स्त्री चर्म चाजिनम् ॥ २१ ॥  
 गुरुर्दिशानो बोधानः क्षाणी च ब्राह्मिकोऽथ सः ।  
 (देशिकः परमाप्तः स्यादात्मलाभकरो गुरुः ।)  
 मन्त्रव्याख्यादिनाऽऽचार्य उपाध्यायस्तु पाठनात् ॥ २२ ॥  
 पाठके तु पठिर्वेदपठिता कलपाठकः ।  
 पाठको धर्मशास्त्राणां धार्मिको धर्ममाणवः ॥ २३ ॥  
 एकतीर्थी सतीर्थ्यैकगुरु स ब्रह्मचार्यपि ।  
 धर्मभ्राता सहाध्यायी शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः ॥ २४ ॥  
 छात्रस्तु शिष्यो मोकः प्राडुपज्ञा ज्ञानमादिमम् ।  
 समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ ज्ञात्वाऽऽरम्भ उपक्रमः ॥ २५ ॥  
 पाठे बिन्दुर्ब्रह्मबिन्दुर्ब्रह्माञ्जलिरिहाञ्जलिः ।  
 ऋक् स्त्री साम यजुश्चेति वेदास्ते तु त्रयस्त्रयी ॥ २६ ॥  
 आथर्वणं पौरोहितं वेदाश्चत्वार एव ते ।  
 छन्दो ब्रह्म श्रुतिर्वेदोऽप्यथ विद्याश्चतुर्दश ॥ २७ ॥  
 शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दसां चयः ।  
 ज्योतिषामयनं चेति वेदाङ्गान्यङ्गिभिः सह ॥ २८ ॥  
 सीमांसया पुराणेन स्मृत्या न्यायगणेन च ।  
 आयुर्वेदो वैद्यशास्त्रं गान्धर्व गीतिशासनम् ॥ २९ ॥  
 अर्थशास्त्रं दण्डनीतिर्धनुर्वेदोऽस्त्रशासनम् ।  
 चत्वार उपवेदास्ते विद्याश्चाष्टादशोद्विताः ॥ ३० ॥  
 आन्वीक्षिकी तर्कविद्या निरुक्तं पदमञ्जना ।  
 नामशास्त्रे निघण्टुर्नो सर्वविद्या कदन्निका ॥ ३१ ॥



अध्यायः कामिकः काव्ये तूच्छासः सर्ग इत्यपि ।  
 प्रपाठकस्त्वाह्निकोऽथो अनुवाकश्च खण्डिका ॥ ३२ ॥  
 ब्राह्मणश्चेत्यवच्छेदा एकग्रन्थस्तु फक्किका ।  
 विध्यर्थवादमन्त्रास्तु खिलान्युपखिलानि च ॥ ३३ ॥  
 छन्दोभेदास्तु गायत्रीप्रमुखा एकविंशतिः ।  
 स्त्रियस्तासु क्रमात् क्लीबे स्युर्गायत्रीषिणहादयः ॥ ३४ ॥  
 मुखशोभा वेदशालिमुखे चित्रावनिश्च सा ।  
 विधा ह्युच्चारणाभेदाः स्पृष्टसंवृततादयः ॥ ३५ ॥  
 कादयो व्यञ्जना क्ली वा स्पर्शास्ते मावस्तालकाः ।  
 स्त्रियोऽन्तस्स्था यरलवा ऊष्माणः शपसाः सहाः ॥ ३६ ॥  
 विसर्गस्त्वभिनिष्ठानः परे त्रिध्वनुनासिकः ।  
 नीचोऽनुदात्तो निहत उदात्तः स्वरितोऽपि च ॥ ३७ ॥  
 वरिवस्या तु शुश्रूषा सेवा भक्तिरुपासना ।  
 परिचर्याऽऽराधनञ्च सेवनञ्च प्रसादनम् ॥ ३८ ॥  
 पूजाऽर्चना नमस्याऽर्चा सपर्यङ्ग्याऽर्हणाऽञ्जनम् ।  
 नमस्या तु नमस्कारो वन्दनं चाभिवादनम् ॥ ३९ ॥  
 उपसङ्ग्रहणं पादग्रहणेनाभिवादनम् ।  
 गृहस्थः स्नातकश्चक्री गृहमेधी गृहीति च ॥ ४० ॥  
 तस्मिन् सावित्रशालीनौ यः कुसूलेन धान्यभृत ।  
 पृथुचित्रः कुण्डधान्यो विघ्नक्षारी दितत्रयी ॥ ४१ ॥  
 यायावरश्चक्रचरः सद्यःप्रक्षालितान्नकः ।  
 परिवेत्ताऽग्रजेऽनूदे कृतदारपरिग्रहः ॥ ४२ ॥  
 परिवित्तस्तु तज्ज्यायान् परिवित्तिः कुरी च सः ।  
 भ्रातुर्मृतस्य जायायां संसक्तो दिधिषूपतिः ॥ ४३ ॥  
 स तु स्यादग्रदिधिषुर्योऽनुजो रमते तथा ।  
 स्यादग्रदिधिषुश्चासौ स्यादग्रदिधिषूरपि ॥ ४४ ॥  
 या ज्येष्ठायामनूढायामूढाऽग्रेदिधिषूरसौ ।  
 पुनरूढा पुनर्भूः स्यादूर्मिला त्यक्तभर्तृका ॥ ४५ ॥  
 देवरे विनियुक्ता या यात्यन्यं साऽभिसारिका ।  
 प्रसभा निरिणा मीढा निर्लज्जा धर्षणी च सा ॥ ४६ ॥  
 विस्तीर्णजानुर्विकटा नतजानुस्तु सिंहिका ।  
 दूषिका क्रोधविवशा पृषता श्वेतबिन्दुका ॥ ४७ ॥

अन्यानुरक्ता विगता नष्टा संस्पृष्टमैथुना ।  
 कन्याप्रसूतिजा जारी हारी नाम्नैव दूषिता ॥ ४८ ॥  
 हारिता पतितोत्पन्ना कोहली मुखरा भृशम् ।  
 जडा तु पाली कुब्जा तु दुर्दर्शा कालिकापि च ॥ ४९ ॥  
 धृष्टा प्रापणिका व्यङ्गा निघृष्टा कुत्सिता हता ।  
 अरणिर्निस्स्पृहा पालिर्हर्षुला विकला सरुक् ॥ ५० ॥  
 शरभा तु विशीर्णाङ्गी स्वल्पदेहा मद्धृषिका ।  
 द्योता पिङ्गलकेशाक्षी ऋषभा वृषलक्षणा ॥ ५१ ॥  
 वर्षकारी स्रवत्पाणिपादा राता विहारिणी ।  
 साङ्कारिका तु पित्रादिगृहेष्वग्न्यादिदायिनी ॥ ५२ ॥  
 वैधव्यलक्षणोपेता पतिघ्नी खण्डनाऽपि च ।  
 सुता त्वजीववत्साया मातुर्या सा विदूषिका ॥ ५३ ॥  
 विकटाद्यास्तु नोद्वाह्याः कन्यकाः सप्तविंशतिः ।  
 उपयामः परिणयो विवाहो दारसङ्ग्रहः ॥ ५४ ॥  
 उद्वाहोपयमौ पाणिग्रहो जम्बूलमालिका ।  
 कन्यादाने तु यदत्तं यौतकं यौतुकं च तत् ॥ ५५ ॥  
 गोपाली वर्णके शान्तियात्रावरनिमन्त्रणे ।  
 दौन्दुभी वरयात्रायां धूलिभक्ते तु वार्तिकम् ॥ ५६ ॥  
 स्यादिन्द्राणीमहे हेलिरुल्लुर्मुङ्गलध्वनिः ।  
 धोरी हुलिहुली चासौ सैव मङ्गलमालिका ॥ ५७ ॥  
 क्लीबे स्वस्त्ययनं पूर्णकलशे मङ्गलाह्निकम् ।  
 नन्दिकौ तोरणस्तम्भौ शुककूटस्तयोः स्रजि ॥ ५८ ॥  
 सैव वन्दनमालाऽपि कुहलिः पूगपुष्पिका ।  
 हस्तसूत्रं प्रतिसरस्तद्वन्धे हस्तकोहलिः ॥ ५९ ॥  
 तद्ग्रन्थिस्त्ववका धानी कर्णं हस्तलेपनम् ।  
 उत्सवेषु सुहृद्भिर्हृद् बलादाकृष्य गृह्यते ॥ ६० ॥  
 वस्त्रमाल्यादि तत् पूर्णपात्रं पूर्णानकं च तत् ।  
 उत्सवो मह उद्धर्ष उद्धवा हर्षवेणुकः ॥ ६१ ॥  
 क्षणः पर्व च कल्याणं भोज्यं तु जठरोत्सवः ।  
 मधुपर्कस्तु निष्ठङ्कः शङ्खपात्रं तु पाटली ॥ ६२ ॥  
 यज्ञाध्ययनदानानि याजनाध्यापनग्रहाः ।  
 षट्कर्माणि महायज्ञा देवयज्ञादिपञ्चकम् ॥ ६३ ॥



निवापः पितृदानं स्यादामपात्रं तु वापिमम् ।  
 मृतस्नानमपस्नानं श्राद्धं तु पितृभोजनम् ॥ ६४ ॥  
 दशाहे श्राद्धमाग्नेयं साज्यमेकादशेऽहनि ।  
 सम्प्रेषणी द्वादशेऽहनि मासप्राप्तौ तु मासिकम् ॥ ६५ ॥  
 एवं त्रिपक्षी षाण्मासी ज्ञेया सांवत्सरीति च ।  
 गयायां पिण्डदानं यत् पितृकार्यं तदार्थकम् ॥ ६६ ॥  
 आम्रसेकस्तु यस्तत्र सा चारी सा पितृप्रपा ।  
 त्रिष्वतिथ्यमतिथ्यर्थं विघसो विप्रशोषतम् ॥ ६७ ॥  
 आवेशिकः स्यादागन्तुरातिथ्यः प्राहुणोऽतिथिः ।  
 सूर्योदस्तु स सम्प्राप्तो यः सूर्येऽस्तं गतेऽतिथिः ॥ ६८ ॥  
 अथान्याधानमाधेयमाधानं चाग्निसङ्ग्रहः ।  
 होमस्तु सवनं होत्रं हवनं हुतिराहुतः ॥ ६९ ॥  
 अग्निहोत्रं नित्यहोमः कुत्सितास्त्वग्निहोत्रिणः ।  
 वीरोष्मप्रमुखास्तत्र वीरोष्मो न जुहोति यः ॥ ७० ॥  
 अग्निहोत्रं स्वयं वर्षमुत्सन्नाग्निस्तु वीरहा ।  
 अग्निहोत्रच्छलाद् याच्वापरो वीरोपजीवकः ॥ ७१ ॥  
 वीरविप्लावको जुह्वद् धनैः शूद्रसमाहृतैः ।  
 जातमात्रगृहीताग्निः स जातारणिर्द्विजः ॥ ७२ ॥  
 यस्यौपासन एवाग्निरेकाग्निः काल्पिकश्च सः ।  
 अग्न्याहितस्त्वाहिताग्निर्नमः पुनरनग्निकः ॥ ७३ ॥  
 पर्याधाताऽग्रजेऽनग्नौ कृताधानोऽग्रजस्त्वसौ ।  
 पर्याहितस्तथा न्यायः परियष्टृपरीष्टयोः ॥ ७४ ॥  
 इज्याशीलो यायजूकः सोमपीथी तु सोमपः ।  
 सुत्वा त्वभिषवाद्धूर्ध्वं चितवानग्निमग्निचित् ॥ ७५ ॥  
 यष्टा तु यजुरादेष्टा यजमानश्च होत्ववत् ।  
 सोमे तु दीक्षितः सोत्वो यज्वा स्यादिष्टवानसौ ॥ ७६ ॥  
 सर्ववेदाः स यो यागे दत्तसर्वस्वदक्षिणः ।  
 यज्ञत्यागी वृथाजातोऽपञ्चयज्ञो मलिम्लुचः ॥ ७७ ॥  
 याजका भरता यज्ञलिहः कुरव ऋत्विजः ।  
 यत्सुचो देवयवो वाधतो वृक्तबर्हिषः ॥ ७८ ॥  
 अध्वर्यूद्वातृहोतारो ब्रह्मा चेति महर्त्विजः ।  
 मन्त्राणां दैवतं छन्दो निरुक्तं ब्राह्मणान्यधीन् ॥ ७९ ॥

कृत्तद्धितादि चाज्ञात्वा यजन्तो यागकण्टकाः ।  
 याजयन्तो लैङ्गधूमाः कौटास्तूभयकारिणः ॥ ८० ॥  
 प्रसर्पको दृशीकुश्च दर्शनायाध्वरं गतः ।  
 उपद्रष्टा सदस्यः स्याच्छान्दसश्रोत्रियौ समौ ॥ ८१ ॥  
 अधीतसाङ्गवेदो यः सोऽनूचानो युगी गणिः ।  
 यज्ञो यागोऽध्वरः स्तोमः सप्ततन्तुर्मखः सवः ॥ ८२ ॥  
 सहसानुर्यजः सानुर्वसुनो विश्वहर्षकः ।  
 पाकयज्ञाः पार्वणाद्या हविर्यज्ञास्त्वसोमकाः ॥ ८३ ॥  
 पशुबन्धास्तु पशवः सोमाः सौम्याश्च सोमिनः ।  
 सवनैस्त्रिभिरेकाहास्तैरावृत्तैरर्गणाः ॥ ८४ ॥  
 ते दीक्षितैः कृताः सत्राण्यहीना याजकैः कृताः ।  
 अहीना द्वादशाहात् प्राक् सत्राण्यूर्ध्वं स तु द्वयः ॥ ८५ ॥  
 सर्वेऽमी यज्ञकृतवस्त एवैन्द्राः प्रजागमाः ।  
 ज्योतिष्टोमश्चतुष्टोमो ज्योतिरानृण्यमित्यपि ॥ ८६ ॥  
 अग्निष्टोमादयः संस्थाभेदाः सप्तास्य तन्तवः ।  
 सौमिकी दीक्षणीयेष्टिर्दीक्षा तु व्रतसङ्ग्रहः ॥ ८७ ॥  
 प्रायणीयोदयनीयौ त्रिष्वेष्टोऽन्त्ये च कर्मणि ।  
 पुरोडाशस्य प्रथमे प्रणिकं प्रथिकैरुके ॥ ८८ ॥  
 प्रोक्षण्यासादनं दैष्टं पत्नीसन्नहनं स्पशा ।  
 सुचां सम्मार्जनं शुद्धिः सुगासादनमाहुतिः ॥ ८९ ॥  
 हुतिराज्याधिश्रयणमाज्यावेक्षणमक्षतिः ।  
 स्यादिधमप्रोक्षणं कार्णश्चैत्यमाज्याधिवासनम् ॥ ९० ॥  
 वेद्यास्तरणमाप्रासः प्रस्तरः स्तरणं छदिः ।  
 त्रैहोत्रं समिदाधानमदितिस्तासु सेचनम् ॥ ९१ ॥  
 पावकं सोमपानं स्यान्मिश्रकं तु घृताञ्जनम् ।  
 उपांशुस्तु प्राणिकः स्यादन्तर्यामस्त्वपानिकः ॥ ९२ ॥  
 श्यैतनौधसयोगानं सान्नोरुपनिमन्त्रणम् ।  
 व्यञ्जनाः पशुमंस्काराः सामिकं त्वभिमन्त्रणम् ॥ ९३ ॥  
 परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च पशोर्वधे ।  
 अथ यज्ञोपकरणं यजत्रं यजनं च तत् ॥ ९४ ॥  
 होमधेनुस्त्वग्निहोत्री होमकाष्ठी तु नालिका ।  
 होमधूमस्तु निगणो होमभस्म तु वैष्णुतम् ॥ ९५ ॥



होमेन्धने स्यादिध्मोऽस्त्री पुमानेधः समित् स्त्रियाम् ।  
 इन्धनं त्वेध आलाद्यमहोत्रं तु तृणेन्धनम् ॥ ६६ ॥  
 काष्ठेन्धनं तु गरहं गोकरीषेन्धनं बुसा ।  
 यवादि त्वकृतं हव्यं तण्डुलास्तु कृताकृतम् ॥ ६७ ॥  
 अन्नादि कृतमामिक्षा दध्मोष्णं संयुतं पयः ।  
 पयस्या च क्षीरशरस्तन्मस्तुनि तु वाजिनम् ॥ ६८ ॥  
 सान्नाय्यं तु दधिक्षीरं पृषदाज्यं पृषातकः ।  
 पृषतोऽपि च दध्याज्ये पुरोडाशस्तु तृप्रकः ॥ ६९ ॥  
 हवनी सुक् सुचो भेदाः स्युर्जुह्वरुपभृद्भुवा ।  
 अथामिहोत्रहवणी श्रपण्याधारणः सुवः ॥ १०० ॥  
 चमसोऽस्त्री त्रिपात्राणि वायव्यं सौमिके त्रिषु ।  
 परिप्लवार्थदण्डा सुक् दर्वी तु घृतलेखनी ॥ १०१ ॥  
 चमूः स्त्री चर्म सुत्यार्थं प्रावाणस्त्वध्नयोऽश्मसु ।  
 विघ्नो घ्नो मुद्रे नरः फयोद्धननन्दनाः ॥ १०२ ॥  
 यूपोऽस्त्री संस्कृतः स्तम्भो होमयूपस्तु शौभिकः ।  
 यूपावग्निषु पार्श्वस्थावुपस्थाविति संज्ञितौ ॥ १०३ ॥  
 अग्निष्ठं त्रिषु यूपादि यदग्नेः सम्मुखे स्थितम् ।  
 यूपमध्यं समादानं यूपग्रं तर्म न स्त्रियाम् ॥ १०४ ॥  
 कटकेऽस्य चषालोऽस्त्री मूले तूपरमक्षते ।  
 वेष्टनं तु परिव्याणं कुम्बा सुगहना वृत्तिः ॥ १०५ ॥  
 यूपे सप्तदशारत्नावरत्निर्मेथिकोऽधरः ।  
 उत्तरेषां क्रमादाख्या उत्त्रासत्वरुमोचनः ॥ १०६ ॥  
 तथाञ्जनो वैयतिथः क्षालनः शवशीर्षकः ।  
 सुधन्वो रथगरुतः शैखालीकरञ्जकौ ॥ १०७ ॥  
 वासवो वैष्णवस्त्वाष्ट्रः सौम्यो माधुरवेजनौ ।  
 संघातिकारणिर्न क्ली कुशा वरुणकाष्ठिका ॥ १०८ ॥  
 खर्जनी कृष्णविषाणा वेदिर्भूमिः परिष्कृता ।  
 कुण्डं हवित्री हवनी कुण्डे स्याद्वर्तुले परम् ॥ १०९ ॥  
 वेदिः स्त्रियां चतुष्कोणे त्रिकूटं तु त्रिकोणके ।  
 तस्मिन्नास्तावसंस्तावौ स्तुवते यत्र सामभिः ॥ ११० ॥  
 चात्वालोऽस्त्री मृत्वनः स्यादुत्करोऽवकरालयः ।  
 शस्त्राण्युक्तानि सामानि स्तोत्राणि स्तुतयोऽपि च ॥ १११ ॥

याज्या पुरोऽनुवाक्या च याज्यापुटमिति द्वयम् ।  
 सौविष्टकृत्यौ संयाज्ये कूर्चालोलस्फुटी पशुः ॥ ११२ ॥  
 स्त्र्यावित् क्रमो विधिः कल्प उपकल्पोऽनुकल्पकः ।  
 पौर्वापर्यं त्वानुपूर्व्यं पर्यायोऽनुक्रमः क्रमः ॥ ११३ ॥  
 अनुपात्यय आवृत् स्त्री परिपात्र्यानुप्ययपि ।  
 पर्ययस्त्वतिपातः स्यादतिक्रम उपात्ययः ॥ ११४ ॥  
 इष्टं यागात्मकं कर्म पूर्तं खातादिकर्मणि ।  
 आचारो वृत्तचारित्रचरित्रचरणानि च ॥ ११५ ॥  
 वृत्तस्याध्ययनस्यापि सम्पत्तिर्ब्रह्मवर्चसम् ।  
 पतनं सत्पथाद् भ्रंशश्चर्या त्वीर्यापथस्थितिः ॥ ११६ ॥  
 हिसाकर्माभिचारः स्यान्मूलकर्म तु कार्मणम् ।  
 वशीकारः संवननं विकर्माकार्यसेवनम् ॥ ११७ ॥  
 त्यागो दानं वितरणं विश्राणनविसर्जनं ।  
 विहापनं निर्वपणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ ११८ ॥  
 उत्सर्जनं प्रादेशनमपवर्जनमंहतिः ।  
 अतोयं सात्त्विकं दानमुदपूर्वं तु पौष्टिकम् ॥ ११९ ॥  
 आशिषा शान्तिकं दानं काम्यदानं प्रवापणम् ।  
 आशासनेऽर्थना याज्या याचनाऽध्येषणाऽर्दना ॥ १२० ॥  
 भिक्षा च सनिरङ्गी स्यान्मार्गणा तु गवेषणा ।  
 पर्येषणा परीच्छा च मृगणाऽन्वेषणा मृगः ॥ १२१ ॥  
 यस्तु नीलवृषोत्सर्गः स षण्डो वृषपूतनः ।  
 उद्वन्धवृषभश्चायमापिङ्गलक इत्यपि ॥ १२२ ॥  
 लोहितः स्यान्नीलवृषः पुच्छशृङ्गखुरे सितः ।  
 यष्टिर्न ह्री स्त्रियां मीना खनित्री तु विशाखिका ॥ १२३ ॥  
 बद्धदर्भो वेदयष्टिः कुण्डिका ना कमण्डलुः ।  
 वैखानसो वनेवासी वानप्रस्थश्च तापसः ॥ १२४ ॥  
 कापोतो वर्षमात्रस्य स वन्याहारसङ्ग्रहात् ।  
 औदुम्बरस्तु षाण्माससंग्रही तुर्यकालमुक् ॥ १२५ ॥  
 परे त्रिषु तपस्वी स्यात्तापसः पारिकाङ्क्षिकः ।  
 चतुर्थकालिको भिक्षुर्व्यष्टिरष्टमकालमुक् ॥ १२६ ॥  
 चान्द्रायणरतश्चन्द्रव्रतिकः सौमिकश्च सः ।  
 षष्ठकाली तु बलिको नौसो नक्षत्रकालिकः ॥ १२७ ॥



पुष्पाढ्यस्तु स्वयंशीर्णपुष्पमूलफलाशनः ।  
 भुङ्क्ते पक्षान्तयोरेव यो यवान् स द्विकालिकः ॥ १२८ ॥  
 शीर्णकः शीर्णपर्णाशी वृक्षमूली तु मूलिकः ।  
 भूमौ विपरिवृत्त्यास्ते यः स पातालमूलिकः ॥ १२९ ॥  
 वर्षवातातपानङ्गे बिभ्रदभ्रावकाशिकः ।  
 शिवव्रती स यो विप्रः पादेनैकेन तिष्ठति ॥ ३० ॥  
 रुद्रव्रती क्षत्रियश्चेद् वाताहारस्त्वहिव्रती ।  
 मत्स्यव्रती जलाचारस्तृणशय्यस्तु पर्णशः ॥ १३१ ॥  
 तथैव स्यात् स्थण्डिलश औल्लकोऽङ्गारशाकटे ।  
 पाणिपात्रस्तु खपुटो दन्तोल्बलको व्युपः ॥ १३२ ॥  
 पिबत्यधोमुखो धूमं यः स धुर्यावकतिकः ।  
 जानुभ्यां जानुकस्तिष्ठन्नष्टप्रासो मुनिव्रती ॥ १३३ ॥  
 पदमासनी तु वसिकः क्षीराहारस्तु लोचकः ।  
 नीवारपिष्टकानष्टावशनाति मुनिपिष्टकी ॥ १३४ ॥  
 एकान्तर्येकान्तरिती तथा कालावलोलकः ।  
 और्वव्रती जलाहारो घृताशी घृतभुग् घृती ॥ १३५ ॥  
 तपो व्रतोऽस्त्री कृच्छ्रोऽस्त्री तच्च चान्द्रायणादिकम् ।  
 चान्द्रायणं चन्द्रव्रतं प्राजापत्यं तु कृच्छ्रकम् ॥ १३६ ॥  
 प्राजापत्यं तु गोकृच्छ्रं कृतं गोमूत्रयावकैः ।  
 शिशुकृच्छ्रं कृतं पच्छः कच्छ्रमद्भिस्तु यः कृतः ॥ १३७ ॥  
 कृच्छ्रः कृच्छ्रातिकृच्छ्रोऽसौ स्याद्वाहान्येकविंशतिम् ।  
 शिशुकृच्छ्रातिकृच्छ्रं तत्त्रिसन्ध्यं चेदपः पिबेत् ॥ १३८ ॥  
 प्राजापत्यं पाणिपात्रं पूर्णान्नेनातिकृच्छ्रकम् ।  
 तप्तकृच्छ्रं तदस्नानात् क्षीरसर्पिर्जलैः कृतम् ॥ १३९ ॥  
 एकैकं त्र्यहमभ्युष्णैः शीतैस्तैः शीतकृच्छ्रकम् ।  
 बिल्वेन मासं श्रीकृच्छ्रं मूलकृच्छ्रं बिसाशानात् ॥ १४० ॥  
 पानेन साम्बुसक्तूनां मासं वरुणकृच्छ्रकम् ।  
 त्रिस्सप्ताहं पयःपानं क्वचित् कृच्छ्रातिकृच्छ्रकम् ॥ १४१ ॥  
 पिण्याकाचामतक्राम्बुसक्तून् भुक्त्वा क्रमादहः ।  
 उपोष्य सौम्यकृच्छ्रं स्याज्जलाचामौ विनैव वा ॥ १४२ ॥  
 स्यात् तुलापुरुषोऽभ्यासादेकैकस्य दिनत्रयम् ।  
 सौम्यस्य तु द्विरभ्यासात् स्यात्तुलापुरुषः शिशोः ॥ १४३ ॥

उपवासस्तूपवस्तुः सन्यासः स्यादनाशकम् ।  
 द्वादशाहे पराको ना षोडशाहे तुरायणम् ॥ १४४ ॥  
 तुरायणद्वये सौम्यं चातुर्मास्ये परायणम् ।  
 पारायणं जलेनैतत् क्षीरेणैतत् परावसु ॥ १४५ ॥  
 एकान्तरितमर्धाशं षष्ठकालेषु षाष्टिकम् ।  
 गोमूत्रयावकैर्मासो वज्रोऽस्त्री यावकैः पुनः ॥ १४६ ॥  
 त्र्यहं वज्राभिषवणं पयसा तु पयोव्रतम् ।  
 पञ्चरात्रं पयःपानं सङ्गमः सङ्गतश्च सः ॥ १४७ ॥  
 मासं गोष्ठे पयःपानं गोव्रतं ब्राजिकं च तत् ।  
 पिबेद् ब्रह्मसुवर्चलामुपोष्योपस्करव्रतम् ॥ १४८ ॥  
 कणान्नस्यैव भोजनं द्वादशाहं वसुव्रतम् ।  
 कुशापीडः कुशवटो व्रतिनामासनं व्रसी ॥ १४९ ॥  
 योगपट्टस्तु चीना स्यात् पर्यस्तिरवसक्थिका ।  
 ऋषिस्त्रिकालदर्शी स्यान्मौनी वाचंयमो मुनिः ॥ १५० ॥  
 अगस्त्यः कलशीपुत्रस्तपनः पीतसागरः ।  
 और्वशेयः कुम्भयोनिरगस्तिर्विन्ध्यकूटकः ॥ १५१ ॥  
 मैत्रावरुणिराग्नेयो मुनिर्वातापिसूदनः ।  
 दक्षिणाशारतः काथिः सत्याग्निश्चाग्निमारुतः ॥ १५२ ॥  
 तस्य कौषीतकी भार्या लोपामुद्रा वरप्रदा ।  
 प्राचेतसस्तु वाल्मीकिर्वाल्मीकश्च कुशी कविः ॥ १५३ ॥  
 सालातुरीयको दाक्षीपुत्रः पाणिनिराहिकः ।  
 हलभूतिस्तूपवर्षः कृतकोटिकविश्च सः ॥ १५४ ॥  
 याज्ञवल्क्यस्तु योगाञ्जिर्योगेशो ब्रह्मरात्रिकः ।  
 आपवस्तु वसिष्ठः स्याद्यज्ञाढ्यस्तु पराशरः ॥ १५५ ॥  
 गौतमस्तु शतानन्दो यवक्रीतस्तु रोहितः ।  
 यायावरो जरत्कारुर्दुर्वासास्तु कुंशारणिः ॥ १५६ ॥  
 अष्टावक्रस्तु गर्भाजिर्दृढच्युस्त्रिवध्मवाहकः ।  
 मत्स्यगुश्चयवनोऽथ स्याद् गोतर्दीयः पतञ्जलिः ॥ १५७ ॥  
 अथ व्यालिर्विन्ध्यवासी नन्दनीनन्दनोऽपि च ।  
 कात्यायनो वररुचिर्मेधजिश्च पुनर्वसुः ॥ १५८ ॥  
 वात्स्यायनस्तु कौटिल्यो विष्णुगुप्तो वराणकः ।  
 द्राविलः पक्षिलः स्वामी मल्लनागोऽङ्गुलोऽपि च ॥ १५९ ॥



यतिः पाराशरी भिक्षुः परिव्राट् पाररक्षिकः ।  
 अनाशकी प्रव्रजितः कर्मन्दी मस्करी यती ॥ १६० ॥  
 परमात्मा परो ब्रह्म जीवः क्षेत्रज्ञ आविशः ।  
 शक्तिस्तु माया प्रकृतिर्व्योमाख्यं मूलकारणम् ॥ १६१ ॥  
 असदक्षरमव्यक्तं तमः सदसदात्मकम् ।  
 अलिङ्गं गुणसामान्यं गुणाः सत्त्वं रजस्तमः ॥ १६२ ॥  
 महान्तु लैङ्गिको ब्रह्मा लिङ्गज्येष्ठश्च चेतना ।  
 मनीषा शेमुषी बुद्धिर्धीः पूः ख्यातिर्विदा बुधा ॥ १६३ ॥  
 ज्ञप्तिः पण्डोपलब्धिस्तु संवित्तरनुभूश्चितिः ।  
 अवगत्यनुभूती चिज्ज्ञप्तिर्ज्ञानं च बोधनम् ॥ १६४ ॥  
 षोढा धीस्तस्वधीः पण्डा मेधा धीर्धारणक्षमा ।  
 ऊहापोहक्षमा चार्वा गृहीतिर्ग्रहणक्षमा ॥ १६५ ॥  
 शुश्रूषाबहुला श्रौषिः श्रवणज्ञा तु चत्वरि ।  
 धृतिस्तु तुष्टिः सन्तोषः प्रौढिस्तु कियदेतिका ॥ १६६ ॥  
 यत्नोत्साहोद्यमायामास्तरिषोऽध्यवसायवत् ।  
 बैराग्यं मर्दमुद्वेगो निर्वेदश्च विरागवत् ॥ १६७ ॥  
 धर्मोऽस्त्री सुकृतं पुण्यं पाप्माधर्मौ तु दुष्कृतम् ।  
 दुरितं पातकं पापं त्रस्तमंहोऽघकल्मषे ॥ १६८ ॥  
 स्मयोऽभिमानोऽहङ्कारो गर्वः स्त्री गर्विरस्मिता ।  
 शौटीर्यञ्चाथ शृङ्गारगर्वे घञ्जोरवेङ्करौ ॥ १६९ ॥  
 आहोपुरुषिका सा यद् गर्वादात्मनि गौरवम् ।  
 अहं पूर्यमहं पूर्वमित्यहम्पूर्विकोन्नतिः ॥ १७० ॥  
 सा स्यादहमहमिका योऽहङ्कारः परस्परम् ।  
 अत्याकारः परिभवस्तिरस्कारोऽप्यनादरः ॥ १७१ ॥  
 रीढाऽवमाननाऽवज्ञाऽप्यवहेलमसूक्ष्मम् ।  
 उच्चलं मानसं चेतश्चित्तमुच्चलितं मनः ॥ १७२ ॥  
 स्वान्तं गूढपदं हृच्च सङ्कल्पो मानसी क्रिया ।  
 मनो बुद्धिरहङ्कार इत्यन्तःकरणं त्रिधा ॥ १७३ ॥  
 आकृतिर्मतमाकृतं भावोऽभिप्राय आशयः ।  
 चित्ताभोगो मनस्कार उत्प्रेक्षा स्वमनीषिका ॥ १७४ ॥  
 मीमांसा तु विजिज्ञासा प्रत्यगृष्टिर्विकुण्ठना ।  
 तर्कमूलिकसम्पर्श ऊहो न क्ल्यूहना न ना ॥ १७५ ॥

सम्भाषना स्यादाशङ्का वितर्कस्तर्कमस्त्रियाम् ।  
 प्रतिभा प्रतिभासः स्यान्निर्णयोऽन्तश्च निश्चयः ॥ १७६ ॥  
 विचिकित्सा तु सन्देहः संशयो विशयो भ्रमः ।  
 विस्मरणं प्रस्मरणमुन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥ १७७ ॥  
 तन्द्रा कौसीद्यसालस्यं प्रमादोऽनवधानता ।  
 स्यादायल्लकमौत्सुक्यमुत्कण्ठोत्कलिका रतिः ॥ १७८ ॥  
 हृल्लेखो रणरणकोऽप्यभिध्या विषमस्पृहा ।  
 तृषिः काङ्क्षा स्पृहेहेच्छा वाङ्छा कामो मनोरथः ॥ १७९ ॥  
 अभिलाषश्च लिप्सा तु धनायेप्सा च गर्धना ।  
 गर्भिण्याः पुनरिच्छायां श्रद्धा दोहलदौहदे ॥ १८० ॥  
 रागोऽनुरागोऽनुरतिर्वीक्षायां मोहविस्मयौ ।  
 शोषुर्ना शृषकोदन्या पिपासाऽप्यपलासिका ॥ १८१ ॥  
 बुभुक्षेच्छाऽशनाया क्षुज्जिघत्साऽशिशिषा पचिः ।  
 राव्यलौल्यं तु कौहोलं तपसीच्छा प्रशान्तिकम् ॥ १८२ ॥  
 शोकस्तु मन्युरुत्खेदः शुक् स्त्री दैन्यानुशोचने ।  
 क्रोधः कोपोऽमर्षरोषौ रुषा रुट्क्रुत्क्रुधाः स्त्रियः ॥ १८३ ॥  
 मर्षः क्षमा तितिक्षा स्यादसूया दोषहम्पुणे ।  
 वैरं विरोधो विद्वेष ईर्ष्या मात्सर्यमुन्नते ॥ १८४ ॥  
 तङ्कोऽस्त्री भीर्भिया भीतिः साध्वसं भयनं भयम् ।  
 विप्रतिसारेऽनुशयः पश्चात्तापोऽनुतापवत् ॥ १८५ ॥  
 स्नेहोऽस्त्री प्रेम सौहार्दमजयं हार्दसौहृदे ।  
 आनन्दनं सङ्गतं स्यादप्रच्छन्नं सभाजनम् ॥ १८६ ॥  
 सख्यं सात्तपदीनं स्यात् कौतुकं तु कुतूहलम् ।  
 कौतूहलं विनोदश्च दुःखं पीडाव्यथाऽऽर्तयः ॥ १८७ ॥  
 सम्भरस्तु मदो हर्षः प्रमोदो मोदसम्मदौ ।  
 आनन्दो नन्दथुह्नादस्तृप्तिमुन्नन्दिहृष्टयः ॥ १८८ ॥  
 शर्म शातं सुखं सौख्यमयः शुभफलो विधिः ।  
 विधौ दैवं दिष्टभाग्ये विपाको भवितव्यता ॥ १८९ ॥  
 उपलिङ्गं त्वरिष्टं स्यादजन्यं डिम्बविप्लवौ ।  
 डमरोपप्लवोत्पाता उपसर्ग उपद्रवः ॥ १९० ॥  
 सम्पत् सम्पत्तिलक्ष्यौ श्रीर्विपत्तिर्विपदापदौ ।  
 अवसादस्तु सादः स्याद्विषादश्च श्लिक्कुर्न ना ॥ १९१ ॥



उग्रता तूष्णिका रौद्री करुणा तु दया कृपा ।  
 घृणाऽनुकम्पाऽनुक्रोशः कारुण्यं चाथ कौकृटे ॥ १६२ ॥  
 क्लेशायासौ जुगुप्सा तु हृणीया हृणिया घृणा ।  
 ऋतिः कुत्साऽप्युपक्रोशो गर्हा दोषश्च गर्हणा ॥ १६३ ॥  
 मन्दाक्षं ह्रीक्षपा लज्जा ब्रीला साऽपत्रपाऽन्यतः ।  
 हासिका तु हसो हासो हसनं हास्यघर्घरे ॥ १६४ ॥  
 व्याजो मिषं छलं छद्म निभं च कपटोऽस्त्रियाम् ।  
 दम्भो दण्डाजिनं कूटं दौन्दुभिश्छन्दनोपधा ॥ १६५ ॥  
 रेभटिः कुक्कुटिर्मिथ्याचर्या च परिकल्पना ।  
 जागरितं जागरणं जागर्या जागरा न षण् ॥ १६६ ॥  
 प्रमीला तामसी तन्द्रा स्वापस्तु स्वप्नसंशयौ ।  
 निद्रा गुडाका सुप्तं च स्वप्नस्त्वेवात्र दर्शनम् ॥ १६७ ॥  
 संस्कारमात्रजः स्वप्नः कामिको रसकोऽपि च ।  
 अट्टष्टजस्त्वत्र चाग्रो दोषजस्त्वाङ्गलौकिकः ॥ १६८ ॥  
 प्रदोषे बलकः स्वप्नो निशीथे लोचमालकः ।  
 नचकोऽपररात्रे स्यात् सद्यःपाको निशात्यये ॥ १६९ ॥  
 नन्दीमुखी आसहेतिः सुषुप्तिः सुखसुप्तिका ।  
 मूर्च्छा तु मूर्च्छना मौढ्यं वैचित्र्यं कश्मलं लयः ॥ २०० ॥  
 कालधर्मस्तु दिष्टान्तो निपातो गमिरन्धकः ।  
 कटमोषो भूमिलाभो दीर्घनिद्रा निमीलनम् ॥ २०१ ॥  
 पञ्चत्वं मरणं मृत्युरक्ली स्यादमतोऽस्त्रियाम् ।  
 सर्वलोकतते मृत्यौ मारिः क्ली मारकोऽस्त्रियाम् ॥ २०२ ॥  
 हृषीकमिन्द्रियं प्राणः प्राणा ना भूमिर्ना चासवः ।  
 प्राणापानादयस्त्वस्य वृत्तयः पञ्च वायवः ॥ २०३ ॥  
 आसस्तु आसितं सोऽन्तर्मुख उच्छ्वास आहरः ।  
 आनश्चाथ बहिर्वृत्तो निश्वासः पान एतनः ॥ २०४ ॥  
 स्थिरस्त्वाश्वास एती च स्यादूवद्धयं गुदानिले ।  
 तन्मात्राण्यविशेषाः स्युर्विशेषाः पञ्च खादयः ॥ २०५ ॥  
 महाभूतानि भूतानि लोको भुवनविष्टपे ।  
 मर्त्यलोको जीवलोको मर्त्योऽप्यथ भुवोऽव्ययम् ॥ २०६ ॥  
 स्वर्महश्च क्रमाल्लोका महरेव महानपि ।  
 प्राजापत्यो जनस्तस्माद् गोलोकस्तु तपो न पुम् ॥ २०७ ॥

ब्रह्मलोकः सत्यलोकस्तत्र पुर्यपराजिता ।  
 योगस्त्वाध्यात्मिकोऽथासावष्टाङ्गोऽङ्गैर्यमादिभिः ॥ २०८ ॥  
 अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यमसङ्गप्रहः ।  
 यमाः स्युर्नियमाः शौचसन्तोषतपआदयः ॥ २०९ ॥  
 आसनं करणं तस्य भेदाः पद्मासनादयः ।  
 उत्तानौ चरणावूर्वोर्न्यस्येन्नाभौ करद्वयम् ॥ २१० ॥  
 दक्षिणोत्तरमुत्तानं घ्राणदृक् पद्माकासनी ।  
 अर्धपद्मासनं त्वेकपाद ऊरोरधःस्थिते ॥ २११ ॥  
 निगूढचरणं तूर्वोरधश्चरणावुभौ ।  
 पादोपवेशस्त्वन्वर्थः संयुज्य पदयोस्तले ॥ २१२ ॥  
 ते चत्वारोऽपि पर्यङ्का पृष्ठवंशशिरोधरम् ।  
 नियम्य मीलिताश्चेत्पर्यस्तकरणेन वा ॥ २१३ ॥  
 नागदन्तकमूर्ध्वजोर्जानुस्थौ प्रसृतौ भुजौ ।  
 सूचीमुखमिदं पाणितलौ चेत्संहतौ मिथः ॥ २१४ ॥  
 अर्धसूची तु तौ द्वौ चेत् प्रादेशान्तरतो मुखात् ।  
 कुट्मलं मुकुलीभूतौ तौ चेदूर्ध्वमुखौ स्थितौ ॥ २१५ ॥  
 अस्पृष्टौ नागदन्तस्य स्फिचौ चेद् भुवमुत्कटम् ।  
 वहित्रकर्णः संयुज्य जङ्घायुग्मप्रसारणात् ॥ २१६ ॥  
 एष पादप्रसारोऽपि स्यादथो मरणालसम् ।  
 वस्तिशुण्डकमण्यस्य जङ्घिका चेत्प्रसारिता ॥ २१७ ॥  
 अर्धनाकुलमूर्ध्वजोर्जङ्घे बद्धे भुजेन चेत् ।  
 द्वाभ्यां चेन्नाकुलं दोभ्यामथ वज्रासनं यदि ॥ २१८ ॥  
 जङ्घे पद्मासनावस्थे तत्सन्धिनिहितौ करौ ।  
 ताभ्यामेव स्थितौ भूमावन्तरिक्षासनं च तत् ॥ २१९ ॥  
 गोधासनं तदेकेन स्थितश्चेत् पाणिना भुवि ।  
 पद्मासनस्य पदयोः पाणिना पृष्ठगामिना ॥ २२० ॥  
 वामेन दक्षिणाङ्गुष्ठं वामं चान्येन पीडयेत् ।  
 वेतालासनमित्येतदेकाङ्गुष्ठप्रहात् किणः ॥ २२१ ॥  
 कर्णयोर्जानुपार्श्वाभ्यां स्पर्शं जानुनिकुञ्चनम् ।  
 भुजवेष्टितजङ्घोरश्चूलिकाश्लेषितावनेः ॥ २२२ ॥  
 पृष्ठतो भुजपाशश्चेन्मृत्युसंयमनोऽपि सः ।  
 बिन्दुभेदोऽप्यथो जानुसन्ध्योः पादप्रवेशनात् ॥ २२३ ॥  
 स्वास्तिकोऽथ समस्थानं पादौ कुञ्चितसम्पुटौ ।  
 आसीनस्यासनान्येतान्यथ सुप्तस्य साम्यतः ॥ २२४ ॥



गवादीनां निषण्णानां स्याद्वीनिषदनादिकम् ।  
 उत्तानस्योर्ध्वपादत्वमित्येतद्विद्विभासनम् ॥ २२५ ॥  
 दण्डासनादिभेदेन पञ्चधा स्यात् स्थितासनम् ।  
 दण्डासनं स्यादन्वर्थं यत्र दण्डवदुत्थितः ॥ २२६ ॥  
 स्याद्वीरासनमुत्पादः कृत्वा भूमौ शिरः स्थितः ।  
 दुर्योधनासनमपि मृत्युसंयमनोऽपि सः ॥ २२७ ॥  
 दण्डपद्मासनं तस्मिन् जङ्घे पद्मासनोचिते ।  
 त्रिविक्रमासनं तादर्यासनमित्यपि साम्यतः ॥ २२८ ॥  
 प्राणायामः प्राणयम उत्खातो मानमस्य यत् ।  
 छोटिकास्त्रिः परामृश्य जानुस्फोटक्रियाऽथ ताः ॥ २२९ ॥  
 षट्त्रिंशन्मन्द उत्खातो द्विगुणत्रिगुणौ पुनः ।  
 मध्यमश्चैवोत्तमश्च प्रथमो द्वादशैव वा ॥ २३० ॥  
 प्रत्याहारस्त्विन्द्रियाणां विषयेभ्यः समाहृतिः ।  
 धारणा तु कचिद्व्यये चित्तस्य स्थिरबन्धनम् ॥ २३१ ॥  
 ध्यानं तु विषये तस्मिन्नेकप्रत्ययसन्ततिः ।  
 समाधिर्ना तदेवार्थमात्राभासनरूपकम् ॥ २३२ ॥  
 प्रयुक्तं धारणाद्येतत्त्रयमेकत्र संयमः ।  
 ओङ्कारः प्रणवस्तारस्तारकं सर्वविन्मतिः ॥ २३३ ॥  
 विद्वान् सन् कोविदः सूरिर्मैधावी पण्डितो बुधः ।  
 सुधीर्विपश्चित् सङ्ख्यावान् प्राज्ञो धीमान् विचक्षणः ॥ २३४ ॥  
 दीर्घदर्शी दूरदर्शी लघ्ववर्णो मनीष्यपि ।  
 त्रिवर्गो धर्मकामार्थाश्चतुर्वर्गः समोक्षकः ॥ २३५ ॥  
 सबलैस्तैश्चतुर्भद्रः शास्त्रीयं तु फलं गतिः ।  
 सान्द्रष्टिकं फलं सद्यः कार्यं कृत्यं प्रयोजनम् ॥ २३६ ॥  
 प्राप्तिरैक्येन सायुज्यं सार्ष्टिरैश्वर्यतुल्यता ।  
 ब्रह्मभूयं ब्रह्मभावो देवभूयादिकं तथा ॥ २३७ ॥  
 अमृतत्वं तु कैवल्यं मुक्तिर्मोक्षोऽपुनर्भवः ।  
 मोक्षावलम्बिनः प्रायः पाषण्डा बाह्यलिङ्गिनः ॥ २३८ ॥  
 ते च हेरुकशोभाद्याः प्रोक्ताः षण्णवतिः कचित् ।  
 दशोत्तरं शतं कैश्चित् पाषण्डानां प्रदर्शितम् ॥ २३९ ॥  
 शतत्रयं षष्ट्यधिकमुक्तं चीनेशसंसदि ।  
 वेषाजीवकृतान्ताद्यैस्तेषां भेदः परस्परम् ॥ २४० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 भूमिकाण्डे ब्राह्मणाध्यायः ॥ ६ ॥

### क्षत्रियाध्यायः ॥ ७ ॥

क्षत्रं बाहुजराजन्यौ भूशक्रः क्षत्रियो विराट् ।  
 राजा तु पार्थिवो भूभुग् राड् भूपो नृपतिर्नृपः ॥ १ ॥  
 नरेन्द्रो नरदेवश्च वश्यामात्यस्त्वधीश्वरः ।  
 सार्वभौमश्चक्रवर्ती नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥  
 स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ।  
 राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च ॥ ३ ॥  
 गुणाः साङ्ग्रामिकाः सर्वे स्वामिनस्त्वाभिगामिकाः ।  
 इन्द्रव्रतादयश्चाष्टौ सम्पत्तिर्विपदोऽपराः ॥ ४ ॥  
 तत्र याः शक्तयस्तिष्ठः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ।  
 षाड्गुण्यमस्त्राद्यभ्यासो गुणाः साङ्ग्रामिका इमे ॥ ५ ॥  
 षड्गुणा आसनं यानं द्वैधं विग्रह आश्रयः ।  
 सन्धिश्चेन्द्रयमादीनां वृत्तिमिन्द्रव्रतादिकम् ॥ ६ ॥  
 अथ विद्यार्जनं दानमष्टवर्गस्य वर्धनम् ।  
 द्विकपञ्चकषट्काणां विजयः सप्तवर्जनम् ॥ ७ ॥  
 उपायनैपुणं धर्म इत्याद्याः शोभनाः क्रियाः ।  
 दृष्टादृष्टोदयार्था यास्ते गुणा आभिगामिकाः ॥ ८ ॥  
 तत्राष्टवर्ग आरम्भः कृषिः सेतुर्वणिक्पथः ।  
 खनिस्थानं वनच्छेदो दुर्गं शून्यनिवेशनम् ॥ ९ ॥  
 द्विकं तु मनआत्मानाविन्द्रियाणि तु पञ्चकम् ।  
 षट्कं कामो मदो मानो लोभो हर्षो रुषाऽपि च ॥ १० ॥  
 मृगायाक्षाः स्त्रियः पानं वाक्पारुष्यार्थदूषणे ।  
 दण्डपारुष्यमित्येतन्महाव्यसनसप्तकम् ॥ ११ ॥  
 मुख्योपायास्तु सामाद्याः क्षुद्रोपायाः पुनस्तयः ।  
 मायोपेक्षेन्द्रजालं चेत्येते माया तु शाम्बरी ॥ १२ ॥  
 इन्द्रजालं तु कुहकमुपेक्षा त्ववधीरणम् ।  
 उपजापस्तु भेदः स्यात् साम सान्त्वं च सान्त्वनम् ॥ १३ ॥  
 तन्त्रं स्वराष्ट्रचिन्ता स्यादावापस्त्वरिचिन्तनम् ।  
 अदृष्टं वक्षितोयादि दृष्टं स्वपरचक्रजम् ॥ १४ ॥



राज्ञामहिभयं तु स्यात् स्वपक्षप्रभवं भयम् ।  
 हैमं सिंहासनं भद्रासनं त्वन्यन्नृपासनम् ॥ १५ ॥  
 छत्रं स्यादातपत्रं तन्नृपलक्ष्म नृपस्य चेत् ।  
 अभिसारस्त्वनुचरः सहायोऽनुप्लवोऽनुगः ॥ १६ ॥  
 सेवकश्चानुजीवी च यस्तु कोलेसहायकः ।  
 वैहासिकः केलिकिलस्तस्मिन् हासनिकोऽपि च ॥ १७ ॥  
 सामन्ता राजसन्धिस्था आरक्षाः पुररक्षिणः ।  
 मन्त्र्यमात्यौ तु धीकर्मसहायेऽतः परे त्रिषु ॥ १८ ॥  
 अध्यक्षः स्यादधिकृतः स्थाने चेत् स्थानिको ह्यसौ ।  
 क्षुद्रोपकरणेषु स्यादध्यक्षः पारिकर्मिकः ॥ १९ ॥  
 कुमारोऽमात्यको मन्त्री वर्गे धर्मे तु धार्मिकः ।  
 हट्टे धीकर्मिकः पुर्यां चोरिको दण्डपाशिकः ॥ २० ॥  
 रजते नैष्किको ग्रामे स्थायुको हेमि भौरिकः ।  
 महानसे पौरोगवो दण्डपालोऽखिले बले ॥ २१ ॥  
 अन्तःपुरेऽन्तर्बशिको गोपो ग्रामेषु भूरिषु ।  
 कालिकोऽधिकृतः शुल्के सौविदज्ञस्तु सौविदः ॥ २२ ॥  
 स्थापत्यकञ्चुक्यार्याश्च षण्डो वर्षवरः समौ ।  
 प्रदेशा पञ्चजनीनो भाण्डागारिक इत्यपि ॥ २३ ॥  
 दौवारिको वेत्रधरो द्वास्थः क्षत्ता च दर्शकः ।  
 द्वारपाले पुरोधास्तु सौवस्तिकपुरोहितौ ॥ २४ ॥  
 मौहूर्तिकमौहूर्तज्यौतिषिकज्ञानिगणकदैवज्ञाः ।  
 सावत्सर आदेशी कार्तान्तिक इत्यमी तुल्याः ॥ २५ ॥  
 यथार्हवर्णो मन्त्रज्ञो भीमरो गूढपूरुषः ।  
 चारोऽप्यथ वणिग्भिक्षुश्छात्रो लिङ्गी कृषीवलः ॥ २६ ॥  
 इति संस्थाचराः पञ्च तत्र भिक्षुरुदास्थितः ।  
 कृषीवलो गृहपतिश्छात्रे कापटिकश्चरे ॥ २७ ॥  
 सञ्चारास्त्वपरे चाराः स्थिताः संस्थाचरेषु ये ।  
 तीक्ष्णोऽतिहिंसनः शूरश्छत्री छद्मप्रधारवान् ॥ २८ ॥  
 अपसर्पाः कर्मकरव्याजात् स्थाने वसन्ति ये ।  
 वार्तिकः सन्देशहरो दूतः सान्देशिको रभूः ॥ २९ ॥  
 वैतालिको बोधकरो वन्दी तु स्तुतिपाठकः ।  
 मागधो मधुको घण्टाताडे घण्टिकचातिकौ ॥ ३० ॥

कृताभिषेका महिषी महादेव्यप्यथापरा ।  
 देवी राजकुलोत्था चेत् परिवृत्ती तु पूजिता ॥ ३१ ॥  
 वावाता तु प्रियतमा स्वामिनी त्वनृपात्मजा ।  
 फालाकली युद्धजिता नृपस्योढाः प्रिया इमाः ॥ ३२ ॥  
 अनूढास्तु प्रिया राज्ञः कलाज्ञा गणिकाः स्मृताः ।  
 गणिका सा प्रगणिका यानाप्तपरिचारिका ॥ ३३ ॥  
 आज्ञा स्यादाज्ञागणिका या राज्ञाप्तपरिच्छदा ।  
 अथालगन्धिकाऽप्याज्ञागणिका कुलसम्भवा ॥ ३४ ॥  
 या तु भोगाय वेश्यात्वं गता वैषयिकीति सा ।  
 बन्धकी तु गता वेशमर्थयानाप्तसत्कृतिः ॥ ३५ ॥  
 शय्यास्रग्भूषणादौ तु निधुक्ता परिचारिका ।  
 सञ्चारिका महाकार्ये कथायां द्रविणादिषु ॥ ३६ ॥  
 विचारिका तूपवनकक्षान्तरविचारिणी ।  
 आशीस्स्वस्त्ययनाभिज्ञा या वृद्धा सा महत्तरी ॥ ३७ ॥  
 प्रतिहारी तु राजानं सम्भावयति या सदा ।  
 आयुक्तिविनियुक्ता या सा ताम्बूलकरङ्गिका ॥ ३८ ॥  
 असिक्न्यन्तःपुरप्रेष्याऽनाप्तभोगा कुमारिका ।  
 विषयानन्तरो राजा शत्रुमित्रमतः परम् ॥ ३९ ॥  
 उदासीनः परस्तस्मात् पाष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ।  
 शत्रुर्दस्युरमित्रारी अरातिरहितो द्विषन् ॥ ४० ॥  
 द्वेषणः प्रत्यनीको द्विड् जिघांसुर्हिसनो रिपुः ।  
 सपत्नोऽसहनो वैरी दूषकः शात्रवः परः ॥ ४१ ॥  
 प्रत्यर्थी पर्यवस्थाता प्रतिपक्षो विपक्षकः ।  
 दुर्हृद् द्वेष्यभियातिश्च परिपन्थी विरोध्यपि ॥ ४२ ॥  
 मित्रं नपुं त्रिषु स्निग्धवयस्येष्टहितप्रियाः ।  
 निजात्मीयाप्तसुहृदः सहायः सद्गुचिः सखा ॥ ४३ ॥  
 कोशोऽर्थसञ्चयो राज्ञां भाण्डान्यर्था हि कोशगाः ।  
 आयोदयौ धनोत्पत्तौ तत्क्षयेऽपचितिव्ययः ॥ ४४ ॥  
 पर्याहारः प्रजास्वायो भागधेयो बलिः करः ।  
 उपदा तूपहारः स्यादुपग्राह्यमुपायनम् ॥ ४५ ॥  
 प्रदेशनं प्राशृतं च लम्बा तृकोच आमिषः ।  
 दण्डो दमः साहसोऽस्त्री द्विपाद्यो द्विगुणो दमः ॥ ४६ ॥



अपराधो मन्तुरेनः खसृमं विप्रियागसी ।  
 अपवादस्तु निर्देशो निदेशः शासनं तथा ॥ ४७ ॥  
 शिष्टिराज्ञाऽप्यथ न्यायो देशरूपं समञ्जसम् ।  
 राष्ट्रं तु विषयः सोऽपि युक्तो ग्रामैः शताधिकैः ॥ ४८ ॥  
 उपवर्त्तनमप्यस्मिन्मण्डलं तैः शताधिकैः ।  
 दुष्प्रापं तु पुरं दुर्गं यन्त्रशैलजलादिभिः ॥ ४९ ॥  
 वारकादीनि यन्त्राणि परिखाया बहिभवि ।  
 पादुका कण्टकी गर्तः पांसुच्छन्नो महापथे ॥ ५० ॥  
 तलयन्त्रं क्षुराकारं यदि वा क्रकचोपमम् ।  
 श्वदंष्ट्रगलशृङ्गाटमण्डूकाद्यन्वितार्थकम् ॥ ५१ ॥  
 शरभा जानुमात्री दा दारुजा जानुभञ्जिनी ।  
 अवपातस्तु हस्त्यर्थो गर्तश्छन्नस्तृणादिना ॥ ५२ ॥  
 स्यात् कण्टकप्रतीसारा रज्जुः कण्टकसञ्चिता ।  
 अहिपृष्ठं तु निर्मासपृष्ठास्थ्याभमयोमयम् ॥ ५३ ॥  
 उपस्करप्रस्त्रलिनी भूमिः स्थपुटपिच्छिला ।  
 छन्नैरेतैश्छन्नपथं सुरुङ्गादिः कृतश्च यः ॥ ५४ ॥  
 सैन्यं चक्रं बलं सेना चमूर्वाहिन्यनीकिनी ।  
 पताकिनी च पृतना ध्वजिनी च वरूथिनी ॥ ५५ ॥  
 सैन्यं तु भिन्नकूटं तन्नष्टावान्तरनायकम् ।  
 शून्यमूलं तदस्थानमन्तश्शाल्यं तदोषकम् ॥ ५६ ॥  
 त्रिहयं पञ्चपादात् यदेकरथकुञ्जरम् ।  
 सैन्यं सा पत्तिरेतस्यास्त्रैगुण्यात् स्युर्यथाक्रमम् ॥ ५७ ॥  
 सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः ।  
 अनीकिनीत्यनीकिन्यः पुनरक्षौहिणी दश ॥ ५८ ॥  
 प्रत्यासारश्चमूपाणिः सज्जनं तूपरक्षणम् ।  
 हस्त्यश्चरथपादात् बलं स्याच्चतुरङ्गकम् ॥ ५९ ॥  
 इभो मतङ्गजो हस्ती दन्ती कुम्भी करी रदी ।  
 सम्बेरमो गजो गर्जो द्विरदोऽनेकपो द्विपः ॥ ६० ॥  
 दन्तावलो महाकायो वारणः कुञ्जरोऽसुरः ।  
 महामृगः शूर्पकर्णः सामजः सिन्धुरः कपिः ॥ ६१ ॥  
 मदबृन्दः कुपी कम्बुः शुण्डालः षष्टिहायनः ।  
 भद्रो मन्द्रो मृग इति गजाः सङ्करजास्तथा ॥ ६२ ॥

अङ्गप्रत्यङ्गभद्रत्वं संक्षिप्तं भद्रलक्षणम् ।  
 पृथुत्वं श्रुतता स्थौल्यं संक्षिप्तं मन्द्रलक्षणम् ॥ ६३ ॥  
 तनुप्रत्यङ्गदीर्घोच्चप्रायो मृगगणो मृगः ।  
 भद्रमन्द्रो भद्रमृगो भद्रमन्द्रमृगोऽपि च ॥ ६४ ॥  
 मन्द्रभद्रादयोऽप्येवमिति सङ्करजा नव ।  
 ऊर्ध्वाधःकायभेदात्ते द्विधेत्यष्टादशोदिताः ॥ ६५ ॥  
 पञ्चवर्षो गजो बालः पोतस्तु दशवर्षकः ।  
 त्रिंशद्वर्षस्तु कलभो विक्को विंशतिवर्षकः ॥ ६६ ॥  
 कालेऽप्यजातदन्तश्च स्वल्पाङ्गोऽपि च मकणः ।  
 आज्ञाकृद्विनयग्राही यूथनाथस्तु यूथपः ॥ ६७ ॥  
 लग्नो मदकलो मत्तः प्रभिन्नोऽप्यथ निर्मदः ।  
 उद्वान्तोऽसौ परिणतस्तिर्यग्दन्तप्रहारकः ॥ ६८ ॥  
 औपवाह्यो राजवाह्यः सन्नाह्यः समरोचितः ।  
 स्थूलह्रस्वरदोऽसोढ ईषादन्त उदग्रदन् ॥ ६९ ॥  
 करेणुः करिणी धेनुः कल्पना सज्जना घटा ।  
 गण्डूषको बहिष्कर्षः सम्भोगश्चातिहस्तकः ॥ ७० ॥  
 स्थूलहस्तः फलीहस्तः पृथुहस्त इति क्रमात् ।  
 उपर्येते गजाङ्गुल्याः प्रदेशाः सा तु कर्णिका ॥ ७१ ॥  
 आकर्षः परिकर्षश्च बहिष्कर्षस्य पार्श्वयोः ।  
 किरीटी दन्तमूलं स्यात् प्रवेष्टस्तु ततः परम् ॥ ७२ ॥  
 मध्येमुखं तु वाहित्थं पिलाटौ तस्य पार्श्वयोः ।  
 कर्णमूले पीतलिका चूलिका पिप्पलीति च ॥ ७३ ॥  
 तस्यास्तु पर उद्धात आरक्षः कुम्भयोरधः ।  
 उरःपार्श्वौ तु विश्वोभौ दर्दरौ गलपार्श्वयोः ॥ ७४ ॥  
 करटोऽस्य कटो गण्डो गात्रं पूर्वोऽङ्घ्रिरस्य तु ।  
 मूलेधोऽधः प्रदेशास्तु श्वयश्च पलिपादकः ॥ ७५ ॥  
 कूर्मः सन्दानभागश्च प्रोह उत्सङ्ग इत्यपि ।  
 विशेषभागो जघनभागो वैशाख्यपि क्रमात् ॥ ७६ ॥  
 गात्रे सप्त नखादूर्ध्वं पिण्डकान्तमवस्थिताः ।  
 पुच्छवंशोऽपवशः स्यान्निष्कोशः कुक्षिमध्यकम् ॥ ७७ ॥  
 अवरं पश्चिमः पादस्तत्राधोऽधः स्थिताः क्रमात् ।  
 कालभागो बहिष्पार्श्वस्तथा जघनपिण्डका ॥ ७८ ॥



मण्डुकी शकुटा पाणिस्तलप्रोहश्च सक्थि च ।  
 सन्दानभागः कूर्मश्च प्रदेशाः स्युर्नखावधेः ॥ ७१ ॥  
 अत्यूहः ककुदं मेढ्रे क्षीरिका चूचुकान्तरम् ।  
 अथ पुच्छे स्थिता किङ्गी संवालो बालपुष्कलम् ॥ ८० ॥  
 बालपाशक इत्येवमधोऽधः स्युर्यथोत्तरम् ।  
 दन्तभागः पुरोभागः पुच्छभागस्तु पार्श्वतः ॥ ८१ ॥  
 मुखे पृषन्ति पद्मानि वमथुः करशीकरः ।  
 प्रवृत्तिर्मद आलानं स्तम्भस्तोत्रं तु वेणुकम् ॥ ८२ ॥  
 अन्दुको निगलो न स्त्री भिदुरं शृङ्गला त्रयी ।  
 कलापकः कण्ठबन्धस्त्रिपदी पादबन्धनम् ॥ ८३ ॥  
 चूषा कट्या वरत्रा स्यादङ्कुशोऽस्त्री सृणिर्न षण् ।  
 अपष्टं त्वङ्कुशस्याग्रं सूना दण्डोऽर्पिताङ्कुशः ॥ ८४ ॥  
 सूनापष्टान्तरं मन्या वक्रकीलो हरुदृकः ।  
 कीलस्तु पुण्यलः शङ्कुर्हिङ्गीरो लोहशृङ्गलः ॥ ८५ ॥  
 पश्चाच्चरणशङ्कौ तु पङ्क्तीशो घुटिकोऽपि च ।  
 कदलिः करिणां केतुः शृङ्गारो गजमण्डनः ॥ ८६ ॥  
 स्थासको नक्षत्रमाला कर्णशङ्कौ तु शङ्किलौ ।  
 गजोपचारकुशलो वाहितो मलहारकः ॥ ८७ ॥  
 आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः ।  
 तत्प्रधाना महामात्रा आरोहा गजजीवनाः ॥ ८८ ॥  
 पादकर्म यतं तेषां यातमङ्कुशवारणम् ।  
 वीतं तदुभयं यच्च निस्सारं हयकुञ्जरम् ॥ ८९ ॥  
 अश्वस्तुरङ्गस्तुरगो हयः सप्तिस्तुरङ्गमः ।  
 शालिहोत्री व्रती कुण्डी प्रोथी वारुः प्रकीर्णकः ॥ ९० ॥  
 कुदरो घोटकस्तार्क्ष्यः क्रमणो ग्रहभोजनः ।  
 पाकलः परुलः पीतिर्माषाशी हि सविक्रमः ॥ ९१ ॥  
 श्रीवृक्षकी वक्षसि चेद्रोमावर्तो मुखेऽपि च ।  
 मङ्गिकाक्षः सितैर्नैत्रैः कृष्णैरिन्द्रायुधो हयः ॥ ९२ ॥  
 पञ्चभद्रस्तु हृत्पृष्ठमुखपार्श्वेषु पुष्पितः ।  
 पुच्छोरःखुरपुच्छास्यैः सितैः स्यादष्टमङ्गलः ॥ ९३ ॥  
 आजानेयाः कुलीना स्युः पारसीकादयश्च ते ।  
 पारसीकादिसंज्ञास्तु पारसीकादिदेशजाः ॥ ९४ ॥

ये तु काम्बोजवाह्नीकवनायुजमुखा हयाः ।  
 ते निहीनकुलाः किञ्चित् (पश्चि)मोत्तरदेशजाः ॥ ९५ ॥  
 निहीनास्त्वञ्जलारदृशम्भला दोषिणः परे ।  
 तत्र शृङ्गी शृङ्गपदे मांसबुद्बुदवान् हयः ॥ ९६ ॥  
 सुसत्यन्यप्रभैर्कार्द्विघ्नः कराली तु जरुददः ।  
 ऋषभः ककुदावर्तो यमो हीनाधिकाङ्गकः ॥ ९७ ॥  
 इन्द्रवृद्धिस्तु निर्मुष्कः स्त्री सरी तु खुरे त्रिके ।  
 कृत्तिकापिञ्जरः स स्याद्यः पृष्ठपुञ्जपिञ्जरः ॥ ९८ ॥  
 अश्वानामागमे संज्ञा वर्णिता वर्णहेतवः ।  
 सिते द्वौ कर्ककोकाहौ खोज्जाहः श्वेतपिङ्गलः ॥ ९९ ॥  
 आनीलः स्यान्नीलकोशः पुङ्गाहः कृष्णवर्णकः ।  
 शोणः कोकनदच्छायस्त्रियूहः कपिलो हयः ॥ १०० ॥  
 कियाहो लोहितः पीतरक्तस्तूद्रकलाहकः ।  
 उराहस्तु मनाक् पाण्डुः कृष्णं जङ्गाद्वयं यदि ॥ १०१ ॥  
 पाटलो वोरुखानः स्याद् गर्दभाभः सुरूहकः ।  
 हलाभश्चित्रलो रेखाऽप्यस्य कृष्णाऽस्ति पृष्ठगा ॥ १०२ ॥  
 कलाहस्तु मनाक् पीतः कृष्णः स्याद्यदि जानुनि ।  
 खेल्गाहः कर्पलच्छायः पाण्डुवालधिकेसरः ॥ १०३ ॥  
 पीतस्तु हरियाः पीतहरिते हरिहालकौ ।  
 पीयूषवर्णे सेराहः पङ्गुलः सितकाचसः ॥ १०४ ॥  
 सर्व एवान्यसंज्ञाः स्युः कर्काद्याः पुण्ड्रके सति ।  
 कोकुराहः खुरराहो हलुराह इति क्रमात् ॥ १०५ ॥  
 कर्काद्याः खुरराहस्तु फाले रेखा च पृष्ठगा ।  
 सरराहः सेरराहो द्वौ सेराहे सपुण्ड्रके ॥ १०६ ॥  
 अश्वपोतः किशोरः स्याद्दाम्यश्वा वडबाऽवती ।  
 लुठितोऽश्व उपावृत्तः सुकरो दुर्विनीतकः ॥ १०७ ॥  
 अह्नाऽश्वगम्यमाश्वीनं त्रिष्वेतेऽश्वतरः पुमान् ।  
 स्याद्वेसरो वेगसरो मूकरुण्डौ तु वेसरात् ॥ १०८ ॥  
 अश्वा सूतेऽश्वतर्या तु मूकाज्जातः किसिदृकः ।  
 निगालस्तु गलोद्देशे नासाग्रे प्रोथमस्त्रियाम् ॥ १०९ ॥  
 आवर्तो रोमजो देवमणिस्त्वेष निगालजः ।  
 कश्यमश्वस्य मध्यं स्याद्वन्तवेष्टस्तु नालिका ॥ ११० ॥



कालिका दन्तरेखा स्यादन्तच्छिद्रमुखली ।  
 कर्तनं धूलिलुठितं वर्तनं तूपवर्तनम् ॥ १११ ॥  
 लोठभूर्मुखरज्जुस्तु स्यादन्ताल्यवरक्षणी ।  
 दामाञ्जनं पादपाशो नासारज्जुस्तु लालिका ॥ ११२ ॥  
 कवियोऽस्त्री खलीनोऽस्त्री पञ्चाङ्गी कविका कवी ।  
 प्राक्पादरज्जुरातालो बका स्याद् द्विप्रहे द्वयोः ॥ ११३ ॥  
 पर्याणं स्यात् पल्ययनं बल्गावक्षेपणी कुशा ।  
 कशा कात्रा वक्त्रपट्टे तलिका तलसारकम् ॥ ११४ ॥  
 पादपुट्यां पादफली प्रक्षरं प्रखरोऽस्त्रियाम् ।  
 युग्मशानप्रसेवे तु द्वौ बाक्काणप्ररोहकौ ॥ ११५ ॥  
 आयानं स्यादलङ्कारो ग्रीवाभूषा तु गण्डकः ।  
 लवणस्य प्रदानाय कृता लवणलायिका ॥ ११६ ॥  
 तैलस्य नालिका सूत्रसङ्ग्रहोऽश्वस्य कर्षकः ।  
 केशकारक्षौरकारौ नालिवाहस्तु चासिकः ॥ ११७ ॥  
 अश्वानां तु गतिधारा विभिन्ना सा तु पञ्चधा ।  
 आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं बलितं प्लुतम् ॥ ११८ ॥  
 इत्येतेषाञ्च पञ्चानामेकैकं बहुभेदकम् ।  
 गत्यर्थास्तद्वदर्थश्च सर्वे ते बाच्यालङ्काराः ॥ ११९ ॥  
 तत्रास्कान्दतकं कोपादिव सर्वैः पदैर्मुहुः ।  
 उत्प्लुत्योत्प्लुत्य गमनमुपकण्ठापराभिधम् ॥ १२० ॥  
 अथ धौरितकं धौर्यं धौरितं धौरणं च तत् ।  
 तच्च कङ्कशिखिक्रोडनकुलानां गतैः समम् ॥ १२१ ॥  
 रेचितं स्याद्भारवहं तच्चावक्रगतिर्द्रुता ।  
 बलितं बल्गनं पद्भिर्भेदाश्चाष्टौ यमादयः ॥ १२२ ॥  
 प्लुतं तु लङ्घनं पक्षिमृगधर्मेण भिद्यते ।  
 यानं सांयात्रिकं युग्यं वाहनं बाह्यधोरणे ॥ १२३ ॥  
 योग्यं चास्मिंश्चक्रयुते शताङ्गः स्यन्दनो रथः ।  
 वहित्रं वहनं चास्मिंश्चतुरश्रे सकूबरे ॥ १२४ ॥  
 दीर्घद्विपक्षवहनमनः क्ली शंकटोऽस्त्रियाम् ।  
 प्रवाहिनी वृत्तमध्ये पक्षकूबरवर्जिते ॥ १२५ ॥  
 देवतार्थो देवरथो युद्धार्थः साम्परायिकः ।  
 क्रीडार्थः स्यात् पुण्यरथः कृतः कर्णीरथो मृदा ॥ १२६ ॥

कर्णीरथं प्रवहणं हयनं रथगर्भके ।  
 गन्त्री स्त्री कूबरं न स्त्री रथे कम्बलिवाहचके ॥ १२७ ॥  
 रथस्तु जयकृजैत्रो यात्रार्थः पारियाणकः ।  
 रथेऽत्र द्वैपवैयाघ्रौ प्रावृते व्याघ्रचर्मणा ॥ १२८ ॥  
 वृते रथे पाण्डुभिः स्यात् कम्बलैः पाण्डुकम्बली ।  
 एवं काम्बलवाखाद्याः कम्बलादभिरावृते ॥ १२९ ॥  
 योग्यारथो वैनयिको जैत्रप्रभृतयस्त्रिषु ।  
 धूः स्त्री धूर्वा यानमुखं युगमीषान्तबन्धनम् ॥ १३० ॥  
 कस्तम्भि युगमध्येऽस्त्री स्यादक्षश्चक्रधारणम् ।  
 अक्षकीले त्वर्णिर्न क्ली ध्रुवः कीलोऽप्यनिर्न पण् ॥ १३१ ॥  
 रथलीडो रथस्यान्तं बन्धुरा तनुकूबरम् ।  
 रथगुप्तिर्वरुथो ना कूबरो ना युगन्धरः ॥ १३२ ॥  
 अनुकर्पो रथस्याधोधरणन्दार्थान् सः ।  
 युगो द्वितीयः प्राप्तङ्गः पताका तु ध्वजोऽस्त्रियाम् ॥ १३३ ॥  
 अस्योच्चूडावचूडौ द्वावूर्ध्वाधोमुखचूडकौ ।  
 अरि चक्रं रथपदं रथाङ्गं केशवायुधम् ॥ १३४ ॥  
 स्त्री नेमिनी प्रधिश्चक्रप्रान्ते तुम्बा तु नाभिका ।  
 अरास्तयोः स्थिता मध्ये रथाङ्गानि त्वपस्कराः ॥ १३५ ॥  
 शिबिका याप्ययानं स्याद्दोला हेलार्थरूपणम् ।  
 प्रेङ्खोलनं तु प्रेङ्खोलं प्रेङ्खो रिङ्खोलनाद्यपि ॥ १३६ ॥  
 आन्दोलनं स्यादान्दोलो दोला स्याद्दोलिकाऽपि च ।  
 परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ॥ १३७ ॥  
 नियन्ता प्राजिता क्षत्ता यन्ता सूतश्च सारथिः ।  
 सव्येष्टो दक्षिणेस्थश्च स्यन्दपाणिसारथिने ॥ १३८ ॥  
 सेवका युधि योद्धृणां भटा यौधाश्च यौधकाः ।  
 पदातिपत्तिपादातपदातिकपदाजयः ॥ १३९ ॥  
 पातिकः पादिकः पट्टो रथिको रथिनो रथी ।  
 सेनास्थाः सैनिकाः सैन्याः सेनारक्षास्तु सैनिकाः ॥ १४० ॥  
 पाणिग्राहास्तु पृष्ठस्थाः साहस्रास्तु सहस्रिणः ।  
 परिधिस्थाः परिचराः सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ १४१ ॥  
 दंशिते स्युः कवचित्तसज्जसन्नद्धवमिताः ।  
 आबद्धः पुनरामुक्तः प्रतिमुक्तः पिनद्धवत् ॥ १४२ ॥



काण्डपृष्ठस्वायुधिक आयुर्धायोऽस्त्रजीवनः ।  
 धन्वी धनुष्मान् धानुष्को निषङ्गयस्त्री धनुधरः ॥ १४३ ॥  
 चर्मि शाक्तीकयाष्टीकपारश्वधिककौन्तिकाः ।  
 काण्डीरखाङ्गिकाद्याश्च चर्मशक्त्यादधारिणः ॥ १४४ ॥  
 छायाकरश्छत्रधरः पताकी वैजयन्तिकः ।  
 पुरस्सरः पुरोगोऽग्रेसरः प्रष्टोऽप्रतस्सरः ॥ १४५ ॥  
 पुरोगमः पुरोगामी यस्त्वलं यात्यरीन् प्रति ।  
 सोऽभ्यमित्रोऽभ्यमित्रिणोऽप्यभ्यमित्रिय इत्यपि ॥ १४६ ॥  
 शूरो वीरश्च विक्रान्तः पटुश्चारभटोऽपि च ।  
 अशूरो हतकः क्लीबो जिघ्णौ तु जयिजित्वरौ ॥ १४७ ॥  
 शक्ये तु जेतुं जय्यः स्याज्जेयो जेतव्यमात्रके ।  
 जैत्रो जेता जितो भग्नः कृतहस्तस्तु शिक्षितः ॥ १४८ ॥  
 लघुदस्तः सुदस्तश्च कृतास्त्रः कृतपुङ्गवः ।  
 सायुगीनो रणे साधुरत्यन्तीनो भृशं गते ॥ १४९ ॥  
 कामङ्गाम्यनुकामीनो जवी तु जवनो जवः ।  
 जङ्घालोऽतजवे धीरमन्थरौ मन्दगामिनि ॥ १५० ॥  
 स्यादुरस्वानुरसिल ऊर्जस्वयूर्जस्वलोजितौ ।  
 बली प्रबल ओजस्वी वाच्यवद्रथिकादयः ॥ १५१ ॥  
 संशप्तकास्तु संग्रामात् समयेनानिवर्तिनः ।  
 त्वक्त्रं तु दंशनं वर्म तनुत्रं कवचोऽस्त्रियाम् ॥ १५२ ॥  
 माठिः स्त्री जागरो वक्षश्छदः सन्नाहकङ्कटौ ।  
 तत्सूत्रकं सूत्रमयं जालिका स्यादयोमयी ॥ १५३ ॥  
 नागोदर्युदरत्राणं जङ्घात्राणं तु मत्कुणम् ।  
 पटुस्तु लिपिसन्नाहः प्रकोष्ठादौ कृतो यथा ॥ १५४ ॥  
 बाहुलं बाहुरक्षा च मर्दनी पादरक्षणी ।  
 गोधा तला च न नरौ हस्तज्जो ज्यानिवारणे ॥ १५५ ॥  
 अङ्गलित्रे कपी शीर्षत्राणे शीर्षण्यशीर्षके ।  
 अधिकाङ्गं सारसनं मध्ये धार्य सकङ्कटैः ॥ १५६ ॥  
 सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसन्नहनार्थकः ।  
 न क्ली हेतिः शस्त्रमस्त्रमायुच्छत्रुप्रमायुधम् ॥ १५७ ॥  
 ऋष्टिः खड्गः प्रचारोऽसिर्धर्मपालः प्रजागरः ।  
 धर्मो विशसनो देवो मनुष्येष्टः शिवङ्करः ॥ १५८ ॥

श्रीगर्भो विजयः शास्ता कृपाणासङ्गरिष्टयः ।  
 कौक्षेयको भद्रसुतो ह्रस्वनिर्वशकस्त्वसिः ॥ १५९ ॥  
 स्नुहीदलाभो निस्त्रिशो मण्डलाग्रोऽन्वितार्थकः ।  
 चन्द्रहासोऽर्धचन्द्राग्र इली तु करवालिका ॥ १६० ॥  
 जम्बूगतेस्तु खड्गाम्बु न्यस्ततैलरुचिर्यदि ।  
 वराभोऽनिल एरण्डबीजाभपुलकावलिः ॥ १६१ ॥  
 हुण्डुतः पुत्रकैरण्डः सितदीर्घानवस्थिनैः ।  
 हरकस्तरवारिः स्त्री यष्टिश्चापि मृदौ पृथौ ॥ १६२ ॥  
 कुण्डलो दीर्घनिर्वशो पुलकास्त्वपुत्राजयः ।  
 अथासिपुत्री क्षुरिका शस्त्रिका चासिधेनुका ॥ १६३ ॥  
 साऽतिदीर्घा पत्रफला कुट्टन्ती हुलमात्रिका ।  
 पटुसो लोहदण्डो यस्तीक्ष्णधारः खुरोपमः ॥ १६४ ॥  
 कण्टकच्छेदनोऽप्येवं द्विमुखश्च भवत्यसौ ।  
 प्रासः कुन्तो दाटकस्तु स त्रिकण्टकसंज्ञितः ॥ १६५ ॥  
 भिण्डिपालः क्षेपणीयः सृगो दीर्घे महाफले ।  
 तोमरोऽस्त्री लोहहुलदण्डे कासूश्च सर्वला ॥ १६६ ॥  
 कणयो लोहमात्रोऽथ शङ्कुर्ना शल्यमस्त्रियाम् ।  
 वराहकर्णकोऽन्वर्थः क्षुरिकाद्याः हुलाग्रकाः ॥ १६७ ॥  
 हुलं द्विफलपत्राग्रं मुनयोऽस्त्र्यस्य शेखरम् ।  
 प्रत्याकारपरीवारौ कोशो मुष्टौ त्सरुः पुमान् ॥ १६८ ॥  
 शतग्री तु चतुस्ताला लोहकण्टकसञ्चिता ।  
 अयःकण्टकसंछन्ना शतघ्न्येव महाशिला ॥ १६९ ॥  
 भुसुण्डी स्याद्धारुमयी वृत्तायःकीलसञ्चिता ।  
 हस्तिचारो गजत्रासहेतुः शरभसन्निभः ॥ १७० ॥  
 देवदण्डोऽरन्निमात्रो दीर्घा मुसलयष्टिकः ।  
 दुघणे मुद्गरघनौ परिघः परिघातनः ॥ १७१ ॥  
 अस्त्रियौ चापधनुषावासेष्वासौ धनुर्दणम् ।  
 कार्मुकं धन्व कोदण्डमायुधाग्रचं शरासनम् ॥ १७२ ॥  
 कार्मुकं तु चतुर्हस्तं कोदण्डं त्र्यङ्गुलं विना ।  
 कामुकात् तु क्रमात् पञ्च विद्धायुधशरायुधे ॥ १७३ ॥  
 गोतमं रथायुधकं कोसलं गाण्डिवोऽस्त्रियाम् ।  
 पातनं मार्गणं चेति द्विगुणानि यथोत्तरम् ॥ १७४ ॥



उच्चलं ब्रह्मदण्डश्च वैशिखं बिम्बसारकम् ।  
 द्विगुणानि क्रमादाद्यं त्वष्टोत्तरशताङ्गुलम् ॥ १७५ ॥  
 केतनं पञ्चविंशत्या पलैर्द्वे द्विगुणे परे ।  
 करीरपृष्ठं व्यासञ्च सहितं तु शतैस्त्रिभिः ॥ १७६ ॥  
 पत्तानां पञ्चभिस्त्वेषां शतैः स्यात् सहितोत्तरम् ।  
 लस्तुको धनुषो मध्यमं लुस्तमटन्यपि ॥ १७७ ॥  
 अतिरार्तिः किरिः कोटी ज्या जीवा मौर्विका द्रुणा ।  
 तूणी तूण उपासङ्गतूणीरौ विशिखाश्रयः ॥ १७८ ॥  
 निषङ्ग इषुधिर्न क्ली पत्री तु विशिखः खगः ।  
 पृषत्को रोपणो बाणः कलम्बो मर्मभेदनः ॥ १७९ ॥  
 चित्रपुङ्खो वीरशङ्कुः शरो रोध इषुर्न षण् ।  
 प्रद्वेलनस्तु नाराच एषणश्चायसे शरे ॥ १८० ॥  
 अर्धशल्योऽर्धनाराचः कङ्कपत्रः शिलीमुखः ।  
 त्रिभागशल्यनाराचे द्वौ दण्डासनदण्डिकौ ॥ १८१ ॥  
 अर्धचन्द्रः क्षुरप्रः स्याद्विकर्णिः कर्णिकारलः ।  
 स्नुहीदलफलो भल्लश्चिपाटोऽल्पस्तदाकृतिः ॥ १८२ ॥  
 पाददण्डोऽन्वितार्थः स्याद् बाणस्तु गतपत्रणः ।  
 तीरी त्वल्पा वेगवती त्वग्बलाः शरजालकाः ॥ १८३ ॥  
 अयश्शलाका कूटोऽस्त्री पत्रकूटः सपत्रणः ।  
 द्विद्विंशत्यङ्गुलिः स्यान्निचोटे द्व्यङ्गुलोत्तराः ॥ १८४ ॥  
 स्युश्चोटलङ्ककस्तालः कुलिको बिम्बसारकः ।  
 कर्तरी पुङ्ख आराग्रं त्वग्रं वाजश्छदावलिः ॥ १८५ ॥  
 पत्रणा पक्षरचना धारा शस्त्रमुखं फलम् ।  
 स्थानानि धन्विनां पञ्च तत्र वैशाखमस्त्रियाम् ॥ १८६ ॥  
 त्रिवितस्त्यन्तरौ पादौ मण्डलं तोरणाकृती ।  
 अन्वर्थं स्यात् समपदमालीढं तु ततेऽग्रतः ॥ १८७ ॥  
 दक्षिणे वाममाकुञ्च्य प्रत्यालीढं विपर्यये ।  
 वैहायसञ्च वेधे तु योगावाप उपक्रमः ॥ १८८ ॥  
 हस्तावापः शरादानं प्रमाथो लस्तकग्रहः ।  
 मुष्ट्यायोजनमादानमिषोर्ज्यायां समूहनम् ॥ १८९ ॥  
 वितानं संहितस्येषोः किञ्चिदेव विकर्षणम् ।  
 निमित्तग्रहणं लक्ष्यग्रहो बुद्धिदृगादिना ॥ १९० ॥

आकर्णकर्षणं 'पूर्णमायामं त्वङ्गुलाधिकम् ।  
 ततोऽप्यर्धोङ्गुलाकृष्टसन्धानं तेजनं न ना ॥ १९१ ॥  
 मुष्टिमान्द्यं निर्हरणं व्यवच्छेदस्तु मोक्षणम् ।  
 कैराती गतिरूर्ध्वाऽधःप्रकर्षस्तु गतेर्लयः ॥ १९२ ॥  
 दृढदुष्करचित्राणि कर्माणि हरणानि च ।  
 मुचुटी सिःकर्णी च पताका चेति मुष्टयः ॥ १९३ ॥  
 लक्षं तु लक्षणं लक्ष्यमभिसन्धानमासिकम् ।  
 वेध्यं शरव्यं न नरि श्रमस्थानं खलुरिका ॥ १९४ ॥  
 योगाभ्यासः परिचयो बाणाभ्यास उपासनम् ।  
 शक्त्याद्यस्त्रं पाणिमुक्तं यन्त्रमुक्तं शरादिकम् ॥ १९५ ॥  
 मुक्तामुक्तं धृतं मुक्तं नागपाशादिदीर्घकम् ।  
 अमुक्तं छुरिकादि स्यादिति शस्त्रं चतुर्विधम् ॥ १९६ ॥  
 धौते निशातं निशितं क्षणुतं तेजितमर्थवत् ।  
 फलं चर्ममयं चर्म फलकं खेटकं समम् ॥ १९७ ॥  
 अन्तर्लोहेन बद्धान्ते फलान्ते स्याद्वलाहका ।  
 हस्तिकर्णः परोवण्टः फली फलकिकाल्पिका ॥ १९८ ॥  
 कावाटो लघुकाष्ठः स्यात् सयष्टिर्द्विष्टिवारणः ।  
 कटिका सूत्रसंयुता शलाकाः परिमण्डलाः ॥ १९९ ॥  
 अङ्गुलं सैव वेत्राद्यैः सङ्ग्राहो मुष्टिरेषु या ।  
 लोहाभिसार उद्योगे राज्ञां नीराजनाविधिः ॥ २०० ॥  
 यत्सेनयाऽभिनिर्याणं पत्युस्तदभिषेकनम् ।  
 आसारस्तु प्रसरणी प्रचक्रं चलितार्थकम् ॥ २०१ ॥  
 विरतं तु भटोद्योगोऽभिक्रमो यानमभ्यरीन् ।  
 वीरपाणं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे ॥ २०२ ॥  
 नासीरोऽस्यग्रयानं स्यादवस्कन्दस्तु सौप्तिकः ।  
 मृधमास्कन्दनं युद्धं समिकं साम्परायिकम् ॥ २०३ ॥  
 आयोधनं रणं सङ्ग्रहं प्रथनं प्रविदारणम् ।  
 सम्प्रहारसमाघातकलिसंस्फोटसंयुगाः ॥ २०४ ॥  
 अभिमर्दाभिसम्पातप्रघाताभ्यागमाहवाः ।  
 समुदायः समुदयः सम्मर्दः सङ्गरः स्पशः ॥ २०५ ॥  
 संग्रामः समरोऽस्त्री स्त्री संयुदायुश्च युत् समित् ।  
 वीराशंसनमाजेर्भूर्धोरा लोलो महारणम् ॥ २०६ ॥



नियुद्धं बाहुयुद्धं स्यादवमर्दस्तु पीडनम् ।  
 अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं स्वलितं चलम् ॥ २०७ ॥  
 अविषादो धृतिर्धैर्यमवष्टम्भस्तु सौष्ठवम् ।  
 वीराणां यद्रणे नृत्तं तस्मिन् वीरजयन्तिका ॥ २०८ ॥  
 प्रसभोऽस्त्री बलात्कारो हठश्च विजयो जयः ।  
 प्रतीकारो वैरशुद्धिरपदानं पराक्रमः ॥ २०९ ॥  
 शौर्यं वीर्यमथ स्थाम बलं शुष्म तरः सहः ।  
 नाशस्त्वपक्रमोऽपायो विप्रयाणं पलायनम् ॥ २१० ॥  
 सन्द्रोवोद्द्रावसन्द्रावप्रदावद्रवविद्रवाः ।  
 विशस्तु घात उन्मथो विशरः प्रमथो वधः ॥ २११ ॥  
 निर्वासनं निहननं निबर्हणनिषूदनम् ।  
 निस्तर्हणं निशरणं निकारणनिशुम्भनम् ॥ २१२ ॥  
 निर्वापणं निरसनं निर्ग्रन्थननिर्हसनम् ।  
 प्रमापणं प्रमथनं प्रवासनमपासनम् ॥ २१३ ॥  
 परासनं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ।  
 उद्वासनं प्रशसनं क्षणनं परिवर्जनम् ॥ २१४ ॥  
 उज्जासनं संज्ञपनं काथनं प्रविसारणम् ।  
 व्यापादनं च हिंसा च कदनं सङ्कुलो वधः ॥ २१५ ॥  
 रुण्डोऽशिराः कबन्धोऽस्त्री कुणपस्तु शवोऽस्त्रियाम् ।  
 शवयानं कटः खाटिश्रिता चित्या चित्तिः स्त्रियाम् ॥ २१६ ॥  
 अरुः क्षतं ना क्षणितुर्ब्रणोऽपीर्मोऽपि न स्त्रियौ ।  
 किणो रूढं व्रणस्थाने तुमुलं रणसङ्कुलम् ॥ २१७ ॥  
 जितकाशी जितरणः कान्दिशीको भयद्रुतः ।  
 अपराद्धशरोऽसौ स्याद्यस्य लक्ष्याच्युतः शरः ॥ २१८ ॥  
 पराजितः पराभूतः प्रणष्टस्त्वगृहीतदिक् ।  
 प्रस्कन्नपतितौ ध्वस्ते मूढे मूर्खालमूर्खितौ ॥ २१९ ॥  
 परासुरपसम्पन्नः प्रमीतः संस्थितो मृतः ।  
 जीवो जीवन् किणादूर्ध्वं त्रिषु जीवस्तु जीवितम् ॥ २२० ॥  
 आयुर्जीवितकाले ह्यी जीवातुर्जीवितागदः ॥ २२० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे क्षत्रियाध्यायः ॥ ७ ॥

## वैद्याध्यायः ॥ ८ ॥

अर्यो भूमिस्पृशो वैश्या ऊरुव्या ऊरुजा विशः ।  
 आजीवो जीविका वृत्तिवार्ता वर्तनजीवने ॥ १ ॥  
 मृतं क्ली याचितं भैक्षममृतं स्यादयाचितम् ।  
 उच्छ्रो धान्यश आदानं कणिशावर्जनं सिलम् ॥ २ ॥  
 ऋतं तदुभयं स्त्री तु कृषिः क्ली प्रमृतानृते ।  
 सत्यानृतं तु वाणिज्यं वणिज्या वणिजा स्त्रियौ ॥ ३ ॥  
 पाशुपाल्यं जीववृत्तिः स्यादृणं पर्युदञ्चनम् ।  
 तदवृद्धिकमुद्धारः कुसीदं तु सवृद्धिकम् ॥ ४ ॥  
 वार्धुष्यं वार्धुषं धान्यवृद्धिर्बृद्धिः पुनः कला ।  
 सा कायिकान्वहं देया प्रतिमासं तु कालिका ॥ ५ ॥  
 कारिका तु स्वयं दृष्टा चक्रवृत्तिस्तु वृद्धिजा ।  
 परिवर्तेन निर्वृत्तं वस्तु स्यादापमित्यकम् ॥ ६ ॥  
 सेवा श्ववृत्तिरेताश्च याजनाद्याश्च वृत्तयः ।  
 त्रिष्वालेखात् कुडुम्बी तु क्षेत्राजीवः कृषीवलः ॥ ७ ॥  
 कर्षकोऽथ द्वैगुणिको वृद्ध्याजीवः कुसीदिकः ।  
 वार्धुषी स्याद्वार्धुषिके प्रयोक्त्युत्तमर्णकः ॥ ८ ॥  
 गृहीतर्यधमर्णः स्यादाप्तः प्रत्ययितः समौ ।  
 मध्यस्थः प्राशिनकः साक्षी मूली स्याद्दुष्टसाक्षिणि ॥ ९ ॥  
 कूटसाक्षी मृषासाक्षी प्रतिभूलग्नकोऽन्तरः ।  
 अभियोक्ता शिरोवर्ती शिरस्थोऽथाभियुक्तके ॥ १० ॥  
 सन्दंशितोऽभिशास्तश्च वसुराक्षारिकोऽपि च ।  
 सदेवासत्कृतं सभ्यैस्तिरितं साक्षिणा तु चेत् ॥ ११ ॥  
 अनुशिष्टमथो लेखो लेख्यं दिव्यं तु दैविकम् ।  
 न्यासस्तूपनिधिस्थाप्यनिक्षेपा न्यस्तकोऽस्त्रियाम् ॥ १२ ॥  
 सदस्या देशिकाः स्थेयाः सभास्ताराः सभासदः ।  
 सभ्याः सामाजिकाश्चाथ गोष्ठ्यास्था परिषत् सभा ॥ १३ ॥  
 समज्या तारणी संसद् घटा स्थानं सदोऽप्यना ।  
 द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राङ्वावपाकोऽक्षदर्शकः ॥ १४ ॥  
 न्यायोऽक्षो व्यवहारोऽथ सम्प्रश्नः सम्प्रधारणम् ।  
 समर्थनं च संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः ॥ १५ ॥



अर्थिनो वचनं भाषा स्यात् प्रत्यर्थिन उत्तरम् ।  
 कारणं त्वभ्यवस्कन्दः प्रत्यवस्कन्द इत्यपि ॥ १६ ॥  
 अवस्कन्दश्च भाषार्थमङ्गीकृत्य विशेषगीः ।  
 केदारः केदारः क्षेत्रमुर्वरा सर्वसस्यभूः ॥ १७ ॥  
 भूमिच्छिद्रं कृष्ययोग्या प्रहतं नालमुत्थितम् ।  
 खिलं त्वप्रहतं स्थानमूषवत्यूषरेरिणौ ॥ १८ ॥  
 मौद्गीनकौद्रवीणायाः क्षेत्रे मुद्रादिसम्भवे ।  
 यव्यत्रैहेयशालेयपष्टिक्याः सयवक्यकाः ॥ १९ ॥  
 यवादेस्तिलतैलीनौ तिलस्योमाणुभङ्गतः ।  
 माप्राचचैवं द्विरूपत्वं शाकाच्छाकिनशाकटौ ॥ २० ॥  
 एवं वास्तुकवार्ताकबालकाशेक्षुमूलकात् ।  
 द्रोणाढकादिवापेषु द्रौणिकाढकिकादयः ॥ २१ ॥  
 खारीवापे तु खारीकं हल्यं सीत्यं च कृष्टके ।  
 तृतीयाकृतं त्रिसीत्यं त्रिहल्यं त्रिगुणाकृतम् ॥ २२ ॥  
 त्रिष्टुष्ट एवं द्विष्टुष्टे शम्बाकृतमिहाधिकम् ।  
 बीजाकृतं तूमकृष्टं प्रहतप्रमुखास्त्रिषु ॥ २३ ॥  
 लोष्टोऽस्त्री दरिणिर्न क्ली लेष्टुर्ना मृत्तु मृत्तिका ।  
 पुरीषं मृत्तिकाचूर्णं मृत्सा मृत्स्ना प्रशस्तमृत् ॥ २४ ॥  
 भ्रूका त्विष्टकाया विद्धुषस्तु क्षारमृत्तिका ।  
 धूलिः स्त्रियां रजः पांसू रेणुः पुंस्यथ कर्दमे ॥ २५ ॥  
 दारिपत्परिपत्पङ्कचिकिलाश्च निषद्वरः ।  
 शादावकीलजम्बाला वप्रोऽस्त्री पालिराल्यपि ॥ २६ ॥  
 क्षेत्रमध्ये कृता साल्पा स्थाला स्यादथ लाङ्गलम् ।  
 हलं गोदारणं सीरमीषा सीरादिदण्डकः ॥ २७ ॥  
 निरीषः कृषकः फालः शम्या तु युगकीलकम् ।  
 योक्त्रं तु योत्रमाबन्धः खनित्रमवदारणम् ॥ २८ ॥  
 गोदारणं तु कुन्दालमभिः स्त्री त्णूस्तु तन्मुखे ।  
 प्रतोदः प्राजनं तोत्रं कोटिशो लोष्टभस्त्रनः ॥ २९ ॥  
 दात्रं लवित्रमसिदो योऽस्य मुष्टिः स वण्टकः ।  
 स्यात्समीकरणं मत्तं सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ ३० ॥  
 न स्त्री मेथिः खले पाली खलधानं पुनः खलः ।  
 ग्रीहिर्वरेणुको बीज्यो धान्यं सस्यं लवेटिका ॥ ३१ ॥

ग्रीह्यः स्तम्बकरयः शालयः श्वेततण्डुलाः ।  
 सुगन्धिको महाशाली रक्तशालिः सलोहितः ॥ ३२ ॥  
 सांवत्सरः कृष्णशालिर्बालकश्चावरोहकः ।  
 श्वेतशालोऽपौरशूरचपलाः करसूकरौ ॥ ३३ ॥  
 षष्टिको गर्भपाकी स्यात् प्रवरः शालियष्टिकः ।  
 कलापकास्तु कलमा हायनास्तु महाबुसाः ॥ ३४ ॥  
 माषस्तु मलदो नन्दी घरी बीजवरो बली ।  
 वृष्यो महावृषो गुच्छा कुलिङ्गाटी फलाङ्कुरा ॥ ३५ ॥  
 मुद्रस्तु प्रथनो लोभ्यो बलाङ्गो हरितो हरिः ।  
 पीतेऽस्मिन् वसुखण्डीरप्रवेतजयशारदाः ॥ ३६ ॥  
 सुराष्ट्रीचनचक्षुष्या हरिमन्थार्धरूपकौ ।  
 कृष्णे प्रवरवासन्तौ हरिमन्थजशिम्बिकौ ॥ ३७ ॥  
 वनमुद्रे तु वरकनिगूढककुलीमकाः ।  
 खण्डी च राजमुद्गे तु मरिष्टकमयष्टकौ ॥ ३८ ॥  
 जर्तिलोऽरण्यजतिलो जालकश्चूलिकस्तिलः ।  
 कृष्णेऽस्मिस्तिलके ( षण्डे ) पिष्टपेजौ तिलात्परौ ॥ ३९ ॥  
 तिलपुष्पं वज्रपुष्पं मसुरस्तु मसूरकः ।  
 मङ्गल्यं पृथुसूयश्च ग्रीहिकङ्को मसूरिका ॥ ४० ॥  
 कदम्बकस्तु शुभकः सर्षपोऽस्मिन् पुनः सिते ।  
 त्रिष्टुभभ्रातरक्षोऽन्ताः शठः सिद्धार्थतोटकौ ॥ ४१ ॥  
 पक्तिका त्रिष्टुभा चास्मिन् गौरैऽथो राजसर्षपे ।  
 क्षुधा क्षुधाभिजननस्त्वाष्ट्रको राजिकासुरी ॥ ४२ ॥  
 वंशवर्णे कृष्णवर्णः संवर्तो वातुलश्चणः ।  
 कलायः स्यात् कालपूरः खण्डिकः कालपूरकः ॥ ४३ ॥  
 पूरकोऽप्योलहा जाड्यो वर्तुलेऽत्र सतीनकः ।  
 खुडारे त्रिपुटः खेलौ रङ्कुटी तु हरेणुकः ॥ ४४ ॥  
 स्नेहपूरे तु फलकः कर्षायौ पाकचूडकौ ।  
 सुवर्चलामसृण्यौ च क्षुमा चोमाऽप्यतस्यपि ॥ ४५ ॥  
 खल्वे तु पवनिष्पावौ शिम्बिकाऽस्य प्रियैलिका ।  
 अलसान्दे राजमाषो निष्पावः श्वेतशिम्बिका ॥ ४६ ॥  
 काकाण्डः स्याच्चोदनिका कृष्णशिम्बिर्विचक्षणा ।  
 कृष्णवृन्ते खलकुलं ताम्रवृन्तः कुलस्थकः ॥ ४७ ॥



प्रचूडकः कफहरी प्रवृत्तिश्च कुलुत्थिका ।  
 आढकी तुवरी वल्ला सौराष्ट्री करवीरिका ॥ ४८ ॥  
 पतङ्गना च पृथ्वी सा वर्णा स्यात् पाटलिङ्गिका ।  
 छत्रा कुस्तुम्बरी धान्या धन्या धाना धनीयिका ॥ ४९ ॥  
 कुमारी मुसली वंश्या गुडुची कटुकैषणा ।  
 सुचरित्रा च धन्याकधन्येयकतकानि च ॥ ५० ॥  
 कुस्तुम्बुरु च धान्यं च भृङ्गा स्यान्मातुलानिका ।  
 यवे रूढो दीर्घशूकः शितशूकः महाबुसः ॥ ५१ ॥  
 आरूढश्च पवित्रश्च याज्ञिकोऽश्वप्रियोऽपि च ।  
 महायवे प्ररूढोऽल्पे वनाशोऽतियवोऽपि च ॥ ५२ ॥  
 यावके बलकुल्माषौ यवके तोयपर्णिका ।  
 गोधूमस्तु म्लेच्छभोज्यः सुमनः श्लेष्मलो गुरुः ॥ ५३ ॥  
 शतपर्वा बहुवक्रः कोद्रवे कोरदूषकः ।  
 बालनाटकवात्र्यालौ वरकः क्रूरदूषकः ॥ ५४ ॥  
 विरूक्षकोद्रवोन्नालमदनाः वनकोद्रवे ।  
 चिककाणकजुनी कजुः प्रियजुः पीततण्डुला ॥ ५५ ॥  
 शीतकजुस्तु मुसुटी पीतकजुस्तु मागवी ।  
 श्यामकजुस्तु मधुका यवनालस्तु जोनलः ॥ ५६ ॥  
 जूर्णाह्वयो देवधान्यं जोन्नाला बीजपुष्पिका ।  
 नीवारस्तु वृषावाहः प्रतीचो मुनिसोवतः ॥ ५७ ॥  
 अव्यादा लोलिका सेव्या जलजा तृणधान्यकम् ।  
 श्यामाको नीलपुष्पः स्यात् स्मयाकश्च मुनिप्रियः ॥ ५८ ॥  
 स्त्री काककजुश्चीनः स्यात् तृणकोलोऽप्युदारकः ।  
 गर्मुत पुनर्गमुटिका धुलुञ्छस्तु गवीधुका ॥ ५९ ॥  
 ज्योतिष्मती सुलवणा गोजिह्वा भक्षिणी शिवा ।  
 गुन्द्रा कुत्रफला गुच्छा क्षेत्रिया बालनायिका ॥ ६० ॥  
 रूक्षणीया जन्तुफला गवेथुश्च गवेथुका ।  
 गाङ्गेरुकी नागबला भूषा ह्रस्वगवेथुका ॥ ६१ ॥  
 गोरक्षतण्डुलश्चाथ शाको मर्कटकः समौ ।  
 माषादयः शमीधान्ये शूकधान्ये यवादयः ॥ ६२ ॥  
 कोद्रवाद्याः कुधान्यानि ब्रीहयः शालिकादयः ।  
 स्तम्बे गुचक्षुपौ काण्डे नाली त्रय्यफला तु सा ॥ ६३ ॥

पलालोऽस्त्री कर्णिका स्त्री पूलोऽस्त्री तृणपञ्चिका ।  
 कडङ्गरो बुसोऽथ स्यात् कणिशं धान्यमञ्जरी ॥ ६४ ॥  
 पीनकोशी शमी शिम्बा तीक्ष्णाग्रे शूकमस्त्रियाम् ।  
 धान्यराशिस्तु बलजा वरण्डस्तृणसञ्चयः ॥ ६५ ॥  
 गृहार्थोऽसौ कपोलः स्त्री विक्षिप्तः खस्तरो ह्यसौ ।  
 समौ प्रयामनीवाकौ क्रपुकात्प्राक् परे त्रिषु ॥ ६६ ॥  
 ऋद्धमावसितं धान्यं पूतं तु बहुलीकृतम् ।  
 खलपूः स्याद्बहुकरश्छादिपेयं छदिस्तृणम् ॥ ६७ ॥  
 क्रायिकः क्रयिकः क्रेता विपूर्वाः क्रेयवस्तुदे ।  
 क्रये प्रसारितं क्रय्यं क्रेयं क्रेतव्यमात्रकम् ॥ ६८ ॥  
 विक्रेयं पणितव्यं च पण्येऽथ क्रपुकः क्रयः ।  
 भेटकः प्रक्रयः क्रेणी विक्रयो विपणः पणः ॥ ६९ ॥  
 वस्नोऽर्घोऽवक्रयो मूल्यं बन्धः प्रणय आधिकः ।  
 नीवी परिपणं मूलं धनं लाभोऽधिकं फलम् ॥ ७० ॥  
 परिवर्तो विनिमयो वैमेयो निमयोऽपि च ।  
 सत्यङ्कारः पुनः सत्याकृतिः सत्यापनं च तत् ॥ ७१ ॥  
 पण्याजीवः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ।  
 वैदेहकः प्रापणिकः क्रयविक्रयिकोऽपि च ॥ ७२ ॥  
 विटपोऽर्थः स्वापतेयं रिक्थं पृक्थं धनं वसु ।  
 वित्तं च द्रविणं द्युम्नं हेमरूप्यात्मकं तु तत् ॥ ७३ ॥  
 अकुप्यं कुप्यमन्यत् स्याद्द्रव्यं तद्द्रव्यमाहतम् ।  
 कोशमस्त्री हिरण्यं च हेमरूप्यं कृताकृतम् ॥ ७४ ॥  
 ओषध्यो जातिमात्रे स्युरजातौ सर्वमौषधम् ।  
 स्त्री शुण्ठिरूषणं विश्वभेषजं सिंहलं कटम् ॥ ७५ ॥  
 शृङ्गिबेरं महाकन्दं हंसच्छत्रं कलापकम् ।  
 पिप्पली मागधी शौण्डी वृषलं चोषणा बला ॥ ७६ ॥  
 श्यामोपकुल्या वैदेही ग्रन्थिनी तीक्ष्णतण्डुला ।  
 जालिनी तण्डुला तन्वी काल्यम्बष्ठा मनोहरी ॥ ७७ ॥  
 कपिवल्ल्यां कोलवल्ली गण्डीरी हस्तिपिप्पली ।  
 काण्डी वसीरकाण्डीरौ गृहकाण्डः शिरः पुमान् ॥ ७८ ॥  
 मरीचं तु विरावृत्तमुषणं धर्मपत्तनम् ।  
 ( मरिचं ) पलितं श्यामं वेङ्गनं पेन्नवं कटु ॥ ७९ ॥



लोहाख्यं श्यामवल्ली च श्यूपणं (तूषणादिकम्) ।  
 कावेरं त्रिकटु व्योषमप्यं कोलं कटुकटम् ॥ ८० ॥  
 ग्रन्थिकातलचव्यैस्तु चतुष्पञ्चषड्वषणम् ।  
 चव्यं तु चविकं कोला भार्गी पद्मा च विट्टिका ॥ ८१ ॥  
 त्रिफला तु मदोदका भूतसारी फलत्रिका ।  
 बलकाली बलारोहा चित्रकस्त्वग्निसंज्ञकः ॥ ८२ ॥  
 पञ्चकोलं कणाशुण्ठीचव्यग्रन्थिकचित्रकाः ।  
 अजाजी तु जया दीप्यो जीरको जीरणः सितः ॥ ८३ ॥  
 मागधश्चाथ सूक्ष्मोऽसौ कणजीरण ओसरः ।  
 अग्निमन्थो हृद्यगन्धः सुगन्धिः कालिका कणा ॥ ८४ ॥  
 कृष्णे तु जीरके पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चका ।  
 सुषवी कारवी फारी पृथ्विका पृथुशालिका ॥ ८५ ॥  
 कटुः कटुम्भराऽशोका रोहिणी कटुरोहिणी ।  
 कृष्णभेदी मत्स्यपित्ता चक्राङ्गी शकुलादनी ॥ ८६ ॥  
 निष्कुट्यां चन्द्रबालैला पृथ्वीका त्रिदिवाऽत्र तु ।  
 सूक्ष्मायां त्रिपुटा कुन्तिस्त्रुटिस्तुत्थोपकुञ्चिका ॥ ८७ ॥  
 कोराङ्गी नन्दिनी शाला कलुषी संयतोऽपि च ।  
 काश्मीरं पौष्करे मूले पद्मपत्रं च पुष्करम् ॥ ८८ ॥  
 अव्यथाऽतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ।  
 जन्या जतूका रजनी जतुकृष्णवर्तिनी ॥ ८९ ॥  
 शृङ्गी विषा प्रतिविषाऽतिविषोपविषाऽरुणा ।  
 शिप्रुजं श्वेतमरिचं त्वक्क्षीरा वंशरोचना ॥ ९० ॥  
 पद्मोत्तरं वह्निशिखं महारजतमित्यपि ।  
 कुसुम्भे पिप्पलीमूले ग्रन्थिकं चटिका शिरः ॥ ९१ ॥  
 वह्निपुष्पे ग्रन्थिपर्णं स्थौणेयं कुक्कुरं शुक्रम् ।  
 शतपर्वं च मित्रञ्च कमलञ्च शिलञ्च तत् ॥ ९२ ॥  
 समृद्धिः प्राणदा सिद्धिर्लक्ष्मीः सर्वजनप्रिया ।  
 ऋश्यप्रोक्ता श्रोत्रकान्ता श्रावणी हस्तिपादिका ॥ ९३ ॥  
 ऋषिः सृष्टा वृषा वृष्या हृद्या योज्या युगाह्वया ।  
 अथ वृद्धिर्बोधनीया महाश्रावणिका बुधा ॥ ९४ ॥  
 हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ।  
 प्लावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ॥ ९५ ॥

वालुकं चाथ शैलेयं वृद्धं गिरिशिलाह्वयम् ।  
 कालानुसार्य पाषाणपुष्पं शितशिवं शिवम् ॥ ९६ ॥  
 क्रिमिघ्नस्तुण्डुलो वेल्लममोघा चित्रतण्डुला ।  
 विडङ्गोऽस्त्री सुगन्धा तु सुरसा गन्धनाकुला ॥ ९७ ॥  
 नाकुली सुवहा रास्ना छत्राकी सर्वलोचना ।  
 गन्धिनी श्यात्तालपर्णी दैत्या गन्धकुटी मुरम् ॥ ९८ ॥  
 कुष्ठं वाप्यं पारिभाष्य रोगाख्यं पाकलोत्पले ।  
 व्यालायुधं व्याघ्रनखं करञ्जं चक्रकारकम् ॥ ९९ ॥  
 सुषिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रिर्नटी नली ।  
 जटिला लोमशी मांसी तपस्विन्यामिषी जटा ॥ १०० ॥  
 धमन्यञ्जनकेश्यौ तु हनुर्हृद्विलासिनी ।  
 अपि शुक्तिः खुरः शङ्खो नखं कालदलं समाः ॥ १०१ ॥  
 अजमोदा तूषगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका ।  
 कारवी च खराश्वोष्ट्रा दीप्यका लोचमस्तकः ॥ १०२ ॥  
 मधुं क्लीतकं यष्टिमधुका मधुयष्टिका ।  
 लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञं च बरालकम् ॥ १०३ ॥  
 त्वक्पत्रं तु त्वचं चोचं बरान्गं भृङ्गमुत्कटम् ।  
 मृगनाभिर्मृगमदो नगः कस्तूरिकाऽपि च ॥ १०४ ॥  
 घनसारस्तु कर्पूरः सिताङ्गो हिमवालुका ।  
 चन्द्रनामानि चाथ स्यात् तक्कोलं कोलकं परम् ॥ १०५ ॥  
 अपि कोशफलं फालं कार्पासकृतमालकौ ।  
 जातीकोशं कोशफलमथागर नृपार्हकम् ॥ १०६ ॥  
 लोहाख्यं कृमिजं भृङ्गं जोङ्गकं जाङ्गलं मतम् ।  
 वंशकं वंशिकं शीर्षं प्रकरं मृदुलं लघु ॥ १०७ ॥  
 वनमायः पुरमदः काकतुण्डो वनद्रुमः ।  
 कालागरु तु मङ्गल्या मङ्गिकासमगन्धि चेत् ॥ १०८ ॥  
 श्रीवेष्टः पायसं श्रयाख्यं श्रीवासो रक्तशीर्षकः ।  
 वेष्टः श्रीवत्सपिण्याको दधिश्च सरलद्रवे ॥ १०९ ॥  
 वृकधूपश्च तूणस्तु पिण्डकश्चपलश्चलः ।  
 कप्याख्यः कपिलः सिंहः कृत्रिमः क्षेत्रिको वरः ॥ ११० ॥  
 तुरुष्कः पावनश्चाथ सर्जनो लालनो रसः ।  
 बहुरूपो यक्षधूपोऽप्यरालोऽप्यथ कृत्रिमे ॥ १११ ॥



वृकधूणोऽङ्गुलालस्तु महिषाक्षः पलङ्कषः ।  
 चन्दनोऽस्त्री मलयजो भद्रश्री रोहणद्रुमः ॥ ११२ ॥  
 श्रीखण्डो गन्धसारश्च ताम्रसारं तु चन्दनम् ।  
 पीतचन्दनमर्कष्टं गोशीर्षं हरिचन्दनम् ॥ ११३ ॥  
 किरातजं बला हार्या पिञ्जनं तैलपर्णिकम् ।  
 तथा कुचन्दनं पीतदारु रक्ते तु चन्दने ॥ ११४ ॥  
 पत्राङ्गं रञ्जनं सेव्यं धूर्तमैरावतं लसम् ।  
 कुचन्दनं जघन्यञ्च रक्तं च तिलपर्ण्यपि ॥ ११५ ॥  
 कुङ्कुमं घुसृणं वर्ण्यं रक्तं लोहितचन्दनम् ।  
 करटं चितकावेरं गौरवं वासनीयकम् ॥ ११६ ॥  
 काश्मीरजं पुष्परजः सङ्कोचं पीतनं वरम् ।  
 घोरं चाग्निशिखं चापि जपापुष्पं प्रियङ्गु च ॥ ११७ ॥  
 नागोद्भवं तु सिन्दूरं कुङ्कुमेन समप्रभम् ।  
 गवलं माहिषं शृङ्गं शशाणं शशलोमनि ॥ ११८ ॥  
 अन्धिजे लवणे खण्डं त्रिकूटं त्रिकुटं कुटम् ।  
 भोजनीयं कटकटमणु प्रवरवारिजे ॥ ११९ ॥  
 अक्षीवं बिसिरं सेव्यं सैन्धवं तु नदीभवम् ।  
 माणिमन्थं शितशिवं नादेयं वेधकं पटु ॥ १२० ॥  
 विशुन्धलवणं सङ्गं सिन्धि सिन्दूद्भवं मुखम् ।  
 सम्भरी पुनरेतद्वद्रौमकं तु रुमाभवम् ॥ १२१ ॥  
 वस्नं चाथो भूलवणं कनिष्ठं पाक्यमुद्भिदम् ।  
 क्षुद्रकं पांसुलवणं कुप्यं पानीयसम्भवम् ॥ १२२ ॥  
 ऊषमूषरजं क्षेय्यं पांशुजं यवनं पटु ।  
 शूलिका तु महाजाली वेष्टावारं महाविडम् ॥ १२३ ॥  
 विडं तु पाक्यं बहुलं कृत्रिमद्राविणासुराः ।  
 घटिकालवणं तृणं विडवद्धनकालकम् ॥ १२४ ॥  
 सौवर्चलं तु रुचकं दुर्गन्धं शूलनाशकम् ।  
 अक्षं तादर्यं रुचिष्यं च तिलकं त्वत्र कृष्णके ॥ १२५ ॥  
 सौवर्चलं द्रवस्तु स्याज्जारणं लोहितोऽस्त्रियाम् ।  
 दशेत्थं लवणानि स्युरथोपलवणास्त्रयः ॥ १२६ ॥  
 तत्र क्षारो यवक्षारो निपीती कासनुद्वरः ।  
 श्वेतक्षारस्तीक्ष्णरसो विपाकी च स तु द्विधा ॥ १२७ ॥

यवाप्रजो यावशूकस्तत्रान्त्यो बहुसारकः ।  
 रसाढ्यो रसको योगी पत्रकः पत्रसारकः ॥ १२८ ॥  
 वीज्योऽसुवर्चिका क्षारः कापोतः सुखवर्चकः ।  
 स्नुघ्निका स्वर्जिका स्वर्जियोगवाही सुवर्चिका ॥ १२९ ॥  
 टङ्कणस्तु क्रामणको लोहसंश्लेषकः कटुः ।  
 रसयोनिः पावनको मालतीतीरसम्भवः ॥ १३० ॥  
 परशुः शस्त्रकण्टकः शस्त्रक्षारो महाबलः ।  
 सहस्रवेधि बाह्लीकं जतुकं हिङ्गु रामठम् ॥ १३१ ॥  
 पत्रेऽस्य करवी बाष्पी पृथिविका कारवी पृथुः ।  
 तिन्वृणीके तु वृक्षाम्लं चुक्रं शुक्ती रुचिः स्त्रियाम् ॥ १३२ ॥  
 सहस्रवेधी चुक्रोऽम्लवेतसः शतवेधयपि ।  
 गूथः क्षारस्य विकृतौ मत्स्यण्डी खण्डशर्करा ॥ १३३ ॥  
 फाणितं क्षुद्रकं खण्डं न स्त्रयथो शर्करा सिता ।  
 मधूलं तु मधुर्न स्त्री मधुकं तत्पुरातनम् ॥ १३४ ॥  
 भ्रामरं तु भ्रमरकं क्षौद्रं सारघमाक्षिके ।  
 अन्वर्थं पौत्तिकं दालं दद्रुजं रूक्षवालुकम् ॥ १३५ ॥  
 औदालकं तु शालाकं विषजिन्मधुराम्लकम् ।  
 छात्रं सर्वौघमत्यर्थस्वाद्विमा मधुजातयः ॥ १३६ ॥  
 मदनस्तु मधुच्छिष्टं स्नेहोऽस्त्री पिच्छिले रसे ।  
 स्नेहे तिलानां तैलं स्यादन्येषां नामपूर्वकम् ॥ १३७ ॥  
 घृतमाज्यं हविः सर्पिः कौम्भं त्वाज्यं दशाब्दिकम् ।  
 द्वैयङ्गवीनं पीथं च नवनीतं तु तक्रजम् ॥ १३८ ॥  
 दधि विप्रप्रियं हृद्यं क्षीरजं श्रीघनं गुरु ।  
 स्थूलं श्वेतं च मङ्गल्यं कट्वारः शण्डगोरसौ ॥ १३९ ॥  
 सञ्जावने तूप्त्रमात्रे प्राङ्मन्दात् सर्जकं दधि ।  
 मन्दन्तु मण्डजातं तद् बालजातं तु बालकम् ॥ १४० ॥  
 अम्लजुण्डी तु गर्भात् प्राग्गर्भस्तु मुखबन्धनम् ।  
 वलीमुखं तु गाढास्यं तत्स्थं तु सशरं दधि ॥ १४१ ॥  
 छिन्नं दधि बुसं रूक्षं खलं सेव्यं च निश्शरे ।  
 बहुसूदनमप्यस्मिन् द्रव्यं स्यादघनं दधि ॥ १४२ ॥  
 पत्रलं चाथ पकं स्यात् सञ्जातं पयसः शृतात् ।  
 धुक्षिमं तूद्घृतस्नेहान्मथितात् प्रमाथितम् ॥ १४३ ॥



तक्रपिण्डं चाथ मस्तु प्राग्राहं दधिमण्डके ।  
 आतञ्चनं सञ्जावनं प्रतीवापञ्च मूतकम् ॥ १४४ ॥  
 पयो दुग्धं च पीथं च स्तन्यं पुंसवनं सरम् ।  
 गव्यं ज्येष्ठं मधु क्षीरं योग्यं सोमरसोद्भवम् ॥ १४५ ॥  
 ऊधस्यं जीवनीयं च धारोष्णं त्वमृतं पयः ।  
 आसप्ताहात्तु पीयूषं ततो मोरटमोरके ॥ १४६ ॥  
 अविसोढाविमरीसे अविदूंसमवेः पयः ।  
 सन्तानिनी क्षीरशरः शरोग्रद्रवसंहतिः ॥ १४७ ॥  
 तिलाटः कूचिका चेति क्षीरस्य विकृती उभे ।  
 घोलं तृणं कालशेयं दण्डाहतरसायने ॥ १४८ ॥  
 मोरटं गोरसश्चाथ घोलः पादाम्बुसंयुते ।  
 तक्रं कट्वरमशोघ्नं श्वेतच्छाणं च सारणम् ॥ १४९ ॥  
 निरम्बु घोलं मथितमुदश्चित्तु जलार्धकम् ॥ १४९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे वैश्याध्यायः ॥ ८ ॥

## शूद्राध्यायः ॥ ९ ॥

शूद्रोऽन्त्यवर्णो वृषलो द्विजपोतो जघन्यजः ।  
 पञ्जः पद्योऽप्येकजातिः शूद्राः सङ्करजा अपि ॥ १ ॥  
 दासे भृत्यः परिस्कन्दः परजातः परैधितः ।  
 नियोज्यचेटकप्रेष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥ २ ॥  
 लाडीककिङ्करप्रेङ्खपाळकपरिकर्मिणः ।  
 सञ्चारिते धीकरश्च गोण्याः स्युर्दाससूनुवः ॥ ३ ॥  
 बन्धके स्थित आयत्तो भक्त्यायैव स्थितः कृतः ।  
 स्वस्कन्दो भिन्नकुम्भश्च भुजिष्यो दासमोचितः ॥ ४ ॥  
 भृतके भृतिभुक्तर्मकरो वैतनिकश्चिषु ।  
 भरणं भरणं भर्म वेतनं निष्क्रयो भृतिः ॥ ५ ॥  
 कर्मण्या तुलिका भृत्या भारवाहस्तु भारिकः ।  
 वार्त्ताहरो वैवधिको भारयष्टिर्विहङ्गिका ॥ ६ ॥  
 शिक्यं तल्लम्बि काचश्च पाथेयं शम्बलोऽस्त्रियाम् ।  
 कारवः शिल्पिनः सर्वे कुलिकास्ते कुलोत्तमाः ॥ ७ ॥  
 कला शिल्पं च कर्माथ तन्तुवायः कुविन्दकः ।  
 वाणिर्व्यतिश्च वानं स्याद् वेमा ना वानदण्डकः ॥ ८ ॥  
 तर्कुः कर्तनभाण्डे ना त्रसरः सूत्रवेष्टनः ।  
 धराः कार्पासतूलाः स्युस्तूलमस्त्री पिचुः पुमान् ॥ ९ ॥  
 पिञ्जनं स्याद्विहननं धराणां प्रविसारणम् ।  
 कल्पनं कर्तनं तुल्ये त्रिवृतं तु त्रिवित् त्रिषु ॥ १० ॥  
 आवर्तनं तु बलनं सूत्राणि नरि तन्तवः ।  
 सौचिकस्तुन्नवायः स्यात् सूचिः सूचा च सीवनी ॥ ११ ॥  
 सूचिसूत्रं पिप्पलकमोतं प्रोतमुभे त्रिषु ।  
 सीवनं सेवनं स्यूती रङ्गाजीवस्तु चित्रकृत् ॥ १२ ॥  
 लेखनी तूलिका कूर्ची पुस्तं लेप्यादिकर्मणि ।  
 या तु लेप्यमयी नारी सा स्यादञ्जलिकारिका ॥ १३ ॥  
 पाञ्चालिका तु वस्त्रादिपुत्रिका सालभञ्जिका ।  
 पल्लगण्डो लेपकारः कल्पाणिः समलेपनी ॥ १४ ॥  
 संवाहकोऽङ्गमर्दी स्याच्छस्त्रमार्जोऽसिधावकः ।  
 मणिकारो वैघटिकः शौलिकस्ताम्रकुट्टकः ॥ १५ ॥



नाडिन्धमः स्वर्णकारः कलादो 'मौष्टिकः समाः ।  
 कर्मारः स्यादयस्कारो व्योकारो लोहकारकः ॥ १६ ॥  
 शाङ्गिकः स्यात् काम्बविको भस्त्रा चर्मप्रसेविका ।  
 सन्दंशः स्यात् कङ्कमुखः काणा मूका वुषा स्मृता ॥ १७ ॥  
 विध्यते येन मण्यादिराविधोऽसौ निघोऽपि च ।  
 आस्फोटनी वेधनिका भ्रमः कुन्दश्च यन्त्रकम् ॥ १८ ॥  
 नाराची स्यादेषणिका शाणस्तु निकषः कषः ।  
 रोषाणस्तु घृषिघृष्वो हेमादिनिकषाश्मनि ॥ १९ ॥  
 यत्र निक्षिप्य कूटेन हन्यते सा निघानिका ।  
 प्रतिच्छाया प्रतिकृतिः प्रतिमा प्रतियातना ॥ २० ॥  
 प्रतिच्छन्दः प्रतिनिधिर्बेरं च प्रतिरूपकम् ।  
 प्रतिबिम्बोपमाने च सादृश्ये सन्निभं निभम् ॥ २१ ॥  
 हरिणी हेमप्रतिमा सूर्मिः स्थूणान्यलोहजा ।  
 कूटोऽश्मकुट्टकोऽथ स्यादृक्कः पाषाणदारकः ॥ २२ ॥  
 कायस्थः स्याल्लिपिकरः करणोऽक्षरजीवनः ।  
 लेखकोऽक्षरचञ्चुश्च लिबिलेखाक्षरस्य या ॥ २३ ॥  
 लिपिस्त्वालेख्यलेखा स्याद्रेखा तु स्यादकृत्रिमा ।  
 वर्णान्तरस्य सर्पादौ लाजिलेखा तु कृत्रिमा ॥ २४ ॥  
 मेलाभन्दो मषिघटी मेलाम्बु मलिनाम्बु च ।  
 मेला (मणिर्न षण् तस्या लेखन्या) कणिकोद्धृता ॥ २५ ॥  
 चण्डिलः क्षुरमर्दी स्यान्नापितोऽन्तावसायपि ।  
 क्षुरोऽस्य वपनं शस्त्रं कत्रिका कर्तनी कृवी ॥ २६ ॥  
 कुम्भकारः कुलालोऽस्य पचनं पाकमण्डलम् ।  
 धूसरश्चाक्रिकस्तैली पिण्याको ना खलिः स्त्रियाम् ॥ २७ ॥  
 आभोरस्तु महाशूद्रो गोपो गोसङ्घयगोदुहौ ।  
 गोपालो वल्लवश्चाथ वत्सीयस्त्रिषु तद्धिते ॥ २८ ॥  
 जाबालः स्यादजाजीवः कोणोऽक्ली लगुडो नरि ।  
 सन्दानं दामनी दामा न ना दाम पशोस्तु या ॥ २९ ॥  
 रज्जुः सा बन्धनी तन्त्री त्वल्पा पाशस्तु कर्णिका ।  
 गुणो वराटो रज्जुः स्त्री न ना शुल्बा वटी त्रयी ॥ ३० ॥  
 ग्रन्थिर्बन्धो ब्रजो गोष्ठो गौष्ठीनं तु पुरा ब्रजः ।  
 मन्थस्तु मन्था मन्थानो वैशाखः खजकोऽपि च ॥ ३१ ॥

कुठारो मन्थविष्कम्भो मन्थपात्रं तु गर्गरी ।  
 घोष आभोरपल्ली स्यात् पक्कणोऽस्त्रयन्त्यजालयः ॥ ३२ ॥  
 मालाकारो माल्यजीवी मालिकः प्रातिहारकः ।  
 ऊर्णा स्नावः कदल्यादेः करण्डी तु पुटी त्रयी ॥ ३३ ॥  
 तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारश्च काष्ठतट् ।  
 ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः कौटतक्षोऽनधीनकः ॥ ३४ ॥  
 स उद्हनो यत्र काष्ठे काष्ठं निक्षिप्य तद्ध्यते ।  
 ब्रश्चनः पत्रपरशुः परशुस्तु परश्वधः ॥ ३५ ॥  
 स्वधितिर्ना कुठारोऽक्ली वासी स्याद्धारुतक्षणी ।  
 क्रकचोऽस्त्री करपत्रं स्वधितिः कर्तनः समौ ॥ ३६ ॥  
 जीवान्तको मांसिकश्च कौटिको मांसविक्रयी ।  
 सूनातटिर्वधस्थानं कृपाणीली च कर्तरी ॥ ३७ ॥  
 मृगयुर्लुब्धको व्याधो द्वौ वागुरिकजालिकौ ।  
 आच्छोटनं खेटनश्च मृगव्यं मृगयाऽपि च ॥ ३८ ॥  
 आखेटश्च वराधिश्च वागुरा मृगबन्धनी ।  
 श्वा विश्वकद्रुर्मृगयादक्षोऽलर्कस्तु योगितः ॥ ३९ ॥  
 दक्षिणेर्मा तु स मृगो यो लुब्धैर्दक्षिणे हतः ।  
 वैतंसिकः शाकुनिक उन्माथः कूटयन्त्रकम् ॥ ४० ॥  
 शल्यमस्त्री शलाका स्याद् वितंसः पक्षिबन्धनम् ।  
 पक्षिणा येन गृह्यन्ते पक्षिणोऽन्ये स दीपकः ॥ ४१ ॥  
 कैवर्तो धीवरो दाशो नौजीवी जालिमार्गरौ ।  
 मत्स्यधानी कुवेणी स्याद् बलिशं मत्स्यवेधनम् ॥ ४२ ॥  
 जालमानाय उद्दालस्तूत्रतो मुकुलाकृतिः ।  
 पादकृष्णमकारः स्यादारा चर्मप्रभेदनी ॥ ४३ ॥  
 वद्धी नद्धी वरत्रा च शौण्डिकस्त्वासुतीवलः ।  
 कल्यापालो ध्वजी चाथ मद्यं स्यात् कपिशायनम् ॥ ४४ ॥  
 शीघ्रु कश्यमिरा कल्या शुण्डा देवी परिस्तुता ।  
 परिस्तुन्माधवी हाला प्रसन्ना मदिरा सुरा ॥ ४५ ॥  
 मदना मोहकलिका मदिष्ठा काचमालिका ।  
 कादम्बरी वारुणी च मधूलैस्तु मधूलिका ॥ ४६ ॥  
 पकैस्त्वक्षुरसैरन्ना शीघ्रुः पङ्कुरसः शिवः ।  
 शीतपङ्को रुक्षणीयोऽप्यपक्कै रसिकासवौ ॥ ४७ ॥



मधुमद्ये तु माध्वीकं कामिकान्तं मदोत्कटम् ।  
 विक्रान्तं कपिशं हृद्यं मुखवासः सुखोदयः ॥ ४८ ॥  
 मध्वासवोऽसितः सेव्यः शार्करो माधवोऽस्त्रियाम् ।  
 मैरेयमासवो धात्रीधातकीगुडवारिभिः ॥ ४९ ॥  
 काकोली पैष्टिकी श्वेताऽप्यापानं पानगोष्टिका ।  
 नग्नहूर्ना मद्यबीजं किण्वमप्यथ मेदकः ॥ ५० ॥  
 जगलोऽथ सनिस्सारो मर्कसो मासरोऽपि च ।  
 आसूतिर्मद्यसन्धानमासवोऽभिषवोऽपि च ॥ ५१ ॥  
 कारोत्तरः सुरामण्ड आसवोऽप्यथ भक्षणम् ।  
 उपदंशोऽपदंशश्च मधुवारा मधुक्रमाः ॥ ५२ ॥  
 शुण्डापानं मदस्थानं सपीतिः सहपानकम् ।  
 सरकं चषकं चास्त्री गल्वर्तोऽप्यनुकर्षणम् ॥ ५३ ॥  
 पानगोष्ठीषु यन्नृत्तं तत्र स्यादुच्चतालकम् ।  
 प्लवचाण्डालचण्डालमातङ्गास्तु जनङ्गमे ॥ ५४ ॥  
 विष्टिर्ना कारितं कर्म हठाद्येऽपि च तत्कृतः ।  
 अथैकागारिकश्चोरः परिमोषी मलिस्तुचः ॥ ५५ ॥  
 प्रतिरोधी परास्कन्दी तस्करः प्रतिरोधकः ।  
 स्तेनो रात्रिचरो दस्युर्मोषकः पारिपन्थिकः ॥ ५६ ॥  
 पश्यतो यो हरत्यर्थं स चोरः पश्यतोहरः ।  
 पटच्चरः पटच्चरो बन्दी स्त्री प्रग्रहो ग्रहः ॥ ५७ ॥  
 लोप्त्रं हृतोऽर्थश्चौर्यं तु स्तेयं स्तैन्यं च चौरिका ।  
 धूर्तोऽक्षधूर्तः कितवो द्यूतकृत् कृष्णकोहलः ॥ ५८ ॥  
 चौरिकश्चाक्षजीवी च सभिका द्यूतकारकाः ।  
 द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती तद्भेदाः पञ्चकादयः ॥ ५९ ॥  
 समाधिश्च समङ्गश्च परिवी रञ्जनं च तत् ।  
 पणो ग्लहो देवनस्तु पाशकोऽक्षोऽथ शारयः ॥ ६० ॥  
 शाराः स्युः परिणायस्तु तेषां सञ्चारणेऽभितः ।  
 अक्षपाता अयास्ते तु चतुस्त्रिव्येकयोगिनः ॥ ६१ ॥  
 कृतं त्रेता द्वापरं च कलिश्चेति यथाक्रमम् ।  
 जायाजीवस्तु शैलूषः शैलाली भरतो नटः ॥ ६२ ॥  
 रङ्गाजीवो नृत्तुर्नग्नो नण्डो रङ्गावतार्यपि ।  
 सर्वकेशी कृशाश्वी च नर्तकस्त्वध्रफुल्लकः ॥ ६३ ॥

यो यष्टिरञ्जुखड्गेषु प्रनृत्यति स पूरकः ।  
 केलकः प्रवकश्चासौ चारणास्तु कुशीलवाः ॥ ६४ ॥  
 नर्तको भूमिकां प्राप्नो देवानामर्धमानुषः ।  
 रङ्गावतारी रुद्रस्य (कृष्णस्य) त्वर्धमानवः ॥ ६५ ॥  
 रामस्य स्याद्देवरथः शक्रस्य तु शचीबलः ।  
 रावणस्य तु रङ्गोपमर्दी कंसस्य भूमिकाम् ॥ ६६ ॥  
 प्राप्तः फालगलालेपो यस्तु स्त्रीभूमिकां गतः ।  
 स भ्रूकुंसो भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसवत् ॥ ६७ ॥  
 तत्तद्वेषो भूमिका स्यात् तद्वारी भूमिकागतः ।  
 पात्राणि नाट्येऽधिकृताः सूत्रधारस्तु सूचकः ॥ ६८ ॥  
 नान्दी तु पाठको नान्द्याः पार्श्वस्थाः पारिपाथिकाः ।  
 विदूषकः केलिकिलः प्रहासी प्रतिभोऽपि च ॥ ६९ ॥  
 वेश्याचार्यः पीठमर्दः शिद्रो वातसुतो विटः ।  
 मार्दङ्गिको मौरजिको वीणावादास्तु वैणिकाः ॥ ७० ॥  
 वेणुधमाः स्युर्वैणविकाः पाणिवादास्तु पाणिघाः ।  
 नृत्तं गीतं वाद्यमिति नाट्यं तौर्यत्रिकं त्रिकम् ॥ ७१ ॥  
 सङ्गीतकं प्रेक्षणार्थं नाट्योक्ते नाट्यधर्मिका ।  
 उत्तमोत्तमिकं श्लोकैः सैन्धवं प्राकृतोक्तिभिः ॥ ७२ ॥  
 ताण्डवोऽस्त्री नृत्तलास्यनटनाक्षजनर्तनम् ।  
 नटितिर्नाटकी रासो नृत्तं बाह्यं स्वकल्पितम् ॥ ७३ ॥  
 रसभावाङ्गहाराद्यैः शास्त्रोक्तै रूपकाश्रयम् ।  
 नृत्तमाभ्यन्तरं नाम स्थायिभावात्मको रसः ॥ ७४ ॥  
 शृङ्गारहास्यबीभत्सवीराद्भुतभयानकाः ।  
 रौद्रश्च करुणश्चाष्टौ रसाः शान्तोऽपि च कचित् ॥ ७५ ॥  
 स्थायिभावाः क्रमादेशां रतिर्हासो जुगुप्सनम् ।  
 उत्साहो विस्मयो भीतिः क्रोधः शोकः शमोऽपि च ॥ ७६ ॥  
 बीभत्समाने बीभत्सो विस्मेतर्त्यद्भुतो रसः ।  
 भयानको रसो भीते हास्यो हसितरि स्थितः ॥ ७७ ॥  
 बीभत्सो विकृतिश्चित्रं त्वाश्रयं फुल्लमद्भुतम् ।  
 भयानकं प्रतिभयं भीमं भीष्मं भयङ्करम् ॥ ७८ ॥  
 भैरवं भीषणं घोरमाभीलं दारुणं च तत् ।  
 करुणः सकृपो रौद्रस्तमोऽमी विंशतिस्त्रिषु ॥ ७९ ॥



भावो मनोविकारः स्यादनुभावोऽस्य सूचकः ।  
 विभावो हेतवस्तस्य भावस्य हृदि वत्स्थितः ॥ ८० ॥  
 स्थायिसञ्चारिभेदेन द्विधा भावो व्यवस्थितः ।  
 स्वेदो घर्मो निदाघः स्यात् कालिका तु विवर्णता ॥ ८१ ॥  
 रोमोद्गमो रोमहर्षो रोमाञ्चः कण्टकोऽपि च ।  
 रोमाङ्क उल्लसनकमप्युल्बणकमित्यपि ॥ ८२ ॥  
 स्मितं त्वदृष्टदशने हासो वक्रोष्ठिका न ना ।  
 रुचिः स्त्री हसितं दृष्टदन्ते विहसितं श्रुते ॥ ८३ ॥  
 सोत्प्रासे त्वाच्छ्रुरितकं तथोपहसितं भवेत् ।  
 निकुञ्चितशिरोगात्रमट्टहासो महाहसे ॥ ८४ ॥  
 अतिहासस्त्वनुस्यूतोऽपहासोऽकारणात् कृते ।  
 स्वरभेदस्तु कल्कत्वं स्वरकम्पस्तु वेपथुः ॥ ८५ ॥  
 आकारगोपनायामपटीकाप्यवकटापि स्त्री ।  
 न पुमानवहित्था स्यादक्ली गृहजालिकाप्यस्याम् ॥ ८६ ॥  
 क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं लोतोऽश्रु नयनोदकम् ।  
 अश्रु रोदनमास्रं च क्रीडा खेला च कुर्दन्म् ॥ ८७ ॥  
 न स्त्री केलिः परीहासः क्रीडा लीला च नर्म च ।  
 जृम्भणं तु त्रयी जृम्भा मुखभेदस्तु जृम्भिका ॥ ८८ ॥  
 एजनं वेपथुः कम्पः प्रलयोऽस्पन्दनस्थितिः ।  
 आटोपावेगसंरम्भसम्भ्रमास्तु त्वरा त्वरी ॥ ८९ ॥  
 असौम्येऽक्षयदृष्टिः स्यादवलोकस्त्वधः कृतः ।  
 उन्मीलनं स्यादुन्मेषो निमिषस्तु निमीलनम् ॥ ९० ॥  
 स्फुरितं स्पन्दितमथ भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः स्त्रियाम् ।  
 भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः सारी काली तीरतरङ्गिका ॥ ९१ ॥  
 चतुरं त्वल्पा भ्रुकुटी रेचितं त्वेकया भ्रुवा ।  
 चेष्टाः शृङ्गारजाः स्त्रीणां हावा लीलादयो दश ॥ ९२ ॥  
 वल्लभानुकुतिलीला विलासः श्लिष्टविक्रिया ।  
 विच्छित्तिर्वस्त्रमाल्यादेर्न्यासोऽनास्थोपशोभितः ॥ ९३ ॥  
 सकृत्सुश्लिष्टरुदितस्मितादि किलिकिञ्चितम् ।  
 बिम्बोकोऽहङ्कृतेनैव प्राप्तेऽभीष्टेऽप्यनादरः ॥ ९४ ॥  
 विकृतं तूचितस्यापि लज्जादिभिरभाषणम् ।  
 मोट्टायितं वल्लभस्य चिन्ता कुट्टमितं पुनः ॥ ९५ ॥

स्तनोष्ठादेर्दृढस्पर्शाद् (दुःखवत्) सुखसम्भ्रमः ।  
 विभ्रमो दृग्विपर्यासो ललितं कोमलक्रमः ॥ ९६ ॥  
 सत्त्वाद्भावस्ततो हावो लीला हावात् समुत्थिता ।  
 अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपो नानाकरणसंहतिः ॥ ९७ ॥  
 करणान्यङ्गचेष्टाः स्युर्हरणं करणं समे ।  
 व्यञ्जकोऽभिनयो यस्तु सूच्योऽर्थोऽभिनयः स च ॥ ९८ ॥  
 भूषणाद्यैर्गिराऽङ्गेन सत्त्वेनाभिनयाः कृताः ।  
 त्रिषु क्रमात् स्युराहार्यवाचिकाङ्गिकसात्त्विकाः ॥ ९९ ॥  
 नाटकं नाटिका भाणो वीथिः प्रहसनं डिमः ।  
 ईहामृगः प्रकरणमङ्कः समवकारकः ॥ १०० ॥  
 व्यायोगश्चेति रूपाणि नाट्यस्यैता विकल्पनाः ।  
 भारती सात्त्वती चैव कैशिकथारभटीति च ॥ १०१ ॥  
 चतस्रो वृत्तयो भाषाः संस्कृताद्या विकल्पिताः ।  
 भारती संस्कृता वाणी शेषाश्चेष्टा इति क्वचित् ॥ १०२ ॥  
 अथ नाट्योक्तयो राजा देवो भट्टारकोऽपि च ।  
 महाराजश्च राज्ञी तु स्वामिनी महिषी तु चेत् ॥ १०३ ॥  
 देवो स्याद्भट्टिनी त्वन्या गणिका पुनरञ्जुका ।  
 भट्टारिका राजमाता तत्पुत्री भर्तृदारिका ॥ १०४ ॥  
 तनयस्त्वस्य गोस्वामी (स्वामी) चाप्यथ राष्ट्रियः ।  
 स्यालोऽस्य युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥ १०५ ॥  
 पतिस्त्वार्थ आर्यपुत्र आर्यौ मारिषमार्षकौ ।  
 आबुक्स्तु पिताऽम्बा तु माता व्येष्टा स्वसौप्तिका ॥ १०६ ॥  
 बला दुसा कनिष्ठा स्यादाबुक्तो भगिनीपतिः ।  
 बाला वासुर्भदन्ताः स्युः शाक्यक्षपणकादयः ॥ १०७ ॥  
 आर्यभ्राता क्षुल्लतातो देवरस्त्वार्थपुत्रकः ।  
 हण्डे हञ्जे हलाऽऽह्वाने नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १०८ ॥  
 अत्रहण्यमवद्यं स्यान्निष्ठा निर्वहणं समे ।  
 गीतं गेयं च गानं च यत्तु तन्त्रीसमुद्भवम् ॥ १०९ ॥  
 तन्निर्गीतं बहिर्गीतं गान्धर्व दिव्यमैश्वरम् ।  
 सप्त स्वरास्त्रयो ग्रामा मूर्च्छना एकविंशतिः ॥ ११० ॥  
 तानान्येकोनपञ्चाशदित्येष स्वरविस्तरः ।  
 स्थानान्युरः शिरः कण्ठः श्रावकः कण्ठजो गुणः ॥ १११ ॥



यो दूराच्छ्रावयत्यन्ये त्वन्वर्था मधुरादयः ।  
 काकीत्याद्याः कण्ठदोषास्तत्र काकी नृलिङ्गकः ॥ ११२ ॥  
 अगम्भीरः स्वरोऽथ स्यात्तम्बिकी घ्राणनिर्गतिः ।  
 सन्दष्टो भेदसम्मिश्रः कफिलो घर्घरः कफात् ॥ ११३ ॥  
 काकली तु कले सूक्ष्मे रागा गीतेर्विधाः पृथक् ।  
 वादित्रं वादनं वाद्यमोतोद्यं तच्चतुर्विधम् ॥ ११४ ॥  
 तत् वीणादिकं वाद्यं तालाद्यं विततं घनम् ।  
 वंशादिकं तु सुषिरमानद्धं मुरजादिकम् ॥ ११५ ॥  
 घनं चाथाद्यवाद्ये द्वे विततं सहकीर्तने ।  
 विपञ्ची वल्लकी वीणा घोषवत्यनुवादिनी ॥ ११६ ॥  
 स्यात् कण्ठकूणिका चाथ स्याच्चित्रा परिवादिनी ।  
 तन्मयश्चेत् सप्त ताश्चेत् स्युश्चतुर्दश चतुर्दशी ॥ ११७ ॥  
 एकादशेकादश चेदेवं वीणा त्रयोदशी ।  
 वीणा स्थाणोरनालम्बी गणानां तु प्रभावती ॥ ११८ ॥  
 विश्वावसोस्तु बृहती तुम्बुरोस्तु कलावती ।  
 महती नारदस्य स्यात् सरस्वत्यास्तु कच्छपी ॥ ११९ ॥  
 कोलम्बकस्तु कायोऽस्याः ककुभस्तु प्रसेवकः ।  
 वीणा वंशशलाका तु कणिका कूणिका च सा ॥ १२० ॥  
 परिवादो वादनार्थ उपनाहस्तु बन्धनम् ।  
 तन्त्रीष्वङ्गुष्ठसंस्पर्शः कलस्तासां तु ताडनम् ॥ १२१ ॥  
 निष्कोटितोऽस्त्री सव्येन तलस्त्वन्येन पाणिना ।  
 लयस्तु साम्यं दशभिश्छन्दोऽक्षरपदैः सह ॥ १२२ ॥  
 विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात् ।  
 तालः कालक्रियामानं क्रियाङ्गुलिकरोद्भवा ॥ १२३ ॥  
 ताली त्रयी कांस्यताली विताली तालपत्रिका ।  
 म्भिङ्गिल्लस्तु पयोऽथ स्याद् दर्दरः कलशीमुखः ॥ १२४ ॥  
 वंशे तु वंशिका पूरी मुरली वेणुका च सा ।  
 शृङ्गवाद्ये खरमुखं स्यादाघट्टलिकेति च ॥ १२५ ॥  
 तोट्टभी चाथ पिच्छोला पाली तु जतुकाहला ।  
 काहला तु कहाला स्याच्चण्डकोलाहलेति च ॥ १२६ ॥  
 नालिका सुषिरच्छेदे मुरली पुष्पिकेति च ।  
 वाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी ॥ १२७ ॥

काण्डवीणा कुवीणा च ढकारी किन्नरीति च ।  
 सारिका कुङ्कुणी चाथ यो दण्डोऽल्पकलस्वनः ॥ १२८ ॥  
 दण्डिका कारवी सृष्टा किङ्गिरो जर्जरश्च सः ।  
 मुरजास्तु मृदङ्गास्ते त्वङ्क्यालिङ्गयोर्ध्वकास्त्रयः ॥ १२९ ॥  
 पूर्वः पूर्वो महानेषामेतत्पुष्करमण्डले ।  
 व्यापारस्त्वङ्गुलीनां यो मार्जना सा त्रिधा त्वियम् ॥ १३० ॥  
 मायूरी चार्धमायूरी तथा कर्मारवीति च ।  
 घर्घरी स्याद् घर्घरिका वादने मूर्च्छना न ना ॥ १३१ ॥  
 स्युः षड्जर्षभगान्धारमध्यमाः पञ्चमस्तथा ।  
 धैवतश्च निषादश्च तन्त्रीकण्ठोद्भवाः स्वराः ॥ १३२ ॥  
 ते केकिचातकाजक्रुड पिकभेकगजस्वराः ।  
 दुन्दुभिस्त्वानको भेरी भम्भा नासुश्च नान्यपि ॥ १३३ ॥  
 स्याद् यशःपटहो ढक्का पटहस्त्वानकोऽस्त्रियौ ।  
 हुडुक्कस्तु हडक्कोऽस्त्री समौ पणवमर्हलौ ॥ १३४ ॥  
 वाद्यप्रभेदा डमरुमड्डुडिण्डिमभर्भराः ।  
 तिमिलाट्टरीवेध्यालुम्बिकाकुञ्जिकादयः ॥ १३५ ॥  
 वादित्रलगुडे कोणो न नपुं शारिका स्त्रियाम् ।  
 तूयोऽस्त्री वाद्यनिर्घोषे वादित्रं वादनञ्च तत् ॥ १३६ ॥  
 तूरकामध्वजौ चाथ सायन्तूर्येऽक्षताडनम् ।  
 संवेशने तु भ्रुकुटः प्रकटः प्रतिबोधने ॥ १३७ ॥  
 पटहाडम्बरौ युद्धे मङ्गले प्रियवादिना ।  
 देवतार्चनतूर्ये तु धूमलोऽस्त्री बलिर्न षण् ॥ १३८ ॥  
 क्षुण्णकं मृतयात्रायामर्धतूरो रणोद्यमे ।  
 नटोत्साहनमङ्के स्यात् पूर्वरङ्गास्त्वतः परे ॥ १३९ ॥  
 प्रत्याहारोऽत्र कुतपविन्यासे कुतपः पुनः ।  
 वाद्यवादकसामग्र्यामारम्भः गीत्युपक्रमे ॥ १४० ॥  
 निवेशने गायिकानां न पुमानवतारणम् ।  
 लोकपालार्चने दिक्षु करणीपरिवर्तनम् ॥ १४१ ॥  
 नन्दी चारी महाचारी कथा सूत्रं प्ररोचना ॥ १४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे शूद्राध्यायः ॥ ९ ॥

तृतीयो भूमिकाण्डः समाप्तः ॥ ३ ॥



## ४. अथ पातालकाण्डः

सरीसृपाध्यायः ॥ १ ॥

पातालं बलिसद्माधोभुवनं वडबामुखम् ।  
 रसातलं तलं नागलोको दैत्यक्षयो रसा ॥ १ ॥  
 अगाधो भुवनं रोकं रन्ध्रं निर्व्यथनं बिलम् ।  
 कुहरं सुषिरं छिद्रं श्वभ्रोऽस्यक्ली सुषिर्वपा ॥ २ ॥  
 गर्तः पतेरो भूश्चभ्रमवखातोऽवटोऽवधिः ।  
 शेषोऽनन्तो नागराजः सर्पराजस्तु वासुकिः ॥ ३ ॥  
 नागा बहुफणाः सर्पास्तेषां भोगवती पुरी ।  
 सर्पो द्विरसनो व्यालो दन्दशूकः सरीसृपः ॥ ४ ॥  
 उरगो भुजगो जिह्वो भुजङ्गोऽहिर्भुजङ्गमः ।  
 फुल्लरीको लेलिहानः कुण्डल्याशीविषः फणी ॥ ५ ॥  
 दीर्घपृष्ठो विषधरः पन्नगो दृक्श्रवा हरिः ।  
 बिलौका गूढपाञ्चकी नाकुसद्धानिलाशनः ॥ ६ ॥  
 दर्वीकरा मण्डलिनो राजिमन्तश्च पन्नगाः ।  
 रथाङ्गलाङ्गलच्छत्रस्वस्तिकाङ्कुशलाञ्छनाः ॥ ७ ॥  
 फणिनः शीघ्रगतयः सर्पा दर्वीकराभिधाः ।  
 दीर्घा मन्दा मण्डलिनो मण्डलैर्विविधैर्युताः ॥ ८ ॥  
 राजिमन्तो राजियुता राजीला राजिलाश्च ते ।  
 वैकरञ्जाः सङ्करजास्त्रयाणां व्यन्तरास्तथा ॥ ९ ॥  
 षड्विंशतिर्मण्डलिनस्तथा दर्वीकराभिधाः ।  
 त्रयोदश च राजीला वैकरञ्जाभिधास्त्रयः ॥ १० ॥  
 निर्विषा द्वादशेत्येवमशीतिः सर्पजातयः ।  
 दर्वीकरा महासर्पः फुल्लः पुष्पाभिकीर्णकः ॥ ११ ॥  
 कुम्भीनसो लोहिताहिः कृष्णसर्पः कुलस्थकः ।  
 शङ्खपालो महापद्मः काकोदर इतीदृशाः ॥ १२ ॥  
 आशीविषाश्च सर्वेऽथ कृष्णसर्पो वलाहकः ।  
 अथ मण्डलिनस्तन्तुर्गोनसो वृद्धगोनसः ॥ १३ ॥  
 किशुकः पीनसः पिङ्गो देवभिन्न इतीदृशाः ।  
 गोनसस्तु तिलित्सः स्याद् गोनसो घोणसोऽपि च ॥ १४ ॥

राजिलाः स्युः पुण्डरीकश्चित्रको लोहिताक्षकः ।  
 दिव्येलकः सर्पराजः किकीसादः इतीदृशाः ॥ १५ ॥  
 अथ पुष्करसादः स्यात् सर्पराजश्च सर्पभुक् ।  
 वैकरञ्जाः पोटगलस्तथा पुष्पाभिकीर्णकः ॥ १६ ॥  
 दिव्योऽलर्कोऽप्यथो सर्पा निर्विषा दिव्यकालिनी ।  
 पैङ्गराजोऽप्यजगरः शुकपोत्रो वलाहकः ॥ १७ ॥  
 वर्षाभीः शकलज्योतिः कोलकः पादवाहिकः ।  
 पुष्पकोऽहिपताकश्च गन्धाहिक इतीदृशाः ॥ १८ ॥  
 अलगर्द्धो जलव्यालो वाहसोऽजगरः शयुः ।  
 मालुधानो मातुलाहिः पुण्डरीकस्तु डुण्डुभः ॥ १९ ॥  
 राजिलः क्षीरकश्चाथ नानीपातः स्वजः समौ ।  
 अहीरिणिः स्त्री द्विमुखी निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ॥ २० ॥  
 सर्पाश्चरस्तु निर्मोकः कञ्चुको नित्वयन्यपि ।  
 अहिनित्वयनी चाथ स्फटा भोगः फणा न षण् ॥ २१ ॥  
 गरलं तु विषं द्वेलो गरस्तु कृतकं विषम् ।  
 द्वेलास्तु कालकूटाद्या मूलपुष्पफलात्मकाः ॥ २२ ॥  
 कालकूटः कटोऽथ स्याद् गौरार्द्रो ब्रह्मबालुकम् ।  
 ब्रह्मघोषश्च घौषश्च पुण्डरीकं तु बालुकम् ॥ २३ ॥  
 एवमन्येऽपि काकोलो वत्सनाभो हलाहलः ।  
 सौराष्ट्रिको ब्रह्मपुत्रशौक्लिकेयेन्द्रदारदाः ॥ २४ ॥  
 मुस्तः कुष्ठो मेघशृङ्ग इत्याद्याश्चाथ वातिकः ।  
 विषवैद्यो जाङ्गलिको व्यालमाह्याहितुण्डिकः ॥ २५ ॥  
 गोधा निहाका मुसली वृक्षजा सा शयण्डकः ।  
 अथ गौधेरगौधारौ भुजगीगोधयोः सुते ॥ २६ ॥  
 गौधेयश्चाथ चिक्रोडस्तालको रोमशीति च ।  
 नकुलः पिङ्गलोऽथैष कर्शो रोमशपुच्छकः ॥ २७ ॥  
 नकुलस्तु महान् बभ्रुर्धरीको नकुलाकृतिः ।  
 कृकलासः प्रतिरबिः शयानः सरटः शयः ॥ २८ ॥  
 स कामरूपी बिम्बः स्यात् कृकवाकुः सुदुष्प्रभः ।  
 हालाहलस्त्वञ्जानिका ब्राह्मणी रक्तपुच्छिका ॥ २९ ॥  
 सृजया चाथ दैवज्ञा ज्येष्ठा स्याद् गृहगौलिका ।  
 टट्टनी मुसली पल्ली माणिक्या गृहगोधिका ॥ ३० ॥



कुड्यमत्स्या सुरश्वेता कुण्डणाची सुराजिका ।  
 उन्दुर्मुषिकः काण्डमाखुस्तु खनकः क्रमः ॥ ३१ ॥  
 चुचुन्दरी तु गन्ध्राखुगिरिका बालमूषिका ।  
 वृश्चिके त्वात्यलिद्रूणा मलं तत्पुच्छकण्टकः ॥ ३२ ॥  
 खर्जुरो वृश्चिका न क्ली शूककीटोऽपि वृश्चिकः ।  
 आढा शतपदी कर्णजलका ढारिकापि च ॥ ३३ ॥  
 मूषिका लृतिका लृता तन्तुवायश्च जालिकः ।  
 ऊर्णनाभस्तन्तुनाभः कृमिर्मर्कटकोऽपि च ॥ ३४ ॥  
 ऊर्णाबहिश्चोर्णवाहीराशाबन्धोऽस्य जालकम् ।  
 लृतापट्टस्तु तत्कोश उदंशो मत्कुणः समौ ॥ ३५ ॥  
 घुणः कृमिः काष्ठभवा लृतातः स्यात् पिपीलिका ।  
 ब्राह्मणी स महान् पिङ्गः कपिशा तु गृहेडिका ॥ ३६ ॥  
 उलङ्कलो महान् कृष्णः सा मर्कोटपिपीलिका ।  
 या कृष्णाऽल्पाऽथ सूक्ष्माऽन्या जातिः कन्यापिपीलिका ॥ ३७ ॥  
 वम्बो वम्बचुपदीकोपजिह्विका चोपदेहिका ।  
 तत्प्राया शिथिली पिङ्गा यूकस्तु शिरसि क्रिमिः ॥ ३८ ॥  
 नीलाङ्गा कृमिरन्तर्जः क्षुद्रः कीटो बहिर्भवः ।  
 पुल्लकास्तूभयेऽपि स्युः कीकसाः कृमयोऽणवः ॥ ३९ ॥  
 सरीसृपास्तु सर्पाद्या दन्दशूकास्तु दंशकाः ।  
 शलभाद्याः पतङ्गाः स्युर्यादांसि जलजन्तवः ॥ ४० ॥  
 पृथुरोमा ऋषो मत्स्यो मीनो वैसारिणस्तिमिः ।  
 जलपिप्पिक आत्माशी शकुली स्वकुलक्षयः ॥ ४१ ॥  
 स्थिरजिह्वः सङ्गचारी विसारः शम्बरोऽण्डजः ।  
 अथो सहस्रदंष्ट्रः स्याद् गलेवालौऽपदालकः ॥ ४२ ॥  
 वदालस्त्वहिकश्चित्रः पाठीनो मृदुकण्टकः ।  
 फलकी स्याच्चित्रफली लोहितस्त्वावतारिकः ॥ ४३ ॥  
 एत्थालः स्याच्चीननको महाशल्कः सितायुधः ।  
 शृङ्गी तु सर्पशफरी प्रोष्ठी तु शफरी न षण् ॥ ४४ ॥  
 नलमीनश्चिलिचिमो गण्डकाः शकुलार्भकाः ।  
 क्षुद्राण्डो मत्स्यसङ्घातः पोताधानं नपुंसकम् ॥ ४५ ॥  
 उदण्डपालनदलद्वेकराजीवकोत्पलाः ।  
 कुलीरः कर्कटः पृष्ठचक्षुः पार्श्वोदरप्रियः ॥ ४६ ॥

बिल्वकोऽण्डप्रहरणः षोडशाङ्घ्रिद्विधागतिः ।  
 भेके शालुः प्लवव्यङ्गशाल्द्राण्डुककेण्डुकाः ॥ ४७ ॥  
 मण्डूकश्चैष गृहजो म्लानः कोणेषिशाचकः ।  
 पीतेऽस्मिन् कूलमण्डूको वारिपिण्डोऽश्ममध्यजः ॥ ४८ ॥  
 कृष्णास्या कृतभीः श्वेता कोटिका तद्विपर्यये ।  
 चित्रे चित्राणुकः कूपे भवः कूपेषिशाचकः ॥ ४९ ॥  
 कूर्मः कच्छप ओहारः पञ्चगूढश्चतुर्गतिः ।  
 गुहाशयस्तूपपृष्ठः कश्यपो जीवथो भृथः ॥ ५० ॥  
 दुली दुणी च तत्कान्ता मकरो मत्स्यराड् भृषः ।  
 खड्गनामा खड्गपुच्छस्तिमिशत्रुस्तिमिङ्गिलः ॥ ५१ ॥  
 तद्भेदो हस्तिमकरोऽथ स्याद् वारुणपाशकः ।  
 ग्राहस्तन्त्रस्तन्तुनागस्तन्द्रश्चामोघतन्तुकौ ॥ ५२ ॥  
 नके तु कुम्भी कुम्भीरो गोमुखश्च महामुखः ।  
 तालुजिह्वः शङ्खमुख आलास्यस्त्वम्बुसूकरः ॥ ५३ ॥  
 उद्रस्तु जलमार्जारः पारी परकुलो वशी ।  
 शिशुमारस्त्वम्बुकपिरुणवीर्यो महावसः ॥ ५४ ॥  
 असिप्लवोऽम्बुलकी स्त्री वीरलस्तु महाभृषः ।  
 त्रयी तु कम्बुः शङ्खोऽस्त्री सुग्रीवो मधुरस्वनः ॥ ५५ ॥  
 त्रिरेखः षोडशावर्तः स तु शङ्खनखोऽल्पकः ।  
 मुक्तास्फोटोऽब्धिमण्डूकी शुक्तिर्युक्ता तु मौक्तिकम् ॥ ५६ ॥  
 मुक्ताफलं शौक्तिकेयं गङ्गेष्टिः कटशर्करा ।  
 शम्बूकः क्षुब्धकः शङ्खः कपर्दस्तु वराटकः ॥ ५७ ॥  
 स्त्री चूर्णिरथ शुक्तिः स्याद् दुर्नामा दीर्घकोशिका ।  
 जलका तु जलालोका सूक्ता भूम्नि जलौकसः ॥ ५८ ॥  
 या जलौका वृणचरी सा स्यात् वृणजलायुका ।  
 गण्डूपदः किञ्चुलको भूलता तत्प्रिया शिली ॥ ५९ ॥  
 स्थले करिनराश्वाद्या यावन्तः सन्ति जन्तवः ।  
 ते जलेऽपि जलारूपाः स्युर्जलपर्यायपूर्वकाः ॥ ६० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

पातालकाण्डे सरीसृपाध्यायः ॥ १ ॥



## जलाध्यायः ॥ २ ॥

सलिलं मलिनं तोयं मरुलं मेघजं कतम् ।  
 नीरं वारि पयोऽम्भोऽर्णो मेघपुष्पं कुलीनसम् ॥ १ ॥  
 पानीयं जीवनीयं कं जलमम्बूदकं दकम् ।  
 विषं पाथो घनपदं भुवनं जीवनं वनम् ॥ २ ॥  
 वार्नं पुंसि स्त्रियो भूमन्यापो घनरसः पुमान् ।  
 वल्लरं तु सितं तोयमतिक्षारं तु किट्टिमम् ॥ ३ ॥  
 काचिमं स्यादतिस्वच्छमूतं कलुषमाविलम् ।  
 शीतलं स्वादुर्नि जले द्राम्भृतं तत्क्षणोद्भृतम् ॥ ४ ॥  
 जलाशया जलाधारास्ते त्वगाधजला ह्रदाः ।  
 अखातं देवखाते स्यात् पुष्करिण्यां तु खातकम् ॥ ५ ॥  
 आधारस्तु तटाकोऽस्त्री कासारः सरसी सरः ।  
 आवाहो दीर्घिका वापी वेशन्तस्त्वल्पपल्वले ॥ ६ ॥  
 अन्धुरब्धः प्रहिः कूपश्चुण्डी चौण्डश्च चूतकः ।  
 अवखातस्तु कीर्णः स्यादुत्कीर्णश्च पुरी स्त्रियाम् ॥ ७ ॥  
 विकिरः स्यात् कीर्णजल उद्भिदस्तु जलोद्गमः ।  
 पीनाहस्तु स्त्रियां नेमिः कूपस्य मुखबन्धनम् ॥ ८ ॥  
 आहावश्च निपानश्च कूपपार्श्वजलाश्रयः ।  
 प्रदरस्तूदपानोऽस्त्री बद्धाम्बु स्रोतसो धृतम् ॥ ९ ॥  
 आवालमालवालं स्यात् सेतौ वारणसंवरौ ।  
 उदधिः सागरोऽपारो जलराशिरपांपतिः ॥ १० ॥  
 रत्नाकरो जलनिधिः समुद्रो मकरालयः ।  
 उदन्वान् वरुणावासः सरितांपतिरुत्पतिः ॥ ११ ॥  
 सरित्पतिरूपारः पारावारोऽब्धिरर्णवः ।  
 मितद्रुः संवरः पेरुः स्तम्भी स्तम्भिमहोदधिः ॥ १२ ॥  
 कूजेऽस्य वेला मर्यादा पूर्णर्वेलाम्बुवर्धनम् ।  
 डिण्डीरोऽम्बुकफः फेनो बुदुबुदस्थासकौ समौ ॥ १३ ॥  
 भङ्गस्तरङ्गो वीचिः स्त्री तस्मिन्स्त्वेव महत्यषण् ।  
 ऊर्मिः कल्लोल उल्लोलो लहर्युत्कलिकेति च ॥ १४ ॥

पोहित्थं तु प्रवहणं पोथश्चाप्यथ मङ्गिनी ।  
 नौस्तरिस्तरणी वेटी द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ॥ १५ ॥  
 उडुपं तु प्लवो भेल आरोह्योऽसौ तरण्डकः ।  
 केनिपातास्त्वरित्राणि पोलिन्दास्तु पुलिन्दकाः ॥ १६ ॥  
 कर्णं पृष्ठस्थितारित्रं नौशिरो मङ्गमस्त्रियाम् ।  
 नावो दण्डः क्षेपणी स्त्री कूपस्तु गुणवृक्षकः ॥ १७ ॥  
 आतरस्तरपण्यं स्यात् सेकपात्रं तु सेचनम् ।  
 सांयात्रिकः पोतवणिक् पोतवाहो नियामकः ॥ १८ ॥  
 कर्णधारस्तु निर्यामो नावारोहास्तु नाविकाः ।  
 अगाधमतलस्पर्शमस्थानञ्च गभीरकम् ॥ १९ ॥  
 गम्भीरञ्चाथ नौतार्यं नाव्यं स्यात्ते नव त्रिषु ।  
 घट्टोऽवतारस्तीर्थोऽस्त्री प्रणाल्यङ्गी पयोवहा ॥ २० ॥  
 सरणी हरणिर्भूणिर्निर्ममद्वारि तु भ्रमः ।  
 उद्घाटनं घटीयन्त्रं पादावर्तोऽरघट्टकः ॥ २१ ॥  
 नदी स्रोतस्विनी कुल्या स्रवन्ती निम्नगा सरित् ।  
 हिरण्यवर्णा गिरिजा रोधोवक्त्रा पयस्विनी ॥ २२ ॥  
 तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्यादिनी धुनी ।  
 अब्धा कूलङ्कषा सिन्धुरापगा वाहिनी वहा ॥ २३ ॥  
 त्रिस्तोता जाह्नवी गङ्गा देवसिन्धुस्त्रिमार्गा ।  
 भागीरथी विष्णुपदी स्वर्वापी हरशेखरा ॥ २४ ॥  
 धर्मद्रवी त्रिमार्गा च पाताले भोगवत्यसौ ।  
 यमस्वसा तु यमुना कालिन्धर्कात्मजा यमी ॥ २५ ॥  
 नर्मदा स्यात् सोमभवा रेवा मेकलकन्यका ।  
 बाहुदा त्वर्जुनी सैता श्यामाङ्गी सैतवाहिनी ॥ २६ ॥  
 टापी तु तापिनी शैव्या चन्द्रभासा तु चन्द्रिका ।  
 शतद्रुस्तु शुतुद्री स्याद्विपाशा तु विपाट् स्त्रियाम् ॥ २७ ॥  
 गोदावरी तु गोदा स्यात् कावेरी त्वर्धजाह्नवी ।  
 शरावती वेत्रवती तुङ्गभद्रा सरस्वती ॥ २८ ॥  
 ताम्रपर्णी कृष्णवर्णा गोमत्याद्याश्च निम्नगाः ।  
 नदः सरस्वान् भिद्योद्धयौ कुल्या कर्पूः कृता नदी ॥ २९ ॥



वेणिर्धारा प्रवाहौघौ पूरस्तु जलबृंहणम् ।  
 चक्राणि पुटभेदाः स्युरावर्तः पयसां भ्रमः ॥ ३० ॥  
 जलोच्छ्वासाः परीवाहाः कूपकास्तु विदारकाः ।  
 सञ्छेद्यं सङ्गमो नद्योः सम्भेदोऽप्यथ रोधसि ॥ ३१ ॥  
 तीरं कूलं प्रपातश्च प्रान्ते कच्छस्तटी त्रयी ।  
 पारावारे परात्रत्ये कूले पात्रं तदन्तरम् ॥ ३२ ॥  
 अस्त्री द्वीपोऽन्तरीपं ह्री पुलिनं तज्जलोत्थितम् ।  
 सैकतं सिकताप्रायं सिकता भूमिन् बालुकाः ॥ ३३ ॥  
 उत्पल स्यात् कुवलयं कुवेलं कुवलं कुवम् ।  
 नीलोत्पलश्च कन्दोष्ठं कन्दोब्जं कर्णभूषणम् ॥ ३४ ॥  
 इन्दीवरश्च नीलाब्जं रक्तपाणिकमुत्पले ।  
 वरोत्पलं तु कल्हारं सौगन्धिकशिशुप्रिये ॥ ३५ ॥  
 कंसोत्पलं विगन्धि स्याद् वनजं वन्यकं जले ।  
 पद्मोऽस्त्री पङ्कजं कञ्जं कुविलीनं सरोरुहम् ॥ ३६ ॥  
 सरसीजं सरसिजं सारसं सरसीरुहम् ।  
 सरोजमब्जमपुष्पमरविन्दं महोत्पलम् ॥ ३७ ॥  
 सहस्रपत्रं नलिनं शतपत्रं कुशेशयम् ।  
 बिसप्रसूनं राजीवं निर्लेपं बिसनाभिजम् ॥ ३८ ॥  
 पङ्केरुहं तामरसं कमलं दारदोलके ।  
 रक्ते तु पद्मे कण्डारं बिसखण्डमथोऽम्बुजम् ॥ ३९ ॥  
 चारुनालं कोकनदं श्वेते तु शुचिकर्णिकम् ।  
 पुण्डरीकं महापद्मं पवित्रं पुण्यगन्धिकम् ॥ ४० ॥  
 श्रीपुष्पं स्वर्णराजश्च कुमुदं गर्दभाङ्गयम् ।  
 गन्धसोमं कुमुच्चन्द्रं कैरवश्चाथ लोहिते ॥ ४१ ॥  
 अस्मिन् कोकनदं जारं सुनालं रक्तकुण्डलम् ।  
 करहाटः शिफा कन्दं नाला नालमथ त्रिषु ॥ ४२ ॥  
 मृणाली शतपर्व ह्री बिसश्च नलिनी पुनः ।  
 बिसिनी पद्मिनीत्याद्याः पद्मस्तम्बे सरस्यपि ॥ ४३ ॥  
 भवेत् पुटकिनी पद्मस्तम्बमात्रे प्रकीर्तिता ।  
 कुमुद्वती कुमुदिनी शाख्यकं कन्दमौत्पलम् ॥ ४४ ॥

संवर्तिका नवदलं पद्म ह्री कुसुमच्छदः ।  
 किञ्जल्कः केसरो न स्त्री बीजकोशो वराटकः ॥ ४५ ॥  
 कर्णिका कर्णिकं चाथ पद्माक्षं पद्मकर्कटी ।  
 हठः कुम्भी वारिपर्णी किञ्जोलस्त्वङ्गलोड्यकः ॥ ४६ ॥  
 शुक्लकारं तु कृसरं वृष्यकन्दं कशेरु च ।  
 शृङ्गाटकस्तु गरुलो दन्तबीजस्त्रिकण्टकः ॥ ४७ ॥  
 क्षीरबीजः क्षीरशुक्लस्तर्पणो जलकण्टकः ।  
 चिञ्चोटिका स्यादवका स्वादुमुस्ता गरोलिका ॥ ४८ ॥  
 शैबलो जलशूरः स्यादवका जलनीलयपि ।  
 शैवालश्चाथ शेवालं चूर्णाभं लोहितं जले ॥ ४९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 पातालकाण्डे जलाध्यायः ॥ २ ॥



## पुराध्यायः ॥ ३ ॥

पुर्यन्ता नगरी पूः स्त्री स्थानीयं नगरं पुटः ।  
 पुर्याः शाखापुरी गृह्या पुरेऽल्पे खेटमस्त्रियाम् ॥ १ ॥  
 ग्रामः पर्युपसन्निभ्यः प्रतेश्च वसथः परः ।  
 स्थानीयं तु महाग्रामो ग्रामाः क्षुद्राः परे क्रमात् ॥ २ ॥  
 स्युः कर्वटं कार्वटिकं कार्वटं नृङ्गपट्टने ।  
 कर्वटोऽस्त्री द्रोणमुखं पट्टनं पुटभेदनम् ॥ ३ ॥  
 पत्तनं चाप्यथानृङ्गे नृङ्गो द्रङ्गं विवेशिका ।  
 कटकोऽस्त्री संवासः स्कन्धावारश्च राजधानी स्यात् ॥ ४ ॥  
 शिबिरं मार्गनिवेशो गामार्धं वाटकोऽस्त्री स्यात् ।  
 साकेतं स्यादयोध्यायां कोसलानन्दिनीति च ॥ ५ ॥  
 द्वारका तु द्वारवती मथुरा तु मधूषिका ।  
 मथुरा च मधूपन्ना कौशं तु स्यात् कुशस्थली ॥ ६ ॥  
 वाराणसी शिवपुरी वारणास्यपि काशिका ।  
 मिथिला पूर्वदेहेषु कन्याकुब्जो महोदयः ॥ ७ ॥  
 हस्तिनी हास्तिनपुरं नागाहं हस्तिनापुरम् ।  
 अथास्त्री खाण्डवप्रस्थं जयन्तीपुरमाहुकम् ॥ ८ ॥  
 अवन्ती स्यात्तक्षशिला काकुन्दी वारणावतम् ।  
 देवीकोटः कोटिवर्षं माहिष्मत्यां वृकस्थली ॥ ९ ॥  
 ग्रामादिभूमिर्वास्त्वस्त्री सन्दंशस्त्वस्य कोणभूः ।  
 ब्रह्मस्थली वास्तुमध्यं ब्रह्मधारा तदन्तभूः ॥ १० ॥  
 प्रशस्ता वास्तुभूमिर्या प्रवीरा नन्दिनी च सा ।  
 सीमा तु सीमा मर्यादा ग्रामसीमोपशल्यकम् ॥ ११ ॥  
 प्रान्तरं ग्रामयोर्मध्यमुपग्रं त्वन्तिकाश्रयः ।  
 पर्यन्तभूः परिसरः कटो ग्रामेयकः पुनः ॥ १२ ॥  
 ग्रामीणं च त्रिषु ग्राम्ये ग्रामधान्यं तु खेटकम् ।  
 खेयं तु परिखाऽथास्त्री वप्रः प्राकारमूलिकः ॥ १३ ॥  
 प्राकारो वरणः सालः प्राचीरं त्वेष सच्छदिः ।  
 आवेष्टकस्तु वाटोऽस्त्री विवृतश्च वृत्तिद्रुमैः ॥ १४ ॥

वारिकूटो हस्तिमुखो नगरद्वारकुट्टके ।  
 गोपुरं तु पुरद्वारं दिक्तु निस्सारणं मुखम् ॥ १५ ॥  
 रथ्या प्रतोली विशिखाऽप्युपरथ्या तु दर्शनी ।  
 राजमार्गे संसरणं श्रीघण्टाभ्यां पथः परः ॥ १६ ॥  
 स एव पुरि दिङ्मार्गो वाहनी चोपविष्करम् ।  
 अगारं भवनं धाम वस्तं वस्त्यं निकेतनम् ॥ १७ ॥  
 शय्यं निवसनं सद्य बुन्दिरं वेश्म मन्दिरम् ।  
 निकायवासावसथनिकायनिलयालयाः ॥ १८ ॥  
 न नोदवसितं न स्त्री गेहं पुम्भूम्नि वा गृहम् ।  
 महाकीर्तनमोकश्च केतरं केतनं क्षयः ॥ १९ ॥  
 आथर्वणं शान्तिगृहमास्थानगृहमिन्द्रकम् ।  
 वासागारं तल्पगृहमरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ २० ॥  
 कुण्डशाला तु सन्धानी पक्षिशाला कुनालिका ।  
 चतुरं हस्तिनां शाला वाजिशाला तु मन्दुरा ॥ २१ ॥  
 सन्दानिनी तु गोशाला हविशाला विषाणिका ।  
 आवेशनं शिल्पिशाला तन्त्रशाला तु गर्तिका ॥ २२ ॥  
 कुम्भशाला पाकपुटी चित्रशाला तु जालिनी ।  
 संवासनं कर्मशाला प्रपा पानीयशालिका ॥ २३ ॥  
 वेशनी मुखशाला च पक्षशाला तु पक्षकः ।  
 तैलशाला यन्त्रगृहं पोटकी कटकी च सा ॥ २४ ॥  
 इक्षुपीडनयन्त्रस्य शालिका त्विक्षुसूनिका ।  
 वपनी स्यात् खरकुटी शिल्पा चाप्यथ कुण्डिनी ॥ २५ ॥  
 क्षणा बुशाल्याश्रमे तु पर्णशालोटजोऽस्त्रियाम् ।  
 चतुश्शालं सञ्जवनं सत्रशाला शुभा स्थली ॥ २६ ॥  
 मठावसथ्यौ छात्रादिवासो वेण्टं विटाश्रये ।  
 कुटीरस्तु कुटी पल्ली क्षेत्रपल्ली तु गर्गरी ॥ २७ ॥  
 सन्यासपल्ली निर्वीरा मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः ।  
 देवतायतनं चैत्यं बिहारो लयनालिकः ॥ २८ ॥  
 सौधोऽस्त्री सुधया श्वेतं मेटो हर्म्यं च मालिका ।  
 तदेव राजदेवानां स्यात् प्रासादः प्रसादनः ॥ २९ ॥  
 राजवेश्मोपकार्यो स्यादुपकार्योपकारिका ।  
 स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्धावर्तादयोऽपि च ॥ ३० ॥



पिच्छन्दिका राजधाम्नां सन्निवेशो निकर्षणम् ।  
 कूटागारं तु बलभी निर्यूहो मत्तवारणम् ॥ ३१ ॥  
 कुट्टिमोऽस्त्री बद्धभूमिः कोद्रङ्गस्तु तमङ्गकः ।  
 इन्द्रकोशोऽप्यथो मञ्च उद्धातो डुण्डुरोऽपि च ॥ ३२ ॥  
 वेश्यागृहे कायमानं तथेदं केलिमण्डपे ।  
 अट्टालयोऽट्टः क्षौमोऽस्त्री तलिन्यट्टालिके समे ॥ ३३ ॥  
 चन्द्रशाला शिरोगेहं पणिकस्तु वणिगृहम् ।  
 आपणस्तु निषद्या स्यान्माटङ्को लवणापणः ॥ ३४ ॥  
 संवासो विपणिः पण्यवीथी हट्टस्तु पण्यभूः ।  
 आवालिहट्टवेश्माली वेशो वेश्याजनाश्रयः ॥ ३५ ॥  
 अवरोधः पराविद्धः शुद्धान्तोऽन्तःपुरं वृषम् ।  
 अङ्कणस्त्वजिरं चारं वेदिका तु वितर्दिका ॥ ३६ ॥  
 कुड्योऽस्त्री भित्तिका कन्धाऽप्येड्ढकं त्वन्तरस्थिकम् ।  
 नीत्रं बलीकं चोलान्ते चोलोऽस्त्री पटलं छदिः ॥ ३७ ॥  
 सन्धिस्तु कुड्यच्छदिषोः कावातायनिका कला ।  
 अपशाला तु संहारी विटका तु विटाटिका ॥ ३८ ॥  
 गोपानसी तु बलभी छादने वक्रदारुणि ।  
 वेश्मस्थूणा गृहस्थूणमुत्बस्थूणा तु पादिका ॥ ३९ ॥  
 मेढी तु पादिकाशीर्षे स्थूणाशीर्षे शिली शिला ।  
 नासा धारकदारु स्यात् पालिकाष्ठं तु धारणा ॥ ४० ॥  
 कोणप्रतिग्राहि शिरोविष्टब्धिकरमाढकम् ।  
 सूकरी तूपरिस्थूणा सन्धिकाष्ठं तु वासिकम् ॥ ४१ ॥  
 द्वाः स्त्री द्वारं पक्षकं तु पक्षद्वारं खडक्किका ।  
 तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं प्रच्छन्नद्वारमान्तरम् ॥ ४२ ॥  
 कवाटं द्वारबन्धोऽस्य धारके व्याघ्रकोऽस्त्रियाम् ।  
 उत्तराङ्गं तूर्ध्वदारु द्वारस्यैरुण्डकः पुनः ॥ ४३ ॥  
 गृहावग्रहणी देहल्यम्मरोदुम्बरोम्बुरा ।  
 सट्टं सपट्टी तत्पार्श्वे वृकवाला परालिनी ॥ ४४ ॥  
 नासा तु द्वार्यधोदारु शिला नासाविधारिणी ।  
 प्रघाणप्रघणालिन्दाः पिण्डकोऽलिन्दवासनौ ॥ ४५ ॥  
 बहिर्द्वारप्रकोष्ठे स्युर्गृहश्रेणी तु वीथिका ।  
 अथ त्रय्यौ कवाटोऽपि कुवाटोऽप्यररं न पुम् ॥ ४६ ॥

पार्श्वद्वयस्थं तद्युग्ममनीरिति निगद्यते ।  
 विष्कम्भकेऽस्य गुडको द्रुमशोऽप्यर्गला न षण् ॥ ४७ ॥  
 सूचिस्त्वयोऽर्गलैषा चेद् द्वारोर्ध्वे तूर्ध्वसूचिका ।  
 मर्कटं मर्कटी सूची विष्कम्भार्थमथाङ्कुटः ॥ ४८ ॥  
 साधारणी कुञ्जिका च द्वारयन्त्रं तु तालकम् ।  
 एतस्योद्धाटनं यन्त्रं ताल्यपि प्रतिताल्यपि ॥ ४९ ॥  
 अर्गलं द्वारपटलं विदण्डस्त्वर्गला त्रयी ।  
 अस्त्री तु घर्घरोऽट्टादेरधोद्वारकवाटिका ॥ ५० ॥  
 गर्भागारोऽपवरको भ्रमन्तो गृहकोऽल्पकः ।  
 आरोहणं स्यात् सोपानं निश्रेणिस्त्वधिरौहणी ॥ ५१ ॥  
 कोणाश्रौ नर्यणिनं क्ली स्त्रियोऽश्रुत्तिकोटयः ।  
 सम्मार्जनी शोधनी तन्मलेऽवकरसङ्करौ ॥ ५२ ॥  
 दन्तिका नागदन्ताः स्युर्लङ्गनी वल्लधारणी ।  
 कपोतपाली स्त्री न स्त्री विटङ्कोऽथ गवाक्षकम् ॥ ५३ ॥  
 वातायनं गवाक्षश्च रसवत्यां महानसम् ।  
 उद्धानमश्मन्तमधिश्रयणी चुल्लिरन्तिका ॥ ५४ ॥  
 हसन्यङ्गारशकटी हसन्यङ्गारधान्यपि ।  
 पिठरः स्थाल्युखा कुम्भिः पिधानं स्यादुदञ्चनम् ॥ ५५ ॥  
 कंटाहः कर्परो लट्वा मणिकः स्यादलिञ्जरम् ।  
 भ्राष्ट्रः पुंस्यम्बरीषोऽस्त्री कन्दुर्ना स्वेदनी स्त्रियाम् ॥ ५६ ॥  
 ऋषीषं पिष्टपचनं मल्लो मल्ली च कोशिका ।  
 वर्धनी तु गलन्त्यालुः कर्करी करकोऽपि च ॥ ५७ ॥  
 भृङ्गारो हेमकरकः करङ्को नालिकेरजः ।  
 निपो घटः कुटः कुम्भः करीरः कलशी त्रयी ॥ ५८ ॥  
 घटी पारी कपाली तु त्रयी घोलश्च कर्परः ।  
 शालाजिरो वर्धमानः शरावोऽस्त्री दृतिस्तु ना ॥ ५९ ॥  
 खल्वं क्लीबे चर्ममयी त्वालुः करकवर्तिका ।  
 स्नेहपात्रं कुतूः कृत्तिः सैवालपा कुतुपः पुमान् ॥ ६० ॥  
 अवगाहो जलद्रोणिरुष्टिका काञ्जिकादिभृत् ।  
 भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भः स्थालं स्यात् कांस्यपात्रकम् ॥ ६१ ॥  
 भाण्डमावपनेऽमत्रं भाजने पात्रमित्युभे ।  
 चर्मकोशं तु कललं करालं तरलं च तत् ॥ ६२ ॥



पेटकः पिटकः पेटा मञ्जूषा सा तु चर्मणा ।  
 वृता तरिः स्त्री तमतो वस्त्रकोशं करोटकम् ॥ ६३ ॥  
 स्यूतः प्रसेवकोऽथ स्यात् समुद्गः सम्पुटः पुटः ।  
 धान्यकोष्ठे कुसूलोऽथ कण्डोलः पिटकः पिटः ॥ ६४ ॥  
 प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री न स्त्री तितउ चालनी ।  
 अथोर्नर्मुसलोऽस्त्री स्यादुदूखलमुलूखलम् ॥ ६५ ॥  
 प्रस्फोटनं तु पवनमवघातस्तु कण्डनम् ।  
 फलीकृतस्तण्डुलः स्याद्धान्यानां तु तुषस्त्वचि ॥ ६६ ॥  
 शम्बूकास्तु कणाः सूक्ष्मास्तण्डुलस्य च यो मलः ।  
 शम्बूकः कण्डनं चासौ ज्येष्ठाम्बु तु तदम्बुनि ॥ ६७ ॥  
 गोधूमचूर्णे शमिता चिक्कसो यवचूर्णके ।  
 पृथुकश्चिपिटो लाजाः पुंभूम्नि परिवारकः ॥ ६८ ॥  
 खदिका तु गुडाद्याह्यलाजसक्तुषु तर्पणम् ।  
 सुस्विन्नभृष्टमृदिता उत्कुञ्चः कल्कपिण्डिकाः ॥ ६९ ॥  
 पिण्डिर्ना पिष्टधानादिचूर्णे गौडी तु ममरा ।  
 उलुम्बं बुम्बिका बुम्बी चक्षुष्या सक्तवः कणाः ॥ ७० ॥  
 ते घृतादियुता मन्थः करम्भो दधिसक्तवः ।  
 धानाः स्त्रियो भृष्टयवा दारपत्रस्तु पोलिकः ॥ ७१ ॥  
 पूषस्तु पिष्टकोऽपूपः कोकुन्दाः पिष्टपिण्डिकाः ।  
 उत्कारिका चूर्णपूपे कुलमाषा यवपिष्टकाः ॥ ७२ ॥  
 शमिता त्वम्लदुग्धाद्रौ पक्का खण्डे घृतोत्तरे ।  
 संयावोऽयं युतश्चूर्णैः खण्डैलामरिचार्द्रकैः ॥ ७३ ॥  
 क्षीराह्यः शमितापिण्डो घृतपूरो घृते शृतः ।  
 फेनकः शमिता शुक्ला घृतपक्वालपशर्करा ॥ ७४ ॥  
 शङ्कुली त्वायता पिष्टगुडतैलतिलैः कृता ।  
 जीवनान्नाशनान्धांसि कूरं भक्तं प्रसादनम् ॥ ७५ ॥  
 पाजो वाजोऽप्योदनोऽस्त्री भिस्सा स्त्री दिदिविर्न षण् ।  
 पुन्नपुंसकयोश्चोरं करमाहार्थमित्यपि ॥ ७६ ॥  
 दग्धान्नं भिस्सिटा मिङ्गी परमान्नं तु पायसम् ।  
 क्षैरेयी चाथ मण्डोऽस्त्री रसाग्रोऽथ करोटिका ॥ ७७ ॥  
 खागुल्या स्याद्धान्याम्लायां खागुली मण्डिका समे ।  
 मासराचामनिस्त्रावप्रस्त्रावा भक्तमण्डके ॥ ७८ ॥

वाट्यमण्डो यवैर्भृष्टैर्लाजमण्डोऽन्वितार्थकः ।  
 तिलतण्डुलमाषैस्तु त्रिरसा कृसरा त्रयी ॥ ७९ ॥  
 यवागुरुष्णिका श्राणा पिच्छा सा तु घनाद्रवा ।  
 विलेपी स्याद्विलेप्या च सा पेया तरणान्यथा ॥ ८० ॥  
 खलिः स्त्री तण्डुलैः पिष्टैर्जले पक्का घनद्रवा ।  
 सौवीरं काञ्चिकं कुण्डमारनालं गृहोदकम् ॥ ८१ ॥  
 अवन्तिसोमं रक्षोघ्नं शुक्ताभिषुतकुञ्जलम् ।  
 गोलकुलमाषसन्धानान्यौदरो मधुरा न षण् ॥ ८२ ॥  
 तद्धान्ययोनि धान्याम्लं तुषाम्बु तुषसंहितम् ।  
 मूलकाद्यैः संहिते स्यान्मूलकादिसुतं न ना ॥ ८३ ॥  
 मूलकच्छदसन्धानं शिण्डाकी स्वादुसुद्रवा ।  
 यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे सक्षौद्रगुडकाञ्चिकम् ॥ ८४ ॥  
 त्रिरात्रं धान्यराशिस्थं तच्छुक्तं शुद्धमित्यपि ।  
 निष्ठानं तेमनं तच्च व्यञ्जनं स्याद् घृतादि च ॥ ८५ ॥  
 सूपोऽस्त्री प्रहितं सूदोऽप्युपदंशोऽपदंशकः ।  
 स्त्री पक्कभृष्टे भरुटा सगुडाज्योषणैः पुनः ॥ ८६ ॥  
 वेशवारः पिष्टमांसे पक्के भूतिस्ततोऽन्यथा ।  
 रसको मांसनिष्काथः पिष्टमांसकृतो रसः ॥ ८७ ॥  
 सोरावासो निर्लवणः परिशुष्कं पुनर्घृते ।  
 सिक्त्वा मांसे मृदूष्णाम्बुपक्वं युक्तं कणादिभिः ॥ ८८ ॥  
 उत्तमं शुष्कमांसं स्याद्वल्लूरा त्रय्यथ स्त्रियाम् ।  
 पेशिः शुण्ठः पिचिण्डस्तु निकृत्तोऽवयवः पशोः ॥ ८९ ॥  
 शाकोऽस्त्री हरितं शिग्रुः स्त्री तन्नाले कडम्बकः ।  
 कन्दमस्त्री मूलसस्यं वेशवार उपस्करः ॥ ९० ॥  
 लेहं पेयञ्च चूष्यञ्च खाद्यमास्वाद्यमित्यपि ।  
 पञ्चामृतमिदं स्वाद्यं मुक्त्वा त्वन्नं चतुर्विधम् ॥ ९१ ॥  
 त्रिष्वानुताद्भ्यकारे द्वौ कान्दविकपौपिकौ ।  
 सूपकारे त्वारालिकसूदान्धसिकवल्गवाः ॥ ९२ ॥  
 गुणौदनिकसूपाश्च लवणो लवणोत्कटः ।  
 पक्वं तु रन्धितं सिद्धं भृष्टं पक्वं विनाम्बुना ॥ ९३ ॥  
 प्रणीतमुपसम्पन्नं प्रयस्तं स्यात् सुसंस्कृतम् ।  
 शूलाकृतं भटित्रं च शूल्यमुख्यं तु पैठरम् ॥ ९४ ॥



सार्पिष्कदाधिकाद्यं स्यात्सर्पिर्दध्यादिसंस्कृते ।  
 शीनं स्त्यानं शृतं पक्वं विलीनं विद्रुतं द्रुतम् ॥ ११५ ॥  
 तक्रं कपित्थचाङ्गेरीमरीचाजाजिचित्रकैः ।  
 यत्पक्वं गुडजूषोऽसावलकाम्बलिकोऽपरः ॥ ११६ ॥  
 दध्यम्लो लवणस्नेहतिलमाषविपाचितम् ।  
 अपकतक्रं सव्योषचतुर्जातगुडार्द्रकम् ॥ ११७ ॥  
 सजीरकं रसालः स्यान्मार्जिता शिखरिण्यपि ।  
 सा जाजी डाडिमव्योषं पटे घृष्टं च सट्टकम् ॥ ११८ ॥  
 बलकं स्याद् गुडक्षीरं यमकं तैलसर्पिषी ।  
 त्रिस्नेहं त्रैवृतं मार्जा चतुस्नेहं वसान्वितम् ॥ ११९ ॥  
 मधु सर्पिश्च मिथुनं यूषोऽस्त्री यूः पुमान् रसे ।  
 परिवेषणं वर्धनं च प्रतीच्छा पततो ग्रहः ॥ १२० ॥  
 कबलः कबतो ग्रासो गुडः पिण्डो गुडेरकः ।  
 गण्डोरश्च गडोलश्च चर्वणं चूषणं रदैः ॥ १२१ ॥  
 जग्धिस्तु निघसो न्यादो लेपोऽप्यभ्यवहारवत् ।  
 प्रत्यवसानमशनं भोजनं जेमनादने ॥ १२२ ॥  
 स्वदनं परिपत्रं च सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ।  
 चूषणं तु रसादानं जिह्वास्वादस्तु लेहनम् ॥ १२३ ॥  
 धीतिस्तु धयनं पानं जक्षा खादनभक्षणे ।  
 काभं निकामं पर्याप्तं प्रकामं च यथेप्सितम् ॥ १२४ ॥  
 पर्याप्तं तु परित्राणं हस्तवारणमित्यपि ।  
 तृप्तिः सुधा च सौहित्यं तृप्तं तु सुहितं त्रिषु ॥ १२५ ॥  
 करम्बः सेकमिश्रान्ने फेला पिण्डेऽधिकोऽज्जिते ।  
 खण्डपकटमुद्वेगं ताम्बूलं मुखभूषणम् ॥ १२६ ॥  
 अम्बलोर्णं चर्वितेऽस्य चूर्णेऽस्य त्वम्बला रसे ।  
 करङ्को वेडादिकृते पूगताम्बूलभाजने ॥ १२७ ॥  
 स्यात् पूगावपनी गन्त्री कर्तुर्युद्वेगकर्तरी ।  
 भवेत् क्षुरसमुद्गं तु त्रिष्वकर्णकरन्धके ॥ १२८ ॥  
 अस्त्री तु पुस्तकं सिन्दूरादेर्दारवभाजने ।  
 चातुरीकं त्रिषु भवेच्चन्दनद्रवभाजने ॥ १२९ ॥  
 नागवल्लीपलाशानां तैलाक्तानां रसातलः ।  
 निष्ठानं वीतकं प्रोक्तं चन्द्रमन्दारचूर्णधृत् ॥ १३० ॥

वीरस्त्राका या तु शरशलाकायन्त्रनिमिता ।  
 पाठार्थमुद्गृहीता स्यात् कबली पत्रपञ्चिका ॥ १११ ॥  
 परिकर्माङ्गसंस्कारः कङ्कतस्तु प्रसाधनः ।  
 प्रसाधनं स्यादभ्यङ्गः सोत्पाताच्छुरिते समे ॥ ११२ ॥  
 उद्वर्तनं तूसादनं स्नानं त्वाप्लाव आप्लवः ।  
 उपस्पृशोऽभिषेकश्च गोसव्यं गोमयेन तत् ॥ ११३ ॥  
 सुगन्धामलकैः स्नानं यत्तल्लक्ष्मीनिकेतनम् ।  
 यत्तु सर्वौषधिसनानं तन्मङ्गल्यमलोचकम् ॥ ११४ ॥  
 यन्मृत्तिकाऽम्भसा स्नानं दिष्टं देशनिकं च तत् ।  
 ऋषीणां तर्पणं यत्तत् कौलकुल्यं कुलं च तत् ॥ ११५ ॥  
 सिक् स्त्री पटोऽस्त्री सिचयो वासो वसनमंशुकम् ।  
 आच्छादनं निवसनं वसितं वस्त्रमम्बरम् ॥ ११६ ॥  
 चेलं च तक्षतुर्धा स्यात् त्वक्फलकिमिरोमजम् ।  
 बालकं क्षौमादिके वस्त्रे फाले कार्पासवादरौ ॥ ११७ ॥  
 कौशेयं कृमिकोशोत्थे राङ्गवं मृगरोमजे ।  
 पत्रोर्णं धौतकौशेयं महामूल्यं महाधनम् ॥ ११८ ॥  
 अग्निगौचं वक्रवल्लीपदे वज्रांशुकं तथा ।  
 राजावर्तं चित्रपटे राजवर्तो नवश्रियाम् ॥ ११९ ॥  
 अहतं निष्प्रवाणिः स्यात् तन्त्रकं च नवांशुके ।  
 निवीतं प्रावृते धौतयुग्मं तूद्गमनीयकम् ॥ १२० ॥  
 आप्रपदीनं प्रपदव्यापि वालकादयस्त्रिषु ।  
 अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधोऽशुके ॥ १२१ ॥  
 चण्डातकं वरस्त्रीणां स्यादधोरुक्कमम्बरम् ।  
 संव्यानमुत्तरीयं क्षौमं सूदमं दुकूलं स्यात् ॥ १२२ ॥  
 बैकत्यं तु बृहतिका प्रावारश्चोतरासङ्गः ।  
 चन्द्रोदय उल्लोचः कदरश्चन्द्रातपो वितानोऽस्त्री ॥ १२३ ॥  
 मशकहरी तु चतुष्की शिरसि सिगुष्णीषमस्त्री स्यात् ।  
 काण्डपटः स्यादपटी प्रतिसारायवनिका तिरस्करिणी ॥ १२४ ॥  
 दूष्यं स्थूलं पटकुटी गुणलयनी केणिका तुल्याः ।  
 नालकं नलकं चापि नलिकं चेत्यपि त्रयः ॥ १२५ ॥  
 पर्याया धनुरादीनां कवचेऽप्राणिनामसी ।  
 निचोलः प्रच्छदपटो वरासी स्थूलशाटिका ॥ १२६ ॥



चोली तु शाटिका शाटो वरकोऽस्त्री द्विखण्डकः ।  
 निशारो हिमसम्पातत्राणे जीर्णे पटम्बरम् ॥ १२७ ॥  
 निचोलः कञ्चुकश्चोलः कूर्पासश्चाङ्गिकोऽस्त्रियाम् ।  
 चीवरं भिक्षुसङ्घाटी कन्थाकन्थटिके समे ॥ १२८ ॥  
 कद्यापटस्तु कौपीनं समौ रत्नककम्बलौ ।  
 विशालस्त्वाविकौरभ्रौ हस्तिकर्णस्तु रोचकः ॥ १२९ ॥  
 शाणी गोणी छिद्रवस्त्रेश्चिरं खण्डलमस्त्रियाम् ।  
 नक्तकः कर्पटो वस्त्रप्रन्थोऽस्त्री नीविरुच्यः ॥ १३० ॥  
 कक्षः कच्छो गुह्यबन्धः कद्या पृष्ठे कृतोऽञ्चलः ।  
 वस्त्रान्तस्त्वञ्चलो वस्तिस्त्वक्ली भूम्नि दशा न षण् ॥ १३१ ॥  
 पुष्कलस्तुम्बिका चाथ प्रान्तत्रसरकेसराः ।  
 आकल्पवेषौ नैपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ १३२ ॥  
 अलङ्कारस्त्वाभरणं भूषणं मण्डनं पुनः ।  
 विभूषणं परिष्कारः कर्णिका कर्णभूषणम् ॥ १३३ ॥  
 उत्क्षिप्तिका तु कर्णाकस्तालपत्रं तु तालकम् ।  
 कर्णपूरस्तु पुष्पाद्यैस्ताडङ्गो दन्तकादिभिः ॥ १३४ ॥  
 वालिका कर्णपृष्ठस्था कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ।  
 मौलिः कोटीर उष्णीषं किरीटं मकुटोऽस्त्रियाम् ॥ १३५ ॥  
 चूडामणिः शिरोरत्नं स्वस्तिकस्तु त्रिकोणकः ।  
 बालपाश्या पारितध्या पत्रपाश्या ललाटिका ॥ १३६ ॥  
 त्रैवेयकं कण्ठभूषा लम्बनं तु ललन्तिका ।  
 स्वर्णैः प्रालम्बिकाऽथोरस्सूत्रिका मौक्तिकैः कृता ॥ १३७ ॥  
 हारो मुक्तावली स्त्री स्यात्तद्भेदा यष्टिसङ्ख्यया ।  
 देवच्छन्दः शतं साष्टमिन्द्रच्छन्दः सहस्रकम् ॥ १३८ ॥  
 तस्यार्धं विजयच्छन्दो हारस्त्वष्टोत्तरं शतम् ।  
 अर्धं रश्मिकलापोऽस्य द्वादशस्त्वर्धमाणवः ॥ १३९ ॥  
 द्विर्द्वादशोऽर्धगुच्छोऽथ पञ्च हारफलं लताः ।  
 अर्धहाराश्चतुष्पष्टिर्गुच्छमाणवमन्दराः ॥ १४० ॥  
 अपि गोस्तनगोपुच्छावर्धमर्धं यथोत्तरम् ।  
 एकावत्यनुकण्ठी च हारः स्यादेकयष्टिकः ॥ १४१ ॥  
 यष्टिर्नक्षत्रमालैका सप्तविंशतिमौक्तिका ।  
 गुडकैर्मणिसोपानं चाटुकारश्च हेमजैः ॥ १४२ ॥

हारमध्यस्थितं रत्नं तरलो नायकोऽपि च ।  
 केयूरमङ्गदं भूषा दोर्मूले कङ्कणं करे ॥ १४३ ॥  
 आवापकः पारिहार्यं वलयं कटकोऽस्त्रियाम् ।  
 पादेऽसौ हंसकः स्त्रीणामङ्गुलीयकमूमिका ॥ १४४ ॥  
 साक्षराऽङ्गुलिमुद्रा सा क्षुद्रघण्टा तु किङ्किणी ।  
 शिङ्गिनी ना तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियौ ॥ १४५ ॥  
 कटिसूत्रं सारसनं मेखला रशनाऽथ सा ।  
 स्त्रीकट्यां सप्तकी काञ्ची पुंस्कट्यां शृङ्खला त्रयी ॥ १४६ ॥  
 स्त्री चर्क्तिर्वर्णकालेपावनुबोधः प्रबोधनम् ।  
 माष्टिश्चर्चा च चर्चिक्यं समालम्भनमित्यपि ॥ १४७ ॥  
 स्थासको हस्तबिम्बः स्यात् पत्तिच्छेदास्तु राजयः ।  
 चित्रं तमालपत्रं क्ली तिलकोऽस्त्री विशेषकम् ॥ १४८ ॥  
 पत्तिस्तु पत्रकं लेखा बाहुगण्डस्तनादिषु ।  
 पत्राङ्गुलिः पत्ररेखा सा ललाटे ललाटिका ॥ १४९ ॥  
 राढा शोभा छवी रुक् त्विट् सुषमा परमा छविः ।  
 त्रिगन्धमेलात्वक्पत्रैस्त्रिसुगन्धं त्रिजातकम् ॥ १५० ॥  
 चतुर्जातं तदेव स्यान्नागकेसरकेसरैः ।  
 सर्वगन्धमिदं सेन्दुतक्कोलागरुसिलहकम् ॥ १५१ ॥  
 लवङ्गपूगतक्कोलजातीफलहिमांशवः ।  
 पञ्च पञ्चसुगन्धं स्यादथ तक्कोलकुङ्कुमैः ॥ १५२ ॥  
 कस्तूर्यगरुकर्पूराः सुगन्धो यक्षकर्वमः ।  
 यावो द्रुमामयोऽलक्तो लाक्षा रक्ता जतु क्रिमिः ॥ १५३ ॥  
 कालानुसार्यं कालेयं जावकं चाप्यथ स्रजि ।  
 मालाङ्कितिरथापीडे वतंसोत्तंसशेखराः ॥ १५४ ॥  
 केशेषु गर्भकं माल्यं प्रालम्बं कण्ठलम्बितम् ।  
 प्रभ्रष्टकं शिखालम्बि पुरोन्यस्तं ललामकम् ॥ १५५ ॥  
 वैकट्यं तिर्यगुरसि स्थितं निर्माल्यमुष्मिन्ते ।  
 संस्कारो गन्धधूपाद्यैरपुमानधिवासनम् ॥ १५६ ॥  
 अञ्जनं त्वक्षिसंस्कारः कज्जलं धूमयोनि तत् ।  
 चूर्णानि वासयोगाः स्युः पिष्टातः पटवासकः ॥ १५७ ॥  
 रचना स्यात् परिस्कन्धो भावना वासना समे ।  
 अथोपकरणं सर्वं परिबर्हः परिच्छदः ॥ १५८ ॥



व्यजनं तालवृन्तं स्याद् धवित्रं चर्मणा कृतम् ।  
 आलावर्तस्तु वस्त्रेण चामरं तु प्रकीर्णकम् ॥ १४६ ॥  
 पन्तद्वहः प्रतिग्राहो वालोऽस्त्री दारुणा कृतः ।  
 आसन्दी स्त्री नरि प्रेङ्खो दीपवल्ली तु दीपिका ॥ १६० ॥  
 दीपवृक्षस्तदाधारो दशा वर्तिरथ स्त्रियाम् ।  
 वर्तिर्गृहमणिर्दीपो गिरीयकगुडौ गिरिः ॥ १६१ ॥  
 दर्पणो मुकुरादशौ कन्दुको गण्डकः समौ ।  
 पादुकाऽनुपदीना स्यादुपानत् पादरक्षिणी ॥ १६२ ॥  
 उपला तु दृष्टपुत्रः शिला माता दृष्टसमाः ।  
 दर्विस्तु कम्बिस्तर्जुः स्यात् खजाका दारुहस्तकः ॥ १६३ ॥  
 विष्टरं त्वासनं पीठं दारुजं वेत्रजं पुनः ।  
 आसन्दी मञ्चकः खट्वापाश्रयो मत्तवारणम् ॥ १६४ ॥  
 शय्या पर्यङ्कपल्यङ्कौ शयनं शयनीयवत् ।  
 प्रस्तरः संस्तरः शय्या रचिता पल्लवादिभिः ॥ १६५ ॥  
 कटः किलिञ्जो वर्णस्तु परिस्तोमः कुथा त्रयी ।  
 नमतं चाप्यास्तरणं प्रस्तरस्तूत्तरच्छदः ॥ १६६ ॥  
 उपधानं तूपबर्हमुच्छीर्षमुपबर्हणम् ।  
 संवापः शयनं स्वापः संवासो वासनं सह ॥ १६७ ॥  
 शयने शयसंवेशावुपशायोऽन्तिकेशयः ।  
 पर्यादेरथ पर्यायाः परिशायः समन्ततः ॥ १६८ ॥  
 कामध्वजः कामोत्सवः शृङ्गारः कामविक्रिया ।  
 परिरम्भः परिष्वङ्ग आश्लेष उपगूहनम् ॥ १६९ ॥  
 आलिङ्गनमपि क्रोडीकरणं चाङ्कपाल्यपि ।  
 ग्राम्यधर्मः कामकेली रतिर्निधुवनं रतम् ॥ १७० ॥  
 मेहनं मिथुनत्वं च समे निसनचुम्बने ॥ १७० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

षातालकाण्डे पुराध्यायः ॥ ३ ॥

### भूताध्यायः ॥ ४ ॥

भूतानि प्राणिनो जीवा जन्तवो जन्यवोऽङ्गिनः ।  
 पुंसः प्राक् त्रिषु गुल्माद्यमुद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥ १ ॥  
 स्वेदजा दंशयूकाद्या नृपश्वाद्या ऋरायुजाः ।  
 अण्डजाः पक्षिसर्पाद्याः पुमांस्तु पुरुषो वृषः ॥ २ ॥  
 पूरुषो नाऽप्यथ क्लीबः पण्डः षण्डो नपुंसकम् ।  
 तृतीयाप्रकृतिश्चाथ पोटा स्त्रीपुंसलक्षणा ॥ ३ ॥  
 स्त्री योषिल्ललना योषा वशा सीमन्तिनी वधूः ।  
 वनिता महिला नारी तद्भेदास्तु नितम्बिनी ॥ ४ ॥  
 प्रतीपदर्शिनी वामा प्रमदा भीरुरङ्गना ।  
 अबला भामिनी कान्ता कामिनी वामलोचना ॥ ५ ॥  
 सुन्दरी रमणी रामा वेणिनी चान्वितार्थकाः ।  
 कुमारी कन्यका कन्या किञ्चित्प्रौढा महोदया ॥ ६ ॥  
 अचिरव्यूढा तु वधूः पतिवरा तु स्वयंवरा वर्या ।  
 कुलपालिका कुलस्त्री कुल्याऽथ सती पतिव्रता साध्वी ॥ ७ ॥  
 स्त्रीव्यञ्जनकृता श्यामा चीरिणी तु सुवासिनी ।  
 प्रातर्तुर्दिक्करी राका युवतिस्तलुनी चरी ॥ ८ ॥  
 वधूटी च चिरण्टी च द्वितीयवयसि स्त्रियाम् ।  
 स्वैरिणी धर्षिणी पुंश्चल्यसती कुलदेत्वरी ॥ ९ ॥  
 बन्धकी पांसुला चर्चा चला नगना तु कोट्टवी ।  
 भिक्षुकी श्रमणी मुण्डा तीव्रकोपा तु भामिनी ॥ १० ॥  
 विप्रशिका त्वीक्षणिका दैवज्ञा प्रश्नवादिनी ।  
 कामुकेच्छुः कामुकी तु वृषस्यन्ती रतार्थिनी ॥ ११ ॥  
 वरारोहोत्तमा नारी सैव स्मन्मत्तकाशिनी ।  
 कामात् कान्तं याति याऽसावविनीताऽभिसारिका ॥ १२ ॥  
 अध्यूढा चाधिविन्ना च कृता यस्यः सपत्निका ।  
 वीरपत्नी वीरभार्या वीरमाता तु वीरसूः ॥ १३ ॥  
 पतिवली जीवपतिर्विश्वस्ता विधवाऽथ सा ।  
 कात्यायनी द्वितीयं चेद्वयः काषायमम्बरम् ॥ १४ ॥



उदक्या मलवद्वासा आत्रेयी पुष्पवत्यपि ।  
 रजस्वला च मलिना स्त्रीधर्मिण्यृतुमत्यपि ॥ १५ ॥  
 ऋतुः पुंस्यार्तवं रक्तं पुष्पं चाथानृतुर्वधूः ।  
 निष्कलाऽऽपन्नसत्त्वा तु स्यन्तर्वन्त्री च गर्भिणी ॥ १६ ॥  
 अद्यश्चोना तु सा या स्याद्य श्वः प्रसवोन्मुखी ।  
 विजाता तु प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥ १७ ॥  
 जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ।  
 गर्भाशयो जरायुः स्यादुल्बं च कललोऽस्त्रियाम् ॥ १८ ॥  
 बालस्य नाभिनालायाममरा कालिनीति च ।  
 सूतिमासो वैजननो जीवतोका तु जीवसूः ॥ १९ ॥  
 बिन्दुर्नश्यत्प्रसूतिः स्यादशिष्वी शिशुवर्जिता ।  
 अवीरा निष्पतिसुता किमिला बहुसूतिका ॥ २० ॥  
 कुटुम्बिनी तु गृहिणी पुरन्ध्री मातृकेति च ।  
 वृद्धा पलिकनी प्राज्ञी तु प्रज्ञा प्राज्ञा तु धीमती ॥ २१ ॥  
 उपाध्यायान्युपाध्यायी शूद्रार्थी क्षत्रियीति च ।  
 आचार्यानी च पुंयोगादर्योर्योण्यौ तु जातितः ॥ २२ ॥  
 क्षत्रिया क्षत्रियाणी च शूद्रा चेत्यपि जातितः ।  
 स्यादुपाध्यायुपाध्यायाऽप्याचार्या च स्वयंकृता ॥ २३ ॥  
 पण्यस्त्री गणिका वेश्या वारस्त्री रूपजीवना ।  
 वारमुख्या सत्कृताऽसौ दूती सञ्चारिणी समे ॥ २४ ॥  
 कुट्टिनी शम्फली चुन्दी वयस्याली सखी सुहृत् ।  
 सैरन्ध्री परवेशमस्था स्वतन्त्रा शिल्पकारिणी ॥ २५ ॥  
 दासी तु चेटिका चेटा वडबा कुम्भधारिका ।  
 जनयित्री जनन्यम्बा माताऽथ भगिनी स्वसा ॥ २६ ॥  
 सा ज्येष्ठाम्बाऽप्यवन्ती च कनिष्ठा कन्यसाम्बिका ।  
 ननान्दा तु स्वसा पत्युः ननन्दा नन्दिनीति च ॥ २७ ॥  
 पत्न्यास्तु भगिनी ज्येष्ठा ज्येष्ठश्वश्रूः कुलीति च ।  
 कनिष्ठा स्थालिका हाली पत्रिणी केलिकुञ्चिका ॥ २८ ॥  
 बीजी तु जनको वप्ता तातो जनयिता पिता ।  
 पितामहः पितृपिता तत्पिता प्रपितामहः ॥ २९ ॥  
 मातुर्मातामहाद्येवं तदूर्ध्वं वृद्धपूर्वकाः ।  
 दम्पत्योर्व्यत्ययान्माता श्वश्रूः स्यात् श्वशुरः पिता ॥ ३० ॥

सहजः स्वसरो भ्राता कनिष्ठोऽवरजोऽनुजः ।  
 पूर्वजस्त्वग्रजो ज्येष्ठः पितृज्याः सहजाः पितुः ॥ ३१ ॥  
 ज्येष्ठतातः पितृज्येष्ठः क्षुल्लतातोऽनुजः पितुः ।  
 स्यालः स्यादनुजः पत्न्यास्तस्याः स्यादबलोऽग्रजः ॥ ३२ ॥  
 देवरो देवदेवानौ मातुर्भ्राता तु मातुलः ।  
 दम्पत्योराजिकोऽन्योन्यो वैमात्रेयो विमातृजः ॥ ३३ ॥  
 समानोदर्यसोदर्यौ सगर्भः सोदरः समाः ।  
 भार्या जाया सहचरी द्वितीया सहधर्मिणी ॥ ३४ ॥  
 सधर्मचारिणी पाणिगृहीती पालुषी बधूः ।  
 पत्नी क्षेत्रं कलत्रं च गृहाः पुंभूमिर्न दारवत् ॥ ३५ ॥  
 जाया प्रजावती मातुर्ज्येष्ठभ्रातुः प्रिया बधूः ।  
 स्नुषा वधूर्जनी सूनोर्मातुलानी तु मातुली ॥ ३६ ॥  
 भ्रातृवर्गस्य या भार्या यातरस्ताः परस्परम् ।  
 रुच्यः प्रियः पतिर्भर्ता सेक्ता वरयिता धवः ॥ ३७ ॥  
 पतिर्ननान्दुः कौतूलो नशिको भगिनीपतिः ।  
 जारस्तु स्यादुपपतिर्जामाता दुहितुः पतिः ॥ ३८ ॥  
 वेश्यापतौ विद्वाङ्कुम्भभुजङ्गविटपल्लवाः ।  
 पुत्रस्तु तनयः सूनुरात्मजो नन्दनोऽङ्गजः ॥ ३९ ॥  
 सुतः पोतश्च पुङ्गवे नरो दुहितरि स्त्रियः ।  
 द्वयोश्च गर्भसन्तानौ प्रसवश्च नरः सदा ॥ ४० ॥  
 तोकापत्ये नपुं स्त्री तु प्रसूतिः सन्ततिः प्रजा ।  
 जामेयभागिनेयौ तु स्वस्त्रीयोऽथ पितृष्वसुः ॥ ४१ ॥  
 पुत्रे पैतृष्वसेयश्च पितृष्वस्त्रीय इत्यपि ।  
 एवं मातृष्वसुश्च द्वौ भ्रात्रीयो भ्रातुरात्मजः ॥ ४२ ॥  
 सौभागिनेयकानीनौ सुभगाकन्ययोः सुतौ ।  
 दास्या दासेयदासेरौ पौत्रलेयोऽसतीसुते ॥ ४३ ॥  
 बन्धुलबान्धकिनेयौ च कौलदेयश्च कौलदेरश्च ।  
 साध्वी तु भिक्षुकी चेत् कौलटिनेयश्च कौलदेयश्च ॥ ४४ ॥  
 पौनर्भवः पुनर्भूज उरस्यस्त्वौरसः स्वजः ।  
 नप्तारौ पौत्रदौहित्रौ प्रतिनप्ता प्रपौत्रकः ॥ ४५ ॥



परम्परस्तु तत्पुत्रस्तत्पुत्रोऽपि परम्परः ।  
 अयं पत्ययनोऽपि स्यात् कल्पनस्तु तदात्मजः ॥ ४६ ॥  
 सह प्रवाच्यौ भगिनीभ्रातरौ भ्रातराविति ।  
 मातापितरौ पितरौ मातरपितराविति प्रसूतातौ ॥ ४७ ॥  
 श्वश्रूश्चशुरौ श्वशुराविति पुत्राविति सुतापुत्रौ ।  
 जायापती तु मिथुने जम्पती दम्पती इति ॥ ४८ ॥  
 पितरस्तु पितुर्वश्या मातुर्मातामहाः कुले ।  
 अन्ववायोऽन्वयो वंशः सन्तानो जननं कुलम् ॥ ४९ ॥  
 राजबीजी राजवंश्यो बीज्यो वंश्यश्च वंशजः ।  
 स्युर्जातयः सगोत्राश्च सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ५० ॥  
 स्वजनो बान्धवो बन्धुः कुटुम्बन्तु सुतादिकम् ।  
 परिवारः परिजनः परिस्पन्दः परिग्रहः ॥ ५१ ॥  
 देहोऽस्त्री स्त्री तनुर्गात्रं क्षेत्रमङ्गं कलेबरम् ।  
 चतुश्शाखं संहननं शरीरं करणं सिनम् ॥ ५२ ॥  
 बन्धः प्रजानुकः कायो भूषणः सञ्चरोऽपि च ।  
 प्राया वयांस्यस्य दशास्तारुण्यं यौवनं वयः ॥ ५३ ॥  
 ज्यानिर्जीर्णिः स्थाविरं तु पात् स्त्री विस्सं सजा जरा ।  
 शिशुत्वं शैशवं बाल्यं सामुद्रं देहलक्षणम् ॥ ५४ ॥  
 गात्राण्यङ्गानि चास्यांशाः प्रतीकापघनावपि ।  
 अंशस्त्ववयवो भाग एकदेशः कलेति च ॥ ५५ ॥  
 भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धोऽर्धं समेऽशके ।  
 अस्त्री चरणमङ्घ्रिर्ना पत् पादः क्रमणं पदम् ॥ ५६ ॥  
 तद्वन्थी घुटिकौ गुल्फौ प्रपदं चरणाग्रकम् ।  
 गुल्फशीर्षस्त्विन्द्रवस्तिः कूर्चस्त्वङ्गुप्रकान्तरम् ॥ ५७ ॥  
 पादाङ्गुष्ठाङ्गुलीमध्ये क्षिप्रं क्षेत्रमस्त्रियाम् ।  
 प्रसृता जाघनी जङ्घा पिण्डिका स्यात् पिचिण्डिका ॥ ५८ ॥  
 नलतीरं तूरुपर्व जानुरष्टीवदस्त्रियौ ।  
 सक्थि क्लीबं पुमान् वोरुरुरुमूलानि वङ्गणाः ॥ ५९ ॥  
 अङ्गुस्तूपस्थ उत्सङ्गः पीठीवं त्वण्डमूलकम् ।  
 पायुस्तु ना गुदापाने त्रिवलीकं बुलिश्च्युतिः ॥ ६० ॥

शङ्कुर्मेढः शोफकोशौ शिशनं मेहनशोफसी ।  
 पुषो भगं कामपदमक्ली योनिश्च्युतिर्बुलिः ॥ ६१ ॥  
 उक्तद्वयमुपस्थोऽस्त्री गुह्यप्रजनने नपुम् ।  
 सीवन्यस्मादधःसूत्रं गुह्यमध्यं गुडो मणिः ॥ ६२ ॥  
 धारका गुह्यधारायां पुष्फिका गुह्यजे मले ।  
 अस्त्रियो मुष्ककोशाण्डाः फेलुको वृषणोऽण्डुकः ॥ ६३ ॥  
 काञ्चीपदं कलत्रं च कटिः श्रोणिः ककुब्धनी ।  
 पुरोभागोऽस्य जघनो नितम्बोऽपरभागकः ॥ ६४ ॥  
 ऊखौ पुंसि कटिप्रोथौ पूलकौ च स्फिचौ स्त्रियौ ।  
 कुकुन्दरे कटीकूपौ कटौ तु कटिशीर्षकौ ॥ ६५ ॥  
 वंशस्तु पृष्ठमध्यास्थि ( मूलभागोऽस्य तु त्रिकम् ) ।  
 मूत्राशयो वस्तिरक्ली नाभिर्नाभी प्रतारिका ॥ ६६ ॥  
 कुक्षिको मलुकस्तुन्दं जठरं चोदरं न ना ।  
 अवलम्रवलम्रौ तु मध्यमो मध्यमस्त्रियाम् ॥ ६७ ॥  
 हृदयं हृदुरो वक्षः स्तनो वक्षसिजः कुचः ।  
 स्तनाग्रे पिप्पलं वृन्तं चूचुकं मेचकं शिखा ॥ ६८ ॥  
 न क्ली कक्षा बाहुमूलं पार्श्वमस्त्री तयोरधः ।  
 पश्चिमाङ्गं तनोः पृष्ठमंससन्धी तु जत्रुणी ॥ ६९ ॥  
 उल्लखलं तु सन्धिः स्यात् कक्षाया वङ्गणस्य च ।  
 कण्ठेगुडः कण्ठमणिरंसान्तौ पीठबन्धनौ ॥ ७० ॥  
 स्कन्धो दोशिशखरोऽसोऽस्त्री बाहा बाहुभुजौ न षण् ।  
 दोर्न स्त्री करपोणिर्ना हरणः करणः प्लवः ॥ ७१ ॥  
 प्रवेष्टश्च कपोण्यां तु कूर्परः कफणिर्न षण् ।  
 प्रगण्डः कूर्परादूर्ध्वं प्रकोष्ठः कूर्परादवाक् ॥ ७२ ॥  
 मणिबन्धो मणिः पाणिमूले पाणौ करः शयः ।  
 पञ्चशाखस्तलो हस्तस्तर्जनी तु प्रदेशिनी ॥ ७३ ॥  
 अनामिका तु सावित्री कनिष्ठा तु कनीनिका ।  
 व्येष्टा तु मध्यमाऽङ्गुष्ठस्त्वङ्गुलोऽथाङ्गुलिः स्त्रियाम् ॥ ७४ ॥  
 करशाखाऽथ करभो मध्यं मणिकनिष्ठयोः ।  
 तीर्थानि हस्तावयवा नखरस्तु नखोऽस्त्रियाम् ॥ ७५ ॥



पुनर्भवः पाणिरुहो महाराजः पुनर्भवः ।  
 खरूलः करजश्चाथ स प्रवृद्धः स्मराङ्कुशः ॥ ७६ ॥  
 चपेटश्चर्पटस्तालः प्रहस्तः प्रतलस्तलः ।  
 षट् ते तताङ्गुले हस्ते न्युब्जेऽस्मिन् प्रसृते करे ॥ ७७ ॥  
 तौ संहतौ संहतलः सोऽञ्जलिः करभावपि ।  
 प्रसृते तु द्रवाधारे गण्डूषश्चुलकश्चुलः ॥ ७८ ॥  
 पताकः कुञ्चिताङ्गुष्ठे संश्लिष्टप्रसृताङ्गुलौ ।  
 अक्लीबौ मुष्टिमुस्तू द्वौ सङ्ग्राहो मुचुटिः स्त्रियाम् ॥ ७९ ॥  
 घण्टाङ्गुष्ठेन भिन्ना सा खेटकस्त्वर्धमुष्टिकः ।  
 प्रदेशतालगोकर्णा वितस्तिः स्त्री यथाक्रमम् ॥ ८० ॥  
 तर्जन्यादिभिरङ्गुष्ठे वितते विततैः सह ।  
 अवटोमनहस्तः स्यात् सप्रकोष्ठं तताङ्गुलिः ॥ ८१ ॥  
 दग्नद्वयसमात्रास्तु जान्वादेस्तत्तदुन्मिते ।  
 व्यायामो न्यग्रोधो व्यासश्च भुजौ प्रसारितौ तिर्यक् ॥ ८२ ॥  
 त्रिषु तु परे चत्वारः पौरुषमुद्राहुपुम्माने ।  
 गलो निगरणः कण्ठो गरो ग्रीवा तु कन्धरा ॥ ८३ ॥  
 शिरोधरावशुषिरा शिरोधिव्यापलण्डिका ।  
 कम्बुग्रीवा त्रिरेखा सा शिरःपीठः कृकाटिका ॥ ८४ ॥  
 घाटाऽप्यवदुरक्लीब उत्तमाङ्गं पुनः शिरः ।  
 उष्णीषं शीर्षमक्षत्रं पुंसि मूर्ध्ना च मस्तिकः ॥ ८५ ॥  
 मुण्डोऽस्त्री मस्तकोऽप्यस्त्री मुखं तु वदनं घनम् ।  
 तेरं तुण्डं वक्त्रमास्यमाननं च द्विजालयम् ॥ ८६ ॥  
 ओष्ठस्याधस्तु चिबुकं चुबुकं चबुकं च तत् ।  
 अधरस्त्वधरोष्ठः स्यादोष्ठो दन्तच्छदोऽपि च ॥ ८७ ॥  
 दन्तवस्त्रं च तत्प्रान्तौ सृक्कणी दशनाः पुनः ।  
 रदनाः खादना दन्ता दंशा मल्ला रदा द्विजाः ॥ ८८ ॥  
 मध्यदन्ता राजदन्ता दंष्ट्रा तत्पार्श्वयोर्द्वयोः ।  
 तत्पार्श्वयोः स्थिता दन्ता जम्भास्तालु तु काकुदम् ॥ ८९ ॥  
 रसज्ञा रसना जिह्वा राजिः सूनाऽप्यधः स्थिता ।  
 गण्डो गल्लः कपोलश्च तत्परा तु हनुर्न षण् ॥ ९० ॥

वक्रो नकुटकं घ्राणं घोणा नासा विघूणिका ।  
 शिङ्गाणी नासिका चाथ धमनौ नासिकापुटौ ॥ ९१ ॥  
 नासाग्रे दृष्टिबन्धोऽथ शिङ्गाणो नासिकामलः ।  
 पिण्डूषः कर्णजमलः कर्णः शब्दग्रहः श्रवः ॥ ९२ ॥  
 पैण्डूषोऽस्त्री श्रुतिः श्रोत्रं श्रोतश्च श्रवणं श्रवः ।  
 पालिस्तु कर्णलतिका वेष्टनं कर्णशङ्कुली ॥ ९३ ॥  
 ईक्षणं नयनं चक्षुरक्षि लोचनमम्बकम् ।  
 दृष्टिर्दृक् चाथ न पुमांस्तारकाक्षः कनीनिका ॥ ९४ ॥  
 वल्गु पद्म च दृग्लोम्नि दृक्छदो वर्त्मवर्त्मनी ।  
 बिडालको नेत्रपिण्डो दूषिका त्वक्षिजं मलम् ॥ ९५ ॥  
 ललाटमलिकं गोधिः स्त्री तत्प्रान्तौ तु शङ्खकौ ।  
 भूमिल्लिकाऽथ शिरसः पृष्ठे नापितकोलिका ॥ ९६ ॥  
 जटुले कालकः पिप्लुस्तिलके तिलकालकः ।  
 तनूरुहं रोम लोम केशाः शिरसिजाः कचाः ॥ ९७ ॥  
 वालाः कञ्जास्तीर्थवाहाः कुन्तलाश्च शिरोरुहाः ।  
 कुञ्चितास्ते कर्कराला बर्बरा अलका अपि ॥ ९८ ॥  
 ते ललाटे भ्रमरकाः कुरुला भ्रमरालकाः ।  
 पर्पर्या स्याद्वल्लरीका भल्लर्या भम्पटिः क्षुवः ॥ ९९ ॥  
 केशकूटस्तु धम्मिल्लः कबरी कर्परी समे ।  
 चोचुस्तु वालकूर्चालः सीमन्तः केशपद्धतिः ॥ १०० ॥  
 तद्वन्थिः सन्धितोऽथ प्ता जालिनी गरुडा जटा ।  
 प्रलोभ्यं तु शिरस्यं च शीर्षण्यं चामलाः कलाः ॥ १०१ ॥  
 चूडा केशी केशपाशी शिखण्डी कमुजा शिखा ।  
 बालानां सा काकपक्षः शिखण्डश्च शिखण्डकः ॥ १०२ ॥  
 श्मश्रु तु व्यञ्जनं चोटः समे शिङ्गाणशिङ्गिनी ।  
 त्वक् स्त्री छदिस्तनुः कृत्तिः संछादन्यप्यसृग्धरा ॥ १०३ ॥  
 रसस्तु घनधातुः स्यादात्रेयः षड्रसासवः ।  
 मूलधातुर्वहिसुतो महाधातुरसृक्करः ॥ १०४ ॥  
 रुधिरं लोहितं रक्तमस्त्रं क्षतजमासुरम् ।  
 राक्थं शोध्यं मांसकरं रसतेजो रसोद्भवम् ॥ १०५ ॥



आग्नेयं प्राणदं विस्त्रं वासिष्ठं शोणितासृजी ।  
 मांसं तु काश्यपं क्रव्यं तरसं पललं पलम् ॥ १०६ ॥  
 रक्ततेजो रक्तभवं पिशितं कीनमामिषम् ।  
 मेदस्करं च मेदस्तु पलतेजः पलोद्भवम् ॥ १०७ ॥  
 विस्त्रमस्थिकरं स्नेहवरं गौतममित्यपि ।  
 अथास्थि कीकसं विडुं कललं कूरमादिकम् ॥ १०८ ॥  
 कुल्यं मेदोभवं मेदस्तेजो मज्जाकरं बलम् ।  
 भारद्वाजं श्वदयितं सारमङ्गातकर्कराः ॥ १०९ ॥  
 मज्जा स्त्री कौशिकं सूक्ष्ममस्थितेजोऽस्थिसम्भवम् ।  
 अस्थिस्नेहो वीर्यकरो मज्जतेजस्विनौ बली ॥ ११० ॥  
 रेतो बीजं वरं वीर्यं हर्षजं स्नेहु पौरुषम् ।  
 शुक्लं प्रधानधातुश्च धातवोऽमी नवाष्ट वा ॥ १११ ॥  
 तिलकं ह्योम गोर्दं तु मस्तिष्को मस्तुलुङ्गकः ।  
 पेशिर्मांसलताऽथ द्वौ वृक्यौ पार्श्वगतौ गुडौ ॥ ११२ ॥  
 अस्त्री परीतदान्त्रं स्यात् कालखण्डं पुनर्यकृत् ।  
 गुल्मः ग्रीहा च डिम्बः स्यादष्टीला गर्भसम्पुटः ॥ ११३ ॥  
 अग्रमांसं तु हृदयं हृद्वसा त्वामिषो रसः ।  
 कङ्कालोऽस्त्री तनोरस्थि करङ्कोऽप्यस्थिपञ्चरम् ॥ ११४ ॥  
 पार्श्वस्य वङ्किः पर्वस्त्री पृष्ठस्यास्थि कशेर्बना ।  
 कर्परो ना करोटिः स्त्री कपालोऽस्त्री शिरोऽस्थिनि ॥ ११५ ॥  
 शाखास्थि नलकं जानोरष्टी स्यात् कूर्परस्य च ।  
 धमनी त्वीलिका नाली सिरा दोषप्रणालिका ॥ ११६ ॥  
 ग्रीवायास्तु शिरा मन्या महास्नायुस्तु कन्धरा ।  
 नखारुस्तु स्नसा स्नावः स्नाय्वना सन्धिबन्धनम् ॥ ११७ ॥  
 लसीका लसिका रक्तसमांसविपाकजाः ।  
 पूयं तु कुणपं दूष्यं पुरीषं शमलं शकृत् ॥ ११८ ॥  
 उच्चारो विण्ण ना गूथो वर्चस्को मलमस्त्रियाम् ।  
 विष्ठा चाप्यथ लण्डोऽस्त्री विष्ठा राजियुता दृढा ॥ ११९ ॥  
 प्रस्रावो देहवारि स्यान्मूत्रमेकाङ्गुलं च तत् ।  
 सृणिका स्यन्दिनी लाला मलं किट्टं च न स्त्रियाम् ॥ १२० ॥

पित्तं मायुर्नरि श्लेष्मा बलासः खेटकः कफः ।  
 क्षुत् स्त्री क्षुतः क्षवः पुंसि प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥ १२१ ॥  
 दशथुः परितापः स्याद् ग्लानिः स्त्री ग्लवथुः पुमान् ।  
 शोफोऽस्त्री श्वयथुः शोथः पादस्फोटो विपादिका ॥ १२२ ॥  
 स्फोटकः कीलको गण्डो विस्फोटः पिटका त्रयी ।  
 खसः पुमान् स्त्रियः कच्छूपामपामाविचचिकाः ॥ १२३ ॥  
 कण्डूकण्डूतिकण्डूयाः खर्जूः कण्डूयने स्त्रियः ।  
 यक्ष्मा यक्ष्मः क्षयः शोषः कोठः कुष्ठं च मण्डलम् ॥ १२४ ॥  
 श्वित्रं श्वेतेऽत्र चक्रं तु ददुः स्त्री मुखजः पुनः ।  
 पुंहलोऽपि वरण्डोऽपि व्यङ्गो नीलं पृष्णमुखे ॥ १२५ ॥  
 मङ्कुस्तु सिद्धम सिद्धं च केशघ्नं त्विन्द्रलुप्तकम् ।  
 उद्गालो वमथूद्गारौ वान्तिः प्रच्छदिका वमिः ॥ १२६ ॥  
 भ्रिणिका वातसञ्चारो हिक्का हेक्का च हिक्किका ।  
 उच्छ्वासरोधो योऽकस्मात् क्राथोऽसौ क्रथनं क्षणम् ॥ १२७ ॥  
 अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात् प्रमेहस्त्वतिमूत्रतः ।  
 आनाहो मलविष्टम्भ उत्थानं तु मलस्रुतिः ॥ १२८ ॥  
 नातिभिन्नस्वतीसारो ग्रहणी स्त्री प्रवाहिका ।  
 गलगण्डो गण्डमालो रोहिणी तु गलाङ्कुरः ॥ १२९ ॥  
 गुल्मः स्यादुदरग्रन्थिः सीवनीजो भगन्दरः ।  
 शम्बूकावर्त एष स्यात् त्रिदोषोत्थोऽथ पित्तजः ॥ १३० ॥  
 स्यादुष्टूग्रीवकोऽथ स्त्री परिस्त्रावी कफोद्भवः ।  
 अशौं दुर्नाम वृद्धिस्तु कुरण्डश्चाण्डवर्द्धने ॥ १३१ ॥  
 उपदंशो लिङ्गशोफ उदावर्तो गुदग्रहः ।  
 नेत्ररुक् कामला ह्रीबं कुम्भः स्यात् सा महत्तरा ॥ १३२ ॥  
 श्लेष्मपदः पदवल्मीको गतिर्नाडीव्रणः पुमान् ।  
 अर्बुदो मांसकीलः स्यात् पृष्ठग्रन्थिर्गुडो गडुः ॥ १३३ ॥  
 सुप्तः कुक्कुट एकाङ्गग्रहश्च वरुणग्रहः ।  
 गजे ज्वरस्य नामानि सिंहे तोये च सोऽण्डिकः ॥ १३४ ॥  
 उष्ट्रे लसोऽभितापोऽश्वे व्याघ्रे पोतो गवीश्वरः ।  
 बिडाले कणकः पोत्रिण्यलसः छर्दनः शुचिः ॥ १३५ ॥



कमाद्धारिद्रेन्द्रमदौ मृगरोगौ पपा ततः ।  
 महिषे मत्स्यमृगयोः खगे चाक्षेपकोऽनिले ॥ १३६ ॥  
 धरण्यां करकोत्पाटावुद्भिजे पाण्डुवर्णकः ।  
 मारिर्मसूरी रुग्भेदाः शूलाद्या विद्रधिर्न षण् ॥ १३७ ॥  
 व्याधिव्याध्यामया माथरोगामा देहमर्दनः ।  
 सन्तापोऽपाटवं मान्द्यमाकुल्यं रुप्रजे स्त्रियौ ॥ १३८ ॥  
 उपचर्या चिकित्सा स्याल्लङ्घनं त्वपतर्पणम् ।  
 कुशी भग्नास्थिवन्धः स्यादरिष्टो दंशबन्धनम् ॥ १३९ ॥  
 पट्टस्तु व्रणबन्धः स्यान्नस्यं नस्तं च नावनम् ।  
 अङ्गुल्यग्रेण चूर्णौघैर्घर्षणं प्रतिसारणम् ॥ १४० ॥  
 जायुः पुंस्यगदस्तन्त्रं भैषज्यौषधभेषजम् ।  
 काथः कषायो निर्यूहः फाण्टोऽतिकाथजो रसः ॥ १४१ ॥  
 काथादेस्तु पुनः काथाद् घनीभावो रसक्रिया ।  
 वार्त पाटवमारोग्यं सङ्गद्यं स्वास्थ्यमनामयम् ॥ १४२ ॥  
 त्रिष्वतः पटुरुल्लाघो वार्तः कल्यो निरामयः ।  
 रोगहार्यगदङ्कारो भिषग्वैद्यश्चिकित्सकः ॥ १४३ ॥  
 निदानज्ञस्तु दोषज्ञ आयुर्वेदी तु शास्त्रवित् ।  
 आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तो विकृतो व्याधितोऽपटुः ॥ १४४ ॥  
 आमयावी समौ ग्लास्नुग्लानौ पामनकच्छुरौ ।  
 वाताशोदद्रुमन्तः स्युर्वातलार्शसदद्रुणाः ॥ १४५ ॥  
 श्लेष्मसूः श्लेष्मलः खेटी सातिसारोऽतिसारकी ।  
 किलासी सिध्मलो वृद्धनाभौ तुन्दिभतुन्दिनौ ॥ १४६ ॥  
 खलवाटः खलतिर्बभ्रुः शिपिविष्टैन्द्रलुप्तिकौ ॥ १४६ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

पातालकाण्डे भूताध्यायः ॥ ४ ॥

चतुर्थः पातालकाण्डः समाप्तः ॥ ४ ॥

## ५. अथ सामान्यकाण्डः

गणाध्यायः ॥ १ ॥

पूगप्रकरसङ्घातविसरव्रातसञ्चयाः ।  
 वारस्कन्धगणस्तोमसमवायचयव्रजाः ॥ १ ॥  
 सन्दोहनिवहव्यूहसमूहनिकराकराः ।  
 समुदायः समुदयो निकुरुम्बं कदम्बकम् ॥ २ ॥  
 वृन्दं जातं चक्रवालं जालकं पेटकं जटा ।  
 धान्यादिवृन्दे कूटोऽस्त्री राशिपुञ्जोत्करा नरि ॥ ३ ॥  
 वृन्दे तिरश्चां यूथोऽस्त्री निकायस्तु सधर्मणाम् ।  
 सङ्घसार्थौ तु जन्तूनां वर्गस्तु सदृशां गणे ॥ ४ ॥  
 पशूनां समजोऽन्येषां समाजो धीमतां सभा ।  
 उद्भिज्जानां तु षण्डोऽस्त्री स्कन्धोऽश्वनरहस्तिनाम् ॥ ५ ॥  
 पटल्यपुं सुश्लिष्टानां सजातीयगणे कुलम् ।  
 शौककापोतशावाद्याः शुकादीनां गणे नपुम् ॥ ६ ॥  
 क्ली गोत्रप्रत्ययान्तेभ्यः स्यादौपगवकादिकम् ।  
 माणवानां तु माणव्यं बाडव्यं तु द्विजन्मनाम् ॥ ७ ॥  
 राजन्यकं मानुष्यकं राजकं च पृथक् पृथक् ।  
 गाभिणं यौवनं तासां गाणिक्यं गणिकागणे ॥ ८ ॥  
 जनबन्धुगजप्रासहायानां गणे स्त्रियः ।  
 जनताबन्धुतेत्याद्या बाडवं बडवागणे ॥ ९ ॥  
 हास्तिकमौष्ट्रकमौक्षकमौरश्चकमाजकं गजादीनाम् ।  
 एवं धैनुकवात्सकमाश्वीयं त्वाश्वमश्वानाम् ॥ १० ॥  
 सवर्मणां कावचिकं पादातं पादचारिणाम् ।  
 आपूपिकं शाष्कुलिकमित्यादिकचचेतसाम् ॥ ११ ॥  
 कैदारिकं तु कैदार्यं क्षेत्रं कैदारकं समम् ।  
 केशानां कैशिकं कैश्यं खल्या तु खलिनी समे ॥ १२ ॥  
 भैक्षसाहस्रकारीषवार्मणानि च तद्गणे ।  
 रथकट्या तु रथ्या स्याद् गोत्रा गव्या च गोगणे ॥ १३ ॥



धूम्या वात्या पाश्या हल्या गल्या नट्या वन्या तृण्या ।  
 पृष्ठ्यं तत्तद्वृन्दे सर्वं पार्श्वं वृन्दे पर्शूनां स्यात् ॥ १४ ॥  
 मिथुनं द्वितयं द्वैतं द्वयं द्वन्द्वं युगं यमम् ।  
 यमलं युगलं युगं युतकं च द्वयोर्गणे ॥ १५ ॥  
 त्रयं त्रयाणां त्रितयं मिथुनं तद्वैति त्रिषु ।  
 स्त्रीपुंसयोस्तु मिथुनं कशिपुः स्यन्नवस्त्रयोः ॥ १६ ॥  
 औशीरं शय्यासनयोलिङ्गं बुद्ध्यादिसङ्गतौ ।  
 मामः परोऽस्त्रादिषयाद् (गुणाद्) भूतेन्द्रियार्थकात् ॥ १७ ॥  
 पक्षः पाशश्च हस्तश्च केशार्थेभ्यः परो गणे ।  
 पशूनां गोयुगं युग्मे तत्तदाह्वयपूर्वकम् ॥ १८ ॥  
 गणपूरणं गणतिथं पूगतिथं चैवमेव सङ्गतिथम् ।  
 बहुतिथिसंवत्सरतममासतमान्यर्धमासतमम् ॥ १९ ॥  
 यावतिथैतावतिथे तावतिथं कतिथमपि च कतिपयथम् ।  
 पञ्चमसप्तमनवमान्यष्टमदशमद्वितीयानि ॥ २० ॥  
 षष्ठं प्रथमतृतीये तुरीयतुर्ये चतुर्थञ्च ।  
 द्वादशमेकादशमिति रूपं स्याद् विंशतेरर्वाक् ॥ २१ ॥  
 विंशं विंशतितममेकविंशमिति वत्परं द्विधा सर्वम् ।  
 षष्टितममिति वदेकं रूपमसङ्ख्यादिषष्ट्यादेः ॥ २२ ॥  
 शततममेकशततमं सहस्रतममिति च सर्वमेकविधम् ।  
 ओजमयुगं युगं युगिति द्वितीयतुर्यादि ॥ २३ ॥  
 त्रिष्वेते पूरणार्थाः स्युः शब्दा गणतिथादयः ।  
 आवलिः पद्धतिः पङ्क्तिरालिलेखा च मालिका ॥ २४ ॥  
 एकादयश्च सङ्ख्येये शब्दाः प्राग्विशतेस्त्रिषु ।  
 द्वित्रा द्वौ वा त्रयो वा स्युरेवं त्रिचतुरा अपि ॥ २५ ॥  
 चतुःपञ्चाः पञ्चषाश्च षट्सप्ताद्याश्च तादृशाः ।  
 स्त्री पङ्क्तिर्विंशतिस्त्रिंशच्चत्वारिंशच्च पञ्चाशत् ॥ २६ ॥  
 षष्टिः सप्तत्यशीतिश्च नवतिश्च दशोत्तराः ।  
 क्रमेणथ परेणथ परे दशगुणोत्तराः ॥ २७ ॥  
 शतं सहस्रमयुतं नियुतं प्रयुतार्बुदे ।  
 न्युर्बुवं वृन्दस्त्र्यं च निस्त्र्यं शङ्खमम्बुजम् ॥ २८ ॥

समुद्रो मध्यमन्तं च परार्धं च यथाक्रमम् ।  
 परं परार्धाद् द्विगुणमथ स्त्री कोटिरर्बुदे ॥ २९ ॥  
 व्यत्यासेन च दृश्येते नियुतप्रयुते कचित् ।  
 वृन्दादिषु तु षट्स्वन्ये निस्त्र्यं बद्धमक्षितम् ॥ ३० ॥  
 व्योम चान्तश्च सर्वश्च समुद्राद्यास्तु वा त्रिषु ।  
 अन्ये त्वाहुः शतं कोटिः शङ्खवृन्दं महागुणः ॥ ३१ ॥  
 पद्मं महाम्बुजं चेति क्रमाक्षगुणोत्तरम् ।  
 सहस्राणां शते लक्षा लक्षं च नियुतञ्च तत् ॥ ३२ ॥  
 पङ्क्त्यादयः स्युः संख्यायां संख्येयेषु च वस्तुषु ।  
 संख्यायां द्व्येकबहुताः संख्येयेषु सदैकता ॥ ३३ ॥  
 तद्यथा विंशतिर्गावः स्वावृत्तौ जातु नैकता ।  
 तद्यथा विंशतिर्विप्रास्तिस्रो विंशतयो भटाः ॥ ३४ ॥  
 बहुव्रीहौ बहुवचो वाच्यलिङ्गं च तद्यथा ।  
 उपविशैर्भुजैर्भुक्तमुपत्रिंशा अजा इति ॥ ३५ ॥  
 कला गणनसंख्याने हननं ताडनं समे ।  
 वर्गस्तावत्कृतिश्चेति तावत्कृत्वः कृतेर्द्वयम् ॥ ३६ ॥  
 तन्मूले तु पुमान् हेतुर्गच्छा वाङ्मित्रराशयः ।  
 गण्डः कपर्दाश्चत्वारस्ते बोधी पञ्च तद्व्ययम् ॥ ३७ ॥  
 बिन्दुकोऽस्त्री तद्व्यये तु पणपाणिकपादिकाः ।  
 क्रमात्ततोऽङ्गजो रुच्यः कार्षिकश्च चतुर्गुणाः ॥ ३८ ॥  
 कार्षापणः कार्षिकः स्यात् स षोडशपणः कचित् ।  
 लोहे विंशतिमाषोऽसौ कार्षिके ताम्रिके पणः ॥ ३९ ॥  
 ताम्रकर्षकृता मुद्रा कचित् कार्षापणः पणः ।  
 स एव चाधिकेत्युक्ते धानका तच्चतुष्टयम् ॥ ४० ॥  
 ता द्वादश सुवर्णोऽस्त्री निष्को दीनार इत्यपि ।  
 साशीतिपणसाहस्रो दण्ड उत्तमसाहसः ॥ ४१ ॥  
 त्रसरेणुभिरष्टाभिलिङ्गा सैव मरीचिका ।  
 रथरेणुश्च रेणुश्च तास्तिस्रो राजसर्वपः ॥ ४२ ॥  
 धुरणश्च यवाग्रश्च ते त्रयो गौरसर्वपः ।  
 तेऽष्टौ यवः षोडश तु यवा माषोऽथवा त्रिभिः ॥ ४३ ॥



यवैर्गुञ्जा पञ्च गुञ्जा माषः कुप्ये तु सप्त ताः ।  
 रूप्यमाषो द्विगुञ्जो वा धरणं षोडशैव ते ॥ ४४ ॥  
 शतमानं तु दशभिर्धरणैः पलमेव च ।  
 माषस्तण्डुलमात्रो वा हेम्नस्तैरष्टभिः पणः ॥ ४५ ॥  
 निष्कोऽस्त्री विंशतिपणस्तेऽष्ट वा दश वा पलम् ।  
 यः पञ्चकृष्णलो माषः कुप्ये वा सप्तकृष्णलः ॥ ४६ ॥  
 तौ द्वौ माषावर्णिका स्याल्लोहितीकं त्रिमाषकम् ।  
 शाणो मण्डः पिचूलं च माषाः स्युश्चतुरादयः ॥ ४७ ॥  
 मधुणं सप्तमाषं स्यादण्डिका तच्चतुर्थवा ।  
 द्रक्षुणं द्रक्षुमं कोलं वटकं चाष्टमाषके ॥ ४८ ॥  
 तृतीये ध्वानका शाणभागे मापास्तु षोडश ।  
 सुवर्णोऽक्षः पिचुः पाणिः कर्पोऽस्त्री क्रोडबिन्दुके ॥ ४९ ॥  
 बिडालपादकं हंसपदं ग्रासग्रहं तलम् ।  
 शतमानं तु कर्षे द्वे शुक्तिरष्टमिका न ना ॥ ५० ॥  
 ते द्वे चतुर्थिका वा क्ली निकुञ्च्याज्यपलानि च ।  
 बिल्वः प्रकुञ्चं मुष्टिश्च हेम्नोऽक्षे विस्तवारटौ ॥ ५१ ॥  
 पादिकं ताम्रकर्षं स्यादिन्दुः स्याद्रजते पले ।  
 कुरुविस्तः पले हेम्नः प्रसृतोऽस्त्री द्विमुष्टिके ॥ ५२ ॥  
 प्रसृतौ द्वावञ्जलिः स्यात् कुडपो बाहिकोऽध्युषः ।  
 तौ द्वौ मान्यष्टमानं च ते द्वे प्रस्थः स कुप्यके ॥ ५३ ॥  
 द्वात्रिंशत्पलकोऽन्येषां द्वादशैव पलानि सः ।  
 चतुष्टयः पुना राशिर्महोद्रेको बृहाणकः ॥ ५४ ॥  
 पात्रं शूर्पावरं पिष्टं सेहिका द्वाढकोऽस्त्रियाम् ।  
 कंभं चाथ चतुष्टके स्युर्द्रोणोऽस्त्री कलशो घटः ॥ ५५ ॥  
 अमर्णं नल्वलं शौर्पमुन्मानं तद्वद्वयं पुनः ।  
 कुम्भः शूर्पोऽस्त्रियां तौ द्वौ गोणी बाहस्तु तद्वद्वयम् ॥ ५६ ॥  
 तौ द्वौ खारी परे त्वेनां विदुः कुम्भी परे पुनः ।  
 खारीं कंसयुगेनान्ये मानीं बाहं परे विदुः ॥ ५७ ॥  
 बाहं केचिच्चतुःखारी खारीभागं च गोणिकाम् ।  
 बाहं प्रस्थद्वयं केचित् कुम्भानां विंशतिर्जटी ॥ ५८ ॥

दश कुम्भाः पाञ्चमिकः कुम्भोऽयमिति केचन ।  
 धारणं तु पलान्यष्टौ हेम्नस्तान्नस्य सप्ततिः ॥ ५९ ॥  
 दशान्येषां शतं मानं साधै रूप्यपलैस्त्रिभिः ।  
 तुला पलशतं तास्तु दशार्धं घटिकोऽस्त्रियाम् ॥ ६० ॥  
 तौ तु द्वौ शाकटो भारः शाकटीनः शलाटवत् ।  
 भारा दश समं सङ्गं धारभारं च शाकटम् ॥ ६१ ॥  
 आचितं द्वाच्यचितं होढं हेलकं समकं समम् ।  
 बाहितं भारितं चाष्टावृक्षादशगुणाः क्रमात् ॥ ६२ ॥  
 माषः शाणस्तलं मुष्टिरञ्जलिः प्रस्थ आढकः ।  
 द्रोणो गोणी च खारी च क्रमादेतच्चतुर्गुणम् ॥ ६३ ॥  
 पाय्यं हस्तादिभिर्मानं दुवयं कुडबादिभिः ।  
 पौतवं तुलया तस्य सूत्रं स्याद्रागसूत्रकम् ॥ ६४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

सामान्यकाण्डे गणाध्यायः ॥ १ ॥



## धर्मकर्मध्यायः ॥ २ ॥

रूपं तत्त्वं सतत्त्वं च स्वरूपं च सलक्षणम् ।  
 सहजं निजमाजानं धर्मसर्गौ निसर्गवत् ॥ १ ॥  
 स्वभावः प्रकृती रीतिरवस्था तु दशा स्थितिः ।  
 प्रभावः प्रभवन्ती स्यात् प्रभुता प्रभविष्णुता ॥ २ ॥  
 परभागो गुणोत्कर्षः प्राग्भारोऽतिशयो भरः ।  
 विस्तारो विग्रहो व्यासः स तु शब्दस्य विस्तरः ॥ ३ ॥  
 अनायासार्थकं फाण्टं दौर्मत्यं तु करैरकम् ।  
 विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहो रोषे त्वादीनवाश्रवौ ॥ ४ ॥  
 दैर्घ्यमायाम आनाहः परिणाहो विशालता ।  
 वैपरीत्यं विपर्ययो व्यत्ययश्च विपर्ययः ॥ ५ ॥  
 व्यत्यासो व्यतिहारः स्यादन्तर्गडु निरर्थकम् ।  
 तत्क्षणं स्यादेकपदं यदृच्छा नियमोऽङ्गिति ॥ ६ ॥  
 वण्टो विभागो भागोऽशः पादस्त्वंशश्चतुर्थकः ।  
 कला तु षोडशो भागो वारस्त्ववसरः क्षणः ॥ ७ ॥  
 प्रतिकूलानुकूलार्थे अपष्ठुरमपष्ठु च ।  
 पृष्ठमांसादनं पश्चाद् गतस्यार्थस्य गर्हणम् ॥ ८ ॥  
 आग्नेडनं ऋटप्पः स्याज्झम्पः सम्पातपाटवम् ।  
 कर्म क्रियाऽप्यनुष्ठानं तद्भेदा गमनादयः ॥ ९ ॥  
 यात्रा व्रज्या च गमनं प्रस्थानं च गतिर्गमः ।  
 चक्रावर्तो भ्रमो भ्रान्तिर्भ्रमिर्घूर्णिश्च घूर्णनम् ॥ १० ॥  
 ईहनं शीघ्रगमनं सारणं छद्मना गतिः ।  
 व्रज्याऽटाटया पर्यटनमल्पेऽध्वनि गतागतम् ॥ ११ ॥  
 सविकारा गतिः सोरो भेलनं तरणं प्लवः ।  
 कादाचित्कस्तु भेयोऽसौ क्षेपो लङ्गनलङ्घने ॥ १२ ॥  
 निर्याणं स्यान्निर्गमनमंहनं वक्षसा गतिः ।  
 प्रतिबन्धः प्रतिष्ठम्भः सम्बन्धः प्राप्तिरापनम् ॥ १३ ॥  
 निर्बन्धोऽभिनिवेशः स्यात् प्रवेशोऽन्तरगाहनम् ।  
 आस्यासनोपवेशश्च निवेशो रचना स्थितिः ॥ १४ ॥

अथाभ्यादानमारम्भः प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ।  
 प्रत्युत्क्रमः प्रयोगः स्यादारोहणमभिक्रमः ॥ १५ ॥  
 आक्रमोऽभिक्रमः क्रान्तिर्व्युत्क्रमस्तूत्क्रमो मृतम् ।  
 विक्रमः शौर्यकरणमत्याधानमतिक्रमः ॥ १६ ॥  
 भूमानं विक्रमः पद्भ्यां निर्हारोऽभ्यवकर्षणम् ।  
 अनुहारोऽनुकारः स्यात् परिहारो निवर्तना ॥ १७ ॥  
 प्रत्याहार उपदानमभिहारस्त्वभिग्रहः ।  
 समास उपसंहारः समाहारः समुच्चयः ॥ १८ ॥  
 अपहारस्त्वपादानं प्रहारस्त्वभिताडनम् ।  
 उपलम्भस्त्वनुभवो विलम्भस्त्वतिर्जनम् ॥ १९ ॥  
 विप्रलम्भो विसंवादः प्रतिलम्भस्तु लम्भनम् ।  
 स्वतन्त्रवृत्तिर्व्युत्थानमभ्युत्थानं तु गौरवम् ॥ २० ॥  
 संस्थानं सन्निवेशः स्यादुपस्थानं तु सङ्गतिः ।  
 धान्योत्क्षेपणमुत्कारः पराकारस्तु धिक्क्रिया ॥ २१ ॥  
 विकारो विप्रकारः स्यादाकारस्त्वङ्ग इङ्गितम् ।  
 उपक्रियोपकारः स्यादपकारोऽन्यतः कृतिः ॥ २२ ॥  
 प्रकार इत्थम्भावः स्यादपकारोऽन्यपीडनम् ।  
 प्रत्याख्यानं निराकारः प्रत्यादेशो निरासवत् ॥ २३ ॥  
 परिणामोऽन्यथाभावः सन्नामस्त्वन्यथाकृतिः ।  
 प्रणामः प्रणिपातः स्यादुन्नामस्तुङ्गतोन्नतिः ॥ २४ ॥  
 उद्योगोऽस्त्री समुत्थानं विनियोगोऽर्पणं फले ।  
 विधिर्नियोगः सम्प्रेष उपयोगः फलक्रिया ॥ २५ ॥  
 संयोगसम्प्रयोगौ सम्भेदः सन्निपातसंश्लेषौ ।  
 सम्पाते विश्लेषे तु विप्रयोगविरहवियोगाः ॥ २६ ॥  
 विगमोऽपगमोऽपायो मेलने सङ्गसङ्गमौ ।  
 शमथस्तु शमः शान्तिर्दान्तिस्तु दमथो दमः ॥ २७ ॥  
 बन्धनं प्रसितिर्बन्धः क्लान्तिस्तु क्लमथः क्लमः ।  
 परिसर्या परीसारः परिसर्पः परिक्रमः ॥ २८ ॥  
 लवे विलावो लवनं तेमः स्तेमः समुन्दनम् ।  
 प्रतिश्रवः प्रतिख्यातिरपेक्षा प्रतिजागरः ॥ २९ ॥  
 संयामसंयमौ यामो वियामो वियमो यमः ।  
 संवाहनं मर्दनं स्यात् पर्यवस्था विरोधनम् ॥ ३० ॥



संस्तवः स्यात् परिचय उदजः प्रेषणे पशोः ।  
 पवनं पवनिष्पावौ जूतिस्तु जवनं जवः ॥ ३१ ॥  
 प्रेजनं स्यादपसरो रन्धनं पचनं पचा ।  
 क्षयः क्षिया नयो नायो मदो मादः स्तवः स्तवः ॥ ३२ ॥  
 उद्वेग उद्भ्रमः श्रायः श्रयणं प्रमितिः प्रमा ।  
 स्फातिस्तु वृद्धिः स्फुरणं स्फुलनं क्षेपणं क्षिपा ॥ ३३ ॥  
 उद्यमो गुरणं श्च्योतिः प्रघारः प्रथनं प्रथा ।  
 भङ्गिस्तु व्याकृतिः खेदो निर्वेदो घटना घटा ॥ ३४ ॥  
 यप्रेषणं समाहूय तस्मिन् स्यात् प्रतिशासनम् ।  
 वञ्चनं त्वतिसन्धानं व्यलीकं च प्रतारणम् ॥ ३५ ॥  
 निष्ठीवोऽस्त्री निष्ठीवनमपि निष्ठीवनं च निष्ठ्यूतिः ।  
 उपरत्यारत्यपरतिविरतय उपरमण उपरामः ॥ ३६ ॥  
 संविदागूः प्रतिज्ञाऽऽस्थाऽऽप्यभ्युपायः प्रतिश्रवः ।  
 अङ्गीकाराभ्युपगमनियमाश्रवसंश्रवाः ॥ ३७ ॥  
 प्रणीतिः स्यादनुनयः प्रश्रयः सान्त्वनं तथा ।  
 सपत्राकृतिनिष्पत्राकृती त्वत्यन्तपीडने ॥ ३८ ॥  
 वर्णनं स्याद्विभजनं प्रवाहस्तु परम्परा ।  
 श्रन्थनं ग्रन्थनं गुम्फः सन्दर्भो रचना न ना ॥ ३९ ॥  
 विधूननं विधुवनं त्यागो हानं च वर्जनम् ।  
 आवर्जनं द्रवक्षेपे निधानं क्षेपणासने ॥ ४० ॥  
 सम्मूर्छनं व्यापनं स्याद् विदरः स्फुटनं भिदा ।  
 आवर्तनं काथनं स्यात् कथनं पाकवर्तनम् ॥ ४१ ॥  
 संवीक्षणं चिचयनं लोटनं तु विवेष्टनम् ।  
 इत्यादयः क्रियाशब्दा लक्ष्या धातुषु लक्षणैः ॥ ४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 सामान्यकाण्डे धर्मवर्माश्यायः ॥ २ ॥

### गुणाध्यायः ॥ ३ ॥

गुणो जसुर्द्रव्यपदो द्वौ स्नेहे मार्जमार्जनौ ।  
 मसृणत्वे तु मारुङ्गकासनौ द्रवणे द्रुतिः ॥ १ ॥  
 खादीनां तु गुणाः शब्दः स्पर्शो रूपं रसः क्रमात् ।  
 गन्धश्चेतीन्द्रियार्थास्ते विषया गोचराश्च ते ॥ २ ॥  
 सत्यं तथ्यमृतं सम्यक् समीचीनं तथार्थवाक् ।  
 कर्कशे परुषो रूक्षो मठरः खोरणः खरः ॥ ३ ॥  
 उत्क्षुद्रलोऽथ मसृणे श्लक्ष्णसोमालचिकणाः ।  
 पिच्छिले स्याद् विजविलः कठिने खरटः खटः ॥ ४ ॥  
 कठोरनिष्ठुरकूरुदृढदारुणकक्खटाः ।  
 खरश्च सुकुमारे तु कोमलो मृदुलो मृदुः ॥ ५ ॥  
 शीतले शीकरः शीतः सुषिकः सुषिमो जडः ।  
 समीकः सोलिकः सोलः स्कन्दोलो मेकलस्तलः ॥ ६ ॥  
 तुषारः शिशिरः स्फीतः सेभ्यः सीमो हिमोऽपि च ।  
 उष्णं ज्वलः खरः क्रूरो बालस्तिग्मः कृशश्चुपः ॥ ७ ॥  
 सोमलो वह्निको व्यक्तस्तालको जलशीनकः ।  
 अङ्गारो दहनस्तप्तः प्रूषो धूम्रः प्रतापनः ॥ ८ ॥  
 तीक्ष्णश्चण्डोलबणप्रोन्द्रकरालविकारालिनः ।  
 मन्दोष्णमोष्णं कोष्णं च कवोष्णं च कदुष्णवत् ॥ ९ ॥  
 शुक्ले शुभ्रशुचिश्वेताः पुष्ट्रको धवलोऽर्जुनः ।  
 अवदातः सितो गौरो विशदश्येतपाण्डराः ॥ १० ॥  
 काले कृष्णासितश्यामनीलश्यामलमेचकाः ।  
 रोहिते लोहितो रक्तो हारिद्रे पीतपीतले ॥ ११ ॥  
 उत्पिशस्तु सितश्यामे हरिणे पाण्डुपाण्डरौ ।  
 कपोतस्तु कपोताभः पद्मः पीतसितासितः ॥ १२ ॥  
 पिङ्गो नीलसितश्यामः सोवालः कृष्णधूमलः ।  
 सितकाचस्तु पिङ्गाणः कण्डारः सितकाचरः ॥ १३ ॥  
 वरालः सितपिङ्गाणः स्तोकपाण्डुस्तु धूसरः ।  
 कोसलः पाण्डुलः श्यामश्चाटः कृष्णहरिः सितः ॥ १४ ॥



बलक्षस्तु सितश्यामः सैराभः श्वेतपीतलः ।  
 सितपीतहरित्रीलस्तरलो वृद्धपत्रवत् ॥ १५ ॥  
 रक्तपीतासितश्येते बोलः कारीषभस्मवत् ।  
 उत्पिशाद्यास्त्वमी मिश्रवर्णाः शुक्लप्रधानकाः ॥ १६ ॥  
 शोणोऽरुणश्च सन्ध्याभः श्वेतरक्तस्तु पाटलः ।  
 मरालोऽल्पः पीतरक्तः पीतरक्तस्तु पिञ्जरः ॥ १७ ॥  
 बभ्रुः कडारः कपिलो विदग्धो दुष्टरक्तवत् ।  
 श्यावे तु कपिशः पिङ्गे पिशङ्गः कटुपिङ्गलौ ॥ १८ ॥  
 नीलपीतारुणः शारो जोणालो नीललोहितः ।  
 इति लोहितवर्गीणा अथ पीतप्रधानकाः ॥ १९ ॥  
 सेरालोऽल्पसितः पीतः पेरालः पीतधूमलः ।  
 पीतश्यामल ओरालो गौरः स्यात् पीतलोहितः ॥ २० ॥  
 कीनाशः पीतहरितो हरितो नीलपीतलः ।  
 कृष्णवर्ग्याः पुनर्धूमधूमलौ कृष्णलोहिते ॥ २१ ॥  
 पीतकृष्णहरिद्राभः काचरः कृष्णधूमलः ।  
 कृष्णपीतस्तु काचोऽथ पालाशो हरितो हरित् ॥ २२ ॥  
 तारावतारकिर्मीरशबलैतास्तु चित्रके ।  
 स चान्योन्यानवष्टम्भान्नावर्णसमुन्नयः ॥ २३ ॥  
 कर्बुरः शुक्लहरित आरुः स्यात् कृष्णपिङ्गलः ।  
 सितकृष्णस्तु कल्माषः पिञ्ज्रूषः सितकाचरः ॥ २४ ॥  
 कृष्णरक्तसितः शारः किमिरः सितलोहितः ।  
 मधुरस्तु रसज्येष्ठो गुली स्वादुर्मधूलकः ॥ २५ ॥  
 अम्लस्तु पाचनः शुक्तो लवणस्तु पटुः सरः ।  
 ऊषणस्तु कटुस्तीक्ष्णस्तित्तस्तु विसरः कटुः ॥ २६ ॥  
 कषायोऽस्त्री स्वप्रतिष्ठस्तुवरो मधुराङ्गकः ।  
 मधुराम्लौ सलवणौ कटुतिक्तकषायकाः ॥ २७ ॥  
 षट् ते मूलरसाः शेषा रसका योगयोनयः ।  
 स्युः शाडवराश्रयूषाः श्रयूष आसोऽपि च क्रमात् ॥ २८ ॥  
 अम्लाद्या मधुरोपेताः साम्लास्तु लवणादयः ।  
 चाटसस्तीक्ष्णचो रूपः शुक्तश्च लवणेन तु ॥ २९ ॥  
 युक्ता वैखारकः क्षारः स्वाद्यश्च कटुकादयः ।  
 तिक्तिकः कटुतिक्ते स्यात् कुल्या कटुकषायके ॥ ३० ॥

तैलित्सस्तित्तकषाय एवं पञ्चदश द्विकाः ।  
 क्रमेण शोणिकः श्यावो रातपं रागशालवः ॥ ३१ ॥  
 सस्वादम्लला लवणाद्याः सस्वादुलवणेषु ते ।  
 कटुकादिषु कट्वारो माधुरो मधुकः क्रमात् ॥ ३२ ॥  
 तिक्तकषायौ सस्वादुकटू मधुमधूलिकौ ।  
 स्वादुतिक्तकषाये तु मधुलोऽमी दश त्रिकाः ॥ ३३ ॥  
 कट्वाद्याः साम्ललवणा बोसरः खलुषः क्रमात् ।  
 कोलश्चाथो साम्लकटू कलुषत्रिखरौ क्रमात् ॥ ३४ ॥  
 कषायतिक्तौ सोलस्तु शुक्ततिक्तकषायके ।  
 अम्लतिक्तकषायेऽस्मिन् बालाम्लो बालचूतकः ॥ ३५ ॥  
 कषायतिक्तौ सपटुकटू वेलानवेलजौ ।  
 कषायतिक्तलवणेऽसोलोऽथैलारसालकः ॥ ३६ ॥  
 कटुतिक्तकषाये स्यात् तदेवं विंशतिस्त्रिकाः ।  
 स्वाद्वम्ललवणोपेता कट्वाद्या मधुमालकः ॥ ३७ ॥  
 मधुबोलः सोरणश्च क्वचिदन्त्यः करोलकः ।  
 सस्वाद्वम्लकटौ तिक्ते लीसुषः परुषः पुनः ॥ ३८ ॥  
 कषायेऽत्रैव कलुषाकषायौ जालनः पुनः ।  
 स्वाद्वम्लतिक्ततुवरे सस्वादुलवणोषणे ॥ ३९ ॥  
 रसकोपशाडविकौ कषाये बलजः पुनः ।  
 तिक्ते तिक्तपटुस्वादुकषाये फलसोऽथुसौ ॥ ४० ॥  
 सस्वादुकटुतिक्ते तु कषाये स्यात् कलापकः ।  
 जलोलकः साम्लपटुकटौ तिक्ते कषायके ॥ ४१ ॥  
 तुवरः स्यात् कुवेलश्च खरस्तु लवणे युते ।  
 अम्लतिक्तकषायैस्तैः संयुते पलुषः कटौ ॥ ४२ ॥  
 कट्वाद्यालोडकास्त्वेवं चतुष्का दश पञ्च च ।  
 स्वादुमेकं विहायान्ये युक्ताः पञ्च स्युरोलकः ॥ ४३ ॥  
 आलुकस्तु विहायाम्लं पटुं हित्वा पराञ्जनः ।  
 ओलकः कटुकं हित्वा विना तिक्तेन चोलकः ॥ ४४ ॥  
 समोलकः कषायेण षडेवं पञ्चका रसाः ।  
 षट्कस्त्वेकः षड्रसः स्यात् त्रिषष्टिः स्युस्ततो रसाः ॥ ४५ ॥  
 मधुराम्लादिसंज्ञाश्च शाडवादौ समुन्नयेत् ।  
 न स्यात् पूर्वसस्याख्या परावररसाह्वयात् ॥ ४६ ॥



सुरभ्यसुरभी गन्धौ विभिन्नौ तौ च योगतः ।  
 बहुधा तत्र सुरभिः कटुस्तिक्तः कषायकः ॥ ४७ ॥  
 समष्टिरप्यतोऽन्यो यो गन्धोऽसुरभिरित्यसौ ।  
 मल्लिकायां स्थितो गन्धो मङ्गल्या मङ्गलश्च सः ॥ ४८ ॥  
 जात्यां सौमनसो नागकेशरे गन्धसारणः ।  
 चम्पके सुरभिः पद्मे वासनः कुटजे घृणः ॥ ४९ ॥  
 कस्तूरिकायामामोदः कुङ्कुमे पलशीनकः ।  
 पारिहाव्यो मरुवके पाटले तृणशोणकः ॥ ५० ॥  
 चन्दने चन्द्रिकः साले शोणो गन्धिक उत्पले ।  
 केतके शोणितं सर्जधूपे सरलशोणिकः ॥ ५१ ॥  
 वकुले स्यात् परिमलो बलनोऽगरुधूपके ।  
 सहकारे सरलिको गुग्गुलौ त्ववलोलुकः ॥ ५२ ॥  
 कुन्दोपरालो मदने दुलो जम्बीर(के स्थितः) ।  
 मल्ल्यां (स्थितस्तु) खवुकः कर्पूरे मुखवासनः ॥ ५३ ॥  
 आड्ये समशनोऽशोके सुरवस्तिलके कुलः ।  
 गात्रे गन्धो गन्धके तु गन्धिकः पित्तले लसः ॥ ५४ ॥  
 गुदवायौ तु दुर्गन्धः किट्टे कोलः कफे घनः ।  
 मस्त्यत्वच्यामिषो निम्बे तिक्तको गोमुखे सणिः ॥ ५५ ॥  
 उद्दंशे देहलिर्गोविण्मूत्रयोर्मुकमुर्मुर् ।  
 शुक्ले मांसिर्मदे रूक्षो मूत्रिते त्वन्धमेहलः ॥ ५६ ॥  
 स्नेहदोषे मेचटिको गूधे स्थालिकवैणिकौ ।  
 चिस्त्रो यकृति पूये तु पूतिर्मूत्रे तु मेहलः ॥ ५७ ॥  
 दुष्टव्रणे तु कथितो रुधिरं त्वाममांसकः ।  
 गन्धशब्दास्त्वमी योज्याः साम्याद् द्रव्यान्तरेष्वपि ॥ ५८ ॥  
 एते सत्यादयः शब्दाः शब्दस्पर्शादिगोचराः ।  
 उक्तलिङ्गा गुणार्थास्ते सर्वेऽपि गुणिनि त्रिषु ॥ ५९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

सामान्यकाण्डे गुणाध्यायः ॥ ३ ॥

### अर्थवह्निङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

गुणयुक्तं क्रियायुक्तं द्रव्ययुक्तं च वक्ति यः ।  
 स शब्दो वाच्यवह्निङ्गो बालो वक्ता धनी यथा ॥ १ ॥  
 बालो हिम्भोऽर्भकः शावः कुमारो दारकः शिशुः ।  
 अप्युत्तानशयो वत्सः स्तनपस्तु स्तनन्धयः ॥ २ ॥  
 वटुर्माणवकोऽथ स्याद् वयस्थस्तरुणो युवा ।  
 जीनो जीर्णो वृद्धवयाः प्रवयाः स्थविरो जरन् ॥ ३ ॥  
 वर्षीयान् दशमी व्यायान् कनिष्ठोऽवरजोऽनुजः ।  
 जघन्यजो बवीयांश्च पूर्वजे त्वग्निजोऽग्रजः ॥ ४ ॥  
 पितुर्विभक्तः संसृष्टी भ्रात्रार्थेनैकतां गतः ।  
 पृथ्निः किरातोऽल्पतनुर्दुर्बलस्तु कृशस्तनुः ॥ ५ ॥  
 पीनस्तु पीवरः पीवा प्रबलो मांसलोऽसलः ।  
 सिंहसंहननः स्वङ्गस्तुण्डिरुन्नतनाभिकः ॥ ६ ॥  
 पिचण्डिलस्तूद्रिलस्तुन्दिलस्तुन्दितुन्दिकौ ।  
 बलिनो बलिभो बिभ्रद्वली राजीस्तु राजिलः ॥ ७ ॥  
 एवं सिरालमणिलौ प्रलम्बाण्डस्तु मुष्करः ।  
 केशवः केशिकः केशी रोमशो लोमशः समौ ॥ ८ ॥  
 श्मश्रुलो जटिलश्चैवं दन्तुरः स्यादुदग्रदन् ।  
 किरिभस्तद्विपर्यासे मिर्मिरः स्तब्धलोचनः ॥ ९ ॥  
 आसीन उपविष्टः स्यादूर्ध्वजुस्त्वूर्ध्वजानुकः ।  
 संजुः संहतजानुः स्यात् प्रजुः प्रगतजानुकः ॥ १० ॥  
 विकलाङ्गस्तु पोगण्डो गडुले न्युब्जकुब्जकौ ।  
 खुरणाः स्यात् खुरणसो नःक्षुद्रः क्षुद्रनासिकः ॥ ११ ॥  
 खरणाः स्यात् खरणसो विग्रो विगतनासिकः ।  
 नतनासेऽवटीटः स्यादवनाटोऽप्यवभटः ॥ १२ ॥  
 केकरो बलिरोऽनेडमूकोऽन्धः काण एकदृक् ।  
 एडस्तु वधिरः कण्व एडमूकस्त्ववाक्छुतिः ॥ १३ ॥  
 अनेडमूकस्तु जडो जलो मूकः कलोऽप्यवाक् ।  
 पङ्गुः श्रोणे खञ्जकोलौ खोडेऽथ कुकरे कुणिः ॥ १४ ॥



शिपिविष्टस्तु दुश्चर्मा दुर्बालश्च द्विनम्रकः ।  
 क्षपणश्रमणो नम्रो नम्राटश्च दिगम्बरः ॥ १५ ॥  
 आजीवो जीवको जैनो निर्ग्रन्थो मलवार्यपि ।  
 हृदयालुः सुहृदयो महेच्छस्तु महाशयः ॥ १६ ॥  
 प्रौढः प्रगल्भः प्रतिभायुक्तोऽन्यस्त्वपगल्भकः ।  
 धृष्टो धृष्णुर्विजातश्च शालीनस्तु विपर्यये ॥ १७ ॥  
 अधीरे कातरत्रस्तुभीरुभीरुकभीलुकाः ।  
 दरिते भीतचकितत्रस्ताः स्निग्धस्तु वत्सलः ॥ १८ ॥  
 प्रवीणोऽभिजनोऽभिज्ञो विज्ञो वैज्ञानिकः कृती ।  
 कृतकृत्यः कृतमुखो निष्णातो दक्षशिक्षितौ ॥ १९ ॥  
 अग्राम्ये सरलोदारविदग्धच्छेकदक्षिणाः ।  
 गविते स्तब्ध उद्वीवो बाहो धीरः स इत्यपि ॥ २० ॥  
 मूर्खे त्वनेडो देवानांप्रियो यो नामवर्जितः ।  
 अपि वैधेयमूढाज्ञा मातृशिष्टयथोद्भूतौ ॥ २१ ॥  
 नीचे तु हीनापशदपामरेतरबबेराः ।  
 नैकृतः स्यान्नैकृतिकः शठः कौनृतिकोऽनृजुः ॥ २२ ॥  
 कुहकः स्यात् कापटिको दाण्डाजिनिकजालिकौ ।  
 दौण्डुको दण्डुकश्चाथ कोलाकोऽर्यरतः सदा ॥ २३ ॥  
 क्रूरो नृशंसोऽप्यदये धूर्ते व्यसकवञ्चकौ ।  
 कौकृतो मायिको मायी मायावी प्रातिहारिकः ॥ २४ ॥  
 ना दुर्जनः खले कर्णेजपः पिशुनसूचकौ ।  
 कद्वदः कुत्सितोऽत्यर्थं परिभोक्ता गुरुस्वभृत् ॥ २५ ॥  
 नीलीरागः स्थिरप्रेमा हरिद्वारागकः पुनः ।  
 अस्थिरप्रेमिण गोष्ठश्वः पुनः स्थाने स्थितो द्विषन् ॥ २६ ॥  
 अन्वेष्टा स्यादनुपदी चिद्रूपस्तु सुमानसः ।  
 स्वच्छन्दोऽपावृतः स्वैरी स्वतन्त्रो निरवग्रहः ॥ २७ ॥  
 परच्छन्दः पराधीनः परवान् परतन्त्रकः ।  
 निम्नः प्रसव्य आयत्तो विधेयो गृह्यको वशः ॥ २८ ॥  
 अहंयुः स्यादहङ्कारी शुभंयुस्तु शुभान्वितः ।  
 सूक्ष्मदर्शी कुशाग्रीयधीर्विलक्षः सविस्मयः ॥ २९ ॥  
 यद्भविष्यो दैवपरो यद्वदः स्यादनुत्तरः ।  
 परीक्षकः कारणिक उद्युक्ते प्रसितोऽसुकौ ॥ ३० ॥

अन्तर्वाणिः शास्त्रवित् स्यादविनीतः समुद्धतः ।  
 प्रत्युत्पन्नमतिस्तु स्यात् तत्कालोत्पन्नधीर्नरः ॥ ३१ ॥  
 ग्रणेयः प्रश्रितो वश्यो विधेयो निभृतो यतः ।  
 क्रोधनः कोपनोऽमर्षी चण्डस्तु भृशकोपनः ॥ ३२ ॥  
 सहिष्णुः सहनः सोढा तितिक्षुः क्षमिता क्षमी ।  
 हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना मुदितः समुत् ॥ ३३ ॥  
 दुर्मना विमना अन्तर्मनाः स्यादुत्क उन्मनाः ।  
 दोषदर्शी पुरोभागी कमनः कामनोऽनुकः ॥ ३४ ॥  
 कामुकः कमिताऽभीकः कम्पः कमयिताऽभिकः ।  
 वृष्णक् तु गर्धनो गृध्नुर्लिप्सुर्लुब्धोऽभिलाषुकः ॥ ३५ ॥  
 लोलुपे लोलुभो लोलो लम्पटो लालसोऽपि च ।  
 लुसुङ्गुः क्षुधितः श्रान्तो जिघत्सुरशनायितः ॥ ३६ ॥  
 पिपासितस्तु वृषितः पिपासुस्तपितः सवृट् ।  
 मत्ते शौण्डोत्कटक्षीबा श्राद्धः श्रद्धालुरास्तिकः ॥ ३७ ॥  
 नास्तिकस्तद्विपर्यासे गृह्यालुर्ग्रहीतरि ।  
 संशयालुस्तु सन्देग्धा पतयालुस्तु पातुकः ॥ ३८ ॥  
 दयालुः स्यात् कारुणिकोऽनुकम्प्यः कारुणः समौ ।  
 स्वप्नक् शयालुर्निद्रालुर्निद्राणः शयितः समाः ॥ ३९ ॥  
 लज्जाशीलोऽपत्रपिष्णुर्वतिष्णुर्वर्तनः समौ ।  
 निराकरिष्णुः क्षिप्नुः स्याद् वर्धिष्णुर्वर्धनः समौ ॥ ४० ॥  
 उन्मदिष्णुस्तु सोन्मादोऽलङ्कारिष्णुस्तु मण्डनः ।  
 भूष्णुर्भविष्णुर्भविता प्रजनिष्णुस्तु भावुकः ॥ ४१ ॥  
 उत्पतिष्णुस्तुत्पतिता रोचिष्णू रोचनः समौ ।  
 स्थास्नुस्तु स्थायुकः स्थायी शरारुर्हिंस्रघातुकौ ॥ ४२ ॥  
 वेदिता विदुरो विन्दुः सान्द्रः स्निग्धस्तु मेदुरः ।  
 आशंसुराशंसितरि वन्दारुर्भवादकः ॥ ४३ ॥  
 जागरूको जागरिता ऋक्षवाक् तु प्रियंवदः ।  
 शङ्को मधुरवाक् चाथ रूक्षो लूक्षो विपर्यये ॥ ४४ ॥  
 वदो वदावदो वक्ता वागीशो वक्त्रपतिः समौ ।  
 वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी वावदूकश्च दक्षवाक् ॥ ४५ ॥  
 जल्पपाकस्त्वपि वाचालो वाचाटो बहुगर्ह्यवाक् ।  
 मुखरो दुर्मुखोऽबद्धमुखो मातृमुखोऽपि च ॥ ४६ ॥



कद्वदो गह्वर्वादी स्याल्लोहलोऽस्फुटभाषणः ।  
 अधरो दीनवादी स्यात् सम्मुखः प्रतिभातवाक् ॥ ४७ ॥  
 नालीकरस्तु नालीकवाक् स्वनोऽशोभनस्वरः ।  
 कुवदे कुचरः शब्दकारे रवणशब्दनौ ॥ ४८ ॥  
 व्युत्पन्नः प्रहतः क्षुण्णो वचनेस्थित आश्रवः ।  
 परान्नः परपिण्डादः परजातपरैधितौ ॥ ४९ ॥  
 सर्वात्रीनः सर्वभक्ष आमिषादी तु शौलिकः ।  
 आत्मम्भरिः कुक्षिम्भरिर्भक्षको घस्मरोऽङ्गरः ॥ ५० ॥  
 आद्यूनः स्यादौदरिको विमुक्तो विजिगीषया ।  
 ह्रीणो ह्रीतो लज्जितः स्यादन्वेष्टा तीक्ष्णसाधनैः ॥ ५१ ॥  
 अदुते धीरविस्त्रब्धावुत्तालः कर्मणि द्रुतः ।  
 कुटुम्बव्यापृते तु द्वावभ्यागारिक उत्थितः ॥ ५२ ॥  
 दीर्घदृष्टिस्तु यो दूरादर्थानर्थौ निरीक्षते ।  
 आमुष्यायण उत्पन्नः प्रख्यातकुलतः पितुः ॥ ५३ ॥  
 वैरङ्गिको विरागार्ह उत्पश्यः पुनरुन्मुखः ।  
 चतुरः पेशलो दक्षः सूत्थानः पटुरुष्णकः ॥ ५४ ॥  
 मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसः ।  
 चेमङ्करोऽरिष्टतातिः शिवतातिः शिवङ्करः ॥ ५५ ॥  
 लक्ष्मीवान् लक्ष्मणः श्रीलो महामात्रोऽधिकर्षिकः ।  
 उदारोदीर्घधन्यास्तु महात्मा सुकृतीति च ॥ ५६ ॥  
 समृद्धः स्यादुपचितो धनवानस्तिमान् समौ ।  
 आढ्यस्त्विम्यो धनी नेता त्वीश्वरो नायकः प्रभुः ॥ ५७ ॥  
 अधिभूरधिपोऽधीश ईशिताऽधिपतिः पतिः ।  
 ईशः परिवृढः स्वामी स्थूललक्षो बहुव्यये ॥ ५८ ॥  
 कदर्ये कृपणक्षुद्रकिम्पचानमितम्पचाः ।  
 आशयश्चाप्यदाता च दरिद्रे स्यादकिञ्चनः ॥ ५९ ॥  
 अपि दुस्स्थकूरदीननीचदुर्गतदुर्विधाः ।  
 मार्गणः स्याद् याचनको याचकोऽर्थी वनीपकः ॥ ६० ॥  
 आर्यः कौलेयको जात्यः कुलीनः कुलजोऽभिजः ।  
 जगत्प्रसन्नचरणमिषदिङ्गञ्च जङ्गमम् ॥ ६१ ॥  
 स्थावरं तस्थिवच्चान्यदुभयं तु चराचरम् ।  
 वा ह्री प्रधानं प्रमुखप्रबर्हप्रवरोत्तमाः ॥ ६२ ॥

मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवेकोऽनपराध्यवत् ।  
 श्रेष्ठः प्राग्रहरं प्राग्रमग्रमग्रीयमग्रियम् ॥ ६३ ॥  
 परार्थ्य ग्रामणीः स्पर्ध्य जात्यं च वरमग्रणीः ।  
 उपाग्रस्तु गुणः पुंसि ह्रीवे स्यादुपसर्जनम् ॥ ६४ ॥  
 तत्तु स्यादासेचनकं न तृप्तिर्यस्य दर्शनात् ।  
 पवित्रं प्रयतं पूतं मेध्यं शुद्धं शुचीति च ॥ ६५ ॥  
 निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निश्शोध्यमनवस्करम् ।  
 विमले वीदुधं मलिने द्वौ कश्चरमलीमसौ ॥ ६६ ॥  
 आत्तगन्धोऽभिभूतः स्याद् बद्धे कीलितसंयतौ ।  
 आक्षिप्तो हतकः क्षिप्तो विकृवो विह्वलः समौ ॥ ६७ ॥  
 विहस्तो व्याकुलो व्यग्रश्चले सङ्कुसुकोऽस्थिरः ।  
 व्यसनार्तस्तूपरक्त आततायी बधोद्यतः ॥ ६८ ॥  
 शत्रूणां तापग्निरि द्विषन्तपपरन्तपौ ।  
 द्वेष्यस्त्वक्षिगतोऽनिष्टो दुर्भगोऽपि च विप्रिये ॥ ६९ ॥  
 चक्षुष्यः सुभगः कान्तो दयितो वल्लभः प्रियः ।  
 गेहेनर्दी गृहेशूरः पिण्डीशूरो गृहे प्रभुः ॥ ७० ॥  
 बध्यो विष्यो विषेण स्यान्मुसल्यो मुसलेन च ।  
 निष्कासितोऽपकृष्टः स्यादपध्वस्तस्तु धिक्कृतः ॥ ७१ ॥  
 कर्मक्षमोऽलङ्कर्मिणः कर्मशूरस्तु कर्मठः ।  
 कर्मस्तु कर्मशीलः स्यादीर्घसूत्रश्चिरक्रियः ॥ ७२ ॥  
 कर्मण्यकृत् कर्मकरः कर्मकारस्तु तत्क्रियः ।  
 निर्वार्यः कार्यकृद्यः स्याद्युक्तः सन् सत्त्वसम्पदा ॥ ७३ ॥  
 क्रियावान् कर्मवान् कर्मी कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ।  
 स आयश्शूलिको यः स्यादन्वेष्टा तीक्ष्णसाधनैः ॥ ७४ ॥  
 गह्वोऽपकृष्टचेलावरेफयाप्याधमावमाः ।  
 प्रतिकृष्टावद्यखेटनिकृष्टाणककुत्सिताः ॥ ७५ ॥  
 जघन्यं तु कुपूयं स्यादसारं लघु फल्गु च ।  
 पुंस्यादिराद्यपौरस्त्यप्रथमप्रमुखादिमाः ॥ ७६ ॥  
 अग्र्यं त्वग्रिममग्रस्थं मध्यमीयं तु मध्यमम् ।  
 अन्त्ये जघन्यपाश्चात्यचरमान्तिमपश्चिमाः ॥ ७७ ॥  
 करम्बः कम्बरो मिश्रः सम्पृक्तः खचितः समाः ।  
 चलाचलं तु प्रचलं चपलं चञ्चलं चलम् ॥ ७८ ॥



चिकुरं चटुलं कम्प्रं पारिप्लवपरिप्लवौ ।  
 स्थास्नैकरूपं कूटस्थं स्थेयान् स्थेष्टोऽप्यतिस्थिरे ॥ ७६ ॥  
 विशालमुरु विस्तीर्णं विपुलं पृथुलं पृथु ।  
 स्फारं भद्रं बृहद् व्यूढमुदूढं बहुलं बहु ॥ ८० ॥  
 प्रांशुचमुन्नतं तुङ्गमुदग्रं तूच्छिताग्रकम् ।  
 न्यङ्नीचह्रस्वखर्वास्तु वामने दीर्घमायते ॥ ८१ ॥  
 विशालं विकरालं स्याद् विकटं च विशङ्कटम् ।  
 वर्तुलं निस्तलं वृत्तं सुवृत्तं परिमण्डलम् ॥ ८२ ॥  
 चिपिटः पिच्छितो व्यूढे स्थपुटं विषमोन्नतम् ।  
 आनतं तु नतं नम्रं बन्धुरं तून्नतानतम् ॥ ८३ ॥  
 क्षीणं क्षामं विलिष्टं स्यात् स्थूलं तु बहलं दृढम् ।  
 प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यं बहलं बहुलं बहु ॥ ८४ ॥  
 अदभ्रमधिकं भूरि भूयिष्ठं पुरुहं पुरु ।  
 समग्रं सकलं सर्वं समस्तं निखिलाखिले ॥ ८५ ॥  
 अखण्डकृत्स्ननिशेषपूर्णविश्वसमानि च ।  
 खण्डनेमोनविकलाः पूर्णे भरितपूरितौ ॥ ८६ ॥  
 सम्पूर्णश्चाथ वशिकं शून्यं तुच्छं च रिक्तकम् ।  
 पुराणे प्राक्तनप्रत्नपुरातनचिरन्तनाः ॥ ८७ ॥  
 नूतने त्वभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ।  
 शाश्वते त्वमृतो नित्यः सनातनसदातनौ ॥ ८८ ॥  
 सद्यस्तने तु साद्यस्कप्रत्यग्राभ्यग्रशारदाः ।  
 ह्यस्तनश्चस्तनाद्याः स्युर्ह्यआदिस्थेषु वस्तुषु ॥ ८९ ॥  
 कालवाच्यव्ययेभ्यः स्यादन्येभ्योऽपि तथा तनः ।  
 न्यक् स्यादधोमुखं न्युवजमुदुब्जोत्तानमुन्मुखे ॥ ९० ॥  
 उदक् प्रत्यक् परागर्वाक् प्राक् च तिर्यग्वागपाक् ।  
 विष्वक् चैवमुदीचीनप्रमुखाः स्युर्यथाक्रमम् ॥ ९१ ॥  
 दिग्देशकालवचनमुदगादिकमव्ययम् ।  
 दिग्देशकालसम्बन्धिपदार्थेष्वभिधेयवत् ॥ ९२ ॥  
 यः सहाञ्चति सप्रयङ् स विष्वद्यङ् विष्वगञ्चति ।  
 देवानञ्चति देवद्यङ् सधीचीनादि चोन्नयेत् ॥ ९३ ॥  
 अविलम्बितमुच्चण्डं संशितं तु सुतेजितम् ।  
 उत्पिञ्जलं समुत्पिञ्जमिति द्वे भृशमाकुले ॥ ९४ ॥

अनादृते त्ववज्ञातमवतीर्णापहस्तितम् ।  
 चलितप्रेङ्खिताधूतवेङ्खिताकम्पिता धुते ॥ ९५ ॥  
 रुचिते हृद्यलषितवाङ्मिष्टेष्टेडितेहिताः ।  
 संवीतं स्याद् बलयितं वेष्टितं रुढमावृतम् ॥ ९६ ॥  
 नुन्नास्तनुत्तप्रहितक्षिप्तविद्धाः स्युरीरिते ।  
 बद्धे सन्नाहितं नद्धं मुद्रितं सन्दिगतं सितम् ॥ ९७ ॥  
 सन्तापितं धूपायितं दूनं तप्तञ्च धूपिते ।  
 मार्गिते मृगितान्विष्टावन्वेषितगवेषितौ ॥ ९८ ॥  
 लब्धात्तासादितप्राप्तभूतविन्नास्तु भाविते ।  
 प्रयत्ने मुदितप्रीतदृष्टाः सुहितवृषवत् ॥ ९९ ॥  
 आबर्हिते तूद्वृहितोन्मूलितोत्पाटितोदधृताः ।  
 ऊतगोपायितत्रातत्राणगुप्तास्तु रक्षिते ॥ १०० ॥  
 मनिते विदितज्ञातौ बुधिते बोधबुद्धवत् ।  
 त्यक्ते तु विधुतोऽस्मृहीनधूतसमुष्मिताः ॥ १०१ ॥  
 कृत्ते लूनच्छिन्नदातवृक्कणच्छातच्छित्तार्दिताः ।  
 स्वस्ते भ्रष्टध्वस्तपन्नगलितस्कन्नविच्युताः ॥ १०२ ॥  
 प्रेङ्खोलितं तरलितं लुलितं प्रेङ्खितं च तत् ।  
 भजमाने प्राप्तयुक्तन्यायान्यौपयिकोचिते ॥ १०३ ॥  
 न्यस्ते त्वारोपितोऽध्यस्तो निहितोऽपहितो हितः ।  
 उपसन्नं तूपनतमुपप्राप्तमुपस्थितम् ॥ १०४ ॥  
 शुश्रूषितं परिवसितमुपासितञ्च वरिवसितञ्च समम् ।  
 अपचायितं नमसितं नमस्यितं सममपचितञ्च ॥ १०५ ॥  
 पणितपणायितपनिताः पनायितस्तुतनुतेडिताः शस्ते ।  
 वर्णितगीणौ च तथा सङ्गीणौपश्रुतौ प्रतिज्ञाते ॥ १०६ ॥  
 उन्नोत्ततिमितक्लिन्नस्नपिताद्ग्राणि सार्द्रवत् ।  
 स्युः प्रत्यवसिते प्सातजग्धान्नाशितखादिताः ॥ १०७ ॥  
 प्रस्तग्लस्ताभ्यवहृतभुक्तभक्षितजक्षिताः ।  
 परिक्षिप्तं तु निवृतं निदिग्धोपचितौ समौ ॥ १०८ ॥  
 प्राप्ते प्रणिहितापन्नौ विस्मृतोऽन्तर्गतेऽस्मृते ।  
 सङ्गूढं स्यात् सङ्कलितं स्यन्नं रीणं स्तुतं स्तुतम् ॥ १०९ ॥  
 अवरीणो धिक्कृतः स्याद् दृढे प्रथितमुद्रितौ ।  
 सङ्कीर्णे सङ्कुलाकीर्णौ विस्मृते विस्मृतं ततम् ॥ ११० ॥



सिद्धे निर्वृत्तनिष्पन्नौ भिन्ने भेदितदारितौ ।  
 वेधितच्छिद्रतौ विद्धे तष्टत्वष्टौ तनूकृते ॥ १११ ॥  
 उतं स्यूतमुतं तन्तुसन्तते प्रार्थितेऽर्दितम् ।  
 उद्धृतं समुदस्तं स्यान्मर्मस्पृक् स्यादरुन्तुदम् ॥ ११२ ॥  
 गुण्डितं रुषिते क्लिष्टे क्लेशितं पूजितेऽञ्चितम् ।  
 ज्ञप्तं तु ज्ञपिते हन्नं गूने मीढं तु मूत्रिते ॥ ११३ ॥  
 पुषिते पुष्टमुद्गूर्णोद्यत(यत्ताः प्रयत्नवान्) ।  
 दमिते दान्तं शमिते शान्तमुद्धान्तमुद्गते ॥ ११४ ॥  
 पन्नं प्रपतिते सन्नं लिष्टे तुन्नं तु पीडिते ।  
 निष्पके कथितं सोढे क्षान्तं निचितमाचिते ॥ ११५ ॥  
 मुषिते लुण्ठितं यस्ते निस्तृष्टं वृद्धमेधिते ।  
 काचितं शिक्वियते दिश्यं दिग्भवेऽध्रभवेऽध्रिथम् ॥ ११६ ॥  
 यज्ञियं यज्ञकर्माहं चक्षुष्यं चक्षुषे हितम् ।  
 तत्तद्वात्रभवे दन्तं हस्त्यमोष्ठ्यमितीदृशाः ॥ ११७ ॥  
 पुंसः पौंसं स्त्रियाः स्त्रौणमग्नेराग्नेयमित्यपि ।  
 दण्डवान् दण्डिको दण्डीत्येवं नेयमदन्ततः ॥ ११८ ॥  
 ब्रीहिणो ब्रीहिमन्तः स्युर्यवमन्तो यवान्विताः ।  
 निर्जने स्थान एकान्तं विविक्तं विजनं तथा ॥ ११९ ॥  
 छन्नं गुह्यं निश्शलाकं रहः क्लीबोऽथवाऽव्ययम् ।  
 गुह्यं रहस्यमित्येतावप्रकाशयेऽपि वस्तुनि ॥ १२० ॥  
 समं समानं सविधं सदृक्षं सदृशं सदृक् ।  
 तुल्यं सवर्णं शब्देभ्यः परे स्युः प्रतिमा प्रभा ॥ १२१ ॥  
 आभा प्रख्योपमाभिरूपा प्रकारः सन्निभं निभम् ।  
 निकाशाद्याश्च साम्यार्थाः समे स्युः शब्दतः पराः ॥ १२२ ॥  
 परस्परं स्यादन्योन्यमितरेतरमित्यपि ।  
 वक्रं वृजिनमाविद्धमूर्मिमत् कुञ्चितं नतम् ॥ १२३ ॥  
 अरालं कुटिलं भुग्नमवक्रे प्रगुणोऽप्यजुः ।  
 सत्वरं त्वरितं तूर्णमरं क्षिप्रं लघु द्रुतम् ॥ १२४ ॥  
 अजिरं चपलं शीघ्रमविलम्बितमाशु च ।  
 विरलं तनु विश्लिष्टमघनं तलिनं तथा ॥ १२५ ॥

निबिडं निबिरीसं स्याद् घनं सान्द्रं निरन्तरम् ।  
 विकटं तु विरूपं स्यात् सम्बाधः सङ्कटः समौ ॥ १२६ ॥  
 प्रतीपं प्रतिकूलं स्यादनुकूलं विपर्यये ।  
 अनुलोममनूचीनं प्रतिलोमं विपर्यये ॥ १२७ ॥  
 अव्ययीभावोऽनुपदमन्वगन्वक्षमित्यपि ।  
 एकसर्गोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनैकगम् ॥ १२८ ॥  
 अप्येकतान एकान्तोऽप्येकायनगतोऽपि च ।  
 साधारणं तु सामान्यं मोघं व्यर्थमपार्थकम् ॥ १२९ ॥  
 नित्यानवरताजस्रसतताश्रान्तसन्तताः ।  
 अनारतं चाविरतमसक्तं चानिशं नपुम् ॥ १३० ॥  
 अतिमात्रेऽतिमर्याद मतिवेलातिमानकम् ।  
 भृशमत्यन्तमत्यर्थमधिकोद्गाढनिर्भरम् ॥ १३१ ॥  
 तीव्रं तु गाढमेकान्तं नितान्तं दृढबाढवत् ।  
 वशेऽनर्गलमुद्दाममुच्छृङ्खलमयन्त्रितम् ॥ १३२ ॥  
 परोक्षेऽतीन्द्रियोऽध्यक्षप्रत्यक्षौ तु समक्षवत् ।  
 सकाशं स्यात् सन्निहिते समन्तं तु समन्तिकम् ॥ १३३ ॥  
 प्रकाशं प्रकटं स्पष्टमुल्बणं विशदं स्फुटम् ।  
 सुन्दरं रुचिरं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ॥ १३४ ॥  
 शोभनं सुषमं चारु हृद्यं चौक्षं मनोहरम् ।  
 न्युङ्गं हारि प्रियं साधु लडहं च मनोरमम् ॥ १३५ ॥  
 अल्पं सूक्ष्ममणु स्तोकं दहं दहरमर्हकम् ।  
 किञ्चिन्मात्रं मितं दध्रं श्लक्ष्णं तनु च पेलवम् ॥ १३६ ॥  
 अतिरिक्तोऽतिशयितो दृढः समधिकोऽधिकम् ।  
 चतुरं पेशलं दक्षं कटु तूल्बणमुत्कटम् ॥ १३७ ॥  
 विशेषणं क्रियाया स्युः समाद्याः क्ली च तद्यथा ।  
 पुत्रं धत्ते सममिति नित्याद्यास्तु गुणस्य च ॥ १३८ ॥  
 नित्यं धत्ते सितो नित्यमिति द्रव्ये पुनस्त्रिषु ।  
 उभयेऽपि यथा धत्ते समो नित्योऽर्थवानिति ॥ १३९ ॥



प्रथमं चरमं पूर्वमित्याद्यप्येवमुन्नयेत् ।  
समीपनिकटाभ्यग्राभ्यर्णाभ्याशान्तिमा इव ॥ १४० ॥

सदेशसविधासन्नसन्निकृष्टसवेशवत् ।  
उपकण्ठसमर्यादसवेधानि सनीडकम् ॥ १४१ ॥

उपान्ते विप्रकृष्टे तु दूरं व्यवहितं परम् ।  
भासुरं भविकं भव्यं कल्याणं श्रवसीयसम् ॥ १४२ ॥

श्वश्रेयसं शिवं भद्रं कुशलं सूनृतं शुभम् ।  
श्रेयश्चैते समीपाद्या धर्मे क्ली तद्वति त्रिषु ॥ १४३ ॥

सुखं दुःखं मलं छिद्रं किलासं सिद्धमर्मरौ ।  
रभसः पलितं श्वित्रमेतेऽपि त्रिषु धर्मिणि ॥ १४४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां सामान्यकाण्डे

अर्थवर्लिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

पञ्चमः सामान्यकाण्डः समाप्तः ॥ ५ ॥

## ६. अथ व्यत्तरकाण्डः

पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अथ काण्डैरनेकार्थाः प्रोच्यन्तेऽत्र परैस्त्रिभिः ।  
द्व्यक्षरास्त्र्यक्षराः शेषा इति काण्डेषु ते क्रमात् ॥ १ ॥  
अकारादिहकारान्तं नाम्नामाद्यक्षरक्रमात् ।  
संग्रहो द्व्यक्षरादीनां प्रोक्तान् प्रायो विना पुरा ॥ २ ॥  
अर्थः स्याद्विषये मोक्षे शब्दवाच्ये प्रयोजने ।  
व्यवहारे धने शास्त्रे वस्तुहेतुनिवृत्तिषु ॥ ३ ॥  
अर्कोऽर्कपर्णे स्फटिके ज्येष्ठभ्रातरि भास्वति ।  
अवयः शैलमेषार्का अद्रयोऽर्कगिरिद्रुमाः ॥ ४ ॥  
अट्टावतिशयक्षौमावधौ पूजाप्रतिक्रयौ ।  
अर्योः शास्तृस्वामिवैश्याः सर्पे वृत्रासुरेऽप्यहिः ॥ ५ ॥  
अंशुः सूत्रादिसूक्ष्मांशेऽप्यङ्कुश्रिहेऽन्तिकोरसोः ।  
आत्मा जीवे धृतौ देहे स्वभावे परमात्मनि ॥ ६ ॥  
यत्नेऽर्केऽग्नौ मतौ वातेऽप्याखू सूकरमूषिकौ ।  
आधिस्तु व्यसने चित्तदुःखेऽधिष्ठानबन्धयोः ॥ ७ ॥  
इन्द्रो विषात्मशक्रार्केष्वीश्वरे नामतः परः ।  
इष्वाऽभिलाष आचार्य ऊमो व्योम्नि पुरेऽपि च ॥ ८ ॥  
ग्रीष्मोष्णबाष्पा ऊष्माण ऊर्जावुत्साहकार्तिकौ ।  
ऋषिस्तु वेदे भृगवादौ ज्ञानवृद्धे दिगम्बरे ॥ ९ ॥  
ओषः परम्परायां स्याज्जलस्रोतसि सञ्चये ।  
करो घनोपले हस्ते प्रत्याये रश्मिशुण्डयोः ॥ १० ॥  
दातुं भूषितकन्यायां कूपो गर्ते प्रहावपि ।  
क्षणो व्यापारवैकल्ये कालभेदाल्पकालयोः ॥ ११ ॥  
उत्सवे परतन्त्रत्वे मध्यावसरपर्वसु ।  
कन्तू कुसूलकन्दपौ प्राज्ञकाव्यकृतौ कवी ॥ १२ ॥



कण्ठो गलेऽन्तिके शब्दे कपयोऽर्कभवानराः ।  
 गुडभस्मरसाः क्षाराः क्षोदो रजसि पेषणे ॥ ११ ॥  
 क्रतू अध्वरसङ्कल्पौ कल्पान्तेऽपचये क्षयः ।  
 कुक्षौ वासे च कच्छस्तु पार्श्वे गुह्याम्बरे तटे ॥ १४ ॥  
 कारुस्तु विश्वकर्मापि धान्यांशे शीकरे कणः ।  
 कालो दिष्टे यमे काचो मृद्भेदे शिख्यदृग्जोः ॥ १५ ॥  
 उत्पातेऽङ्के ध्वजे केतुः कुक्षौषधिशशाङ्कयोः ।  
 कोणाः शब्दाश्रितगुडा कल्पो न्याये सुरद्रुमे ॥ १६ ॥  
 विकल्पेऽपि च कश्चस्तु गुल्मे स्पर्धापदे तृणे ।  
 काम्यस्पृहास्मराः कामाः कलहेऽन्ययुगे कलिः ॥ १७ ॥  
 कुम्भो गजशिरोऽन्तेऽपि पद्मकेऽवनिताः खगाः ।  
 खरुः पुंस्मररुद्रेषु गर्मुद्रुक्मे खगे रवौ ॥ १८ ॥  
 गणाः प्रमथसङ्ख्यौघाः प्रावाणौ पर्वतोपलौ ।  
 तन्तुनागाग्रहौ ग्राहौ गुल्मो व्यूढा च वाहिनी ॥ १९ ॥  
 गण्डो गर्वेऽप्यथार्कादिसत्त्वादानाग्रहा ग्रहाः ।  
 गुणस्त्वावृत्तिशब्दादिज्येन्द्रियामुख्यतन्तुषु ॥ २० ॥  
 ग्रन्थो द्रव्यं वचश्शास्त्रं द्वात्रिंशद्वर्णसञ्चयः ।  
 गर्भोऽपवरकेऽन्नेऽग्नौ सुते पनसकण्टके ॥ २१ ॥  
 कुक्षौ कुक्षिस्थजन्तौ च गन्धो लेशो महीगुणे ।  
 घृणिर्ज्वालांशुवीचीषु चरुः स्थाल्यां हविष्यपि ॥ २२ ॥  
 चटुश्चाटुश्च राजादिस्तुतौ पशुपिचिण्डके ।  
 चक्री विष्णौ कुलालेऽहौ च्युपौ पवनसङ्क्रमौ ॥ २३ ॥  
 वशाभिप्राययोश्छन्दो जूर्णी रविहविर्भुजौ ।  
 टङ्कौ प्रमाणगवौ च डिम्बः ग्रीहखगाण्डयोः ॥ २४ ॥  
 तर्काः काङ्क्षावितर्कोहास्त्वष्टा तदिण युशिल्पिनि ।  
 मणिदोषे भये त्रासस्तिष्यः पुष्ये कलौ युगे ॥ २५ ॥  
 द्वारपाले यमे दण्डी दन्तोऽद्रिकटके रदे ।  
 दायो दाने यौतकादिधने वित्ते च पैतृके ॥ २६ ॥  
 दवदावौ वनारण्यवह्नयोः खगार्कयोद्युवा ।  
 धवो वृत्ते नरे पत्यौ ध्वाङ्कः स्याद् वायसे बके ॥ २७ ॥  
 धातुर्वातादिशब्दादिगैरिकादित्वगादिषु ।  
 महाभूतेष्विन्द्रियेषु शब्दयोनिस्वभावयोः ॥ २८ ॥

लोहेऽर्थे गैरिकस्वर्णरेतोऽस्थिषु विशेषतः ।  
 नरोऽर्जुने मनुष्ये च नाकः स्वर्गान्तरिक्षयोः ॥ २९ ॥  
 ग्राहाभ्राहिगजा नागा नाभिः क्षत्रे महानृपे ।  
 न्यङ्कुर्गुरुकुलेवासी शिष्यो मुनिमृगावपि ॥ ३० ॥  
 नाशः पलायने मृत्यौ परिवर्त्तसेऽप्यदर्शने ।  
 नम्रा वैतालिकाद्याश्च पिण्डो वृत्ते तनौ गुडे ॥ ३१ ॥  
 पीयुः काल उत्लूके च पीलुः काण्डे गजे हुमे ।  
 पुष्टाः कृमीक्षुतिलकाः पत्री श्येने शरे खगे ॥ ३२ ॥  
 प्रेषणे मर्दने प्रैषः पुङ्खः श्वेतशराङ्गयोः ।  
 पवी वातास्त्रधारे च पाकपोतौ शिशावपि ॥ ३३ ॥  
 पट्टो नेत्रेऽपि शाणे स्यात् पिण्डः कल्केऽपि तैलजे ।  
 पणो मूल्ये ग्लहे माने कार्पिकव्यवहारयोः ॥ ३४ ॥  
 घृते विक्रय्यशाकादिबद्धमुष्टौ भृतौ धने ।  
 पक्षः पार्श्वगरुत्साध्यसहायबलभित्तिषु ॥ ३५ ॥  
 पार्श्वद्वारे विरोधेऽर्धमासे चुल्लिबिलेऽन्तिके ।  
 प्रायो वयसि बाहुल्ये तुङ्गानशनमृत्युषु ॥ ३६ ॥  
 पाशो रज्जौ कर्णशब्दात् परः कर्णेऽतिशोभने ।  
 क्रमनिम्नमहीभागकपिप्लुतिखगाः प्लवाः ॥ ३७ ॥  
 प्राणस्तु प्रणवे जीवे जीविते परमात्मनि ।  
 इन्द्रिये वायुभेदे च बलान्तर्यामिणोरपि ॥ ३८ ॥  
 श्वेतार्के ङाडिमे फालो बन्धाः सीसाध्ययन्त्रणाः ।  
 बलिः पूजोपहारे च दैत्यभेदे करेऽपि च ॥ ३९ ॥  
 बाष्पोऽश्रण्यम्बुधूमे च भानवोऽर्कहरांशवः ।  
 भ्रूणोऽर्भके स्त्रैणगर्भे गर्भिण्यां श्रोत्रियद्विजे ॥ ४० ॥  
 भवो भद्रे हरे प्राप्नौ सत्तासंसारजन्मसु ।  
 भागा भाग्यांशतुर्यांशा भरभारौ गरिष्यपि ॥ ४१ ॥  
 भरवीवधयोश्चान्त्यौ भूस्पृशौ वैश्यमानवौ ।  
 विश्लेषे दारणे भेदो भेनः सूर्ये निशाकरे ॥ ४२ ॥  
 भावो लीलाक्रियाचेष्टाभूत्यभिप्रायजन्तुषु ।  
 पदार्थमात्रे सत्तायामात्मयोनिस्वभावयोः ॥ ४३ ॥  
 भोगो राज्ये धने सौख्ये पालनाभ्यवहारयोः ।  
 फणे देहे च सर्पस्य वेश्यादीनां भृतावपि ॥ ४४ ॥



मन्त्रावृणादिगुह्योक्ती मन्युर्दैन्येऽध्वरे क्रुधि ।  
 मर्को मनसि वायौ च मोहाः क्रुन्मौर्यमूढताः ॥ ४५ ॥  
 मार्गो मृगपदे मासि सौम्यर्क्षेऽन्वेषणेऽध्वनि ।  
 मृत आतञ्चने व्रीहौ व्रीह्यादेर्बन्धने तृणैः ॥ ४६ ॥  
 मृगस्तु मृगशीर्षेऽपि मोक्षो मृत्यौ मरुद्गिरौ ।  
 यन्ता हस्तिपके सृते यक्षोऽग्न्यात्महरीष्टिषु ॥ ४७ ॥  
 ययुरश्वेऽश्वमेधाश्वे योगो विस्त्रब्धघातिनि ।  
 प्राप्तौ सन्नहनोपायध्यानसङ्गतिर्युक्तिषु ॥ ४८ ॥  
 रसो राने विषे वीर्ये तिक्तादौ पारदे द्रवे ।  
 रेतस्यास्वादाने हेम्नि निर्यासेऽमृतशब्दयोः ॥ ४९ ॥  
 रश्मी ज्वालाप्रग्रहौ च रदो दन्तविलेखयोः ।  
 राजा तु क्षत्रिये चन्द्रे लताभेदे नृपे प्रभौ ॥ ५० ॥  
 रागोऽनुरागे लाक्षादौ त्विषि राकस्तु पूष्णि च ।  
 रङ्गौ तु स्थानरागौ च भूप्रदेशे मृगे लिगुः ॥ ५१ ॥  
 भोजने लेपने लेपो लोकः स्याद् विष्टपे जने ।  
 वंशः पृष्ठास्त्रिंशो गोहोर्ध्वकाष्ठे वेणौ गणे कुले ॥ ५२ ॥  
 नासोर्ध्वास्त्रोक्षुभेदे च वहिरुद्दिण ह्येऽनले ।  
 बलो धान्येऽसुरे काके गवां श्वासेऽनिले वहः ॥ ५३ ॥  
 वेणू वेदसहस्रांशू गोष्ठाध्वनिवहा व्रजाः ।  
 वालौ पुच्छाश्वपुच्छौ च व्याजश्छद्वापदेशयोः ॥ ५४ ॥  
 विधी तु दैवकालौ च वाजी त्वश्वे शरे खगे ।  
 विधुर्निशाकरे काले विष्णौ वातेऽग्निरक्षसोः ॥ ५५ ॥  
 वृन्दविन्यासयोर्व्यूहो वृषोऽप्यग्रथे पुमिन्द्रयोः ।  
 वृत्राः शत्रुतमोदैत्या वेगः किम्पाकरंहसोः ॥ ५६ ॥  
 वेधसो विष्णुधातृज्ञाः शादः कर्दमशष्पयोः ।  
 शम्भुर्धातृहरार्हसु शक्रः कुटजवज्रिणोः ॥ ५७ ॥  
 शम्भो वज्रे लोहमयवलये मुसलाग्रगे ।  
 शरो रसाग्रसारेऽपि शूकोऽनुकोशशुङ्गयोः ॥ ५८ ॥  
 शब्दोऽक्षरे यशोगीत्योर्वाक्ये खे श्रवणे ध्वनौ ।  
 शङ्कुः पत्रसिराजाले कीलेऽस्त्रे मेढ्रसङ्घयोः ॥ ५९ ॥  
 कुक्कुटेऽग्नौ मयूरेशौ वृत्ते केतुग्रहे शिखी ।  
 पद्ये यशसि च श्लोकः षण्डौ विट्चरपण्डकौ ॥ ६० ॥

ष्ट्यूमसूमौ जले चन्द्रे तन्तुमङ्गलरश्मिषु ।  
 सन्नाजोऽग्नीन्द्रविष्णवर्का यश्च स्यान्मण्डलेश्वरः ॥ ६१ ॥  
 राजसूयेन येनेष्टं राज्ञः शास्त्याज्ञया च यः ।  
 सर्गास्तु सर्जनाध्यायस्वभावोत्साहनिश्चयाः ॥ ६२ ॥  
 सन्धिः श्लेषे सुरुङ्गायां नाट्याङ्गे योनिरन्ध्रयोः ।  
 स्वरोऽकाराद्युदात्ताद्योः षड्जादौ प्राणिनां स्वने ॥ ६३ ॥  
 सरटौ पक्षिजलदौ स्पशौ तु चरसंयुगौ ।  
 स्तम्भौ स्थूणाजडीभावौ यूपान्शे कुलिशे स्वरुः ॥ ६४ ॥  
 स्कन्दो धाता नदीकूलं साद्यश्चरोहसूतयोः ।  
 सालो मत्स्ये वृक्षभेदे प्राकारद्रुममात्रयोः ॥ ६५ ॥  
 सिक्थो ना भक्तपूलाके मधूच्छिष्टे कचिन्नपुम् ।  
 सुतः पुत्रे सोमरसे सोमौ व्योमनिशाकरौ ॥ ६६ ॥  
 स्तूपा वायुरणोच्छ्वाया आज्ञाऽऽह्वानाध्वरा हवाः ।  
 हर्तुर्मृत्यौ महारागे हरा रुद्राग्निगर्दभाः ॥ ६७ ॥  
 हंसोऽश्वेऽर्के हरे विष्णौ खगे निर्लोभभूभुजि ।  
 जीवे श्वेतवृषे भिक्षौ पार्णिकाप्रसभौ हठौ ॥ ६८ ॥  
 वारिपर्णी च हेतुस्तु कारणे कर्मजन्मनोः ।  
 हीरः सर्पे हरे सिंहे हेलिरालिङ्गने रवौ ॥ ६९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे पुलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥



## स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अर्चा पूजाप्रतिमयोरर्तिश्चापाग्रपीडयोः ।  
 अन्दूस्तु शृङ्खला पादभूषाऽप्यष्टी फलास्थयपि ॥ १ ॥  
 आस्था गोष्ठ्यां प्रतिज्ञायां तत्परत्वेऽवलम्बने ।  
 आशीरुगदंष्ट्रायां शुभवाक्याभिलाषयोः ॥ २ ॥  
 आलिः सेतौ सखीपङ्क्तयोराशा दिगतिवृष्णयोः ।  
 आजिः समेऽपि भूभागे गोनाडीभूद्युवाह्विडा ॥ ३ ॥  
 इलाऽप्येतासु चार्धे च स्याद्विज्ञा यागपूजयोः ।  
 इष्टिः स्पृहायजनयोरिरा भूवाक्सुराम्बुपु ॥ ४ ॥  
 अन्ने च स्यादथो ईतिरुपसर्गप्रवासयोः ।  
 ईहा तु लिप्सोद्यमयोरुतिः सूर्यभिरक्षयोः ॥ ५ ॥  
 ऊर्णा भ्रूमध्यगावर्ते तन्तौ मेपादिलोमसु ।  
 हिंसाविच्छेपयोः कीणिः कीर्तिः पङ्के यशस्यपि ॥ ६ ॥  
 कदया कच्छे वरत्रायां काञ्च्यां गेहप्रकोष्ठके ।  
 कर्म हाटकपुण्यां स्यादपि शालापलालयोः ॥ ७ ॥  
 कासूर्बुद्धौ कुवाच्यस्त्रे कान्तिः शोभाभिकामयोः ।  
 काष्ठोत्कर्षे सीम्नि दिशि क्षोण्यां वासे क्षये क्षितिः ॥ ८ ॥  
 क्रिया तु निष्कृतौ शिक्षाचिकित्सोपायकर्मसु ।  
 करणारम्भपूजासु चेष्टायां सम्प्रधारणे ॥ ९ ॥  
 काले शिल्पे वित्तवृद्धौ चन्द्रांशे कलने कला ।  
 महाभूतेष्विन्द्रियेषु ज्ञानावयवयोरपि ॥ १० ॥  
 कोटिस्त्वष्ट्रौ प्रकर्षेऽग्रे दशोपायगमे गतिः ।  
 गुप्तिः क्षितिव्युदासेऽपि गुञ्जा भाण्डेऽपि वादने ॥ ११ ॥  
 घृणा जुगुप्साकृपयोर्घोणाऽपि रथकणिका ।  
 चिन्ताचचिक्ययोश्चर्चा चूर्णिग्रन्थे कपर्दके ॥ १२ ॥  
 चापाग्रे पिष्टके चूलिशङ्खद्विरुद्धान्तिरेतसोः ।  
 छाया त्वनातृपे कान्तौ प्रतिबिम्बार्कजाययोः ॥ १३ ॥

जनिर्वरस्त्रीपत्योश्च जाभिः स्वसृकुलस्त्रियोः ।  
 जातिश्छन्दसि मालत्यां सामान्ये जन्मगोत्रयोः ॥ १४ ॥  
 अलक्ष्म्यग्रजयोर्द्वेष्टा गृहगोत्र्यक्षभेदयोः ।  
 जिह्वा वाग्रसनार्चिषु तन्द्रा निद्राप्रमीलयोः ॥ १५ ॥  
 तन्त्रीगुह्यचीसिरयो रज्ज्वां वीणादिगे गुणे ।  
 तन्दूद्रोणिप्लवे दूर्या वाद्ये काले लवे तुटिः ॥ १६ ॥  
 तुला साम्ये स्तम्भपीठे लेशशंशययोस्तुटिः ।  
 तूली शय्याकूर्चिकयोस्त्रेता त्वग्नित्रये युगे ॥ १७ ॥  
 दरदो भीतिहृद्गूढा दृष्टिर्धीदर्शनादिषु ।  
 द्रोणी स्यादम्बुवाहिन्यां द्रवभाण्डे गिरिप्लवे ॥ १८ ॥  
 दिष्टिः सुखे च दाने च धात्री भूव्युपमातरि ।  
 धनुः सुखीधनुर्ज्यासु धाना बीजेऽपि भूरुहाम् ॥ १९ ॥  
 धारास्त्राग्रेऽम्बुसन्तत्यां सैन्याग्रेऽश्वगतिष्वपि ।  
 धीता सुतायां बुद्धौ च धृतिः सौख्येऽपि धारणे ॥ २० ॥  
 निष्ठोत्कर्षे व्यवस्थायां नाशेऽन्ते व्रतयज्ञयोः ।  
 भित्तिमूले प्रधौ नेमिर्निन्दा कुत्साऽपवादयोः ॥ २१ ॥  
 पालिरश्रिः प्रदेशोऽङ्कः सशमश्रुः स्त्री त्सरुश्छदः ।  
 छन्दः सङ्ख्यावली पङ्क्तिः पक्तिगौरवपाकयोः ॥ २२ ॥  
 क्षुद्रग्रामेऽपि पल्ली स्यात् प्रभाऽर्चिषि च भासि च ।  
 प्रज्ञा प्राज्ञस्त्रियां बुद्धौ प्रजा तु जनपुत्रयोः ॥ २३ ॥  
 प्रसूर्जनन्यामश्रयां पारिः सृणिगुणेऽपि च ।  
 पादुकोपानहोः पादूः प्राप्ती अभिगमोदयौ ॥ २४ ॥  
 पीडाऽवमर्दकृपयोः प्रीतिः प्रेमप्रमोदयोः ।  
 प्रेक्षा नृत्तेक्षणे बुद्धौ बाधा दुःखनिषेधयोः ॥ २५ ॥  
 भसदौ गुह्यविट्कोष्ठौ भक्तिर्भागे निषेवणे ।  
 भिक्षा तु भिक्षितान्नादौ याच्न्यायां भृतिसेवयोः ॥ २६ ॥  
 भूमिः क्षितौ स्थानमात्रे भूतिः श्रीजन्मभस्मसु ।  
 मतिः काङ्क्षा शेमुषी च मल्लिर्मुत्पात्रपीठयोः ॥ २७ ॥



माता तु गव्यकारादौ ब्राह्मणाद्यासु प्रसूतयोः ।  
 मूर्तिर्देहप्रतिमयोः काककाठिन्ययोरपि ॥ २८ ॥  
 पुंश्चल्यां मौक्तिके मुक्ता कारासंयमयोर्यतिः ।  
 गमने जीवने यात्रा रुजा रुग्भृङ्गमृत्यवः ॥ २९ ॥  
 राजिः पङ्क्तौ राजसर्पे क्षेत्रेऽधो रसनस्य च ।  
 रीतिर्दग्धसुवर्णादिमले स्थित्यारकूटयोः ॥ ३० ॥  
 प्रचारे श्रवणे पङ्क्तौ रण्डा स्याद्विधवाऽपि च ।  
 रुचिः कान्त्यर्चिषोर्भासि तिन्त्रिडीके स्पृहाश्रियोः ॥ ३१ ॥  
 रेटिर्वहेश्च रटितं वाणी चासंयतोत्कटा ।  
 रेखायामावलौ रेखा लङ्का पूर्वेदशाखयोः ॥ ३२ ॥  
 लीला क्रिया विलासश्च वपा गोण्डो बिलं तथा ।  
 बलिर्मध्यगरेखोर्मिजीर्णत्वग्गृहदारु च ॥ ३३ ॥  
 वर्ध्नी स्नायुनि नध्र्या च ब्रज्या पर्यटने गतौ ।  
 विधा विधाने हस्त्यन्ने भृत्यामृद्धिप्रकारयोः ॥ ३४ ॥  
 वीरुधौ गुल्मगुल्मिन्यौ वीथी पङ्क्त्यध्वनोरपि ।  
 वीचिः पङ्क्त्यूर्मिलेशेषु व्युष्टी फलसमृद्धते ॥ ३५ ॥  
 वृत्तिर्ग्रन्थाजीवयोश्च वेलाऽन्विजलवर्धने ।  
 काले सीमि च वेणी तु केशबन्धे जलस्रुतौ ॥ ३६ ॥  
 वृद्धिः सुखेऽपि जङ्घापि वारुः शुक्तिस्तु दृग्गजि ।  
 अश्ववर्ते च शाला तु गृहाङ्गस्कन्धशाखयोः ॥ ३७ ॥  
 शक्तिः कासूर्बलं लक्ष्मीः शारदावृतुवत्सरौ ।  
 शङ्का वितर्कभययोः श्रद्धाऽऽस्तिक्याभिलाषयोः ॥ ३८ ॥  
 शाखा वेदप्रभेदेषु बाहौ पादद्रुमाङ्गयोः ।  
 श्यामा कन्या निशा चाथ शान्तिः प्रशममङ्गले ॥ ३९ ॥  
 शिखा षवालाकेकिमौल्योः शिफा शाखाप्रमौलिषु ।  
 शुण्डा करिकरे मद्ये श्रुतिर्वेदे श्रवस्यपि ॥ ४० ॥  
 शय्या तल्पे ग्रन्थगुम्फे शंसा तु स्तववाक्ययोः ।  
 संविद् युद्धे प्रतिज्ञायां सङ्केताचारनामसु ॥ ४१ ॥

सम्भाषणे क्रियाकारे विज्ञाने तोषणेऽपि च ।  
 सभा तु संसदि द्यूते गृहे सामाजिकेषु च ॥ ४२ ॥  
 संज्ञाऽर्कभार्या चैतन्यं हस्ताद्यैः सूचनाऽभिधा ।  
 संस्था व्यवस्थाप्रणिधिसमाप्त्याकारमृत्युषु ॥ ४३ ॥  
 सन्धाऽवधौ प्रतिज्ञायां सातिर्दानावसानयोः ।  
 सीमसीमे तु कूलेऽपि स्थानमर्यादयोः स्थितिः ॥ ४४ ॥  
 गङ्गेष्टिमूर्वयोः स्नुह्यां लेपभेदेऽमृते सुधा ।  
 राशमेखलयोः स्यूना सीता सस्ये हलाध्वनि ॥ ४५ ॥  
 स्थूणा सूर्म्या गृहस्तम्भे हिंसा चौर्यादिके वधे ।  
 हेलाऽवज्ञाभावचारौ हेतिर्ज्वालांशुरायुधम् ॥ ४६ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥



## नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अभ्रं सलिलदे व्योमन्यस्त्रं कोदण्ड आयुधे ।  
 अभ्रं पुरःशिखामानशैष्ट्याधिक्यफलेषु च ॥ १ ॥  
 मुष्के पद्यादिकोशोऽण्डं दुःखैनोव्यसनेष्वधम् ।  
 अर्शसी व्याधिदुर्नाम्नी आङ्ग्ये श्रीवाससर्पिषि ॥ २ ॥  
 वर्षार्थजीवितेष्वायुरास्थं मुखविले मुखे ।  
 उरस्तु वक्षसि श्रेष्ठ ऋतं तथ्यशिलोऽङ्गयोः ॥ ३ ॥  
 ओजोऽवष्टम्भबलयोरोकसी मन्दिराश्रमौ ।  
 क्रियायजनयोः कर्म क्षीरं दोहजम्बु च ॥ ४ ॥  
 कुण्डं स्थात्यां जलाधारविशेषेऽनलगर्तके ।  
 पिण्याको नम्रहः किण्वं कूलं तीरे चमूकटौ ॥ ५ ॥  
 क्षेत्रं गृहे पुरे देहे केदारे योनिभार्ययोः ।  
 पुण्यस्थाने समूहे च घृतं त्वाङ्ग्येऽम्बुसर्पिषोः ॥ ६ ॥  
 चक्रं सैन्ये जलावर्ते रथाङ्गे चयराष्ट्रयोः ।  
 संसारे मण्डले वृत्ते छद्मभेदास्त्रभेदयोः ॥ ७ ॥  
 चैत्यं चिताङ्गे बुद्धाण्डे उद्देशेऽद्रौ सुरालये ।  
 चिह्नमङ्गे पताकायां छद्म सद्धानि कैतवे ॥ ८ ॥  
 छन्दः श्रुतीच्छापद्येषुच्छिद्रं रन्ध्रापराधयोः ।  
 जालं गवाक्ष आनाये क्षारके कपटे गणे ॥ ९ ॥  
 जीलं चर्मपुटः कोशो दृतिः करकपत्रिका ।  
 ज्योतिस्ताराग्निभाज्वालाहकपुत्रार्थाध्वरात्मसु ॥ १० ॥  
 तन्त्रं स्वराष्ट्रव्यापारे तन्तुवाने परिच्छदे ।  
 शास्त्रौषधान्त्रमुख्येषु प्रयोगेऽध्वरकर्मणम् ॥ ११ ॥  
 एकस्यैवोभयार्थत्वे कुड्मुम्बव्यापृतावपि ।  
 तल्पं शय्याट्टजायासु तनुषी तनुविस्वृती ॥ १२ ॥  
 त्रपु सीसे च रङ्गे च तरसी बलरंहसी ।  
 तीर्थं मन्त्राद्युपाध्यायशास्त्रेष्वम्भसि पावने ॥ १३ ॥  
 पात्रोपायावतारेषु स्त्रीपुष्पे योनियज्ञयोः ।  
 तेजो बले प्रभावेऽन्ने ज्योतिष्यर्चिषि रेतसि ॥ १४ ॥

नवनीतेऽनले धर्मे दानं हस्तिमदेऽपि च ।  
 द्वयं गुणानामाधारे भेषजे योगवित्तयोः ॥ १५ ॥  
 द्वन्द्वं युग्मं हिमोष्णादि मिथुनं कलहो रहः ।  
 धाम जन्मप्रभावान्नभाःसु खे भोजने गृहे ॥ १६ ॥  
 नेत्रं नाड्यां तरोर्मूले वस्त्रे दृशि मथो गुणे ।  
 नाट्यं तौर्यत्रिके नृत्ते नालं विवरशेषसोः ॥ १७ ॥  
 पदं स्थाने शरे त्राणे पादाङ्के पादचिह्नयोः ।  
 शब्देऽशुवस्तुवाक्येषु व्यवसायापदेशयोः ॥ १८ ॥  
 पर्व ग्रन्थौ पञ्चदश्यां प्रस्तावे विषुवादिके ।  
 पक्ष्म सूत्राद्यवयवे किञ्जल्के नेत्रलोमसु ॥ १९ ॥  
 पत्रं तु वाहने पर्णे क्षुरिकागरुतोरपि ।  
 पयोऽम्भसि च दुग्धे च पाथसी सलिलौदनौ ॥ २० ॥  
 पात्रं तु भाजने योग्ये वित्ते कूलद्वयान्तरे ।  
 पार्थीपि स्वर्गचन्द्रार्का पिच्छं बर्हे खगच्छदे ॥ २१ ॥  
 पोत्रं मुखाग्रदेशे स्यात् सूकरस्य हलस्य च ।  
 नवनीतं पयः पीथं बर्हं पर्णशिखण्डयोः ॥ २२ ॥  
 बीजं शुक्ले फलास्थन्यन्ने भर्मणी स्वर्णवेतने ।  
 वणिङ्मूलधने पात्रे भाण्डं भूषाश्वभूषयोः ॥ २३ ॥  
 भाग्यं कर्मण्यन्यजन्मकर्मण्यपि शुभाशुभे ।  
 भर्गसी रेतआलोकौ महसी तेजउत्सवौ ॥ २४ ॥  
 माल्यं पुष्पे पुष्पदाम्नि मूल्यं वेतनवस्त्रयोः ।  
 मुखं तु वदने मुख्ये ताम्रे द्वाराभ्युपाययोः ॥ २५ ॥  
 मूलं वशीकृतौ स्वीये शिफातारान्तिकादिषु ।  
 गमने वाहने यानं रत्नं श्रेष्ठे मणावपि ॥ २६ ॥  
 रहो रहस्ये सुरते रिष्टं नाशे शुभेऽशुभे ।  
 रुक्मं हेम सुलोहं च रेतसी शुक्लम्बु च ॥ २७ ॥  
 रूपं शब्दे पशौ श्लोके ग्रन्थावृत्तौ सितादिषु ।  
 सौन्दर्ये च स्वभावे च शरद्रेण्वार्त्तवे रजः ॥ २८ ॥  
 ललं पल्लव उद्याने लक्ष्म चिह्नवरिष्ठयोः ।  
 स्यादुपच्छन्दने लालं गुह्यार्थपरभार्ययोः ॥ २९ ॥  
 लिङ्गं शेषसि वेषेऽशे चिह्ने बुद्ध्यादिसंहतौ ।  
 वयः खगेऽन्ने वर्षेऽर्थे शुभाकारे तनौ वपुः ॥ ३० ॥



वर्चोऽर्चिरूपविड्भाःसु वनं भास्यप्सु कानने ।  
 व्रतं विष्णुवृत्तवर्षेज्यातपोमासाग्निभुक्तिषु ॥ ३१ ॥  
 वीर्यं पराक्रमे रेतस्यन्नमाहात्म्ययोरपि ।  
 वेष्टं ब्रह्मणि नाके च शल्के शकलवल्कले ॥ ३२ ॥  
 शास्त्राण्यस्त्रमयःशंसा शास्त्रं ग्रन्थनिदेशयोः ।  
 शार्ङ्गं चापे हरेश्चापे शीलं वृत्तस्वभावयोः ॥ ३३ ॥  
 शुल्बं ताम्रे यज्ञकर्मण्याचारे जलसन्निधौ ।  
 शोचिः शोकांशुपैङ्गल्यशुद्धत्वेषु सरोऽप्सु च ॥ ३४ ॥  
 यज्ञभेदे सदादाने सत्रमाच्छादने वने ।  
 सर्पिर्घृते च तोये च सान्त्वे दाक्षिण्यसान्त्वने ॥ ३५ ॥  
 स्नानीयेऽभिषवे स्नानं स्थानं स्यादाश्रये स्थितौ ।  
 सूत्रं तन्तौ सङ्ग्रहोक्तौ सुखमानन्दतोययोः ॥ ३६ ॥  
 स्रोतोऽम्बुनिर्गमद्वार इन्द्रियेऽप्सु जलस्रुतौ ।  
 हविर्हव्ये घृते तोये हेम्नी काञ्चनवेतने ॥ ३७ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

### अर्थवलिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

अर्थोऽर्थयुक्तात्मवतोरन्त्योऽन्त्यजनिर्कृष्टयोः ।  
 क्लृप्तेऽर्घ्यार्घ्यमर्घाहोऽप्यदस्त्वत्र परत्र च ॥ १ ॥  
 अन्यौ विभिन्नसदृशावार्यः साधुकुलीनयोः ।  
 आद्यमादिभवे भक्ष्येऽप्युत्पत्तिरहितेऽप्यृजुः ॥ २ ॥  
 मुख्यान्यकेवलेष्वेकः कष्टौ गहनदुःखितौ ।  
 कल्या नीरुग्दक्षसज्जा योग्ययुक्तहिताः क्षमाः ॥ ३ ॥  
 कटुस्तिक्ताप्रियाकार्यसुरभ्यूषणमत्सरे ।  
 क्रूरो भयङ्करे क्रुद्धे नृशंसे कठिनोष्णयोः ॥ ४ ॥  
 गौरोऽरुणे सिते पीते गृह्यस्त्वस्वैरिपक्षयोः ।  
 छिन्नाक्षौ छिन्ननेत्रे च चिल्लं चुल्लं च पिब्लवत् ॥ ५ ॥  
 चोद्यं चित्रे चोदनाहं चारु चित्रवचस्यपि ।  
 जडो जालमश्च निर्बुद्धौ स्तब्धेऽनालोच्यकारिणि ॥ ६ ॥  
 ज्यायान् ज्येष्ठश्चाग्रजन्मन्यतिवृद्धातिशस्तयोः ।  
 जात्यः श्रेष्ठे कुलीने च डिम्भो बालिशबालयोः ॥ ७ ॥  
 द्रुतं शीघ्रे शीघ्रगतेऽप्यवदीर्णविलीनयोः ।  
 दृढं गाढेऽधिके स्थूले धूतं त्यक्ते प्रकम्पिते ॥ ८ ॥  
 धृष्णुर्धृष्टे प्रगल्भे च कुटिले बन्धुरे नतम् ।  
 न्यक्षं क्षिष्टे निकृष्टे च निजमात्मीयनित्ययोः ॥ ९ ॥  
 नीचं खर्वं निकृष्टे च समर्थेऽधिपतौ प्रभुः ।  
 प्राप्तं न्याय्ये च लब्धे च विपुलानेकयोर्बहु ॥ १० ॥  
 बालो मूर्खे शिशौ भव्यो भावी योग्यः शुभोऽपि च ।  
 मिश्रेऽपि भिन्नं म्लिष्टं तु म्लानाविस्पष्टवाक्ययोः ॥ ११ ॥  
 मुग्धं सौम्ये नवे मूढे मूढो मोहिनि तन्द्रिते ।  
 मृद्वतीक्ष्णे कोमले च बद्धोपरतयोर्यतः ॥ १२ ॥  
 याप्यं गह्वं यापनीये पृथक्संयुक्तयोर्युतम् ।  
 न्याय्यसंयुक्तयोर्युक्तं रूक्षो निष्प्रेम्ण्यचिक्कणे ॥ १३ ॥  
 रथ्यो रथहितेऽमुष्य स्वीयेऽस्याश्वे च वोढरि ।  
 रागवद्रोहितौ रक्तौ रामश्चारौ सितेऽसिते ॥ १४ ॥



न्याय्यलब्धव्ययोर्लभ्यं लिप्तो भक्षितदिग्धयोः ।  
 लघु त्वसारागुरुणोरिष्टे क्षिप्रमनोज्ञयोः ॥ १५ ॥  
 लोलं चले लोलुपे च व्यग्रो व्यापृत आकुले ।  
 वल्गु मञ्जौ च वामस्तु सौम्ये सव्यप्रतीययोः ॥ १६ ॥  
 विद्धं विदारिते तुल्ये विन्नं लब्धे विचारिते ।  
 शितिः श्वेते च नीले च शुभो मञ्जुप्रशस्तयोः ॥ १७ ॥  
 शुभ्रं शुक्ले भास्वरे च शुक्तं तु परुषाम्लयोः ।  
 सभ्यः सामाजिके साधौ सव्यो दक्षिणवामयोः ॥ १८ ॥  
 सन्नमल्पे विशीर्णादौ स्वादुर्मधुरमृष्टयोः ।  
 स्फुटाः स्पष्टव्याप्तफुल्लाः स्थूलौ तु जडपीवरौ ॥ १९ ॥  
 मन्त्रिण्यपि सुहृत्स्निग्धे प्रतिज्ञावत्यपि स्थितः ।  
 मन्दस्वच्छन्दयोः स्वैरो हीनो मुक्तविगर्हयोः ॥ २० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 दशक्षरकाण्डे अर्थवलिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

### नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

नानालिङ्गेषु सर्वत्र स्वयमेव कचित् कचित् ।  
 उन्नेयमर्थवलिङ्गं गुणद्रव्यक्रियार्थकम् ॥ १ ॥  
 अक्षो रथाङ्ग आधारे व्यवहारे विभीतके ।  
 शकटे पाशके कर्षे द्यूतभेदेऽक्षमिन्द्रिये ॥ २ ॥  
 अब्जो धन्वन्तरौ शङ्खे चन्द्रे क्ली लवणेऽम्बुजे ।  
 प्रदेशेऽश उपायेऽङ्गमङ्गो देशेऽङ्गशालिनि ॥ ३ ॥  
 अविर्भूषणवत्योः स्त्री वायुप्राकारभाःसु ना ।  
 अजः पितामहेऽनादौ छागे विष्णौ हरे रवौ ॥ ४ ॥  
 अन्तोऽस्त्र्यवसिते मृत्यौ स्वरूपे निश्चयेऽन्तिके ।  
 नार्धमासेऽणिरकल्यश्रौ रूप्येऽक्षाग्रध्रुवे ध्रुवे ॥ ५ ॥  
 अर्हन्तौ जिनसम्मान्यावर्चन्तौ हयकुत्सितौ ।  
 अन्धोऽचक्षुस्तमोऽप्यन्धमर्चिर्भास्वालयोर्न ना ॥ ६ ॥  
 अस्त्र आस्रश्च पुंलिङ्गौ क्लेशे क्ली रुधिरेशुणि ।  
 आद्यो मुख्ये धातृपूर्वेष्वाभोऽपकेऽपि रुज्यपि ॥ ७ ॥  
 इनास्त्वात्माधिपार्काढ्या उष्णोऽग्नौ चतुरेशपि च ।  
 उशिर्नागनावुशीरेऽस्त्री न नोषः कल्यसन्ध्ययोः ॥ ८ ॥  
 उस्त्रः किरण उस्त्रा गौर ऋक्षं निर्लोमनीन्द्रिये ।  
 कम्ब्वस्त्री वलये शंखे शम्बूके कणसंख्ययोः ॥ ९ ॥  
 कल्को ना सिह्मके न स्त्री किट्टे दम्भेऽघपिष्टयोः ।  
 कारा बन्धनगेहे स्त्री करे ना बन्धने न षण् ॥ १० ॥  
 कांस्यं कंसोऽस्त्रियां पानपात्रे तैजस आढके ।  
 काण्डोऽस्त्रीषौ बले नाले गर्होऽवसरवर्गयोः ॥ ११ ॥  
 ग्रन्थौ स्तम्भे प्रकाण्डेऽप्सु कश्यं मद्यकशार्हयोः ।  
 क्षुद्रो दरिद्रे कृपणे नृशंसेऽल्पनिकृष्टयोः ॥ १२ ॥  
 क्षुद्रा व्यङ्गा नटी वेश्या सरघा कण्टकारिका ।  
 कूटोऽस्त्री पुञ्जमायाघेष्वाद्रिशृङ्गेषुभेदयोः ॥ १३ ॥  
 अयोधनेऽनृते फाले दम्भे निश्चलयन्त्रके ।  
 कृष्णं सीसाघलोहेषु कृष्णो नीले नले कलौ ॥ १४ ॥



शूरे काके पिके व्यासे ध्वान्तपक्षेऽर्जुने हरौ ।  
 कोशोऽस्त्री कुड्मले दिव्ये शास्त्रेऽर्थोऽपि गृहे तनौ ॥ १५ ॥  
 गृह्येऽण्डे वेष्टके पेश्यां पुस्तकासिपिधानयोः ।  
 कोलं बदरतकोलशुण्ठीव्योषेऽर्धकर्षके ॥ १६ ॥  
 कोला चव्येऽस्त्रपिप्लयोः कोलः खञ्जे प्लवे कटौ ।  
 कायो लक्ष्ये तनौ वृन्दे पुमांस्त्रिषु कदैवते ॥ १७ ॥  
 कर्षूः स्त्री तुषकोष्ठे कुल्यायां ना च ना करीषाग्नौ ।  
 श्रोण्यां भृशे कलिञ्जे गजगण्डे शवरथे शवे च कटः ॥ १८ ॥  
 किङ्कुर्वितस्तावनपुं सप्रकोष्ठकरे पुमान् ।  
 कीलोऽस्त्री कफणौ ज्वाले बाहौ ना शङ्कुशर्वयोः ॥ १९ ॥  
 पीठे श्मश्रुणि कूर्चोऽस्त्री भ्रूमध्ये कथने कुशे ।  
 कृत्या क्रियादेवतयोः कार्ये स्त्री कुपिते त्रिषु ॥ २० ॥  
 युगेऽक्षपाते पर्याप्ते कृतं स्त्री विहितेऽर्थवत् ।  
 दवेडा वेणुशलाकायां सिंहनादे विषे तु ना ॥ २१ ॥  
 चेमो ना प्रातरक्षायां मोक्षेऽप्यस्त्री तु मङ्गले ।  
 स्वीयेऽन्तःकुक्षि कोष्ठोऽस्त्री कुसूलेऽन्तर्गृहे पदे ॥ २२ ॥  
 क्रोडं स्त्री कर्ष उत्सङ्गे सूकरे ना न नोरसि ।  
 औषधे रुजि कुष्ठोऽस्त्री कुब्जोऽस्त्री गह्वरे हनौ ॥ २३ ॥  
 दर्भे कुशोऽस्त्री तोये क्ली कुटिवेके गृहे नषण् ।  
 कृष्टिर्विलेखे प्राज्ञे ना खेटो ग्रामे कफेऽधमे ॥ २४ ॥  
 अर्धे गुडविकारे च खण्डोऽस्त्री खण्डिते त्रिषु ।  
 खलं भूस्थानकल्केषु खलो नीचः खलेत्वरी ॥ २५ ॥  
 गव्यूतौ गोगणे गव्या ज्यायागद्रव्ययोर्नपुम् ।  
 भाण्डागारे पुमान् गञ्जः स्त्री तु खन्यां सुरागृहे ॥ २६ ॥  
 गुडौ पिण्डेऽक्षुविकृती स्नुहीगुलिकयोर्गुडा ।  
 गुरुगोष्पतिपित्राद्योः पौरोहित्यकरे च ना ॥ २७ ॥  
 मात्रादौ स्त्री वृहत्खातदुर्भरालघुषु त्रिषु ।  
 गोत्रा गोनिचये भूम्यां गोत्रं नास्ति कुलेऽचले ॥ २८ ॥  
 गङ्गुः पृष्ठगुडे कुब्जे गदो रोगो गदायुधम् ।  
 गोप्यो रक्ष्ये दाससुते घ्राणमाघ्रातनासयोः ॥ २९ ॥  
 घनाः कठिनसङ्घातमेषकाठिन्यमुद्गराः ।  
 चित्रा सुभद्रा तारा च चित्रमालेख्यमिश्रयोः ॥ ३० ॥

चेलं वासोऽक्षमं काम्यं गर्हितं बर्हिचन्द्रकः ।  
 चुम्नो नाशे विषण्णे च चोक्षो गीतमनोज्ञयोः ॥ ३१ ॥  
 छेको विदग्धे गृह्ये च जिह्वं मन्देऽघवक्रयोः ।  
 जन्यं रणे जनितरि विगीतजननीययोः ॥ ३२ ॥  
 ज्ञातिभृत्या नवोढाया जन्याः स्निग्धा वरस्य च ।  
 जीवः प्राणे त्रयी ना तु जन्तवात्मनि गोष्पतौ ॥ ३३ ॥  
 त्रिषु जीवति मौर्व्या स्त्री स्याज्जीर्णो वज्रवृद्धयोः ।  
 भ्रूषा नागबलायां स्त्री ना मत्स्ये मकरे वने ॥ ३४ ॥  
 तनुः स्त्री त्वचि देहे च त्रिष्वल्पे विरले कृशे ।  
 तमा राहुस्तमोऽघं शुक् स्वरूपेऽधस्तलोऽस्त्रियाम् ॥ ३५ ॥  
 क्ली तुल्यदेशे तारस्तु मुक्ताशुक्लौ समौक्तिके ।  
 उडुदृष्ट्ययोरकली तुच्छं त्वमुखशून्ययोः ॥ ३६ ॥  
 ताम्रं शुल्बे शुल्बनिभे तिग्मास्तीक्ष्णभास्कराः ।  
 तीक्ष्णमुष्णे क्षणुते युद्ध आत्मत्यजि विषेऽयसि ॥ ३७ ॥  
 कर्णमूलेऽध्रहरितोस्तोक्मं तोक्मो हरिद्यवः ।  
 दण्डोऽस्त्री शासने राज्ञां हिंसायां लगुडे दमे ॥ ३८ ॥  
 मिथ्याऽऽज्ञायां सैन्यभेदे दलो भागे दलं छदे ।  
 दरोऽस्त्री शङ्खभीगर्तेऽवत्पार्थे त्वव्ययं दरम् ॥ ३९ ॥  
 दंष्ट्री ग्राहे सदंष्ट्रेऽहौ शार्दूले मूषिके कटौ ।  
 परिमाणे दारुपात्रे द्रोणोऽस्त्री वायसे पुमान् ॥ ४० ॥  
 दिग्धो विषप्रलिप्तेषौ लिप्ते स्नेहप्रवृद्धयोः ।  
 दुर्गो राष्ट्रे वने दुर्गं दुर्गमे नरके पुरे ॥ ४१ ॥  
 दृश्या स्यात् पृतना दृश्यं दर्शनीये विभूषणे ।  
 धर्मोऽस्त्री सुकृते साम्ये स्वभावे ना तु सोमपे ॥ ४२ ॥  
 न्यायाचारयमाहिंसास्वस्त्री मेढाङ्कयोर्ध्वजः ।  
 धिष्ण्यौ शुक्रानलौ धिष्ण्यमृत्ते स्थाने बले गृहे ॥ ४३ ॥  
 ध्रुवो धात्रीशकीलर्क्षनित्येषु स्त्री तु भूस्त्रुचोः ।  
 स्त्री तर्के निश्चिते व्योम्नि धीरोऽब्धौ मन्थरे बुधे ॥ ४४ ॥  
 निष्कोऽस्त्री हेम्नि दीनारे साष्टे कर्षशते पले ।  
 वक्षोविभूषणे कर्षे नाथस्त्विन्द्रे प्रभावपि ॥ ४५ ॥  
 न्युब्जं कुब्जे कर्मरङ्गे न्युब्जो व्याधावधोमुखे ।  
 नेमः पुरोहिते तुल्ये प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः ॥ ४६ ॥



बन्धने दूरमार्गे च प्राध्वं क्ली प्रवणे त्रिषु ।  
 पूर्वोऽर्थलिङ्गः प्राच्यादौ पूर्वजेषु नृभूमवान् ॥ ४७ ॥  
 पद्मोऽस्त्रयब्जेऽष्टकायां ह्री सङ्ख्यायां गजबिन्दुषु ।  
 ना तु नागे निधौ व्यूहे पङ्क्तोऽस्त्री कर्दमैनसोः ॥ ४८ ॥  
 परं दूरान्यमुख्येषु परोऽरिपरमात्मनोः ।  
 पार्ष्णिहन्मत्तनार्या स्त्री पादग्रन्थेरधोऽपि च ॥ ४९ ॥  
 पुमांस्तु प्रतनाकट्यां पापं स्यात् कूरपाप्मनोः ।  
 पुण्यं धर्मे जले हेम्नि पुष्पे ह्री सुन्दरेऽर्थवत् ॥ ५० ॥  
 पार्श्वमस्त्री समीपेऽपि पूज्यः श्वशुरमान्ययोः ।  
 स्नेहे केलौ प्रेम न स्त्री पीतिः पाने हये तु ना ॥ ५१ ॥  
 स्यात् परेत इव प्रेतो मृतप्राणिविशेषयोः ।  
 लाभनिष्पत्तिभोगेषु बीजे फाले धने फलम् ॥ ५२ ॥  
 फली ताम्रादिफलके बहिर्नाऽग्नौ नपुं कुशे ।  
 ब्रह्मा रुद्रेन्द्रभृगवादिविप्रविग्नधातुषु ॥ ५३ ॥  
 अर्केऽग्नौ ह्री तु वेदेऽन्ने स्वाध्यायात्मतपःसु च ।  
 बलं रूपेऽस्थनि स्थौल्ये शक्तिरेतश्चमपु च ॥ ५४ ॥  
 बलो रामे बलाढ्ये च बाढं त्वनुमते दृढे ।  
 बिम्बोऽस्त्री मण्डलसमप्रतिमामुखलक्ष्मसु ॥ ५५ ॥  
 प्रतिबिम्बे तत्प्रकृतौ क्ली तु स्याद् बिम्बिकाफले ।  
 साज्ये मधुनि तक्कोले बोलं बोलोऽम्भसां भ्रमः ॥ ५६ ॥  
 बोधिरर्थे सुविज्ञाने कुक्कुटाश्वत्थयोन्तु ना ।  
 बालोऽक्ली नीलभिण्ड्यां च भेलौ तूडुपभीरुकौ ॥ ५७ ॥  
 भगं योन्यां भगो यत्ने यशोवीर्याकभूतिषु ।  
 कान्तीच्छाज्ञानवैराग्यधर्मैश्वर्यतपःसु च ॥ ५८ ॥  
 खादौ जन्तौ च भूतं क्ली समातीतोचिते त्रिषु ।  
 भास्वानिन्दौ भास्वरेऽर्के भेको वर्षाभिव कातरे ॥ ५९ ॥  
 अन्नतत्परयोर्भक्तं भद्रं कल्याणसौख्ययोः ।  
 मन्दाः सरोगनिर्भाग्यस्वल्पाज्ञापदुसूर्यजाः ॥ ६० ॥  
 क्षौद्रादौ तद्रसेऽप्यस्त्री ना वसन्ते रसेऽसुरे ।  
 चैत्रे मधूके क्ली त्वप्सु मद्ये पुष्परसे मधु ॥ ६१ ॥  
 अक्ली मणिरजाकण्ठस्तने रत्नेऽप्यलिङ्गरे ।  
 मात्रा परिच्छदेऽर्थेशे प्रवृत्तौ कर्णभूषणे ॥ ६२ ॥

अश्रवावये माने मात्रं कात्स्न्येऽवधारणे ।  
 मध्यं युक्तेऽन्तराले च महद्राज्यविशालयोः ॥ ६३ ॥  
 मोचा कदल्यां स्त्री वृक्षरसे ना पाटले नषण् ।  
 मौलिः संयतकेशेषु चूडायां मुकुटेऽप्यषण् ॥ ६४ ॥  
 मलं किट्टाघयोश्चास्त्री यमजान्तकयोर्यमः ।  
 ययुर्ना मोक्षमार्गेऽश्वे स्त्री त्वाप्तौ दीर्घयष्टिके ॥ ६५ ॥  
 युगोऽस्त्री स्यन्दनावङ्गे क्ली तु युग्मे कृतादिके ।  
 योनिः स्त्रीणां भगे स्थाने कारणे ताम्रकेऽप्यषण् ॥ ६६ ॥  
 योग्यं यन्त्रक्षमापूपयानोपायिषु चन्दने ।  
 योग्याभ्यासः क्षमापुण्ये रोको रश्मौ बिले नपुम् ॥ ६७ ॥  
 राजते भूपणे रूप्यं रजते हेम्नि चाहते ।  
 त्रिषु प्रशस्तरूपेऽथ रणोऽस्त्री युधि ना ध्वनौ ॥ ६८ ॥  
 राष्ट्रेऽस्त्री विषये जन्तौ लोहोऽस्त्री तैजसायसोः ।  
 लक्षं नपुं शरव्ये ना स्त्री व्यसजे नियुते न ना ॥ ६९ ॥  
 वर्णो नीलादिविप्रायोः कीर्तौ गीतिक्रमे स्तुतौ ।  
 कुथे वृतेऽक्षरे त्वस्त्री प्रकारे लेपशोभयोः ॥ ७० ॥  
 वशा करिण्यां बन्ध्यायां रामायां दुहितर्यपि ।  
 वशो जनस्पृहायत्तेऽवायत्तत्वप्रभुत्वयोः ॥ ७१ ॥  
 वरो ना रूपजामात्रोर्देवादेरीप्सिते वृत्तौ ।  
 त्रिष्वग्रये क्ली मनागिष्टे व्यक्तं स्पष्टे बुधे तु ना ॥ ७२ ॥  
 वत्सो ना कुटजे वर्षे तर्णके तनयादिके ।  
 बाले च वक्षसि त्वस्त्री वज्रोऽस्त्री हीरकास्त्रयोः ॥ ७३ ॥  
 व्यालो दुष्टगजे सर्पे श्वापदे च पुमांस्त्रिषु ।  
 शठेऽथ वित्तमर्थे क्ली त्रिषु ख्याते विचारिते ॥ ७४ ॥  
 वीतं शान्ते दुर्गजाश्वे वधो हिसितृहिसयोः ।  
 वार्ता वातिङ्गणोदन्तवाणिज्यादिषु वर्तने ॥ ७५ ॥  
 निःसारारोग्ययोः षण्डो वृत्तिमन्नीरुजोस्त्रिषु ।  
 वृत्तं स्वरूपे चरिते वृत्तौ छन्दोविधासु च ॥ ७६ ॥  
 त्रिष्वतीतदृढाधीतवर्तुलेष्वथ गीष्पतौ ।  
 श्रेष्ठोक्षाश्वाखुरेतःसु पुं धर्मेन्द्रबले वृषः ॥ ७७ ॥  
 वसुर्हृदेऽग्नौ योक्त्रेऽशौ वसु तोये धने मणौ ।  
 विश्वं जगति सर्वस्मिन्त्रिषु शुण्ठ्यां पुनर्न ना ॥ ७८ ॥



वप्रः पितरि ना न स्त्री क्षेत्रे रोधसि सानुनि ।  
 वर्षोऽस्त्री भारताद्यब्दवृष्टिषु प्रावृष्टि स्त्रियः ॥ ७६ ॥  
 वास्त्वस्त्री गृहभूपूर्योगृहे सीमसुरुङ्गयोः ।  
 वानं शुष्के गतौ व्यूतौ गन्धे वृद्धौ सुधीयमौ ॥ ८० ॥  
 वर्ष्म न स्त्री शुभाकारे सौम्ये देहप्रमाणयोः ।  
 विभुः सर्वगते पत्यौ चन्द्रे रविकुबेरयोः ॥ ८१ ॥  
 वीरो राहौ हरे शक्रे शूरे स्कन्दकुबेरयोः ।  
 गजप्रहणभूमौ स्त्री वारिः स्यात् सलिलं नपुम् ॥ ८२ ॥  
 शङ्खऽस्त्री वलये कम्बौ संख्यायां च निधौ तु ना ।  
 अमावस्यां च नागे च शितौ बाणतनूकृतौ ॥ ८३ ॥  
 शिवा हरीतकी क्रोष्टा शमी नद्यामलक्युमा ।  
 शिवो घोले पद्मरागे हरे कीले शिवं जले ॥ ८४ ॥  
 भद्रे चाथोपधा शुद्धसचिवेऽग्नौ हरौ शुचिः ।  
 चन्द्रेऽर्के च त्रिषु त्वेष शुद्धेऽनुपहते शिते ॥ ८५ ॥  
 शुक्रः सिते कवौ चन्द्रे मासभेदेऽनले द्विजे ।  
 शुक्रं मेध्येऽप्सु पुण्येऽर्थे रुक्मेऽक्षिरुजि रेतसि ॥ ८६ ॥  
 क्रीडाम्बुयन्त्रे शृङ्गोऽस्त्री पर्वताग्रप्रभुत्वयोः ।  
 पञ्चङ्गे चाथ शेषस्त्रिष्वन्यस्मिन्नुपयुक्ततः ॥ ८७ ॥  
 माल्याक्षतादिदाने स्त्री ना नागेशाप्रधानयोः ।  
 ना पर्याणे विहङ्गे स्त्री शारिर्गृते गुडे नषण् ॥ ८८ ॥  
 पथि देये शुल्कमस्त्री जामात्रा यच्च दीयते ।  
 श्रुतं शास्त्रावधृतयोर्नपुमाकर्णितेऽर्थवत् ॥ ८९ ॥  
 सजातिशिल्पसंहत्यामषण्डः श्रेणिरावलौ ।  
 शौण्डी जलदमालायां शौण्डी समदकुक्कुटौ ॥ ९० ॥  
 शक्रो विष्ठा पशूनां स्यादेशे च गवये शक्राः ।  
 शबले मारुते शारः शुद्धाः पूतार्ककेवलाः ॥ ९१ ॥  
 शुभ्रिर्नार्केऽर्थवत्सौम्ये शूरो विक्रान्तकुक्कुटौ ।  
 शूलोऽस्त्री रुजि शस्त्रे च श्वेतं धवलरूपयोः ॥ ९२ ॥  
 शीतो ना वेतसे शैलौ शैत्ये क्ली तद्वति त्रिषु ।  
 सत्त्वोऽस्त्री जन्तुषु क्ली तु व्यवसाये पराक्रमे ॥ ९३ ॥  
 आत्मभावे पिशाचादौ द्रव्ये सत्तास्वभावयोः ।  
 प्राणे बलेऽन्तःकरणे स्वामी पत्यौ षडानने ॥ ९४ ॥

समा स्त्री वत्सरे साधुसर्वतुल्येषु वाच्यवत् ।  
 परमार्थेऽर्थवत् सत्यं षण्डः शपथतथ्ययोः ॥ ९५ ॥  
 स्पर्शः संस्पर्शने स्पर्शपतापप्रदानयोः ।  
 साधुस्त्रिषुचिते सौम्ये सज्जने वार्धुषौ पुमान् ॥ ९६ ॥  
 सारो बले स्थिरांशेऽर्थे पुमान् न्याये वरेऽर्थवत् ।  
 स्त्री नद्यां ना नदे सिन्धुर्देशभेदेऽम्बुधौ गजे ॥ ९७ ॥  
 सौम्यो विप्रे सोमजेऽब्दे सुन्दरे सोमदैवते ।  
 सखा सहाये बन्धौ ना सूक्ष्ममध्यात्मदम्भयोः ॥ ९८ ॥  
 सूनं पुष्पे सुतायां स्त्री स्नेहोऽस्त्री द्रवहादयोः ।  
 विष्णुचन्द्रेन्द्रवातार्कयमाश्वांशुशुर्काभिषु ॥ ९९ ॥  
 कपिभेकाहिसिंहेषु हरिर्ना कपिले त्रिषु ।  
 हयो वशीक्रिया मन्त्रे ह्वयं दध्न्युपलेपने ॥ १०० ॥  
 हत्प्रिये हृद्धिते हज्जे ह्रीकौ नकुललज्जितौ ।  
 यमेऽल्पे वामने ह्रस्वो हरित् स्त्री दिशि षण् तृणे ॥ १०१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

द्वयक्षरकाण्डः समाप्तः ॥ ६ ॥



## ७. अथ त्र्यक्षरकाण्डः

पुलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अविनौ विहगाध्वर्यु अरन्ती हस्तकूर्परौ ।  
 अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रे मरणे दण्डदोषयोः ॥ १ ॥  
 आसारः स्यात् प्रसरणे वेगवृष्टौ सुहृद्वले ।  
 आप्रहः स्यात् स्वीकरणे निर्बन्धेऽनुग्रहेऽपि च ॥ २ ॥  
 आम्नायोऽध्ययने वेदे सम्प्रदाये कुलेऽपि च ।  
 आकर्षः शारिफलको द्यूत आकृष्टिपाशकौ ॥ ३ ॥  
 गन्धमाल्योपहारे स्यादायोगो व्यावृतावपि ।  
 आनर्त्तो नृत्तशालायां देशभेदे जने युधि ॥ ४ ॥  
 आक्रन्दः क्रन्दने रावे नाथे घोररणेऽपि च ।  
 आधार आलवालेऽम्बुबन्धेऽधिकरणेऽपि च ॥ ५ ॥  
 आशिरः क्षीरविकृतौ भोजने पावके रवौ ।  
 आवापो न्यास आवाले स्मरे धातरि चात्मभूः ॥ ६ ॥  
 श्रोण्याञ्जारोह आकारस्त्वाकृतावात्मवैकृते ।  
 आमोदौ हर्षसौगन्धे आभोगौ यत्नपूर्णते ॥ ७ ॥  
 आघातौ घातसीमानावाहारौ भक्षणान्धसी ।  
 आलोकौ दर्शनोद्योतावागमौ शास्त्रमागतिः ॥ ८ ॥  
 रुग्भीतितापेष्वतङ्क आशुगोऽर्के शरेऽन्तिले ।  
 तदात्वे पात आपात आकरो निकरे खनौ ॥ ९ ॥  
 अग्न्याकर्षणमाक्षेप आलम्भः स्पर्शहिंसयोः ।  
 ईशानौ हरिधाताराबुत्सेधौ वपुरुन्नती ॥ १० ॥  
 उपाधिर्धर्मचिन्तायां कुडुम्बव्यापृतेऽपि च ।  
 उत्सवस्तिवच्छाप्रसर उत्सेधामर्षयोर्महे ॥ ११ ॥  
 उदर्क उत्तरे काले यज्ञ स्यात् फलमुत्तरम् ।  
 उदान उदरावर्त्ते सर्पवायुप्रभेदयोः ॥ १२ ॥  
 ऊर्णायुर्णनाभे स्थान्मेघतल्लोमकम्बले ।  
 ऋषभोऽग्रये मत्तगजे श्रोत्ररन्ध्रे स्वरे वृषे ॥ १३ ॥

कुम्भीरपुच्छे च जलस्थाने त्वृक्षर ऋत्विजि ।  
 वेणौ दुमाङ्गे रोमाङ्गे क्षुद्रशत्रौ च कण्टकः ॥ १४ ॥  
 कञ्चुकः सर्पनिर्मोके कवचे वारवाणके ।  
 कलापो भूषणे काञ्च्यां सङ्घाते बर्हतूणयोः ॥ १५ ॥  
 क्षारको मत्स्यपद्यादिपिटके पुष्पजालके ।  
 दैवे कृतान्तः सिद्धान्ते यमाकुशलकर्मणोः ॥ १६ ॥  
 कौशिको गुग्गुलुलकशक्रषिष्वाहितुण्डिके ।  
 कलङ्कोऽङ्केऽपवादे च कलहो द्वन्द्वयुद्धयोः ॥ १७ ॥  
 कलमोऽङ्कुरलेखन्योः कठाकुः खगशिल्पिनोः ।  
 कारुजः कलभे नाके क्षवधुः क्षुतकासयोः ॥ १८ ॥  
 कर्परोऽम्रौ कपालेऽपि करभोऽपि खरोष्ट्रयोः ।  
 शरे किंशारुकादम्बौ कुरण्डस्तु ऋषेऽपि च ॥ १९ ॥  
 कुटीरस्तु कुलीरेऽपि कुम्भीलस्तस्करेऽपि च ।  
 कपोतः पारावतेऽपि कोकिलस्तूल्मुकेऽपि च ॥ २० ॥  
 वायौ वसन्ते क्षिपणुः क्षिपणो वायुकालयोः ।  
 कुषाकुः पावके सूर्ये केसरी हयसिंहयोः ॥ २१ ॥  
 किङ्किरौ क्रोष्टुखट्वाङ्गौ खेचरः पवनेऽपि च ।  
 खपुरः पूगवेष्टेऽपि पूगनिर्यासयोरपि ॥ २२ ॥  
 खोलकः पूगकोशे स्याद् भग्नभाण्डे शिरस्त्रके ।  
 गोलको मणिके पिण्डे कम्बले विधवासुते ॥ २३ ॥  
 अन्तराभवसत्त्वे स्याद् गन्धर्वो गायने हये ।  
 गरुत्मान् विहगे तादर्ये वृषार्केन्द्रेषु गोपतिः ॥ २४ ॥  
 चङ्कुरः स्यन्दने दैत्ये चाक्रिकौ तैलघाण्टिकौ ।  
 चिकिरोऽहौ गेहबध्नौ जसुरिः पावके शनौ ॥ २५ ॥  
 जम्बुकौ क्रोष्टुवरुणौ जम्बालौ पङ्कशैवलौ ।  
 श्वेतस्तिलोऽपि जामाता जीमूतौ मेघपर्वतौ ॥ २६ ॥  
 जगलो मेदके पिष्टमद्येऽपि कितवेऽपि च ।  
 जनिमा मातापितराबुत्पत्तिस्तनयोऽपि च ॥ २७ ॥  
 त्रिवर्गस्त्रिफला व्योषं स्थितिवृद्धिक्षया अपि ।  
 तमोनुदोऽग्निचन्द्रार्कास्तक्षकौ नागवर्धकी ॥ २८ ॥  
 तपनो भास्करो ग्रीष्मे त्रिदिवो व्योम्नि दिव्यपि ।  
 त्रिशङ्कू तादर्यमार्जारौ त्रिधामा केशवेऽनले ॥ २९ ॥



सपिण्डपुत्रौ दायादौ द्वापरौ युगसंशयौ ।  
 दिवौकाश्चातके देवे दुघणौ धातुमुद्गरौ ॥ ३० ॥  
 दरथो विवरे भीत्यां दिक्षु चापि प्रसारणे ।  
 द्विजातिश्च द्विजन्मा च ब्राह्मणादिपतत्रिणोः ॥ ३१ ॥  
 दुहिणौ हरिधातारौ शास्त्रोदाहरणयोस्तु दृष्टान्तः ।  
 दोषज्ञौ बुधभिषजौ धरुणाः स्तनधातुलोकार्काः ॥ ३२ ॥  
 धाराटश्चातकेऽश्वे च नभसौ व्योमसागरौ ।  
 निवेशौ शबिरोद्वाहौ निरोधौ रोधसंक्षयौ ॥ ३३ ॥  
 निदेशावाज्ञाकथने विग्रहः सीम्नि भर्त्सने ।  
 निवहो वायुभेदेऽपि निषङ्गस्तूणसङ्गयोः ॥ ३४ ॥  
 ऊर्णाविकारे नमतो धूमे दिनकरेऽपि च ।  
 निगमो निश्चये वेदे पुरे पथि वणिक्पथे ॥ ३५ ॥  
 नितम्बः पश्चिमश्रोणिभागेऽद्रिकटके कटौ ।  
 निष्क्रमो बुद्धिसामर्थ्ये निगतौ चाथ भूपतौ ॥ ३६ ॥  
 नरेन्द्रो विषवैद्ये च नैगमस्तु श्रुतावपि ।  
 निकारस्तु तिरस्कारे धान्यस्योत्क्षेपणेऽपि ॥ ३७ ॥  
 द्वार्यापीडे काथरसे निर्यूहो नागदन्तके ।  
 निषधोऽद्रौ देशभेदे कठिने तस्य राजनि ॥ ३८ ॥  
 निहवः स्यादविश्वासेऽपह्वे निक्वतावपि ।  
 निर्वेशः सम्मूर्च्छने स्यात् कर्मभृत्युपभोगयोः ॥ ३९ ॥  
 प्रतिज्ञायन्त्रणाऽऽज्ञासु नियमो निश्चये व्रते ।  
 पतङ्गः शलभे शालौ मार्जारेऽग्नौ रवौ खगे ॥ ४० ॥  
 परिधिर्यज्ञिये काष्ठे प्राकारे परिवेषणे ।  
 परिघाते मूढगर्मे परिघोऽर्गलदण्डयोः ॥ ४१ ॥  
 परागः पुष्परेणौ च स्नानीयादौ रजस्यपि ।  
 पर्जन्यो गर्जदध्रेऽध्रध्वाने शक्रेऽस्रयन्त्रके ॥ ४२ ॥  
 प्रलयो मरणे श्लेषे मूर्च्छासंवर्तयोरपि ।  
 प्रवहो वायुभेदे स्याद् वायुमात्रे बहिर्गतौ ॥ ४३ ॥  
 प्रयोगो ग्राम्यधर्मे स्यात् कुसीदे कर्मणां विधौ ।  
 प्रणयः स्यात् परिचये याच्न्यायां सौहृदेऽपि च ॥ ४४ ॥  
 प्रवाहस्तु प्रकृष्टाश्वे जलवेगे प्रवर्तने ।  
 पादपः पादपीठे स्यात् पादयाने द्रुमेऽपि च ॥ ४५ ॥

पिण्याकः सिल्लके किण्वे श्रीवासतिलकल्कयोः ।  
 पुरुषो धातुपुन्नागपुंस्त्वात्मपरमात्मनोः ॥ ४६ ॥  
 पुलकोऽस्त्रे रत्नराज्यां रोमास्त्रे हीरके क्रिमौ ।  
 पुलाकस्तुच्छधान्ये स्यात् सङ्क्षेपे भक्तसिक्थके ॥ ४७ ॥  
 प्रसवो जननानुज्ञापुत्रेषु फलपुष्पयोः ।  
 पारम्पर्ये प्रसङ्गेऽपि प्राणिनां गर्भमोचने ॥ ४८ ॥  
 तुलासूत्रेऽश्वादिरश्मौ प्रग्राहः प्रग्रहः पुनः ।  
 तयोश्च संयमोद्योतपूलाबन्धगर्वधेषु च ॥ ४९ ॥  
 प्रभवः स्यादपां मूले विक्रमे जन्मकारणे ।  
 आयोपलब्धिस्थाने च पुद्गलो देह आत्मनि ॥ ५० ॥  
 प्रत्ययस्तु ख्यातिरन्ध्रविश्वासाधीनहेतुषु ।  
 विज्ञाने शपथे शब्दे प्रस्तरोऽश्मा मणिः कुशः ॥ ५१ ॥  
 पर्यस्त्यामपि पर्यङ्कः प्रकोष्ठोऽलिन्दकेऽपि च ।  
 गजस्कन्धेऽपि पणवः प्रघणौ लोहमुद्गरौ ॥ ५२ ॥  
 प्रियकः कृकलासेऽपि पेचकस्त्वचि हस्तिनाम् ।  
 पुच्छमूले प्रपातस्तु पाते रोधसि सौप्तिके ॥ ५३ ॥  
 पदाजिर्युधि मार्गे च रक्षोवृक्षौ पलाशिनौ ।  
 प्रतिघौ रुद्रप्रतीघातौ प्रतापौ पौरुषातपौ ॥ ५४ ॥  
 प्रसादौ स्वाच्छ्रयानुरोधौ पर्यायोऽवसरे क्रमे ।  
 प्रदोषौ दोषराज्यशौ प्रणिधिः प्रार्थने चरे ॥ ५५ ॥  
 वरुणेऽनले प्रचेताः प्रतापमाहात्म्ययोः प्रभावः स्यात् ।  
 भेदसमते प्रकारौ विपर्यये विस्तरे प्रपञ्चः स्यात् ॥ ५६ ॥  
 रुग्भङ्गबाणाः प्रदराः श्रेष्ठोक्षाणौ तु पुङ्गवौ ।  
 पिशाचौ सत्त्वमार्जारौ पिचण्डः कुक्षिशय्ययोः ॥ ५७ ॥  
 पृथुक्श्चिपिटे बाले पृदाकुर्व्याघ्रसर्पयोः ।  
 भासन्तावर्कनक्षत्रे सूर्यश्चाग्निश्च भास्करौ ॥ ५८ ॥  
 भ्रातृव्यौ भ्रातृजामित्रौ भुरण्यु विष्णुभास्करौ ।  
 भूमिस्पृशौ वैश्यनरौ भुवन्यौ वह्निभास्करौ ॥ ५९ ॥  
 भूतात्मा पवने देहे यश्च कर्त्ता तनौ पुमान् ।  
 राजभेदाहिमार्जारश्चार्कशुक्रेषु मण्डली ॥ ६० ॥  
 धुतूरे सर्पभेदे च मातुलो मदनः पुनः ।  
 सिक्थे वसन्ते धुतूरे कन्दर्पेऽप्यथ माधवः ॥ ६१ ॥



विष्णौ वसन्ते वैशाखे मरूकौ भेककेकिनौ ।  
 मिहिः वायुमेघार्का यज्वरौ तु हयाध्वरौ ॥ ६२ ॥  
 युञ्जानः सारथौ विप्रे रभसो विषवेगयोः ।  
 रक्ताक्षौ रक्षोमहिषौ रमती स्वर्गमन्मथौ ॥ ६३ ॥  
 रुचको भूषणे दन्ते रुचथः कुक्कुटे ध्वनौ ।  
 वज्रथः कोकिले काले वर्तकोऽश्वसुरे खगे ॥ ६४ ॥  
 व्यवायो मैथुनेऽन्तर्धौ चित्रे दर्पे च विस्मयः ।  
 वाहसौ वह्नयजगरौ दुप्रवालौ तु विद्रुमौ ॥ ६५ ॥  
 विस्त्रम्भौ स्नेहविश्वासौ विबुधौ सुरपण्डितौ ।  
 विकारौ रोगविकृती विष्किरौ शिखकुक्कुटौ ॥ ६६ ॥  
 रहःप्रकाशौ वीकाशौ विपाकः स्वेदपाकयोः ।  
 विश्वात्माकेऽपि विष्कम्भो विस्तारप्रतिबन्धयोः ॥ ६७ ॥  
 स्पर्धायां पौरुषे व्यामे व्यायामोऽथ परिक्रमे ।  
 विहारः सौगतावासे क्रीडायां चाथ विग्रहः ॥ ६८ ॥  
 युद्धे देहे विस्तरे च कुशमुष्टौ च विष्टरः ।  
 विभ्रमः संशये भ्रान्तौ शोभायां चाथ वालुका ॥ ६९ ॥  
 विकीर्णोऽर्थश्च विकिरौ विसर्गौ मुक्तिवर्चसी ।  
 विनयो धर्मविद्याधीशिक्षाचारप्रशान्तिषु ॥ ७० ॥  
 विवधो वीवधश्च द्वौ पर्याहारेऽध्वभारयोः ।  
 वृत्तान्तः स्यात् प्रकरणे कात्स्न्ये वार्ताप्रकारयोः ॥ ७१ ॥  
 वासरौ नागदिवसौ वैकुण्ठाविन्द्रकेशवौ ।  
 विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि ॥ ७२ ॥  
 शपथः कर आक्रोशे शपने च सुतादिभिः ।  
 बालके शिशुमारे च शिशुकोऽथाध्वरे पशौ ॥ ७३ ॥  
 अध्वर्यौ च श्रपायः स्याच्छकुन्तौ भासपक्षिणौ ।  
 कचयान्तरेऽपि शुद्धान्तः श्वशुर्यौ स्यालदेवरौ ॥ ७४ ॥  
 मन्त्री सहायः सचिवः सहुरी वृषभास्करी ।  
 स्यमीकौ वृक्षवल्मीकौ समीकौ मिथुनार्णवौ ॥ ७५ ॥  
 सरण्यू वायुजलदौ संस्तरौ प्रस्तराध्वरौ ।  
 क्षये रोधे च संरोधः संवर्तोऽब्दे जगत्क्षये ॥ ७६ ॥  
 सङ्घर्षौ घर्षणं स्पर्धा शरखड्गौ तु सायकौ ।  
 समिको वृक्षवल्मीको सृदाकू व्याघ्रपावकौ ॥ ७७ ॥

सविता सारथौ रुद्रे पितर्यर्के सुजातिभिः ।  
 सन्निवेशे गणे गेहे संस्त्यायः संग्रहाः पुनः ॥ ७८ ॥  
 स्वीकारोच्छ्वायसङ्क्षेपाः सम्भ्रमोऽत्यादरे भये ।  
 सम्भवो जन्मसंहत्योराधारानतिरेचने ॥ ७९ ॥  
 आधेयस्याथ सम्भोगो भोगे करिकरे रते ।  
 प्रत्यक्षे सन्निधाने च सन्निधिः स्थपतिः पुनः ॥ ८० ॥  
 स्थापत्येऽधिपतौ तद्दिग् बृहस्पतिसवी च यः ।  
 समाधिर्ध्याननीवाकप्रतिज्ञासु समर्थने ॥ ८१ ॥  
 सन्नयः समवाये च पृष्ठस्थायिबलेऽपि च ।  
 समयस्तु क्रियाकारे सङ्केते चरिते सताम् ॥ ८२ ॥  
 सिद्धान्ते शपथे काले स्वाध्यायो जपवेदयोः ।  
 सारसो विहगे चन्द्रे हिमारिः पावके रवौ ॥ ८३ ॥  
 हर्यक्षो धनदे सिंहे व्रीह्याब्दाचिष्णु हायनः ।  
 महोदरेऽपि हेरम्बो हरिमा मृत्युरोगयोः ॥ ८४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

त्रयक्षरकाण्डे पुलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥



## स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अमनिः पशुवङ्मण्यां जलपात्रे च दारवे ।  
 अदितिः शैलकन्यायां पृथिव्यां देवमातरि ॥ १ ॥  
 अभिरुया त्विड्यशोनामस्वम्बिका मातुलान्युमा ।  
 अमतिर्मरणे मोहेऽप्याकारे देह आकृतिः ॥ २ ॥  
 आयतिर्दीर्घतायां स्यात् प्रभावागामिकालयोः ।  
 उपधा सुपरीक्षाऽपि कृपाण्यामपि कर्तरी ॥ ३ ॥  
 कल्पना समर्थनाऽपि कषिके सस्यमक्षिके ।  
 कणिका तिलकाण्डेऽशो गोधूमे तस्य चूर्णके ॥ ४ ॥  
 करिका यातनायां स्याच्छ्लोके विवरणे कृतौ ।  
 कूचिका मस्तुपिण्डेऽपि सूचितूलिकयोरपि ॥ ५ ॥  
 तुर्थेऽशो मापदण्डस्य मापस्यापि च काकणी ।  
 विशतौ च कपर्दानां पादुकैककपर्दयोः ॥ ६ ॥  
 गृहिणी काञ्चिकं जाया देहली गृहकारिका ।  
 वेश्याकरिण्योर्गणिका वेष्टनेऽपि च गोलका ॥ ७ ॥  
 पार्या कालेऽपि घटिका रथ्यायामपि चत्तरी ।  
 जुगुप्सा निन्दाघृणयोर्जननी करुणाऽम्बयोः ॥ ८ ॥  
 जगती विष्टपे मह्यां वास्तुच्छन्दविशेषयोः ।  
 छत्रान्तालाम्बिवस्त्रेऽपि भल्लरी केशवाद्ययोः ॥ ९ ॥  
 चापे तृणत्वे तृणता दारिद्र्येऽपि च दुर्गतिः ।  
 पद्माकरेऽब्जे नलिनी स्वास्थ्ये नाशे च निर्वृतिः ॥ १० ॥  
 निवृत्तिस्तु मनस्तोषे मोक्षेऽस्तमयबाढयोः ।  
 नालिका चुल्लिकारन्ध्रे विवरे वेणुभाजने ॥ ११ ॥  
 नाले काले देशमाने नियतिः संयमे विधौ ।  
 प्रकृतिः पञ्चभूतेषु स्वभावे मूलकारणे ॥ १२ ॥  
 छन्दःकारणगुह्येषु जन्त्वमात्यादिमातृषु ।  
 पक्षतिर्गरुतो मूले द्वयोः प्रतिपदोरपि ॥ १३ ॥  
 अधिकारे प्रकारे च प्रक्रियोत्पादनेऽपि च ।  
 गृहादिधिष्ये पिण्डे च जङ्गामांसे च पिण्डिका ॥ १४ ॥  
 परीष्टिर्मार्गणे भक्तौ पङ्क्तौ पथि च पद्धतिः ।  
 प्रतिष्ठे स्थितिमाहात्म्ये प्रतती ततिवीरुधौ ॥ १५ ॥

बोधे तिथौ च प्रतिपत् प्रवृत्तिर्वृत्त्युदन्तयोः ।  
 प्रवेणी तु कुथावेण्योः प्रसूतिः पुत्रजन्मनोः ॥ १६ ॥  
 पाताली वागुरा स्थाली बन्धकी तु करिण्यपि ।  
 वृद्धी पद्यवार्ताक्योः कण्टकार्या च वाचि च ॥ १७ ॥  
 भित्तिका तु शतावर्या वज्रे चाप्यथ मेखला ।  
 श्रोणिस्थानेऽद्रिकटके कटिबन्धेऽसिबन्धने ॥ १८ ॥  
 महिषी पशुराट्पत्न्योर्मर्यादा सीम्नि धारणे ।  
 पेटा पुरी च मञ्जूषा मनाका कामिनी गजी ॥ १९ ॥  
 गद्यस्ते रेवती देव्यां शुक्लायां रजनी निशि ।  
 रोचना रक्तकल्हारे गवां पित्ते वरस्त्रियाम् ॥ २० ॥  
 पथ्यायां गद्युमाकन्यालोहिनीषु च रोहिणी ।  
 नक्षत्रे कण्ठरोगे च वर्तनी वृत्तिमार्गयोः ॥ २१ ॥  
 विपणिस्तु निषद्यापि वालुकोमिश्र वालुका ।  
 बडवा स्त्रीविशेषेऽपि वाशिता करिणीस्त्रियोः ॥ २२ ॥  
 वसतिस्तु निशि स्थित्यां जैनानामाश्रमे गृहे ।  
 वाणिनी तु विदग्धायां नर्तक्यां मत्तयोषिति ॥ २३ ॥  
 वीणा विपञ्ची सैवालपदण्डा सा नवतन्त्रिका ।  
 वृषल्युतुमती कन्या शूद्रा बन्ध्या मृतप्रजा ॥ २४ ॥  
 वनिता स्निग्धनार्याश्च नार्याश्चाप्यथ वेदिका ।  
 वेदिश्चाङ्गुलिमुद्रा च काञ्ची छन्दश्च शकरी ॥ २५ ॥  
 शङ्कुल्यूपभेदेऽपि शिञ्जिनी नूपुरज्ययोः ।  
 शर्करा तु शिलाभेदे रुग्भेदाल्पकपालयोः ॥ २६ ॥  
 शर्करावत्प्रदेशेषु सितायां शकले गुडे ।  
 समितिः परिषत्स्थाने युद्धे संसदि सङ्गमे ॥ २७ ॥  
 सन्ततिस्त्वन्ववाये स्यात् पारम्पर्ये सुतेऽपि च ।  
 संहिता वर्णसंयोगे शास्त्रवेदैकदेशयोः ॥ २८ ॥  
 सिद्धौ स्वभावे संसिद्धिर्वाञ्छाऽनुज्ञा च सम्मतिः ।  
 संविती ज्ञानसंवादौ ह्यादन्यौ वज्रविद्युतौ ॥ २९ ॥  
 हरिणी हरिता पाण्डुः सुवर्णप्रतिमा मृगी ॥ २९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

अक्षरकाण्डे स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥



## नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अयनं निलये मार्गे सूर्योदग्दक्षिणागतौ ।  
 अंशुकं केवले वस्त्रे सूक्ष्मवस्त्रोत्तरीययोः ॥ १ ॥  
 अभीक्ष्णमव्ययं वा स्यात् पौनःपुन्यभृशार्थयोः ।  
 अरुलं सलिले पोतेऽप्यलीकं त्वप्रियेऽनृते ॥ २ ॥  
 अनुकमन्वये शीलेऽप्यास्पदं स्थानकृत्ययोः ।  
 स्तम्भमात्रेऽपि चालानं हस्तिनोऽसेऽपि चासनम् ॥ ३ ॥  
 रेतसीन्द्रियमन्त्रे च दर्शनेऽक्षणि चेक्षणम् ।  
 उद्यानं सङ्ग्रहोद्गत्योर्वनभेदे प्रयोजने ॥ ४ ॥  
 उत्थानमुद्यमे वास्तौ तन्त्रेहापौरुषेषु च ।  
 उद्धानमुद्गमे चुल्ल्यामौशीरे दण्डचामरे ॥ ५ ॥  
 कटीरं कन्दरे कट्यां कलत्रं श्रोणिभार्ययोः ।  
 क्रन्दनं रुदिते ध्वाने कार्मुकं शस्त्रचापयोः ॥ ६ ॥  
 कारणं हेतुवधयोः कारकं हिंसकेऽपि च ।  
 कीलालं रुधरे तोये कुहरं गह्वरे बिले ॥ ७ ॥  
 कुरीरं ग्राम्यधर्मेऽब्जे कुन्नानं कुण्डशिक्ययोः ।  
 कैतवं कपटे द्यूते कृपीटमुदरे जले ॥ ८ ॥  
 करणं कारणे काये साधने बवकादिषु ।  
 स्पृष्टाचुच्चारणाभेदध्यानपद्मासनादिषु ॥ ९ ॥  
 रतबन्धे नाड्यभेदे गीतके कर्मणीन्द्रिये ।  
 कौतुकं विषयाभोगे हस्तसूत्रे कुतूहले ॥ १० ॥  
 कामे ख्याते मङ्गले च हस्तसूत्रेऽपि कङ्कणम् ।  
 कटिचर्म चर्म सुस्यूतं कटीवेष्टनचर्म च ॥ ११ ॥  
 कोदण्डं तु चतुर्हस्तं धनुर्वेणुधनुर्धरः ।  
 केतौ तु केतनं चापे कृत्यार्थोपनिमन्त्रणे ॥ १२ ॥  
 कौलीनं प्राणिभिर्द्युते कुलीनत्वापवादयोः ।  
 गुह्यकार्ये च कौपीनं गन्धनं तु प्रकाशने ॥ १३ ॥  
 सूचनेऽपि च हिंसायां परस्योत्साहनेऽपि च ।  
 ग्रहणं बन्दिरादानमादरोऽर्काद्यपलवः ॥ १४ ॥

गह्वरं कन्दरे दम्भे चलनं पादयन्त्रयोः ।  
 जघनं स्यात् कटौ पूर्वश्रोणिभागापराङ्गयोः ॥ १५ ॥  
 तलिमं कुट्टिमे तल्पे तर्पणं त्विन्धनेऽपि च ।  
 तानितं तूलितपटे गुणवादित्रभाण्डयोः ॥ १६ ॥  
 तेमनं व्यञ्जने क्लेदे तोत्रे तोदे च तोदनम् ।  
 दर्शनं चक्षुषि स्वप्ने बुद्धिशस्त्रोपलब्धिषु ॥ १७ ॥  
 दुकूलं शुक्लवस्त्रेऽपि द्योतनं दीपनेऽक्षिण च ।  
 धाराग्रमवतारेऽश्रौ निमित्तं हेतुलक्षयोः ॥ १८ ॥  
 नाभीलं नाभिगन्धश्च वङ्कणं च वरस्त्रियाः ।  
 निर्याणं हस्तिनेत्रान्ते मरणे निर्गमेऽपि च ॥ १९ ॥  
 निर्वाणं निर्वृतौ मोक्षे विनाशे गजमज्जने ।  
 निदानमपदाने स्यात् खण्डनेऽप्यादिकारणे ॥ २० ॥  
 पललं तिलचूर्णे स्यान्मांसकर्मभेदयोः ।  
 प्रयाणं गजद्वक्पूर्वप्रदेशे मरणे गतौ ॥ २१ ॥  
 प्रज्ञानं लाञ्छने बुद्धौ प्रसूनं फलपुष्पयोः ।  
 पातालं लोक और्वरच पतत्रं खे गरुत्याप ॥ २२ ॥  
 नवसूतगवीदुग्धे पीयूषममृतेऽपि च ।  
 प्रमाणं बोधनेयत्तामर्यादाशास्त्रहेतुषु ॥ २३ ॥  
 सम्यग्वक्त्रि चाथ स्यात् प्रायणं मरणे गतौ ।  
 पुष्करं हस्तिहस्ताग्रे जले वाद्यमुखे युधि ॥ २४ ॥  
 खेऽब्जे दिव्यसिधारायां तीर्थभेषजभेदयोः ।  
 ब्राह्मण्यं ब्राह्मणत्वे स्याद्विप्रौघे विप्रकर्मणि ॥ २५ ॥  
 वाह्नीकं कुङ्कुमं हिङ्गु भण्डनं कवचे रणे ।  
 भूतिकं भूमिनिम्बे च भूस्तृणे कत्तणेऽपि च ॥ २६ ॥  
 मणीचमग्रहस्तेऽपि पुष्पमौक्तिकयोरपि ।  
 मन्दिरं देहपुर्योश्च सम्बन्धे मैथुनं रते ॥ २७ ॥  
 यापनं स्यान्निरसने नृत्ते प्रस्यापनेऽपि च ।  
 लक्षणं कार्षिके चिह्ने नाम्नि मुद्राङ्गसम्पदोः ॥ २८ ॥  
 लाङ्गूलं वालधौ मेढ्रे वर्जनं त्यागहिंसयोः ।  
 वराङ्गं स्त्रीभगे मूर्ध्निच्छेदे वृद्धौ च वर्धनम् ॥ २९ ॥  
 व्यञ्जनं श्मश्रुनिष्ठानचिह्नेष्ववयवेऽक्षरे ।  
 वृद्धत्वे वृद्धसङ्घाते वृद्धकर्मणि वार्द्धकम् ॥ ३० ॥



बालकं त्वङ्गुलीये स्याद् बर्हिष्ठे वलयेऽपि च ।  
 व्युत्थानं प्रतिकूलत्वे स्वातन्त्र्यकरणेऽपि च ॥ ३१ ॥  
 व्यसनं शक्तिविपदोद्देवानिष्टफलंऽहसि ।  
 पैशुन्यादौ च कोपोत्थे मृगयादौ च कामजे ॥ ३२ ॥  
 विधानं हस्तिकबले प्रेरणेऽभ्यर्चने धने ।  
 वेतने चाप्युपाये च प्रकारे वैरकर्मणि ॥ ३३ ॥  
 वेष्टने मकुटोष्णीषौ शकले खण्डवलकले ।  
 शालूकं पङ्कजे कन्दे जले शमलमप्यधे ॥ ३४ ॥  
 शासनं निग्रहे लेख्ये वेदवाक्येषु कर्मणि ।  
 वाङ्मनियोगे प्रहरणे शास्त्रे ग्रामे च निष्करे ॥ ३५ ॥  
 साधनं शोकास धने सिद्ध्युपायनिवृत्तिषु ।  
 मारणे मृतसंस्कारे दापनेऽनुगमे गमे ॥ ३६ ॥  
 सेनाङ्गे यातनायाञ्च सेवनं स्यूतिसेवयोः ।  
 मृत्यौ समाप्तौ संस्थानं सन्निवेशे चतुष्पथे ॥ ३७ ॥  
 मणौ शीधौ शीधुपाने सरकं मद्यभाजने ।  
 सामर्थ्ये शक्तिसम्बन्धौ हृदयं तु मनस्यपि ॥ ३८ ॥  
 हिरण्यं काञ्चने वित्ते मानभेदेऽप्यकुप्यके ।  
 हरणं करणे नृत्ते चापेनान्यास्त्रवारणे ॥ ३९ ॥  
 हृतौ कथितशीताप्सु पणने यौतकादिके ॥ ४० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

व्यक्षरकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

### अर्थवल्लिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

अधमौ गर्हितन्यूनावभीकौ निर्भयाभीकौ ।  
 प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षमखिलं गर्ह्यकृत्स्नयोः ॥ १ ॥  
 आविष्टौ क्षिप्रकुटिलावाहता सादराचितौ ।  
 विपन्नप्राप्तावापन्नावाभीलौ कष्टभीषणौ ॥ २ ॥  
 आप्लुतौ स्नातकस्नातावाहतं गुणिते हते ।  
 आयस्तः कुपिते क्षिप्ते क्लेशिते तेजितेऽपि च ॥ ३ ॥  
 इरिणं तूषरस्थाने भूभागे च निराश्रये ।  
 उदारो महति ख्याते दक्षिणे दानशौण्डिके ॥ ४ ॥  
 उद्धृतं भुक्तनिर्मुक्ते तुलिते चाप्यथोच्छिद्यतम् ।  
 वृद्धे तुङ्गे समुत्पन्नेऽप्युदितौ कथितोद्गतौ ॥ ५ ॥  
 उदूढावूढप्रथुलावुत्तमौ प्रवरान्तिमौ ।  
 महत्युदात्त उच्चोक्तेऽप्युपोढो निकटोढयोः ॥ ६ ॥  
 अभ्यस्तेऽप्युचितं न्याग्येऽप्युषितं स्थितदग्धयोः ।  
 उत्तालो हुत उत्तानेऽप्युत्कटो मत्त उद्धटे ॥ ७ ॥  
 करालो दन्तुरे तुङ्गे विशाले विकृतेऽपि च ।  
 कर्कशः प्रखरस्पर्शो निर्दये साहसिन्यपि ॥ ८ ॥  
 द्वौ कनिष्ठकनीयांसौ यून्यत्यल्पेऽनुजेऽपि च ।  
 क्षुल्लका नीचनिःस्वाल्पाः कलितो ज्ञातबद्धयोः ॥ ९ ॥  
 कल्माषौ कृष्णमिश्रौ च कुहकोऽपीर्षया युते ।  
 क्षेत्रियं दुष्प्रतीकारे व्याधौ क्षेत्रोद्भवे तृणे ॥ १० ॥  
 देहान्तरचिकित्साहं गरले पारदारिके ।  
 चतुरौ दक्षधीमन्तौ जघन्योऽन्त्यकुपूपयोः ॥ ११ ॥  
 जरठः कठिने जीर्णे तलिनो विरलाल्पयोः ।  
 पशुः कालेऽपि निःशृङ्गो नरोऽश्मश्रुश्च तूपरौ ॥ १२ ॥  
 दुर्विधो निर्धने नीचे निहतो न्यक्स्वरे हते ।  
 निर्ग्रन्थः श्रमणे निःस्वे निरस्तस्तु निराकृते ॥ १३ ॥  
 निष्ठयते प्रास्तवान्ते च वचने च दुतोदिते ।  
 निवातो दृढसन्नाहे निर्वातेऽप्याश्रयेऽपि च ॥ १४ ॥  
 निर्दयः परदोषोक्तिपरे निष्ठुरभाषिणि ।  
 प्रणाययोऽसम्भतेऽपि स्यादभिव्यङ्गवत्यपि ॥ १५ ॥



प्रतीतो भूषिते ख्याते ज्ञाते प्रत्ययिते बुधे ।  
 प्रार्थितं त्वभियुक्ते स्यान्निहिते याचितेऽपि च ॥ १६ ॥  
 पिण्डलः स्थूलजङ्घे च गणनाकुशलेऽपि च ।  
 प्रतीच्यौ प्रतिपाल्याच्यौ प्रथमौ प्रवरादिमौ ॥ १७ ॥  
 प्रहतौ क्षुण्णव्युत्पन्नौ प्रयतौ पूतसंस्कृतौ ।  
 सव्यायत्तौ प्रसव्यौ द्वौ प्रवृद्धौ प्रसृतैर्धितौ ॥ १८ ॥  
 पिण्डितौ घनसङ्ख्यातौ प्रसिद्धौ ख्यातभूषितौ ।  
 पेशलौ चारुचतुरौ पूर्णश्रेष्ठौ तु पुष्कलौ ॥ १९ ॥  
 मिश्रास्त्रिगधौ च परुषौ प्रगाढौ गहने दृढे ।  
 पामरोऽपशदेऽङ्गे च बालशो बालमूर्खयोः ॥ २० ॥  
 बीभत्सौ कृरविकृतौ बहलौ सान्द्रपुष्कलौ ।  
 बन्धुरौ नम्रसुन्दरौ भङ्गुरौ वक्रनश्वरौ ॥ २१ ॥  
 भावितौ लब्धवासितौ भुजिष्यौ स्वैरिक्किङ्कुरौ ।  
 मधुरौ स्वादुसुन्दरौ मूर्च्छितौ मूढसोच्छ्रयौ ॥ २२ ॥  
 विधुतौ त्यक्तकम्पितौ विदितौ ज्ञानसंश्रुतौ ।  
 विलीनौ लीनविद्रुतौ वेक्षितौ धूतकुञ्चितौ ॥ २३ ॥  
 विगतौ वीतनिस्पृहौ विवित्तौ शुद्धनिर्जनौ ।  
 विवर्णौ मूर्खदुर्वर्णौ व्यायतो व्यापृते दृढे ॥ २४ ॥  
 विकृतौ रोगिदूरूपौ विशदो धवले शुचौ ।  
 वल्लभौ दयिताध्यक्षौ वरिष्ठोऽतिवरेऽत्युरौ ॥ २५ ॥  
 पृथौ कराले विकटो विसृतं विगते तते ।  
 वदान्यो वल्गुवाग्दात्रोर्वरीयान् सत्तमेऽत्युरौ ॥ २६ ॥  
 विवशस्त्वस्वतन्त्रात्माप्यरिष्टेन च दुष्टधीः ।  
 विधुरः पत्न्यपेते स्यात् क्षिष्टविशिष्टयोरपि ॥ २७ ॥  
 संस्कृतं लक्षणोपेते कृत्रिमे निर्मलीकृते ।  
 मिश्रीकृते च संसृष्टं शुद्धे च वमनादिभिः ॥ २८ ॥  
 साधीयोऽनुमतेऽत्यर्थं सत्तमे शोभनेऽपि च ।  
 तथ्यपथ्यार्थवाक्येऽपि सूनृतोऽथ क्षमे हिते ॥ २९ ॥  
 सम्बद्धेऽपि समर्थः स्यात् स्तिमितं स्तम्भवत्यपि ॥ ३० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

व्यक्षरकाण्डे अर्थवलिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

## नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

गुणाद्यर्थेऽर्थलिङ्गत्वमिहाप्यूहं स्वयं क्वचित् ।  
 अन्तरः परिधानीये बाह्ये स्वीयेऽन्तरात्मानि ॥ १ ॥  
 क्ली तु मध्येऽवकाशे च तादर्थ्येऽवसरेऽवधौ ।  
 विशेषविवरान्तर्धिष्ववसानविनार्थयोः ॥ २ ॥  
 अक्षरोऽसौ हरौ धातर्यक्षरं प्रणवे विधौ ।  
 धर्मे वर्णे तपःक्रत्वोः खे मोक्षे मूलकारणे ॥ ३ ॥  
 अनन्तो नागराड्विष्णुरनन्तं खनिरन्तयोः ।  
 अनन्ता पूर्णिमा दूर्वा यवाषः शारिबा मही ॥ ४ ॥  
 अर्जुनः पाण्डवे पाण्डौ मातुरेकसुते द्रुमे ।  
 नेत्ररोगे चाजुन तु तृणे हेमन्यर्जुनी गवि ॥ ५ ॥  
 विषारुणारुणं ताम्रमरुणः सूर्यसारथौ ।  
 अव्यक्तराने शशिजे सन्ध्याभ्रे लोहिते रंभौ ॥ ६ ॥  
 अमृतं व्योम्नि देवान्ने यज्ञशेषे रसायने ।  
 अयाचिते जले जग्धौ मोक्षेऽन्ने हेमिन् गोरसे ॥ ७ ॥  
 क्लीबो ना त्वमरे स्त्री तु गुल्फ्यां मद्यभिश्चयोः ।  
 आमलक्यां हरीतक्यां त्रिषु तु स्वादुनित्ययोः ॥ ८ ॥  
 अरिष्टो वायसे निम्बे गोरसे निरुपद्रवे ।  
 क्ली तु वर्णे मृत्युचिह्ने मये ताम्रे शुभेऽशुभे ॥ ९ ॥  
 अङ्गजो ना सुतेऽनङ्गे क्ली रोगे रुधिराऽपि च ।  
 न ना कवाटे क्ली लोहे सोमे स्यादररः पुमान् ॥ १० ॥  
 लाजेऽवभ्योषमभ्योषाः साड्याम्भःपेयसक्तवः ।  
 कृकलासेऽण्डजो मत्स्ये खगे कसूरिकाऽण्डजा ॥ ११ ॥  
 अविषो निर्विषेऽम्भोधावविषो दिवि पुंसि वा ।  
 अपानो देहजो वायुरपानं वृषणे गुदे ॥ १२ ॥  
 प्रधानेऽव्यक्तमव्यक्तो ब्रह्मण्यस्पष्टमूर्खयोः ।  
 अमरेन्द्रपुरी स्थूणा गुडूची चामराः सुराः ॥ १३ ॥  
 कृत्यक्षतं तण्डुले धान्ये न ना लाजेषु ना यवे ।  
 अजिरं जर्जरे कामे विषयाङ्कणयोर्दृते ॥ १४ ॥  
 अलसौ पादरुङ्मन्दावण्डीरौ शक्तपूरुषौ ।  
 विद्युत्पयोरङ्कयशानिरनीकोऽस्त्री चमूयुधोः ॥ १५ ॥



अधरोऽनूर्ध्वहीनोष्ठेष्वनृतं वितथे कृषौ ।  
 आश्रमोऽस्त्री मुनिस्थाने ब्रह्मचर्यादिके मठे ॥ १६ ॥  
 कोट्टारे कृपणे जीर्णे स्थानेऽभिप्राय आशयः ।  
 शर्करायां दृष्टपुत्रे स्त्र्यस्त्र्यश्मन्थुपलो मणौ ॥ १७ ॥  
 उत्तरं प्रतिवाक्ये स्यादुदीच्ये प्रवरोर्ध्वयोः ।  
 स्त्रीलिङ्गत्वे धनुर्लक्ष्म्यां पुरुषे पावके च ना ॥ १८ ॥  
 करीरो ना घटे न स्त्री पादपे वैणवाङ्कुरे ।  
 करेणुस्तु करिण्यां स्त्री कर्णिकारे गजे च ना ॥ १९ ॥  
 भिक्षापात्रे तु कमठं कमठौ खर्बकच्छपौ ।  
 अस्त्री कशिपु शय्यायां वस्त्रेऽन्ने तद्वद्वयेऽपि च ॥ २० ॥  
 करटो दुर्दुरुटे स्याद् बिल्वे काकेभगण्डयोः ।  
 कल्याणी क्षोमयोः क्ली तु मङ्गलेऽक्षयरुक्मयोः ॥ २१ ॥  
 रागे काथे कषायोऽस्त्री निर्यासे सौरभे रसे ।  
 कान्तार इक्षुभेदे ना न स्त्री व्यध्वे महावने ॥ २२ ॥  
 कीनाशो रक्षसि यमे कदर्ये कर्षकेऽर्थवत् ।  
 कुहनो मूषिके सेष्ये कुहना दम्भशोलता ॥ २३ ॥  
 कुशलं निपुणे पुण्ये पर्याप्तौ मङ्गले क्षमे ।  
 कुकूलं शङ्कुभिः कीर्णे श्वभ्रे ना तु तुषानले ॥ २४ ॥  
 कुण्डली चित्रलमृगे सर्पे कुण्डलवत्यपि ।  
 कुङ्कुमे महारजने कुसुम्भं ना कमण्डलौ ॥ २५ ॥  
 केवलं निश्चिते क्लीवे वाच्यवत्त्वेककृत्स्नयोः ।  
 कमलं छुरिकादीनां हेमाद्यैश्चित्रिताजिने ॥ २६ ॥  
 रक्ताब्जजेऽप्सु च श्रीस्तु कमला कमलो मृगः ।  
 अक्ली कोल्यां क्रोष्टुकोल्यां कर्कन्धूः स्त्री तु संयुगे ॥ २७ ॥  
 तथा मध्वाज्यसंसिक्तधवलजजतर्पणं ।  
 कुमारः स्याद् गुहे बाले वरणेऽश्वानुचारके ॥ २८ ॥  
 युवराजे च ना क्ली तु द्वीपे पुंस्त्री मृगोमयोः ।  
 कुतपो भागिनेयेऽर्के विप्रेऽग्नावतिथौ गवि ॥ २९ ॥  
 अस्त्री त्वहोऽष्टमे भागे तिलेषु ह्यागकम्बले ।  
 दर्भे च केसरस्त्वस्त्री सिंहकेशाश्वकेशयोः ॥ ३० ॥  
 कलिलं गहने वृन्दे सैन्येऽपि कटकोऽस्त्रियाम् ।  
 किञ्चलकः केसरे खे क्ली कृषकौ फालकर्षकौ ॥ ३१ ॥

कातरः पण्डके त्रस्नौ क्षेत्रज्ञावात्मशिक्षितौ ।  
 कुसीदमृणवृद्धौ क्ली वाच्यवद् वृद्धिजीविनि ॥ ३२ ॥  
 कलिङ्गं तु यवे ना तु देशपक्षिविशेषयोः ।  
 खनको भूमिवित्तज्ञे मूपिकेऽप्यवदारके ॥ ३३ ॥  
 गर्जितो मत्तमातङ्गे क्ली तन्नादेऽम्बुध्वनौ ।  
 गण्डूषोऽस्त्री गण्डपूतौ प्रसृते गजपुष्करे ॥ ३४ ॥  
 पार्थचापे चापमात्रे गाण्डीवो गाण्डिवोऽस्त्रियौ ।  
 कशेरुहेम्नोर्गाङ्गेयं गाङ्गेयो गुहभीष्मयोः ॥ ३५ ॥  
 ग्रामणीः स्वामिनि श्रेष्ठे ग्रामेशे नापिते तु ना ।  
 गोमुखोऽस्त्री वाद्यभेदे नक्रे नाले वने नपुम् ॥ ३६ ॥  
 गोष्पदं गोखुरश्वभ्रे मानगोगम्ययोरपि ।  
 वृत्तैकमक्ते चरणे चरणा बह्वृचादयः ॥ ३७ ॥  
 स्थण्डिले प्राङ्गणे च क्ली चत्वरं ना चतुष्पथे ।  
 चातुरः शकटे चक्रगण्डे नयनगोचरे ॥ ३८ ॥  
 चपलः पारदे शीघ्रे दुर्विनीते चले कपौ ।  
 चले केशे च चिकुरो जराटवस्त्र्यम्बुजेऽपि च ॥ ३९ ॥  
 जृम्भितं जृम्भणोऽङ्गुलविष्टेषु विचेष्टिते ।  
 जीवकः प्रवरे जन्तौ श्रमणे वृद्धिजीविनि ॥ ४० ॥  
 जर्जरस्त्रिषु जीर्णे स्यात् पुमानिन्द्रध्वजे पिके ।  
 टगरष्टङ्गनक्षारे ना केकरदृशि त्रिषु ॥ ४१ ॥  
 स्त्री नौनद्योर्ब्रजस्तम्भे तरणिर्नार्णवे रवौ ।  
 भुवीन्द्रपुत्र्यां तविषी ताविष्यब्धिवोर्नरौ ॥ ४२ ॥  
 तमिस्रा स्त्री ध्वान्तनिशि निश्यन्धतमसे न ना ।  
 तातगुः शुद्धताते ना ताताय तु हिते त्रिषु ॥ ४३ ॥  
 तातलो लोहकूटे ना त्रिषु तप्ते मनोजवे ।  
 तरलो भास्वरे हारे चञ्चलेऽप्यथ तारका ॥ ४४ ॥  
 न नाक्षिमध्ये नक्षत्रे द्विजिह्वौ सूचकोरगौ ।  
 दुर्वर्णं दुष्प्रभे रूप्ये देयभेदे तु दक्षिणा ॥ ४५ ॥  
 त्रिष्ववाकसरलावामेष्वन्यच्छन्दानुवर्तिनि ।  
 कनिष्ठपत्न्यामरतौ पुनर्भूपरिविन्नयोः ॥ ४६ ॥  
 स्त्री पुनर्भवास्तु पत्यौ ना दिधिषुर्दिधिषूरपि ।  
 स्याद् दीपकमलङ्कारे स्वरूपे दीप्तिमत्यपि ॥ ४७ ॥



दुन्दुभिः पुंसि भेर्या स्त्री त्वक्षबिन्दुत्रिकद्वये ।  
 धर्षणं सुरते धाष्ट्ये कुलटायां तु धर्षणी ॥ ४८ ॥  
 चारौ श्रेष्ठे वृषे श्वेते धवलो धवली गवि ।  
 धौताञ्जले रजक्याञ्च धावनी धावनं गतिः ॥ ४९ ॥  
 धिषणा स्त्री धियां गौर्या स्त्रीचिह्ने ना तु गीष्पलौ ।  
 नागरं पुरजे चुक्रे शुण्ठीराजकशेरुणोः ॥ ५० ॥  
 निधनोऽस्त्री कुले नाशे निखिशः क्रूरखड्गयोः ।  
 नालीकमञ्जे बाणे ना निशान्तं गृहशान्तयोः ॥ ५१ ॥  
 केशादिशौक्ये पलितं शैलेये ना तु कर्दमे ।  
 पटलं द्रुमकृच्छ्रदिषोः क्ली न ना पिटके गणे ॥ ५२ ॥  
 पर्याप्तं स्याद्यथाकामे तृप्तौ शक्तौ निवारणे ।  
 प्रवणो दक्षिणे प्रह्ने क्रमनिम्ने चतुष्पथे ॥ ५३ ॥  
 प्रकाशोऽर्चिषि दीधित्यां ना तुल्यस्फुटयोस्त्रिषु ।  
 मुखे प्रतीकस्त्रिषु तु प्रतिकूलानुरूपयोः ॥ ५४ ॥  
 बीणादण्डे प्रवालोऽस्त्री विद्रुमे नवपल्लवे ।  
 असूनमर्थवज्जाते पुष्पे क्ली सारथौ पुमान् ॥ ५५ ॥  
 प्रमीवमस्त्री कलशे मीवाप्रासादयोरपि ।  
 पाटला गवि पाटल्यामाशुव्रीहिस्तु पाटलः ॥ ५६ ॥  
 पिनाकोऽस्त्री रजोवर्षे शूले शङ्करधन्वनि ।  
 त्रिषूर्ध्वबाहुपुमात्रे क्ली पुंसो भावकर्मणोः ॥ ५७ ॥  
 पौरुषं पल्लवं त्वस्त्री प्रकोष्ठेऽप्यतिविस्तृतौ ।  
 पवित्रोऽग्नौ हरौ पूते क्ली तु ताम्रेऽप्सु गोमये ॥ ५८ ॥  
 मन्त्रे दधि ब्रह्मसूत्रे हेन्मन्त्रे कलशे कुशे ।  
 पुलस्त्यवंश्ये पुरुषे पौलस्त्यः क्ली तु संयुगे ॥ ५९ ॥  
 फलकी चन्दने स्त्री न स्त्री दार्वासनचर्मणोः ।  
 फेनिलं बदरे फेनयुक्तेऽथ ब्राह्मणो द्विजे ॥ ६० ॥  
 आमत्से क्ली तु विधिवद्वेदभागतदंशयोः ।  
 बहुलः कृष्णपक्षेऽग्नौ पुमांस्त्रिष्वसिते बहौ ॥ ६१ ॥  
 स्त्री स्यात् प्रथिव्यामुखायामेलायां कृत्तिकासु च ।  
 भविलं भवने भव्ये भ्रमरः कामुकेऽलिनि ॥ ६२ ॥  
 उद्याने मलयं ना तु गिर्यशगिरिभेदयोः ।  
 मत्सरोऽन्योदयद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु ॥ ६३ ॥

मन्थरः सूचके कोपे मन्थाने मन्दगामिनि ।  
 मार्गणं मृगणायां स्यान्मार्गणो याचके शरे ॥ ६४ ॥  
 दूर्वायां स्त्रीक्षुमूले क्ली गोरसेऽपि च मोरटम् ।  
 त्रिलिङ्गं मण्डलं वृन्दे ग्रामौघप्रतिबिम्बयोः ॥ ६५ ॥  
 उपसृत्यं कुष्ठरोगे देशे द्वादशराजके ।  
 मुचिरौ धर्मदातारौ मोदकौ खाद्यार्धकौ ॥ ६६ ॥  
 पित्रादेः कन्वयाऽऽप्येऽर्थे क्ली स्वीये त्रिषु यौतकम् ।  
 युतकं युगले युक्ते यौतके वसनाञ्जले ॥ ६७ ॥  
 संश्रयेऽग्रे च शूर्पस्य वस्त्रभेदे च योषितः ।  
 रसनं क्ली कषायेऽग्ने द्रवे स्नेहे विषे फले ॥ ६८ ॥  
 निर्यासे हेम्नि रूप्ये च जिह्वास्वादनयोर्न ना ।  
 रेवटं दक्षिणावर्तशङ्खे रेणौ तु रेवटः ॥ ६९ ॥  
 वातूले विषवैद्येऽथ रजतं शोणिते हृदे ।  
 श्वेते हारेऽप्यथोष्ठेऽलौ रवणः शब्दनेऽर्थवत् ॥ ७० ॥  
 रोषाणो रोषणे स्वर्णघर्षणग्रान्णि पारदे ।  
 रौहिषं रक्तकत्तणे मत्स्यभेदे मृगे च ना ॥ ७१ ॥  
 लालसा तु ना नौत्सुक्ये दौहदाद्यभिलाषयोः ।  
 ललामोऽस्त्री ललामापि प्रभावे पौरुषे ध्वजे ॥ ७२ ॥  
 श्रेष्ठे भूषापुण्ड्रशृङ्गपुच्छचिह्नाश्वलिङ्गिषु ।  
 लोचको मांसपिण्डे स्यान्नोलिङ्ग्यां चर्मणि भ्रुवि ॥ ७३ ॥  
 रक्तांशुके दुष्टबुद्धौ क्रोष्टृधूतौ तु वज्रकौ ।  
 विनीतस्त्रिष्वपि प्राप्ते निभृते विजितेन्द्रिये ॥ ७४ ॥  
 विनयं ग्राहिते चैष सुखवाहिहये पुमान् ।  
 विषयी राज्ञि कन्दर्पे विषयस्थजने च ना ॥ ७५ ॥  
 अर्थवद्विषयोपेत इन्द्रिये तु नपुंसकम् ।  
 अस्त्री वितानमुल्लोचे विस्ताराध्वरयोः क्षणे ॥ ७६ ॥  
 त्रिषु शून्ये च मन्दे च विषाण्युक्षेभशृङ्गिषु ।  
 भैक्यां पुनर्नवायां स्त्री वर्षाभूर्दुर्दुरे न वण् ॥ ७७ ॥  
 वयःस्थाऽऽमलकीपथ्याब्राह्मीषु तरुणे त्रिषु ।  
 वलजा वरनार्या च क्षेत्रे द्वारि च सा न ना ॥ ७८ ॥  
 वर्णकोऽस्त्री प्रकारे स्याच्चन्दने स्यञ्जलेपने ।  
 दुःखे विलम्बे व्यलीकमप्रियाकार्ययोस्तु ना ॥ ७९ ॥



वातूलो वातसङ्घाते वातले मरुतोऽसहे ।  
 विहायाः पुंनपुं व्योम्नि पुमानैव पतत्रिणि ॥ ८० ॥  
 विशिखा तु खनित्री च क्ली चित्ते ना त्वसौ शरे ।  
 विमानोऽस्त्री देवयाने सप्तभूमे च सद्मनि ॥ ८१ ॥  
 विटपोऽस्त्री द्रुविस्तारे पल्लवे स्तम्बशाखयोः ।  
 विषाणस्त्रिषु लिङ्गेषु पश्वङ्गजदन्तयोः ॥ ८२ ॥  
 वेदना दुःखानुभवे ज्ञाने च स्त्रीनपुंसकम् ।  
 स्कन्दे विशाख ऋते स्त्री विहायः स्फुटहासयोः ॥ ८३ ॥  
 पापेऽपि वृजिनं केशो पुमानिन्दुस्तु शर्वरः ।  
 स्त्री रात्रिसन्ध्याशर्वर्योदैत्ये ना शम्बरोऽप्सु षण् ॥ ८४ ॥  
 शयथुस्त्रिषु निद्रालौ मृत्यावजगरे च ना ।  
 शय्यायां शयनं न स्त्री निद्रासुरतयोर्नपुम् ॥ ८५ ॥  
 शरत्पक्षादिशालीनौ प्रत्यग्रोऽब्जश्च शारदः ।  
 गम्भार्या कट्फले श्रीपर्ण्यग्निमन्थाब्जयोर्नपुम् ॥ ८६ ॥  
 यमेऽपि शमनो ध्वान्ते क्ली हिंसे त्रिषु शर्वरः ।  
 करञ्जभेदे षड्ग्रन्थः षड्ग्रन्था ग्रन्थिकं वचा ॥ ८७ ॥  
 समानः प्राणभेदे ना त्रिष्वेकसमसाधुषु ।  
 संस्कारो ना संस्कृतिः स्त्री सङ्कल्पप्रतियत्नयोः ॥ ८८ ॥  
 स्पर्शनः पवमाने स्यात् स्पर्शनं सृष्टिदानयोः ।  
 सारङ्गः शबलो वर्णश्चातकः षट्पदो मृगः ॥ ८९ ॥  
 छिद्रे छिद्रान्विते वाद्ये सुपिरं सुषिरो नडः ।  
 सुमनाः पुष्पमालत्योः स्त्री देवबुधयोः पुमान् ॥ ९० ॥  
 सैन्धवोऽश्वेऽश्वभेदे ना न स्त्री तु लवणोत्तमे ।  
 बदरेऽपि च सौवीरं ना नीवृद्रोपघोण्टयोः ॥ ९१ ॥  
 सङ्गरो ना क्रियाकारे प्रतिज्ञाविपदोर्युधि ।  
 शमीफले तु षण्डोऽथ सम्बाधौ योनिः सङ्कटौ ॥ ९२ ॥  
 सुरभिर्वाच्यवत् सौम्ये सुगन्धौ स्त्री त्वसौ गवि ।  
 पुमांश्चैत्रे वसन्ते च सेवकौ स्यूतभाजकौ ॥ ९३ ॥  
 सुकृतं शोभने धर्मे हर्षुलो मृगकामिनोः ॥ ९३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

त्र्यक्षरकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

त्र्यक्षरकाण्डः समाप्तः ॥ ७ ॥

## ८. अथ शेषकाण्डः

पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अकारादिक्रमेणादाविहोक्त्वा चतुरक्षरान् ।  
 अध्यायान्तेषु सङ्कीर्णाः कृताः पञ्चाक्षरादयः ॥ १ ॥  
 अनुबन्धो दोषभावे प्रकृत्यादेर्विनश्वरे ।  
 मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्तने ॥ २ ॥  
 अपहारः पुनश्चोरे द्यूतयुद्धादिविश्रमे ।  
 निमन्त्रणोपनेतव्यद्रव्ये ग्राहाख्यायादसि ॥ ३ ॥  
 अवग्रहो वृष्टिरोधे प्रतिबन्धे गजालिके ।  
 अवष्टम्भः समालम्भे स्तब्धिकाञ्चनयोरपि ॥ ४ ॥  
 पिशाचादिग्रहे तीर्थेऽप्यवतारोऽवतारणे ।  
 अवरोहोऽवतरणं शाखाण्याग्रादुगताङ्घ्रितः ॥ ५ ॥  
 अधिवासो निवासे स्याद् गन्धधूपादिसंस्कृतौ ।  
 अपवर्गः क्रियासाध्यफलाप्तौ त्यागमोक्षयोः ॥ ६ ॥  
 अपभ्रंशोऽपशब्दे स्याद् भाषाभेदप्रपातयोः ।  
 अपदेशस्तु लक्षे स्यान्निमित्तव्याजयोरपि ॥ ७ ॥  
 अनुभावः प्रभावे स्यान्निश्चये भावसूचके ।  
 पश्चात्तापे त्वनुशयो दीर्घद्वेषानुबन्धयोः ॥ ८ ॥  
 अनुषङ्गस्तु कारुण्ये प्रकृतस्यानुवर्तने ।  
 अभिमानस्तु विज्ञाने प्रणये दर्पहंसयोः ॥ ९ ॥  
 अभिषङ्गस्त्वभिभवे सङ्ग आक्रोशनेऽपि च ।  
 अभिहारोऽभियोगे च चौर्यसन्नाहयोरपि ॥ १० ॥  
 स्नाने मद्यस्य सन्धानेऽभिषवः सवनेऽपि च ।  
 अभिग्रहोऽभियोगे च समन्ताद्ग्रहणेऽपि च ॥ ११ ॥  
 संयुगे स्यादभिमरः सबलादपि साध्वसे ।  
 कुले त्वभिजनो जन्मभूमौ चाथामरे ऋषे ॥ १२ ॥  
 अनिमेषोऽप्यनिमिषोऽप्यथ चण्डालशिष्ययोः ।  
 स्यादन्तेवास्यथर्वज्ञे त्वथर्वाणिः पुरोहिते ॥ १३ ॥  
 नृपरक्षिष्वनीकस्थो हस्तिशिक्षाविचक्षणे ।  
 अपवादौ तु निन्दाज्ञे स्तुतिस्नेहावपह्नवौ ॥ १४ ॥



वह्निवातावपाङ्गभौं गुह्यगूधाववस्करौ ।  
 कूर्मेशोऽब्धवाकूपारोऽवलेपो लेपगर्वयोः ॥ १५ ॥  
 अशिःस्कौ बाहुरुण्डाववलोणेऽस्फुटापि वाक् ।  
 आशोचनी तु वहीन्दू आत्मयोनी स्मरानिलौ ॥ १६ ॥  
 ब्रह्माऽप्यथोपचर्यायामुपचार उपायने ।  
 उपनाहो वैरबन्धे वीणायाश्च निबन्धने ॥ १७ ॥  
 उपक्रमश्चित्सायामुपधाऽऽरम्भयोरपि ।  
 उपग्रहस्तु बन्दौ स्याद् ग्रहणेऽप्यनुकूलने ॥ १८ ॥  
 उपतापौ रुजातापौ द्वारपालेऽध्युदास्थितः ।  
 स्नानाचान्त्योरुपस्पर्शो हरावुच्चैःश्रवा हये ॥ १९ ॥  
 दात्यौहाली कलकाणौ खङ्गिखङ्गौ करालिकौ ।  
 कलहंसो राजहंसे कादम्बे श्रेष्ठभूभुजि ॥ २० ॥  
 कुरुविन्दो हिङ्गुलेऽपि मुस्तेऽप्यथ गुहाशयः ।  
 ऋक्षे सिंहे च कूर्मे च ग्रहराजोऽर्कचन्द्रयोः ॥ २१ ॥  
 घनाघनो मत्तगजे वासवे वार्षकाम्बुदे ।  
 चक्रपादौ रथगजौ चित्रभानू इनानलौ ॥ २२ ॥  
 देशे जने जनपदश्चन्द्रेऽर्केऽग्नौ तमोनुदः ।  
 तमोपहोऽप्यथोल्लुके तस्करे कुमुदाकरे ॥ २३ ॥  
 दिवाभीतो दिवाकीर्ती पुनश्चण्डालनापितौ ।  
 दर्दुरीकोऽनले वाद्ये पार्थाग्नीन्द्रा धनञ्जयाः ॥ २४ ॥  
 अग्न्युत्पातौ धूमकेतू धन्वन्तरिरिनाब्जयोः ।  
 पर्परीकौ वह्निभक्ष्यौ शौर्योद्योगौ पराक्रमौ ॥ २५ ॥  
 अग्निरुद्रौ पशुपती नाशावज्ञपराभवौ ।  
 रक्षःसन्तौ पुण्यजनौ नीचमूर्खौ पृथग्जनौ ॥ २६ ॥  
 द्वारद्वास्थौ प्रतीहारौ स्तनाम्भोदौ पयोधरौ ।  
 काशे नडे पोटगलः पवमानोऽग्निवातयोः ॥ २७ ॥  
 परिमर्देऽपि परिमलः पितामहौ ब्रह्मपितृतातौ ।  
 परिवारः प्रावारेऽपि नृपाहार्थेऽपि परिवर्हः ॥ २८ ॥  
 परिवर्तौ जगन्नाशौ निमयेऽब्दे परिभ्रमे ।  
 पर्युप्तौ च परीवाप आलवाले परिच्छेदे ॥ २९ ॥  
 परानीस्वीकारशपथमूलैष्वपि परिग्रहः ।  
 परिक्षेपो हस्तिपादपार्श्वे सम्परिवेष्टने ॥ ३० ॥

प्रतियत्नस्तु संस्कार उपग्रहणलिप्सयोः ।  
 स्थाने गोष्ठ्यां सत्रशाले प्रत्याहारे प्रतिश्रयः ॥ ३१ ॥  
 प्लवङ्गमः कपौ भेके प्लवङ्गप्लवगाविव ।  
 मौक्तिकेऽस्त्रे पारशवो विप्राच्छूद्रासुतेऽयसि ॥ ३२ ॥  
 विवेके स्यात् परिकरः पर्यस्तिपरिवारयोः ।  
 प्रगाढगात्रिकाबन्धे समूहारम्भयोरपि ॥ ३३ ॥  
 प्रतिग्रहः क्रियाकारे चमूष्ठे पतद्गृहे ।  
 दानद्रव्ये स्वीकृतौ च त्वष्टर्यर्के प्रजापतिः ॥ ३४ ॥  
 दक्षादिष्वग्निजामात्रो राज्ञि ब्रह्मणि धातरि ।  
 ब्रह्मपुत्रस्तु रुद्रेऽपि बाहुलेयो गुहे वृषे ॥ ३५ ॥  
 धूम्याटेऽलौ भृङ्गराजो महाराजौ नृपार्थपौ ।  
 महालयो महागेहे विहारे परमात्मनि ॥ ३६ ॥  
 महाकालस्तु किम्पाके हरे बाणासुरेऽपि च ।  
 रजसानू धर्ममेघौ रौहिणेयौ हलीन्दुजौ ॥ ३७ ॥  
 लक्ष्मीपुत्रोऽश्व आढ्ये च राज्ञि लक्ष्मीपतिर्हरौ ।  
 लोकपालो नृपेन्द्राद्योर्हये वातप्रमीर्मृगे ॥ ३८ ॥  
 बाडबेयोऽश्विनोर्विप्रे वासुदेवो हये हरौ ।  
 विश्वगोप्ता हरौ शक्रे चन्द्रेऽर्केऽग्नौ विभावसुः ॥ ३९ ॥  
 वृषसानुः पुंसि मृत्यौ विष्णौ रुद्रे वृषाकपिः ।  
 वानप्रस्थौ मधुष्ठीलपलाशावथ सङ्करे ॥ ४० ॥  
 व्यसने च व्यतिकरो विश्वकर्माब्जजो रविः ।  
 त्वष्टा च विप्रलापस्तु विप्रलम्भोपमर्दयोः ॥ ४१ ॥  
 वारवाणिर्ज्योतिषिके धर्माध्यक्षेऽप्यथो वटे ।  
 वनस्पतिर्वृक्षमात्रेऽप्यग्नीन्द्रकौ विरोचनाः ॥ ४२ ॥  
 व्यवहारो वाक्प्रयोगे सम्बन्धे द्यूतदण्डयोः ।  
 शासने वित्तसंवादे विवादेऽसिबणिज्ययोः ॥ ४३ ॥  
 वर्धमानः शरावे स्यादेरण्डे भूषणेऽपि च ।  
 शङ्कुर्णौ गर्दभोष्ठावलिबाणौ शिलीमुखौ ॥ ४४ ॥



श्रीवत्साङ्गौ हरिवृकौ सिंहकाकौ सकृत्प्रजौ ।  
 सहसानुर्मयूरेऽहौ सम्प्रयोगो रतेऽन्वये ॥ ४५ ॥  
 स्तनयित्नुर्गर्जितेऽभ्रे विरोधे तु समुच्छ्रयः ।  
 उन्नतावप्यथ क्रोष्टौ शुनि सालावृको वृके ॥ ४६ ॥  
 समाहारस्तु सङ्क्षेप एकत्र करणेऽपि च ।  
 समाह्वयस्तु पद्याद्यैर्घूते नामनि संयुगे ॥ ४७ ॥  
 सम्परायस्तु सङ्ग्राम आपदागामिकालयोः ।  
 स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये गजानां मध्यमे गते ॥ ४८ ॥  
 सोमयोनिः सुरे विप्रे हरिरोमाब्जजेन्द्रयोः ।  
 हस्तिमल्लो गणपतौ महेन्द्रस्य च कुञ्जरे ॥ ४९ ॥  
 ( इति चतुरक्षराः )

वर्णमात्रेऽभिनिष्ठानो हरीशावपराजितौ ।  
 आशुशुक्ष्णिरर्केऽग्नौ यज्वन्यप्यासुतीवलः ॥ ५० ॥  
 शौण्डिके चाप्यथानन्ते कुबेरे चैककुण्डलः ।  
 आम्ने चामरपुष्पः स्यात् काशकेतकयोरपि ॥ ५१ ॥  
 ज्योतिषाम्पतिरर्के च चन्द्रे चाप्यथ चुम्बने ।  
 ओष्ठे च दशनोच्छिष्ट उच्छ्वासेऽप्यथ नीपके ॥ ५२ ॥  
 धूलीकदम्बो वरुणफलेऽथो नागवारिकः ।  
 गणस्थे हस्तिपाले च यमेऽपि पृथिवीपतिः ॥ ५३ ॥  
 प्राचीनबर्हिर्निद्राग्न्यो रुद्रेन्द्रौ मेघवाहनौ ।  
 मातुलपुत्रस्तून्मत्तफले मातुलसुतेऽपि स्यात् ॥ ५४ ॥  
 कुटजेऽपि च यवफलको बडबामुख और्ववह्नौ च ।  
 विकङ्कते गोक्षुरे च कोल्यां च स्वादुकण्टकः ॥ ५५ ॥  
 निम्बेऽपि हिङ्गुनिर्यासो हिङ्गुवृक्षरसेऽपि च ।  
 हिरण्यबाहुः शोणाख्ये नदे विषमलोचने ॥ ५६ ॥  
 ( इति पञ्चाक्षराः )

निदाघ ऊष्मणि ग्रीष्मे स्वेदे घर्मस्तु तेषु च ।  
 आतपे च दिने चाथ वरुणे यादसापतिः ॥ ५७ ॥

यादस्पतिश्च तावन्धावप्यथो यक्षगृह्यकौ ।  
 धनदेऽप्यथ वृक्षेऽद्रौ शिखर्यगनगागमाः ॥ ५८ ॥  
 भ्रमरेष्टालिप्रियाद्या आम्ने जम्बूकनीपयोः ।  
 वतंसोत्तंसावतंसाः कर्णपूरेऽपि शेखरे ॥ ५९ ॥  
 अंशौ च केतुसूक्ष्माग्रा अप्यद्रौ शृङ्गिभैरवौ ।  
 ( इति विषमाक्षराः )  
 आकाशे दिवसे च द्युर्विः पक्षिपरमात्मनोः ॥ ६० ॥  
 पुमांसौ पुरुषात्मानौ मासौ मासनिशाकरौ ॥ ६० ॥  
 ( इत्येकाक्षराः )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे पुलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥



श्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अर्चनायामपचितिः प्रक्षये निष्कृतौ व्यये ।  
 अजमोदा शाल्मलेश्च निर्यासेऽथ गद्गुहि ॥ १ ॥  
 धात्र्यां पाल्यां चाङ्कपालिरभिशस्तिस्तु दूषणे ।  
 प्रार्थने चान्तशय्या तु भूमिशय्याश्मशानयोः ॥ २ ॥  
 अनर्थवाचीतिकथा स्यादश्रद्धेयवाचि च ।  
 रहस्यार्थे तूपनिषद्धर्मवेदान्तयोरपि ॥ ३ ॥  
 उपलब्धिस्तु शेमुष्यां प्राप्तिविज्ञानयोरपि ।  
 ऋश्यप्रोक्ता शतावर्या कण्डूरातिबलधिषु ॥ ४ ॥  
 फलिनी स्याद् गण्डफली कलिका चम्पकस्य च ।  
 वाद्यभेदे घर्घरिका वाद्यानां लगुडेऽपि च ॥ ५ ॥  
 श्रीवेष्टे तैलपर्णी स्याद् धवलेऽपि च चन्दने ।  
 दाक्षायणी भवान्यां भुव्यश्विन्याद्युडुषु श्रियाम् ॥ ६ ॥  
 गौरीदिशोर्दक्षकन्या प्रतिपत्तिस्तु गौरवे ।  
 प्रत्याप्तिप्रतिभाज्ञानेष्वथ नीलीविशल्ययोः ॥ ७ ॥  
 मधुपर्णीत्यथ द्राक्षादूर्वे मधुरसेत्युभे ।  
 चुच्छन्दर्या राजपुत्री राजकन्या पिचिण्डके ॥ ८ ॥  
 वैजयन्ती पताकायां जयन्त्यां केशवस्रजि ।  
 गुञ्जायूथ्यौ शिखण्डिन्यौ द्राक्षा स्वादुरसा सुरा ॥ ९ ॥  
 समुद्रान्ता यवाषे च कार्पासीस्पृक्कयोरपि ।  
 गौर्योमपि सिनीवाली मदिरापि हरिप्रिया ॥ १० ॥  
 गङ्गा पथ्या हैमवती गौरी शुक्लवचापि च ।

( इति चतुरक्षराः )

गोरक्षजम्बूगोधूमधान्ये गोरक्षतण्डुले ॥ ११ ॥  
 चिलिमीलिकातसी स्यात् खद्योते कण्डभूषणे चापि ।  
 योजनगन्धा सीता कस्तूरी व्यासमाता च ॥ १२ ॥  
 वृषाकपायी श्रीगौर्योः शोफज्यां प्रावृषायणी ।  
 हरिद्रायां वरायां च रामायां वरवर्णिनी ॥ १३ ॥

( इति पञ्चाक्षराः )

व्यथने सूचना सूचा दर्शनेऽभिनयेऽपि च ।  
 पार्वत्यामपि मातङ्गी रौद्रयुगा कौशिकीति च ॥ १४ ॥

माषपर्ण्या कृष्णवृन्ता सिंहपुच्छी महासहा ।  
 रात्रावप्यर्जुनी सौम्या शिखा चूडा शिरस्यपि ॥ १५ ॥  
 ( इति विषमाक्षराः )

भूः क्षितौ स्थानमात्रे च वस्त्रिकायोषितोः स्त्रियौ ।  
 उपायद्वारयोर्द्वीः स्यात् पूः स्यान्नगरदेहयोः ॥ १६ ॥  
 धूः स्याद्यानमुखे भारे नौस्तु काले तरावपि ।  
 ज्या पृथिव्यां च मौर्व्या च स्वर्व्योमन्योर्द्यौर्दिवानुभौ ॥ १७ ॥  
 ऋशब्दः स्याद्विव्यदितौ त्विड् ज्वालाकान्तिदीप्तिषु ।  
 उत्साहेऽन्नरसेऽप्यूर्क् स्यात् सुक् सुवे शोपणे गतौ ॥ १८ ॥  
 लक्ष्मीरिव लवङ्गे श्रीः पद्मायां कान्तिसम्पदोः ।  
 रुग्णवालाकान्तिवाञ्छासु तट् तु लिप्सापिपासयोः ॥ १९ ॥  
 यथा तृष्णा यथा तर्षस्त्वगन्धद्रव्यवत्कयोः ॥ २० ॥  
 ( इत्येकाक्षराः )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे श्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥



## नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

आत्याहितं महाभीत्यां प्राणानाकाङ्क्षिकर्मणि ।  
 अपादानं कर्मणि स्यादतिवृत्तेऽवखण्डने ॥ १ ॥  
 आभ्याधानमभिन्यासे वह्न्यर्थं चेध्मसङ्ग्रहे ।  
 अन्वाहार्यममावास्याश्राद्धमिष्टेश्च दक्षिणा ॥ २ ॥  
 समूहे स्यादाकलनं कलनज्ञानयोरपि ।  
 आच्छादनं संविधाने स्यादावरणवाससोः ॥ ३ ॥  
 आतञ्चनं प्रतीवापे जपाप्यायनयोरपि ।  
 आराधने तोषणाप्री घात आयोधनं रणे ॥ ४ ॥  
 जन्मोद्गमावुत्पत्तने रहोऽन्तिकमुपहरे ।  
 उद्भासने वधोद्भासावधुत्सादनमुन्नतौ ॥ ५ ॥  
 स्यादुद्धरणमुद्धान्तभक्तेऽप्युत्पाटनेऽपि च ।  
 तिन्त्रिडीकं तु वृक्षाम्ले चिञ्चायामम्लवेतसे ॥ ६ ॥  
 त्रिवर्णकं त्रिगन्धे स्यात् त्रिफलायां कटुत्रये ।  
 निर्यातनं प्रतीकारे दाने न्यासधनार्पणे ॥ ७ ॥  
 निर्भर्त्सनमलक्तेऽपि मोक्षे निःश्रेयसं शुभे ।  
 शस्त्रे युद्धे प्रहरणं कार्यं हेतौ प्रयोजनम् ॥ ८ ॥  
 प्रतिदानं परीवर्ते न्यासद्रव्यस्य चार्पणे ।  
 पारायणं कात्स्न्यवचस्यङ्कुशस्य च बन्धने ॥ ९ ॥  
 प्राणिघूतं तु सङ्ग्रामे घूते च पशुपक्षिभिः ।  
 शुण्ठ्यामतिविषायां च लशुने च महौषधम् ॥ १० ॥  
 रतर्धिकं सुखे स्नाने दीनमङ्गलयोरपि ।  
 विदारणं तु काष्ठादेर्द्वैधीकारे विडम्बने ॥ ११ ॥  
 संसारे स्यात् संसरणमसन्बाधचमूगतौ ॥ १२ ॥  
 समापनायां हिंसायां समाप्तौ च समापनम् ।

( इति चतुरक्षराः )

अवतरणं भूतादिग्रहे निवसनाञ्जले ॥ १३ ॥  
 स्यादुपस्पर्शनं स्पर्शे स्नानाचमनयोरपि ।  
 दुग्धाम्ने दुग्धतालीयं स्यात् फेनेऽपि च दुग्धजे ॥ १४ ॥

निन्दोपालम्भ आलापे नियमे परिभाषणम् ।

( इति पञ्चाक्षराः )

पराक्रमे धने द्युम्नं द्रविणं तु ग्रहेऽपि च ॥ १५ ॥  
 आगः किल्बिषमेनश्च त्रीणि पाप्मापराधयोः ।  
 शकुनं च निमित्तं च शुमादेः सूचकेऽपि च ॥ १६ ॥  
 यज्ञोपवीतोपवीते ब्रह्मसूत्रोत्तरीययोः ।  
 गम्भीरं गहनं रत्नं गह्वरं शरणं वपुः ॥ १७ ॥  
 स्नेहं सेव्यं महच्छुद्धं धरुणं सर्वतोमुखम् ।  
 पातालं स्वादु दिव्यं च तानि पञ्चदशास्वपि ॥ १८ ॥

( इति विषमाक्षराः )

खमिन्द्रिये दिवि व्योम्नि रन्ध्रनक्षत्रयोरपि ॥ १८ ॥

( इत्येकाक्षराः )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

शेषकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥



## अभिधेयवह्निज्ञाध्यायः ॥ ४ ॥

( अर्थवह्निज्ञाध्यायः )

अभिजातः कुलीने च न्याय्यपण्डितयोरपि ।  
 अभिनीतः सुयुक्ते स्यादमर्षवति संस्कृते ॥ १ ॥  
 अभिपन्ना विपन्नाप्रस्तात्तद्रुतदक्षिणाः ।  
 अधिक्षिप्तं प्रणिहिते प्रेषिते भत्सितेऽपि च ॥ २ ॥  
 निश्चिते स्यादवसितं समाप्त उषितेऽपि च ।  
 अवदातः सिते गौरे शुद्धे चाथावलम्बिते ॥ ३ ॥  
 अविदूरेऽप्यवष्टब्धमसम्पृक्तो रहस्यपि ।  
 उड्मिक्ते धिक्कृतेऽपि स्यादवध्वस्तोऽवचूर्णिते ॥ ४ ॥  
 स्यादभ्यारूढमारूढे सातिरेके च सम्पदा ।  
 उत्कीर्णे स्यादुल्लिखितमनुषक्ते तनूकृते ॥ ५ ॥  
 उद्ग्राहितमुपन्यस्ते बद्धग्राहितयोरपि ।  
 कौक्कुटिको दाम्भिके स्याद् यश्चादूरेरितेक्षणः ॥ ६ ॥  
 दशमीस्थस्तु स्थविरे नष्टबीजे मृताशने ।  
 परिप्राप्ते परिगतं प्रज्ञाते परिवेष्टिते ॥ ७ ॥  
 प्रतिशिष्टप्रतिक्षिप्तावाहूय प्रेषितास्तयोः ।  
 विशिष्टे स्यात् प्रतिहतं प्रतिस्खलितवस्तुनि ॥ ८ ॥  
 समाहिते प्रणिहितं न्यस्ताभिप्राप्तयोरपि ।  
 पुरस्कृतः पूजिते द्विडभियुक्तेऽग्रतः कृते ॥ ९ ॥  
 पौरुषेयं वधे पुंसो बृन्दे कार्यविकारयोः ।  
 ब्रह्मबन्धुरधिष्ठेये निर्देश्ये ब्राह्मणाधमे ॥ १० ॥  
 यातयामं यातयामे जीर्णे भुक्तोज्झितेऽपि च ।  
 लालाटिकः प्रभोश्छन्ददर्शी कार्याक्षमश्च यः ॥ ११ ॥  
 विशारदो बुधे धृष्टे वञ्चिते तु विलम्बितम् ।  
 मन्दे चाथ समुन्नद्धौ पण्डितम्मन्यगर्वितौ ॥ १२ ॥  
 ( इति चतुरक्षराः )  
 कथाप्रसङ्गस्तु विषवैद्ये वाताधिकेऽपि च ।  
 ( इति पञ्चाक्षरः )

प्रहृष्टो हृषितो हृष्टः प्रहर्षवति विस्मिते ॥ १३ ॥  
 सरोमाञ्चे प्रतिहतेऽप्यथ सप्रभदग्धयोः ।  
 स्युः प्रदीप्तप्रज्वलितदीप्ता ज्वलित इत्यपि ॥ १४ ॥  
 कुत्सिते वाच्यवक्तव्यौ वदितव्यविहीनयोः ।  
 प्राप्तरूपोऽभिरूपश्च पण्डिते रूपवत्यपि ॥ १५ ॥

( इति विषमाक्षराः )

सन् सत्येऽभ्यर्हिते श्रेष्ठे साधीयसि भवत्यपि ।  
 किं प्रश्नाच्चेपकुत्सानां वितर्कस्य च गोचरे ॥ १६ ॥

( इत्येकाक्षरौ )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे अभिधेयवह्निज्ञाध्यायः ॥ ४ ॥





## नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

सुखाध्यर्का अय्यथिषा अय्यथिष्यौ निशाक्षिती ।  
 अवगीतं मुहुर्दृष्टे निर्वादे गहितेऽपि च ॥ १ ॥  
 पुमानधिपतिर्मूर्ध्न आवर्तेऽधीश्वरे त्रिषु ।  
 काञ्चने शारिफलके स्यादष्टापदमस्त्रियाम् ॥ २ ॥  
 अम्बरीषं रणे वर्षे तृणे नार्ककिशोरयोः ।  
 आत्मनीनः सुते स्याले प्राणधारिणि दूषके ॥ ३ ॥  
 आडम्बरोऽस्त्री संरम्भे पटहे गजगर्जिते ।  
 उदुम्बरो द्रुदेहत्योर्ना स्त्री हेमाक्षताम्रयोः ॥ ४ ॥  
 वचाजमोदयोरुग्रगन्धा ना लशुने सिते ।  
 कलधौतं रूप्यहेम्नोः षण्डस्त्री तु कलध्वनौ ॥ ५ ॥  
 कर्णपूरो वतसे ना स्त्री सौगन्धिक उत्पले ।  
 काण्डपृष्ठः क्रीतमुते दत्ते शूद्रासुताम्भसोः ॥ ६ ॥  
 शास्त्राजीवे च यश्चान्यकुलं याति स्वकं विना ।  
 नासा गन्धवहा गन्धवहो मृगनभस्वतोः ॥ ७ ॥  
 जलेशयो जलकपौ मत्स्ये पद्मं जलेशयम् ।  
 जीवितेशः प्रेतनाथे दायते द्रविणागमे ॥ ८ ॥  
 जैवातृकश्चन्द्रभिषगायुष्मत्सु कृषीवले ।  
 अम्ललोण्यां दन्तशठा त्रिष्वम्लेऽम्लगुणे तु ना ॥ ९ ॥  
 दुरोदरे नपुं द्यूते पणे द्यूतकरे तु ना ।  
 नारायणी शतावर्या लक्ष्म्यां गौर्या च ना हरौ ॥ १० ॥  
 निश्चारको निर्गमके पुरीषोत्सर्गिमारुते ।  
 निषद्वरी निशा कामकर्मसौ तु निषद्वरौ ॥ ११ ॥  
 निरूपणा नपुं स्त्री च निरीक्षणविचारयोः ।  
 निशाचर्यसती फेरु रक्षःसपौ निशाचरौ ॥ १२ ॥  
 यूथभ्रष्टे पक्षचरः स्यादेकचरपक्षिणोः ।  
 परायणमभिप्रेते तत्परे परमाश्रये ॥ १३ ॥  
 प्रतिष्कशः पुमान् द्यूते त्रिष्वग्रसहाययोः ।  
 अस्त्री प्रतिसरो हस्तसूत्रे ना तु चमूकटौ ॥ १४ ॥

आरक्षे व्रणशुद्धौ च नियोज्ये त्वभिधेयवत् ।  
 पारावतः खगातस्योरीषत्पाण्डौ च पारदे ॥ १५ ॥  
 नीचे व्रीहाविन्द्रनीले प्राणनाथो यमे प्रिये ।  
 पुण्डरीकं सितच्छत्रे कुष्ठभेदे मिताम्बुजे ॥ १६ ॥  
 ना त्वाम्रे दिग्गजे व्याघ्रे राजिलाहौ गजे ज्वरे ।  
 दीप्त्यां प्रद्योतनं नार्के घोरे प्रतिभयं भये ॥ १७ ॥  
 नकुले मूषिकेऽहौ ना गोधायां स्त्री बिलेशयः ।  
 वृन्दारकः पुमान् देवे श्रेष्ठसुन्दरयोस्त्रिषु ॥ १८ ॥  
 भागधेयं नपुं भाग्ये दायादे ना करे न षण् ।  
 मस्तुलुङ्गः शिरःस्नेहे न स्त्री क्ली दधिमण्डके ॥ १९ ॥  
 ओतो चारौ धौतिदेशे मार्जालीयोऽङ्गशोधने ।  
 महावीरो यज्ञपात्रे गरुडे सुभटे खगे ॥ २० ॥  
 वज्रेऽश्वे तनये हंसे शूरेऽग्नौ अवरे हरौ ।  
 राजादनं प्रियाले ना क्षीरिकायां पलाशके ॥ २१ ॥  
 वारवाणं तु कूर्पासे कवचेऽपि च न स्त्रियाम् ।  
 विश्वम्भरा धरित्री स्यादग्नौ विश्वम्भरो हरौ ॥ २२ ॥  
 विश्वावसुस्तु गन्धर्वभेदे ना स्त्री पुनर्निशि ।  
 वेणौ ना दूर्वावचयोः स्त्री बिले शतपर्व षण् ॥ २३ ॥  
 शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे ।  
 पलमाने षोडशिका न ना न स्त्री पलद्वये ॥ २४ ॥  
 सनातनो हृषीकेशे चतुर्वक्त्रे सदातने ।

( इति चतुरक्षराः )

आशितम्भवमन्नादि तृप्तिः स्यादाशितम्भवः ॥ २५ ॥  
 पर्याप्तावुपसम्पन्नं मृते प्राप्ते सुसंस्कृते ।  
 नक्षत्रनेमी रेवत्यां स्त्री ना विष्णौ हिमद्युतौ ॥ २६ ॥  
 मूर्धाभिषिक्तो ना राज्ञि क्षत्रिये चार्थवत् प्रभौ ।  
 हरिचन्दनमस्त्री स्याच्चन्दने देवपादपे ॥ २७ ॥

( इति पञ्चाक्षराः )

श्रेष्ठे वृषाङ्गे राजाङ्गे ककुदोऽस्त्री ककुन्न षण् ।  
 तपस्वी शिशिरे शोच्ये चन्द्रे मांसी तपस्विनी ॥ २८ ॥  
 द्वीपवत्यौ धरानद्यौ द्वीपवानम्बुधौ नदे ।  
 धर्मे वाद्ये प्रसृत्वा ना प्रतिपत्तिः प्रसृत्वरी ॥ २९ ॥



पद्मी गजे पद्मिनी तु नलिन्यां हस्तिनीश्रियोः ।  
 ब्रह्मचारी व्रती स्कन्दो दुर्गा तु ब्रह्मचारिणी ॥ ६० ॥  
 भगवत्युमा भगवान् बुद्धे पूज्ये हरे हरौ ।  
 भोगी ग्रामाद्यधिकृते सर्पे सुखिमहीभुजोः ॥ ६१ ॥  
 विहाय महिषीमेकां भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ।  
 श्रेयोऽत्यन्तं प्रशस्ते स्यात् कल्याणे धर्ममोक्षयोः ॥ ६२ ॥  
 श्रेयसी हस्तिपिप्पल्यामभयाराक्षयोरपि ।  
 सरस्वती सरिद्धेदे सरिन्मात्रे गवि क्षितौ ॥ ६३ ॥  
 मत्स्याद्यां वाचि गङ्गायां सरस्वानम्बुधौ नदे ।

( इति विषमसङ्ख्याः )

विभूतिर्भूतिरैश्वर्यमणिमादिकसम्पदोः ॥ ६४ ॥  
 ईशेश्वरौ प्रभौ रुद्रे पार्वत्यामीश्वरेश्वरौ ।  
 स्वभावे स्यान्निसर्गश्च सृष्टिश्चोत्पादनेऽपि च ॥ ६५ ॥  
 गेहे कुलायो नीडोऽस्त्री रेतस्यपि रजो मदः ।

( इति विषमाक्षराः )

काश्चित्तात्मार्कधीधातृवाता मूर्ध्नि सुखेऽप्सु कम् ॥ ६६ ॥  
 द्युपश्चिष्वंशुवज्राम्बुभूवाग्दिग्दक्षु गौर्न षण् ।  
 दृक् स्त्री स्यादशने बुद्धौ नेत्रे द्रष्टरि तु त्रिषु ॥ ६७ ॥  
 स्वोऽस्त्री धने त्रिषु स्वीय आत्मनि स्वजने तु ना ।  
 गूर्गुदे स्त्री प्रयत्ने ना रा न ह्री धनरुक्मयोः ॥ ६८ ॥  
 आत्मनि ज्ञातरि ज्ञः स्यान्ना विड् वैश्ये जने न षण् ।  
 तेशब्दः क्रीडने स्त्री स्यात् क्रीडके त्वभिधेयवत् ॥ ६९ ॥  
 सेशब्दः सेवने स्त्री स्यात् सेवके त्वभिधेयवत् ॥ ७० ॥

( इत्येकाक्षराः )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

### पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्यायः ॥ ६ ॥

घातुः सर्वेऽपि पर्याया रुद्राक्षे स्युश्चतुर्मुखे ।  
 तस्मिन् पञ्चमुखे शम्भोः कुमारस्य तु षण्मुखे ॥ १ ॥  
 गुग्गुलुलककुटजेष्विन्द्रस्याग्नैश्च चित्रके ।  
 भज्जातकेऽप्यथार्कस्य भज्जातक्यर्कपर्णयोः ॥ २ ॥  
 कर्पूरकम्पिप्लवकयोरिन्दोर्वज्रस्य हीरके ।  
 गौर्यास्त्वतस्यां कौबेरा वन्दाके क्षीरवृक्षजे ॥ ३ ॥  
 खस्याभ्रके ब्रह्मणि च मेघस्याभ्रकमुस्तयोः ।  
 भुवो नामानि सौराष्ट्राणां शैलेये प्रावशैलयोः ॥ ४ ॥  
 शर्वर्यास्तु हरिद्रायां प्रियङ्गुव्रततौ स्त्रियाः ।  
 ध्वजधूममृगेन्द्राणां श्वोक्षरासम्बहस्तिनाम् ॥ ५ ॥  
 वायसस्य पर्यायाः क्रमात् पूर्वोदिवेशमसु ।  
 हंसेन्दुकुमुदां रूप्ये कुमुदेऽपि खरस्य षण् ॥ ६ ॥  
 स्योनाके तु सृगालस्य वानरस्य तु सिंहके ।  
 स्पृक्कायां तस्करस्य स्युरुशीरे समरस्य हि ॥ ७ ॥  
 वाट्यालकेऽस्य सान्नस्य शोणितस्य तु कुङ्कुमे ।  
 कुष्ठार्यभेषजे व्याघ्रेर्मातुर्गौर्या दृषद्गवोः ॥ ८ ॥  
 पिण्डारे त्ववटोः पाणेश्चायुधस्य त्वयस्यपि ।  
 अपरावे तु रन्ध्रस्य बदरस्य तु नागरे ॥ ९ ॥  
 रुक्मस्याञ्जनभेदे क्ली पुंलिङ्गा नागकेसरे ।  
 उन्मत्तेऽपि च बिन्दोस्तु सिध्मादौ देहवैकृते ॥ १० ॥  
 रूप्यस्याञ्जनभेदे स्युरटव्यां जलमुस्तके ।  
 षण्डाः केशस्य बर्हिष्ठे शिरसः शिखरे तरोः ॥ ११ ॥  
 माक्षिके क्ली स्त्रियो लक्ष्म्यां नरः पद्मस्य सारसे ।  
 त्वचो लवङ्गे पर्णस्य पक्षे ह्री किंशुके नरः ॥ १२ ॥  
 गणस्यान्धेश्च सङ्ख्यायां बर्हिष्ठे मुस्तकेऽप्यपाम् ।  
 मकराम्बुजकूर्माणां निधिभेदेषु ते नरः ॥ १३ ॥  
 सङ्ख्याभेदेऽपि शङ्खस्य मीनमेषविषाणिनाम् ।  
 मिथुनस्य कुलीरस्य सिंहकन्यातुलालिनाम् ॥ १४ ॥



धनुर्मकरकुम्भानां क्रमाद् द्वादशराशिषु ।  
 सर्पस्य सीसके नागकेसरे द्विपसर्पयोः ॥ १५ ॥  
 अग्रहण्यसो गुन्द्रे शरस्य मकरे त्वसे ।  
 शुभस्य फेनिले पुंसि कार्पासे वाससो नरः ॥ १६ ॥  
 धृत्यश्वयोरश्वकन्दे पर्पटे मरिचेऽयसः ।  
 इत्यादीन्यन्यनामानि बोद्धव्यान्यन्यवस्तुषु ॥ १७ ॥  
 वृक्षस्य गृहनामान्ता नरः पक्षिमयूरयोः ।  
 वीरात् परास्ते भज्जाते ततः शक्राच्च तेऽर्जुने ॥ १८ ॥  
 पलाशे ब्रह्मतोऽश्वत्थे श्रीतः कारस्करे विषात् ।  
 मुनेः पलाशसरलस्योनाकेक्षुद्यगस्तिषु ॥ १९ ॥  
 नौस्तम्भे गुणतश्चैत्यादश्वत्थोद्देशवृक्षयोः ।  
 व्याघाते राजतो दीपाहीपमालाविधारके ॥ २० ॥  
 नरो भुगन्ताः सर्पस्य राजसर्पमयूरयोः ।  
 तार्क्ष्ये चाथारिनामान्ता नकुले केकिताक्षयोः ॥ २१ ॥  
 पञ्चपूर्वास्तु वक्त्रस्य व्याघ्रे सिंहे हरे नरः ।  
 कण्ठस्य नीलनामभ्यो ग्रीवायाश्चेशकेकिनोः ॥ २२ ॥  
 नखस्य शस्त्रनामान्ता नरो मार्जारसिंहयोः ।  
 कुचन्दने कुङ्कुमे च रक्तादेश्चन्दनादयः ॥ २३ ॥  
 एवं संयोगनामानि सलिङ्गान्युन्नयेत् स्वयम् ।  
 पूर्वोक्तेष्वपि शब्देषु योगसम्प्राप्तवृत्तयः ॥ २४ ॥  
 स्वयमूहा यथा कन्दः कं ददातीति वारिदः ॥ २४३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां शेषकाण्डे

पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्यायः ॥ ६ ॥

### अनेकार्थान्ययाध्यायः ॥ ७ ॥

उक्ता लिङ्गान्विताः शब्दा निर्लिङ्गान्यवययान्यतः ।  
 आङ्गीषदर्थेऽभिविधौ सीम्नि कर्मविशेषणे ॥ १ ॥  
 आ प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्य आस्तु सन्तापकोपयोः ।  
 ऐ दुःखभावेने कोपे प्रत्यक्षे सन्निधावपि ॥ २ ॥  
 औ स्याद् ब्रह्मण्यनुज्ञायां कं सुखेऽऽम्भसि मूर्ध्नि च ।  
 प्रश्ने क्षेपे विल्कपे किं कु पापेऽलपार्थकुत्सयोः ॥ ३ ॥  
 चान्वाचये समाहारे मिथोयोगे समुच्चये ।  
 तु भेदावधारणयोदुरशोभनदुःखयोः ॥ ४ ॥  
 धिग्भर्त्सने कुत्सने च नि न्यग्भावानिकामयोः ।  
 नाभावान्यविरोधेषु निर्निर्णयनिषेधयोः ॥ ५ ॥  
 प्रश्ने विकल्पे तु स्वित्वा प्रादौ यात्राप्रकृष्टयोः ।  
 वि निषेधे पृथग्भावे वा विकल्पोपमानयोः ॥ ६ ॥  
 समुच्चये च वै पापे वाक्यारम्भप्रसिद्धयोः ।  
 स्मृतौ वृत्ते निषेधे स्म स्वः स्वर्गपरलोकयोः ॥ ७ ॥  
 समभेदे समीचीने सुष्ठुपूजासुखेषु सु ।  
 प्रत्यारम्भे प्रसिद्धौ ह हा विषादशुगतिषु ॥ ८ ॥  
 हि स्याद्विशेषणे हेतौ हि हेतावधारणे ।  
 आमन्त्रणे भर्त्सने हुं हूं सम्प्रश्नवितर्कयोः ॥ ९ ॥  
 उ तापेऽव्ययमीशे ना मा निषेधे श्रियां स्त्रियाम् ।  
 अ निषेधे पुमान् विष्णावि विचित्रे स्मरे पुमान् ॥ १० ॥  
 तद्धेतौ त्रिष्वमुष्मिन् स्याद्यद्धेतौ प्रगते त्रिषु ।  
 ह ह्यु तु स्म च वै पादपूरणेऽपि प्रयुज्यते ॥ ११ ॥  
 ( इत्येकाक्षराः )

अमा सहाय्ये सामीप्येऽप्यद्धा प्रत्यक्षसत्ययोः ।  
 अयि प्रश्ने सानुनये विनियोगे क्रियास्वह ॥ १२ ॥  
 षीडेर्ष्याऽनुमतिष्वस्तु स्यादध्यधिक ईश्वरे ।  
 अलं तु भूषणे शक्तौ पर्याप्तौ विनिवारणे ॥ १३ ॥  
 अपि सम्भावनाप्रश्नगर्हाशङ्कासमुच्चये ।  
 अथाथोऽनन्तराऽप्यर्थविकल्पारम्भमङ्गले ॥ १४ ॥



अति स्यादधिकार्थोक्तौ प्रशंसायामतिक्रमे ।  
 पश्चाद्वेतूनसाम्येषु भागे वीप्साप्रकारयोः ॥ १५ ॥  
 लक्षणेऽप्यनु वीप्सादित्रयेऽप्यभिमुखेऽप्यभि ।  
 अतो निन्दाहेतुचित्रेष्वाराद् दूरसमीपयोः ॥ १६ ॥  
 इति हेतुप्रकरणप्रकारादिसमाप्तिषु ।  
 विस्तारेऽङ्गीकृतावूरी स्यादुर्युररी यथा ॥ १७ ॥  
 उपाधिकेऽन्तिके हीनेऽप्युत प्रश्नविकल्पयोः ।  
 समुच्चयेऽनुमत्यां चाप्येव साम्येऽवधारणे ॥ १८ ॥  
 पादपूरणकृत्वायमेवं साम्याभ्यनुज्ञयोः ।  
 कश्चित् प्रश्ने कामवादे वार्तासम्भाव्ययोः किल ॥ १९ ॥  
 निषेधे वागलङ्कारे जीप्सनेऽनुनये खलु ।  
 तूष्णीमर्थे सुखे जोषं तर्हि स्यात् प्रश्न उत्तरे ॥ २० ॥  
 तथा समुच्चये साम्ये परमार्थाभ्यनुज्ञयोः ।  
 तिरोऽन्तर्द्धौ तिरश्चीने दिष्ट्या स्यान्मङ्गलादिषु ॥ २१ ॥  
 तर्कनिश्चितयोर्नूनं नानाऽनेकोभयार्थयोः ।  
 प्रश्नावधारणैतिह्यसमीहानुमते ननु ॥ २२ ॥  
 नाम प्रकाश्यसम्भाव्यक्रोधोपगमकुत्सने ।  
 प्रबन्धे निकटेऽतीते पुराणेऽनागते पुरा ॥ २३ ॥  
 पुनरप्रथमे प्रश्ने व्यावृत्तावधारणे ।  
 प्रतिदाने प्रतिनिधौ तुल्ये मात्राभिमुख्ययोः ॥ २४ ॥  
 भागे प्रकारकथने वीप्सायां लक्षणे प्रति ।  
 भागादिष्वेषु परि च वर्जनेऽप्यपवत् परि ॥ २५ ॥  
 परा निहीनेऽनावृत्तौ बत त्वामन्त्रणेऽद्भुते ।  
 तोषे खेदे कृपायाञ्च बाढं त्वनुमते भृशे ॥ २६ ॥  
 मुहुः क्षणेऽनुक्षणे च मिथोऽन्योन्यरहस्ययोः ।  
 यथा सादृश्ययोग्यत्ववीप्सास्वर्थानतिक्रमे ॥ २७ ॥  
 यावत्तावच्च साकल्यमानावध्यवधारणे ।  
 वृथा निष्कारणाविध्योः शश्वद् भूयः सदेति च ॥ २८ ॥  
 सकृत् सदैकवारे च सामि स्यादर्धनिन्दयोः ।  
 स्वस्ति मङ्गलनिष्पापक्षेमेष्वाशीर्वचस्यपि ॥ २९ ॥  
 साक्षात् प्रत्यक्षसदृशोः पृथगर्थेऽन्तिके हिरुक् ।  
 वाक्यारम्भेऽनुकम्पायां हन्त हर्षविवादयोः ॥ ३० ॥  
 ( इति द्व्यक्षराः )

अञ्जसा त्वरिते तत्त्वेऽप्यहहाद्भुतखेदयोः ।  
 समीपोभयतश्शीघ्रशाकल्याभिमुखेऽभितः ॥ ३१ ॥  
 रहस्येऽर्थ उपांशु स्यादश्रुतोच्चारणेऽपि च ।  
 परितोऽन्तिके सर्वतोऽर्थे पूर्वेषुः प्रत्युषेऽपि च ॥ ३२ ॥  
 पुरस्तात् पूर्वदिश्यमे पुराप्रथमयोरपि ।  
 शीघ्रे सपदि सद्योऽर्थे समयाऽन्तिकमध्ययोः ॥ ३३ ॥  
 सद्योऽर्थे सहसा हेतुशून्ये युक्तेऽपि साम्प्रतम् ॥ ३३ ॥  
 ( इति त्र्यक्षराः )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे अनेकार्थाव्ययाध्यायः ॥ ७ ॥



## अव्ययपर्यायाध्यायः ॥ ८ ॥

शीघ्रार्थे भटिति स्वाग्राक् मरुद्वहाय सपद्यपि ।  
 चिरेण चिररात्राय दीर्घकाले चिराच्चिरम् ॥ १ ॥  
 विकल्पे किमुताहोस्वित् किमुताहो किमूत च ।  
 सम्बोधने ननु प्याट् पाट् हे हे भो अङ्ग हन्त च ॥ २ ॥  
 बौषड्वोषड्वषड्वौक्षड्वक्षट् श्रौषड्वषट्कृतौ ।  
 परितः सर्वतो विष्वक् समन्ताच्च समन्ततः ॥ ३ ॥  
 किमुतातीव बलवत् स्वति सुष्ठु च साधिके ।  
 पृथग्विना हिरुङ् नानाऽन्तरेणते च वर्जने ॥ ४ ॥  
 कालेऽस्मिन्नधुनेदानीं सम्प्रत्येतर्हि साम्प्रतम् ।  
 यदा यर्हि तदा तर्हि तदानीं सर्वदा सदा ॥ ५ ॥  
 शश्वत् सनात् सना ज्योक् च युगपत्त्वेकदा सकृत् ।  
 द्विस्त्रिश्चतुष्पञ्चकृत्व इत्याद्यावर्तने कृते ॥ ६ ॥  
 कदाचिज्जातु सद्यस्तु तत्क्षणेऽन्यक्षणेऽन्यदा ।  
 दोषा नक्तं च निश्चहि दिवाद्यैतदहर्निशम् ॥ ७ ॥  
 अपरेऽह्यपरेद्युः स्यादेवं पूर्वैतराधरे ।  
 उत्तरेऽन्यान्यतरयोस्तर्क्याः पूर्वद्युरादयः ॥ ८ ॥  
 उभयेद्युस्तूभयद्युः परे त्वहि परेद्यवि ।  
 ह्यो गतेऽनागते तु श्वः परश्वस्तु ततः परे ॥ ९ ॥  
 सायं साये प्रगे प्रातः काल्ये संवत्तु वत्सरे ।  
 अतीतानन्तरे वर्षे परारि परुद्देशमः ॥ १० ॥  
 अतीते वर्तमाने च स्यादन्ते रजनेरुषा ।  
 मुहुः पुनःपुनः शश्वत् पुरस्तु पुरतोऽप्रतः ॥ ११ ॥  
 सङ्कोचे चिञ्चन व्यर्थे मुधा शश्वत्तु शाश्वते ।  
 किञ्चनेषन्मनाक् किञ्चिद् विकल्पेऽवश्यं तु निश्चिते ॥ १२ ॥  
 निष्पमं दुष्पमं दुष्ठु गर्हे सुष्ठु सु शोभने ।  
 मिथ्या मृषा च वितथे यथार्थं तु यथातथम् ॥ १३ ॥  
 मतप्रदाने यदि चेद् यथास्वं तु यथायथम् ।  
 युक्ते स्थाने रुषोक्तावृम् बहिर्बाह्ये नमो नतौ ॥ १४ ॥

मौने तु तूष्णीं तूष्णीकां समयान् निकाषा हिरुक् ।  
 साम्ये व वैवमेवेव प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ॥ १५ ॥  
 प्राध्वं स्यादानुकूल्यार्थमशीघ्रे शनकैः शनैः ।  
 अहो ही विस्मये प्रायो भूमन्यस्तमदर्शने ॥ १६ ॥  
 समकं तु सजुः साकं सार्धं सत्रा समं सह ।  
 सुखे दिष्ट्योपजोषं शमेवमां परमं मते ॥ १७ ॥  
 हठे प्रसह्य मध्ये स्यादन्तरेणान्तरेऽन्तरा ।  
 प्रादुराविः प्रकाशेऽर्वागवरे स्वयमात्मनि ॥ १८ ॥  
 उपरिष्ठादुपयुध्वे स्यादधस्तादवागधः ।  
 तिरश्चि साच्युच्च उच्चैर्नीचैर्नीच्युच्चकैर्भृशे ॥ १९ ॥  
 प्रकारेऽन्यथेतरथा कथमित्थं यथा तथा ।  
 द्विधा द्वेधा त्रिधा त्रेधा चतुर्धा द्वैधमादि च ॥ २० ॥  
 अर्थे यत्रादि सप्तम्याः पञ्चम्या यत आदिकम् ।  
 इतिह स्यात् सम्प्रदाये पारेऽपारे दृशौ पशु ॥ २१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

शेषकाण्डे अनेकार्थाव्ययाध्यायः ॥ ८ ॥



## लिङ्गसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ९ ॥

नाम्नां पूर्वमिहोक्तानामनुक्तानां च कृत्स्नशः ।  
 सामान्यैर्लक्षणैः कैश्चित् क्रियते लिङ्गसङ्ग्रहः ॥ १ ॥  
 अवाधिते विशेषोक्त्या भवेत् सामान्यलक्षणम् ।  
 एकस्वरं हलादीदृद् दृङ् मा श्रीभूरिति स्त्रियाम् ॥ २ ॥  
 इच्च सर्वमुदन्तेषु पाकुरञ्ज्वादि किञ्चन ।  
 नदीनामाह्वयाः सर्वे प्रायेण च लताह्वयाः ॥ ३ ॥  
 णचोऽञि व्यवहार्याद्या अङ्ङन्तास्तु पचादयः ।  
 अप्रत्यये जुगुप्साद्या युजन्ता भावनादयः ॥ ४ ॥  
 क्तिन्नन्तास्ततिगत्याद्याः क्तिन्ताः सम्पदादयः ।  
 इञि स्युः कारिबोध्याद्या ण्वुलि प्रच्छर्दिकाऽऽदयः ॥ ५ ॥  
 क्रीडाप्रहरणे णान्ताः पाञ्चवाद्या घञस्तु ज्ञे ।  
 क्रियायां दाण्डपाताद्यास्तल्ल्याबूङ्क्ष्यन्धादयः ॥ ६ ॥  
 अके वैरादिवीप्सादौ स्युः काकोल्लुकिवादयः ।  
 क्यपि तु ब्रह्महत्याद्या दल्ल्याद्यल्पत्वकीर्तने ॥ ७ ॥  
 त्रिलोकीत्यादयोऽदन्तैः समाहारार्थकद्विगौ ।  
 त्रिपात्रत्रियुगाद्याः षण्णभवन्यादयस्त्वनौ ॥ ८ ॥

( इति स्त्रीलिङ्गाः )

अदन्ताः पुंस्युपान्ताश्चेत् कणौ भरमटास्तथौ ।  
 षसौ च सान्ता ये च स्युरुदन्ताः प्रायशो नरः ॥ ९ ॥  
 इदन्नेष्वरतिर्वर्णित्वार्त्वाहिर्मेहिः प्रहिः ।  
 स्तभिः कपिः सनीरालिरर्दनिर्वमतिर्नरः ॥ १० ॥  
 अङ्क्ष्याबन्ताश्च वृक्षार्थाः प्रायो रोहितरत्तथा ।  
 शैलानामह्वयाः सर्वे गोत्राख्याश्चरणाह्वयाः ॥ ११ ॥  
 कन्यन्ता राजतक्षाद्या ऋदोरपि करादयः ।  
 इकस्तिपोः शासिशास्त्याद्याः स्युरेरचि जयादयः ॥ १२ ॥  
 अवश्यायादयो णान्ता घान्ता दन्तच्छदादयः ।  
 प्रध्याद्याः प्रादितो घोः कौ स्युर्वमथ्वादयोऽथुचि ॥ १३ ॥  
 प्रश्नाद्या नङि पाकाद्या घञि ल्यौ नन्दनादयः ।  
 प्रथिमाद्या इमनिचि कुणप्पीलुकुणादयः ॥ १४ ॥

( इति पुल्लिङ्गाः )

त्रान्तद्वयच्कासिसुस्नान्तं लोपधं युक्तयोपधम् ।  
 अम्बुपुष्पाणि च क्लीबे रेचकं त्वभयाफले ॥ १५ ॥  
 ब्रह्मोद्याद्या भावकृत्यः शृङ्गान्दोऽणि त्रिष्टुभादयः ।  
 स्मिताद्या भावनिष्ठान्ताः कर्णजाहादि जाहचि ॥ १६ ॥  
 समूहकर्मभावार्थतद्धिते वार्धकादयः ।  
 सांराविणोपमानदि नोपान्तं भावसंज्ञयोः ॥ १७ ॥  
 एकद्वन्द्वान्वयभीभावाः स्युरितोऽकर्मधारये ।  
 अनव्त्तपुरुषे शब्दाः कन्थोशीनरनामसु ॥ १८ ॥  
 यथा सौशमिकन्थं स्याद् बाहुल्ये तु समासभाक् ।  
 छाया यथा खगच्छायं नृपामर्त्यार्थकात् परा ॥ १९ ॥  
 अराजतः सभा भूभृत्सभं रक्षःसभं यथा ।  
 न काष्ठादेरशालार्था सैव दासीसभं यथा ॥ २० ॥  
 उपज्ञोपक्रमान्तं च तदादित्वे विवक्षिते ।  
 पाणिन्युपज्ञमित्यादि पथस्सङ्ख्याऽव्ययात् परः ॥ २१ ॥  
 शशादूर्णा गृहात् स्थूणा क्रियाऽव्ययगुणानुगम् ।  
 एकत्वञ्चास्य पुण्यात्तु मुदिनादप्यहः परः ॥ २२ ॥  
 कुटिलं गच्छतीत्यादि क्रियाणां तु विशेषणम् ।  
 नपुंसकं तु भद्रं स्वरित्यव्ययविशेषणम् ॥ २३ ॥

( इति नपुंसकलिङ्गाः )

स्त्रीप्राण्यर्थाः स्त्रियां पुंसि पुंप्राण्यर्था विना त्विह ।  
 स्त्रीत्वेनोक्तैस्तथाऽपत्येऽणादि ध्वन्नादि शिल्पिनि ॥ २४ ॥  
 कचिद्रश्मिमयूखांशुघृणिघृष्टिगभस्तयः ।  
 सृपाटी त्रिसरा सूमिः सुषुम्ना यष्टिरिङ्गुदी ॥ २५ ॥  
 कलम्बी शल्लकी मञ्जी वरटा जाटलिः कुटी ।  
 शाटी रेणुहरेणूरुजल्लकाकोलिधूलयः ॥ २६ ॥  
 उत्कण्ठा कङ्कती कन्दूवितस्ती रयिरञ्जलिः ।  
 कूपस्य च त्रिका ब्रीडा प्रेङ्गोलिः फलकी कटी ॥ २७ ॥

( इति स्त्रीपुंसलिङ्गाः )

अर्धर्चादिगणे प्रोक्तं सर्वं नृङ्गीबलिङ्गकम् ।  
 तच्च लिङ्गान्तरेऽनुक्तं सर्वमुक्तं घृतादि च ॥ २८ ॥



तत्र केचिद् घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं विदुः ।  
 अत एकेन लिङ्गेन ते पूर्वमिह वर्णिताः ॥ २६ ॥  
 पिशाचादिषु भूतोऽस्त्री शङ्कुरप्राणिगोचरः ।  
 विशेषकञ्च तिलकं पुण्ड्रे ब्रह्मा द्विजेऽब्जजे ॥ ३० ॥  
 द्धेडाश्च कन्दलाः कालकूटाद्याः स्युः कमण्डलुः ।  
 सक्तः परीतन्महिमा कर्म पर्व च लोम दोः ॥ ३१ ॥  
 ( इति नृषण्डः )

अपुंसि चालनी दाम वणिज्याऽशसन्तिका स्थली ।  
 शरव्यार्चिचर्गुडा पत्री स्यात् कुथे वर्णतर्णिका ॥ ३२ ॥  
 सगरी नटने कृत्या त्वभिचारजदैवते ।  
 मये मधूलकं चेति क्वाप्यथाकर्मधारये ॥ ३३ ॥  
 अनन्तत्पुरुषे सेनाच्छाया शाला निशा सुरा ।  
 नृसेनं पादपच्छायं गोशालं श्वनिशं यथा ॥ ३४ ॥  
 नृसेनेत्यादयोऽप्येवं कुत्रचिद्भावकर्मणोः ।  
 साहायकं साहायिका मैत्र्यं मैत्री च वृद्धयन्तोः ॥ ३५ ॥  
 द्विगुरन्तन्त आबन्तोऽप्येवं नश्चात्र लुप्यते ।  
 यथा त्रितक्षं त्रितक्षी क्षिखट्वं च त्रिट्वयपि ॥ ३६ ॥  
 ( इति स्त्रीषण्डः )

त्रिलिङ्गां तु कचिच्छुङ्गा कलशी कन्दरी दरी ।  
 पेटी पुटी पटी वाटी कवाटी पिटका वटी ॥ ३७ ॥  
 अर्गला दाडिमी पात्री विडङ्गा कुवली तटी ।  
 मृणाली कन्दली नाली मुस्ता जम्भा हरीतकी ॥ ३८ ॥  
 त्रिजातकी गन्धिघना मठी स्थाने तपस्विनाम् ।  
 ( इति त्रिलिङ्गाः )

गुणद्रव्यक्रियायुक्तं बुवन्तो वाच्यलिङ्गकाः ॥ ३९ ॥  
 येनार्थः प्रस्तुतो नाम्ना तल्लिङ्गं वाच्यलिङ्गकम् ।  
 न त्रिषु स्युर्विशिष्टार्थस्पर्शिनः पङ्कजादयः ॥ ४० ॥  
 भेद्यनिष्ठत्वमेकार्थवृत्तिमात्रैककारणम् ।  
 अतन्नीकृत्य भेदोक्तिः कैश्चिदाश्रीयते पुनः ॥ ४१ ॥

ते स्युरर्थसमा यद्वत् सत्त्वाद्या वाक्यगोचराः ।  
 मचर्चिका मतल्लिका प्रकण्डमुद्धतल्लजौ ॥ ४२ ॥  
 अमीषु नार्थलिङ्गता प्रशस्तवाचकेष्वपि ।  
 योनिसम्बन्धवाचिन्यः पुत्राद्याः पुंगिरो नरि ॥ ४३ ॥  
 मात्राद्याः स्त्रीगिरः स्त्रीत्वे विद्यासम्बन्धगोचराः ।  
 आचार्यद्विगुपाध्यायशिष्या याज्यार्थिकास्तथा ॥ ४४ ॥  
 शास्त्रार्था वैदिकार्थाश्च स्थपतिश्रोत्रियादयः ।  
 अधिकारकृता मन्त्रिस्थापत्याद्यभिधास्तथा ॥ ४५ ॥  
 भट्टारको भट्टारको भट्टस्तत्रभवान् भवान् ।  
 भगवान् पूज्यपादश्च देवाश्चार्चार्थिकास्तथा ॥ ४६ ॥  
 शत्रुमित्रज्ञशिल्प्यर्थाः प्रायस्तद्वन्न तु त्रिषु ।  
 वाच्यवत् स्याद् बहुव्रीहिर्दिङ्नामसु तु स स्त्रियाम् ॥ ४७ ॥  
 कृतः कर्तर्यसंज्ञायां कृत्याद्या ल्युट् च कारके ।  
 सर्वनामान्यणाद्याश्च तद्धिताः संज्ञया विना ॥ ४८ ॥  
 तद्धिताः चतुर्थ्या ये सङ्केतात् कृतकाह्वयाः ।  
 षट्संज्ञा युष्मदस्मच्च त्रिषु लिङ्गेष्वभेदवत् ॥ ४९ ॥  
 ( इत्यभिधेयवल्लिङ्गाः )

कृत्तद्धितसमासाख्या प्रसिद्धाख्ये च लिङ्गिनि ।  
 तद्यथा चक्रभृद्विष्णुर्लताभेदाभिधा यथा ॥ ५० ॥  
 द्वन्द्वस्तत्पुरुषोऽप्यन्त्यलिङ्गोऽश्वबडबौ नरि ।  
 तथैवोक्षवशावहरात्राहाश्च टजन्तकाः ॥ ५१ ॥  
 क्लीबे सङ्ख्यापरं रात्रमर्धान्ना पञ्चखार्यना ।  
 त्रिष्वर्थः प्राक् चतुर्थ्यन्तस्तद्धितार्थो द्विगुस्त्रिषु ॥ ५२ ॥  
 प्रादिप्राप्तलमापन्नात् परं च प्रवरो यथा ।  
 प्राप्तार्थोऽलङ्कुमारिश्च पुमान् स्त्रीपुंसयोर्युतौ ॥ ५३ ॥  
 ग्राम्यानेकशफाबालबहुपञ्चवये स्त्रियः ।  
 कृत्यक्लीयुतौ षण्णैक्यं वा व्यक्त्यादि लुपि युक्तवत् ॥ ५४ ॥  
 परवद् वानुवादेषु तिङ्गव्ययमलिङ्गकम् ।  
 अचः पुंसि हलो दीर्घाः स्त्रियां लोपधनत्रसाः ॥ ५५ ॥



षण्डे सर्वे गुणद्रव्यक्रियायुक्तार्थकास्त्रिषु ।  
 बहुत्वमेकता च स्याज्जात्याख्यायां यथा यवाः ॥ ५६ ॥  
 यवश्च व्रीहयो व्रीहिरित्यथ स्याद् विशाखयोः ।  
 द्वित्वं बहुवचश्चैवं द्वयं प्रोष्ठपदास्वपि ॥ ५७ ॥  
 अनेकमिति शब्दस्य तद्विशेषस्य चैकता ।  
 सङ्ख्यार्थस्याबहुव्रीह्येयथाऽनेका वधूरिति ॥ ५८ ॥  
 विरोधे पूर्वदौर्बल्यं लोकतः शेषमुन्नयेत् ।  
 ( इति सामान्यन्यायाः )

सर्वे जनाः सहस्रास्या युगपद्वक्तुमुद्यताः ॥ ५९ ॥  
 न कलामपि भारत्या ब्रूयुर्वर्षशतैरपि ॥ ६० ॥  
 इति भगवता विदितनिखिलनिगमनिचयरहस्यविद्येन दिनमणिसमतेजसा  
 सकलतत्त्वप्रकाशेन यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे लिङ्गसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ९ ॥  
 अष्टमः शेषकाण्डः समाप्तः ॥ ८ ॥

### ग्रन्थोपसंहारः

इति यतिवरसङ्घपूजिताङ्घ्रिः  
 प्रथितयशा भुवि यादवप्रकाशः ।  
 व्यरचयदभिधानशास्त्रमेतत्  
 सह वचनैः सह लिङ्गसङ्ग्रहेण ॥ १ ॥  
 एतां शुभामष्टभिरुक्तकाण्डै-  
 भूतस्वरूपैरिव नाममालाम् ।  
 धत्तां विशाले हृदये मुरारि-  
 स्त्वां वैजयन्तीमिव वैजयन्तीम् ॥ २ ॥  
 एवं सूक्ष्मैर्न्यायनिर्णीतशब्दैः  
 सर्वार्थानां व्यञ्जकोऽसौ निघण्टुः ।  
 संवित्तीनां भूषणं सत्कवीनां  
 प्राप्तः पारं वैजयन्तीनिघण्टुः ॥ ३ ॥  
 [ नानाविद्यावेद्यवाप्रज्ञमाला  
 मूर्तं वेदं वेदयन्ती त्रिवेद्याः ।  
 रोद्धुं बुद्धिध्वंसकध्वान्तचक्रं  
 प्राज्ञैर्ज्ञेया वैजयन्ती जयन्ती ॥ ४ ॥ ]

( इति वैजयन्ती समाप्ता )



## परिशिष्टम्

वैजयन्तीस्थशब्दाः काण्डायङ्काः कोषान्तरस्थशब्दाः कोषान्तरनामानि स्थलनिर्देशाः

भिदुरम्	११२१३	भिदिरम्	अमरकोषः ( व्याख्यासुधा ) १११४७
कृकरः, कृकरः	२१३३६	कृकरः, कृकणः	२१५९
मदलः	२१४१०	मदलः	२१७१८ ( व्याख्यासुधा )
कृशती	२१४१८	उषती	२१७१८
फणिर्जकः	३३१२०	फणिजकः	२१४७९
पिण्या	३३१४०	पण्या	२१४१५०
बिम्बोष्ठी	३३१४७	बिम्बिका	२१४१३९
वाध्राणसः	३१४१८	वाध्राणसः	त्रिकाण्डशेषः २१५३
		वाधीनसः	२१५३
नैचिकी	३१४४६	नैचिकम्	२१९२२
स्थूरी	३१४५६	स्थूरी	अमरकोषः २१८४६
कुक्कुरः	३१४६९	कुक्कुरः	अभिधानचिन्तामणिः ४३४५
		कुक्कुरः	४३४५
कदञ्जिका	३१६३१	कलिन्दिका	२१७७२
		कडिन्दिका	२१७७२ ( मणिप्रभा )
		कलन्दिका	२१७७२
वैष्णुतम्	३१६९५	वैष्णुतम्	३१५०१
		वैष्णुभम्	त्रिकाण्डशेषः २१७७७
वृषी	३१६१४९	वृषी	अमरकोषः २१७४६
		वृषी	२१७४६ ( व्याख्यासुधा )
क्रियदेहिका	३१६१६६	क्रियदेहिका	त्रिकाण्डशेषः ( व्याख्या ) ११७४४
चूषा	३१७८४	चूषा	अमरकोषः २१८४२
जागरः	३१७१५३	जागरः	अभिधानचिन्तामणिः ३१३३०
		जागरः	अभिधानरत्नमाला २१३०४
भिण्डिपालः	३१७१६६	भिण्डिपालः	अमरकोषः ३१८९१
			अभिधानचिन्तामणिः ३१४४९

( २२७ )

वैजयन्तीस्थशब्दाः काण्डायङ्काः कोषान्तरस्थशब्दाः कोषान्तरनामानि स्थलनिर्देशाः

समिकम्	३१७२०३	समीकम्	अमरकोषः २१८१०४
खले पाली	३१८३१	खलेवाली	अभिधानचिन्तामणिः ३१५५८
मरिष्टक-मयष्टकौ	३१८३८	मकुष्ठक-मयुष्टकौ	४२४०
		अमरकोषः	२१९१७
विटङ्गः	३१८१७७	विटङ्गम्	२१२१५
यष्टिमधुका	३१८१०३	यष्टीमधुकम्	२१४१०९
		मधुयष्टी	२१४१०९ ( व्याख्यासुधा )
		यष्टी	२१४१०९
मणिमन् शितशिवम्	३१८१२०	शीतशिवं माणिमन्धम्	२१९४२
		सितशिवम्	२१९४२ ( व्याख्यासुधा )
		माणिबन्धम्	२१९४२ ( चरित्रस्वामी )
मूका	३१९१७	मूषा	२१९३३
कुठारः	३१९३२	कुठरः, कुठरः	२१९७४
		कुठरः	अभिधानचिन्तामणिः ४१८९
कल्लत्वम्	३१९८५	कल्लत्वम्	२१२२०
निकायं	४३११८	निकायः	अमरकोषः २१२१५
		निकायः	२१२१५
		निकायः	अभिधानचिन्तामणिः ४१५६
कुण्डिनी	४३१२५	कण्डनी	त्रिकाण्डशेषः २१९६६
मण्डपः	४३१२८	मण्डपः	अमरकोषः २१२१९
			अभिधानचिन्तामणिः ४१६९
भिरसिटा	४३१७७	भिरसटा	३१६०
			अमरकोषः २१९४९
मकुटः	४३१३५	मुकुटः	२१६२०२
		मुकुटः	२१६२०२ ( व्याख्यासुधा )
			अभिधानचिन्तामणिः ३१३१४
		मुकुटः	३१३१४ ( स्वोपज्ञवृत्तिः )
पिचिण्डिका	४३१५८	पिचिण्डिका	२१२७९



वैजयन्तीस्थशब्दाः काण्डाद्यङ्काः कोषान्तरस्थशब्दाः कोषान्तरनामानि स्थलनिर्देशाः

प्रसूतः	४।४।७७	प्रसूतिः	अमरकोषः	२।६।८५
कलाः	४।४।१०१	कचाः	"	२।६।९८
गोर्दम्	४।४।११२	गोदम्	"	२।६।६५
		गोदः	" ( मणिप्रभा )	२।६।६५
परीतदान्त्रम्	४।४।११३	पुरीतत्, अन्त्रम्	"	२।६।६६
वातकः	४।४।१४५	वातकी ( -किन् )	"	२।६।५९
श्लेष्मसूः	४।४।१४६	श्लेष्मणः	"	२।६।६०
यौवनम्	५।१।८	यौवतम्	"	२।६।२२
निर्वार्यः	५।४।७३	निर्वार्यः	" ( व्याख्यासुधा )	३।१।१३

## वैजयन्तीकोषस्य शब्दानुक्रमणिका

[ इस अनुक्रमणिका में क्रमशः शब्द, लिङ्गादि के अङ्क ( १. पुलिङ्ग, २. स्त्रीलिङ्ग, ३. नपुंसकलिङ्ग, ४. अव्यय ), ए. = एकवचन, द्वि. = द्विवचन, व. = बहुवचन तथा ( ) इस कोष्ठक के अन्तर्गत ग्रन्थान्तरस्थ पाठान्तर और अन्त में क्रमशः काण्डाङ्क, अध्यायाङ्क, तथा श्लोकाङ्क दिये गये हैं ]

अ ]

[ अगच्छ

शब्दः लिङ्गाद्यङ्कः	काण्डाङ्कः अध्यायाङ्कः श्लोकाङ्कः	शब्दः लिङ्गाद्यङ्कः	काण्डाङ्कः अध्यायाङ्कः श्लोकाङ्कः	शब्दः लिङ्गाद्यङ्कः	काण्डाङ्कः अध्यायाङ्कः श्लोकाङ्कः
अ		अकुत्स १.	३।१।५५	अक्षपात १.	३।१।६१
अ ४.	८।७।१०	अकुप्य ३.	३।८।७४	अक्षफल १.	३।३।७९
अंश १.	४।४।५५	अकुप्यसहाय १.	५।१।५४	अक्षर ३.	३।६।१६२
,, १.	५।२।६	अकूपार १.	४।२।१२	,, १ ब.	७।५।३
अंशु १.	२।१।१५	,, १.	८।१।१५	अक्षरचुम्बु १.	३।१।२३
,, १.	२।१।१६	अकृत १.	३।६।९७	अक्षरजीवन १.	३।१।२३
,, १.	२।१।२६	अक्ष १.	३।७।३३	अक्षरपातक १.	२।१।५२
,, १.	६।१।६	,, १.	३।८।१५	अक्षवती २.	३।१।५९
,, १.	८।१।२५	,, ३.	३।८।१२५	अक्षि ३.	४।४।९४
अंशुक ३.	४।३।११६	,, १.	३।९।६०	अक्षिगत १.२.३.	५।४।६९
,, ३.	७।३।१	,, ३.	५।१।४९	अक्षित ३.	५।१।३०
अंशुमत् १.	२।१।१५	,, १. ३.	६।५।२	अक्षिसंस्कार १.	४।३।१५७
अंस १. ३.	४।४।७१	अक्षकील १.	३।७।३३	अक्षीव ३.	३।८।१२०
अंसल १. २. ३.	५।४।६	अक्षज ३.	३।९।७३	अक्षोड १.	३।३।४६
अंससन्धि १.	४।४।६९	अक्षजीविन् १.	३।९।५९	अक्षोहिणी २.	३।७।५८
अंसान्त १.	४।४।७०	अक्षत १. २. ३.	७।५।१४	अखण्ड १. २. ३.	५।४।८६
अंहति २.	३।६।११९	अक्षताडन ३.	३।९।३७	अखात ३.	४।२।५
अंहन ३.	५।२।१३	अक्षति २.	३।६।९०	अखिल १. २. ३.	५।४।८५
अंहस् ३.	३।६।१६८	अक्षत्र ३.	४।४।८५	,, १. २. ३.	७।४।१
अकषाय १.	५।३।३९	अक्षदर्शक १.	३।८।१४	अग १.	३।२।१
अकार्यसेवन ३.	३।६।११७	अक्षधूर्त १.	३।९।५८	,, १.	८।१।५८
अकिञ्चन १.२.३.	५।४।५९	अक्षधूर्तिल १.	३।४।५२	अगच्छ १.	३।३।५



## [ अगद ]

अगद १.	४११४१
अगदङ्कार १.२.३.	४११४३
अगम १.	८११५८
अगरी २.	३१३८६
अगर १.	३८१०६
अगस्ति १.	३१३१५६
,, १.	३१३१५१
अगस्त्य १.	३१३१५६
,, १.	३१३१५१
अगाध १.	४११२
,, १. २. ३.	४१२१९
अगार ३.	४३१७७
अगृहीतदिश १. २. ३.	३१७२१९
अग्रायी २.	१२११९
अग्नि १.	१२११५
,, १.	८११२
अग्निक १.	३१३२२१
अग्निकारिका २.	३१११४
अग्निकार्य ३.	३१११४
अग्निकौच ३.	४३१११९
अग्नित्त १.	३११७५
अग्निका २.	३११४३
अग्निपूर्णिमा २.	२११७४
अग्निबीज ३.	३१२२०
अग्निमन्थ १.	३१३८६
,, १.	३१८८४
अग्निमुखी २.	३१३९५
अग्निविश्व २.	१२१३२
अग्निशिख ३.	३१८११७
अग्निष्टोम १.	३१६८७
अग्निष्ट १. २. ३.	३१६१०४
अग्निसख १.	१२१४९
अग्निसङ्ग्रह १.	३१६१८
अग्निसञ्ज्ञक १.	३१८८२
अग्निहोत्र ३.	३१६१०
अग्निहोत्रहवणी २.	३१६१००
अग्निहोत्री २.	३१६१५
अग्निमन्थन ३.	३१६१४
अग्न्याधान ३.	३१६१९

## वैजयन्तीकोषः

अग्न्याहित १.	३१६७३
अग्न्युत्पात १.	१२१३३
अग्र १.	३१६१९८
,, १. २. ३.	५१४६३
,, ३.	६३११
,, १.	८११६०
अग्रज १.	४१४३१
,, १. २. ३.	५१४४
अग्रजन्मन् १.	३१६११
अग्रणी १. २. ३.	५१४६४
अग्रतः ( -सू ) ४.	८१८११
अग्रतःसर १. २. ३.	३१७१४५
अग्रदिधिषु १.	३१६१४४
अग्रद्रवसंहति २.	३१८१४७
अग्रमांस ३.	४१४११४
अग्रयान ३.	३१७२०३
अग्रसन्धानी २.	१२१३६
अग्रस्थ १. २. ३.	५१४७७
अग्राम्य १. २. ३.	५१४२०
अग्रिम १. २. ३.	५१४७७
अग्रिय १. २. ३.	५१४४
,, १. २. ३.	५१४६३
अग्रीय १. २. ३.	५१४६३
अग्नेदिधिषु १.	३१६१४४
अग्नेदिधिषू १.	३१६१४४
,, २.	३१६१४५
अग्नेसर १. २. ३.	३१७१४५
अग्रथ १. २. ३.	५१४७७
अघ ३.	३१६१६८
,, ३.	६३१२
अघन १. २. ३.	५१४१२५
अघायु १. २. ३.	३१६१११
अङ्क १.	२११२९
,, १.	३१९१००
,, १.	४१४६०
,, १.	६११६
अङ्कण १.	४३१३६
अङ्कति १.	१२१४८
अङ्कपालि २.	८१२१२
अङ्कपाली २.	४३११७०
अङ्कलि २.	४३११५४

## [ अङ्गुल ]

अङ्गुट १.	४३१४८
अङ्कुर १. २.	३३११०
अङ्कुश १. ३.	३१७१८४
अङ्कुर १. ३.	३३११०
अङ्गोद १.	३३१४१
अङ्गोल १.	३३१४१
अङ्गुथ १.	३१९१२९
अङ्ग १ व.	३११३१
,, ३.	३१६२०८
,, ३.	४१४५२
,, ३.	४१४५५
,, १. २. ३.	६१५३
,, ४.	८१८२१
अङ्गचेष्टा २.	३१९१८
अङ्गज १.	४१४३९
,, १.	५११३८
,, १. ३.	७१५१०
अङ्गजा २.	४१४३९
अङ्गद ३.	४३११४३
अङ्गदीप ३.	३१११३
,, ३.	३१११४
,, ३.	३१११५
अङ्गना २.	२११९
,, २.	४१४५
अङ्गनाप्रिय १.	३३२२५
अङ्गमर्दिन् १.	३१९१५
अङ्गलोड्यक १.	४२१४६
अङ्गविच्छेप १.	३१९१७
अङ्गसंस्कार १.	४३११२
अङ्गहार १.	३१९१७
अङ्गार १. ३.	१२१३२
,, १.	२११३१
,, १.	५३१८
अङ्गारधानी २.	४३१५५
अङ्गारशकटी २.	४३१५५
अङ्गारशकट १. २. ३.	३१६१३२
अङ्गिन् १.	४१४१
अङ्गीकार १.	५२१३७
अङ्गु १.	२३११
अङ्गुल १. ३.	३११५२

## [ अङ्गुल ]

अङ्गुल १.	३३३२७
,, १.	३१६१५९
,, १.	४१४७९
अङ्गुलाल १.	३८११२
अङ्गुलि २.	४१४७४
अङ्गुलित्र ३.	३१७१५६
अङ्गुलिमुद्रा २.	४३११४५
अङ्गुलीयक ३.	४३११४४
अङ्गुष्ठ १.	४१४७४
अङ्गुष्ठकान्तर १.	४१४५७
अङ्गुष्ठि १.	४१४५६
अङ्गुष्ठिनामन् १.	३३११२
अङ्गुष्ठिप १.	३३३४
अचल १.	३२११
अचला २.	३११४
अचिरव्यूढा २.	४१४७
अच्छुभञ्ज १.	३१४७
अच्युत १.	१११११
अज १.	३१४६२
,, १. २. ३.	६१५४
अजगर १.	४१११७
,, १.	४१११९
अजगाव ३.	१११५०
अजगाव ३.	१११५०
अजन्य ३.	३१६१९०
अजप १. २. ३.	३१६११
अजमोदा २.	३८१०२
,, २.	८२११
अजय्य ३.	३१६१८६
अजवीथी २.	२११४६
अजशृङ्गी २.	३३११४१
अजस्र १. २. ३.	५१४१३०
अजहा २.	३३१२२९
अजा २.	३१४६३
आजाजी २.	३८१८३
अजाजीव १.	३१२२९
अजित १.	११११२
अजितनेमि १.	३१६१९
अजिन ३.	३१६२१
अजिनपत्रा २.	२३१४४
अजिनयोनि १.	३१४२५

## शब्दानुक्रमिका

अजिर ३.	४१४१३६
,, १. २. ३.	५१४१२५
,, १. २. ३.	७१५४
अजीगव ३.	१११५०
अजुका २.	३१९१०४
अज्ज १. २. ३.	५१४२१
अज्जति १.	१२११८
अज्जन ३.	३१६३९
अज्जल १.	४३१३१
अज्जित १. २. ३.	५१४११३
अज्जन १.	२११८
,, १.	३१६१०७
,, ३.	४३१५७
अज्जनकेशी २.	३८१०१
अज्जनवज्जिका २.	३३१३५
अज्जनावती २.	२११९
अज्जनिका २.	४१४२९
अज्जलि १.	४१४७८
,, १.	५११५३
,, १.	५११६३
,, १.	८१२७
अज्जलिकारिका २.	३३११४८
,, २.	३१९१३
अज्जसा ४.	८१७३१
अज्जि १.	३३१८२
अटनी २.	३१७१७७
अटवी २.	३१११
,, २.	८१६११
अटाव्या २.	५२१११
अट्ट १.	४३१३३
,, १.	६११५
अट्टहास १.	३१९८४
अट्टालिका २.	४३१३३
अट्टन ३.	३१७२००
अणक १. २. ३.	५१४७५
अणव्य १. २. ३.	३८१२०
अणि १.	२११७९
,, १. २.	३१७१३१
,, १. २.	४३१५२
,, १. २.	६१५५
अणिकूर्च १.	२११८०

## [ अतिमुक्त ]

अणु ३.	३८११९९
,, १. २. ३.	५१४१३६
अणुराजि २.	३१७१६३
अण्ड ३.	२३१५०
,, १.	३१७१६२
,, १. ३.	४१४६३
,, ३.	६३१२
अण्डज १.	४१४३२
,, १. २. ३.	४१४२
,, १.	७१५११
अण्डजा २.	७१५११
अण्डप्रहरण १.	४१४७७
अण्डमूलक ३.	४१४६०
अण्डवर्धन ३.	४१४१३१
अण्डिक १.	४१४१३४
अण्डिका २.	५१४४८
अण्डीर १.	७१५१५
अण्डुक १.	२३३३४
,, १.	४१४७७
,, १.	४१४६३
अतः ( -सू ) ४.	८१७३६
अतलस्पर्श १. २. ३.	४२११९
अतसी २.	३८१४५
अति ४.	८१७१५
,, ४.	८१८४
अतिकृच्छ्रक ३.	३१६१३९
अतिक्रम १.	३१६११४
,, १.	५२११६
अतिचरा २.	३८१८९
अतिचाटुवाच् २.	२१४२५
अतिच्छुत्त्र १.	३३३२३४
अतिजव १. २. ३.	३१७१५०
अतिथि १.	३१६१८
अतिथ्यर्थ १. २. ३.	३१६१६७
अतिपथिन् १.	३१४४९
अतिपात १.	३१६११४
अतिबला २.	३३३१२८
अतिमर्याद १. २. ३.	५१४१३१
अतिमात्र १. २. ३.	५१४१३१
अतिमानक १. २. ३.	५१४१३१
अतिमुक्त १.	३३३१८८



अतिमुक्तक ]

अतिमुक्तक १.	३१३४६
अतिमृगा १.	३१३१७२
अतियव १.	३१८५२
अतिरिक्त १.२.३.	५१३१३७
अतिविषा २.	३१८९०
अतिवेल १.२.३.	५१३१३१
अतिशय १.	५१२३
अतिशयित १.२.३.	५१३१३७
अतिसन्धान ३.	५१२३५
अतिसर्जन ३.	५१२१९
अतिसारकिन् १.२.३.	४१३१४६
अतिस्थिर १.२.३.	५१३१७९
अतिहस्तक १.	३१७७०
अतिहास १.	३१५८५
अतिहिंसन ३.	३१७२८
अतीन्द्रिय १.२.३.	५१३१३३
अतीव ४.	८१८४
अतीसार १.	४१३१२९
अत्यन्त १.२.३.	५१३१३१
अत्यन्तीन १.२.३.	३१७१४९
अत्यग्ला २.	३१३१३४
अत्यय १.	७१११
अत्यर्थ १.२.३.	५१३१३१
अत्यर्थस्वादु ३.	३१८१३६
अत्याकार १.	३१६१७१
अत्याधान ३.	५१२१६
अत्याहित ३.	८३११
अत्यृह १.	३१७८०
अत्रिनेत्रज १.	२११२५
अथ ४.	८१७१४
अथवाणि ३.	८१११३
अथो ४.	८१७१४
अदन ३.	४१३१०२
अदभ्र १.२.३.	५१३८५
अदय १.२.३.	५१३२४
अदसू १.२.३.	६१४१
अदातृ १.२.३.	५१३५९
अदिति २.	३१६१९१
" २.	७१२१
अदितिनन्दन १.	१११३

वैजयन्तीकोषः

अदृष्ट ३.	३१७१४
अदृष्टि २.	३१९१०
अद्धा ४.	८१७१२
अद्भुत १.	११२१७
" १.	३१७७५
" १.	३१७७७
" १.२.३.	३१७७८
अद्भर १.२.३.	५१३५०
अद्य ४.	८१८१७
अद्यश्चीन २.	४१३१७
अद्रि १.	२११११
" १.	३१२१२
" १.	६१११४
अद्रिज ३.	३१२१६
अद्रिजा २.	१११५८
अद्रिधत् १.	१११२५
अद्रुत १.२.३.	५१३५२
अद्भ्यवादिन् १.	१११३४
अधः (—स्) ४.	८१८१९
अधःपुष्पी २.	३१३१५७
अधम १.२.३.	५१३७५
" १.२.३.	७१३११
अधमर्ण १.२.३.	३१८१९
अधर १.	४१३८७
" १.२.३.	५१३४७
" १.२.३.	७१५१६
अधरा २.	२१११६
अधरेद्युः (—स्) ४.	८१८१८
अधरोष्ठ १.	४१३८७
अधर्म १.	३१६१६८
अधस्तात् ४.	८१८१९
अधि ४.	८१७१३
अधिक १.२.३.	५१३८५
" १.२.३.	५१३१३१
" १.२.३.	५१३१३७
अधिकधिक १.२.३.	५१३५६
अधिका २.	५११४०
अधिकाङ्ग ३.	३१७१५६
अधिकार १.	२१३११
अधिकृत १.२.३.	३१७१९
अधिष्ठित १.२.३.	८१३१२

[ अनमिक

अधिलेप १.	२१३३२
अधिल्यका २.	३१३१९
अधिप १.२.३.	५१३५८
अधिपति १.२.३.	५१३५८
" १.२.३.	८१५१२
अधिमू १.२.३.	५१३५८
अधिरौहिणी २.	४१३५१
अधिवास १.	८१११६
अधिवासन २.३.	४१३१५६
अधिविज्ञा २.	४१३१३
अधिश्रयणी २.	४१३१४
अधिष्ठातृत्व ३.	१११४८
अधीतवेदक १.	३१६१८
अधीर १.२.३.	५१३१८
अधीश १.२.३.	५१३५८
अधीश्वर १.	३१७१२
अधुना ४.	८१८१५
अधीऽशुक ३.	४१३१२१
अधीऽसृज १.	११११३
अधोनापित १.	३१५११
अधोभुवन ३.	४११११
अधोमुख १.२.३.	५१३१०
अध्यक्ष १.२.३.	३१७१९
" १.२.३.	५१३३३
" १.२.३.	७१३११
अध्यण्डा २.	३१३१२९
" २.	३१३१७७
अध्ययन ३.	३१६१६३
अध्यवसाय १.	३१६१६७
अध्यस्त १.२.३.	५१३१०४
अध्यापन ३.	३१६१६३
अध्याय १.	३१३१३२
अध्युष १.	५११५३
अध्यूढा २.	४१३१३
अध्येषणा २.	३१६१२०
अध्वन् १.	३१३१४९
अध्वर १.	३१६१८२
अध्वर्यु १.	३१६१७९
अनंशुमरफला २.	३१३१७३
अनक्षर १.२.३.	२१३१६
अनमिक १.	३१६१७३

अनङ्ग]

अनङ्ग १.	१११२७
अनङ्गह १.	३१३५२
अनङ्गही २.	३१३४२
अनङ्गवाही २.	३१३४२
अनन्त १.	४११३
" १.२.३.	७१५१४
अनन्तशायिन् १.	११११३
अनन्ता २.	२११५
" २.	३१३१२५
" २.	७१५१४
अनन्यज १.	१११२८
अनन्यवृत्ति १.२.३.	५१३१२८
अनपराध्य १.२.३.	५१३१६३
अनम्बु १.	२१३३२
अनर्गल १.२.३.	५१३१३२
अनर्थक १.२.३.	२१३१८
अनल १.	११२१५
" १.	३१८१९
अनलज्वाला २.	३१३१९७
अनलोपल १.	३१३३७
अनवधानता २.	३१६१७८
अनवरत १.२.३.	५१३१३०
अनवरकर १.२.३.	५१३१६६
अनसू ३.	३१७१२५
अनादर १.	३१६१७१
अनादृत १.२.३.	५१३१५
अनामय ३.	४१३१४२
अनामिका २.	४१३१७४
अनारत १.२.३.	५१३१३०
अनालम्बी २.	३१९११८
अनावृष्टि २.	२१२१८
अनाशक ३.	३१६१४४
अनाशकिन् १.	३१६१६०
अनि १.२.	३१७१३१
अनिच्छु १.	३१३१२६
अनिमिष १.	८१११३
अनिमेष १.	८१११३
अनिरुद्ध १.	१११२९
अनिर्बद्ध १.२.३.	२१३१७
अनिर्वाप १.	२१३१३३

शब्दानुक्रमिका

अनिल १.	११२१७
" १.	३१७१६१
अनिलाशन १.	४११६
अनिश ३.	५१३१३०
अनिष्ट १.२.३.	५१३१६९
अनी २.	४१३१७
अनीक १.३.	७१५१५
अनीकवत् १.	११२१५
अनीकस्थ १.	८१११४
अनीकिनी २.	३१७१५
" २.	३१७१५८
अनु ४.	८१७१६
अनुक १.२.३.	५१३१३४
अनुकण्ठी २.	४१३१४१
अनुकम्पा २.	३१६१९२
अनुकर्ष १.	३१७१३३
अनुकर्षण ३.	३१९१५३
अनुकल्पक १.	३१६११३
अनुकामीन १.	३१७१५०
अनुकार १.	५१२१७
अनुकूल १.२.३.	५१३१२७
अनुक्रम १.	३१६११३
अनुक्रोश १.	३१६१९२
अनुग १.	३१७१६
अनुचर १.	३१७१६
अनुज १.	४१३१३
" १.२.३.	५१३१४
अनुजीविन् १.	३१७१७
अनुताप १.	३१६१८५
अनुत्तर १.२.३.	४१३१२५
अनुदात्त १.२.३.	३१६१३७
अनुद्वीप १.	३१११३
अनुनय १.	५१२१८
अनुनासिक १.२.३.	३१६१३७
अनुपद ४.	५१३१२८
अनुपदिन् १.२.३.	७१३२७
अनुपदीना २.	४१३१६२
अनुपमा २.	२१११९
अनुपात्यय १.	३१६११४
अनुचान १.	३१६१८२
अनुचीन १.२.३.	५१३१२७

[ अन्तर्धि

अनूप १.२.३.	३१११४५
अनूराध १ ब.	२१११४४
अनूराधरथि १.	२१११११
अनूङ्ग १.	४१३१४
अनूजु १.	११३१४
" १.२.३.	५१३१२२
अनृत १.२.३.	२१३१७
" ३.	३१८१३
" ३.	७१५१६
अनेक १.२.३.	८१९१५८
" १.२.३.	८१९१५८
अनेकप १.	३१७१६०
अनेड १.२.३.	५१३१२१
अनेडमूक १.२.३.	५१३१३३
" १.२.३.	५१३१४४
अनेहस् १.	२११५२
अनोकह १.	३१३१५
अन्त १.	३१६१७६
" १.२.३.	५१३१२९
" १.	५१३१३१
" १.३.	६१५११
अन्तःकरण ३.	२१६१७३
अन्तःपुर ३.	४१३१३६
अन्तक १.	११२१३४
अन्तर ३.	२११७
" ३.	२११९३
" १.२.३.	३१८११०
" १.	७१५११
अन्तरगाहन ३.	५१२१४
अन्तरद्वीप १.	३१११२
अन्तरा ४.	८१८१८
अन्तराय १.	५१२१४
अन्तराल ३.	२११७
अन्तरिक्ष ३.	२११११
अन्तरिक्षासन ३.	३१६१२९
अन्तरीप ३.	४१३१३३
अन्तरीय ३.	४१३१२१
अन्तरेण ४.	८१८१४
" ४.	८१८१८
अन्तर्गङ्ग ३.	५१२१६
अन्तर्धि १.	२११६३



अन्तर्मनस]

वैजयन्तीकोषः

[ अपरान्त

अपराह ]

शब्दानुक्रमिका

[ अभिनिष्ठान

अन्तर्मनस १.२.३. पा१३४	अन्ध १. ३१५९३
अन्तर्यामि १. ३१६१२	अन्ध १. ३१५९१७
अन्तर्वक्षिक १. ३१७२२	अन्ध ३. ४३१७५
अन्तर्वक्षी २. ४३१६६	अन्ध १. २. ३. पा११०७
अन्तर्वक्षि १.२.३. पा१३१	अन्ध ३. ८६१८
अन्तश्चय्या २. ८१२२२	अन्धज्जिका २. ३३१२७
अन्तस्था २. ३१६३६	अन्धाद १. ११२२७
अन्तावसायिन् १. ३१५४९	अन्ध १. २. ३. ६१४१२
अन्ध १. ३१५८७	अन्धतरेयः (-स्) ४. ८१८८
अन्ध १. ३१५१०७	अन्धथा ४. ८१८२०
अन्ध १. ३१५१२६	अन्धथाकृति २. पा२२४
अन्धिका २. ४३१५४	अन्धथाभाव १. पा२२४
अन्धिकाश्रय १. ४३११२	अन्धदा ४. ८१८१७
अन्धिकेशय १. ४३११६८	अन्धनिहति २. २१४४०
अन्धिम १. २. ३. पा१३७७	अन्धपीडन ३. पा२२३
अन्ध १. २. ३. पा११४०	अन्धपुष् १. २३११६
अन्धेवासिन् १. ८१११३	अन्धभृत १. २३१२६
अन्ध १. २. ३. पा१३७७	अन्धलोहक ३. ३१२२८
अन्ध १. २. ३. ६१४११	अन्धवाप १. २३११६
अन्धज्याति १. ३१५२	अन्धशाखास्थ १. २. ३. ३१५१३
अन्ध २. ३१५१२१	अन्धानुरक्ता २. ३१६४८
अन्धजालय १. ३१५३२	अन्धेयुः (-स्) ४. ८१७४
अन्धवर्ण १. ३१५११	अन्धोन्य १.२.३. पा११२३
अन्धुक १. ३१७८३	अन्धवत् १. २. ३. पा११२८
अन्ध २. ६१२११	अन्धवत् १.२.३. पा११२८
अन्ध १. २. ३. पा११३३	अन्धवत् १. ४३१४९
अन्ध १. ६१५६	अन्धवाय १. ४३१४९
अन्धक १. ३१६२०१	अन्धवाय ३. ८१३२
(इन्धक)	अन्धाहार्यवचन १. ११२२३
अन्धकसूदन १. १११४३	अन्धिवृ १. २. ३. पा११९८
अन्धकार १. ३. २११६२	अन्धेषणा २. ३१६१२१
अन्धकी २. २११४	अन्धेषित १.२.३. पा११९८
अन्धतमस ३. २११६२	अन्धेषित १. २. ३. पा११२७
अन्धता २. ८१५६	अन्ध २ ब. ४३१३
अन्धमेहल १. पा११५६	अन्ध २. ८१७१३
अन्धस् ३. ४३१७५	अन्ध ४. ८१७२५
अन्धु १. ४३१७	अन्धकार १. पा२१२२
अन्ध १ ब. २३१३२	अन्ध १. पा२१२३
अन्ध १. ३१५३५	अन्ध १. पा२१२३
अन्ध १. ३१५९२	अन्धकृष्ट १. २. ३. पा१३७१

अपकृष्ट १. २. ३. पा१३७५	अपकृष्ट १. २. ३. पा१३७५
अपक्रम १. ३१७२१०	अपक्रम १. ३१७२१०
अपगम १. पा२१२७	अपगम १. पा२१२७
अपगतभक्त १.२.३. पा१३७७	अपगतभक्त १.२.३. पा१३७७
अपघन १. ४३१५५	अपघन १. ४३१५५
अपचायित १. २. ३. पा११०५	अपचायित १. २. ३. पा११०५
अपचित १.२.३. पा११०५	अपचित १.२.३. पा११०५
अपचित २. ३१७४४	अपचित २. ३१७४४
अपचित २. ८१२११	अपचित २. ८१२११
अपचयज १. ३१६१७७	अपचयज १. ३१६१७७
अपटी २. ४३११२४	अपटी २. ४३११२४
अपटीका २. ३१२८६	अपटीका २. ३१२८६
अपटु १. २. ३. ४३११४४	अपटु १. २. ३. ४३११४४
अपतर्पण ३. ४३११३९	अपतर्पण ३. ४३११३९
अपत्य ३. ४३१४१	अपत्य ३. ४३१४१
अपत्रपा २. ३१६१९४	अपत्रपा २. ३१६१९४
अपत्रपिण्ड १.२.३. पा११४०	अपत्रपिण्ड १.२.३. पा११४०
अपथ ३. ३११५०	अपथ ३. ३११५०
अपथिन् १. ३११५०	अपथिन् १. ३११५०
अपदंश १. ३११५२	अपदंश १. ३११५२
अपदंशक १. ४३१८६	अपदंशक १. ४३१८६
अपदरोहिणी २. ३३१८४	अपदरोहिणी २. ३३१८४
अपदान ३. ३१७२०९	अपदान ३. ३१७२०९
अपदान ३. ८१३११	अपदान ३. ८१३११
अपदालक १. ४३१४२	अपदालक १. ४३१४२
अपदिश ४. २११३३	अपदिश ४. २११३३
अपदेश १. ८११७	अपदेश १. ८११७
अपध्वंसज १. ३१५१२०	अपध्वंसज १. ३१५१२०
अपध्वस्त १.२.३. पा१३७१	अपध्वस्त १.२.३. पा१३७१
अपभरणी २. २११४१	अपभरणी २. २११४१
अपभ्रंश १. ८११७	अपभ्रंश १. ८११७
अपरगन्धिक १. ३११८	अपरगन्धिक १. ३११८
अपरति २. पा२३६	अपरति २. पा२३६
अपररात्रक १. २११६६	अपररात्रक १. २११६६
अपराजित १. ८११५०	अपराजित १. ८११५०
अपराजिता २. २११५	अपराजिता २. २११५
अपराजिता २. ३३१३३	अपराजिता २. ३३१३३
अपराजिता २. ३३१२०८	अपराजिता २. ३३१२०८
अपराजित १. २. ३. ३३१२१८	अपराजित १. २. ३. ३३१२१८
अपराध १. ३३१७७	अपराध १. ३३१७७
अपराध १. ३३१७७	अपराध १. ३३१७७
अपराध १. ३३१७७	अपराध १. ३३१७७

अपराह १. २११६५	अपराह १. २११६५
अपरुजा २. १११५९	अपरुजा २. १११५९
अपरेयः (-स्) ४. ८१८८	अपरेयः (-स्) ४. ८१८८
अपर्णा २. १११५९	अपर्णा २. १११५९
अपलाप १. २१३३०	अपलाप १. २१३३०
अपलासिका २. ३१६१८१	अपलासिका २. ३१६१८१
अपवंश १. ३१७४७	अपवंश १. ३१७४७
अपवन ३. ३३१२	अपवन ३. ३३१२
अपवरक १. ४३१५१	अपवरक १. ४३१५१
अपवर्ग १. ८११६	अपवर्ग १. ८११६
अववर्जन ३. ३३११९९	अववर्जन ३. ३३११९९
अपवाद १. २१३३३	अपवाद १. २१३३३
अपवाद १. ३१७४७	अपवाद १. ३१७४७
अपवाद १. ८१११४	अपवाद १. ८१११४
अपवारण ३. २११६३	अपवारण ३. २११६३
अपव्यय १. २१३३०	अपव्यय १. २१३३०
अपशब्द १. ३१५१२०	अपशब्द १. ३१५१२०
अपशब्द १. २. ३. पा१३२२	अपशब्द १. २. ३. पा१३२२
अपशाला २. ४३३३८	अपशाला २. ४३३३८
अपष्ट ३. पा२१८	अपष्ट ३. पा२१८
अपष्ट ३. पा२१८	अपष्ट ३. पा२१८
अपसर १. पा२३२२	अपसर १. पा२३२२
अपसर्प १. ३१७२९	अपसर्प १. ३१७२९
अपसव्य १. ११२२८	अपसव्य १. ११२२८
अपस्कर १. ३१७१३५	अपस्कर १. ३१७१३५
अपस्नान ३. ३१६६४	अपस्नान ३. ३१६६४
अपहस्तित १.२.३. पा१३२५	अपहस्तित १.२.३. पा१३२५
अपहार १. पा२११९	अपहार १. पा२११९
अपहार १. ८११३	अपहार १. ८११३
अपहास १. ३१७८५	अपहास १. ३१७८५
अपहित १.२.३. पा११०४	अपहित १.२.३. पा११०४
अपह्व १. २१३३०	अपह्व १. २१३३०
अपह्व १. ८१११४	अपह्व १. ८१११४
अपाङ्गर्भ १. ८१११५	अपाङ्गर्भ १. ८१११५
अपाङ्ग ४. पा१३९१	अपाङ्ग ४. पा१३९१
अपाङ्गी १.२.३. पा१३९१	अपाङ्गी १.२.३. पा१३९१
अपाटव ३. ४३११३८	अपाटव ३. ४३११३८
अपादान ३. पा२११९	अपादान ३. पा२११९
अपान ३. ४३१६०	अपान ३. ४३१६०
अपान १. ७५१२२	अपान १. ७५१२२
अपानिक १. ३३१९२	अपानिक १. ३३१९२

अपानपात् १. ११२२३	अपानपात् १. ११२२३
अपामार्ग १. ३३११५५	अपामार्ग १. ३३११५५
अपाम्पति १. ४३२१०	अपाम्पति १. ४३२१०
अपाम्पित ३. ११२१९	अपाम्पित ३. ११२१९
अपाय १. ३१७२१०	अपाय १. ३१७२१०
अपाय १. पा२२७	अपाय १. पा२२७
अपार १. ४३२१०	अपार १. ४३२१०
अपार्थक १.२.३. पा१३२९	अपार्थक १.२.३. पा१३२९
अपावृत्त १. २. ३. पा१३२७	अपावृत्त १. २. ३. पा१३२७
अपाश्रय १. ४३११६४	अपाश्रय १. ४३११६४
अपि ४. ८१७१४	अपि ४. ८१७१४
अपिधान ३. २११६४	अपिधान ३. २११६४
अपुञ्ज १. ११२२१	अपुञ्ज १. ११२२१
अपुनर्भव १. ३३१२३८	अपुनर्भव १. ३३१२३८
अपूप १. ४३१७२	अपूप १. ४३१७२
अपेक्षा २. पा२२९	अपेक्षा २. पा२२९
अपोनपात् १. ११२२३	अपोनपात् १. ११२२३
अपौर १. ३३१३३	अपौर १. ३३१३३
अप्पति १. ११२४५	अप्पति १. ११२४५
अप्पति १. ४३२११	अप्पति १. ४३२११
अप्पित्त ३. ११२१९	अप्पित्त ३. ११२१९
अप्पुष्प ३. ४३२३७	अप्पुष्प ३. ४३२३७
अप्फल ३. ३३२२०	अप्फल ३. ३३२२०
अप्य ३. ८१८८०	अप्य ३. ८१८८०
अप्रकाण्ड १. ३३३३७	अप्रकाण्ड १. ३३३३७
अप्रच्छन्न ३. ३३३३६	अप्रच्छन्न ३. ३३३३६
अप्रहत १. २. ३. ३३८१८	अप्रहत १. २. ३. ३३८१८
अप्रहृष्टक १. २३११६	अप्रहृष्टक १. २३११६
अप्सरस् २. १३१११	अप्सरस् २. १३१११
अप्सरसाप्ति १. ११२१६	अप्सरसाप्ति १. ११२१६
अफला २. ३३३१९	अफला २. ३३३१९
अबद्ध १. २. ३. २१३१८	अबद्ध १. २. ३. २१३१८
अबद्धमुख १.२.३. पा१३४६	अबद्धमुख १.२.३. पा१३४६
अबल १. ४३३२२	अबल १. ४३३२२
अबला २. ४३३१५	अबला २. ४३३१५
अबाल ३. ३३३२२०	अबाल ३. ३३३२२०
अब्ज ३. ४३३३७	अब्ज ३. ४३३३७
अब्ज १. ६५३३	अब्ज १. ६५३३
अब्जल १. ३३७९६	अब्जल १. ३३७९६
अब्जारि १. २११२६	अब्जारि १. २११२६
अब्द १. २११९०	अब्द १. २११९०

अब्द १. २२२११	अब्द १. २२२११
अब्ध १. ४३२३७	अब्ध १. ४३२३७
अब्धा २. ४३२२३	अब्धा २. ४३२२३
अब्धि १. ४३२१२	अब्धि १. ४३२१२
अब्धि १. ८६१३३	अब्धि १. ८६१३३
अब्धिजा २. १११३६	अब्धिजा २. १११३६
अब्धिगण्डकी २. ४३१५६	अब्धिगण्डकी २. ४३१५६
अब्धिवस्त्रा २. ३३१३३	अब्धिवस्त्रा २. ३३१३३
अब्धिवृत्त ३. ३३११०९	अब्धिवृत्त ३. ३३११०९
अभय ३. ३३३२३२	अभय ३. ३३३२३२
अभया २. ३३३१७८	अभया २. ३३३१७८
अभवनि २. ८११८	अभवनि २. ८११८
अभि ४. ८१७१६	अभि ४. ८१७१६
अभिक १. २. ३. पा१३३५	अभिक १. २. ३. पा१३३५
अभिक्रम १. ३३७२०२	अभिक्रम १. ३३७२०२
अभि १. पा२१५	अभि १. पा२१५
अभि १. पा२१६	अभि १. पा२१६
अभिरुचा २. पा१३२२	अभिरुचा २. पा१३२२
अभिरुच्य २. ७३२२	अभिरुच्य २. ७३२२
अभिरुच्य ३. २१३३२	अभिरुच्य ३. २१३३२
अभिरुह १. पा२१८	अभिरुह १. पा२१८
अभि १. ८११११	अभि १. ८११११
अभिरुच्य १. ३३३१७	अभिरुच्य १. ३३३१७
अभिज १. २. ३. पा१३६१	अभिज १. २. ३. पा१३६१
अभिजन १.२.३. पा१३१९	अभिजन १.२.३. पा१३१९
अभि १. ८११११	अभि १. ८११११
अभिजात १. २. ३. ८१३११	अभिजात १. २. ३. ८१३११
अभिज्ञ १. २. ३. पा१३१९	अभिज्ञ १. २. ३. पा१३१९
अभिज्ञान ३. २११२९	अभिज्ञान ३. २११२९
अभितः (-स्) ४. ८१७३१	अभितः (-स्) ४. ८१७३१
अभिताडन ३. पा२१९९	अभिताडन ३. पा२१९९
अभिताप १. ४३१३३५	अभिताप १. ४३१३३५
अभिधा २. २१३३१	अभिधा २. २१३३१
अभिधान ३. २१३३१	अभिधान ३. २१३३१
अभिध्या २. ३३३१७९	अभिध्या २. ३३३१७९
अभिनय १. ३३१९८	अभिनय १. ३३१९८
अभि १. ३३१९८	अभि १. ३३१९८
अभिनव १. २. ३. पा१३८८	अभिनव १. २. ३. पा१३८८
अभिनविश १.२.३. पा२११४	अभिनविश १.२.३. पा२११४
अभिनितान १. ३३३३७	अभिनितान १. ३३३३७
अभि १. ८११५०	अभि १. ८११५०



[ अभिनित ]

अभिनीत १. २. ३. ८४११
अभिपन्न १. २. ३. ८४१२
अभिप्राय १. ३६१७४
अभिभूत १. २. ३. ५४१६७
अभिमन्त्रण ३. ३६१९३
अभिमर १. ८१११२
अभिमर्द १. ३७१२०५
अभिमान १. ३६११६९
" १. ८१११९
अभियाति १. ३७१४२
अभियुक्त १. २. ३. ३८११०
अभियोक्तृ १. २. ३. ३८११०
अभिरूप १. २. ३. ८४११५
अभिलाष १. ३६११८०
अभिलाषुक १. २. ३. ५४१३५
अभिवादक १. २. ३. ५४१४३
अभिवादन ३. ३६१३९
अभिवान्या २. ३४१५१
अभिदांसन ३. २४१३२
अभिदास्त १. २. ३. ३८१११
अभिदास्ति २. ८११२
अभिदाप १. २४१३२
अभिपङ्क १. ८१११०
अभिषव १. ३७१५१
" १. ८११११
अभिषिक्त १. ३१५५
अभिषिक्तक १. ३१५६६
अभिषुत ३. ४३१८२
अभिषेक १. ४३११३३
अभिषेणन ३. ३७१२०१
अभिसन्धान ३. ३७११९४
अभिसम्पात १. ३७१२०५
अभिसार १. ३७११६
अभिसारिका २. ३६१४६
" २. ४४११२
अभिहार १. ५१११८
" १. ८१११०
अभीक १. २. ३. ५४१३५
" १. २. ३. ७४११
अभीक्षण ३. ७४१२
अभ्यग्र १. २. ३. ५४१८९

वजयन्तीकोषः

अभ्यग्र १. २. ३. ५४११४०
अभ्यङ्ग १. ४३११२
अभ्यन्तर ३. २११७
अभ्यमित १. २. ३. ४४११४४
अभ्यमित्र १. २. ३. ३७११४६
अभ्यमित्रिण १. २. ३. ३७११४६
अभ्यमित्रिय १. २. ३. ३७११४६
अभ्यर्ण १. २. ३. ५४११४०
अभ्यवकर्षण ३. ५१११७
अभ्यवस्कन्द १. ३८११६
अभ्यवस्कन्दन ३. ३७१२०७
अभ्यवहार १. ४३११०२
अभ्यवहृत १. २. ३. ५४११०८
अभ्यागम १. ३७१२०५
अभ्यागारिक १. २. ३. ५४१५२
अभ्यादान ३. ५१११५
अभ्याधान ३. ८३१२
अभ्यान्त १. २. ३. ४४११४४
अभ्यारूढ १. २. ३. ८४१५
अभ्याश १. २. ३. ५४११४०
अभ्यास १. ३७११९५
अभ्यासादन ३. ३७१२०७
अभ्युत्थान ३. ५११२०
अभ्युपगम १. ५११३७
अभ्युपाय १. ५११३७
अभ्योष १. ७५१११
अभ्र ३. ६३११
अभ्रक ३. ३१११५
अभ्रनाग १. ११११२
अभ्रपिशाच १. २११३७
अभ्रपुष्प १. ३३१३१
अभ्रफुल्लक १. ३११६३
अभ्रभव १. २. ३. ५४११६६
अभ्रमु २. २१११९
अभ्रमुप्रिय १. ११११२
अभ्रावकाशिक १. २. ३. ३६१३०
अभ्रि १. ३६११०२
" २. ३६१२९

[ अमृतांशु ]

अभ्रिय १. २. ३. ५४१११६
अमत १. ३. ३६१२०२
अमति २. ७१२२
अमत्र ३. ४३१६२
अमन १. ३३१४९
अमनि २. ७१२१
अमर १. ७५११३
अमरा २. ३६११२७
" २. ४३११९
" २. ७५११३
अमरावती २. ११२१०
अमरावली २. ११२४३
अमर्त्य १. १७१५
अमर्त्यभवन ३. १११२
अमर्ष १. ३६११८३
अमर्षिन् १. २. ३. ५४१३२
अमलपालिक १. ११२५३
अमा ४. ८७११२
अमात्य १. ३७१३
" १. ३७११९
अमात्यक १. ३७१२०
अमामंस्या २. २११७१
अमामसी २. २११७१
अमावसी २. २११७०
अमावस्या २. २११७१
अमावासी २. २११७०
अमावास्या २. २११७१
अमित्र ३. ३७१४०
अमुक्त ३. ३७११९६
अमुत्र ४. ८८११५
अमृणाल ३. ३३१२३१
अमृत ३. ३८१२
" ३. ३८११४६
" १. २. ३. ५४१८८
( अमृत )
" ३. ७५१७
अमृतत्व ३. ३६१२८८
अमृतफल १. ३३११६६
अमृतवल्ली २. ३३११३२
अमृता २ ब. २१११८
अमृतांशु १. २११२६

अमृताशन

अमृताशन १. १११४
अमृतोद्भव १. ३३१२०४
अमोघ १. ४११५२
अमोघा २. ३३१९०
" २. ३८१९७
अम्बक ३. ४४१९४
अम्बर ३. २११२
" ३. ४३११६
अम्बरीष १. ३. ४३१५६
" १. ८५१३
अम्बला २. ४३११०७
अम्बलोर्ण ३. ४३११०७
अम्बष्ठ १. ३५१४
" १. ३५१६५
" १. ३५१६६
" १. ३५१७०
अम्बष्टा २. ३३११३१
" २. ३३११६३
" २. ३८१७७
अम्बा २. ३१११०६
" २. ४४१२६
" २. ४४१२७
अम्बिका २. ४४१२७
" २. ७१२२
अम्बु ३. ४१२२
" ३. ८१११५
अम्बुक १. ३३१६५
" १. ३३११९४
अम्बुकपि १. ४११५४
अम्बुकफ १. ४११३३
अम्बुकान्तार १. ११२४५
अम्बुकुकुट १. २३१२२
अम्बुज १. २३१३२
" १. ३३१६७
" ३. ४१२३९
" ३. ५३१२८
" १. ८६११३
अम्बुजा २. १११३६
अम्बुवर्धन १. २१२२
अम्बुवर्धन ३. ४१२३३
अम्बुवल्ली २. ३४११६४

शब्दानुक्रमिका

अम्बुवास १. २११४५
अम्बुवेतस १. ३३१३०
अम्बुसूकर १. ४११५३
अम्बुकृत १. २. ३. २४११८
अम्भस् ३. ४१२१
अम्भरा २. ४३१४४
अम्भल १. ५३१२६
अम्भलुण्डी २. ३८११४१
( अम्भलुण्डी )
अम्भलित्तकपाय १. ५३१३५
अम्भलुण्डी २. ३८११४१
अम्भलोणी २. ३३११६३
अम्भवेतस १. ३८११३३
अम्भलान १. ३३११८८
अम्भिका २. ३३१८१
अम्भोट १. ३३१९४
अय १. ३६११८९
" १. ३११६१
अयन ३. ७३११
अयन्त्रित १. २. ३. ५४१३२२
अयश्शलाका २. ३७११८४
अयस ३. ३२२३
" ३. ८६११६
" ३. ८६११७
अयस्कान्त १. ३२२२८
अयस्कार १. ३१११६
अयाचित ३. ३८१२
अयि ४. ८७११२
अयुगच्छद १. ३३१४६
अयुगम १. २. ३. ५४१२३
अयुत ३. ५४१२८
अयोध्या २. ४३१५
अयोऽनि १. ४३१६५
अयोमणि १. ३२२३७
अयोमल ३. ३२२३६
अयोमुख ३. ३११२०
अयोर्गला २. ४३१४८
अर १. ३७१३५
" १. २. ३. ५४१२४
अरघटक १. ४१२२१

[ अरुन्तुद ]

अरणि १. २४१२२
" १. ३३१८६
" २. ३६१५०
" १. २. ३६११०८
अरण्य ३. ३३११
अरण्यजितिल १. ३८१३९
अरण्यमक्षिका २. २३१४५
अरण्यानी २. ३३१२
अरति १. ८१११०
अरति १. ३११५५
" १. ७१११
अरर ३. ४३१४६
" १. ७५११०
अरविन्द ३. ४१२१७
अराति १. ३७१४०
अराल १. ३८११११
" १. २. ३. ५४१२४
अरि १. ३७१४०
अरिचिन्तन ३. ३८११४
अरिज ३. ३२२३२
अरिज ३. ४२११६
अरिन् ३. ३७१३४
अरिम १. ३३१६४
अरिमर्दन १. १२११२
अरिमेदक १. ३३१६४
अरिश्रेणी २. २११७७
अरिष्ट १. २३११७
" १. ३३१३२
" १. ३३१२०४
" ३. ३६११९०
" ३. ४३१२०
" १. ४४१३२९
" १. २. ३. ७५१९
अरिष्टताति १. २. ३. ५४१५५
अरिष्टनेमि १. ११११२
अरुण १. ५३११७
" १. २. ३. ७५१६
अरुणा २. ३८१९०
" २. ७११६
अरुणोपल १. ३२२२०
अरुन्तुद १. २. ३. ५४११२२



[ अरुल ]

वैजयन्तीकोषः

[ अललोहित ]

अरुल ३.	७३१२	अर्थ १.	३१८७३	अर्जुन १.	४११३३
अरुणकर १.	३११२५	" १.	६११३	" ३.	५११२८
अरुसू ३.	३१७२१७	अर्थना २.	३१६१२०	अर्भक १. २. ३.	५११२८
अक १.	२१११०	अर्थवाद १.	२११३७	अर्मण ३.	४११५६
" १.	३१२१७	" १.	३१६३३	अर्य १.	३१८११
" १.	५११४	अर्थशास्त्र ३.	३१६३०	" १.	६११५
" १.	८१६२	अर्थसञ्चय १.	३१७४४	अर्यमन् १.	२१११०
अर्कवन्धु १.	१११३५	अर्थिन् १. २. ३.	५११६०	अर्या २.	४११२२
अर्कस्मिता २.	४१२२५	अर्थ्य १.	२११३१	अर्याणी २.	४११२२
अर्कष्ट ३.	३१८११३	" ३.	३१२१६	अर्या २.	४११२२
अगल ३.	३१७५१	" १. २. ३.	६१११	अर्वन १. २. ३.	६११६
" १. २. ३.	४१३४७	अर्दना २.	३१६७०	अर्वती २.	३१७१०७
" ३.	४१३५०	अर्दनि १.	८१११०	अर्वन् १. २. ३.	५११७५
" १. २. ३.	४१३५०	अर्दित १. २. ३.	५११०२	" १. २. ३.	६११६
" १. २. ३.	८११३८	" १. २. ३.	५१११२	अर्वाक् ४.	८१८१८
अर्ग्वध १.	३१३४८	अध १.	४११५६	अर्वाच् ४.	५११११
अर्घ १.	३१८७०	अर्धचन्द्र १.	३१७१८२	अर्वाचीन १. २. ३.	५११११
" १.	६११५	अर्धगुच्छ १.	४१११४०	अर्शस् ३.	४११३१
अर्घ्य १. २. ३.	६१११	अर्धजाह्नवी २.	४१२२८	" ३.	६१३२
अर्घ्या २.	३१३४१	अर्धतूर १.	३१९१३९	अर्शस् १. २. ३.	४१११४५
अर्चना २.	३१६३९	अर्धनाकुल ३.	३१६२१८	अर्शोऽन्न १.	३१३२०८
अर्चा २.	३१६३९	अर्धनाराच १.	३१७१८१	" ३.	३१८१४९
" २.	६१२१	अर्धपद १.	३११५१	अर्शोऽग्नी २.	३१३२०३
अर्चिष्मत् १.	११२१६	अर्धपञ्चासन ३.	३१६२११	अर्हक १. २. ३.	५११३३६
अर्चिस ३.	११२२९	अर्धमुकुट १.	१११४७	अर्हणा २.	३१६३९
" २. ३.	६१५६	अधमाणव १.	४१३१३९	अर्हत १. २. ३.	१११३५
" २. ३.	७१५३२	अधमानव १.	३१९६५	" १.	६१५६
अर्जक १.	३१३११९	अधमानुष १.	३१९६५	अलक १.	४११९८
अर्जुन १.	३१३३९	अधमायूरी २.	३१९१३१	अलकाम्बलिक १.	४१३९६
" ३.	३१३२३५	अधमास १.	२११७९	अलक्त १.	४१३१५३
" १.	५१३१०	अधमासतम १. २. ३.	५१११९	अलक्ष्मी २.	१११४२
" १. २. ३.	७१५५	अधमुष्टिक १.	४११८०	अलगर्ध १. ३.	४१११९
अर्जुनी २.	४१२२६	अधरात्र १.	८११२	अलङ्कारिण १. २. ३.	५११४१
" २.	७१५५	अधरात्रक १.	२११६६	अलङ्कर्मिण १. २. ३.	५११७२
" २.	८११५५	अधरूपक १.	३१८३७	अलङ्कार १.	४१३१३३
अर्ण १. ३.	२११२१	अधर्च १. ३.	८११२८	अलङ्कारसुवर्ण ३.	३१२२२
अर्णव १.	४१२१२	अधर्कतय ३.	३१७१८१	अलङ्कामारि १. २. ३.	५११५३
अर्णसू ३.	४१२१	अधर्कसूची २.	३१६२१५	अलम् ४.	८१७१३
अर्णिका २.	४१४४	अधर्कस्तक १.	३११५८	अलम्बक १.	३१३६४
अर्ति २.	३१७१७८	अधर्हार १.	४१३१४०	अलर्क १.	३१७३९
" २.	६१२१	अधर्कक ३.	४१३१२२	अललोहित १.	११२४०

[ अलस ]

शब्दानुक्रमिका

[ अवष्टम्भ ]

अलस १.	४११३५	अवक्रय १.	३१८७०	अवनाट १. २. ३.	५१११२
" १. २. ३.	५११५५	अवक्षेपणी २.	३१७११४	अवनि २.	३११४
" १. २. ३.	७१५५५	अवखात १.	४११३	" २.	३१३४७
अलसान्द्र १.	३१८४६	" १.	४१२७	अवन्ति १ व.	३१३३७
अलस्फुटिन् १.	३१६११२	अवगति २.	३१६१६४	अवन्तिसोम ३.	४१३८२
अलात ३.	११२३२	अवगाह १.	४१३६१	अवन्ती २.	४१३९
अलावू २.	३१३१६७	अवगीत १. २. ३.	३१६१२	" २.	४१३२७
अलि १.	२१३४२	" १. २. ३.	८१५१	अवन्ध्य १. २. ३.	३१३८
अलि (-न्) १.	४१३३२	अवग्रह १.	८११४	अवपात १.	३१७५२
अलिक ३.	४११९६	अवग्रह १.	२१२४	अवभ्रत १. २. ३.	५११३२
अलिङ्ग ३.	३१६१६२	अवघात १.	४१३६६	अवम १. २. ३.	५११७५
अलिङ्गर ३.	४१३५६	अवचूड १.	३१७१३४	अवमर्द १.	३१७२०७
अलिन् १.	२१३४२	अवच्छेद १.	३१६३३	अवमानना ३.	३१६१७२
" १.	८१६१४	अवज्ञा २.	२१३३०	अवमुण्ड १. २. ३.	३१६६६
अलिन्द १.	४१३४५	" २.	३१६१७२	अवयव १.	४११५५
अलिप्रिय १.	८११५९	अवज्ञात १. २. ३.	५११९५	अवर ३.	३१७७८
अलीक १. २. ३.	२१११७	अवट १.	२१३४	( अपर )	
" ३.	७१३२	" १.	३११५४	अवरक्षणी २.	३१७११२
अलीमक ३.	३११५७	" १.	४११३	अवरज १.	४१३१
अलोचक ३.	४१३११४	अवटीट १. २. ३.	५११३२	" १. २. ३.	५११४
अल्प १.	११२५३	अवट्ट १. २.	४११८५	अवराविला २.	२११७६
" १. २. ३.	५११३३६	" १. २.	८१६१९	अवरीण १. २. ३.	५१११०
अल्पतनु १. २. ३.	५११५	अवटोमनहस्त १.	४११८१	अवरं १.	३१५६०
अल्पतुङ्घी २.	३१३१६८	अवतंस १.	८११५९	अवरोध १.	४१३३६
अल्पपच १.	३१३१२०	अवतमस ३.	२११६३	अवरोह १.	३१३१२
अल्पपल्लव ३.	४१२६	अवतरण ३.	८१३१३	" १.	८११५
अल्पपुष्प ३.	३१३७०	अवतार १.	४१२२०	अवराहक २.	३१८३३
अल्पफला २.	३१३१७५	" १.	५१३२३	अवर्ण १. ३.	२१३३२
अल्पमात्र १.	३१३१२१	" १.	८११५	अवर्णवाद १.	२१३३३
अल्पहरिण १.	३१३१३३	अवतारण १. २. ३.	३१९१४१	अवलम्भ १.	४१३१७
अवकटा २.	३१९८६	अवतीर्ण १. २. ३.	५१३९५	अवलेप १.	८१११५
अवकर १.	४१३५२	अवताका २.	३१३४७	अवलोका १.	३१९९०
अवकरालय १.	३१६१११	अवदात १.	५१३१०	अवलोक १.	८१११६
अवका २.	३१६६०	" १. २. ३.	८१३३	अवलोलुक १.	५१३५२
" २.	४१३४७	अवदारण ३.	३१८२८	अवलुज १.	३१३१०८
" २.	४१३४९	अवदाह १.	३१३२३२	अवश्यम् ४.	८१८१२
अवकाश १.	२११७	अवद्य १. २. ३.	५१३७५	अवश्याय १.	२१२९
अवकीर्णिन् १. २. ३.	३१६१३३	अवधारणा २.	२१३४०	" १.	८१९१३
अवकील १.	३१८२६	अन्धि १.	४११३	अवष्टम्भ १. २. ३.	८१३४
अवकेशिन् १. २. ३.	३१३८	अवधीरण ३.	३१७१३	अवष्टम्भ १.	३१७२०८
अवक्र १. २. ३.	५११२४	अवध्वस्त १. २. ३.	८१३४	" १.	८११४



अवसन्धिका ]

अवसन्धिका २.	३६१५०
अवसर १.	५२१७
अवसाद १.	३६१९१
अवसादनी २.	३३१९१
अवसित १. २. ३.	८४३३
अवसुधिरा २.	४४८४
अवस्कन्द १.	३७२०३
" १.	३८१७
अवस्कर १.	८११५५
अवस्था २.	५२२२
अवहिस्था २. ३.	३९८६
अवहेल ३.	३६१७२
अवाक ४.	८८१९
अवाक्श्रुति १. २. ३.	५४१३३
अवाच् १. २. ३.	५४१४४
" ४.	५४१९१
अवाची २.	२११५
अवाचीन १. २. ३.	५४१९१
अवाच्य १. २. ३.	२४१६
अवान्तरदिशा २.	२११३
अवार ३.	४२३२
अवि १.	३४६४
" १.	५४३४
" १. २.	६५४४
अविदूष ३.	३८१७७
अविन १.	७११९
अविनीत १. २. ३.	५४३३
अविनीता २.	४४१२
अविमरीस ३.	३८१७७
अविरत १. २. ३.	५४३३०
अवलम्बित १. २. ३.	५४१९४
" १. २. ३.	५४१९५
अविला २.	३४६५
अविशेष १.	३६२०५
अविष १. २. ३.	७५१२
अविषाद १.	३७२८
अविसोद ३.	३८१७७
अविस्तर १.	२४१४०
अवीची १.	१२३७
अवीरा २.	४४२०
अव्यक्त ३.	३६१६२
" १. २. ३.	७५१३३

वैजयन्तीकोषः

अव्यय १.	३३१९१
अव्यथा २.	३३१७८
" २.	३८८९
अव्यथिष १. २.	८५११
अव्यय १. ३.	१११४८
" ३.	८७११
अव्यादा २.	३८१५८
अशन ३.	४३१५५
" ३.	४३१९२
अशनाया २.	३६१८२
अशनायित १. २. ३.	५४३३६
अशनि १. २.	२२२६
" १. २.	२२२६
" १. २.	७५१५५
अशिख १. २. ३.	३६६६
अशित १. २. ३.	५४१९०७
अशिरस् १.	३७२१६
अशिरस्क १.	८१११६
अशिशिषा २.	३६१८२
अशिक्षी २.	४४२०
अशीतांशु १.	२११११
अशीति २.	५४१२७
अशूर १. २. ३.	३७१४७
अशोक १.	३३३४०
अशोकवनिता २.	१२१४४
अशोका २.	३८८६
अशोभनस्वर १. २. ३.	५४१४८
अश्मकुट्टक १.	३९२२
अश्मगर्भ ३.	३२३८
अश्मज ३.	३२१६
अश्मन् १.	३२१८
" १.	३६१०२
अश्मन्त ३.	४३१०४
अश्मन्तक १.	३३१९४
अश्मन्तिका २. ३.	८८३२
अश्मरी २.	४४१२८
अश्मरीरिपु १.	३३३४१
अश्ममारक १.	३२३४
अश्र १.	४३५२
अश्रान्त १. २. ३.	५४१३०

[ अष्टावक्र

अश्रि २.	४३५२
अश्रु ३.	३९८७
अश्रुष्टार्थ १. २. ३.	२४१७
अश्रु १.	११३०
" १.	३७१०
" १.	८६१७
अश्वकन्द १.	३३१२८
अश्वकर्ण १.	३३३८
अश्वखुरी २.	३३१३४
अश्वगन्धी २.	३३१२८
अश्वतर १.	३७१०८
अश्वस्थ १.	३३२७
अश्वपण्य १.	३५१२
" १.	३५७१
अश्वपोत १.	३७१०७
अश्वप्रिय १.	३८५२
अश्वबडव १ द्वि.	८१५१
अश्वमारक १.	३३१९२
अश्वमुख १.	१३३
अश्वयुज २.	२११४२
अश्वरिपु १.	३३१९२
अश्ववाल १.	३३२२७
अश्वार २.	३७१०७
अश्वारि १.	३४८
अश्विन् १ द्वि.	१३२
अश्विनी २.	२११४२
अषाढा १ व.	२११४३
अष्टकर्मपरिभ्रष्ट १.	११३५
अष्टग्रास १. २. ३.	३६१३३
अष्टपाद १.	३४३२
अष्टम १. २. ३.	५४२०
अष्टमक १. २. ३.	५४१५०
अष्टमकालभुज १. २. ३.	३६१२६
अष्टमङ्गल १.	३७९३
अष्टमान ३.	५४१५३
अष्टमिका २.	५४१५०
अष्टवर्ग १.	३७९
अष्टाङ्ग १.	३६२०८
अष्टापद १. ३.	८५२
अष्टावक्र १.	३६१५७

अष्टी ]

अष्टी २.	३६११६
" २.	६२११
अष्टीला २.	४४११३
अष्टीवत् १. ३.	४४५९
असक्त १. २. ३.	५४१३०
असङ्ग्रह १.	३६२०९
असत् ३.	३६१६२
असती २.	४४१९
असतीसुत १.	४४४३
असद्व्युत् १. २. ३.	३६१११
असन १.	३३३९
असम्पुष १.	१११५५
असम्पुक्त १. २. ३.	८४१४
असहन १.	३७४१
असार १. २. ३.	५४७६
असि १.	३७१५८
" १.	३७१५९
" १.	८६१६
असिक्ती २.	३७३९
असित १.	२१३५
" १.	२१७९
" १.	३९४९
" १.	५३११
असितानन १.	३४४०
असिद १.	३८३०
असिधावक १.	३९१५
असिधेनुका २.	३७१६३
असिपत्रिका २.	३३९७
असिपुत्री २.	३७१६३
असिप्लव ३.	४१५५
असु १ व.	३६२०३
असुर १.	१३१९
" १.	३७६१
" १.	३८१२४
असुरभि १.	५३१७
" १.	५३१४८
असुराचार्य १.	२१३४
असुराह्वय ३.	३२२८
असुराचिका २.	३८१२९
असुर्या २.	३६१८४
असूर्ण ३.	३६१७२

शब्दानुक्रमणिका

अस्कर १.	४४१०४
अस्मधरा २.	४४१०३
अस्मज् ३.	४४१०६
असोढ १.	३७६९
असोल १.	५३३६
अस्त १.	३२२६
" १. २. ३.	५४१९७
अस्तम ४.	८८१६
अस्तमयाचल १.	३२२६
अस्तमत् १. २. ३.	५४१५७
अस्तु ४.	८७१३
अस्त्ये ३.	३६२०९
अस्त्र ३.	३७१५७
अस्त्रग्राम १.	५४११७
अस्त्रजीवन १. २. ३.	३७१४३
अस्त्रशासन ३.	३६३०
अस्त्रिन् १. २. ३.	३७१४३
अस्थान ३.	३७५५
" १. २. ३.	४२१९
अस्थि ३.	४४१०८
" ३.	४४१०८
अस्थिखाद १.	३४४०
अस्थितेजस् ३.	४४११०
अस्थिपञ्जर ३.	४४११४
अस्थिमत् १.	३३३३०
अस्थिर १. २. ३.	५४१६८
अस्थिप्रेमन् १. २. ३.	५४२६
अस्थिसङ्घात १.	३३३३०
अस्थिसङ्ग्रह १.	४४१३०
अस्थिसम्भव ३.	४४११०
अस्थिस्नेह १.	४४११०
अस्पन्दनस्थिति २.	३९८९
अस्फुटभाषण १. २. ३.	५४१७७
अस्मद् १. २. ३.	८१५९
अस्मिता २.	३६१६९
अस्त्र ३.	४४१०५
" १. ३.	६५७
अस्तु ३.	३९८७
अस्वप्न १.	१११३

[ आ

अह ४.	८७१२
अहंयु १. २. ३.	५४२९
अहङ्कार १.	३६१६९
अहङ्कारिन् १. २. ३.	५४२९
अहत ३.	४३१२०
अहन् ३.	२१५६
अहमहमिका २.	३६१७१
अहमपूर्विका २.	३६१७०
अहर्गण १.	३६१८४
अहर्पति १.	२१११२
अहर्मुख ३.	२१६८
अहस्कर १.	२१११२
अहस्तान १.	१२२६
अहह ४.	८७३२
अहार्य १.	३२११
अहि १.	४११५
" १.	६११५
अहिंसा २.	३६२०९
अहिक १.	४११४३
अहिच्छत्र १ व.	३१२६
" ३.	३३१५३
अहित १.	३७४०
अहितस्वयनी २.	४१२१
अहिपताक १.	४१११८
अहिपृष्ठ ३.	३७५३
अहिभय ३.	३७१५
अहिर्बुध्न्य १.	१११४२
अहिमतिन् १. २. ३.	३६१३१
अहीन १.	३६१८५
" १.	३६१८५
अहीरिणि २.	४१२०
अहेरु २.	३३१४२
अहो ४.	८८१६
अहोत्र ३.	३६१९६
अहोरात्र ३.	२११५५
अह्नाय ४.	८८११
आ	
आ ४.	८७११
" ४.	८७१२



[ आ ]

वैजयन्तीको

[ आख्य ]

आणवीन ]

शब्दानुक्रमणिका

[ आभिगामिकगुण ]

आः ४.	८७१२	आख्यान ३.	२१४३८	आच्छादन ३.	२११६४
आकम्पित १.२.३.	५४१९५	आख्यायनी २.	२४१२५	" ३.	४३११६
आकर १.	३२११०	आख्यायिका २.	२४१३८	" ३.	८३३३
" १.	५११२	आगन्तु १.	३१६६८	आच्छुरित ३.	४३११२
" १.	७११९	आगम १.	७११८	आच्छुरितक ३.	३११८४
आकर्णक १.२.३.	४३११०८	आगस् ३.	३१७४७	आच्छोदन ३.	३१९३८
आकर्णकर्षण ३.	३१७१९१	" ३.	८३११६	आजक ३.	५१११०
आकर्ष १.	३१७७२	आगू (-अगुर्) २.	३१८४७	आजान ३.	५२११
" १.	७११३	आग्निमारुत ३.	३१६१५२	आजानज १.	१११६
आकलन ३.	८३१३	आग्नीध्री २.	३१६१४	आजानेय १.	३१७९४
आकल्प १.	४३१३२	आग्नेय ३.	२११९०	आजि २.	६१२३
आकार १.	५२१२२	" १.	२११९०	आजीव १.	३१८११
" १.	७११७	" १.	२११९२	" १. ३. ३.	५४११६
आकारगोपना २.	३१९८६	" ३.	३१६६५	( आजिल )	
आकारणा २.	२४३३०	" १.	३१६१५२	आज्ञा २.	३१७३४
आकालिकी २.	२२१४	" ३.	४३११०६	" २.	३१७४८
आकाश १. ३.	२११२	" १. २. ३.	५४१११८	आज्ञागणिका २.	३१७३४
आकीर्ण १.२.३.	५४१११०	आग्नेयी २.	२१११४	आज्य ३.	३१८१३८
आकुल्य ३.	४३११३८	" २.	२११९१	" ३.	५११५१
आकून ३.	३१६१७४	आग्रह १.	७११२	" ३.	६३२२
आकूति २.	३१६१७४	आग्रहायणिक १.	२११८१	आज्याधिवासन ३.	३१६९०
आकृति २.	७२१२	आग्रहायणी २.	२११३८	आज्याधिभ्रयण ३.	३१६९०
आक्रन्द १.	७११५	" २.	२११७४	आज्यावेक्षण ३.	३१६९०
आक्रम १.	५२११६	आग्रायणी २.	२११७४	आटक १.	२३११८
आक्रीड १.	३३३३	आवटलिका २.	३१७१२५	आठरूप १.	३३११०१
आक्रीश १.	१४३२२	आघात १.	७११८	आटि ३.	२३१११
आचारण ३.	२४३३४	आघारण १.	३१६१००	आटोप २.	३१९८९
आचारित १.२.३.	३१८१११	आङ्गलौकिक १.	३१६१९८	आडम्बर १.	३१९१३८
आचिस १. २. ३.	५४१६७	आङ्गिक १. २. ३.	३१७९९	" १. ३.	८१५४
आक्षेप १.	७१११०	" १. ३.	४३३१२८	आङ्गिण्डिक ३.	३१६१६
आक्षेपक १.	४३१३३६	आङ्गिरस १.	२११३३	आठक ३.	४३१४१
आक्षोड १.	३३३१४६	आचाम १.	४३३७८	" १.	५११६३
आखण्डल १.	१२१६	आचार १.	३१६११५	आठकिक १.२.३.	३१८२१
आखनिक १.	३३३१६	आचारा २.	११११६	आठकी २.	३२११७
आखु १.	४११३१	आचार्य १.	३१५५६	" २.	३१८४८
" १.	६११७	" १.	३१६२२	आठा २.	४११३३
आखुभुज् १.	३१४७१	" १. २.	८१९४४	आठिक ३.	४३११०८
आखुयान १.	१११५४	आचार्या २.	४३१२३	आठ्य १. २. ३.	५४१५७
आखेट १.	३१९३९	आचार्यानी २.	४३१२२		
आखोर १.	२११८८	आचित ३.	५११६२		
आख्या २.	२१४३१	" १.२.३.	५४११५		

( १४ )

आणवीन १.२.३.	३१८२०	आदित्य १.	११११९	आन्तरालिक १.	३१५११९
आतङ्क १.	७११९	" १.	१३३८	आन्त्र ३.	३१४११३
आतञ्जन ३.	३१८१४४	" १.	२१११५	( अन्त्र )	
" ३.	८३३४	आदिदेव १.	११११५	आन्दोल १.	३१७१३७
आतनायिन् १.२.३.	५४१६८	आदिम १. २. ३.	५४१७६	आन्दोलन ३.	३१७१३७
आनति २.	२११६२	आदीनव १.	५२१४	आन्ध्रसिक १.२.३.	४३१९२
आतप १.	१२३३१	आहत १. २. ३.	७३१२	आन्वीक्षी २.	३१६३१
" १.	२११२२	आदेशिन् १.	३१७२५	आपगा २.	४२१२३
आतपत्र ३.	३१७१६	आद्य १. २. ३.	५४१७६	आपण १.	४३३३४
आतर १.	४२११८	" १. २. ३.	६३१२	आपद् १.	३१६१९१
आताना २.	३३११८६	" १.	६१५७	आपन ३.	५२११३
आतपिन् १.	२३३२८	आद्यून १. २. ३.	५४१५१	आपन्न १. २. ३.	५४११०९
आताल १.	३१७११३	आधान ३.	३१६६९	" १. २. ३.	७३१२
आति २.	२३१११	आधानिक ३.	३१६३	आपन्नसत्त्वा २.	४३११६
आतिथ्य १.२.३.	३१६६७	आधार १.	४२१६	आपमित्यक ३.	३१८६
" १.	३१६६८	" १.	७११५	आपव १.	३१६१५५
आतिवाहिक १.	१२३३८	आधि १.	६११७	आपाण्डुफल १.	३३३१६६
आतुर १. २. ३.	४३११४४	आधिक १.	३१८७०	आपात १.	७११९
आतोद्य ३.	३१९११४	आधूत १. २. ३.	५४१९५	आपान ३.	३१९५०
आत्तगन्ध १.२.३.	५४१६७	आधेय ३.	३१६६९	आपिङ्गलक १.	३१६१२२
आत्मगुप्ता २.	३३३१२९	आधोरण १.	३१७८८	आपिञ्जन ३.	३१८११४
आत्मघोष १.	२३३१५	आध्यात्मिक १.	३१६२०८	आपीड १.	४३३१५४
आत्मज १. २.	४३१३९	आन १.	३१६२०४	आपीन ३.	३३१५१
आत्मन् १.	६११६	आनक १.	३१९१३३	आपूपिक ३.	५११११
आत्मनीन १.	८१५३	" १. ३.	३१९१३३	आस १. २. ३.	३१७४३
आत्मभू १.	७११६	आनकदुन्दुभि १.	१११२६	" १. २. ३.	३१८१९
आत्मस्मरि १.२.३.	५४१५०	आनत १. २. ३.	५४१८३	" १. २. ३.	५४१९९
आत्मयोनि १.	८१११६	आनद्ध ३.	३१९११५	आप्रपदीन १. २. ३.	
आत्मसम्बन्ध १.	१११४८	आनन ३.	४३१८६		
आत्माशिल्प १.	४११४१	आनन्द १.	३१६१८८	आप्राप्त १.	३१६१२१
आत्मीय १.२.३.	३१७४३	आनन्दन ३.	३१६१८६	आप्लव १.	३१६१२१
आत्रेय १.	४३११०४	आनन्दना २ व.	२१११८	आप्लाव १.	४३११२३
आत्रेयी २.	४३११५	आनर्त १.	७११४	आप्लुत १. २. ३.	७३१३
आथर्वण ३.	३१६३७	आनाय १.	३१६७	आबद्ध १. २. ३.	३१७१४२
" ३.	४३२२०	" १.	७११४३	आबन्ध १.	३१८२८
आदर्श १.	४३११६२	आनाह १.	३१६६१	आबर्हित १.२.३.	५४११००
आदान ३.	३१७१८९	" १.	४३१२८	आलु १.	३१९१०६
आदाली २.	३३३१६२	" १.	५२१५	आभरण ३.	४३३१३३
आदि १.	५४१७६	आनील १.	३१७१००	आभा १. २. ३.	५४११२२
आदित्य १.	१११३	आनुपूर्वी २.	३१६११४	आभाषण ३.	२३१२३
आदित्य १.	१११३	आनुपूर्व्य ३.	३१६११३	आभिगामिकगुण १.	३१७४
				" १.	३१७८

( १५ )



आभीर ]	वैजयन्तीकोषः	[ आर्य
आभीर १. ३१५६	आय १. ३१७४४	आरट्ट १. २. ३. ३११४६
" १. ३१५९९	आयत्त १. २. ३. ५१४८१	" १. ३१७९६
" १. ३१९२८	आयत्ति २. ७२३	आरणिन् १. ३१३१३
आभीरपल्ली २. ३१९३२	आयत्त १. ३१९४	आरति २. ५१३३६
आभील ३. १२३२९	" १. २. ३. ५१४२८	आरनाल ३. ४३१८१
" १. २. ३. ३१९७९	आयल्लक ३. ३१६१४८	आरभट १. २. ३. ३१७१४७
" १. २. ३. ७१४२	आयशूलिक १. २. ३. ५१४७४	आरभटी २. ३१९१०१
आभोग १. ७११७	आयस्त १. २. ३. ७१४३३	आरम्भ १. ३१९१४०
आभ्यन्तरवृत्त ३. ३१९७४	आयान ३. ३१७११६	" १. ५१२१५
आम् ४. ८८११७	आयाम १. ३१६११७	आरलु १. ३१३६९
आम १. ४११३८	" ३. ३१७१९१	अरव १. २१४३
" १. ६१५१	" १. ५१२१५	आरा २. ३१९१४३
आमण्ड १. ३१३६५	आयास १. ३१६१९३	आराग्र ३. ३१७१८५
आमनस्य ३. १२३२९	आयु १. १२३२५	आरात् ४. ८१७१६
आमन्त्रण ३. २१३३१	आयुध २. ३१७१५७	आराधन ३. ३१६३८
आमन्त्रणिक ३. ३१६३३	" २. ३१७२०६	" ३. ८१३४
आमपात्र ३. ३१६६४	आयुध ३. ३१२३३	आराम १. ३१३३२
आममांसक १. ५३१७६	" ३. ३१७१५७	आरालिक १. २. ३. ४३१९२
आमय १. ४११३८	" ३. ८१६१९	आराव १. २१४३
आमयाविन् १. २. ३. ४११४५	आयुधग्रय २. ३१७१७२	आरु १. ३१३१५४
आमलक १. २. ३. ३१३१७७	आयुधिक १. २. ३. ३१७१४३	" १. ५३३२४
आमिन्ना २. ३१६१८	आयुधीय १. २. ३. ३१७१४३	आरुढ १. ३१८५२
आमिष १. ३१७१६	आयुर्वेद १. ३१६१२९	आरेवत १. ३१३४८
" ३. ४११०७	आयुर्वेदिन् १. २. ३. ४११४४	आरोग्य ३. ४११४४२
" १. ४१११४	आयुस् ३. ३१७२२१	आरोपित १. २. ३. ५११०४
" ३. ५३१५५	" ३. ६३१५	आरोह १. ३१७८८
आमिषाशिन १. २. ३. ५११५०	आयोग १. ७११४	" १. ७११७
आमिषी २. ३१८१००	आयोगव १. ३१५२२	आरोहण ३. ४३१५१
आमुक्त १. २. ३. ३१७१४२	" १. ३१५२९	" ३. ५१२१५
आमुष्यायण १. २. ३. ३१५८२	" १. ३१५८२	आरुर्वध १. ३१३४८
आमोद १. ५३१५०	आयोधन ३. ३१७२०४	आर्जिक १. २. ३. ४१४३३
" १. ७११७	" ३. ८१३४	आर्तगल १. ३१३१९०
आम्नाय १. ७१३३	आर १. ३१३३१	आर्तव ३. ४१११६
आम्न ३. ३१३२१	" १. ३१२२६	आर्ति २. ३१६१८७
" १. ३१३२५	आरकूट १. ३. ३१२२६	" २. ३१७१७८
आम्नात १. ३१३३१	आरक्ष १. ३१७१८	आर्द्र १. ३. ३१३२१४
आम्नेडन ३. ५२१९	" १. ३१७७४	" १. २. ३. ५११०७
आम्नेडित १. २. ३. २१४२२	आरग्वध १. ३१३४८	आर्द्रक १. ३. ३१३२१४
	आरट्ट १ व. ३१३३४	आर्द्रा २. २११४०
		आर्य १. ३१७२३
		" १. ३१९१०६

आर्य ]	शब्दानुक्रमिका	[ आषाढ
आर्य १. २. ३. ५१४६१	आवर्त १. ४१२३०	आशा २. २११२
" १. २. ३. ६१४३	आवर्तन ३. ३१९११	" २. ६१२३
आर्यक ३. ३१६६६	" ३. ५१२४१	आशाबन्ध १. ४१३३५
आर्यपुत्र १. ३१९१०६	आवलि २. ५१२२४	आशासन ३. ३१६१२०
आर्या २. १११५८	आवसथ १. ४३१९८	आशितम्भव १. ८१५२५
आर्यावर्त १. ३११२३	आवसथ्य १. १२३२५	आशिर १. १२३१९
आर्यभ ३. ३१११९	" १. ४३२७	" १. ७१३६
आर्यभी २. २११४७	आवसित १. २. ३. ३१८६७	आशिसू २. ६२३२
आर्यभ्य १. ३. ३१४५५	आवाप १. ३१७१४	आशीविष १. ४११५
आल ३. ३२११४	" १. ७१३६	" १. ४११३३
आलगन्धिका २. ३१७३४	आवापक १. ४३११४४	आशु ३. ३२३२२
आलम्भ १. ६१११०	आवाल ३. ४२३१०	" १. २. ३. ५११२५
आलय १. ४३१८	आवालि २. ४३३३५	आशुग १. १२३४९
आलवाल ३. ४२३१०	आवाह १. ४२३६	" १. ७१३९
आलस्य ३. ३१६१५८	आविः (-सू) ४. ८१८१८	आशुशुक्ति १. ८११५०
" १. २. ३. ५१४५५	आविक १. ४३१२९	आशोचनि १. ३१११६
आलान ३. ३१७८२	आविद्ध १. २. ३. ५११२३	आश्रय १. २. ३. ३१९७८
" ३. ७३३३	" १. २. ३. ७१३२	आश्रम १. ३. ४३३२६
आलाप १. २१४२३	आविध १. ३१९१८	" १. ३. ७१३३६
आलावर्त १. ४३१५९	आविल ३. ४२३४	आश्रय १. ३१७३
आलास्य १. ४११३२	आविश १. ३१६१६१	आश्रयाश १. १२३१७
आलि १. ५११२४	( आवश )	आश्रव १. ५१२३७
" २. ६२३३	आवृत्त १. ३१९१०७	" १. २. ३. ५१४४९
" २. ६२३३	आवृत् २. ३१६११३	आश्लेष १. ४३१६९
आलिङ्गन ३. ४३१७०	" २. ३१६११४	आश्लेषा २. २११३३
आलिङ्ग्य १. ३१९१२९	आवृत्त १. ३१५५	आश्व ३. ५१११०
आलिन्द १. ४३१४५	" १. ३१५९०	आश्वकिनी २. २११४२
आली २. ३१८२६	" १. २. ३. ५११९६	आश्वस्थ ३. ३३३२२
" २. ४१४२५	आवेग १. ३१९८९	आश्वयुज १. २११८५
आलीढ ३. ३१७१८७	आवेशन ३. ४३३२२	आश्वास १. ३१६२०५
आलु २. ४३३५७	आवेशिक १. ३१६६८	आश्विक १. ३१५७१
आलुक १. ५३३४४	आवेष्टक १. ४३३१४	आश्विन १ द्वि. १३३६
आलेख्यलेखा २. ३१९२४	आशंसितृ १. २. ३. ५१४४३	" १. २११८५
आलेप १. ४३३१४७	आशंसु १. २. ३. ५१४४३	आश्विनी २. २११७६
आलोक १. १२३३१	आशङ्का २. ३१६१७६	आश्विनेय १ द्वि. १३३६
" १. ७११८	आशय १. ३१६१७४	आश्वीन १. २. ३. ३१७१०८
आवतारिक १. ४११४३	" १. २. ३. ५१११४	आषाढ १. २११८४
आवन्त्य १. ३१५५३	" १. ७११७	" १. ३२३३
" १. ३१५०१	आशर १. १२३४१	
आवपन ३. ४३३६२		
आवर्जन ३. ५२३४०		



[ आषाढ ]

आषाढ १.	३१६१८
आषाढी २.	२११७६
आस १.	३१७१७२
" १.	५३२८
आसक्त ३.	२११६२
आसङ्ग ३.	३१११३
" १.	३१७१५९
आसन ३.	३१६२१०
" ३.	३१७१६
" ३.	४३११६४
" ३.	५३१४०
" ३.	७३३
आसना २.	५२११४
आसन्दी २.	४३११६०
" २.	४३११६४
आसन्न १. २. ३.	५४११४१
आसव १.	३३२२१७
" १.	३११४७
" १.	३११४९
" १.	३११५१
" १.	३११५२
आसादित १. २. ३.	५४१९९
आसार १.	३१७२०१
" १.	७११२
आसारी २.	३११४२
आसाविक १.	३१५११२
आसिक ३.	३१७१९४
आसीन १. २. ३.	५४११०
आसुतीवल १.	३१९१४४
" १.	८११५०
आसुर १.	२३११७
" ३.	३२३३४
" १.	३१८१२४
" ३.	४४११०५
आसुरी २.	३१८४२
आसूति २.	३१९५१
आसेचनक १. २. ३.	५४१६५
आस्कन्दन ३.	३१७२०३

वैजयन्तीकोषः

आस्कन्दित १. २. ३.	३१७११८
आस्कन्दितक १. २. ३.	३१७१२०
आस्तरण ३.	४३११६६
आस्ताव १.	३१६११०
आस्तिक १. २. ३.	५४३३७
आस्था २.	३१८१३
" २.	५२३३७
" २.	६२३२
आस्थान ३.	३१८१४
आस्थानगृह ३.	४३२०
आस्थानी २.	३१८१४
आस्पद ३.	७३३
आस्फोटनी २.	३१९१८
आस्फोट १.	३३२२९
आस्फोता २.	३३१३४
" २.	३३१८५
आस्य ३.	४४१८६
" ३.	६३३
आस्या २.	५२११४
आस्र ३.	३१९१८७
" १.	६५७
आस्वाद्य ३.	४३१९१
आहत १. २. ३.	२४११७
" १. २. ३.	७४३
आहति २.	३१६१८९
आहर १.	३१६२०४
आहव १.	३१७२०५
आहवनीय १.	१२३२४
आहार १.	७११८
आहार्य ३.	३१८११४
" १. २. ३.	३१९९९
" ३.	४३३७६
आहाव १.	४२३९
आहिक १ व.	२१३३७
" १.	३१६१५४
आहिण्डक १.	३१५४४
(आहिण्डक)	
" १.	३१५९३

[ इच्छु ]

आहिताग्नि १	३१६१७३
आहिण्डक १.	४११२५
आहुक ३.	४३३८
आहुति २.	३१६६९
आहोपुरुषिका २.	३१६१७०
आहोस्वित् ४.	८१८२
आहिक १.	३१६३२
आह्वय १.	२४३३१
आह्वा २.	२४३३१
आह्वान ३.	२४३३१
इ ४.	८१११०
इच्छु १.	३३२२२५
इच्छुगन्धा २.	३३११४१
इच्छुगन्धिका २.	३३११९६
(गण्डिका)	
" २.	३३२२२७
इच्छुपालिका २.	३३२२२६
इच्छुभेद १.	३३२२२६
इच्छुर १.	३३११०१
इच्छुविदारिकार. ३.	३३११९६
इच्छुशाकट १. २. ३.	३१८२२
इच्छुशाकिन १. २. ३.	३१८२२
इच्छुसूनिका २.	४३२२५
इच्छुदक ३.	३११११
इच्छुवाकु १.	३३३४९
" २.	३३३१६८
इक्ष १.	५२३२२
इक्षत् १. २. ३.	५४६१
इक्षाल १.	१२३३२
इक्षित ३.	५२३२२
इक्षुद १. २. ३.	३३३१८८
इक्षुदी २.	३३३३२९
इक्षु २.	३१६१७९
" २.	३१६१८२
इक्षुवासु १.	१२३१८
इक्षु २.	४४१११

[ इज्जल ]

इज्जल १.	३३३६७
इज्या २.	३३३३१
" २.	६२३४
इज्याशील १.	३३३७५
इज्वर १.	३३३५३
इडा २.	६२३३
इतर १. २. ३.	५४३२२
इतरथा ४.	८१८२०
इतरेतर १. २. ३.	५४३२३
इतरेयुः (-स्) ४.	८१८८
इति ४.	८१७१७
इतिकथा २.	८२३३
इतिह ४.	२४३३८
" ४.	८१८२१
इतिहास १.	२४३३८
इत्थम् ४.	८१८२०
इत्थम्भाव १.	५२३२३
इत्तरी २.	४४३९
इत्वास १.	३३३१९९
इदानीम् ४.	८१८५
इद्ध ३.	२१३२२
इध्म १. ३.	२११८८
" १.	३३३९६
इध्मप्रोक्षण ३.	२३३९०
इध्मवाहक १.	३३३१५७
इन १.	६५७
इन्दुन्दिर १.	२३३३३
इन्दिरा २.	११३३६
इन्दीवर ३.	४२३३५
इन्दीवरी २.	३३३१४२
इन्दु १.	२१३२५
" १.	५११५२
" १.	८३३
" १.	८३३
इन्द्र १.	१२३१
" १.	६११८
" १.	८३३
इन्द्रक ३.	४३३२०
इन्द्रकोश १.	४३३३२
इन्द्रच्छुद १.	४३३३८
इन्द्रजाल ३.	३१७१३

शब्दानुक्रमणिका

इन्द्रजित् १.	१२३४४
इन्द्रदारद १.	४१२४
इन्द्रधनुस् ३.	२३३३
इन्द्रनील ३.	३२३४०
इन्द्रभगिनी २.	११३६२
इन्द्रमद १.	४४३३६
इन्द्रमह १.	३३३६९
इन्द्रयव १. ३.	३३३७३
इन्द्रलुप्तक ३.	४४३२६
इन्द्रवस्ति १.	४४३५७
इन्द्रवारुणी २.	३३३७२
इन्द्रवृद्धि १.	३१७९८
इन्द्रवृत्तादिक ३.	३१७६
इन्द्रसुरस १.	३३३११८
इन्द्रस्वम् २.	११३६२
इन्द्राणी २.	१२३११
इन्द्राणीमह १.	३३३५७
इन्द्रायुध ३.	२३३३
" १.	३१७९२
इन्द्रावरज १.	११३१९
इन्द्रिय ३.	३३३२०३
" ३.	७३३४
इन्द्रियग्राम १.	५१११७
इन्द्रियार्थ १.	५११२
इन्धन ३.	३३३९६
इन्वका २ व.	३१३३९
इभ १.	३१७६०
इभ्य १. २. ३.	५४३५७
इभ्या २.	३३३१०३
इरम्मद १.	१२३२०
इरा २.	३१९४५
" २.	६२३४
इरिण १. २. ३.	३१८१८
" १. २. ३.	७४३४
इर्वारु १.	३३३३६६
" २.	३३३१७२
इला २.	३१३३
" २.	६२३४
इलावृत्त ३.	३१३७
इलिक १.	३३३३३
इली २.	३१७१६०

[ ईश्वर ]

ईश्वला २ व.	२१३३९
इव ४.	८१८१५
इष १.	२१३८५
इषीक १ व.	३१३३४
इषीका २.	३३३२३५
इषु १. २.	३१७१८०
इषुधि १. २.	३१७१७९
इष्ट ३.	३३३११५
" १. २. ३.	३१७३३
" १. २. ३.	५४३९६
इष्टका २.	३१८२५
इष्टि २.	६२३४
इष्टव १.	६१३८
इष्टवास १.	३१७१७२
ईक्ष ३.	४४३९४
" ३.	७३३४
ईक्षणिका २.	४४३११
ईक्षान १.	२११८४
ईक्षित १. २. ३.	५४३९६
" १. २. ३.	५४३१०६
ईति २.	६२३५
ईदृश १.	१३३१०
ईप्सा २.	३३३१८०
ईरित १. २. ३.	५४३९६
ईर्म १. ३.	३१७२१७
ईर्यापथस्थिति २.	३३३११६
ईर्या २.	३३३१८४
ईषिका २.	४४३११६
ईली २.	३१९३७
ईश १.	११३४०
" १. २. ३.	५४३५८
" १.	८१३३५
ईशशक्ति २.	११३४९
ईशान १.	११३४०
" १.	७१३१०
ईशित् १. २. ३.	५४३५८
ईश्वर १.	११३४०
" १.	३३३३७
" १.	३३३५३



[ ईश्वर ]

ईश्वर १.	४१४१३५
" १. २. ३.	५१४१५७
" १.	७१४१३५
ईश्वरप्रिय १.	२१३१३५
ईश्वर ४.	८१८१२
ईश्वर २.	३१८१२७
ईश्वरान्त १.	३१७१६९
ईश्वरान्तबन्धन ३.	३१७१३०
ईश्वरि १.	११२११९
ईश्वर ३.	५१२१११
ईश्वर २.	३१६११७९
" २.	६१२१५
ईश्वरमृग १.	५१५१८
" १.	३१७११००
ईश्वर १. २. ३.	५१४१९६
उ	
उ ४.	८१७११०
" ४.	८१७१११
उक्थ ३.	३१६११११
उक्तर १.	३१४१५५
उक्त् १.	३१४१५२
" १.	८१६१५
उक्त्वश १.	८१५१५१
उक्ता २.	४१३१५५
उक्थ १. २. ३.	४१३१९४
उग्र १.	११११४६
" १.	३१५११३
" १.	३१५१७२
" १.	३१५१७६
" १.	३१५११६
" ३.	३१८१२४
" ३.	३१८११४८
" १. २. ३.	३१९१७९
उग्रगन्ध १.	३१३१७७
" १.	८१५१५
उग्रगन्धा २.	३१३१९७
" २.	३१८१०२
" २.	८१५१५
उग्रता २.	३१६१९२
उग्रधन्वन् १.	११२१६
उग्रविष १.	३१३१९३

वैजयन्तीकोषः

उग्रा २.	३१३१९७
" २.	३१८१०२
" २.	८१२११४
उग्रिका २.	३१६१९२
उचित १. २. ३.	५१४१०३
" १. २. ३.	७१४१७
उच्च १. २. ३.	५१४१८१
उच्चकैः (-स्) ४.	८१८११९
उच्चण्ड १. २. ३.	५१४१९४
उच्चतालक ३.	३१९१५४
उच्चन्द्र १.	२१११६६
उच्चय १.	४१३१३०
उच्चल ३.	३१६११७२
" ३.	३१७१७५
उच्चलित ३.	३१७१७२
उच्चस्वन १.	२१४१३
उच्चार १.	४१३११९
उच्चारणा २.	३१६१३५
उच्चूड १.	३१७१३४
उच्चैः (-स्) ४.	८१८११९
उच्चैःश्रवस् १.	११३१११
" १.	८११११९
उच्छिष्टभोजिन् १. २. ३.	
	३१६११०
उच्छीर्ष ३.	४१२१६७
उच्छुन ३.	२१११८३
उच्छूर १.	२१११६५
उच्छृङ्खल १. २. ३.	
	५१४१३२
उच्छ्राय १.	३१३११६
उच्छ्रित १. २. ३.	७१४१५
उच्छ्रिताग्रक १. २. ३.	
	५१४१८१
उच्छ्रास १.	३१५१३२
" १.	३१६१२०४
उज्जट १. २. ३.	३१३१४५
उज्जासन ३.	३१७१२५
उज्ज १.	३१८१२
उज्ज १. २.	४१३१२६
उहु २. ३.	२१११३८
उहुप ३.	४१२११६

[ उत्तमसाहस ]

उहुराज १.	२१११२७
उहुीन ३.	२१३१५०
उहुीश १.	११११४५
उत १. २. ३.	५१४११२
" ४.	८१७११८
" ४.	८१८१२
उताहो ४.	८१८१२
उत्क १. २. ३.	५१४१३४
उत्कट १.	३१३१२३०
( इट्कट, तिलकट )	
" ३.	३१६१२१६
" ३.	३१८१८०
" ३.	३१८१०४
" १. २. ३. ५१४१३७	
" १. २. ३. ५१४१३७	
" १. २. ३. ७१४१७	
उत्कण्ठ १. २. ३.	८१९१२७
उत्कण्ठा २.	३१६११७८
उत्कर १.	३१६११११
" १.	५१११३
उत्कलिका २.	३१६११७८
" २.	४१२१२४
उत्कार १.	५१२१२१
उत्कारिका २.	४१३१३२
उत्कीर्ण १.	४१२१७
उत्कुञ्ज १.	४१३१६९
उत्कोच १.	३१७१४६
उत्क्रम १.	५१२११६
उत्क्रोश १.	२१३१३४
उत्क्रिसिका २.	४१३१३४
उत्क्रुद्रल १.	५१३१४
उत्खात १.	३१६१२२९
उत्खेद १.	३१६११८३
उत्त १. २. ३.	५१४१०७
उत्तंस १.	४१३१५४
" १.	८१११५९
उत्तस ३.	४१३१८९
उत्तम १. २. ३.	५१४१६२
" १. २. ३.	७१४१६
उत्तमर्णक १. २. ३.	३१८१८
उत्तमसाहस १.	५१११४१

उत्तमा ]

उत्तमा २.	३१३११६०
उत्तमाङ्ग ३.	४१४१८५
उत्तमोत्खात १.	३१६१२३०
उत्तमोत्तमिक ३.	३१९१३२
उत्तर ३.	२१४१३७
" ३.	३१८११६
" १. २. ३. ७१५१८	
उत्तरच्छद १.	४१३११६६
उत्तराङ्ग ३.	४१३१४३
उत्तरायण १.	२१११९०
उत्तरासङ्ग १.	४१३१२३
उत्तरीय ३.	४१३१२२
उत्तरेद्युः (-स्) ४.	८१८१८
उत्तान १. २. ३.	५१४१२०
उत्तानशय १. २. ३.	५१४१२
उत्ताल १. २. ३.	५१४१५२
" १. २. ३.	७१४१७
उत्त्रास १.	३१६११०६
उत्थान ३.	४१४१२८
" ३.	७१३१५
उत्थित १. २. ३.	३१८११८
" १. २. ३. ५१४१५२	
उत्थुस १.	५१३१४०
उत्पतन ३.	८१३१५
उत्पतिवृत् १. २. ३.	५१४१४२
उत्पतिष्णु १. २. ३.	५१४१४२
उत्पत्ति २.	४१४११८
उत्पल ३.	३१८१९९
" १.	४१११४६
" ३.	४१२१३४
" ३.	४१२१३५
उत्पलावर्त १ व.	३१११३३
उत्पश्य १. २. ३.	५१४१५४
उत्पाट १.	४१४१३७
उत्पाटित १. २. ३.	
	५१४११००
उत्पाट १.	३१६११९०
उत्पाद १.	३१४१३२
उत्पादशयन १.	२१३१३४
उत्पिञ्जल १. २. ३.	
	५१४१९४

शब्दानुक्रमणिका

उत्पिब १.	२१३१३५
उत्पिषा १.	५१३११२
उत्प्रास १.	२१४१३५
उत्प्रेक्षा २.	३१६११७४
उत्फुल्ल १. २. ३.	३१३१९
उत्स १.	३१२१७
उत्सङ्ग १.	३१७१७६
" १.	४१४१६०
उत्सन्नाग्नि १.	३१६१७१
उत्सर्जन ३.	३१६११९९
उत्सव १.	३१६१६१
" १.	७१११११
उत्सादन ३.	८१३१५
उत्साधन ३.	४१३११३
उत्साह १.	३१६१६७
" १.	३१९१७६
उत्साहा २.	३१२१२५
उत्सुक १. २. ३.	५१४१३०
उत्सृष्ट १.	३१३१५५
" १. २. ३. ५१४१०१	
उत्सेध १.	७११११०
उदक ३.	४१२१२
उदक्या २.	४१४१५५
उदग्र १. २. ३.	५१४१८१
उदग्रदत् १.	३१७१६९
" १. २. ३. ५१४१९	
उदच् ३.	२१११८
" १. २. ३. ४.	
	५१४१९१
उदज १.	५१२१३१
उदञ्जन ३.	४१३१५५
उदधि १.	४१२११०
उदन्त १.	२१४१३९
उदन्या २.	३१६११८१
उदन्वत् १.	४१२११०
उदपान १. ३.	४१२१९
उदय १.	३१२१६
" १.	३१७१४४
उदयनीय १.	३१६१५८
उदयाद्रि १.	३१२१६
उदर ३. २.	४१४१६७

[ उद्गाल ]

उदरग्रन्थि १.	४१४१३०
उदरत्राण ३.	३१७१५४
उदरिल १. २. ३.	५१४१७
उदर्क १.	७१११२
उदर्विस् १.	११२११५
उदवसित १. २. ३.	
	४१३१९९
उदश्चित् ३.	३१८१५०
उदात्त १. २. ३.	३१६१३७
" १. २. ३.	८१७१६
उदान १.	७१११२
उदार १. २. ३.	५१४१२०
" १. २. ३.	५१४१५६
" १. २. ३.	७१४१४
उदारक १.	३१८१५९
उदावर्त १.	४१४१३२
उदासीन १.	३१७१४०
उदास्थित १.	३१७१२७
" १.	८११११९
उदाहार १.	२१४१४१
उदित १. २. ३.	७१४१५
उदीची २.	२१११५
उदीचीन १. २. ३.	
	५१४१९१
उदीच्य १.	३१३१२२
उदीर्ण १. २. ३.	५१४१५६
उदुब्ज १. २. ३.	५१४१९०
उदुम्बर १ व.	३१११३९
" ३.	३१२१२५
" १.	३१३१२८
" १. ३.	८१५१४
उदुम्बरा २.	४१३१४४
उदूखल २.	४१३१६५
उदूढ १. २. ३.	५१४१८०
" १. २. ३.	७१४१६
उदूत १. २. ३.	५१४११४
उदूमनीयक ३.	४१३१२०
उदूढा १. २. ३.	५१४१३१
उदूढा १.	३१६१७९
उदूगार १.	४१४१२६
उदूगाल १.	४१४१२६



[ उद्गूर्ण ]

उद्गूर्ण १. २. ३. पा१११४
उद्गृहीत १. २. ३. ८११६
उद्गीव १. २. ३. पा११२०
उद्ग १. ८११४२
उद्गन १. ३११३५
उद्गटन ३. ४१२२१
उद्गात १. २११४१
" १. ३११२४
" १. ४१३३२
उद्गंश १. ४११३५
उद्गण्ड १. ४११४६
उद्गाम १. ११२१४६
" १. २. ३. पा११३२
उद्गाल १. ३१३६०
" १. ३११४३
उद्ग्राव १. ३११२११
उद्गन १. ३१११०२
उद्गरण ३. ८१३६
उद्गर्ष १. ३११६१
उद्गव १. ३११६१
उद्गान ३. ४१३५४
" ३. ७१३५
उद्गार १. ३१८४
उद्गूम १. २११२८
उद्गृह १. २. ३. पा११००
" १. २. ३. पा१११२
" १. २. ३. ७११५
उद्गृथ १. ४१२२९
उद्गृथ १. ३११४१
उद्गृथवृषभ १. ३११२२२
उद्गृह १. २. ३. ३१३१९
उद्गृहित १. २. ३. पा११००
उद्गव १. ४१११८
उद्गिज १. २. ३. ४१११
उद्गिद् २. ४१११
उद्गिद् ३. ३११२२२
" १. ४११८
" १. २. ३. ४१११
उद्गृम १. पा१२३३

वैजयन्तीकोषः

उद्यत १. २. ३. पा१११४
उद्यम १. ३१११६७
" १. पा१२३४
उद्यान ३. ३१३३
" ३. ७१३४
उद्युक्त १. २. ३. पा१३०
उद्योग १. ३. पा१२५
उद्योत १. २१११६
उद्ग १. ४११५४
( द्र )
उद्गकलाहक १. ३११०१
उद्गर्तन ३. ४१३११३
उद्गान्त ३. ३११६८
" १. २. ३. पा१११४
उद्गासन ३. ३११२१४
" ३. ८१३५
उद्गाह १. ३११५५
उद्गेग १. ३११६७
" ३. ४१३१०६
" १. पा१२३३
उद्गेगकर्तरी २. पा३१०८
उन्दुर १. ४११३१
उन्न १. २. ३. पा११०७
उन्नत १. २. ३. पा११८१
उन्नतनासिक १. २. ३. पा११६
उन्नतानत १. २. ३. पा११८३
उन्नति २. पा१२४
उन्नाम १. पा१२४
उन्नाल १. ३१८५५
उन्निद् १. २. ३. ३१३१९
उन्मत्त १. ३१३७६
उन्मदिष्णु १. २. ३. पा११४१
उन्मनस् १. २. ३. पा१३४
उन्मथ १. ३११२११
उन्माथ १. ३११४०
उन्माद् १. ३१११७७
उन्मान ३. पा११५६
उन्मिषित १. २. ३. ३१३१९

[ उप्ताप ]

उन्मीलन ३. ३१११०
उन्मीलित १. २. ३. ३१३१९
उन्मुख १. २. ३. पा११५४
" १. २. ३. पा११९०
उन्मूलित १. २. ३. पा११००
उन्मेष १. ३१११९०
उप ४. ८१११८
उपकण्ठ १. २. ३. ३१११२०
" १. २. ३. पा११४१
उपकर्या २. ४१३३०
उपकल्प १. ३१३११३
उपकार १. पा१२२२
उपकारिका २. ४१३३०
उपकार्या २. ४१३३०
उपकुञ्जिका २. ३१८८५
" २. ३१८८७
उपकुर्वाण १. ३१६८
उपकुल्या २. ३१८७७
उपक्रम १. २११४१
" १. ३१६२५
" १. पा१११५
" १. ८१११८
उपक्रिया २. पा१२२२
उपक्रोश १. ३१६१९३
उपखिल ३. ३१६३३
उपगृहन ३. ४१३१६९
उपग्रह १. ८१११८
उपग्राह्य ३. ३१७४५
उपग्र ३. ४१३१२
उपचर्या २. ४११३२९
अपचार १. ८१११७
उपचित १. २. ३. पा११५७
" १. २. ३. पा११०८
उपचित्रा २. ३१३११३
उपच्छन्दन ३. २११२३
उपजाप १. ३१७१३
उपजिह्विका २. ४१३३८
उपजोषम् ४. ८१८१७
उपज्ञा २. ३१६२५
उप्ताप १. ८१११९

उपत्यका ]

उपत्यका २. ३१२१९
उपत्रिंश १. २. ३. ५११३५
उपदंश १. ३११५२
" १. ४१३८६
" १. ४११३२
उपदा २. ३१७४५
उपदीका २. ४१३३८
उपदेहिका २. ४१३३८
उपद्रव १. ३१६१९०
उपद्रष्टृ १. ३१६८१
उपधा २. ३१६१९५
" २. ७१२३
उपधान ३. ४१३१६७
उपनत १. २. ३. पा११०४
उपनय १. ३१६१७
उपनाय १. ३१६१७
उपनाह १. ३१११२१
" १. ८१११७
उपनिधि १. ३१८१२
उपनिमन्त्रण ३. ३१६१२३
उपनिवेशिनी २. २११७९
उपनिषद् २. ८१२३
उपन्यास १. २११४१
उपपति १. ४१३३८
उपप्राप्त १. २. ३. पा११०४
उपप्लव १. २१३३०
" १. ३१६१९०
उपबर्ह ३. ४१३१६७
उपबर्हण ३. ४१३१६७
उपभृत् २. ३१६१००
उपमन्त्रण ३. २११४४
उपमा २. पा११२२
उपमान ३. ३१२२१
" ३. ८१११७
उपयम १. ३१६१५
उपयाम १. ३१६१५
उपयोग १. पा१२५
उपरक्त १. २१३३०
" १. २. ३. पा११६८

शब्दानुक्रमणिका

उपरक्षण ३. ३१७५९
उपरति २. ४१३३६
उपरथ्या २. ४१३१६
उपरमग ३. पा१३६
उपराग १. २१३३०
उपराम १. पा१३६
उपरि ४. ८१८१९
उपरिष्ठात् ४. ८१८१९
उपरिस्थूणा २. ४१३४१
उपल १. ३१२८
" १. २. ३. ७१५१७
उपलब्धि २. ३१६१६४
" २. ८११४
उपलम्भ १. पा११९
उपलवण १. ३१८१२६
उपला २. ४१३१६३
उपलिङ्ग ३. ३१६१९०
उपवन ३. ३१३२
उपवर्ण १. ३१५२
उपवर्तन ३. ३१७४९
" ३. ३१७१११
उपवर्ष १. ३१६१५४
उपवसथ १. ४१३२
उपवस्तु १. ३१६१४४
उपवास १. ३१६१४४
उपविंश १. २. ३. ५११३५
उपविषा २. ३१८१९०
उपविष्कर ३. ४१३१७
उपविष्ट १. २. ३. पा११०
उपवीत ३. ३१६२०
" ३. ८१३१७
उपवेद १. ३१६३०
उपवेश ३. पा११४
उपवेणव ३. २१३६७
उपशक्त्यक ३. ४१३११
उपशाय १. ४१३१६७
उपश्रुत १. २. ३. पा११०६
उपसंव्यान ३. ४१३१२१
उपसंहार १. पा११८
उपसंग्रहण ३. ३१६४०

[ उपानह ]

उपसन्न १. २. ३. पा११०४
उपसम्पन्न १. २. ३. ३१७२२०
" १. २. ३. ४१३१९४
" १. २. ३. ८१५२६
उपसम्भाषण ३. २१४२३
उपसर्ग १. ३१६१९०
उपसर्जन ३. पा१६४
उपसर्था २. ३१४४६
उपस्कर १. ४१३१९०
उपस्करस्खलिनी २. ३१७५४
उपस्करव्रत ३. ३१६१४८
उपस्थ १. ३१६१०३
( उपस्थाव )
" १. ४१४६०
" १. ३. ४१४६७
उपस्थान ३. पा१२१
उपस्थित १. २. ३. पा११०४
उपस्पर्श १. ४१३११३
" १. ८१११९
उपस्पर्शन ३. ८१३१४
उपहसित ३. ३१९८४
उपहार १. ३१७४५
उपहालक १. ३. ३१११७
उपह्वर ३. ८१३५
उपांशु १. ३१६१९२
" ४. ८१७३२
उपाग्र १. २. ३. पा१६४
उपात्यय १. ३१६११४
उपादान ३. पा११८
उपाधि १. ७११११
उपाध्याय १. ३१६२२
" १. २. ३. ८१५४४
उपाध्याया २. ४१३२३
उपाध्यायानी २. ४१३२२
उपाध्यायी २. ४१३२२
" २. ४१३२३
उपानह २. ४१३१६२



[ उपान्त ]

वैजयन्तीकोषः

[ ऊरव्य ]

[ ऊरी ]

शब्दानुक्रमणिका

[ एकविंशतितम ]

उपान्त १. २. ३.	उर्वरा २.	३११४	उपस् २. ३.	२११६९
उपायन ३.	" २.	३१८१७	" २. ३.	६१५८
उपालम्भ १.	उर्वारु २.	३१३१६७	उपा २.	२११५७
उपावृत्त १. २. ३.	" १.	३१३१७२	" २.	३११४१
	उर्वी २.	३११११	" ४.	८१८१११
उपासङ्ग १.	उलङ्कल १.	४११३७	उपापति १.	१११२९
उपासत्त ३.	उलन्द १.	१११४६	उषित १. २. ३.	७१४७
उपासना २.	उलप १.	३१३३७	उष्ट्र १.	३१४६७
उपासित १. २. ३.	" १.	३१३२२९	उष्ट्रीवक १.	४१४१३१
	उलम्ब ३.	४१३३७०	उष्ट्रधूत्रपुच्छिका २.	३१३१२६
उपाहित १.	उलक १.	२१३२२	उष्ट्रिका २.	४१३६१
उपेक्षा २.	उलकचेटी २.	२१३२१	उष्ण १.	२११८८
उपेन्द्र १.	उलकारि १.	२१३१६	" १.	३१३५६
उपोढ १. २. ३.	उलखल १.	३१६१९	( कृष्ण )	
उपोदिका २.	" ३.	४१३६५	" ३.	५१३७
उपोद्घात १.	" ३.	४१४७०	" १. २. ३.	६१५८
उप्तकृष्ट १. २. ३.	उलखली २.	३१७१११	उष्णक १. २. ३.	५१५४
उभयद्युः (-स्) ४. ८१८१९	उल्लु १.	३१६५७	उष्णवीर्य १.	४११५४
उभयद्युः (-स्) ४. ८१८१९	उल्का २.	१११३२	उष्णागम १.	२११८८
उमा २.	उल्ब ३.	४१४१८	उष्णिका २.	४१३८०
" २.	उल्बण १.	५१२९	उष्णीष १. ३.	४१३१२४
उमापति १.	" १. २. ३.	५१४१३४	" ३.	४१३१३५
उमासुत १.	" १. २. ३.	५१४१३७	" ३.	४१४८५
उम्बुरा २.	उल्बणक ३.	३१९८२	उत्त १.	२११६
उम्य १. २. ३.	उल्बस्थूणा २.	४१३३९	" १. २.	६१५९
उरग १.	उल्मुक ३.	११२३२	उत्तरा २.	३१४४२
उरगाशन १.	उल्मसनक ३.	३१९८२	ऊ	
उरण १.	उल्लाघ १. २. ३.	४१४९३	ऊक १.	२१३३
उरभ्र १.	उल्लाघ १.	२१४२९	ऊख १.	४१४६५
उररी ४.	उल्लिखित १. २. ३.	८१४५	ऊत ३.	४१२४
उरस् ३.	उल्लु १.	३१३२०८	" १. २. ३.	५१४१००
" ३.	उल्लुक १.	३१३२२९	" १. २. ३.	५१४११२
उरसिल १. २. ३.	उल्लेखनीय १.	३१३४२	ऊति २.	६१२५
उरस्य १.	उल्लोच १.	४१३१२३	ऊधस् ३.	३१४५१
उरस्वत् १. २. ३.	उल्लोल १.	४१२१४	ऊधस्य ३.	३१८१४६
उरस्सूत्रिका २.	उशनस् १.	२११३४	ऊन १. २. ३.	५१४८६
उराह १.	उशि १. ३.	६१५८	ऊम् ४.	८१८१४
उरु १. २. ३.	उशीर १. ३.	३१३२३१	ऊम १.	६११८
उरुकम १.	उष १.	२११६८	ऊररी ४.	८१७१७
उरुवल्ली २.	उयण ३.	३१८७९	ऊरव्य १.	३१८१
	उषर्द्ध १.	११२१५		

ऊरी ४.	८१७१७	ऊषणा २.	३१८७६	ऊवभ १.	३१७१७
ऊरु १. २.	४१४५९	( दूषणा )		" १.	३१९१३२
" १. २.	८१९२६	ऊषर १. २. ३.	३१८१८	" १.	७१११३
ऊरुज १.	३१८११	ऊषरज ३.	३१८१२३	ऊषभा २.	३१६५१
ऊरुपर्वन् ३.	४१४५९	ऊषवत् १. २. ३.	३१८१८	ऊषभी २.	३१३१२९
ऊरुमूल ३.	४१४५९	ऊषमक १.	२११८८	ऊषि १.	१११३०
ऊर्ज २.	८१९१८	ऊषमन् १.	२११८८	" १.	३१६१५०
ऊर्ज १.	६११३	" १.	३१६३६	" २.	३१८९४
ऊर्जस्वल १. २. ३.	३१७१५१	" १.	५१४९	" १.	६११९
ऊर्जस्विन् १. २. ३.	३१७१५१	ऊह १. २.	३१६१७५	ऊष्टि १. २.	३१८१५८
	३१७१५१	ऊहन ३. २.	३१६१७५	ए	
ऊर्जित १. २. ३.	३१७१५१	ऊ		एक १. २. ३.	५११२५
ऊर्णनाभ १.	४११३४	ऊ २.	८१९१८	" १. २. ३.	६१४३
ऊर्णवाहि १.	४११३५	ऊच १.	३१३६९	एककुण्डल १.	८११५१
ऊर्णा २.	३१४२५	" १.	३१४७	एकग १. २. ६.	५१४१२८
" २.	३१९३३	" ३.	५११६०	एकगुरु १.	३१६२४
" २.	६१२६	" १. २. ३.	६१५९	एकग्रन्थ १.	३१६३३
ऊर्णायु १.	७११३३	ऊक्षगन्धिका २.	३१३१९६	एकतान १. २. ३.	
ऊर्णवाहि १.	४११३५	ऊक्षर १.	७१११४	एकतीर्थिन् १.	३१६२४
ऊर्ध्वक १.	३१९१२९	ऊक्ष २.	३१६२६	एकदन्त १.	१११५३
ऊर्ध्वजानुक १. २. ३.	५१४१०	ऊक्षीष ३.	४१३५७	एकदा ४.	८१८६
ऊर्ध्वजु १. २. ३.	५१४१०	ऊक्षु १. २. ३.	५१४१२४	एकदृश १. २. ३.	५१४१३
ऊर्ध्वधन्वन् १.	११२३	" १. २. ३.	६१४२	एकदेश १.	४१४५५
ऊर्ध्वनापित १.	३१५६७	ऊक्ष ३.	३१८४	एकधुर १. २. ३.	३१४५८
ऊर्ध्वमूल १.	३१३२२९	ऊक्ष ३.	३१८३	एकधुरीण १. २. ३.	
ऊर्ध्वलोक १.	११११	" १. २. ३.	५१३३		३१४५८
ऊर्ध्वसूचिका २.	४१३४८	" ३.	६१३३	एकपक्षि २.	२११६९
ऊर्ध्वा २.	२११६	ऊक्षु १.	२११८६	एकपटलमाली २.	
ऊर्मि १. २.	४१२१४	" १.	४१४१६		३१३१८५
ऊर्मिका २.	४१२१४४	ऊक्षुमती २.	४१४१५	एकपद् ३.	५१२६
ऊर्मिमत् १. २. ३.	५१४१२३	ऊक्षु ४.	८१८४	एकपदी २.	३११४९
ऊर्मिला २.	३१६४५	ऊक्षिज् १.	३१६७८	एकपर्णा २.	१११६१
ऊवध्य ३.	३१६२०५	" १.	८१९४४	एकपाटला २.	१११६१
ऊष १.	३१८१२३	ऊक्ष १. २. ३.	३१८६७	एकपिङ्ग १.	११२५८
" ३.	३१८१२३	ऊक्षु १.	१११३	एकरूप १. २. ३.	५१४७९
" १.	५१३२८	ऊक्षय १.	३१४१४	एकवर्ण १.	३१५३
ऊषण ३.	३१८७५	ऊक्षयकेतु १.	१११२९	एकविंश १. २. ३.	
" १.	५१३२६	ऊक्षयप्रोक्ता २.	३१८३		५११२२
		" २.	८१२४	एकविंशतितम १. २. ३.	५११२२
		ऊषणी २.	३१३१२४		



[ एकशततम ]

वैजयन्तीकोषः

[ ओषधि ]

[ ओषधीश ]

शब्दानुक्रमणिका

[ कटक ]

एकशततम १. २. ३.	एतर्हि ४.	८८८५
आशर ३.	एतश १.	३६११
एकसर्ग १. २. ३.	एतावतिथ १. २. ३.	५११२०
५११२८	एतिन् १.	३६१२०५
एकहायनी २.	एत्थाल १.	४११४४
एकान्त १.	एध १.	३६१९६
२३११५	एधस् २.	३६१९६
एकगिन १.	एधित १. २. ३.	५१११६
३६१७३	एनस् ३.	३७१४७
एकाम्र १. २. ३.	३.	८३११६
५११२८	एरका २.	३३१२३३
एकान्न १.	एरण्ड १.	३३१६४
२११३२	एलक १.	३३१३६
एकान्नग्रह १.	एला २.	३३११०३
४१११३४	३.	३८१८७
एकान्नल ३.	एलारसालक ३.	५३१३६
४१११२०	एलावालुक ३.	३८१९५
एकदश १. २. ३.	एव ४.	८७११८
५११२१	३.	८८११५
एकदशी २.	एवम् ४.	८७११९
३९१११८	३.	८८११५
एकान्त १. २. ३.	३.	८८११७
५१११९	एवण १.	३७११८०
३.	एवणा २.	३८१५०
५११२९	एवणिका २.	३९११९
३.	एवमः (-स्) ४.	८९११०
५११३२	ऐ	
एकान्तरितिन् १. २. ३.	ऐ ४	८७१२
३६१३५	ऐकागारिक १.	३९१५५
एकान्तरिन् १. २. ३.	ऐङ्गुद ३.	३३१२२
३६१३५	ऐतिह्य ३.	२११३८
एकायन १. २. ३.	ऐन्द्र १.	३६१८६
५११२८	ऐन्द्रलुसिक १. २. ३.	४११४७
५११२९	ऐन्द्र १.	२३११७
एकावली २.	ऐन्द्री २.	१११६२
४३११४१	३.	२११४
एकाष्टील १.	३.	३३११७२
३३११९४	ऐरावण १.	११११२
एकाष्टीला २.		
३३११३०		
एकाह १.		
३६१८४		
एजन ३.		
३९१८९		
एड १. २. ३.		
५१११३		
एडक १.		
३११६४		
एडगज १.		
३३११५८		
एडमूक १. २. ३.		
५१११३		
एडक ३.		
४३१३७		
एण १.		
३१११२		
एणीकृत १. २. ३.		
२१११४		
एत १.		
५३१२३		
एतन १.		
३६१२०४		

ऐरावत १.	११११२
१.	२१११८
३.	२१११९
३.	२११३३
३.	३८१११५
ऐरावती २.	२१११६
२.	२१११५
ऐरुक ३.	३६१८८
ऐरुण्डक १.	४३१४३
ऐलविल १.	१११५६
ऐलेय ३.	३८१९५
ऐश्वर ३.	३९१५८
३.	३९१११०
ऐश्वर्य ३.	१११४७
३.	८५१३४
ऐह १.	३३११६५
ओ	
ओकस् ३.	४३११९
३.	६३१४
ओष १.	३९११२३
१.	४२१३०
१.	६१११०
ओङ्कार १.	३६१२३३
ओज १. २. ३.	५११२३
ओजस् ३.	६३१४
ओजस्विन् १. २. ३.	३७११५१
ओट्टित ३.	३६१५
ओत १. २. ३.	३९११२
ओतु १.	३११७१
ओदन १. ३.	४३१७६
ओम् ४.	८७१३
ओराल १.	५३१२०
ओलक १.	३३११५१
१.	५३१४३
१.	५३१४४
१.	५३१४४
ओलहन् १.	३८१४४
ओषक ३.	३७१५६
ओषधि २.	३३१३६
२.	३८१७५

ओषधीश १.	२११२५
ओष्ठ १.	४११८७
ओष्ठय १. २. ३.	५१११७
ओष्ण ३.	५३१९
ओसर १.	३८१८४
ओहार १.	४११५०
औ	
औक्षक ३.	५३११०
औजस ३.	३२११८
औसुव्य ३.	३६११७८
औदनिक १. २. ३.	४३१२३
औदर १.	४३१८२
औदरिक १. २. ३.	५११५१
औदुम्बर १.	३६१२२५
औदुम्बरायण १.	३६१८
औदालक ३.	३८१३३६
औपगवक ३.	५१११७
औपयिक १. २. ३.	५१११०३
औपरोधिक १.	३६११९
औपवाह्य १.	३७१६९
औसिका २.	३९११०६
औमीन १. २. ३.	३८१२०
औरञ्ज १.	४३११२९
औरञ्जक ३.	५१११०
औरस १.	४३१४५
और्ध्वस्थक १. २. ३.	३६११७
और्व १.	१११२१
और्वमतिन् १. २. ३.	३६१३५
और्वशेष १.	३६११५१
औलक १. २. ३.	३६१३२
औशीर ३.	५१११७
३.	७३१५
औषध ३.	३८१७५
३.	४१११४१

औष्टक ३.	५११५
औष्णिह ३.	३६१३४
क	
क १.	१११७
३.	४२१२
१.	८५१३६
कवि २.	४३१२३
कंस ३.	५११५५
१. ३.	६५१११
कंसरिपु १.	१११२६
कंसोत्पल ३.	४२१७२
ककुद १. २.	८५१२८
ककुद ३.	३७१८०
३.	८५१२८
ककुदावर्त १.	३७१९७
ककुदिन् १.	३४१५४
ककुवत् १.	३४१५४
ककुवती २.	४११६४
ककुम् २.	२११२
ककुम् १.	३९११२०
ककुहा २ व.	२११२१
कक्खट १.	५३१५
कक्खटी २.	३२११३
कक् १.	४३१३१
१.	६११३४
१. २. ३.	४११६७
कक्क ३.	३३११
कक्का २.	३७१८४
२.	४३१३१
२.	६२१७
कक्कापट १.	४३१२९
कक्क १.	२३१३१
कक्कट १.	३७१५३
कक्कटीक १.	१११५५
कक्कण ३.	४३११३
३.	७३१११
कक्कत १.	४३११२
१. २. ३.	८५१२७
कक्कपत्र १.	३७११८१
कक्कमुख १.	३९११७

कङ्काल १. ३.	४११११४
कङ्कलि १.	३३१४०
कङ्कु २. ३.	३८१५५
कच्च १.	३५११५
१.	५११९७
कच्चङ्गला २.	३११४२
कच् १.	३३१२०८
कच्चर १. २. ३.	५११६६
कच्चित् ४.	८७११९
कच्चोर ३.	३३१२०३
कच्छ १.	४२१३२
१.	४३१३३१
१.	६१११४
कच्छप १.	१२१६०
१.	४११५०
कच्छपी २.	४११११९
कच्छुर १. २. ३.	४१११४५
कच्छुरा २.	३३१२५
२.	३३१२९
कच्छू २.	४११२३
कच्छूदार १.	३३१५४
( कच्छूदार )	
कच्छूरक १	३३११७
कज्जल ३.	४३११५७
कन्चुक १.	४११२१
१.	४३१२८
१.	७१११५
कन्चुकिन् १.	३७१२३
कज्ज ३.	४२१३६
१.	४११९८
कज्जल ३.	४२१३६
कट १.	३७१७५
१.	३७११६
३.	३८१७५
१.	४११२३
१.	४३११२
१.	४३११६६
१.	४११६५
१. २. ३.	६५११८
१. २. ३.	८५१२७
कटक १. ३.	३२१८



[ कटक ]

वैजयन्तीकोषः

[ कतृण ]

कटक १. ३.	४३१४	कटुका २.	३१८५०	कण्टक १.	७१११४
" १. ३.	४३१४४	कटुकाण १.	२३३३४	कण्टकच्छेदन १. ३१७१६५	
" १. ३.	७१३३१	कटुनिक्त १.	५३३३०	कण्टकप्रतीसार २.	
कटकट ३.	३१८११९	कटुतिक्तकषाय १.		३१७५३	
कटकर १.	३१५१७			कण्टका २.	२३३४७
" १.	३१५०६	कटुतुम्बी २.	३३३१६७	कण्टकानना २.	२३३४७
कटकर्मन् १.	३१५१७	कटुभङ्ग ३.	३३३२१४	कण्टकारी २.	५३१०५
कटकी २.	४३३२४	कटुम्भरा २.	३१८१६	कण्टकाली २.	५३१०६
कटङ्कटेरी २.	३३३२१३	कटुरोहिणी २.	३१८१६	कण्टकिन् १.	३३३५०
कटम् १.	१११४६	कटुत्कट ३.	३३३२१३	" १.	३३३६४
कटभी २.	३३३१३९	" ३.	३१८१०	कण्टकिफल १.	३३३७४
कटमोष १.	३३३२०१	कटुफल १.	३३३५८	" १.	३३३१४१
कटशर्करा २.	४११५७	कटुवङ्ग १.	३३३६८	कण्ट १. २. ३.	४३१८३
कटाटङ्क १.	१११४४	कटुवर ३.	३१८१४९	" १.	६११३३
कटाह १.	३३३१०	कटुवाङ्ग १.	३३३६८	कण्टकूणिका २.	३१११७
" १.	४३३५६	कटुवार १.	३१८१३९	कण्टदोष १.	३१११२
कटि २.	४३३६४	" १.	५३३३२	कण्टपाल १.	२३३२६
कटिका २.	३१७१९९	कटाकु १.	७१११८	कण्टभूषा २.	४३३१३७
कटिन्न ३.	७३३११	कठार १.	३१९३२	कण्टमणि १. २.	४३३७०
कटिप्रोथ १.	४३३६५	कठिञ्जर १.	३३३११८	कण्ठीरव १.	३३३२
कटिल्लक १.	३३३१६३	कठिन १.	५३३४	कण्ठकाल १.	१११४५
कटिल्लका २.	३३३१४६	कठिनी २.	३२३१३	कण्ठगुड १.	४३३७०
कटिनीर्षक १.	४३३६५	कठोर १.	५३३५	कण्ठन ३.	४३३६६
कटिसूत्र ३.	४३३१४६	कडङ्गर १.	३१८१६४	" ३.	४३३६७
कटी २.	८१२२७	कडम्बक १.	४३३९०	कडार ३.	४३३२९
कटीकूप १.	४३३६५	कडार १.	५३३१८	" १.	५३३३३
कटीर ३.	७३३६	कण १.	३१५३०	कण्डू २.	४३३१२४
कटु १.	३३३५३	" १.	४३३७	कण्डूति २.	४३३१२४
" १.	३३३१२८	" १.	४३३७०	कण्डूयन ३.	४३३१२४
" १.	३३३२०४	" १.	६१११५	कण्डूया २.	४३३१२४
" ३.	३३३२१३	कणकुक्कुट १.	३१५३४	कण्डूर १.	३३३२०८
" ३.	३१८७९	कणजीरण १.	३१८१४	कण्डूरा २.	३३३१२९
" ३.	३१८१०	कणय १.	३१७१६७	कण्डोल ३.	४३३६४
" २.	३१८१८६	कणा २.	३१८१४	कण्डोलवीणा २.	३१९१२७
" १.	३१८१३०	कणि १.	२३३२	कण्व १. २. ३.	५३३१३
" १.	५३३२६	कणिका २.	३१९२५	कत ३.	४३३१
" १.	५३३२६	" २.	३१९१२०	कतक १.	३३३३२
" १.	५३३४७	" २.	७३३४	" ३.	३१८५०
" १. २. ३.	६१११३७	कणिश ३.	३१८६४	कतिथ १. २. ३.	५३३२०
" १. २. ३.	६१४४	कण्टक १.	२३३१५	कतिपयथ १. २. ३.	५३३२०
कटुकषायक १.	५३३३०	" १.	३१८१४	कतृण ३.	३३३३३४

[ कथम् ]

शब्दानुक्रमिका

[ कपोल ]

कथम् ४.	८१८२०	कन्था २.	४३३३७	कपालिनी २.	११३६४
कथा २.	२३३३८	" २.	४३३१२८	कपाली २.	४३३५९
" २.	३१९१४२	कन्द १. ३.	३३३२०८	कपि १.	३३३३९
कथाप्रसङ्ग १. २. ३.		" १. ३.	४३३४२	" १.	३३३६१
	८३३१३	" १. ३.	४३३९०	" १.	६१११३
कथित १.	५३३५८	" १.	८३३२५	" १.	८१९१०
कदध्वन् १.	३११५०	कन्दर १. २. ३.	३३३३६	कपिकच्छू २.	३३३१२९
कदन ३.	३३३२१५	" १.	३३३३०	कपिकोडा २.	३३३१७९
कदन्निका २.	३३३३१	" १. २. ३.	८१९३७	कपिञ्जल १.	२३३२०
कदम्ब १.	३३३६०	कन्दराल १.	३३३५९	कपित्थ १.	३३३३२
" १.	३३३६७	कन्दरी २.	८१९३७	( कृप )	
कदम्बक १.	३१८११	कन्दल १.	३३३२१०	कपित्थपत्नी २.	३३३१५७
" ३.	५३३२	" १.	८१९३१	कपिप्रिया २.	३३३८१
कदर १.	३३३६३	" १. २. ३.	८१९३८	कपिल १.	११३३०
" १.	४३३१२३	कन्दली २.	३३३२१०	" १.	११३३१
कदर्य १. २. ३.	५३३५९	" २.	८१९३८	" १.	३३३६९
कदल १.	३३३१७३	कन्दु १.	४३३५६	" १.	३१८११०
कदलि २.	३३३८६	" १. २. ३.	८१९२७	" १.	५३३१८
कदली २.	३३३१७४	कन्दुक १.	४३३१६२	कपिला २.	२३३१९
" २.	३३३१८	कन्दोब्ज ३.	४३३३४	" २.	३३३२७
" २.	३३३२५	कन्दोष्ठ ३.	४३३३४	" २.	३३३९२
कदाचित् ४.	८१८७	कन्धरा २.	४३३८३	" २.	३३३४३
कदुष्ण ३.	५३३९	" २.	४३३११७	" २.	३१८१५
कद्रु १.	५३३१८	कन्यका २.	४३३६	कपिलोहक ३.	३३३२७
कद्रुद १. २. ३.	५३३२५	कन्यसा २.	४३३२७	कपिवह्नी २.	३१८७८
" १.	५३३९७	कन्या २.	३३३६७	कपिश १.	३१९४८
कनक ३.	३३३१९	" २.	३३३१८८	" १.	५३३१८
कनकाक्षी २.	२३३२१	" २.	४३३६	कपिश २.	४३३३६
कनिष्ठ ३.	३१८१२२	" २.	८३३१४	कपी २.	३१७१५६
कन्दर्प १.	१११२७	कन्याकुब्ज १.	४३३७	कपीतन १.	३३३३१
" ३.	४३३३१	कन्यापिपीलिका २.	४३३३७	" १.	३३३५९
" १. २. ३.	५३३४१	कन्याप्रसूतिजा २.	३३३४८	" १.	३३३७२
" १. २. ३.	७३३९	कप १.	३३३७२	कपोत १.	२३३२३
कनिष्ठा २.	४३३२७	( कृपा )		" १.	३१८१२९
" २.	४३३७४	कपट १. ३.	३३३१९५	" १.	५३३१२
कनीनिका २.	४३३७४	कपर्द १.	१११५०	" १.	७३३२०
" २.	४३३९४	" १.	४३३५७	कपोतपाली २.	४३३५३
कनीयस् १. २. ३.	७३३९	कपर्दिन् १.	१११४०	कपोताङ्घ्रि २.	३१८१००
कनीयस ३.	३३३२४	कपाल १. २. ३.	४३३५९	कपोताञ्जन ३.	३३३४२
कन्तु १.	६१११२	" १. ३.	४३३११५	कपोल १.	४३३९०
कन्थटिका २.	४३३१२८	कपालिन् १.	१११४०	कपोल २.	३१८६६



[ कप्याख्य ]

वैजयन्तीकोषः

[ कर्क ]

कप्याख्य १.	३१८११०	करक १.	२१२७
कफ १.	४१४१२१	" १.	३१३२५
कफणि १. २.	४१४७२	" १.	३१३७२
कफहरी २.	३१८१८	" १.	४१३५७
कफिल १.	३१९११३	" १.	४१३३७
कफोणि १. २.	४१४७२	करकवर्तिका २.	४१३६०
कबत १.	४१३१०१	करङ्क १.	४१३५८
कबन्ध १. ३.	३१७२१६	" १.	४१३१०७
कबरी २.	४१४१००	" १.	४१३११४
कबल १.	४१३१०१	करज ३.	३१८१९९
कबली २.	४१३१११	" १.	४१३७६
( कपिली )		करञ्ज १.	३१३६२
कम् ४.	८१७३	करञ्जक १.	३१३१०७
कमठ १. २. ३.	७१५२०	कर्कट १.	२१३१७
कमण्डलु १.	३१६१२४	" १.	३१७७५
" १. ३.	८१९३१	" १.	३१८११६
कमन १. २. ३.	५१३३४	" १.	७१५२१
कमनीय १.	३१३८२	करटा २.	३१४४९
कमल ३.	३१८१९२	करण १.	३१५१७
" ३.	४१३३९	" १.	३१५५५
" १. २. ३.	७१५२६	" १.	३१५७४
कमलच्छद् १.	२१३३१	" १.	३१५१०३
कमितृ १. २. ३.	५१३३५	" ३.	३१६६०
कमुजा २.	४१४१०२	" ३.	३१६२१०
कम्प २.	३१८८९	" १.	३१९२३
कम्पिल्ल १ व.	३१३९५	" ३.	३१९९८
कम्प १. २. ३.	५१४७९	" ३.	४१४५२
कम्बर १. २. ३.	५१४७८	" १.	४१४७१
कम्बल १.	४१३१२९	" ३.	७१३९
कम्बु १.	३१७६२	करणीपरिवर्तन ३.	
" १. २. ३.	४११५५		३१९१४१
" १. २.	६१५९	करण्डी २.	३१९३३
कम्बुग्रीवा २.	४१४८४	करपत्र ३.	३१९३६
कम्बोज १.	३१३७०	करपोणि १.	४१४७१
कम् १. २. ३.	५१३३५	करभ १.	३१६६७
कर १.	३१७४५	" १.	३१६६७
" १.	३१८३३	" १.	४१४७५
" ३.	४१३७६	" १.	७१११९
" १.	४१४७३	करमर्द १.	३१३८३
" १.	६१११०	करमर्दिका २.	३१३८४
" १.	८१९१२	करम्ब १.	४१३१०६

[ कर्कट ]

शब्दानुक्रमिका

[ कलकण्ठ ]

कर्कट १.	४११४६	कर्णिका २.	३१७७१	कर्मव्यवृत्त १. २. ३.	
कर्कटस्कन्ध १.	२१३३१	" २.	३१८६७	पाश्या २.	२१९६
कर्कटि १.	३१३१६६	" २.	३१९३०	कर्मदेव १.	१११६
कर्कटिनी २.	३१३२१३	" २.	४१२४६	कर्मन् ३.	३१३३७
कर्कट्ट १. २.	७१३२७	" २.	४१३३३	( कर्मठ )	
कर्कट १.	४१३१०९	कर्णिकार १.	३१३७२	" ३.	३१९८
कर्कराल १.	४१३१८	कर्णिकारल १.	३१३१८२	" ३.	५१२९
कर्करी २.	४१३१७	कर्णस्थ १.	३१७१२६	" ३.	६१३४
कर्कश १.	३१३१९५	" ३.	३१७१२७	" १. ३.	८१९३१
" १.	३१३१६५	कर्णजप १. २. ३.	५१३२५	कर्मन्दिन् १.	३१६१६०
" १.	५१३३	कर्तन ३.	३१७१११	कर्मफल १.	३१३३७
" १. २. ३.	७१४८	" ३.	३१९१०	कर्मवेद १.	५१३९
कर्कशिन १.	३१३७४	" १.	३१९३६	कर्मरङ्ग १.	३३३७
कर्कशी २.	३१३८९	कर्तनभाण्ड ३.	३१९९	कर्मवत् १. २. ३.	५१४७४
कर्कश १.	३१३१६८	कर्तनी २.	३१९२६	कर्मवाटी २.	२१९६९
" १.	३१३१६९	कर्तरी २.	३१७१८५	कर्मशाला २.	४१३२३
कर्कोट १.	३१३१६४	" २.	३१९३७	कर्मशील १. २. ३.	
कर्कोटकी २.	३१३१६१	" २.	४१३१०८	पाश्या २.	२१९६
कर्ण १. २. ३.	३१४५९	" २.	७१२३	कर्मशूर १. २. ३.	५१४७२
" ३.	४१२१७	कर्तृ १.	३१३३७	कर्मसाक्षिन् १.	२१११३
" ३.	४१३९२	कर्त्रिका २.	३१९२६	कर्दार १.	३१३२१४
कर्णजमल १.	४१३९२	कर्दम ३.	२१३८	" १.	२१९१६
कर्णजलका २.	४१३३३	कर्दम १.	३१८२५	कर्दारिणी २.	२१९३३१
कर्णजाह ३.	८१९१६	कर्पट १.	४१३१३०	कर्मिन् १. २. ३.	५१४७४
कर्णधार १.	४१२१९	कर्पर १.	४१३१५६	कर्मी २.	६१२७
कर्णपूर १.	३१३७०	" १.	४१३१५९	कर्वेट १. ३.	४१३३
" १.	५१३१३४	" १.	४१३१५५	कर्वेट ३.	४१३३
" १. ३.	८१५६	" १.	७१११९	कर्प १. ३.	५१३४९
कर्णपूरक १.	३१३४०	कर्पराल १.	३१३४६	कर्पक १.	२१३३२
" १.	३१३१००	कर्परी २.	३१२४३	" १.	३१७११७
कर्णभूषण ३.	४१२३४	" २.	४१३१००	" १. २. ३.	३१८८
" ३.	४१३१३३	कर्पूर १.	३१८१०५	कर्पफल १.	३१३१७६
कर्णमोटी २.	११३६४	कलुर ३.	३१२२०	कर्पफला २.	३१३१७७
कर्णलतिका २.	४१३९३	" १.	५१३२४	कर्पसु १.	३१८३५
कर्णविहीन १. २. ३.		कर्मकर १. २. ३.	२१५५	कर्पू १. २.	४१२२९
		" १. २. ३.	५१४७३	" १. २.	६१५१८
कर्णवष्टन ३.	३१७८७	कर्मकार १. २. ३.	५१४७३	कल १. २. ३.	२१३१३
कर्णशङ्कुली २.	४१३९३	कर्मसम १. २. ३.	५१४७२	" १.	३१९१२१
कर्णाक १.	४१३१३४			" १. २. ३.	५१४१४
कर्णाक ३.	३१६२१	कर्मठ १. २. ३.	५१४७२	कलकण्ठ १.	२१३२७
" ३.	४१२४६				



[ कलकल ]

कलकल १.	२१४२७
कलकल १.	८११२०
कलकल १.	७१११७
कलकल २.	४४४३५
" २.	४४४६४
" २.	७३३६
कलधौत २. २.	८११५५
कलपाठक १.	२११२३
( कलपाठक )	
कलभ १.	२११६६
कलभ १.	२११३४
" १.	७१११८
कलम्ब १.	२१११७९
" १. २. ३.	८११२६
कलम्बी २.	२१११४९
कलम्बू २.	२१११४९
कलरव १.	२१११४
कलल २.	४११६२
" १. २.	४४११८
" २.	४४११०८
कलविक्र १.	२१११८
" १.	२१११९
कलश १.	२११२६
" १.	२११३१
" १. २. ३.	४११५८
" १.	५११५५
" १. २. ३.	८११३७
कलशि २.	२१११३६
कलशी २.	४११५८
कलशीनक १.	२११२४
कलशीपुत्र १.	२१११५१
कलशीमुख १.	२१११२४
कलशोदक १.	२१११८९
कलशोदधि १.	२११११
कलह १.	७१११७
कलहंस १.	२१११८
" १.	८११२०
कलहप्रिय १.	११११७
कला २.	२११५३
" २.	२१११२
" २.	२१११५

वैजयन्तीकोषः

कला २.	२१११८
" २.	४११३८
" २.	४११५५
" २.	५११३६
" २.	५१२१७
" २.	६१२१०
कलाद १.	२१११६
कलानिधि १.	२११२६
कलाप १.	७१११५
कलापक १.	२११३९
" १.	२११०३
" १.	२११३४
" १.	२११०६
" १.	५११४१
कलापिन् १.	२११२८
कलापिनी २.	१११६०
कलाय १.	२११३३
कलावती २.	२११११९
कलाह १.	२१११०३
कलि १.	२११२२
" १.	२१११७५
" १.	२११२०४
" १.	२११६२
" १.	६१११७
कलिका २.	२१११९
कलिकारक १.	२११६२
कलिङ्ग १.	२११२७
" १ ब.	२११४०
" १.	७११३३
कलिङ्गक १ ब.	२११२६
कलित १. २. ३.	७१११९
कलिदुम १.	२१११७५
कलिल १. २. ३.	७११३१
कलुष १.	२१११९
" १.	२१११४
" २.	४११४४
" १.	५११३४
" १.	५११३९
कलुषी २.	२१११८
कलेवर २.	४११५२
कलेवरा २.	१११४९

[ कविका ]

कलक १. ३.	६१११०
कलकत्व ३.	२११८५
कलिकन् १.	१११३१
कल्प १.	२११२३
" १.	२१११६१
" १.	२११२८
" १.	२१११३
" १.	६१११६
कल्पन ३.	२१११०
" १.	४११४६
कल्पना २.	२११७०
" २.	७११३४
कल्पवृक्ष १.	११११४
कल्पपाणि १.	२१११४
कल्पान्त १.	२१११४
कल्पम ३.	२१११६८
कल्पमाष १.	५११२४
" १. २. ३.	७१११०
कल्प्य १. २. ३.	४११४३
" १. २. ३.	६११३
कल्या २.	२१११८
" २.	२११४५
कल्याण ३.	२११६२
" १. २. ३.	५११४२
" २. ३.	७११२१
कल्यापाल १.	२११४४
कल्लोल १.	४१११४
कलह १. २. ३.	२१११५
कलहार ३.	४११३५
कव १.	२११११
कवक १.	२१११५२
कवच १. ३.	२१११५२
कवचित १. २. ३.	
कवट १.	२१११४२
कवट १.	२११२४
कवाट ३.	४११३३
" १. ३. ३.	४११३६
कवि १.	२११३४
" १.	२११५३
" १.	६१११२
कविका २.	२१११३

कविय ]

कविय १. ३.	२१११३
कवी २.	२१११३
कवोष्ण ३.	५१११९
कव्यवाहन १.	११२२२
कश १.	२११२०
" १.	४११२७
कशप १.	४११५०
कशा २.	२१११४
कशिपु २.	५१११६
" १. ३.	७११२०
कशेरु ३.	४१२४७
" २. ३.	४१११५
कश्मल ३.	२११२००
कश्य ३.	२१११०
" ३.	२११४५
" ३.	६१११२
कष १.	२१११९
कषाय १.	२११२७
" १.	४११४१
" १. ३.	५११२७
" १. ३.	७११२२
कषायक १.	५११४७
कषायतिलवण १.	
" १. ३.	५११३६
कषायिका २.	२११४६
कषिका २.	७११४४
कष्ट १. २. ३.	११२३९
" १. २. ३.	६११३३
कस्तभिन् १. ३.	
" ३.	२११३३
कस्तूरिका २.	२११०४
कस्तूरी २.	२११३५
" २.	२११३६
कहाला २.	२११२६
कह्ल १.	२१११०
कांस्य ३.	२११२८
कांस्यताली २.	२११२४
कांस्यपात्रक ३.	४११३१
काक १.	२१११५

शब्दानुक्रमिका

काककङ्कु २.	२११५९
काकचिञ्चा २.	२११८०
काकजङ्गा २.	२११११
" २.	२११८०
काकजम्बू २.	२११२३
काकणी २.	७११३६
काकतित्ता २.	२११८०
काकतित्नुक १.	२११११
काकतुण्ड १.	२११०८
काकतुण्डिका २.	२११८७
काकदन्ता २.	२११८०
काकनखी २.	२११८०
काकनासा २.	२१११२
" २.	२११२३
काकपक्ष १.	५११०२
काकपीथी २.	२११८०
काकपीलु १.	२११५१
" २.	२११८०
काकपुष्ट १.	२११२६
काकमर्दक १.	२११८०
काकमाची २.	२१११२
काकमाली २.	२११८४
काकर्द १.	२११५०
काकली २.	२१११४
काकशीर्ष १.	२११२३
काकाङ्गी २.	२१११२
काकाणती २.	२११८०
काकाणन्ती २.	२११८०
काकाण्ड १.	२११४७
काकादनी २.	२११८०
काकारि १.	२११२२
काकी २.	२१११२
काकु २.	२११४७
काकुद ३.	४११८९
काकुन्दी २.	४११३९
काकेन्दु १.	२११५१
काकोदर १.	४१११२
काकोदुम्बरिका २.	
" १.	२११११
काकोल १.	२१११७
" १.	४११२४

[ कानना ]

काकोली २.	२१११२
" २.	२११५०
काकोलुकिका २.	८१११७
काकी २.	२१११६
काकीव १.	२११५६
काङ्गा २.	२११७९
काच १.	२१११७
" १.	५११२२
" १.	६१११५
काचमालिका २.	२११४६
काचर १.	५११२२
काचस्थाली २.	२११९०
काचित १. २. ३.	
" ३.	५१११६
काचिम ३.	४११४४
काञ्चन ३.	२१११९
काञ्चनार १.	२११४८
काञ्चना १.	२११७७
काञ्चनी २.	२११२७
" २.	२११२१
काञ्चिक ३.	४११८१
काञ्ची २.	४११४६
काञ्चीपद ३.	४११४४
काटिका २.	२११११
काण १. २. ३.	५११३३
काणमारिष १.	२१११५१
काणा २.	२१११७
काण्ड १. ३.	२११६३
" ३.	४११३१
" १. २. ३.	६११११
काण्डपट १.	४११२४
काण्डपृष्ठ १. २. ३.	
" ३.	२११४३
" १. २. ३.	८११५६
काण्डवीणा २.	२११२८
काण्डी २.	२११७८
काण्डीर १. २. ३.	
" ३.	२११४४
" १.	२११७८
कण्डेनु १.	२१११०१
कातना २ ब.	२१११९



[ कातर ]

कातर १. २. ३.	५४११८
„ १. २. ३.	७५३२
कातुलक १.	३३३८५
कात्यायन १.	३३३५८
कात्यायनी २.	१११६२
„ २.	४३११४
कादम्ब १.	३३३८
„ १.	७१११९
कादम्बरी २.	३३३४६
कादम्बिनी २.	२३३२
कान ३.	२३३२
कानन ३.	३३३१
कानीन १.	४३३४३
कान्त १.	३३३८२
„ १.	३३३८५
„ ३.	३३३१२३
„ १. २. ३.	५४३७०
कान्तनाला २.	३३३१८७
कान्ता २.	४३३५
कान्तार १.	३३३२२६
„ १. ३.	७५३२२
कान्तारवासिनी २.	१११६६
कान्ति २.	६३३८
कान्दविक १. २. ३.	४३३९२
कान्दशीक १. २. ३.	३३३१७
कापटिक १.	३३३२७
„ १. २. ३.	५४३२३
कापथ १.	३३३५०
कापिशायन ३.	३३३४४
कापिशेय १.	१३३४
कापोत १.	३३३२५
„ ३.	५३३६
कापोताजन ३.	३३३४२
काम १.	१३३२७
„ १.	३३३५४
„ १.	३३३७९
„ १.	६३३१७
कामकेलि २.	४३३१७०

वैजयन्तीकोषः

कामध्वज १.	२३३१३७
„ १.	४३३१६९
कामन १. २. ३.	५४३३४
कामपद ३.	४३३६१
कामपाल १.	१३३२४
कामम् ४.	४३३१०४
कामयितृ १. २. ३.	५३३३५
कामरूप १ ब.	३३३२९
कामरूपिणी २.	३३३३३
कामरूपिन् १.	३३३५
कामल १. २. ३.	४३३३२२
कामचक्रिया २.	४३३१६९
कामाङ्ग १.	३३३२५
कामारि १.	१३३४१
कामिक १.	३३३३२
„ १.	३३३१९८
कामिकान्त ३.	३३३४८
कामिन् १.	३३३३३
कामिनी २.	४३३५
कामुक १. २. ३.	५४३३५
कामुका २.	४३३११
कामुकी २.	४३३११
कामोत्सव १.	४३३१६७
काम्बल १. २. ३.	३३३१२९
काम्बविक १.	२३३१७
काम्बोज १.	३३३१५
काम्बोजी २.	३३३१०७
काम्य ३.	३३३२५
काम्यदान ३.	३३३१२०
काम्रा २.	३३३११४
काय १.	४३३५३
„ १. २. ३.	६३३१७
कायमान ३.	४३३३३
कायस्थ १.	३३३२३
कायाङ्ग ३.	३३३२०४
कयिका २.	३३३५
कारक ३.	७३३७
कारकुत्सीय १ ब.	३३३३८

[ कार्पासी ]

कारण ३.	३३३१६
„ ३.	७३३७
कारणा २.	१३३२९
कारणिक १. २. ३.	५४३३०
कारण्डव १.	२३३११
कारम्भा २.	३३३६६
कारवाही २.	३३३११०
कारवी २.	३३३८५
„ २.	३३३१०२
„ २.	३३३३२२
„ २.	३३३१२९
कारवेष्ट १.	३३३१६३
कारा २. १.	६३३१०
कारावर १.	३३३४२
„ १.	३३३४३
कारि २.	८३३५
कारिका ३.	१३३३२
„ २.	३३३६
„ २.	८३३५
कारिष ३.	५३३३३
कारु १.	१३३४
„ १.	३३३५८
„ १.	३३३७
„ १.	६३३५५
कारुज १.	७३३१८
कारुण १. २. ३.	५४३३८
कारुणिक १. २. ३.	५४३३८
कारुण्य ३.	३३३१९२
कारुबिन्द १.	३३३५७
कारोत्तर १.	३३३५२
कार्तस्वर ३.	३३३१८
कार्तान्तिक १.	३३३२५
कार्तिक १.	२३३६६
कार्तिकिक १.	२३३६६
कार्तिकी २.	२३३७७
कार्तिकेय १.	१३३५६
कार्पास १.	३३३१०६
„ १. २. ३.	४३३११७
कार्पासतूल १.	३३३१९
कार्पासी २.	३३३१९

[ कर्म ]

कर्म १. २. ३.	५४३७२
कर्मण ३.	३३३११७
कर्मुक ३.	३३३१७२
„ ३.	७३३६
कार्य ४.	३३३२३६
कार्वट ३.	४३३३
कार्वटिक ३.	४३३३
कार्पाण १.	५३३३९
„ १.	५३३४०
कार्पिक १.	५३३३८
„ १.	५३३३९
„ १.	५३३३९
कार्पा ३.	३३३१०
( कर्पा )	
कार्परि २.	३३३५७
कार्पर्य १.	३३३५७
कर्पर्य १.	३३३३८
काल १.	१३३३५
„ १.	२३३५२
„ ३.	३३३३३
„ १.	५३३११
„ १.	६३३१५
कालक १.	४३३१७
कालकण्डक १.	३३३३६
कालका २.	३३३२०
( कालिका )	
कालकिञ्च १.	३३३५८
कालकुण्डक १.	३३३२९
कालकुन्ध १.	१३३१४
„ १.	१३३३५
कालकूट १.	४३३२२
„ १.	४३३२३
„ १.	८३३३१
कालकूणिका २.	३३३१७८
कालकण्ड ३.	४३३११३
कालधर्म १.	३३३२०१
कालनिर्यास १.	३३३५३
कालपर्णी २.	३३३१२२
कालपुच्छ १.	३३३२९
कालपूर १.	३३३४३
कालपूरक १.	३३३४३

शब्दानुक्रमणिका

कालभाग १.	३३३७८
कालमालक १.	३३३१२२
कालमेषिका २.	३३३१८१
कालमेषी २.	३३३१०८
कालरात्री २.	१३३६१
कालवृन्ती २.	३३३१७९
कालशीनक १.	३३३२५
कालशेय ३.	३३३१४८
कालस्कन्ध १.	३३३५१
„ १.	३३३८७
काला २.	३३३१२
„ २.	३३३३८
„ २.	३३३१८५
कालाग्रह ३.	३३३१०८
कालाची २.	३३३२०९
कालानुसार्य ३.	३३३१६
„ ३.	४३३१५४
कालायस ३.	३३३३४
कालावलोलक १. २. ३.	३३३३३५
कालिक १.	३३३२२
कालिका २.	२३३१६
„ २.	३३३४९
„ २.	३३३१११
„ २.	३३३५
„ २.	३३३८४
„ २.	३३३८१
कालिङ्ग १.	३३३६२
„ १.	३३३१६९
कालिङ्गी २.	३३३१६९
कालिनी २.	२३३४०
„ २.	४३३१९
कालिन्दी २.	४३३२५
कालिन्दीकर्षण १. १३३२३	
काली २.	१३३४९
„ २.	१३३३०
„ २.	२३३२
„ २.	३३३१७
„ २.	३३३१०४
„ २.	३३३१२७
„ २.	३३३७७

[ काष्ठीला ]

काली २.	३३३१९१
कालीची २.	१३३३६
कालेय २.	३३३१७६
„ २.	३३३२१३
„ ३.	४३३१५४
कालोच्चिन् १.	२३३८९
कालोदक १.	३३३१५
कालिक १.	३३३७३
काल्य ३.	२३३६९
काल्यक १.	३३३११७
कावचिक ३.	५३३११
कावाट १.	३३३१९९
कावातायनिका २.	४३३३८
कावेर ३.	३३३८०
कावेरी २.	४३३२८
काव्य ३.	२३३४२
काश १. ३.	३३३२२७
काशशाकट १. २. ३.	३३३२०
काशशाकिन् १. २. ३.	३३३२०
काशि १ ब.	३३३४०
„ १.	३३३२२७
काशिका ३.	४३३७
काश्मीर १ ब.	३३३२७
„ ३.	३३३८८
काश्मीरज ३.	३३३११७
काश्मीरी २.	३३३१९८
काश्यप ३.	४३३१०६
काश्यपसुत १.	१३३३७
काश्यपी २.	३३३१४
काष्ठ ३.	३३३१३
काष्ठतल १.	३३३३४
काष्ठा २.	२३३५३
„ ३.	६३३८
काष्ठाशुवाहिनी २.	४३३१५
काष्ठी २.	३३३१७५
काष्ठीला २.	३३३१९१
„ २.	३३३१७३



काष्ठेन्धन ]

काष्ठेन्धन ३.	३१६१७
काष्मरी २.	३१६१७
कासनुद् १.	३१६१७
कासमर्दक १.	३१६१७
कासर १.	३१६१७
कासार १.	३१६१७
कासू २.	३१६१७
" २.	३१६१७
काहला २.	३१६१७
किंवदन्ती २.	३१६१७
किशार १.	३१६१७
किशुक १.	३१६१७
" १.	३१६१७
" १.	३१६१७
किरीदिवि १.	३१६१७
किरीसाद १.	३१६१७
किखि २.	३१६१७
किङ्कर १.	३१६१७
किङ्किणी २.	३१६१७
किङ्किराट १.	३१६१७
किङ्किरात १.	३१६१७
किङ्किर १.	३१६१७
" १.	३१६१७
किङ्गन ४.	३१६१७
किङ्गित ३. ४.	३१६१७
" ३.	३१६१७
" ४.	३१६१७
किङ्गलुक १.	३१६१७
किङ्गोल १.	३१६१७
किङ्ग १ ब.	३१६१७
किङ्गलुक १.	३१६१७
" १. ३.	३१६१७
किट १.	३१६१७
किटि १.	३१६१७
किट्ट १. ३.	३१६१७
किट्टिभ ३.	३१६१७
किण १.	३१६१७
" १.	३१६१७
किणिही २.	३१६१७
" २.	३१६१७
किण्व ३.	३१६१७

वैजयन्तीकोषः

किण्व ३.	३१६१७
कितव १.	३१६१७
" १.	३१६१७
किदिर १.	३१६१७
किनाटक ३.	३१६१७
किन्नर १.	३१६१७
किन्नरी २.	३१६१७
किन्नरेश्वर १.	३१६१७
किम् १. २. ३.	३१६१७
" ४.	३१६१७
" ४.	३१६१७
किमिला २.	३१६१७
किमु ४.	३१६१७
किमुत ४.	३१६१७
किम्पचान १. २. ३.	३१६१७
किम्पाक १.	३१६१७
किम्पुरुष १.	३१६१७
" १.	३१६१७
कियदेतिका २.	३१६१७
( कियदेहिका )	
कियाह १.	३१६१७
किरण १.	३१६१७
किरात १.	३१६१७
" १. २. ३.	३१६१७
किरातज ३.	३१६१७
किरि १.	३१६१७
" २.	३१६१७
किरिभ १. २. ३.	३१६१७
किरीट ३.	३१६१७
किरीटिन् १.	३१६१७
किर्मीर १.	३१६१७
किल ४.	३१६१७
किलास १. २. ३.	३१६१७
किलासध्न १.	३१६१७
किलासिन् १. २. ३.	३१६१७
किलिकिञ्चित ३.	३१६१७
किलिञ्ज १.	३१६१७
किलिबष ३.	३१६१७

[ कुकर ]

किङ्गी २.	३१६१७
किशालिन् १.	३१६१७
किशोर १.	३१६१७
किङ्कु १.	३१६१७
" १.	३१६१७
" १. २.	३१६१७
किसल १.	३१६१७
किसलय ३.	३१६१७
किसिट्टक १.	३१६१७
कीकट १ ब.	३१६१७
कीकस १.	३१६१७
" ३.	३१६१७
कीचक १ ब.	३१६१७
कीट १.	३१६१७
कीन ३.	३१६१७
कीनाश १.	३१६१७
" १.	३१६१७
" १. २. ३.	३१६१७
कीर १.	३१६१७
" १ ब.	३१६१७
कीर्ण १.	३१६१७
कीर्णजल १.	३१६१७
कीर्ण २.	३१६१७
कीर्ति २.	३१६१७
" २.	३१६१७
कीर्ता २.	३१६१७
कील १. २.	३१६१७
" १.	३१६१७
" १. ३.	३१६१७
" १. २. ३.	३१६१७
कीलक १.	३१६१७
कीला २.	३१६१७
कीलाल ३.	३१६१७
कीलित १. २. ३.	३१६१७
कीलिनी २.	३१६१७
कीलष १.	३१६१७
कीश १.	३१६१७
कु २.	३१६१७
" ४.	३१६१७
कुकर १. २. ३.	३१६१७

कुकुण्ड ]

कुकुण्ड १.	३१६१७
कुकुन्दर ३.	३१६१७
कुकुल १. ३.	३१६१७
कुक्कुट १.	३१६१७
" १.	३१६१७
" १.	३१६१७
" १.	३१६१७
" १.	३१६१७
" १.	३१६१७
" १.	३१६१७
" १.	३१६१७
कुक्कुटध्वज १.	३१६१७
कुक्कुटाक्ष १.	३१६१७
कुक्कुटि २.	३१६१७
कुक्कुर १.	३१६१७
" ३.	३१६१७
कुक्किक १.	३१६१७
कुक्किकृजित ३.	३१६१७
कुक्किभरि १. २. ३.	३१६१७
कुच्यगिन् १.	३१६१७
कुङ्कण १.	३१६१७
कुङ्कुम ३.	३१६१७
कुङ्कुणी २.	३१६१७
कुच १.	३१६१७
कुचन्दन ३.	३१६१७
" ३.	३१६१७
कुचर १. २. ३.	३१६१७
कुचार १.	३१६१७
कुज १.	३१६१७
" १ ब.	३१६१७
" १.	३१६१७
कुञ्जिका २.	३१६१७
कुञ्जित १. २. ३.	३१६१७
कुञ्ज १.	३१६१७
" १. ३.	३१६१७
कुञ्जना २.	३१६१७
कुञ्जर १.	३१६१७
कुञ्जल ३.	३१६१७
कुञ्जिका २.	३१६१७

शब्दानुक्रमणिका

कुट १.	३१६१७
" ३.	३१६१७
" १.	३१६१७
कुटच १.	३१६१७
कुटज १.	३१६१७
कुटन्नट १.	३१६१७
" ३.	३१६१७
कुटपुरि १.	३१६१७
कुटर १.	३१६१७
कुटि २.	३१६१७
" १. २. ३.	३१६१७
" १. २. ३.	३१६१७
कुटिल १. २. ३.	३१६१७
" १. २. ३.	३१६१७
कु. टीर	३१६१७
" २.	३१६१७
कुटीर १.	३१६१७
" १.	३१६१७
कुटुम्ब ३.	३१६१७
कुटुम्बध्यापृत १. २. ३.	३१६१७
कुटुम्बिका २.	३१६१७
कुटुम्बिनी २.	३१६१७
कुटुम्बिनी २.	३१६१७
कुटुम्बित ३.	३१६१७
कुटार १.	३१६१७
कुटिनी २.	३१६१७
कुटिम १. २.	३१६१७
कुटिरी १.	३१६१७
कुटुमल १. ३.	३१६१७
" ३.	३१६१७
कुठ १.	३१६१७
कुठरुणा २.	३१६१७
कुठार १.	३१६१७
" १. २. ३.	३१६१७
कुठेरक १.	३१६१७
कुड १.	३१६१७
कुडङ्ग १. ३.	३१६१७
कुडप १.	३१६१७
कुडुम्बिनी २.	३१६१७
कुड्य १. ३.	३१६१७

[ कुदर ]

कुड्यमश्या २.	३१६१७
कुण १.	३१६१७
कुणप १.	३१६१७
" ३.	३१६१७
कुणि १.	३१६१७
" १. २. ३.	३१६१७
कुण्ड १. २. ३.	३१६१७
कुण्ड १.	३१६१७
" ३.	३१६१७
" ३.	३१६१७
" ३.	३१६१७
कुण्डगोलक १.	३१६१७
कुण्डधान्य १.	३१६१७
कुण्डनी २.	३१६१७
कुण्डल १.	३१६१७
" ३.	३१६१७
कुण्डलिन् १.	३१६१७
" १. २. ३.	३१६१७
कुण्डली २.	३१६१७
कुण्डिका २.	३१६१७
कुण्डिन् १.	३१६१७
कुण्डणाची २.	३१६१७
" २.	३१६१७
कुतनु १.	३१६१७
कुतप १.	३१६१७
" १.	३१६१७
कुतपविन्यास १.	३१६१७
कुतुप १.	३१६१७
कुतू २.	३१६१७
कुतूहल ३.	३१६१७
कुत्रफला २.	३१६१७
कुत्स १.	३१६१७
कुत्सना २.	३१६१७
कुत्सा २.	३१६१७
कुत्सित १. २. ३.	३१६१७
कुत्सिता २.	३१६१७
कुथ १.	३१६१७
" १.	३१६१७
" १. २. ३.	३१६१७
कुदर १.	३१६१७



[ कुदानव ]

कुदानव ३.	३१३२३२
कुधान्य ३.	३१८६३
कुध १.	३१२२
कुनटी २.	३१२११
” २.	३१२१७
कुनालिका २.	३१३२१
कुनाशक १.	३१३१२६
कुन्त १.	३१७१६५
कुन्तल १ व.	३१३३३
” १ व.	३११४०
” १	३१४१९८
कुन्ति २.	३१८८७
कुन्द १.	१३१६१
” १.	३३ ९१
” १.	३१९१८
कुन्दाल ३.	३१८२९
कुन्दिल ३.	३१३१
कुन्दोपराल १.	३१३५३
कुन्नान ३.	७३१८
कुपूय १. २. ३.	३१४७६
कुप्य ३.	३१८७४
” ३.	३१८१२२
कुप्यप्रस्थ १.	३११५३
कुप्यमाष १.	३११४४
कुप्यशाला २.	३१३२१
कुबेर १.	१२१५५
” १.	८६३
कुबेराक्षी २.	३१३९०
कुब्जक १. २. ३.	३१४११
कुब्जा २.	३१६४९
कुमार १.	१११५४
” १.	३१७२०
” १.	३१९१०५
” १. २. ३.	३१४२
” १. २. ३.	३१४२८
” १.	८६११
कुमारी २.	३१११०
” २.	३१३१७८
” २.	३१४२६
” २.	३१८५०
” २.	३१४६

वैजयन्तीकोषः

कुमालक १ व.	३११२८
कुमुख १.	३१४६
कुमुद १.	२११८
” ३.	३१४४१
कुमुदबान्धव १.	२११२५
कुमुदा २.	३१३५८
” २.	३१३५८
कुमुदिनी २.	३१४४४
कुमुद्वत् १. २. ३.	३११४३
कुमुद्वती २.	३१४४४
कुमुद्वतीशत्रु १.	२११२२
कुम्बा २.	३१६१०५
कुम्भ १.	३१३५८
” १.	३१४३९
” १.	३१४३२
” १.	३१५५६
” १.	३१३३८
” १.	८६११५
कुम्भकर्णारि १.	१११२१
कुम्भकार १.	३१५५
” १.	३१५६७
” १.	३१९२७
कुम्भकारी २.	३१२४४
कुम्भधारिका १.	३१४२६
कुम्भफल १.	३१३८२
कुम्भयोनि १.	३१६१५१
कुम्भशाला २.	३१४२३
कुम्भित २.	३१३५५
कुम्भिन् १.	३१७६०
” १.	३११५३
कुम्भी २.	३१३५८
” २.	३१२४६
कुम्भीनस १.	३१११२
कुम्भीर १.	३११५३
कुम्भीरमत्तिका २.	२१४४६
कुम्भील १.	७११२०
कुम्भोलखलक ३.	३१३५४
कुरङ्ग १.	३१४१४
” १.	३१४४०
कुरण्ड १.	३१३९०
” १.	३१४१३१

[ कुलिक ]

कुरण्ड १.	७१११९
कुरण्डक १.	३१३१८८
कुरर १.	२१३३४
कुररी २.	३१४६५
कुरवक १.	३१३६१
” १.	३१३६१
” १.	३१३१८९
” १.	३१३१९०
” १.	३१३१९१
कुरिन् १.	३१६४३
कुरीर ३.	७३१८
कुर १.	३१६७८
कुरुकुशिका २.	२१४२३
कुरुल १.	३१४९९
कुरुवर्ष ३.	३११९
कुरुविन्द १.	३१२४०
” ३.	३१२४५
” १.	८११२१
कुरुविस्त १.	३११५२
कुरुवत्र १.	३१३१३३
कुरुन ३.	३१९८७
कुल ३.	३१३११५
” ३.	३१४४९
” ३.	३११६
” १.	३१३५४
कुलक १.	३१३५१
कुलकालक १ व.	३१३३४
कुलचर १.	३१३३४
कुलज १. २. ३.	३१४६१
कुलटा २.	३१४१९
कुलपालिका २.	३१४१७
कुलस्त्री २.	३१४१७
कुलस्थक १.	३१८४७
” १.	३१११२
कुलाय १.	२१३४९
” १.	८१३३६
कुलाल १.	२१९२७
कुलालकुट्ट १.	२१३२१
कुलालिका २.	३१२४४
कुलिक १.	३१७१८५
” १.	२१९१७

कुलिङ्गाटी ]

कुलिङ्गाटी २.	३१८३५
कुलिश १. २.	११२१३
कुली २.	३१३१०४
” २.	३१४२८
कुलीन १.	३१७९४
” १. २. ३.	३१६११
कुलीनस ३.	३१२११
कुलीनक १.	३१८३८
कुलीर १.	३१२४६
” १.	८६११४
कुलिस्थिका २.	३१२४४
” २.	३१८४८
कुल्माष १.	३१२४०
” १.	३१८५३
” १.	३१४७२
” ३.	३१४८२
कुल्य १ व.	३१३२८
” १ व.	३१३३४
” १ व.	३१३४०
” ३.	३१४१०९
कुल्यष्टश्री २.	३१३१०५
कुल्या २.	३१३१०५
” २.	३१४२२
” २.	३१२२९
” २.	३१४१७
” २.	३१३३०
कुव ३.	३१३३४
कुवक १.	३१३६१
( कुरुवक )	
कुवद १. २. ३.	३१४४८
कुवल ३.	३१२३४
” १. २. ३.	८१३३८
कुवल्य ३.	३१२३४
कुवलायिक १.	२१३९
कुवली २.	३१३८७
” २.	८१३३८
कुवाट १. २. ३.	३१३४६
कुवादुष्क १.	३१२२५
कुविन्दक १.	११५९
” १.	२१९८
कुविलीन ३.	३१३३६

शब्दानुक्रमिका

कुवीणा २.	२१९१२८
कुवेणी २.	२१९४२
कुवेल ३.	३१२३४
” १.	३१३३२
कुश १.	३१३२२७
” १. ३.	३१५२४
कुशद्वीप ३.	३१११४
” ३.	३१११७
कुशल १. २. ३.	३१४१३३
” १. २. ३.	३१५२४
कुशवट १.	३१६१४९
कुशस्थली २.	३१३६
कुशा २.	३१६१०८
” २.	३१७११४
कुशाश्रीयधी १. २. ३.	३१४२९
कुशापीड १.	३१६१४९
कुशारणि १.	३१६१५६
कुशिन् १.	३१६१५३
कुशी २.	३१३३५
” २.	३१३१३९
कुशीलव १.	३१५९८
” १.	३१९११४
कुशेशय ३.	३१२३८
कुषाकु १.	७१२२१
कुषिन् १.	३१७६२
कुष्ट ३.	३१८९९
” १.	३१३२५
” ३.	३१३२४
” १. २.	३१५२३
कुष्ठनुद २.	३१३९९
कुसट १ व.	३१३४०
कुसीद ३.	३१८४
” १. २. ३.	७१५३२
कुसीदिक १. २. ३.	३१८१८
( कुसीदक )	
कुसुम ३.	३१३१८
कुसुमच्छद १.	३१२४५
कुसुमाञ्जन ३.	३१२४३
कुसुमित १. २. ३.	३१३१८

[ कूबर ]

कुसुम्भ ३.	३१८९१
” १.	७१५२५
कुसूल १.	३१३६४
कुस्तुम्बरी २.	३१८४९
कुस्तुम्बुर ३.	३१८५१
कुहक १.	३१७१३
” १. २. ३.	३१४२३
” १. २. ३.	७१४१०
कुहन १. २. ३.	७१५२३
कुहर ३.	३१३२
” ३.	७३३७
कुहलि २.	३१६५९
कुहिठ १. ३.	२१२१०
कुहू २.	२१३७१
कुहडि २.	२१३१०
कुहलि २.	२१३१०
कुहरी २.	३१३४
कुजन ३.	२१४३
कूजित ३.	२१४३
कूट १. ३.	३१३८
” १. २. ३.	३१४५६
” १.	३१५९९
” ३.	३१६१९५
” १. ३.	३१७१८४
” १. १.	३१९२२
” १. ३.	३११३
” १. ३.	३१५१३
कूटयन्त्रक ३.	३१९४०
कूटशास्त्रमलि १. २.	
” ३१३९१	
कूटसाक्षिन् १. २. ३.	
” ३१८१०	
कूटस्थ १. २. ३.	३१४७९
कूटगार ३.	३१३३१
कूणिका २.	२१९१२०
कूप १.	३१३७
” १.	३१३१७
” १.	३११११
कूपक १.	३१३३१
कूपेपिशाचक १.	३१२४९
कूबर १. ३.	३१७१२७



[ कृवर ]

कृवर १.	३७१३२
कृर ३.	४३१७५
कृरदूषक १.	३८१५४
कृच १.	४३१५७
” १. ३.	६५१२०
चकेसर १.	३३१२२०
कृचाल १.	३६११२
कृचिका २.	३८११४८
” २.	७२१५
कृची २.	३९११३
कृपीर १.	४३१७२
कृपास १.	४३१२८
कृर्म १.	३७१७६
” १.	३७१७९
” १.	४११५०
” १.	८६११३
कृल ३.	४२१३२
” ३.	६३१५
कृलङ्का २.	४३१२३
कृलमण्डक १	४११४८
( स्थूलमण्डक )	
कृली २.	३३१८७
कृरमाण्डक १.	१११५१
” १.	३३१७०
कृकण १.	२३१३६
कृकणपत्रिका २.	३३१२३०
कृकर १.	२३१३६
कृकलास १.	४११२८
कृकवाकु १.	२३११३
” १.	३३१७९
कृकाटिका २.	४३१८४
कृच्छ्र १ २. ३.	१२१३९
” १. ३.	३६१३६
कृच्छ्रक ३.	३६१३६
कृच्छ्रातिकृच्छ्र १.	३६१३८
कृच्छ्रातिकृच्छ्रक ३.	३६१४१
कृत ३.	२११९१
” ३.	३६१९८

वैजयन्तीकोषः

कृत ३.	३९१६२
” १. २. ३.	६५१२१
कृतकृत्य १. २. ३.	५४११९
कृतकोटिकवि १.	३६१७९
कृतज्ञ १.	३७१७०
कृतपुङ्गव १. २. ३.	३७१४९
कृतभी २.	४११४८
कृतमाल १.	३३१४८
” १.	३३१२८
कृतमालक १.	२३१२३
” १.	४३१०६
कृतमुख १. २. ३.	५४११९
कृतवेधन १.	३३१५९
” १.	३३१६०
कृतहस्त १. २. ३.	३७१४८
कृताकृत ३.	३६१९७
कृतान्त १.	१२१३५
” १.	७१११६
कृतारु १.	३३१२७
कृतालक १.	१११५७
कृतास्त्र १. २. ३.	४७१४९
कृति २.	४३१३६
कृतिन् १.	३३१२९
” १. २. ३.	५४११९
कृतोद्वाह १.	३६१८
कृत्त १. २. ३.	५४१०२
कृत्ति २.	३६१२१
” २.	४३१६०
” २.	४३१०३
कृत्तिका २ ब.	२११४३
कृत्तिकापिञ्जर १.	३६१९८
कृत्तिवासस् १.	१११४२
कृत्य ३.	३६१२३६
” १. २. ३.	६५१२०
” २. ३.	८११३३

[ कृष्णधूमल ]

कृत्रिम ३.	३२१२८
” १.	३८११०
” १.	३८१११
” १.	३८१२४
कृत्रिमाचारी २.	२११७६
कृस्न १. २. ३.	५४१८६
कृपण १. २. ३.	५४१५९
कृपा २.	३६१९२
कृपाण १.	३७१५९
कृपाणी २.	३९१३७
कृपीट ३.	७११८
कृपीटयोनि १.	१२११६
कृमि १.	३५१३३
” १.	४३१३४
कृमिकोशोत्थ १. २. ३.	४३११८
कृमिज ३.	३८१०७
कृवी १.	३९१२६
कृश १ ब.	२११३७
” १.	५३१७
” १. २. ३.	५४१५
कृशानु १.	१२११७
कृशानुरेतम् १.	१११४५
कृशारिवन् १.	२९१६३
कृपक १.	३८१२८
” १. २. ३.	७५१३१
कृपि २.	२८१३
कृपीबल १.	३७१२७
” १. २. ३.	३८१७
कृष्टक १. २. ३.	३८१२२
कृष्टि २.	६५१२४
कृष्ण १.	११११५
” १.	१११२५
” १.	३३१८३
” १.	५३१११
” १.	६५१४४
कृष्णकाक १.	२३११७
कृष्णकोहल १.	३९१५८
कृष्णद्वैपायन १.	१११३२
कृष्णधूमल १.	५३११३
” १.	५३१२२

[ कृष्णनवाम्बुद ]

कृष्णनवाम्बुद १.	२२१२२
कृष्णपाक १.	३३१८३
कृष्णपाकफल १.	३३१८३
कृष्णपिङ्गल १.	५३१२४
कृष्णपीत १.	५३१२२
कृष्णफल १.	३३१८३
कृष्णफला २.	३३११०८
कृष्णभगिनी २.	१११६२
कृष्णभूम १. २. ३.	३११४५
कृष्णभेदी २.	३८१८६
कृष्णरक्तसित १.	५३१२५
कृष्णला २.	३३११७९
कृष्णलोहित १.	५२११
कृष्णवर्ण १.	३८१४३
कृष्णवर्णा २.	४२१२९
कृष्णवर्मन् १.	१२११४
कृष्णविषाणा २.	३६११०९
कृष्णवृन्त १.	३८१४७
कृष्णवृन्ता २.	३३१९०
” २.	८२११५
कृष्णवृन्तिका २.	३३१५७
कृष्णशालि १.	३८१३३
कृष्णशिम्बि २.	३८१४७
कृष्णशृङ्गक १.	३३१४९
कृष्णसर्प १.	४१११२
” १.	४१११३
कृष्णसार १.	३३११२
कृष्णस्वसृ २.	१११६२
कृष्णाजिन ३.	३६१२१
कृष्णायस ३.	३२१३३
कृष्णिका २.	३३११८१
कृसर १.	३३१७८
” ३.	४३१४७
” १. २. ३.	४३१७९
केकर १. २. ३.	५४११३
केका २.	२३१३९
केकालि १.	२३१३८
केकिन् १.	२३१३७
केणिका २.	४३१२५

शब्दानुक्रमणिका

केण्डुक १.	४११४७
केतक १. २. ३.	३३१२२३
केतन ३.	३७१७६
” ३.	४३११९
” ३.	७३१२२
केतर २.	४३११९
केतु १ ब.	१३१३७
” १.	६१११६
” १.	८११६०
केतुमाल ३.	३११७
केदर १.	३८११७
केदार १.	३८११७
केनिपात १.	४२११६
केयूर ३.	४३११४३
केरल १ ब.	३११३४
केलक १.	३९१६४
केलि १. ३.	३९१८८
केलिकिल १.	१११५१
” १.	३७११७
” १.	३९१६७
केलिकुञ्जिका २.	४३१२८
केलिसहायक १.	३७११७
केवल १. २. ३.	७५१२६
केवलिन १.	१११३५
केश १.	४३१९७
” १.	८६१११
केशकार १.	३७११७
केशकूट १.	४३११००
केशघ्न ३.	४३१२६
केशपञ्च १.	५१११८
केशपद्धति २.	४३१००
केशपाश १.	५१११८
केशपाशी २.	४३११०२
केशव १.	११११४
” १. २. ३.	५४१८
केशवप्रिय १.	३२१५
केणवायुध ३.	३७१३४
केशहस्त १.	५१११८
केशिक १. २. ३.	५४१८
केशिका २.	३३१३७
केशिन् १. २. ३.	५४१८

[ कोकिल ]

केशिनी २.	३३११६
केशी २.	४३१०२
केशर १.	३२१५
” १.	३३१२६
” १.	४२१४५
” १.	४३१३२
” १. ३.	७५१३०
केशरा २.	३३१९९
केशरिन् १.	३३३३३
” १.	७५१२१
कैकसेय १.	१२१४१
कैटभारि १.	११११५
कैटभी २.	१११६२
कैडर्य १.	३३१५०
” १.	३३१५८
कैडर्यद्वेषिन् १.	३३१७५
कैतव १.	५३१८
कैदारक ३.	५१११२
कैदारिक ३.	५१११२
कैदार्य ३.	५१११२
कैरव ३.	४२१४१
कैराती २.	३७११२
कैलास १.	३२१५
कैलासनाथ १.	१२१५६
कैवर्त १.	३५१३२
” १.	३५१९१
” १.	३९१४२
कैवर्तीमुस्तक १.	३३११९९
कैवल्य ३.	३६१२८
कैशिक ३.	५१११२
कैशिकी २.	२९११०१
कैश्य ३.	५१११२
कोक १.	२३१९
” १.	३३१८
कोकनद ३.	४२१४०
” ३.	४२१४२
कोकहित १.	२११५६
कोकाह १.	३७१९९
कोकिल १.	२३१२६
” १.	७५१२०



[ कोकिलाच ]

कोकिलाच १.	३३१०१
कोकुन्द १.	४३१७२
कोकुराह १.	३३१०५
कोटर १. ३.	३३११४
कोटि २.	४३१५२
" २.	५११२९
" २.	५११३१
" २.	६२१११
कोटिका २.	४११४९
कोटिवर्ष ३.	४३१९
कोटिश १.	३३१२९
कोटी २.	३३११७८
कोटीर १.	४३१३५
कोटुवी २.	४३११०
कोठ १.	४३१२४
कोण १.	२११३५
" १. २. ३.	२११२९
" १. २. ३.	२११३६
" १.	४३१५२
" १.	६१११६
कोणप्रतिग्राहिन् ३.	४३१४१
कोणेशिवाचक १.	४११४८
कोण्ट १.	२३१२२
कोतना २ ब.	२११९९
कोटङ्क ३.	३३११७२
" ३.	३३११७३
" ३.	७३११२
कोटङ्ग १.	३३१३४
कोटङ्ग १.	४३१३२
कोटव १.	३३१५४
कोप १.	३३११८३
कोपन १. २. ३.	५३१३२
कोमल १.	५३१५
कोयष्टि १.	२३१२०
कोरक १.	३३११९
कोरण ३.	२३१२
कोरदूषक १. ३.	३३१५४
कोराङ्गी २.	३३१८८
कोल १.	२११३६
" ३.	३३१८०

[ वैजयन्तीकोषः ]

कोल ३.	५११४८
" १.	५३१३४
" १.	५३१०५
" १. २. ३.	५३११४
" १. २. ३.	६१११६
" १.	६१११७
कोलक ३.	३३११०५
" १.	४१११८
कोलदल ३.	३३११०१
कोलम्बक १.	२१११२५
कोलवल्ली २.	३३१७८
कोला २.	३३१८१
" २.	६१११७
कोलाक १. २. ३.	२११२३
कोलाङ्गक १.	३३१३३
कोलाहल १.	२३१२७
कोलि २.	३३१८७
" १. २.	८११२६
कोलिण्ट १.	३३१६६
कोविद १.	३३१२३४
कोविदार १.	३३१४७
कोश १.	२३१५०
" १.	३३१३
" १.	३३१४४
" १.	३३१६८
" १. ३.	३३१७४
" १.	४३१६१
" १. ३.	४३१६३
" १. २. २.	६१११५
कोशफल ३.	२३११०५
" १.	३३११०५
कोशफला २.	३३११५८
" २.	३३११६१
" २.	३३११६१
कोशातकी २.	३३११५८
कोशिका २.	३३११७
" २.	४३१५७
कोष्टिका २.	३३११९६
कोष्ठ १. ३.	३३१२२
कोष्ठकारी २.	२३१४७

[ कौलटिनेय ]

कोष्ण ३.	५३१९
कोसल १ ब.	३११३७
" १ व.	३११४०
" ३.	३३११७४
" १.	५३११४
कोसलानन्दिना २.	४३१५
कोहल ३.	३३१२७
" १.	३३११८
कोहली २.	३३१४९
कोकुट ३.	३३११९२
" १. २. ३.	५३१२४
कोकुटिक १. २. ३.	३३११७
" १. २. ३.	८३१६
कौन्तेलेयक १.	३३११५९
कौट १.	३३१८०
कौटतत्त १.	३३१३४
कौटिक १.	३३१३७
कौटिल्य १.	३३११५९
कौतुक ३.	६३१८७
" ३.	७३११०
कौतूल १.	४३१३८
कौतूलहल ३.	३३११८७
कौटवीण १. २. ३.	३३११९
कौनृतिक १. २. ३.	५३१२२
कौनृतिक १. २. ३.	३३११४४
कौन्ती २.	३३११५
कौपीन ३.	४३१२९
" ३.	७३१३३
कौबेरी २.	२१११५
कौमारी २.	१११६५
कौमुद १.	२११८६
कौमुदी २.	२११२८
कौमोदकी २.	११११८
कौम्भ ३.	३३११३८
कौरकव्या २.	२३१२८
कौलकुल्य ३.	४३१११५
कौलटिनेय १.	४३१४४

[ कौलटेय ]

कौलटेय १.	४३१४४
" १.	४३१४४
कौलटेर १.	४३१४४
कौलीन ३.	७३१३३
कौलेयक १.	३३१७०
" १. २. २.	५३१६१
कौश ३.	४३१६
कौशिक ५.	४३११०
( कौशिक )	
" १.	७३११७
कौशिकी २.	८३११४
कौशेय १. २. ३.	४३११८
कौपीतकी २.	३३११५३
कौसल्यानन्दवर्धन १.	१११२१
कौसीय ३.	३३११७८
कौस्तुभ १.	११११७
कौहोल ३.	३३११८२
क्रकच १.	३३११५६
" १. ३.	३३१३६
क्रकचिक १.	३३११५३
क्रतु १.	५३११४
क्रतुभुज १.	१११३३
क्रत्वन्नि १.	११२३३
क्रथन ३.	४३१२७
क्रन्दन ३.	२३११०
" ३.	७३१३६
क्रन्दित ३.	३३११८७
क्रपुक १.	३३१६९
क्रम १.	३३११३३
" १.	३३११३३
" १.	४३१३१
क्रमण १.	३३११९
" ३.	४३१५६
क्रमुक १.	११२३२
" १.	३३१२१७
क्रमेलक १.	३३१६७
" १.	३३१४५
क्रय १.	३३१६९
क्रयविक्रयिक १.	३३१७२

[ शब्दानुक्रमणिका ]

क्रयिक १. २. ३.	३३१६८
क्रय १. २. ३.	३३१६८
क्रय ३.	४३११०६
क्रव्याद् १.	११२२२
" १.	११२४०
क्रव्याद् १.	११२४०
क्राकचिक १.	३३११५६
क्राथ १.	४३१२७
क्रान्ति २.	५३११६
क्रामणक १.	३३११३०
क्रायिक १. २. ३.	३३१८८
क्रासन १.	५३११
क्रिमि १.	४३११५३
क्रिमिज ३.	३३११७
क्रिमिपर्वत १.	३३११८
क्रिमिर १.	५३१२५
क्रिमिरा २.	३३१२६
क्रिया २.	३३११२३
" २.	५३११
" २.	६३११९
क्रियावत् १. २. ३.	५३१७४
क्रीडा २.	३३१८७
" २.	२३१८८
क्रुञ्च १.	२३३३४
क्रुध् २.	३३११८३
क्रुधा २.	३३११८३
क्रुष्ट ३.	२३१८७
क्रूर १.	३३१२१७
" ३.	४३११०८
" ३.	५३११५
" ३.	५३१३७
" १. २. ३.	५३१२४
" १. २. ३.	५३१६०
" १. २. ३.	६३१४३
क्रुरा २.	३३१८७
क्रुणी २.	३३१६९
क्रुतव्य १. २. ३.	३३१६८
क्रुतृ १. २. ३.	३३१६८
क्रुय १. २. ३.	३३१६८
क्रुड १.	२३१३५

[ क्राथन ]

क्रोड ३.	५३१४९
" १. २. ३.	६३१२३
क्रोडीकरण ३.	४३११७०
क्रोध १.	३३११८३
" १.	६३१७६
क्रोधन १.	३३१६९
" १. २. ३.	५३१३२
क्रोधविवशा २.	३३१४७
क्रोश १.	२३१३३
" १.	३३१६२
क्रोष्टु १.	३३१३२
क्रोष्टुककटि ३.	३३११६९
क्रोष्टुमेखला २.	३३११६७
क्रौञ्च १.	२३११०
" १.	२३३३४
क्रौञ्चारि १.	१११५७
कलम १.	५३१२८
कलमथ १.	५३१२८
कलान्ति २.	५३१२८
किलन्न १. २. ३.	५३११३३
किलष्ट १. २. ३.	५३११३३
कलीतक ३.	३३११०३
कलीतकी २.	३३१११०
कलीब १. २. ३.	३३११४७
" १.	४३१३३
कलेदन् १.	६३११६
कलेदु १.	२३१२६
कलेश १.	३३११९३
कलेशित १. २. ३.	
	५३११३३
कलोमन् ३.	४३१११२
कण १.	२३१११
कणक १.	४३१३५
कणन ३.	२३१११
कणित ३.	२३१११
कथन ३.	५३१३१
कथित २.	५३१११५
काण १.	२३१११
काथ १.	४३११४१
काथन ३.	३३१२१५
" ३.	५३१३१



[ काथसम्भव ]

काथसम्भव ३.	३१२४३
काथि १.	३११५२
कण १.	२११५४
॥ १.	३१६६२
॥ ३.	४११२७
॥ १.	५१२१७
॥ ३.	५११११
कणदा २.	२११५६
कणन ३.	३१७२१४
कणा २.	४१२१६
( कणा )	
कणांशु २.	२१२४
कणिका २.	२१२४
कणितु १.	३१७२१७
कत ३.	३१७२१७
कतज ३.	४११०५
कतमत्त १. २. ३.	३१६१३
कत्त १.	३१५८५
॥ १.	३१५११६
॥ १.	३१७२४
॥ १.	३१७१३७
कत्त १.	३१७१
कत्तकुण्ड १.	३१५६२
कत्त्रिय १.	२१५२
॥ १.	३१७१
कत्त्रियगोलक १.	३१५६२
कत्त्रिया २.	४११२३
कत्त्रियाणी २.	४११२३
कत्त्रियाणी २.	४११२२
कपण १. २. ३.	५११५५
कपा २.	२११५६
कम १. २. ३.	६१४३
कमा २.	१११४७
॥ २.	३१११
॥ २.	३१६१८४
कमित् १. २. ३.	५१४३३
कमिन् १. २. ३.	५१४३३
कय १.	३१७७५
॥ १.	४११९९
॥ १.	४११२४

वैजयन्तीकोषः

कय १.	५१२३२
॥ १.	५१११४
कयि १.	५१३९
करि २.	३१११
करिन् १.	२११८८
कव १.	४११२१
कवधु १.	७१११८
काणिन् १.	३१६२२
काणिनी २.	२१११
( कणिनी )	
काणी २.	२११५७
कान्त १. २. ३.	५१४२१५
कान्ति २.	३१११
काम १.	११२२१
॥ १. २. ३.	५१४८४
कार १.	३१८१२७
॥ १.	३१८१२९
॥ १.	५१३३०
॥ १.	५१४१३
कारक १.	७१११६
कारण ३.	२१४३३
कारपत्रक १.	३१३१५४
कारमृत्तिका २.	३१८२५
कालन २.	३१६१८७
किति २.	६१२१८
कितिसम्भवा २.	३१४४२
किपण १.	७११२१
किपणु १.	७११२१
किपा २.	५१२३३
किस १. २. ३.	५१४६७
॥ १. २. ३.	५१४९७
किप्पु १. २. ३.	५१४४०
किप्र १.	२१३१९
॥ ३.	४१११०८
॥ १. २. ३.	५१४१२४
किप्रा २.	५१४८४
कीब १. २. ३.	५१४३७
कीर ३.	३१८१४५
॥ ३.	६१३४
कीरक १.	४११२०
कीरज ३.	३१८१३९

[ कुर ]

कीरबीज १.	४१२४८
कीरविदारी २.	३१३१९६
कीरशर १.	३१६९८
॥ १.	३१८१४७
कीरशुक्ल १.	४१२४८
कीरशुक्ला २.	३१३१९६
कीराविधि १.	३११११
कीराश १.	२१३१७
कीराहार १. २. ३.	३१६१३४
कीरिका २.	३१७८०
कीरिंद १.	३११११
कीरोदसुता २.	१११३६
कुरण १. २. ३.	५१४४९
कुरणक ३.	३१९१३९
कुर १.	४१४१२१
कुर १.	४१४१२१
कुर १.	३१५२६
कुर १.	४११३९
॥ १. २. ३.	५१४१०९
॥ १. २. ३.	६१५१३
कुरक ३.	३१८१२२
॥ ३.	३१८१३४
कुरघण्टा २.	४१३१४५
कुरनासिक १. २. ३.	५१४११
कुरनीवृत् १ ब.	३११४१
कुरपचिन् १.	२१३४१
॥ १.	२१३४८
कुरहंस १.	२१३१९
कुराण्ड १.	४११४५
कुरोपाय १.	३१७१२
कुर २.	३१६१८२
कुरा २.	३१८४२
कुराभिजनन १.	३१८४२
कुरधित १. २. ३.	५१४३६
कुर १.	३१३६
॥ १.	३१८६३
कुरमा २.	३१८४५
कुर १.	३१३१०१
॥ १.	३१३१४१

[ कुर ]

कुर १.	३१९२६
कुरक १.	३१३१०१
कुरकर्मन् ३.	३१६४
कुरप्र १.	३१७१८२
कुरमदिन् १.	३१९२६
कुरसमुद्र ३.	४१३१०८
कुरिका २.	३१७१६३
कुरक १. २. ३.	७१४९
कुरताता १.	३१९१०८
॥ १.	४१४३२
कुर १.	४१४९९
कुर ३.	३१८१७
॥ ३.	४१४३५
॥ ३.	४१५२
॥ ३.	६१३६
कुर १.	३१६१६१
॥ १. २. ३.	७१५३२
कुराजीव १. २. ३.	३१८४
कुरिक १.	३१८११०
कुरिय १. २. ३.	७१५१०
कुरिया २.	३१८६०
कुर ३.	३१८१२३
कुर १.	५१२२
कुर १.	४१४५८
॥ ३.	५१२३३
॥ ३.	५१२४०
कुरणी २.	४११७७
कुरणीय १.	३१७१६६
कुर १.	६१५२२
कुरकर १. २. ३.	५१४५५
कुर ३.	५११२२
कुर २.	४१३७७
कुर १.	३१३१६२
कुरी २.	३१११
॥ २.	३१६१७
कुरी १.	६१११३
कुरीय ३.	३१२३१
कुरी ३.	३१८१३५
कुरी १. २. ३.	४१३१२
कुरी १. २. ३.	४१३१७

शब्दानुक्रमिका

कुरी ३.	४१३१२२
कुरीकार १.	३१७११७
कुरीत १. २. ३.	३१७१९७
कुरी २.	३१८२९
कुरी २.	३१३१
कुरीभृत् १.	३१२११
कुरी १.	३१४३१
कुरी १. २. ३.	६१५२१
॥ १. २. ३.	८१३११
कुरी १.	४११२२
॥ १.	४११२२
ख	
ख ३.	२१११
॥ ३.	८१३१९
॥ ३.	८१६४
खग १.	२१११४
॥ १.	२१३३
॥ १.	२१३३२
॥ १.	३१७१७८
॥ १.	६१११६
खगच्छाय ३.	८१९१९
खचित १. २. ३.	५१४७८
खजक १.	३१९३१
खजाका २.	४१३१६३
खज १.	३१३२०८
॥ १.	३१५६
॥ १. २. ३.	५१४१४
खज १.	२१३२३
खजरीट १.	२१३२३
खजरीटी २.	२१३३४
खट १.	५१३४
खटी २.	३१३१६
खट्टास १.	३१४३५
खट्टासिका २.	३१४३५
खट्टा १.	४१३१६४
खट्टाङ्ग १.	१११५९
खट्टाङ्गिन् १.	१११४६
खट्टिका २.	४१३४२
खट्टा १.	३१४७
॥ १.	३१७१५८

[ खर ]

खड्गनामान् १.	४११५१
खड्गपत्र १.	३१४२२६
खड्गपुच्छ १.	४११५१
खड्गाङ्ग १.	११२३१
खड्गाङ्गु ३.	३१७१६१
खड्गिन् १.	३१४३७
खण्ड ३.	३१८११९
॥ १. ३.	३१८१३४
॥ १. ३.	४१४५६
॥ १. २. ३.	५१४८६
॥ १. २. ३.	६१५२५
खण्डना २.	६१५३३
खण्डपरशु १.	१११४३
खण्डपर्कट ३.	४१३१०६
खण्डल १. ३.	४१३१३०
खण्डशर्करा २.	३१८१३३
खण्डिक १.	३१८४३
खण्डिका २.	३१६३२
खण्डित १. २. ३.	२१४२०
खण्डिता २.	२११६०
खण्डिन् १.	३१८३८
खण्डीर १.	३१८३६
खण्डिलक १.	११२१४
खदरी २.	३१३१४८
( खदरी )	
खदिका २.	४१३६७
खदिर १.	११२६
॥ १.	३१३६३
खद्योत १.	२१३४७
खनक १.	३१५४०
॥ १.	४१३३१
॥ १. २. ३.	७१५३३
खनि २.	३१२१८
खनित्र ३.	३१८२८
खनित्री २.	३१६१२३
खपुट १. २. ३.	३१६१३२
खपुर १.	३१३११
॥ १.	३१३२२२
॥ १.	७११२२
खर १.	३१३३९



## [ खर ]

खर ३.	३१३२१८
" १.	३१३२२८
" १.	३१४६५
" १.	५३३३
" १.	५३३५
" १.	५३३७
" १.	५३३८
" ३.	८६६६
खरक १.	२१४१०
खरकुटी २.	४३३२५
खरकोमल १.	२११८४
खरकाण १.	२३३३५
खरच्छुद १.	३१४२२९
खरट १.	५३३४
खरटी २.	३१३२६
खरणस् १. २. ३.	५३३१२
खरणस १. २. ३.	५३३१२
खरमञ्जरी २.	३३३११५
खरमुख ३.	३१११२५
खरम्भर १ व.	३१३२३
खरागरी २.	३३३८६
( खरा, गरी )	
खरारि १.	११३२१
खराशवा २.	३१८१०२
खर १. २. ३.	३६३१२
" १.	६१११८
खरञ्जक १. ३.	३१५१०
खरुहा २.	३३३१३२
खरुल १.	४१४७६
खर्जनी २.	३६३१०९
खर्जू २.	४१४१२४
खर्जूर ३.	३३३१३
" ३.	३३३२४
" १.	३३३२२२
" १.	४१३३३
खर्जूरिका २.	३३३२२२
खर्व ३.	५३३२८
" १. २. ३.	५३३८१

## वैजयन्तीकोषः

खल १.	३१८३१
" १. २. ३.	३१८१४२
" १.	५३३२५
खलकुल ३.	३१८४७
खलति १. २. ३.	४३३१४७
खलधान ३.	३१८३१
खलपू १. २. ३.	३१८६७
खला २.	६१५२५
खलि २.	३१९२७
" २.	४३३८१
खलिनी २.	५३३१२
खलीन १. ३.	३१७११३
खलु ४.	८१७२०
खलुकी २.	३३३१८८
खलुष १.	५३३३४
खलुरिका २.	३१७१९४
खलेपाली २.	३१८३१
खल्या २.	५३३१२
खल्व १.	३१८४६
" ३.	४३३६०
खलवाट १. २. ३.	४३३१४७
खलुक १.	५३३५३
खष १.	३१५४९
" १.	३१५५६
" १.	५३३५२
खस १.	४३३१२३
खसुम ३.	३१७४७
खाङ्क १.	२१११४
खाटि १.	३१७२१६
खाङ्गिक १. २. ३.	४३३१४६
खाण्डवप्रस्थ १. ३.	३१७१४४
खातक ३.	४३३१८
खातक ३.	४३३१८
खादन ३.	४३३१०४
" १.	४३३१८८
खादित १. २. ३.	५३३१०७
खाद्य ३.	४३३११

## [ खोड ]

खाध्वनीन १.	२१११४
खारी २.	५३३५७
" २.	५३३५७
" २.	५३३६३
खारीक १. २. ३.	३१८२२
खाषेय १.	१३३१
खिल ३.	३६३३३
" १. २. ३.	३१८१८
खिलखिल १.	२३३४०
खुडार १.	३१८४४
खुडुक १.	३३३२२१
( खुडुक )	
खुर १.	३१४७४
" १.	३१८१०१
खुरणस् १. २. ३.	५३३११
खुरणस १. २. ३.	५३३११
खुरुराह १.	३१७१०५
खेचर १.	१३३३
" १.	७३३२२
खेट १. ३.	४३३११
" १. २. ३.	५३३७५
" १. २. ३.	६३३२४
खेटक ३.	३१७१९७
" ३.	४३३१३
" १.	४३३८०
" १.	४३३१३१
खेटन ३.	३१९४०
खेटिन् १. २. ३.	४३३१४६
खेद १.	५३३२२
खेय ३.	४३३१३
खेल १.	३३३२१५
खेला २.	३१९८७
खेलि १.	३१८४४
खेलाह १.	३१७१०३
खोङ्गाह १.	३१७१९
खोड १.	२१३३५
" १. २. ३.	५३३१४

## [ खोरण ]

खोरण १.	५३३३
खोलक १.	७३३२३
ख्यातगर्हण १. २. ३.	३६३११
ख्याति २.	२३३३६
" २.	३६३१६३
ग	
गगन ३.	२११११
गङ्गा २.	४३३२४
गङ्गाधर १.	१११४२
गङ्गेष्टि २.	४३३५७
गच्छ १.	५३३३७
गज १.	३१७६०
गजचिह्निका ३३३१७२	
गजच्छाया २.	२१३३१
गजजीवन १.	३१७८८
गजना २.	५३३१९
गजमण्डन १.	३१७८६
गजवीथिका २.	२११४८
गजानन १.	१११५३
गजाराति १.	३३३३२
गज १. २. ३.	६३३२६
गज्जन ३.	२३३२
गज्जाः २.	३३३१०
गड्ड १.	४३३३३
" १. २. ३.	६३३२९
गड्डल १. २. ३.	५३३११
गड्डची २.	३१८४५
गड्डोल १.	४३३१०१
गण १.	३१७५८
" १.	५३३११
" १.	६३३१९
" १	८३३१३
गणक १.	३१७२५
गणतिथ १. २. ३.	५३३१९
गणन ३.	५३३३६
गणपतिप्रिय १.	१११५१
गणपूरण १. २. ३.	५३३१९
गणरात्र ३.	२११५९

## शब्दानुक्रमणिका

गणाधिप १.	१११५४
गणि १.	३६३८२
गणिका २.	३१७३३
" २.	४३३२४
" २.	७३३७
गणिकागण १.	५३३१८
गणिकारी २.	३३३८६
गणोत्साह १.	३३३८
गण्ड १.	३१७७५
" १.	४३३९०
" १.	४३३१२३
" १.	५३३३७
" १.	६३३२०
गण्डक १.	३३३३७
" १.	३१७११६
" १.	४३३१४५
गण्डकली २.	३३३१४८
गण्डफली २.	८३३१५
गण्डमाल १	४३३१२९
गण्डमालहन् १.	३३३७७
गण्डरी २.	३३३१९८
गण्डशैल १.	३३३१९
गण्डरी २.	३१८७८
गण्डुक १.	४३३१६२
गण्डूपद १.	४३३१५९
गण्डूष १.	४३३७८
" १. ३.	७३३३४
गण्डूषक १.	३३३७०
गण्डोर १.	४३३१०१
गण्डोली २.	२३३४६
गति २.	३६३२३६
" २.	४३३१३३
" २.	५३३१०
" २.	६३३११
" २.	८३३१५
गद १. २.	६३३२९
गदाग्रज १.	११३२५
गदापाणि १.	११३३३
गद्वद १. २. ३.	२३३१५
गद्वदस्वर १.	३३३८
गद्यपद्यमयी २.	२३३४२

## [ गमन ]

गन्त्री २.	३१७१२७
" २.	४३३१०८
गन्ध १.	५३३१२
" १.	५३३५४
" १.	६३३२२
गन्धक १.	३३३१४
( गन्धिक )	
गन्धकुटी २.	३१८१९८
गन्धचेलिका २.	३३३३६
गन्धन ३.	७३३१३
गन्धनाकुला २.	३१८१७
गन्धमुण्डक १.	३३३५९
गन्धमृग १.	३३३३५
गन्धरस १.	३३३१५
गन्धर्व १.	१३३३८
" १.	१३३२
" १.	३३३३२
" १.	७३३२४
गन्धर्वगण १.	१३३११
गन्धर्वहस्त १.	३३३६५
गन्धर्वह १.	१३३४७
" १. २.	८३३७
गन्धवाह १.	१३३४७
गन्धसार १.	३१८११३
गन्धसारण १.	५३३४९
गन्धसोम ३.	४३३४१
गन्धाखु २.	४३३३२
गन्धाश्मन् १.	३३३१४
गन्धाहिक १.	४३३१८
गन्धिक १.	५३३५१
" १.	५३३५४
गन्धिघना २. १. ३.	२१३३९
गन्धिनी २.	३१८१९८
गभस्ति १.	२१३३३
" १.	२१३३६
" १. २.	८३३२५
गभीरक १. २. ३.	४३३१९
गम १.	५३३१०
गमन ३.	५३३१९
" ३	५३३१०



[ गमि ]

गमि १.	३१६२०१
( निमि १ )	
गम्भारी २.	३१३१५८
गम्भीर १. २. ३.	३१२२०
" ३	८३११७
गर १.	३११२२
" १.	३११८३
गरल १.	३१३५०
" १.	३११२२
गरवायु १.	१२१५३
गरह ३.	३१६१७
गरी २.	३१३८६
गरुड १.	१११३७
गरुडध्वज १.	११११४
गरुडा २.	३१११०१
गरुत् १.	२१३१८
गरुत्मत् १.	१११३७
" १.	७११२४
गरुल १.	३१२४७
गरोलिका २.	३१२४८
गर्गर १.	३१५३४
गर्गरी २.	३१५३२
" २.	३१३२७
गर्ज १.	२१४३
" १.	३१७६०
गर्जन ३.	२१४३
" ३.	३१३२०६
गर्जना २.	२१४३
गर्जा २.	२१४३
गर्जित २.	२१२५
" १.	७१५३४
गर्त २.	३१२३
गर्तकुङ्कुट १.	२१३२१
गर्तिका २.	३१३२२
गर्वनक १.	३१४६६
गर्वभ १.	३१४६५
गर्वभाण्ड १.	३१३५९
गर्वभाह्वय ३.	३१२४१
गर्वन १. २. ३.	५१४३५
गर्वना २.	३१६१८०
गर्म १.	३१८११४१

वैजयन्तीकोषः

गर्भ १	३१४१४०
" १.	३११२१
गर्भक ३.	२११५८
( गर्भित )	
" ३.	३१३१५५
गर्भपाकिन्	३१८३४
गर्भसम्पुट १.	३१४११३
गर्भागार १.	३१३५१
गर्भाजि १.	३१६१५७
गर्भाधान ३.	३१६२
गर्भाशय १.	३१४१८
गर्भणी २.	३१४१६
गर्भोपघातिनी २.	३१४४७
गर्मुट १.	३१५३०
गर्मुटिका २.	३१८५९
गर्मुत् २.	३१८५९
" २.	६१११८
गर्व १.	३१६१६९
गर्वहारिका २.	२१४२८
गर्वि २.	३१६१६९
गर्वित १. २. ३.	५१४२०
गर्वण ३.	२१४३३
गर्वणा २.	३१६१९३
गर्हा २.	३१६१९३
गर्ह्य १. २. ३.	५१४७५
गर्ह्यवादिन् १. २. ३.	
" ५१४७७	
गल १. २. ३.	३१४८३
गलकम्बल १.	३१४६०
गलगण्ड १.	३१४१२९
गलन्ती २.	३१३५७
गलस्तनी २.	३१४६२
गलाङ्कुर १.	३१४१२९
गलित १. २. ३.	
" ५१४१०२	
गलेवाल १.	३११४२
गल्या २.	५१११४
गल्ल १.	३१४९०
गल्वर्त १.	३१५५३
गवय १.	३१४३३
गवल १.	३१४११

[ गान्धर्व ]

गवल ३.	३१८११८
गवसी २.	३१३१२३
गवाक्ष १.	३१३५४
गवाक्षक ३.	३१३५३
गवाक्षी २.	३१३१३४
" २.	३१३१७३
" २.	३१३१८३
गवादिनी २.	३१२१४९
गवीधुका २.	३१८५९
गवेधु २.	३१८६१
गवेधुका २.	३१८६१
गवेधणा २.	३१६१२१
गवेषित १. २. ३.	५१४९८
गव्य ३.	३१८१४५
गव्या २.	३१६२
" २.	५१११३
" २. ३.	६१५२६
गव्यूत ३.	३१६२
गव्यूति २.	३१६२
गहन ३.	३१३१
" ३.	८३११७
गह्वर ३.	७३१५५
" ३.	८३११७
गाङ्गी २.	२११७६
गाङ्गेय १.	१११५६
" १. ३.	७१५३५
गाङ्गेस्की २.	३१८६१
गाङ्ग १. २. ३.	५१४१३२
गाढास्य ३.	३१८१४१
गाणिक्य ३.	५११८
गाण्डिव १. ३.	३१७१७४
" १. ३.	७१५३५
गाण्डिव १.	७१५३५
गातु १.	२१४२
गात्र ३.	३१७७५
" ३.	३१४५२
" ३.	३१४५५
गात्रसङ्कोचिन् १.	३१४७२
गान ३.	२१४२
" ३.	३१९१०९
गान्धर्व १.	१३२२

धर्व ]

गान्धर्व ३.	३१६२९
" ३.	३१९११०
गान्धार १ ब.	३११२४
" १.	३१९१३२
गायत्र १.	३१६८
" ३.	३१६३४
गायत्री २.	३१६३४
गारुड ३.	३१२१९
गारुत्मत् ३.	३१२३८
गार्भिण ३.	३१६३
" ३.	५११८
गार्हपत्य १.	११२२४
गालव १.	३१३१९
" १.	३१३५२
गालि २.	२१४३३
गिरि २.	१११९
गिरि १.	३१२११
" ३.	३१८१६
" १.	३१३१६१
गिरिकर्णिका २.	३१११
गिरिकर्णी २.	३१३१३४
गिरिका २.	३१३३२
गिरिकोलि २.	३१३७८
गिरिजा २.	३१२२२
गिरिप्रिया २.	३१३१०५
गिरिमल्लिका २.	३१३७३
गिरिलक्ष्मण १.	३१३२८
गिरिश १.	११३३९
गिरिसार १.	३१२३४
गिरिस्तनी २.	३१३३
गिरीयक १.	३१३१६२
गिरीश १.	११३३९
गिल १.	३१५१५
गीत ३.	३१९१०९
गीतिशासन ३.	३१६२९
गीत्युपक्रम १.	३१९१४०
गीर्ण १. २. ३.	५१४१०६
गीर्वाण १.	१११२
गीर्षपति १.	२१३३३
गुम्गुल १.	३१३५३
गुच १.	२१८६३

शब्दानुक्रमिका

गुच्छ १.	३१३२०
" १.	३१३१४०
गुच्छा २.	३१८३५
" २.	३१८६०
गुच्छार्ध १.	३१३१४०
गुञ्ज १.	३१३२०६
गुञ्जन ३.	२१४२
गुञ्जा २.	३१३१७९
" २.	५११४४
" २.	६१२११
गुड १.	३१३२७
" १.	३१३१०१
" १.	३१३१६१
" १.	३१४६२
" १.	३१४१३३
" १. २.	६१५२७
" ३. २.	८१९३२
गुडक १.	३१३४७
गुडजूष १.	३१३९६
गुडपुष्प १.	३१३४४
गुडफल १.	३१३४५
गुडा २.	६१५२७
" २.	८१९३३
गुडाका २.	३१६१९७
गुड्वीर २.	३१३१३१
गुडेरक १.	३१३१०१
गुण १.	३१६१६२
" १.	३१९३०
" १. २. ३.	३१३१३
" १.	५१३११
" १.	६११२०
गुणग्राम १.	५११६७
गुणलयनी २.	३१३१२५
गुणवृक्ष १.	८१६२०
गुणवृक्षक १.	३१२१७
गुणसामान्य ३.	३१६१६२
गुणावली २.	३१३३६
( गुणापणी )	
गुणित १. २. ३.	२१४२२
गुणोत्कर्ष १.	५१२३

[ गुहाशय ]

गुण्डा २.	३१३१५५
गुण्डित १. २. ३.	५१४११३
गुद ३.	३१४६०
गुदग्रह १.	३१४१३२
गुदानिल १.	३१६२०५
गुध १.	३१८१३३
गुन्दिल १.	२१४१०
गुन्द्र १.	३१३२२८
गुन्द्रा २.	३१३६६
" २.	३१३१९९
" २.	३१८६०
गुप्त १. २. ३.	५१४१००
गुप्तराग १.	३१३२२५
गुप्ति २.	६१२११
गुम्फ १.	५१३३९
गुरण ३.	५१३३४
गुरु १.	११३३४
" ३.	३१२२८
" १.	३१६२२
" १.	३१८५३
" ३.	३१८१३९
" १. २. ३.	६१५२७
गुरुपत्र ३.	३१३३२
गुरुस्वभृत् १. २. ३.	
" ५१४२५	
गुलिन् १.	५१३२५
गुलुल्ल १.	३१३२०
गुल्फ १.	३१४५७
गुल्फशीर्ष १.	३१४५७
गुल्म १.	३१३७
" १.	५१३५८
" १.	३१४११३
" १.	५१४१३०
" १.	६१११९
गुल्मिनी २.	३१३७
गुवाक १.	३१३२१७
गुह १.	१११५५
गुहा २.	३१२६
" २.	३१३३६
गुहाख्य १.	३१३८०
गुहाशय १.	३११५०



गुहाशय ]

गुहाशय १.	८११२१
गुह्य ३.	४१४६२
„ १. २. ३.	५१४१२०
„ १. २. ३.	५१४१२०
गुह्यक १.	११३३
„ १.	८११५६
गुह्यकेश्वर १.	११३५७
गुह्यधारा २.	४१४६३
गुह्यबन्ध १.	४१३१३१
गुह्यमध्य १.	४१४६२
गू १. २.	८१५३८
गूढकोश १.	११२६०
गूढपद ३.	३१६१७३
गूढपाद १.	४११६
गूढपुरुष १.	३१७२६
गूढवृत्त १.	३१३५५
गूध १.	४१४११९
गून १. २. ३.	५१४११३
गुञ्जन १.	३१३५७
„ १.	३१३२०४
„ १.	३१३२०६
„ १.	३१३२०७
गुण्डिव २.	३१३३९
गुप्ति १. २. ३.	५१४३५
गुध्र १.	२१३३०
गुष्टि २.	३१३५८
„ २.	३१४४८
गुह ३.	४१३१९
„ १ व.	४१४३५
गुहकाण्ड १.	३१८७८
गुहकारिका २.	२१३४६
गुहगोधिका २.	४११३०
गुहगौलिका २.	४११३०
गुहजालक १. २. ३.	३१९८६
गुहद्रुम १.	३१३५४
गुहपति १.	११२२४
„ १.	३१७२७
गुहमणि १. २.	४१३१६१
गुहमृग १.	३१४६९
गुहमेधिन् १.	३१६४०

वैजयन्तीकोषः

गुहयालु १. २. ३.	५१४३८
गुहश्रेणी २.	४१३४६
गुहस्थ १.	३१६४०
गुहस्थूण ३.	४१३३९
„ ३.	८१९२२
गुहान्तर ३.	३११५२
गुहावग्रहणी २.	४१३४४
गुहिणी २.	२१३४६
„ २.	४१४२१
„ २.	७१२१७
गुहिन १.	३१६४०
गुहीति २.	३१६१६५
गुहडिका २.	४११३६
गुहेश्वर १.	५१४७०
गुहोच्छिष्ट १.	३१३२०४
गुहोदक ३.	४१३८१
गुह्य १.	२१३५
„ १. २. ३.	६१४५
गुह्यक १.	५१४२८
गुह्य ३.	११९१०९
गुह १. ३.	४१३१९
गुहेनदिन् १. २. ३.	५१४७०
गैरिक ३.	३१२११
„ ३.	३१२२०
गैरुष १.	३१५३३
गैरेय ३.	३१२१६
गैरेयक ३.	३१३२१९
गौ १.	१११२
„ २.	१११९
„ २.	३१३४१
„ १.	३१४५२
„ २.	३१४५२
„ १. २.	८१५३७
गोकण्टक १.	३१३१४१
गोकरीषेन्धन ३.	३१६९७
गोकर्ण १.	३१४१५
„ १.	५११८०
गोकर्णी २.	३१३११४
गोकुल ३.	३१४६१
गोकृच्छ्र ३.	३१६१३९

[ गोनस

गोक्षुर १.	३१३१४१
गोगण १.	११११३
गोग्रन्थि १.	३१४६०
गोगन्धन १.	११२५४
गोचर १.	५१२२
गोजिह्वा २.	३१३११६
„ २.	३१८६०
गोडुम्बा १.	३१३१७३
गोणिका २.	५११५८
गोणी २.	४१३१३०
„ २.	५११५६
„ २.	५११६३
गोतम ३.	३१७१७४
गोत्र १.	३१२११
„ ३. २.	६१५२८
गोत्रभिद् १.	११२३
गोत्रा २.	५१११३
„ २.	६१५२८
गोदर्भ ३.	३१३२०१
( गोनर्द )	
गोदा २.	४१२२८
गोदारण ३.	३१८२७
„ ३.	३१८२९
गोदावरी २.	४१२२८
गोदुह १.	११३१२
„ १.	३१९२८
गोध १.	३१५१
„ २. ३.	३१७१५५
गोधन ३.	३१४६१
गोधा १.	३१५१
„ २.	३१७१५५
„ २.	४११२६
„ २.	४११२६
गोधामाली २.	४१११८४
गोधासन ३.	३१६२२०
गोधि २.	४१४९६
गोधूम १.	३१८५३
गोधूमचूर्ण ३.	४१३६८
गोनर्द १.	२१३३३
गोनर्दीय १.	३१६१५७
गोनस १.	४१११३
„ १.	४१११४

गोनास ]

गोनास १.	४१११४
गोतिषदन ३.	३१६२२५
गोप १.	३१७२२
„ १.	३१९२८
गोपघोष्ठा २.	३१३८८
गोपति १.	३१४५३
„ १.	७११२४
गोपभद्रा २.	३१३५७
गोपा २.	३१३१३९
गोपानसी २.	४१३३९
गोपायित १. २. ३.	५१११००
गोपाल १.	३१९२८
गोपाली २.	३१६५६
गोपुच्छ १.	४१३१४१
गोपुर ३.	३१३२०१
„ ३.	४१३१५
गोप्य १.	३१९३
„ १. २. ३.	६१५२९
गोमत् १. २. ३.	३१४५९
गोमत ३.	३१३६२
गोमतल्लिका २.	३१४४६
गोमती २.	४१२२९
गोमय १. ३.	३१४६०
गोमायु १.	३१४३८
गोमिन् १. २. ३.	३१४५९
गोमुख १.	४११५३
„ १. ३.	७१५३६
गोरक्षजम्बू २.	८१२११
गोरक्षतण्डुल १.	३१८६२
गोरस १.	३१८१३९
„ १.	३१८१४९
गोरुत ३.	३११६२
गोर्गल १.	३१३२३३
( होर्गल )	
गोर्द ३.	४१११२
गोल १.	३१२१५
„ ३.	४१३८२
गोलक १.	३१५६०
„ १.	३१५६२
„ १.	३१५६३

शब्दानुक्रमणिका

„ १.	३१५६३
„ १.	७१२२३
गोलका २.	७१२१७
गोलत्तिका २.	२१३२४
गोलपुस १.	३१४३२
गोला २.	३१२१७
गोलाङ्गूल १.	३१४४०
गोलोक १.	३१६२०७
गोलोमी २.	३१३१९७
„ २.	३१३२३३
गोवन्दिनी २.	३१३६६
गोवादिन् १.	३१४३३
गोविन्द १.	११११५
„ १. २. ३.	२१४५९
गोवीथी २.	२११४७
गोवृष १.	३१४५४
गोव्रत ३.	३१६१४८
गोशकृत् ३.	३१४६०
गोशाल १. २. ३.	८१९३४
गोशाला २.	४१३२२
गोशीर्ष ३.	३१८११३
गोष्ठ १.	३१९३१
गोष्ठवातिङ्गन १.	३१३१०३
गोष्ठश्च १. २. ३.	५१४२६
गोष्ठी २.	३१८१३
गोष्पद १. २. ३.	७१५३७
गोसङ्ख्य १.	३१९२८
गोसर्ग १.	२११६८
गोसव्य ३.	४१३११३
गोस्तन १.	४१३१४१
गोस्तनी २.	३१३१८१
गोस्वामिन् १. २. ३.	३१४५९
„ ३.	३१९१०५
गोहरीतकी २.	३१३३०
गौतम १.	१११३५
„ १.	३१६१५६
„ ३.	४११०८
गौतमी २.	१११५९
गौधार १.	४११२६
गौधेय १.	४११२७

[ ग्रहराज

गौधेर १.	४११२६
गौर १.	३१३९४
„ ३.	३१३२३२
„ ३.	५१३१०
„ ३.	५१३२०
„ १. २. ३.	६१४५५
गौरव ३.	३१८११६
„ ३.	५१२२०
गौरशाक १.	३१३४४
गौरसर्ज १.	३१३३९
गौरसर्षप १.	५११४३
गौरार्द्र १.	४११२३
गौरावस्कन्दिन् १.	११२१७
गौरी २.	११२४६
„ २.	३१३१२१
„ २.	३१३२११
„ २.	८१६३
गौरेय १.	१११५६
गौष्ठीन ३.	३१९३१
ग्मा २.	३११३
ग्रथित १. २. ३.	५१४११०
ग्रन्थ १.	६११२१
ग्रन्थन ३.	५१२३९
ग्रन्थि १.	३१३११
„ १.	३१९३१
ग्रन्थिक ३.	३१८९१
ग्रन्थिनी २.	३१८७७
ग्रन्थिपर्ण ३.	३१८९२
ग्रन्थिल १.	३१३३८
ग्रस्त १. २. ३.	५१४१०८
ग्रह १.	११२३८
„ १.	२११३०
„ १.	२११५०
„ १.	३१६६३
„ १.	३१९५७
„ १.	६११२०
ग्रहकल्लोल १.	२१३३६
ग्रहण ३.	७१३१४
ग्रहणी २.	४१४१२९
ग्रहभोजन १.	३१७९१
ग्रहराज १.	८११२१



## [ ग्रहि ]

ग्रहि १.	८१९१०
ग्रहीतृ १. २. ३.	३८८९
" १. २. ३.	५४३८
ग्राम १.	३९११०
" १.	४३२
ग्रामणी १. २. ३.	५४६६
" १. २. ३.	७५३६
ग्रामणीकुल ३.	३१२०
ग्रामतत्त्व १.	३९३४
ग्रामता २.	५१९
ग्रामधान्य ३.	४३१३
ग्रामप्रेष्य १.	३९५६२
ग्रामसीमा २.	४३११
ग्रामसूकर १.	३४४७१
ग्रामार्थ १.	४३५
ग्रामीण १. २. ३.	४३१३
ग्रामीणा २.	३३३१०
ग्रामेयक १. २. ३.	४३१२
ग्राम्य १.	२३३११
" १. २. ३.	४३१३
ग्राम्यधर्म १.	४३१७०
ग्राम्या २.	३३१६०
ग्रावन् १.	३६१०२
" १.	६११९
" १.	८६४
ग्रास १.	३६१५
" १.	४३१०१
ग्रासग्रह ३.	३६५०
ग्राह १.	४१५२
" १.	६११९
ग्राहिन् १.	३३३२
ग्रीषा २.	४३८३
ग्रीष्म १.	२११८८
ग्रीष्ममुन्दर १.	३३१५७
ग्रीवेयक ३.	४३१३७
ग्रीष्मिका २.	३३१८६
ग्लवथु १.	४३१२२
ग्लस्त १. २. ३.	५४१०८
ग्लह १.	३९६०
ग्लान १. २. ३.	४३१३५
ग्लानि २.	४३१३२

## वैजयन्तीकोषः

ग्लास्नु १. २. ३.	४३१३५
ग्लौ १.	२१२५
घ	
घङ्कोर १.	३६१६९
घट १.	४३१५८
" १.	५१५५
घटना २.	५२३३
घटा २.	३७७०
" २.	३८१४
" २.	५२३३
घटिका १. ३.	५१६०
घटिका २.	२१५४
" २.	७२८
घटिकालवण ३.	३८१२४
घटी २.	४३१५९
घटीयन्त्र ३.	४३२१
घट्ट १.	४३२०
घण्टा २.	३३१५८
" २.	४३८०
घण्टाताड १.	४३३०
घण्टापथ १.	४३१६
घण्टारवा २.	३३१९८
घण्टाला २.	४३१५८
घण्टास्वन ३.	३३२९
घन १.	२२१
" ३.	३२३२
" १.	३६१५
" १.	३६१०२
" १.	३७१७१
" ३.	३९११५
" ३.	३९११६
" ३.	३९१२३
" ३.	४३८६
" १.	५३५५
" १. २. ३.	५४१२६
" १. २. ३.	६५३०
घनगोलक १. ३.	३३२२
घनधातु १.	४३१०४
घनपद ३.	४३२
घनरस १.	४३३
घनवासक १.	३३१६९

## [ घृणा ]

घनश्रेणी २.	३१११
घनसागर १.	३८१०५
घनाघन १.	८१२२
घनागम १.	२११८९
घनात्यय १.	२११८९
घनाग्ला २.	४३१७८
घनोपल १.	२२३७
घरिन् १.	३८३५
घर्घर १.	३५१८
" १.	३५३०
" ३.	३६१९४
" १. ३.	४३१५०
घर्घरक १.	२३२२
घर्घरिका २.	३९१३१
" २.	८२५
घर्वरी २.	३९१३१
घर्म १.	३९८१
" १.	८१५७
घस्मर १. २. ३.	५४५०
घस्र १.	२१५५
घाटा २.	४३८५
घाण्टिक १.	३५३७
" १.	३७३०
घात १.	३७२११
घातुक १. २. ३.	५४४२
घारि २.	२१५७
घास १.	३४७४
घासहार १.	३५६३
घासि १.	१२१४
घासिक १.	३७११७
घर्मिण १.	३५२१
घुटिक १.	३७८६
" १.	४३५७
घुण १.	४१३६
" १.	५३४९
घुणाभीष्टा २.	३३१९८
घुलुञ्छ १.	३८५९
घुसृण ३.	३८११६
घूर्णन ३.	५२१०
घूर्णि २.	५२१०
घृणा २.	३६१९२

## [ घृणा ]

घृणा २.	३६१९
( मृणा )	
" २.	६२१२
घृणि १.	२१५५
" १.	६१२२
" १.	८१२५
त ३.	३८१३८
" ३.	६३६
" १.	८१२८
घृतपूर १.	४३७४
घृतभुज् १. २. ३.	३६१३५
घृतलेखनी २.	३६१०१
घृताञ्जन ३.	३६१२
घृताशिन १. २. ३.	३६१३५
घृतिन् १.	३६१३५
( वृतिन् )	
घृषि १.	३९१९
घृष्टि १.	२११६
" १.	३४६
" १.	८१२५
घृष्टव १.	३९१९
घोटक १.	३७९१
घोण १.	३४५४
घोणस १.	४११४
घोणा २.	२३४६
" २.	४३१९
" २.	६२१२
घोणिन् १.	३४५
घोण्टा २.	३३२१७
घोर १.	३७३८
" ३.	३८११७
" १. २. ३.	३९७९
घोरवाशिन ३.	२४४
घोरित ३.	२४५
घोल १.	३५२१
" ३.	३८१४८
" १.	३८१४९
" ३.	३८१५०
" १.	४३५९

## शब्दानुक्रमिका

घोष १.	२४२
" १.	३३१५८
" १.	३९३२
घोषवती २.	३९११६
घोषित १. २. ३.	२४२२
घोष १.	४१२५
घ्राण ३.	४४९१
" १. २. ३.	६५२९
च	
च ४.	८७४
" ४.	८७११
चकित १. २. ३.	५४१८
चकोर १.	२३३५
चक्र ३.	३३२१८
चक्रण ३.	३३२१८
चक्र १.	२३१९
" ३.	३७५५
" ३.	३७१३४
" ३.	४२३०
" ३.	४३१२५
" ३.	६३७
चक्रकारक ३.	३८९९
चक्रचर १.	३६४२
चक्रधारण ३.	३७१३१
चक्रपक्ष १.	२३५
चक्रपाणि १.	१११०
चक्रपाद १.	८१२२
चक्रप्रान्त १.	३७१३५
चक्रभृत् १.	८१५०
चक्रमर्दन १.	३३१५८
चक्रलक्षणा २.	३३१३२
चक्रवर्तिन् १.	३७२
चक्रवर्तिनी २.	३८८९
चक्रवाक १.	२३९
चक्रवाल ३.	२११६
" ३.	३२३
" ३.	५१३
चक्रवृत्ति २.	४८६
चक्रसंज्ञ ३.	३२१५
चक्राङ्का २.	३३१४३
चक्राङ्क २.	३८८६

## [ चण्डातक ]

चक्रावर्त १.	५२१०
चक्राह्वयाह्वय १.	२३९
चक्रिन् १.	१११२
" १.	३६४०
" १.	४११६
" १.	६१२३
चक्रोवत् १.	३४६५
चक्रोद्गी २.	३३२१०
चक्रस् १.	२१३३
चक्रुष्य १.	३८३७
" १.	४३७०
" १. २. ३.	५४७०
" १. २. ३.	५४११७
चक्रुष्या २.	३२४४
" २.	३३१२४
चक्रुस् ३.	४३९४
चक्रर १.	७१२५
चक्रटक १.	३३१५२
चक्ररीक १.	२३४३
चक्रल १.	२३२४
" १. २. ३.	५४७८
चक्रला २.	२२३
चक्रु २.	२३५०
" १.	३३६५
चटक १.	२३१४
( पण्डक )	
" १.	२३१८
चटिका २.	३८९१
चटिकाशिर १	३८९१
चट्ट १.	६१२३
चट्टल १. २. ३.	५४७९
चढक १.	२२३
चण १.	३८४३
चण्ड १.	५३९
" १. २. ३.	५४३२
चण्डकोलाहला २.	३९१२६
चण्डमुण्डा २.	१११६३
चण्डांशु १.	२११५
चण्डात १.	३३१९२
चण्डातक ३.	४३१२२



चण्डाल ]	वैजयन्तीकोषः	[ चरणाग्रक	चरम ]	शब्दानुक्रमणिका	[ चिञ्चा	
चण्डाल १.	३१५२२	चतुष्पञ्च १. २. ३.	चन्द्रा २ व.	२११२०	चन्द्रा २.	२११२८
„ १.	३१५८३	५११२६	चन्द्रातप १.	४३१२३	„ २.	२११७२
„ १.	३१५१०७	चतुष्पथ १.	चन्द्रिक १.	५३१५१	चाप १. ३.	३१७७२
„ १.	३१५५४	चतुष्पाद् १.	चन्द्रिका २.	२११२८	चामर ३.	३३३२०२
चण्डालवहली २.	३१५१२७	„ १.	„ २.	४३१२७	„ ३.	३३१५९
चण्डिल १.	३१५२६	चतुष्प्रस्थ १.	चन्द्रिकाप्रिय १.	२३३५५	चामरपुष्प १.	८११५१
चण्डी २.	१११६२	चतुष्टोम १.	चन्द्रिमा २.	२११२८	चामीकर ३.	३३११८
चतुर ३.	३१५९२	चतुस्स्नेह ३.	चन्द्रोदय १.	४३१२३	चामुण्डा २.	१११६३
„ ३.	४३२११	चत्वर १.	चप १.	३३२१५	चाम्पेय १.	३३३८१
„ १. २. ३.	५४५५४	चत्वर २.	चपल १.	३४३३३	„ १.	३३३८२
„ ४.	५४५१३७	„ २.	„ १.	३८११०	„ १.	३३३८२
„ १. २. ३.	७४५११	चत्वारिंशत् २.	„ १. २. ३.	५४७८८	चार १.	३३३८६
चतुरङ्गक ३.	३३७५९	चन ४.	„ १. २. ३.	५४१२५	„ ३.	३३३३६
चतुरङ्गल १. २. ३.	३३१५२	चनका २.	„ १. २. ३.	७५३९९	चारटी २.	३८८८९
„ १.	३३३४८	चन्दन १. ३.	चपला २.	२२३३	चारण १.	३३१६४
चतुरा २.	३३४१९	„ ३.	चपेट १.	४३७८६	चारणी २.	३३३३३४
चतुरूषण ३.	३८८८१	चन्दनद्रवभाजन ३.	चलुक ३.	४३८८७	चारित्र ३.	३३३१५
चतुर्गति १.	४३१५०	चन्द्र १.	चमक ३.	३३३२०२	चारी २.	३३३६७
चतुर्थ १. २. ३.	५११२१	„ ३.	चमर १.	३३३२९	चारु १.	२१३३३
चतुर्थक १. २. ३.	५११५१	„ १.	चमरिक १.	३३३४७	„ १. २. ३.	५४३३५
चतुर्थकालिक १. २. ३.	३३३१२६	„ १.	चमरी २.	३३३२९	„ १. २. ३.	६४३६
चतुर्द्व १.	१३३१२	„ ३.	चमस १. ३.	३३३१०१	चारुक १.	३३३३०
चतुर्दशी २.	२११७०	„ ३.	चमू २.	३३३१०२	चारुनाल ३.	४३३४०
„ २.	३१५११७	चन्द्रकान्त १.	„ २.	३३३१५५	चार्वी २.	३३३१५
चतुर्धा ४.	८८८२०	चन्द्रकिन् १.	„ २.	३३३१५८	चाल १.	३३३६९
चतुर्भद्र १.	३३३२३६	„ १.	चमूपाणि १.	३३३१५९	चालन ३. २.	८१३३२
चतुर्मुख १.	११११७	चन्द्रगोलिका २.	चमूरु १.	३३३२३	चालनी २.	४३३६५
चतुर्वर्ग १.	३३३२३५	चन्द्रपाद १.	„ १.	३३३२४	चाष १.	२३३२९
चतुर्विधान ३.	४३३१९	चन्द्रवाला २.	चम्पक १.	३३३८१	चिकित्सक १. २. ३.	४३३१४३
चतुर्हस्त १.	३३३१५७	चन्द्रभासा २.	चम्पकद्वीप ३.	३३३१७	चिकित्सा २.	४३३१२९
चतुश्शख ३.	४३३५२	चन्द्रभीरु ३.	चम्पा २.	२३३४	चिकिर १.	७३३२५
चतुश्शाल ३.	४३३२६	चन्द्रमणि १.	चम्पुक १.	२३३४	चिकिल १.	३३८२६
चतुष्क ३.	५११५५	चन्द्रमसू १.	चम्पू २.	२३३४२	( चिकिच्छल )	
चतुष्की २.	४३३१२४	चन्द्रमानृ २.	चम्पोपलक्षण १ व.	३३३३१	चिकुर १. २. ३.	५४३७९
चतुष्कुवः(स्) ४. ८८८६	८८८६	चन्द्रमौलि १.	चय १.	५१११	„ १. २. ३.	७५३९९
		चन्द्रव्रत ३.	चर १. २. ३.	५४६१	चिकण ३.	३३३२१८
		चन्द्रव्रतिक १. २. ३.	चरण ३.	३३३१५	„ १.	५३३४
		चन्द्रशाला २.	„ १. ३.	४३३५६	चिकस १.	४३३६८
		चन्द्रहास १.	„ १. ३.	७५३७	चिकण ३.	३३८५५
		„ १.	चरणाग्रक ३.	४३३५७	चिक्रोड १.	४३३२७
					चिञ्चा २.	३३३८१



चित्रालिक ]

चित्रालिक १.	११२५१
चित्रोटिका २.	४१२४८
चित् २.	३११६४
" ४.	८८१२२
चितकावेर ३.	३१८११६
चित्ता २.	३१७२१६
चिति २.	३१६१६४
" २.	३१७२१६
चिक्कत ३.	२४१९
चित्त ३.	३१६१७२
चित्तविभ्रम १.	३१६१७७
चित्ताभोग १.	३१६१७७
चित्तोन्मादकरी २.	१११४९
चित्या २.	३१७२१६
चित्र १. २. ३.	३१७१७८
" १.	४११४३
" ३.	४१३१४८
" ३.	६१५३०
चित्रक १.	३१८८२
" १.	४१११५
" १.	५१३२३
चित्रकूट १.	३१२१२
चित्रकूट १.	३१३१४६
" १.	३१९१२
चित्रगुप्त १.	११२३६
चित्रतण्डुला २.	३१८१२७
चित्रदण्ड १.	३१३२०८
चित्रपद्म १.	२१३२०
चित्रपट १.	४१३११९
चित्रपत्रक १.	२१३३७
चित्रपर्णिका २.	३१३१३६
चित्रपिङ्गल १.	२१३३७
चित्रपुङ्ख १.	३१७१८०
चित्रफलान् ४११४३	
चित्रभानु १.	८११२२
चित्ररथ १.	११२५
चित्रल १.	३१३१६८
चित्रला २.	३१३२९
चित्रशाला २.	४१३२३

वैजयन्तीकोषः

चित्रशिखण्डिज १.	२११३३
चित्रशिखण्डिन् १.	२११५०
चित्रा २.	२११६०
" २.	३१३११३
" २.	३१३१३८
" २.	३१३१७३
" २.	४११११७
" २.	६१५३०
चित्राङ्ग १.	३१४१४
चित्राङ्गि २.	३१३१३७
चित्राणुक १.	४११४९
चित्रावनि २.	३१६३५
चित्रोपपत्ता २.	२११६०
चिह्नित १.	३१३१७२
चिद्रूप १. २. ३.	५१४२७
चिपाट १.	३१७१३२
चिपिट १.	४१३६८
" १. २. ३.	५१४८३
चिबुक ३.	४१४८७
चिरक्रिय १. २. ३.	५१४७२
चिरजीविन् १.	१११७
" १.	२१३१५
चिरण्टी २.	४१४९
चिरन्तन १. २. ३.	५१४८७
चिरम् ४.	८८११
चिरमेहिन् १.	३१४६६
चिररात्र ३.	२११५९
चिररात्राय ४.	८८११
चिरसूता २.	३१४४८
चिराल ४.	८८११
चिरि १.	११२१८
चिरिबिल्वक १.	३१३६२
चिरेण ४.	८८११
चिलिचिम १.	४११४५
चिलिमीलिका २.	८१२१२
चिल्ल १.	६१४५
चिल्लाक १.	२१३४

[ चूचुक

चिह्निक १.	२१३२८
चिह्नव १.	३१३१५२
चिह्न १.	५१३५७
चिह्न ३.	२११२९
" ३.	६१३८
चीन १ ब.	३११२३
" ३.	३१२३३
" १.	३१३५०
" १.	३१४२१
" १.	३१८३७
" १.	३१८५९
चीनक १.	३१४१३
चीननक १.	४११४४
चीनपट्ट ३.	३१२३०
चीनसी २.	३१४२१
चीना २.	३१६१५०
चीर ३.	४१३१३०
चीरिणी २.	४१४८
चीरी २.	२१३४८
चीवर ३.	४१३१२८
चुक्र ३.	३१८१३२
" १.	३१८१३३
चुक्रिका २.	३१३१६३
चुचुन्दरी २.	४१३३२
चुण्डिन् १.	४१२७
चुन्दी २.	४१२५
चुप १.	५१३७
चुबुक ३.	४१४८७
चुम्बक १.	३१३३८
चुम्बन ३.	४१३१७१
चुम्न १. २. ३.	६१५३१
चुल १.	४१४७८
चुलक १.	३१४३
" १.	४१४७८
चुलम्पा २.	३१४६३
चुल्ल १.	६१४५
चुल्लि २.	४१३५४
चूचु १.	३१५५१
" १.	३१५९३
चूचुक १.	३१५७४
" १.	३१५८१

चूचुक ]

चूचुक ३.	४१४६८
चूचुक १.	३१८४५
चूडा २.	४१४१०२
" २.	८१२१५
चूडाकरण ३.	३१६४
चूडामणि २.	३१३१७९
" १. २. ३.	४१३१३६
चूत १.	३१३२५
चूतक १.	४१२७
चूर्ण ३.	४१३१५७
चूर्णपूष ३.	४१३७२
चूर्णि २.	४१३५८
" २.	६१२१२
चूलि २.	६१२१३
चूलिक १.	२१३१३
" १.	३१८३९
चूलिका २.	३१३२२२
" २.	३१७७३
चूषण ३.	४१३१०३
चूषा २.	३१७८४
चूष्य ३.	४१३९१
चेटक १.	३१९१२
चेटा २.	४१४२६
चेटिका २.	४१४२६
चेत् ४.	८१८१४
चेतकी २.	३१३१७८
चेतना २.	३१६१६३
चेतस् ३.	३१६१७२
चेदि १ ब.	३१३३६
चेन्नाल १.	३१६१६९
चेल ३.	४१३११७
" १. २. ३.	५१४७५
" १. २. ३.	६१५३१
चेल्लाण १.	३१३१६८
चैत्य ३.	३१६९०
" ३.	४१३२८
" ३.	६१३८
चैत्यवृक्ष १.	८१६२०
चैत्र १.	२११८३
चैत्ररथ ३.	११२५९
चैत्रिक १.	२११८३

शब्दानुक्रमिका

चैत्री २.	२११७५
चैत्र १ ब.	३१३३६
चोक्ष १. २. ३.	६१५३१
चोच ३.	३१३१४
" ३.	३१८१०४
चोनु १.	४१४१००
चोट १.	४१४१०३
चोटलिङ्गक १.	३१७१८५
चोदनिका २.	३१८१४७
चोदनी २.	३१३१६७
चोद्य १. २. ३.	६१४६
चोर १.	३१९५५
" १. ३.	४१३७६
चोरपुष्पी २.	३१३११६
चोरिक १.	३१७२०
चोल १ ब.	२१३३३
" १.	३१३८३
" १. ३.	४१३३७
" १.	४१३१२८
चोलक १. ३.	३१३१३
चोलान्त १.	४१३३७
चोली २.	४१३१२७
चौक्ष १. २. ३.	५१४१३५
चौण्ड १.	४१२७
चौरिक १.	३१९५९
चौरिका ३.	३१९५८
चौर्य २.	३१९५८
चौल २.	३१६४
व्यवन १.	३१६१५७
व्युति २.	४१४६०
" २.	४१४६१
व्युप १.	६११२३
छ	
छग १.	३१४६२
छगल १.	३१४६२
छगी २.	३१४६२
छण्डकष्ट १.	३१५३६
छत्त ३.	३१६१६
छत्त्रक १.	३१३१६९
छत्त्रधर १. २. ३.	३१७१४५

[ छाग

छत्त्रा २.	३१३१२४
" २.	३१३१३४
" २.	३१८४९
छत्त्राक १.	३१३१५३
छत्त्राकी २.	३१८१२४
छत्त्रिन् १.	३१७२८
छद १.	२११६२
" १.	२१३४९
" १.	३१३१६
छदन ३.	२१३४९
" ३.	३१३१६
छदावलि ३.	३१७१८५
छदिसू ३.	३१६९१
" २. ३.	४१३३७
" २.	४१४१०३
छदिस्तुण ३.	३१८६७
छदमन् ३.	३१६१९५
" ३.	६१३८
छदमप्रधारवत् १.	३१७२८
छन्द १.	६११२४
छन्दना २.	३१६१९५
छन्दस् ३.	३१६२७
" ३.	३१६२८
" ३.	६१३९
छन्दोभेद १.	३१६३४
छन्न १. २. ३.	५१४१२०
छन्नपथ ३.	३१७५४
छन्ना २.	३१३१३१
( छिन्ना )	
छर्दम १.	३१३५०
" १.	३१३७५
" १.	४१४३५
छर्दनी २.	३१३१७१
छर्दि २.	६१२१३
छल ३.	३१६१९५
छलवाच् २.	२१४१९
छल्ली २.	३१३१३
छवि २.	४१३१५०
छाग १.	३१३३५
( भाग )	
" १.	३१४६२



[ छागण ]

छागण १.	२११२०
छागणक १	२११२७
छात १. २. ३.	५४१०२
छात्र १.	३१६२५
" १.	३१७२७
" ३.	३१८१३६
छादिषेय १. २. ३.	३१८१६७
छान्दस १.	३१६८१
छाया २.	२११२३
" २.	६१२१३
छायाकर १. २. ३.	३१७१४५
छायापुत्र १.	२११३५
छित १. २. ३.	५४१०२
छिद्र ३.	३१८१८
" ३.	४११२
" ३.	५४११४४
" ३.	६१३१९
छिद्रित १. २. ३.	५४११११
छिन्न ३.	३१८१४२
" १. २. ३.	५४१०२
छिन्नपुच्छक १. २. ३.	३१४५९
छिन्नरुहा २.	३१३१३१
छेक १.	२१३१५
" १. २. ३.	५४१२०
" १. २. ३.	६१५३२
छोटिका २.	३१६२२९
( चोटिका )	
ज	
जहा २.	४१३१०४
जहित १. २. ३.	५४१०८
जगत १.	११२१४८
" १. २. ३.	५४१६१
जगती २.	७१२१९
जगत्त्रय १.	२११९४
जगत्प्राण १.	११२१४७
जगल १.	३१९५१

वैजयन्तीकोषः

जगल १	५४१२७
जग्ध १. २. ३.	५४११०७
जग्धि २.	४१३१०२
जघन १.	४१४६४
" ३.	७३११५
जघनपिण्डिका २.	३१७७८
जघनभाग १.	३१७७६
जघनेफल १.	३१३१७४
जघनेफला २.	३१३१११
जघन्य ३.	३१८११५
" १. २. ३.	५४१७६
" १. २. ३.	५४१७७
" १. २. ३.	७४१११
जघन्यज १.	३१९११
" १. २. ३.	५४१४
जङ्गम १. २. ३.	५४१६१
जङ्गित १.	३१५३३
जङ्गा २.	४१४५८
जङ्गात्राण ३.	३१७१५४
जङ्गापद १.	३११५२
जङ्गल १. २. ३.	३१७१५०
जटा २.	३१३१३२
" २.	३१३२०२
" २.	३१८१००
" २.	४१४१०१
" २.	५११३३
जटाश्राट १.	१११४४
जटाटीर १.	१११४४
जटायु १.	३१३१५४
जटिन् १.	३१३२८
जटिल ३.	३१३२०२
" १. २. ३.	५४१९
जटिला २.	३१३१९७
" २.	३१८१००
जटी २.	३१३२०३
" २.	५११५८
जटुल १.	४१४९७
जठर ३.	४१४६७
जठरोत्सव १.	३१६६२
जड १.	५३१६

[ जपा ]

जड १. २. ३.	५४१५४
" १. २. ३.	६१४६
जडा २.	३१६१२९
जतु ३.	४३११५३
जतुक ३.	३१८१३१
जतुका २.	३१३१४४
जतुकाहला २.	३१९१२६
जतुकृत् २.	३१८१८९
जतूका २.	३१८१८९
जत्रु ३.	४१४६९
जन १.	३१६२०२
जनक १.	४१४२९
जनङ्गम १.	३१९५४
जनता २.	५११९
जनन ३.	४१४१८
" ३.	४१४४९
जननी २.	४१४२६
" २.	७१२१८
जनपद १.	३११२१
" १.	८११२३
जनयितृ १.	४१४२९
जनयित्री २.	४१४२६
जनवाद १.	२१४३४
जनश्रुति २.	२१४३९
जनस १. ४.	३१६२०७
जनाद्दन १.	११११०
जनाश्रय १.	४१३२८
जनि २.	३१११८
" २.	६१२१४
जनिमन् ३.	७१२२७
जनी २.	३१३१२८
" २.	४१४३६
जनुस् ३.	४१४१८
जन्तु १.	४१४११
जन्तुघर १.	३१४३४
जन्तुफला २.	३१८६१
जन्मन् ३.	४१४१८
जन्य १. २. ३.	६१५३२
जन्या २.	३१८८९
जन्तु १.	४१४११
जपा २.	३१३१९५

जपापुष्प ]

जपापुष्प ३.	३१८१६७
जम्पति १ द्वि.	४१४४८
जम्बाल १.	३१८२६
" १.	७१२२६
जम्बीर १.	३१३३५
" १.	३१३१२०
जम्बु ३.	३१३२२
जम्बुक १.	७१२२६
जम्बुल १.	३१३२२३
जम्बू २.	३१३२२
" २.	३१३१९२
जम्बुगर्त १.	३१७१६१
जम्बूट १.	३१३१९४
जम्बूद्वीप १.	३१११०
जम्बूलमालिका २.	३१६५०
जम्भ १.	४१४८९
जम्भक १.	३१३३५
" १.	३१५८५
जम्भरिपु १.	११२४
जम्भल १.	३१३३५
जम्भीर १.	३१३३५
जय १.	११२६
" १.	११२८
" १.	३१३८५
" १.	३१७२०९
" १.	३१८३६
" १.	८१९१२
जयदत्त १.	११२८
जयन्त १.	११२८
" १.	२११२६
जयन्ती २.	११२९
" २.	२११७८
" २.	३१३१९६
जयन्तीपुर ३.	४१३८
जयवाहिनी ३.	११२११
जया २.	३१३८९
" २.	३१३१९७
" २.	३१८८३
जयिन् १. २. ३.	३१७१४७
जयोदाहरण ३.	२१४३६
( जनोदाहरण )	

शब्दानुक्रमणिका

जय्य १. २. ३.	३१७१४८
जरठ १. २. ३.	७१४१२
जरत् १. २. ३.	५४१३
जरत्कार १.	३१६१५६
जरद्गाव १.	३१४५५
जरन्त १.	३१४९
जरा २.	४१४५४
जराभीरु १.	१११२९
जरायु १.	४१४१८
" १. ३.	७१५३९
जरायुज १. २. ३.	४१४२
जरुर्द १.	३१७९७
जर्जर १.	३१९१२९
" १.	५३१४१
जर्ण १.	२११२७
" १.	३१३५
जर्तिल १.	३१८३९
जल ३.	४१२२
" १. २. ३.	५४१४४
जलक १.	३१४३३
जलकण्टक १.	४१२४८
जलकरिन् १.	४११६०
जलकाक १.	२१३११
जलकोलि २.	३१३८९
जलचर १.	२१३४१
जलजन्तु १.	४११४०
जलजम्बुका २.	३१३१०३
जलजा २.	३१८५८
जलतस्कर १.	२१११२
जलद १.	२१२११
जलदा २.	२१२४
जलद्रोणि २.	४१३६१
जलनर १.	४११६०
जलनिधि १.	४१२११
जलनीली २.	४१२४९
जलपालिका २.	२१२४
जलपिप्पिक १.	४११४१
जलप्रिय १.	३१४५
जलवृंहण ३.	४१२३०
जलभूषण १.	११२४६
जलमार्जसि १.	४११५४

[ जागर ]

जलमुच १.	२१३११
जलमुस्त ३.	३१३२०१
जलरङ्ग १.	२१३१११
जलराशि १.	४१२१०
जललम्बिका २.	३१३१९८
जलवालक १.	३१२३३
जलव्याल १.	४१११९
जलशीनक १.	५४१८
जलशूर १.	४१२४९
जलसम्भवा २.	३१४४३
जलाचार १. २. ३.	३१६१३१
जलात्मन् १.	३१४८
जलाधार १.	४१२५
जलालोका २.	४११५८
जलाशय १.	३१३२३१
" १.	४१२५
जलाश्व १.	४११६०
जलाहार १. २. ३.	३१६१३५
जलक १. २. ३.	८१२२६
जलका २.	४११५८
जलेशय १.	८१५८
जलोच्छ्वास १.	४१२३१
जलोद्गम १.	४१२८
जलोलक १.	५३१४१
जलौकस् १ ब.	४११५८
जलपाक १. २. ३.	५४१४६
जल्ल १.	३१५५४
जव १.	११२५५
" १. २. ३.	३१७१५०
" १.	५१२३१
जवन १. २. ३.	३१७१५०
" ३.	५१२३१
जविन् १.	३१४१६
" १. २. ३.	३१७१५०
जसु १.	५३११
जसुरि १.	७११२५
जागर १. २. ३.	३१६१९६



जागर ]	वैजयन्तीकोषः	[ जीर्णक
जागर १. ३१७१५३	जानुभक्तिनी २. ३१७५२	जालिका २. ३१७५३
जागरण ३. ३१६१९६	जानुमात्र १. २. ३.	जालिन् १. ३१९४२
जागरित ३. ३१६१९६	४१४८२	जालिनी २. ३१८७७
जागरित् १. २. ३. ५१४४४	जानुमात्री २. ३१७५२	" २. ४३१२३
जागरुक १. २. ३. ५१४४४	जावाल १. ३. ३१९२९	" २. ४१४१०१
जागर्या २. ३१६१९६	जामदग्न्य १. १११२०	जाली २. ३१३१५९
जागृवि १. १२११८	जामातृ १. ४१४३८	जाहम १. २. ३. ६१४६
जाघनी २. ४१४५८	" १. ७११२६	जावक ३. ४३१५४
जाङ्गल १. २. ३. २१४२०	जामि २. ६१२१४	जाहक १. ३१४७२
" १ ब. ३११४०	जामेय १. ४१४७१	जाह्वी २. ४२१२४
" १. २. ३. ३११४५	जाम्बव ३. ३१३२२	जिघत्सा २. ३१६१८२
" ३. ३१८१०७	जाम्बूनद ३. ३१२२०	जिघत्सु १. २. ३. ५१४३६
जाङ्गलिक १. ४११२५	जाया २. ४१४३४	जिघांसु १. ३१७४१
जाटलि २. ८१२२६	जायाजीव १. ३१९६२	जिङ्गी २. ३१३१३५
जाट्य १. ३१८१४४	जायापति १ द्वि. ४१४४८	" २. ३१३१६०
जात ३. ५११३	जायु १. ४११४१	जित १. २. ३. ३१७१४८
जातरूप ३. ३१२१८	जार ३. ४२१४२	जितकाशिन् १. २. ३. ३१७२१८
जातवेदस् १. १२११४	" १. ४१४३८	जितरण १. २. ३. ३१७२१८
जातारणि १. ३१६७२	जारण ३. ३१८१२६	जित्वर १. २. ३. ३१७१४७
जाति २. ३१३१२३	जारद्व ३. २११४९	जिन १. १११३३
" २ ३१३१८२	जारद्वी २. २११४७	" १. १११३५
" २ ३१५१११	जारवायु १. ११२५४	जिष्णु १. १२१४
" २ ६२११४	जारी २. १११५९	" १. २. ३. ३१७१४७
जातिकोश ३. ३१८१०६	" २. ३१६१८८	जिह्वा १. ४११५
जातु ४. ८१८७	जाल ३. ३१११३	" १. २. ३. ६१५३२
जातोक्ष १. ३१४५४	" ३. ३१५३३	जिह्वा २. १२१२९
जात्य १. २. ३. ५१४६१	" ३. ३१९१९	" २. ४१४९०
" १. २. ३. ५१४६४	जालक ३. ३१३१९	" २. ६२११५
" १. ६१४७	" १. ३१८३९	जिह्वापान १. ३१४७०
जानकीकान्त १. १११२०	" ३. ५१३३	जिह्वास्वाद १. ४३११०३
जानु १. २. ४१४५९	जालकिनी २. ३१४६५	जीन १. २. ३. ५१४३
जानुक १. २. ३. ३१६१३३	जालन १. ५१३३९	जीमूत १. ७१२६
जानुदधन १. २. ३. ४१४८२	जालन्धर १ ब. ३१३२६	जीरक १. ३१८८३
जानुद्वयस १. २. ३. ४१४८२	जालपाद १. २३११२	जीरण १. ३१८८३
जानुनिकुखन ३. ३१६२२२	जालपादक १. २३१६	जीर्ण १. २. ३. ५१४३
	जालभूषण १. ३१५३६	" १. ६१५३४
	जालिक १. ३१९३८	जीर्णक ३. ३१३२०५
	" १. ३११३४	
	" १. २. ३. ५१४२३	

जीर्णि ]	शब्दानुक्रमणिका	[ ज्योतिष्मती
जीर्णि २. ४१४५४	जीवितेश १. २. ३. ८१५८	जाति २. ४१४५०
जील ३. ६३११०	जुगुप्सन ३. ३१९७६	ज्ञान ३. १११४७
जीव १. ३१६१६१	जुगुप्सा २. २१४३३	" ३. ३१६१६४
" १. २. ३. ३१७२२०	" २. ३१६१९३	ज्ञानिन् १. ३१७५०
" १. ३१७२२०	" २. ७२१८	ज्या २. ३१७१७८
" १. ४१४१	" २. ८१९१४	" २. ८२११७
" १. २. ३. ६१५३३	जुहुराण १. १२११९	ज्यानि २. ४१४५४
जीवक १. २. ३. ५१४१६	जुहू २. ३१६१००	ज्यानिवारण ३. ३१७१५५
" १. २. ३. ७१५४०	जृति २. ५२३३१	ज्यायस् १. २. ३. ५१४४
जीवजीव १. २३१४०	जूर्णा २. ३३३२३०	" १. २. ३. ६१४७
जीवत् १. २. ३. ३१७२२०	जूर्णाद्वय १. ३१८५७	ज्येष्ठ १. २३३६
जीवतोका २. ४१४१९	जूर्णि २. ६१२२४	" ३. ३२२२८
जीवथ १. ४११५०	जृम्भ १. २. ३. ८१९३८	" ३. ३२२३१
जीवधन ३. ३१४६१	जृम्भण १. २. ३. ३१९८८	" ३. ३३३२०२
जीवन ३. ३१८११	जृम्भा २. ३१९८८	" ३. ३८१३५
" ३. ४२१२	" २. ८१९३८	" १. ४१४३१
" ३. ४३१८५	जृम्भिका २. ३१९८८	" १. २. ३. ६१४७
जीवनी २. ११११६	जृम्भित १. २. ३. ७१५४०	ज्येष्ठप्री २. २११४१
" २. ३३११४३	जेतृ १. २. ३. ३१७१४८	ज्येष्ठतात १. ४१४३२
जीवनीय ३. ३१८१४६	जेमन ३. ४३१०२	ज्येष्ठश्वश्रू २. ४१४२८
" ३. ४२१२	जेय १. २. ३. ३१७१४८	ज्येष्ठा २. १११४९
जीवनीया २. ३३१११२	जेत्र १. २. ३. ३१७१२८	" २. १२१४२
" २. ३३११४३	" १. २. ३. ३१७१४८	" २. १३१४१
जीवन्ती २. ३३१८४	जैत्री २. ३३११३३	" २. ४११३०
" २. ३३११३२	जैन १. २. ३. ५१४१६	" २. ४१४२७
" २. ३३११४०	जैवातृक १. २. ३. ८१५९	" २. ४१४७४
" २. ३३११४३	जोङ्गक ३. ३१७१०७	" २. ६२११५
जीवपति २. ४१४१४	जोटिङ्ग १. १११४५	ज्येष्ठामूलीय १. २११८४
जीवबोधिनी २. ३३११४५	जोड ३. ३३२१८	ज्येष्ठाम्बु ३. ४३१६७
जीवलोक १. ३३१२०६	जोणाल १. ५३११९	ज्येष्ठ १. २११८४
जीववृत्ति २. ३१८१४	जोनल १. ३१८५६	ज्येष्ठी २. २११७५
जीवशाक १. ३३११५०	जोन्नला २. ३१८१७	ज्योक् ४. ८१८६
जीवसू २. ४१४१९	जोषम् ४. ८१७२०	ज्योतिरात्रय ३. ३३१८७
जीवा २. ३३११४३	ज १. २. ३. ८१५३९	ज्योतिरिङ्गण १. २३१४७
" २. ३१७१८८	" १. ८१९१४७	ज्योतिश्शास्त्र ३. २११५०
जीवातु १. ३१७२२१	जपित १. २. ३. ५१४११३	ज्योतिषामयन ३. २११५०
जीवान्तक १. ३१७३७	जप्त १. २. ३. ५१४११३	" ३. ३३३३३
जीविका २. ३१८११	जप्ति २. ३३११६४	ज्योतिषाम्पति १. ८११५३
जीवित ३. ३१७२२०	" २. ३३११६४	ज्योतिष्मती २. ३११३९
जीवितकाल १. ३१७२२१	ज्ञात १. २. ३. ५१४१०१	" २. ३१८६०
जीवितगद १. ३१७२२१		



ज्योतिषोम ]

वैजयन्तीकोषः

[ तथा

तथागत ]

शब्दानुक्रमिका

[ तर्क

ज्योतिषोम १.	३१६८६	झिल्लिका २.	४११९६	हारिका २.	४११३३	तथागत १.	१११३३	तन्त्री २.	६१२१६	तमोनुद १.	७११२८
ज्योतिस् ३.	६३११०	झिल्ली २.	४३१७७	ढौण्डक १. २. ३.	५११२३	तथार्थवाच् १.	५१३३	तन्दन ३.	२११५	तमोनुद १.	८११२३
ज्योत्स्ना २.	२११२८	झीरिका २.	२३१४८	त		तथ्य ३.	५३३३	तन्दू २.	६३११६	तमोपह १.	८११२३
ज्योत्स्नी २.	३३११६०	ट		तक्कोल ३.	३१८१०५	तद् १. २. ३.	५११२०	तन्द्र १.	४११५२	तमोरिपु १.	२१११४
ज्योतिष १.	२११८१	टगर १. २. ३.	७५१४१	तक्र ३.	३१८१४९	" ४.	८११११	तन्द्रा २.	३६११७८	तम्पा २.	३११४२
ज्योतिषिक १.	३११२५	टङ्क १.	३१८१३१	तक्रज ३.	३१८१३६	तदा ४.	८१८१५	" २.	३६११९७	तम्बा २.	२११४२
ज्योत्स्नी २.	२११५८	" १.	३११२२	तक्रपिण्ड ३.	३१८१४४	तदानीम् ४.	८१८१५	" २.	६३११५	तम्बिकी २.	३११११३
ज्वल १.	५३१७	" १.	६११२४	तक्रवासन १.	३३३३६	तनय १.	४३३३९	तन्मात्र ३.	३६३२०५	तरच्छु १.	३११४
ज्वलन १.	२१११५	टङ्कण ३.	३१८१३०	तचक १.	७११२८	तनु १.	३३३८५	तन्वी २.	३१८७७	तरङ्ग १.	३३३१६२
ज्वलित १. २. ३.	८१११४	टट्टनी २.	४११३०	तचन् १.	३५३३९	" २.	४११५२	तपन १.	२११११	" १.	४३११४
ज्वाल १.	१३१२९	टट्टर १.	२११११	" १.	३५३८६	" २.	४११०३	" १.	३६३१५१	तरङ्गिणी २.	३३३२१२
ज्वाला २.	१३१२९	टट्टरी २.	३१११३५	" १.	३११३४	" १. २. ३.	५१११५	" १.	७११२९	" २.	४३३२३
झ		टर्क १. २.	३११२७	" १	८१११२	" १. २. ३.	५११२५	तपनीय ३.	३३३१८	तरण ३.	५३३१२
झन्झानिल १.	१३१५२	टिट्ठिभ १.	२३३३४	तत्तशिला २.	४३३१९	" १. २. ३.	६११३५	तपस् ३.	१११४७	तरणा २.	४३३८०
झटप्प १.	५३३१९	टिट्ठिभासन ३.	३३३१२५	तगर १.	३३३१९४	तनुकूबर ३.	३३३१३२	" १.	२११८२	तरणि १. २.	७११४२
झटा २.	३३३१७७	ड		तङ्क १. २.	३३३१८५	तनुज ३.	३३३१५२	" ३.	३३३१३६	तरणी २.	४३३१५
झटिति ४.	८१८११	डक्कन ३.	२३३१८	तट १.	३३३१६	तनुस् ३.	६३३१२	" ३.	३३३१०७	तरण्डक १.	४३३१६
झण्डाली २.	३३३१५९	डङ्क १.	३३३१५३	" १. २. ३.	४३३३२	तनुकृत १. २. ३.	५३३१११	तपस १.	२३३२६	तरत् १.	८३३११
झम्प १.	५३३१९	डमर १.	३३३१९०	" १. २. ३.	८३३३८	तनूनपात् १.	१३३१४	तपस्य १.	२३३८३	तरत्सम १.	१३३२१
झम्पटि २.	४३३१९	डमरु १.	३३३१३५	तटाक १. २.	४३३३६	तनूरुह ३.	२३३१४९	तपस्विन् १. २. ३.	३३३१२६	तरपण्य ३.	४३३१८
झर १.	३३३२७	डयन ३.	३३३१५०	तटित् २.	२३३१४	" ३.	४३३१७७	" १. २. ३.	८३३२८	तरल ३.	४३३१३
झरसी २.	३३३१५७	डहु १.	३३३१७५	तटित्पति १.	२३३२१	तन्तु १.	३३३१८७	" १. २. ३.	८३३२८	" १.	५३३१५
झरा २.	३३३१५७	डिण्डिक १.	३३३११५	तटित्त्वत् १.	२३३२१	" १.	३३३१११	तपस्विनी २.	३३३१००	" १.	७३३१४
झरुका २.	३३३१२५	डिण्डिम १.	३३३१३५	तटिनी २.	४३३२३	तन्तु १.	३३३११३	तपिनी २.	४३३२७	तरलित १. २. ३.	५३३१०३
झर्जर १.	३३३१३५	डिण्डीर १.	४३३१३३	तटी २.	८३३३८	तन्तुनाग १.	४३३१५२	तप्त १.	५३३१८	तरवारि २.	३३३१६२
झर्जरक १.	२३३१९२	डिण्डीश १.	१३३१४५	तण्डुल १.	३३३१७७	तन्तुनाभ १.	४३३१३४	" १. २. ३.	५३३१८	तरस् ३.	१३३१५
झलका २.	१३३२९	डिम १.	३३३१००	" १.	४३३१६६	तन्तुवाय १.	३३३१७७	तप्तक १.	४३३३२	" ३.	३३३१०
झल्लरी २.	४३३१९	डिम्ब १.	२३३१५०	तण्डुला २.	३३३१७७	" १.	३३३१८	तप्तत १.	४३३३३	तरस ३.	४३३१०६
" २.	७३३१९	" १.	३३३१९०	तण्डुलीयक १.	३३३१५०	" १.	४३३१३४	तप्तस् ३.	२३३३२	तरि १.	१३३२८
झष १.	४३३१४१	" १.	४३३१३३	तत ३.	३३३११५	तन्त्र ३.	३३३११४	" ३.	३३३१६२	" २.	४३३१५
" १.	४३३१५१	डिम्भ १. २. ३.	५३३१२	" १. २. ३.	५३३११०	" १.	४३३१५२	" १. २.	६३३३५	तरीष १.	३३३१६७
" १. २.	६३३३४	" १. २. ३.	६३३१७	तति २.	८३३१५	" ३.	४३३१४१	तमस्विनी २.	२३३१५७	तरु १.	३३३१५
झषा २.	३३३१६१	डुण्डुभ १.	३३३११९	तत्क्रिय १. २. ३.	५३३१७३	तन्त्र ३.	३३३११४	तमाल १. ३.	३३३१८७	तरुण १.	३३३१५
झषापर १.	३३३११४	डुण्डुर १.	४३३३२	तत्त्व ३.	३३३१२३	" १.	४३३१५२	तमालपत्र ३.	४३३१४८	" १. २. ३.	५३३३३
झाट १.	३३३१८९	डोम्ब १.	२३३१४९	" ३.	५३३११	" ३.	४३३१४१	तमिन्ना २.	२३३१५७	तरुणी २.	३३३१८८
झाण्ड १.	१३३१४६	ढ		तत्त्वधी २.	३३३१६५	" ३.	६३३१११	" २.	७३३१४३	तर्क १. ३.	३३३१७६
झिङ्गिल १.	३३३१२४	ढक्का २.	२३३१३४	तत्र ४.	३३३१२१	तन्त्रशाला २.	४३३१२०	तमी २.	२३३१५७	" १.	६३३१२५
झिणिका २.	४३३१२७	ढक्कारी २.	३३३१२८	तत्रभवत् १. २. ३.	८३३१४६	तन्त्री २.	३३३१३०				
झिण्टी २.	३३३१९०	ढङ्क ३.	२३३१६९	तथा ४.	८३३१४१						
झिण्टीकान्त १.	१३३१४४	ढण्डुक १. २. ३.	५३३१२३	" ४.	८३३१२०						
झिल्लिका २.	२३३१४८										



तर्कविद्या ]

तर्कविद्या २.	३१६३२
तर्कारी २.	३१६९६
( तक्कारी )	
तर्कु १.	३१९१९
तर्जनी २.	४१४७३
तर्ह २.	४३१६३
तर्णक १.	३१४५१
तर्पण १.	४३१३३
” ३.	४३१६९
” ३.	७३१६६
तर्मन् ३.	३१६५२
तर्ष १.	८१२२०
तर्पित १. २. ३.	५१४३७
तर्पु १.	२१११३
तर्हि ४.	८१७२०
” ४	८१८५
तल १.	३१३२१६
” १. २. ३.	३१७१५५
” १.	३१९१२२
” ३.	४१११
” १.	४१४७३
” १.	४१४७७
” ३.	५११५०
” ३.	५११६३
” १.	५३१६
” १. ३.	६१३५
तलपोट १.	३१३१०६
तलप्रोह १.	३१७७८
तलयन्त्र ३.	३१७५१
तलसारक ३.	३१७११४
तला २.	३१७१५५
तलिका २.	३१७११४
तलिन १. २. ३.	५१४१२५
” १. २. ३.	७१४१२
तलनी २.	४३३३३
तलिन ३.	७३१६६
तलुनी २.	४१४८
तलेक्षण १.	३१४५
तल्प ३.	६३११२
तल्पगृह ३.	४३१२०

वैजयन्तीकोषः

तल्लज १.	८१९४२
तविष १.	७१५४२
तष्ट १. २. ३.	६१११११
तस्कर १.	३१९१५६
” १.	८१६७
तस्थिवस् १. २. ३.	५१४६२
ताटिक १.	३१३१५२
ताडङ्क १.	४३११३४
ताडन ३.	५११३६
ताडी २.	३३३२२४
ताण्डव १. ३.	३१९७३
तात १.	४१४२९
तातगु १. २. ३.	७१५४३
तातल १. २. ३.	७१५४४
तान १. ३.	३१९१११
तानित ३.	७३१६६
तान्त १.	२११८०
तापस १. २.	३१६१२४
” १. २. ३.	३१६१२६
तापिन्त्र १.	३३३८७
तापी २.	४३२२७
तामरस ३.	४३२३९
तामसी २.	२११६०
” २.	३१६१९७
तामिख ३.	२११६२
ताम्बूल ३.	४३११०६
ताम्बूलकरङ्गिका २.	३१७३८
ताम्बूलवल्गिका २.	८१५२८
ताम्बूली २.	८१५२८
ताम्र ३.	३३२२४
” १. २. ३.	६१३३७
ताम्रकर्ष १.	५११५२
ताम्रकुट्टक १.	३१९१५
ताम्रचूड १.	२३११३
ताम्रजीव १.	३१३३९
ताम्रधारण ३.	५११५९
ताम्रपर्णी २.	२११९
” २.	४३२२९
ताम्रपाकिन् १.	३३१५९

[ तालपत्रिका ]

ताम्रमूला २.	३३१२५
ताम्रवृन्त १.	३३८४७
ताम्रसार ३.	३३८११३
ताम्रा २.	३३११७९
ताम्राक्ष १.	२३३२६
तार १. २. ३.	२३४१३
” १.	३३४२३३
” १.	५३२२३
” १. २. ३.	६१३३६
तारक ३.	३३४२३३
” १. २. ३.	४१४९४
” १. २. ३.	७१५४४
तारकारि १.	१११५४
तारजीवन ३.	३३२१९
तारण १.	२११८०
तारणी २.	३३८१४
तारा २.	२११३८
तारावट १.	३३१९४
तारावर्मन् ३.	२११२
तारुण्य ३.	४१४५३
तार्य १.	१३११९
” १.	१११३७
” १.	३३७९१
” ३.	३३८१२५
तार्यशैल ३.	३३२४१
तार्यसन ३.	३३२२८
तार्ण १.	१३२२१
” ३.	३११२०
तार्णसौम ३.	३११२०
ताल १.	३३२१४
” ३.	३३२१६
” १.	३३७१८५
” १.	३३९१२३
” १.	४१४७७
” १.	४१४८०
तालक १.	४१२२७
” ३.	४३३४९
” ३.	४३१३४
” १.	५३३८
तालपत्र ३.	४३१३४
तालपत्रिका २.	३३१२४

तालपर्णी ]

तालपर्णी २.	३३८१८
तालमूली २.	३३२२३
तालवृन्त ३.	४३१५९
तालाङ्क १.	१११२३
” १ ब.	१३१३३
ताली २.	३३२२३
” २.	३३२२४
” २.	३३१२४
” २.	४३१४९
तालु २.	३३१७१
” ३.	४३१८९
तालुजिह्वा १.	४११५३
तावन ४.	८१७२८
तावतिथ १. २. ३.	५११२०
तावत्कृति २.	५१३३६
तावत्कृत्वः (स) ४.	५१३३६
ताविष १. २.	७१५४२
तिक्त १.	३३१५३
” १.	३३१२८
” १.	३३१६६
” १.	५३२२६
” १.	५३१४७
तिक्तक १.	५३१५५
तिक्तकाषाय १.	५३३३१
तिक्तच्छदन १.	३३१६३
तिक्तपटुस्वादुकाषाय १.	५३१४०
तिक्तपटोलिका २.	३३१६१
तिक्तवल्का २.	३३११४
तिक्तशाक १.	३३१४१
तिक्तसार १.	३३१६३
तिक्तिक १.	५३३३०
तिग्म १.	५३३७
” १.	६१३३७
तितउ १. ३.	४३३६५
तितिच्चा २.	३३१८४
तितिच्छु १. २. ३.	५१३३३
तित्तिरि १.	२३३३५
” १.	३३१५१

शब्दानुक्रमणिका

तिक्तीक १.	३३१७७
तिथि १. २.	२११६९
तिन्तुडीक १.	३३३८१
तिन्तुणी २.	३३३८१
तिन्तुणीक ३.	३३१३२
तिन्त्रिडीक ३.	८३३६
तिन्दुक १.	३३१५१
तिमि १.	४११४१
तिमित १. २. ३.	५११७७
तिमिर ३.	२११६४
तिमिङ्गिल १.	४११५१
तिमिला २.	३३१३५
तिमिश १.	३३३४६
तिमिशत्रु १.	४११५१
तिरश्चीन १. २. ३.	५१४९१
तिरस् ४.	८१७२१
तिरस्करिणी २.	४३१२४
तिरस्कार १.	३३१७७
तिरित १. २. ३.	३३८११
तिरीट १.	३३३५२
तिरीटिका २.	३३३८७
तिरोधान ३.	२११६४
तिर्यग्गामिन् १.	२११३४
तिर्यच् ४.	५१४९१
तिल १.	३३३३९
तिलक १.	३३३६१
” १.	३३३६९
” ३.	३३१२५
” १. ३.	४३१४८
” १.	४१४९७
” ३.	४१४१२
” १. ३.	८१३३०
तिलककण्टक १.	२३३१८
तिलकालक १.	४१४९७
तिलखल १ ब.	३३१३९
तिलपर्णी २.	३३११५
तिलपिञ्ज १.	३३३३९
तिलपुष्प ३.	३३३४०
तिलपेज १.	३३३३९

[ तुङ्गता

तिलाट १.	३३८१४८
( किलाट )	
तिलिस्स १.	४१११४
तिलिस्सक १.	३३३४
तिल्य १. २. ३.	३३८२०
तिष्य १.	३३१७५
” १.	६१३२५
तिष्या २.	३३१७७
तीक्ष्ण ३.	३३३३४
” १.	३३११९
” १.	३३१२१
” १. २. ३.	३३७२८
” १.	५३३९
” १.	५३३२६
” १. २. ३.	६१३३७
तीक्ष्णगन्ध १.	३३३५६
” १.	३३३१९
तीक्ष्णच १.	५३३२९
तीक्ष्णतण्डुला २.	३३८७७
तीक्ष्णधूमा २.	३३३९१
तीक्ष्णरस १.	३३८१२७
तीक्ष्णा २.	३३३९७
तीक्ष्णाग्र ३.	३३८६५
तीक्ष्णार्जक १.	३३८१२१
तीर ३.	४३३३२
तीरतरङ्गिका २.	३३९९१
तीरभुक्ति २.	३३१३०
तीरित १. २. ३.	२३११९
तीरी २.	३३७१८३
तीर्थ १. ३.	४३३२०
” ३.	४३३७५
” ३.	६३३३३
तीर्थवाह १.	४३३९८
तीवर १.	३३५१२
तीव्र १. २. ३.	५३१३२
तीव्रकोपा २.	४३३१०
तु ४.	८१७४
” ४.	८१७११
तुक १.	३३५७५
तुङ्ग १. २. ३.	५३३८१
तुङ्गता २.	५३३२४



[ तुङ्गभद्रा ]

तुङ्गभद्रा २.	४२१२८
तुच्छ १. २. ३.	५४१८७
" १. २. ३.	६५१३६
तुटि २.	२११५२
" २	६२११६
तुण्ड ३.	४४१८६
तुण्डि १. २. ३.	५४१६
तुण्डिकेरी २.	३३१९९
" २.	३३१९४७
तुण्डिन् १.	२३१४
तुण्डिभ १. २. ३.	४४१९४६
तुण्डिल १. २. ३.	४४१९४६
तुत्थ ३.	३२१४३
तुत्वा २.	३३११०
" २.	३८१८७
तुत्थाञ्जन ३.	३२१४२
तुन्द ३.	४४१६७
तुन्दपरिमृज १. २. ३.	५४१५५
तुन्दिक १. २. ३.	५४१७
तुन्दिन् १. २. ३.	५४१७
तुन्दिल १. २. ३.	५४१७
तुन्न १. २. ३.	५४११५५
तुन्नवाय १.	३९१११
तुमुल १. २. ३.	२४११२
" १. २. ३.	३७२१७
तुमुलाक्षक १.	३३११७६
तुम्बा २.	३७११३५
तुम्बिका २.	४३११३२
तुम्बी २.	३३११६७
तुम्बुक १. २. ३.	२४११६
तुम्बुका २.	३३११६८
तुरग १.	३७१९०
तुरङ्ग १.	३७१९०
तुरङ्गम १.	३७१९०
तुरायण ३.	३३११४४
तुराषाह् १.	११२७
तुरीय १. २. ३.	५४१२१
तुरुष्क १ ब.	३११२७

वैजयन्तीकोषः

तुरुष्क १.	३८११११
तुर्य १. २. ३.	५४१२१
तुर्यकालभुज् १.	३६११२५
तुलसी २.	३३१११९
तुला २.	५४१६०
" २.	६२११७
" २.	८६११४
तुलाकोटि १.	४३११४५
तुलापुरुष १.	३६११४३
" १.	३६११४३
तुलिका २.	३९१६
तुल्य १. २. ३.	५४११२१
तुल्यविक्रम १.	३४११
तुवर १.	३३११५२
" १.	५३१२७
" १.	५३१४२
तुवरी २.	३२११७
" २.	३८१४८
तुष १.	३३११७६
" १.	४३१६६
तुपानल १.	१२१२०
तुषाम्बु ३.	४३१८३
तुषार १.	२२१९
" १.	५३१७
तुषित १ ब.	१३१८
तुष्ट १.	३३१८५
तुष्टि २.	३६११६६
तुहिन ३.	२२१९
तूण १.	३७११७८
" २. (आण)	३८१११०
तूणी २.	३७११७८
तूणीर १.	३७११७८
तूपर ३.	३६११०५
" १. २. ३.	७४११२
तूबर १.	३४१७३
तूर १.	३९११३७
तूर्ण १. २. ३.	५४११२४
तूर्य १. २.	३९११३६
तूल १. २.	३९१९
तूलपुष्प १.	३३११९३

( स्थूलपुष्प )

( ६६ )

[ वृत्त ]

तूलफला २.	३३१९१
तूलिका २.	३३१२३५
" २.	३९११३
तूलिनी २.	३३१९१
तूली २.	६२११७
तूष्णीकाम् ४.	८८११५
तूष्णीम् ४.	८८११५
तूड्घ्नी २.	३३१११२
तृण ३.	३३११८४
" ३.	३३१२२५
" २.	३३१२३३
" २.	३३१२३५
तृणकोल १.	३८११५
तृणजलायुका २.	४११५९
तृणता २.	७२११०
तृणद्रुम १.	३३१२२४
तृणधान्यक ३.	३८१५८
तृणध्वज १.	३३१२१४
तृणपञ्चिका २.	३८१६४
तृणराज १.	३३१२१६
" १.	३३१२२०
तृणशय्य १. २. ३.	३६११३१
तृणशून्यक ३.	३३११८३
तृणशोणक १.	५३१५०
तृणसंवर १.	३४११२
तृणसञ्चय १.	३८१६५
तृणसिंह १.	३९१५२
तृणस्तम्ब १.	३३१२३५
तृणाटवी २.	३३१२
तृणेन्धन ३.	३६१९६
तृण्या २.	५१११४
तृतीय १. २. ३.	५११२१
तृतीयाकृत १. २. ३.	३८१२२
तृतीयाप्रकृति १.	४४१३
तृप्त १.	२११२७
तृपि १.	२११२७
तृप्त १. २. ३.	४३११०५
" १. २. ३.	५४१९९

[ वृत्ति ]

वृत्ति २.	३६११८८
" २.	४३११०५
वृत्प्रक १.	३६१९९
वृत् २.	८२११९
वृषि २.	३६११७९
वृषित १. २. ३.	५४१३७
वृष्णज् १. २. ३.	५४१३५
वृष्णा १.	८२११९
ते १. २. ३.	८५१३९
तेजन १.	३३१२१५
" २. ३.	३७११९१
तेजनक १.	३३१२२८
तेजनी २.	३३१११४
तेजस् ३.	१२११९
" ३.	६३११४
तेजस्विन् १.	४४१११०
तेजित १. २. ३.	३७११९७
तेम १.	५२१२९
तेमन ३.	४३१८५
" ३.	७३११७
तेर १.	३३१४२
" ३.	४४१८६
तैतुल १ ब.	३३१२६
तैल ३.	३८११३७
तैलपर्णिक ३.	२८१११४
तैलपर्णी २.	८२१६
तैलपायिका २.	२३१४४
तैलित्स १.	५३१३२
तैलिन् १.	३९१२७
तैलिशाला २.	४३१२४
तैलीन १. २. ३.	३८१२०
तैष १.	२११८२
तोक ३.	४४१४१
तोकम १.	६५१३८
तोच्चार १ ब.	३११२५
तोटक १.	३८१४१
तोडभी २.	३९११२६
तोड ३.	३६१५
तोत्र ३.	३७१८२
" ३.	३८१२९
तोदन ३.	७३११७

शब्दानुक्रमणिका

तोमर १. ३.	३७१६६
तोय ३.	४२११
तोयपर्णिका २.	३८१५३
तोयपिप्पली २.	३३११९७
तोयप्रवाह १.	३२१७
तोयप्रसादन १.	३३१४२
तोरण १. ३.	४३१४२
तोरणस्तम्भ १.	३६१५८
तोषणी २.	३३१२१२
तौर्यत्रिक ३.	३९१७१
त्यक्त १. २. ३.	५४११०१
त्यक्तभर्तृका २.	३६१४५
त्यक्तसंवास १. २. ३.	३६११३
त्यक्तात्मन् १. २. ३.	३६११३
त्याग १.	३६१११८
" १.	५२१४०
त्रपा २.	३६११९७
त्रपु ३.	३२१३०
" ३.	३२१३१
" ३.	६३११३
त्रपुष १. २. ३.	३३११७१
त्रय ३.	५१११६
त्रयी २.	३६१२६
त्रयीतनु १.	२१११३
त्रयीपुष १.	३६११
त्रयोदशी २.	३९१११८
त्रस १. २. ३.	५४१६१
त्रसर १.	३९१९
" १.	४३११३२
त्रसरेणु २.	२११२३
" १. २.	५११४२
त्रस्त ३.	३६११६८
" १. २. ३.	५४११८
त्रस्तु १. २. ३.	५४११८
त्राण १. २. ३.	५४११००
त्रात १. २. ३.	५४११००
त्रापुष ३.	३२१२३
त्राययन्ती २.	३३११०९
त्रायमाणा २.	३३११०९

( ६७ )

[ त्रिधात्मन् ]

त्रास १.	६११२५
त्रिंशत् २.	५११२६
त्रिः(स्) ४.	८८१३
त्रिक ३.	४४१६६
" १. २.	८९१२७
त्रिकुट्ट १.	११११०
" १.	३२१२
त्रिकुट्ट ३.	३८१८०
त्रिकण्टक १.	३३१९८
" १	३३११४१
" १.	३६११६५
" १.	४२१४७
त्रिकल १.	३२१३
त्रिकालदर्शिन् १.	३६११५०
त्रिकालदृष्ट १.	१११३५
त्रिकुट ३.	३८१११९
त्रिकूट १.	३२१२
" ३.	३६१११०
" ३.	३८१११९
त्रिकेतु १.	२३१२५
त्रिकोणक १.	४३११३६
त्रिखट्व १. २.	८९१३६
त्रिखर १.	५३१३४
त्रिगन्ध ३.	४३११५०
त्रिगर्त १ ब.	३३१२६
त्रिगुणाकृत १. २. ३.	३८१२२
त्रिचतुर १. २. ३.	५११२५
त्रिजातक ३.	४३११५०
" १. २. ३.	८९१३९
त्रितत्त्व २. ३.	८९१३६
त्रितय ३.	५१११६
त्रिदश १.	११११४
त्रिदिव १.	१११२
" १.	७३१२९
त्रिदिवा २.	३८१८७
त्रिधा ४.	८८१२०
त्रिधात्मन् १.	१२११५
" १.	७३१२९



[ त्रिपक्षी ]

त्रिपक्षी २.	३१६६६
त्रिपदी २.	३१७८३
त्रिपणक १.	३१३२९
” ३.	८३१९
त्रिपात्र ३.	८११८
त्रिपाद १.	३११५२
त्रिपुट १.	३१८४४
त्रिपुटा २.	३३११३७
” २.	३१८८७
त्रिपुटी २.	३३११३७
त्रिपुर १.	३३३७७
त्रिपुरारि १.	१११४३
त्रिफला २.	३१८८२
त्रिमार्गगा २.	४२२२४
त्रिमार्गा २.	४२२२५
त्रियामा २.	२११५६
त्रियुग ३.	२११९२
” ३.	८११८
त्रियूह १.	३१७१००
त्रिरसा २.	४३३७९
त्रिरेख १.	४११५६
त्रिलोकी १.	८११८
त्रिलोचन १.	१११४२
त्रिवर्ग १.	३१६२३५
” १.	७११२८
त्रिवलीक ३.	४१४६०
त्रिविक्रम १.	११११९
त्रिविक्रमासन १.	३१६२२८
त्रिविष्टप ३.	१११११
त्रिवीथिका २.	२११४५
त्रिवृत् २.	३३११३७
” १. २. ३.	३१११०
त्रिवृत् १. २. ३.	३१११०
त्रिशङ्कु १.	७११२९
त्रिशिरस् १.	१२१४४
” १.	१२१५६
त्रिपृष्ठ १. २. ३.	३१८२३
त्रिपुटम १.	३१८४१
त्रिपुटमा २.	३१८४२
त्रिसन्ध्य ३.	२११६७

वैजयन्तीकोषः

त्रिसर १. २. ३.	८१२२५
त्रिसरा २.	४३१७९
त्रिसारा २.	३३१२२
त्रिसीत्य १. २. ३.	३१८२२
त्रिसुगन्ध ३.	४३१५०
त्रिस्नेह ३.	४३१९९
त्रिस्रोतस् २.	४३२२४
त्रिहल्य १. २. ३.	३१८२२
त्रुटि २.	२११५२
” २.	३१८८७
” २.	६२१७७
त्रेता २.	२११९१
” २.	३११६२
” २.	६२१७७
त्रेधा ४.	८१८२०
त्रेधस् ४.	८१८२०
त्रैपुर १ ब.	३११३६
त्रैवृत् ३.	४३१९९
त्रैपुटम ३.	८१११६
त्रैहोत्र ३.	३१६९१
त्रोटि २.	२३१५०
व्यश्रा २.	३३११३७
व्यूषण ३.	३१८८०
त्वक्क्षीरा २.	३१८१०
त्वक्त्र ३.	३१७१५२
त्वक्पत्र ३.	३१८१०४
त्वक्सार १.	३३१२२५
त्वग्गन्ध १.	३३३३६
त्वग्ज ३.	४३११७
त्वग्बल ब १.	३१७१८३
त्वच् २.	३३३१३
” २.	४१४१०३
” २.	८१२२०
” २.	८१६१२
त्वच १. २.	३३३१३
” ३.	३१८१०४
त्वचिसार १.	३३३२१५
त्वरा १.	३१९८९
त्वरित १. २. ३.	५११२४

[ दक्षिणाशारत ]

त्वरी २.	३१९८९
त्वष्ट १. २. ३.	५१११११
त्वष्टृ १.	१३१७
” १.	३१९३४
” १.	६११२५
त्वाष्ट्र १.	३१६१०८
त्वाष्ट्रक १.	३१८४२
त्वाष्ट्री २.	२११२३
त्विष् २.	४३११५०
” २.	८२११८
त्विषाम्पति १.	२१११२
त्सस् १.	३१७१६८
द	
दंश १.	२३१४५
” १.	४११९०
दंशन ३.	३१७१५२
दंशबन्धन ३.	४११३९
दंशालालिक १.	३१११०
दंशित १. २. ३.	३१७१४२
दंशी २.	२३१४५
दंष्ट्रा २.	४११८९
दंष्ट्रिन् १.	६११४०
दक ३.	४२२२
दक्ष १.	२३११३
” १. २. ३.	५१११९
” १. २. ३.	५११५४
” १. २. ३.	५११३७
दक्षकन्या २.	८२१७
दक्षवाच् १. २. ३.	
दक्षा २.	३१११
दक्षाध्वराराति १.	१११४१
दक्षिण १. २. ३.	५१२२०
” १. २. ३.	७११४५
दक्षिणस्थ १.	३१७१३८
दक्षिणाधिप १.	१२१३५
दक्षिणानल १.	१२१२३
दक्षिणापथ १.	३११३२
दक्षिणायन ३.	२११८९
दक्षिणाशारत १.	३१६१५२

[ दक्षिणैर्मन् ]

दक्षिणैर्मन् १.	३११४०
दक्षिणैस्थ १.	११११३८
दधान्न ३.	४३१७६
दण्ड १.	३१६१८
” १.	३१७४६
” १.	६११८८
दण्डक ३.	२११४२
” १ ब.	३११३३
दण्डधर १.	१२१३३
दण्डनीति २.	३१६३०
दण्डपञ्चासन १.	३१६२२८
दण्डपाल १.	३१७२१
दण्डपाशिक १.	३१७२०
दण्डवत् १. २. ३.	
” १.	५१११८
दण्डाजिन ३.	३१६१९५
दण्डासन ३.	३१६२२६
” १.	३१७१८१
दण्डाहत ३.	३१८१४८
दण्डिक १.	३१७१८१
” १. २. ३.	
” १.	५१११८
दण्डिका २.	३१९१२९
दण्डिन् १.	२३१२५
” १. २. ३.	
” १.	५१११८
” १.	६११२६
दण्डोत्पल १.	३३११०६
दत्तात्रेय १.	१११३१
दद २.	४११२२५
ददुघ्न १.	३३११५८
ददुज ३.	३१८१३५
ददुण १. २. ३.	४११४५
ददुनाशिनी २.	३३११०३
ददुमत् १.	४१११४५
दधि ३.	३१८१०९
” ३.	३१८१३९
दधिहीर ३.	३१६१९
दधित्थ १.	३३३३२
दधिकल १.	३३३३२
दधिबुस ३.	३१८१४२

शब्दानुक्रमिका

दधिमण्डक ३.	३१८१४४
दधिसुख १.	३१४४०
दधिसक्तु १.	४३१७१
दध्यमल १.	४३१९७
दध्याज्य ३.	३१६९९
दध्याली २.	३३११४३
दन्त १.	४११८८
” १.	६११२६
दन्तच्छद १.	४११८७
” १.	८१११३
दन्तधावन १.	३३३३३
दन्तबीज १.	४२१४७
दन्तभाग १.	३१७८१
दन्तवस्त्र ३.	४११८८
दन्तवेष्ट १.	३१७११०
दन्तशठ १.	३३३३२
” १.	३३३३५
” १.	३३३३७
” १. २. ३.	८११५९
दन्तशठा २.	३३३१६३
दन्ताली २.	३१७११२
दन्तावल १.	३१७६१
दन्तिका २.	४३१५३
दन्तिन् १.	३१७६०
दन्तुर १. २. ३.	५१११९
दन्तोलखलक १. २. ३.	
” ३.	३३३३२
दन्त्य १. २. ३.	५१११७
दन्दशूक १.	४११४
” १.	४११४०
दध्र १. २. ३.	५११३६
दम १.	३१७४६
” १.	५२१२७
दमण्डक १.	३१५९
दमथ १.	५२१२७
दमनक ३.	३३३१२३
दमयन्तिका २.	३३३१८
दमित १. २. ३.	
” १.	५१११४
दमुनस् १.	१२११८
दम्पति १ द्वि.	४११४८

[ दलकूर्चिका ]

दम्भ १.	३३३१९५
दम्भोलि १.	१२११३
दम्य १.	३३३५४
दया २.	३३३१९२
दयालु १. २. ३.	५१३३९
दयित १. २. ३.	५१३७०
दूर १. ३.	६१३३९
” १. २. ३.	८१३३७
दरण १.	२३३२५
दरथ १.	७१३३१
दरद २.	६२११८
दरिणि १. २.	३१८२४
दरित १. २. ३.	५१३१८
दरिद्र १. २. ३.	५१३५९
दरी २.	३२१६
” २.	८१३३४
दर्वर १.	३१७७४
” १.	३१९१२४
दर्वुरीक १.	८१३२४
दर्पक १.	११३२७
दर्पण १.	४३३१६२
दर्भ १.	३३३२२७
” १.	३३३२२७
” १.	३३३२२९
दर्व १.	१३३३
दर्वि १.	२३३१०
” २.	४३३१६३
दर्वितुण्ड १.	२३३१०
दर्विदा २.	२३३१०
दर्वी २.	३३३१०१
दर्वीकर १.	४११७
” १.	४११८
” १.	४१११०
” १.	४११११
दर्श १.	२११७०
दर्शक १.	३१७२४
दर्शन ३.	३१७१७
दर्शनी २.	४३३१६
दल ३.	३३३१६
” १.	६१३३९
दलकूर्चिका २.	३३३१२०८



[ दलत् ]

दलत् १.	४११४६
दली २.	८११७
दव १.	११२२१
” १.	६११२७
दवधु १.	४११२२
दश १ र. ३. ब.	४११२१
दशन १.	४११८८
दशनोच्छिष्ट १.	८११५२
दशपुर ३.	३११२०१
दशबल १.	१११३३
दशवाहु १.	१११४७
दशम १. र. ३.	५११२०
दशमिन् १. र. ३.	५११४४
दशमीस्थ १. र. ३.	८११७
दशरथात्मज १	१११२२
दशा १ ब.	४११६१
” २.	४११५३
” २.	५१२१२
दशाङ्गल १. र. ३.	३११५३
दशानाह १.	३११६१
दशार्ण १ ब.	३११३७
दशान्यय १.	१११४७
दशारव १.	११२४२
दशास्य १.	११२४२
दशोरक १ ब.	३११३८
दस्यु १.	३१११२
” १.	३११२५
” १.	३११४०
” १.	३११५६
दस्युजाति २.	३११२०८
दत्त १ द्वि.	११३१६
दहन १.	११२१५
” १.	५१३८
दहर १. र. ३.	५११३६
दह १. र. ३.	५११३६
दा २.	३१७५२
दाक्षायण ३.	३१२१९
दाक्षायणी २.	८१२१६
दाक्षाय्य १.	३१३३०

वैजयन्तीकोषः

दाक्षिणात्य १.	३१३२२०
दाक्षी २.	३१४४३
दाक्षीपुत्र १.	३१६१५४
दाडिम १. र. ३.	३१३७२
” १. र. ३.	८१२३८
दाण्डपाता २.	२११७५
” २.	८१२१६
दाण्डाजिनिक १. र. ३.	५१२२३
दात १. र. ३.	५११०२
दात्यूह १.	२१३१२
” १.	२१३३६
दात्र ३.	३१८३०
दाधिक १. र. ३.	४१२९५
दान ३.	३१६६३
” ३.	३१६११८
” ३.	६१३१५
दानव १.	११३१९
दानवाञ्जन ३	३१३१२२
दान्त ३.	३१३१२३
” १. र. ३.	५१११४
दान्ति २.	५१२२७
दामन् २. ३.	३१९२९
” २. ३.	८१२३२
दामनी २.	३१९२९
दामा २.	३१९२९
दामाञ्जन ३.	३१७११२
दामोदर १.	१११२५
दाय १.	६११२६
दायाद १.	७११३०
दार ३.	४१२३९
” १ ब.	४१२३५
दारक १. र. ३.	५१२१
दारद १ ब.	३१२१७
” १.	३१२४४
दारपत्र १.	४१३७१
दारसङ्ग्रह १.	३१६५४
दारित १. र. ३.	५११११
दारिपत् १.	३१८२६
दारु ३.	३१३१३

[ दिग्वासस ]

दारु ३.	३१३७१
दारुक १.	१११२६
दारुकण्टक ३.	२१२२७
दारुण १. र. ३.	३१९७९
” ३.	५१३५
दारुतक्षणी २.	३१९३६
दारुफला २.	३१३१८१
दारुहरिद्रा २.	३१३२१२
दारुहस्तक १.	४१३१६३
दारुर् ३.	३१११६
दारुण्ड १.	२१३३८
दारुवाघाट १.	२१३३३
दारुविका २.	३१२४३
” २.	३१३११६
दार्वी २.	३१३२१२
दाल ३.	३१८१३५
दालिम १.	११२१६
दाव १.	६११२७
दाश १.	३१९१२
दाशरथि १.	१११२०
दाशार्ह १.	१११२५
दाशोरक १.	३१४१७
दास १.	३१९१२
दासमोचित १.	३१९१४
दाससूनु १.	३१९१३
दासी २.	३१३१११
” २.	३१३१९०
” २.	४१२२६
दासीसभ ३.	८१२२०
दासेय १.	४१२४३
दासेर १.	४१२४३
दिकरी २.	४१२८
दिगन्त १.	२१११६
दिग्गन्त १. र. ३.	५११५५
दिग्गज १.	२११८
दिग्ध १.	६१५४१
दिग्भव १. र. ३.	४१२१६
दिग्युग्म ३.	२११७
दिग्वासस १.	१११४६

दिङ्मण्डल ]

दिङ्मण्डल ३.	२११६
दिङ्मध्य ३.	२११७
दिङ्मार्ग १.	४१३१७
दिधिषु १. र.	७१५४७
दिधिषूपति १.	३१६४३
दिन ३.	२११५६
दिनत्रयिन् १.	३१६४१
दिनप्रणी १.	२१११०
दिनम्मन्या २.	२११५८
दिनादि १.	२११६४
दिव २.	११११
” २.	८१२१७
दिवस १. ३.	२११५५
दिवस्पति १.	११२१
दिवा ४.	८१८७
दिवाकर १.	२१११०
दिवाकीर्ति १.	८१२२४
दिवाचर १.	२१११०
दिवाटन १.	२१३१५
दिवाभीत १.	८१२२४
दिविषद् १.	१११३
दिवौकस् १.	१११३
” १.	७१३३०
दिव्य ३.	२१११
” ३.	३१३२०४
” ३.	३१८१२
” ३.	३१९११०
” ३.	८१३१८
दिव्यकालिनी २.	४१११७
दिव्येलक १.	४१११५
दिव्येलक १.	४१११७
दिश २.	२११२
” २.	४१३१५
दिशा २.	२११२
दिशान १.	३१६२२
दिश्य १. र. ३.	५१११६
दिष्ट १.	२११५२
” ३.	२१२२५
” ३.	३१६१८९
” ३.	४१३११५
दिष्टान्त १.	३१३२०१

शब्दानुक्रमणिका

दिष्टि २.	३११५३
” २.	६१२१९
दिष्ट्या ४.	८१७२१
” ४.	८१८१७
दिहण्ड १ ब.	३११२४
दीक्षणीयेष्टि २.	३१६८७
दीक्षा १.	३१६८७
दीदिवि १.	२११३४
” १. र.	४१३७६
दीधिति २.	२११२२
दीन १.	३१३७०
” १.	३१३२२३
” १. र. ३.	५११६०
दीनवादिन् १. र. ३.	५११४७
दीनार १.	५११४१
दीप १.	४१३१६१
दीपक १.	३१९४१
” १. र. ३.	७१५४७
दीपन १.	३१३१०
दीपवल्ली २.	४१३१६०
दीपवृत्त १.	४१३१६१
” १.	८१६२०
दीपिका २.	४१३१६०
दीस १. र. ३.	८१११४
दीसा २.	२१२४४
दीसि २.	२११२२
दीप्य १.	३१८१३
दीप्यका २.	३१८१०२
दीर्घ १. र. ३.	५११८१
दीर्घकोशिका २.	४११५८
दीर्घदण्ड १.	३११५९
( दिव्यदण्ड )	
दीर्घदर्शिन १.	३१६२३५
दीर्घदृष्टि १. र. ३.	५११५३
दीर्घनादिन् १.	३११६९
( रतिकील )	
दीर्घनिद्रा २.	३१६२०१
दीर्घनिर्वश १.	३१७१६३
दीर्घपत्र ३.	३१३२०६

[ दुर्ग ]

दीर्घपत्री २.	३१३१९६
दीर्घपर्णी २.	३१३१७४
दीर्घपाद १.	२१३३१
दीर्घपृष्ठ १.	४११६
दीर्घफला २.	३१३१६०
दीर्घरोमक ३.	३१३२०२
दीर्घरोमन् १.	३१३७
दीर्घवल्ली २.	३१६१३३
दीर्घवाच् १.	२१३१३
दीर्घवृन्त १.	३१३१८
” १.	३१३२१८
दीर्घशूक १.	३१८६१
दीर्घसूत्र १. र. ३.	५११७२
दीधिका २.	४१२१६
दीर्णाङ्ग १.	२११२०
दीर्णी २.	२११२
दुःख १. र. ३.	११२३९
” ३.	३१६१८७
” १. र. ३.	५११४४४
दुःखदोष्टा २.	३१४४९
दुःकूल ३.	४१३१२२
” ३.	७१३१८
दुग्ध ३.	३१८१४५
दुग्धतालीय ३.	८१३१४
दुद्रुम १.	३१३२०५
दुध १.	११२२१
दुन्दु १.	११२२६
दुन्दुभ ३.	३१३२००
दुन्दुभि १.	११२४५
” १.	३१९१३३
” १. र.	७११४८
दुर् ४.	८१७४
दुर्ध्व १.	३११५०
दुराचार १. र. ३.	३१६१२
दुरालभा २.	३१३१२५
दुरासद १.	११२१६
दुरित ३.	३१६१६८
दुरोदर १.	८१११०
दुर्ग ३.	३१७१६



[ दुर्ग ]

दुर्ग ३.	३।७।४९
" १. २. ३.	६।५।४१
दुर्गात १. २. ३.	५।४।६०
दुर्गाति २.	१।२।३७
" २.	७।२।१०
दुर्गन्ध ३.	३।८।१२५
" १.	५।३।५५
दुर्गम १.	३।२।१
दुर्गा २.	१।१।६२
दुर्जन १.	५।४।२५
दुर्दर्शा २.	३।६।४९
दुर्दिन ३.	२।२।८
दुर्नामन् २.	४।१।५८
" ३.	४।४।१३१
दुर्बल १. २. ३.	५।४।५
दुर्बाल १. २. ३.	५।४।५५
दुर्भंग १. २. ३.	५।४।६९
दुर्मनस् १. २. ३.	५।४।३४
दुर्मुख १. २. ३.	५।४।४६
दुर्योधनासन ३.	३।६।२२७
दुर्वर्ण १. २. ३.	७।५।४५
दुर्वासस् १.	३।६।१५६
दुर्विध १. २. ३.	५।४।६०
" १. १. ३.	७।४।१३
दुर्विनीतक १. २. ३.	३।७।१०७
दुर्हृद १.	३।७।४२
दुल १.	५।३।५३
दुली २.	४।१।५१
दुश्चर्मन् १. २. ३.	५।४।५५
दुश्चयवन १.	१।२।१
दुष्कृत ३.	३।३।१६८
दुष्टसान्नि १. २. ३.	३।८।९
दुष्ट ४.	८।८।१३
( दुष्ट )	
दुष्प्रधर्षिणी २.	३।३।१०२
दुष्पम ४.	८।८।१३
दुस्पर्श १.	३।३।१२६
दुस्पर्शा २.	३।३।१०६

वैजयन्तीकोषः

दुहितृ २.	४।४।४०
दूत १.	२।१।३४
" १.	३।७।२९
दूती २.	४।४।२४
दून १. २. ३.	५।४।९८
दूर ३.	५।४।१४२
दूरदर्शिन १.	२।३।३०
" १.	३।६।२३५
दूर्वा २.	३।३।२३२
दूषक १.	३।७।४१
दूषणारि १.	१।१।२१
दूषिका २.	३।६।४७
" २.	४।४।९५
दूष्य ३.	४।३।१२५
" ३.	४।४।११८
दूष्याङ्गी २.	३।३।३४
दृक्छन्द १.	४।४।९५
दृक्श्रवस् १.	४।१।६
दृगध्यक्ष १.	२।१।१३
दृगायुध १.	१।१।४३
दृग्लोमन् ३.	४।४।९५
दृढ ३.	३।२।३३
" ३.	३।३।२३२
" १.	५।३।५
" १. २. ३.	५।४।८४
" १. २. ३.	५।४।३२
" १. २. ३.	५।४।३७
" १. २. ३.	६।४।८
दृढच्युत् १.	३।६।१५७
दृढदला २.	३।३।२२४
" २.	३।३।२३०
दृढा २.	३।३।१७७
दृढि १.	४।३।५९
दृढ्य १. २. ३.	५।४।११०
दृश् २.	४।४।९४
" २.	८।५।३७
" २.	८।९।२
दृशान १.	२।१।१४
दृशीकु १.	३।६।८१
दृश्य १. २. ३.	६।५।४२
दृष्टपुत्र १.	४।३।१६३

[ देवभिन्न ]

दृष्ट २.	३।२।८
" २.	४।३।१६३
दृष्ट ३.	३।७।१४
दृष्टान्त १.	७।१।३२
दृष्टि २.	४।४।९४
" २.	६।२।१८
दृष्टिवन्ध १.	४।४।९२
देव १.	१।१।२
" १.	३।७।१५८
" १.	३।९।१०३
" १. २. ३.	८।९।४६
देवकुसुम ३.	३।८।१०३
देवखात ३.	४।२।५
देवगिरि १.	१।३।१२
देवच्छन्द १.	४।३।१३८
देवजगध ३.	३।३।२३४
देवजन १.	१।३।३
देवतरु १.	१।३।१४
देवता २.	१।१।५
देवतागण १.	१।३।८
देवताड १.	३।३।८६
देवतायतन ३.	४।३।२८
देवतार्चनतूर्य १. ३.	३।९।१३८
देवदारु ३.	३।३।७१
देवदाली २.	३।३।१६२
देवदण्ड १.	३।७।१७१
देवदुन्दुभि १.	१।२।७
" १	३।३।१२१
" २.	३।३।१९८
देवद्रीचीन १. २. ३.	५।४।९३
देवद्रव्य (द्र) १. २. ३.	५।४।९३
देवधान्य ३.	३।८।५७
देवधूप १.	३।३।५३
देवन् १.	४।४।३३
देवन १.	३।९।६०
देवनन्दिन् १.	१।२।९
देवप्रेष्य १.	३।५।६२
देवभिन्न १.	४।१।१४

देवभूय ]

देवभूय ३.	३।६।२३७
देवमणि १. २.	३।७।११०
देवमातृक १. २. ३.	३।१।४६
देवमारिष १.	३।३।१५१
देवमाली २.	३।३।१८४
देवयज्ञ १.	३।६।६३
देवयान १.	२।१।४५
देवयु १.	३।६।७८
देवयोनि १.	१।३।५
देवर १.	४।४।३३
देवरथ १.	३।७।१२६
" १.	३।९।६६
देवल १. २. ३.	३।६।११
देवचक्र २.	२।१।२
देवचक्र १ द्वि.	१।३।६
देवसभा २.	१।३।११
देवसिन्धु २.	४।२।२४
देवा २.	३।३।१०६
देवाग्नि १.	१।२।२२
देवाज १.	१।१।५३
देवाजीव १. २. ३.	३।६।११
देवार्ह ३.	३।२।२२
देवानामिप्रय १. २. ३.	५।४।२२
देविका २.	३।३।३४
देवी २.	३।३।११४
" २.	३।३।१३२
" २.	३।७।३१
" २.	३।९।४५
" २.	३।९।१०४
देवीकोट १.	४।३।९
देष्ट १.	४।४।३३
देश १.	३।१।२१
देशनिक ३.	४।३।११५
देशरूप ३.	३।७।४८
( देशरूप )	
देशिक १.	३।८।१३
देश १. ३.	४।४।५२
देशमर्दन १.	४।४।१३८

शब्दानुक्रमणिका

देहलक्षण ३.	४।४।५४
देहलि १.	५।३।५६
देहली २.	४।३।४४
देहवारि ३.	४।४।१२०
दैतेय १.	१।३।९
दैत्य १.	१।३।९
" १.	३।३।१७६
" ३.	३।३।२३२
दैत्यक्षय १.	४।१।१
दैत्यदेव १.	१।२।१८
दैत्यमदन १.	३।३।२०८
दैत्या २.	३।८।९८
दैत्यारि १.	१।१।१०
दैत्य ३.	३।६।१८३
दैर्घ्य ३.	५।२।५
दैव ३.	३।६।१८९
दैवज्ञ १.	३।७।२५
दैवज्ञा २.	४।१।३०
" २.	४।४।११
दैवत ३.	१।१।५
दैवपर १. २. ३.	५।४।३०
दैविक ३.	३।८।१२
दैष्ट ३.	३।६।८९
( दैष्ट )	
दोलक ३.	४।२।३९
दोला २.	३।७।३३६
" २.	३।७।३३७
दोलिका २.	३।७।३३७
दोशिशखर १.	४।४।७१
दोष १.	३।६।१९३
दोषग्रह १.	३।३।४२
दोषज्ञ १. २. ३.	४।४।१४४
" १.	७।१।३२
दोषदर्शिन १. २. ३.	५।४।३४
दोषप्रणालिका २.	५।४।११६
दोषा ४.	८।८।७
दोस् १. ३.	४।४।०१
" १. ३.	८।९।३१
दोहल ३.	३।४।६१

दोहल ३.	३।६।१८०
दोन्दुभि २.	३।६।१९५
दोन्दुभी २.	३।६।५६
दौर्मत्य ३.	५।२।४
दौवारिक १.	३।७।२४
दौष्यन्त १.	३।५।६७
" १.	३।५।७२
दौहित्र १.	४।४।४५
दौहद ३.	३।६।१८०
द्यावापृथिवी २.	३।१।५
द्यु १.	२।१।५६
" १.	८।१।६०
द्युचर १.	१।३।४
द्युमणि १.	२।१।११
द्युमत् १.	२।१।१२
द्युमयी २.	२।१।२३
द्युमन ३.	३।८।७३
" ३.	८।३।१५
द्युवन् १.	६।१।२७
द्युवर्धकि १.	१।३।६
द्युत १. ३.	३।९।५९
द्युतकारक १.	३।९।५९
द्युतकृत् १.	३।१।५८
द्यो २.	१।१।१
" २.	८।२।१७
द्योत १.	१।२।३१
द्योतन ३.	७।३।१८
द्योता २.	३।६।५१
द्रक्ष्ण ३.	५।१।४८
द्रङ्ग ३.	४।३।४
द्रप्स १.	२।२।८
" ३.	३।८।१४२
द्रमिड १.	३।५।५६
द्रमिल १.	३।५।१०२
( द्रविड )	
द्रव १.	३।६।१२६
द्रवक्षेप १.	५।२।४०
द्रवण ३.	५।३।१
द्रवन्ती २.	३।३।११३
द्रविण ३.	३।८।७३
" ३.	८।३।१५

[ द्रविण ]



[ द्रव्य ]

द्रव्य ३.	६३११५
द्रव्यपद १.	५३११
द्राक् ४.	८१८११
द्राक्षा २.	३३३१८१
द्राक्षाफल १.	३३३२७
द्रागभृत ३.	४२१४
द्रावण १.	३३३४२
” १.	३१८१२४
द्राविडक १.	३३३१६७
द्राविल १.	३३३१५९
द्रु १.	३३३१४
द्रुकिलिम ३.	३३३७१
द्रुघण १.	११११९
” १.	३१७१७१
” १.	७१३३०
द्रुण ३.	३१७१७२
द्रुणा २.	३१७१७८
द्रुणी २.	४११५१
द्रुत ३.	३१९१२३
” १. २. ३.	४३३९५
” १. २. ३.	५३३१२४
” १. २. ३.	६३३८
द्रुति २.	५३३११
द्रुम १.	३३३१४
” १.	३३३८५
द्रुमश १.	४३३१७७
द्रुमामय १.	४३३१५३
द्रुवय ३.	५३३१६४
द्रुह १.	३३३१२६
द्रुहिण १.	११११७
” १.	७१३३२
द्रुण १.	४११३२
द्रुकाण १.	२११५१
द्रुण १.	२३३१७७
” १. ३.	५३३१५५
” १.	५३३१६३
” १. ३.	६३३१४०
द्रुणक्षीरा २.	३३३१५०
द्रुणदुग्धा २.	३३३१५०
द्रुणपुष्पिका २.	३३३१२४
द्रुणमुख ३.	४३३३

वैजयन्तीकोषः

द्रोणिका २.	३३३१२४
द्रोणी २.	४३३१५
” २.	६३३१८
द्रोह १.	३३३१५
द्रोणिक १. २. ३.	३३३१२१
द्रुद्ध ३.	५३३१५५
” ३.	६३३१६
द्रुय ३.	५३३१५५
द्रादश १. २. ३.	५३३१२१
द्रादशात्मन् १.	२३३१५०
द्रादशाह १.	३३३१४४
द्राप १.	२३३१९२
” ३.	३३३१६२
” १.	७३३३०
द्रार् २.	४३३१४२
” २.	८३३१६
द्रार ३.	४३३१४२
द्रारका २.	४३३१६
द्रारपटल ३.	४३३१५०
द्रारपाल १.	३३३१२४
द्रारबन्ध १.	४३३१४३
द्रारयन्त्र ३.	४३३१४९
द्रारवती २.	४३३१६
द्रारवतीपद ३.	३३३११९
द्रास्थ १.	३३३१२४
द्रिः(-स्) ४.	८३३१६
द्रिक १.	२३३१५५
” ३.	३३३११०
द्रिकालिक १. २. ३.	३३३१२८
द्रिखण्डक १.	४३३१२७
द्रिगुणाकृत १. २. ३.	३३३१२३
द्रिज १.	३३३३३
” १.	४३३१७८
द्रिजकुत्सित १.	३३३१५५
द्रिजन्मन् ३.	३३३१५७
( विजन्मन् )	
” १.	७३३१३१
द्रिजपोत १.	३३३११
द्रिजाति १.	७३३१३१

[ द्वैगुणिक ]

द्विजायनी २.	३३३१२०
द्विजालय ३.	४३३१८६
द्विजिह्व १. २. ३.	७३३१४५
द्वितय ३.	५३३१५५
द्वितीय १. २. ३.	५३३१२०
द्वितीया २.	२३३१७०
” २.	४३३१३४
द्वितीयाकृत १. २. ३.	३३३१२३
द्वित्र १. २. ३.	५३३१२५
द्विधा ४.	८३३१२०
द्विधागति १.	४३३१४७
द्विनग्ननक १. २. ३.	५३३१५५
द्विप १.	३३३१६०
” १.	८३३१५५
द्विपद १.	१३३११९
द्विपाद् १.	३३३११
द्विसुखी २.	४३३१२०
द्विसुष्टिक १.	५३३१५२
द्विरद १.	३३३१६०
द्विरसन १.	४३३१४
द्विरेफ १.	२३३१४२
द्विवेदिनी २.	२३३१७६
द्विष् १.	३३३१४१
द्विषत् १.	३३३१४०
द्विषन्तप १. २. ३.	५३३१६९
द्विकृष्ट १. २. ३.	३३३१२३
द्विसीत्य १. २. ३.	३३३१२३
द्विहव्य १. २. ३.	३३३१४५
द्विहायनी २.	३३३१४५
द्वीप १. ३.	४३३१३३
द्वीपवत् १. २.	८३३१२९
द्वीपिन् १.	३३३१३
द्वेधा ४.	८३३१२०
द्वेषण १.	३३३१४१
द्वेषिन् १.	३३३१४१
द्वेष्य १. २. ३.	५३३१६९
द्वैगुणिक १. २. ३.	३३३१८८

[ द्वैत ]

द्वैत ३.	५३३१५५
द्वैध ३.	३३३१६
द्वैधम ४.	५३३१२०
द्वैप १. २. ३.	३३३१२८
द्वैपायन १.	१३३१३२
द्वैमातुर १.	१३३१५४
द्वैवाचित ३.	५३३१६२
द्वैवाढक १. ३.	५३३१५५
द्वैवायोग ३.	२३३१९२
ध	
धटिक १. ३.	५३३१६०
धटिनी २.	३३३११८
धन ३.	३३३१७३
धनजय १.	८३३१२४
धनद १.	१३३१५६
धनवत् १. २. ३.	५३३१५७
धनाध्यक्ष १.	१३३१५६
धनाया २.	३३३१८०
धनिन् १.	१३३१५६
” १. २. ३.	५३३१५७
धनिष्ठा २ ब.	२३३१४१
धनीयिका २.	३३३१४९
धनु (धनुःपट) १.	३३३१५७
” १. २.	३३३१७२
” २.	६३३१९
धनुर्ग्रह १.	३३३१५३
धनुर्दण्ड १.	३३३१५७
धनुर्धर १. २. ३.	३३३१४३
धनुर्वेद १.	३३३१३०
धनुश्श्रेणी २.	३३३११४
धनुष्पाणि १.	१३३१२२
धनुष्मत् १. २. ३.	३३३१४३
धनुस् ३.	३३३१५५
” ३.	३३३१५७
” १. ३.	३३३१७२
” १.	८३३१५५
धनोत्पत्ति २.	३३३१४४
धन्य १. २. ३.	५३३१५६
धन्या २.	३३३१०४

शब्दानुक्रमणिका

धन्या २.	३३३१४९
धन्याक ३.	३३३१५०
धन्येय ३.	३३३१५०
धन्वन् १.	३३३१४२
” ३.	३३३१७२
धन्वन्तर ३.	३३३१५७
धन्वन्तरसहस्र ३.	३३३१६२
धन्वन्तरि १.	८३३१२५
धन्वयास १.	३३३१२६
धन्ववन १.	३३३१३३
धन्विन् १. २. ३.	३३३१४३
धमन १.	३३३१२८
” १.	४३३१९१
धमनी २.	३३३१०१
” २.	४३३११६
धम्मिल्ल १.	४३३१००
धयन ३.	४३३१०४
धर १.	३३३१९
धरण ३.	५३३१४४
धरणी २.	३३३१२
धरणीधर १.	१३३११३
धरा २.	३३३१२
” २.	३३३१३१
धरासुत १.	२३३१३१
धरित्री २.	३३३१२
धरीक १.	४३३१२८
धरुण १.	७३३१३२
” ३.	८३३११८
धर्म १. ३.	३३३१६८
” १.	३३३१५८
” १.	५३३११
” १. २. ३.	६३३१४२
धर्मद्वी २.	४३३१२५
धर्मपत्तन ३.	३३३१७९
धर्मपाल १.	३३३१५८
धर्मभ्रातृ १.	३३३१२४
धर्ममाणव १.	३३३१२३
धर्मराज १.	१३३१३३
” १.	१३३१३५
धर्षण ३. २.	७३३१४८

[ धारण ]

धर्षणी २.	३३३१४६
” २.	७३३१४८
धव १.	३३३१९७
” १.	४३३१३७
” १.	६३३१२७
धवल ३.	५३३११०
” १. २. ३.	७३३१४९
धवला २.	३३३१४३
धवित्र ३.	४३३१५९
धातकि २.	३३३१९७
धातु १.	४३३१११
” १.	६३३१२८
धातु १.	१३३१६
” १.	८३३११
धातुपुष्पिका २	३३३१९७
धात्री २.	३३३१२
” २.	३३३१७७
” २.	६३३११९
धानका २.	५३३१४०
धाना २.	३३३१४९
” १ ब.	४३३१७१
” २.	६३३११९
धानी २.	३३३१६०
धानुष्क १. २. ३.	३३३१४३
धान्य ३.	३३३१३१
” ३.	३३३१५१
धान्यकोष्ठ १.	४३३१६४
धान्यमञ्जरी २.	३३३१६४
धान्यराशि १.	३३३१६५
धान्यवृद्धि २.	३३३१५
धान्या २.	३३३१४९
धान्यामल ३.	४३३१८३
धान्योत्क्षेपण ३.	५३३१६१
धामन ३.	४३३१७७
” ३.	६३३११६
धामार्गव १.	३३३११५
” १.	३३३१६२
धारकदाह ३.	४३३१४०
धारका २.	४३३१६३
धारण ३.	५३३१५९



[ धारणा ]

धारणा २.	३१६२३१
" २.	३१८१५
" २.	४३१४०
धारणी २.	३३३१७८
धारभार ३.	५११६१
धारा २.	३१७११८
" २.	३१७१८६
" २.	४२३३०
" २.	६२३२०
धाराग्र ३.	७३३१८
धाराट १.	७१३३३
धाराधर १.	२३२११
धारिका २.	२११५४
धारोष्ण ३.	३१८१४६
धार्तराष्ट्र १.	२३३१७
धार्मिक १.	३१६२३
" १.	३१७२०
धावन २. ३.	७५४७९
धावनी २.	३३३१३६
धिक् ४.	८१७५
धिवकृत १. २. ३.	५४१७१
" १. २. ३.	५४११०
धिविक्रया २.	५२३२१
धिग्वन १.	३१५१७
धिग्वनक १.	३१५६
( धिश्चनक )	
धिषण १. २.	७५५५०
धिष्य ३.	२१३३८
" १. ३.	६५४३३
धी २.	३१६१६३
धीकर १.	३१९६
( अधीङ्गार )	
धीकर्मिक १.	३१७२०
धीता २.	६२३२०
धीति २.	४३३१०४
धीमक ३.	३२३३३
धीमत् १.	३१६२३४
धीमती २.	४३३२१
धीर १. २. ३.	३१७१५०
" १. २. ३.	५४३२०

वैजयन्तीकोषः

धीर १. २. ३.	५४३५२
" १. २. ३.	६५४४४
धीरा २.	३३३१३१
धीवर ३.	३२३३३
" १.	३१५२६
" १.	३१५८२
" १.	३१९४२
धुत्तिम ३.	३१८१४५
धुत १. २. ३.	५४३५५
धुत्तर १.	३३३७६
धुनी २.	४२३२३
धुर् २.	३१७१३०
" २.	८२३१७
धुरण १.	५११४३
धुरन्धर १.	३३३९४
" १. २. ३.	३४३६७
धुरीण १. २. ३.	३४३६७
धुर्धर १.	३३३७७
धुर्य १. २. ३.	३४३६७
धुर्यावकर्तिक १. २. ३.	३३३१३३
धुर्वी २.	३१७१३०
धुस्त्र १.	३३३७६
( धुत्तर )	
धुङ्कणा २.	२३३१८
धूत १. २. ३.	५४११०१
" १. २. ३.	६४३८
धूप १.	१२३२८
धूपायित १. २. ३.	५४३९८
धूपित १. २. ३.	५४३९८
धूम १.	१२३२८
" १.	८१६५
धूमक १. २. ३.	२३३१०
धूमकेतु १.	१२३१६
" १.	८१३२५
धूमज १ ब.	२१३३७
धूमयोनि १.	२३३११
धूमल १. ३.	३१९१३८
" १.	५४३२१
धूमवर्णा २.	१२३३०

[ धैवत ]

धूमिका २.	२३३१०
धूमोर्णा २.	१२३३६
धूम्या २.	५१११४
धूम्र १.	५३३८
" १.	५३३२१
धूम्रकर्ण १.	३१६६६
धूम्राट १.	२३३२७
धूर्जटि १.	१११४०
धूर्त ३.	३२३३६
" १.	३३३६०
" १.	३३३६१
" १.	३३३७६
" ३.	३१८११५
" १.	३१९५८
" १. २. ३.	५४३२४
धूर्तार १.	३३३३०
धूलि २.	३१८२५
" २.	८६१७
" १. २.	८९२२६
धूलिजङ्घ १.	२३३१६
धूलिध्वज १.	१२३४९
धूलिभक्त ३.	३३३५६
धूलिलुटित ३.	३१७१११
धूलीकदम्ब १.	८११५३
धूसर १.	३१२२७
" १.	५३३१४
धृति २.	१११४७
" २.	३३३१६६
" २.	३१७२०८
" २.	६२३२०
धृष्ट १. २. ३.	५४३१७
धृष्टा २.	३३३५०
धृष्टु १. २. ३.	५४३१७
" १. २. ३.	६४३९
धेनु २.	३३३५०
" २.	३१७७०
धेनुप्या २.	३३३५०
धेनुक ३.	५१११०
धेनुकी २.	२११७७
धैर्य ३.	३१७२०८
धैवत १.	३१९१३२

[ धारण ]

धारण १.	२३३६
" ३.	३१७१२३
धोरी २.	३३३५७
धौत १. २. ३.	३१७१९७
धौतकौशेय ३.	४३३११८
धौतयुग्म ३.	४३३१२०
धौरण १. २. ३.	३१७१२१
धौरित १. २. ३.	३१७१२१
धौरितक १. २. ३.	३१७११८
" १. २. ३.	३१७१२१
धौर्य १. २. ३.	३१७१५७
धौर्य १. २. ३.	३१७१२१
ध्यान ३.	३३३२२२
ध्यामक ३.	३३३२३४
ध्रुव १.	३१७१३१
" १. २. ३.	६५४४४
ध्रुवा २.	३३३१६६
" २.	३३३१००
" २.	३३३१००
ध्रुणा २.	२३३३२
ध्रुव १. ३.	३१७१३३
" १. ३.	६५४४३
" १. ३.	८१६५
ध्रुवप्रहरण ३.	१२३४८
ध्रुविन् १.	३१९४४
ध्रुविनी २.	३१७५५
ध्रुवि १.	२३३११
ध्रुवस्त १. २. ३.	३१७२१९
" १. २. ३.	५४३१०२
ध्रुवाङ्ग १.	२३३१७
" १.	६१३२७
ध्रुवाङ्गी २.	२३३१४
ध्रुवान १.	२३३११
ध्रुवानका २.	५११४९
ध्रुवान्त ३.	२११६४
ध्रुवान्तमणि १.	२३३४७
न	
न ४.	८१७५
नःकुद्र १. २. ३.	५४३११

शब्दानुक्रमणिका

नकुटक ३.	४३३९१
नकुल १.	४३३२७
नक्तक १.	२३३२३
" १.	५३३१३०
नक्तखर १.	२३३२२
नक्तम् ४.	८१८७
नक्तमाल १.	३३३६२
नक्त १.	४३३५३
नक्तत्र ३.	२३३३८
नक्तत्रकालिक १. २. ३.	३३३१२७
नक्तत्रनेमि १. २.	८१३२६
नक्तत्रमाला २.	३१७८७
" २.	४३३१४२
नख ३.	३१८१०१
" १. ३.	४३३७५
नखर १. ३.	४३३७५
नखरायुध १.	४३३७२
नखशस्त्र १.	८६३२३
नखायुध १.	४३३७२
नखारुस ३.	४३३११७
नग १.	३३३५
" १.	३१८१०४
" १.	८११५८
नगर ३.	४३३११
नगरद्वारकुट्टक १.	४३३१५
नगरी २.	४३३११
नगाधारा २.	३३३३३
नग्न १.	३३३७३
" १. २. ३.	५४३१५
" १.	६१३३१
नग्नहृ १.	३१९५०
नगना २.	४३३१०
नगनाट १. २. ३.	५४३१५
नचक्र १.	३३३१९९
नट १.	३३३६९
" १.	३१५५५
" १.	३१५१०३
" १.	३३३६२
नटन ३.	३३३७८

[ नन्दिकेश्वर ]

नटभूषण ३.	३३३१३३
नटिति २.	३३३१०८
नटी २.	३१८१००
नटोत्साहन ३.	३३३१३९
नट्या २.	५१११४
नटवत् १. २. ३.	३३३१४४
नटवल १. २. ३.	३३३१४४
नण्ड १.	३३३६३
नत १. २. ३.	५४३८३
" १. २. ३.	५४३१२३
" १. २. ३.	६४३९
नतजालु २.	३३३१४७
नतनास १. २. ३.	५४३१२
नद १.	४३३२९
नदनु १.	२३३२२
नदी २.	२३३२२
" २.	८१९३
नदीभव ३.	३१८१२०
नदीमातृक १. २. ३.	३३३१४७
नद्ध १. २. ३.	५४३९७
नद्धी २.	३१९४४
ननन्द २.	४३३२७
ननान्द २.	४३३२७
ननु ४.	८१७२२
" ४.	८१८२
नन्दक १.	११११७
नन्दथु १.	३३३१८८
नन्दन ३.	१२३१०
" १.	३३३१०२
" १.	४३३३९
" १.	८१९१४
नन्दनीनन्दन १.	३३३१५८
नन्दयन्त्री २.	१११६०
नन्दा २.	१११६०
" २.	३३३१९७
नन्दि २.	३३३१८८
नन्दिक १.	३३३१५८
नन्दिका २.	१२३११
नन्दिकेश्वर १.	१११५१



[ नन्दिन् ]

नन्दिन् १.	१११५१
" १.	३१८३५
नन्दिनी २.	१११६०
" २.	३३१७८
" २.	३८८८८
" २.	४३१११
" २.	४४२२७
नन्दिवर्धन १.	१११४४
" १.	२११७३
नन्दिस्वरस् ३.	२११११
नन्दीचारी २.	३१११४२
नन्दीमुखी २.	३६१२००
नन्दावर्त १.	३३११९४
" १.	४३३३०
नपुंसक ३.	४४३३
नष्ट १.	४४४४५
नष्ट १.	३११६३
नभःप्राण १.	११२४८
नभस् ३.	२११११
" ३.	२११८४
नभस १.	७११३३
नभसङ्गम १.	२३३२
नभस्य १.	२११८५
नभस्वत् १.	११२५०
नभोज्ञ १.	३३३१९४
नभोजात १.	११२५०
नभ्राज १.	२१२११
नमः (नस्) ४.	८८११४
नमत ३.	४३११६६
" १.	७११३५
नमसित १. २. ३.	५४११०५
नमस्कार १.	३६३३९
नमस्कारी २.	३३३१४८
नमस्या २.	३६३३९
" २.	३६३३९
नमस्यित १. २. ३.	५४११०५
नष्ट १. २. ३.	५४१८३
नय १.	५२३३२
नयन ३.	४४१९४

[ वैजयन्तीकोषः ]

नयनोदक ३.	३१८८७
नर १.	३१५११
" १.	६११२९
नरक १.	११२३७
नरकाराति १.	१११२५
नरकीलक १. २. ३.	३६११२
नरकोलि २.	३३३८९
नरदेव १.	३७१२
नरनारायण १.	१११३०
नरवाहन १.	१२१५७
नरेन्द्र १.	३७१२
" १.	७११३७
नर्तक १.	३११६३
नर्तन ३.	३११७३
नर्तनप्रिय १.	२३३३८
नर्मदा २.	४२१२६
नर्मन् ३.	३११८८
नल १.	३३३२८
नलक ३.	४३३२५
" ३.	४४११६
नलकुवर १.	१२१५९
नलतीर ३.	४४१५९
नलद ३.	३३३२३१
नलमीन १.	४११४५
नलान्तर १.	३११६१
नलिक ३.	४३३२५
नलिन ३.	४२३३८
नलिनी २.	४२३३३
" २.	७२११०
नलिवाह १.	३७११७
नली २.	३८११००
नल्व १.	३११६०
नल्वल ३.	५११५६
नल्विक १.	३११६०
नव १. २. ३.	५४१८८
नवति २.	५११२७
नवनीत ३.	३८११३८
नवम १. २. ३.	५११२०
नवमालिका २.	३३३१८६
नवश्री १. २. ३.	४३३११९

[ नागवारिक ]

नवांशुक ३.	४३३१२०
नवीन १. २. ३.	५४१८८
नव्य १. २. ३.	५४१८८
नसिक १.	४४३३८
नश्यत्प्रसूति ४.	४४३२०
नश्वर १. २. ३.	२४११९
नष्टा २.	३६१४८
नस २.	३१५२३
नस्त ३.	४४११४०
नस्तित १. २. ३.	३४१५७
नस्य ३.	४४११४०
नस्योत १. २. ३.	३४१५७
नहुष १.	३१५११
नाक १.	१११११
" १.	६११२९
नाकु १.	३११४८
नाकुल ३.	३६१२१८
नाकुली २.	३८१९८
नाकुसुमन् १.	४१११६
नाग ३.	३२३३०
" ३.	३२३३२
" १.	४१११४
" १.	६११३०
नागकेसर १.	३३३८२
नागजिह्वा २.	३२३१२
" २.	३३३३२९
नागजीवन ३.	३२३३१
नागदन्त १.	४३३५३
नागदन्तक ३.	३६१२१४
नागदन्ती २.	३३३१०९
नागपाश १.	३७११९६
नागबला २.	३८१६१
नागमातृ २.	३२३१२
नागर १.	३३३६१
" १. २. ३.	७५५५०
नागरङ्ग १.	३३३३६
नागराज १.	४१३३
नागरी २.	३३३३७
नागलोक १.	४११११
नागवल्ली २.	३३३१४०
नागवारिक १.	८११५३

[ नागवीथिका ]

नागवीथिका २.	२११४६
नागवृन्तिका २.	३३३१२६
नागाङ्क ३.	४३३८
नागी २.	२११६
नागोदरी २.	३७१५४
नागोद्भव ३.	३८१११८
नाटक ३.	३९१००
नाटकी २.	३९१७३
नाटिका २.	३९१००
नाट्य ३.	३२३२८
" ३.	३९१७१
" ३.	६३३१७
नाट्यधर्मिका २.	३९१७२
नाट्योक्त ३.	३९१७२
नाडिजङ्घ १.	२३३१६
नाडिन्धम १.	३९११६
नाडी २.	२११५४
नाडीम्रण १.	३८११३३
नाथ १. २.	६५४५५
नाद १.	२४११
नादेय ३.	३८१२०
नादेयी २.	३३३९६
" २.	३३३९९९
नाना ४.	८७२२
" ४.	८८१४
नानीकर १. २. ३.	५४१४८
नानीकवाच् १. २. ३.	५४१४८
नानीपात १.	४११२०
नान्दी २.	३९१६९
" २.	३९११३३
नापित १.	३९१२६
नापितकोलिका २.	४४१९६
नाभि २.	४४१६६
" १.	६१३३०
नाभिका २.	३७१३५
नाभिज १.	१११९
नाभिनाला २.	४४१९
नाभी २.	४४१६६

[ शब्दानुक्रमिका ]

नाभीद ३.	३११५
नाभील ३.	७३११९
नाम ४.	८७२३
नामकर्मन् ३.	३६३३
नामधेय ३.	३११३१
नामन् ३.	३११३१
नामवर्जित १. २. ३.	५४१२१
नामशास्त्र ३.	३६३३१
नाय १.	३२३३२
नायक १.	४३३१४३
" १. २. ३.	५४१५७
नार ३.	३१११३
नारक १.	१२३३७
" १.	१२३३८
नारकी २.	२११६
नारङ्ग १.	३३३३६
नारद १.	३३३७
नारसिंही २.	१११६४
नाराच १.	३७१८०
नाराची २.	३९११९
नारायण १.	११११०
" १. २.	८५११०
नारी २.	३३३८१
" २.	४४१४
नार्यङ्ग १.	३३३३६
नाल १. २. ३.	३८११८
" १. २. ३.	३८१६३
" १. २. ३.	४२३४२
" ३.	६३३१७
" १. २. ३.	८९३३८
नालक ३.	४३३२५
नाला २.	४२३४२
नालिका २.	३११५८
" २.	३११५८
" २.	३६३९५
" २.	३७११०
" २.	३७११७
" २.	३९११७२
" २.	७२१११
नालिकेर १.	३३३२२०

[ निकाय ]

नाली २.	३८१६३
" २.	४४१११६
" २.	८९३३८
नालीकर १. २. ३.	५४१४८
नालीकवाच् १. २. ३.	५४१४८
नावन ३.	४४११४०
नावारोह १. २. ३.	४२३१९
नाविक १.	३५३३८
" १.	३५३३०
" १. २. ३.	४२३१९
नाव्य १. २. ३.	४२३२०
नाश १.	३७२१०
" १.	६१३३१
नासत्य १ द्वि.	१३३५
नासत्यद्वय १ द्वि.	१३३५
नासा २.	४३३४०
" २.	४३३४५
" २.	४४१९१
नासाग्र ३.	४४१९२
नासारज्जु २.	३७११२
नासिका २.	४४१९१
नासिकापुट १.	४४१९१
नासिकामल १.	४४१९२
नासिक्य १ द्वि.	१३३६
नासिर १. ३.	३७२०३
नासू २.	३९११३३
नास्तिक १. २. ३.	५४३३८
नि ४.	८७५
निसन ३.	४३३१७१
निकट ३.	५४११४०
निकर १.	५११२
निकर्षण ३.	४३३३१
निकष १.	३९११९
निकषा ४.	८८११५
निकामम् ४.	४३३१०४
निकाय १.	५१११४
निकाय्य १.	४३३१८



## [ निकार ]

निकार १.	७११३७
निकारण ३.	३७१२१२
निकार्य १.	४३११८
निकाश १ २. ३.	५४१२२२
निकुञ्जिन् ३.	३६१५१
निकुञ्ज १. ३.	३२१२०
निकुरुम्ब ३.	५११२
निकुष्ट १. २. ३.	५४१७५
निकेतन ३.	४२११७
निकण १.	२११११
निकण १.	२११११
निक्षेप १.	३८११२
निखर्व ३.	५११२८
" ३.	५११३०
निखिल १. २. ३.	५४१८५
निगण १.	३६१९५
निगम १.	७११३५
निगारण १. २. ३.	४११८३
निगल १.	३७१८३
निगाल १.	३७१९०९
निगूढक १.	३८१३८
निगूढचरण ३.	३६१२१२
निग्रह १.	७११३४
निघ १.	३९११८
निघण्टु १.	३६१३१
निघस १.	४३११०२
निघानका २.	३९१२०
निघृष्टा २.	३६१५०
निघ्न १. २. ३.	५४१२८
निचित १. २. ३.	५४११५५
निचुल १.	३३१६७
निचोट १.	३७१८४
निचोल १.	३३१४१
" १.	४३१२६
" १.	४३१२८
निज १. २. ३.	३७१४३
" ३.	५२११

## वैजयन्तीकोपः

निज १. २. ३.	६११९
नितम्ब १.	३२१८
" १.	४११६४
" १.	७११३६
नितम्बिनी २.	४११४
नितान्त १. २. ३.	५४१३२
नित्य १. २. ३.	५४१८८
" १. २. ३.	५४१३०
नित्यशक्तिन् १.	३११२
नित्यहोम १.	३६१७०
निदाघ १.	३९१८१
" १.	८११५७
निदान ३.	७३१२०
निदानज्ञ १.	४११४४
निदिग्ध १. २. ३.	५४११०८
निदिग्धिका २.	३३११०५
" २.	३३११०६
निदेश १.	३७१४७
" १.	७११३४
निदेशक १.	३११५९
निद्रा २.	३६१९७
निद्राण १. २. ३.	५४१३९
निद्रालु १.	३३११५०
" १. २. ३.	५४१३९
निधन १. ३.	७११५१
निधान ३.	१२१६०
" ३.	५२१४०
निधि १.	१२१६०
निधिपाल १.	१२१५७
निधुवन ३.	३११३४
( विधुवन )	
" १.	४३११७०
निन्दा २.	३११३३
" २.	६२१२१
निप १.	४११५८
निपक्षति २.	२११७०
निपात १.	३६१२०१
निपान ३.	४२१९
निपीतिन् १.	३८१२७

## [ निरञ्जना

निबर्हण ३.	३७१२१२
निबड १. २. ३.	५४१२६
निबिरीस १. २. ३.	५४१२६
निभ ३.	३६१९५
" १. २. ३.	३९१२१
" १. २. ३.	५४१२२
निभृत १. २. ३.	५४१३२
निमय १.	३८१७१
निमित्त ३.	७३११८
" १.	८३११६
निमित्तग्रहण ३.	३७११९०
निमिष ३.	३९१९०
निमीलन ३.	३३१२०१
" १.	३९१९०
निमेष १.	२११५३
निम्नक १.	३११३६
निम्नगा २.	४२१२२
निम्ना २.	३३११७८
निम्ब १.	३३१७५
नियति २.	७२११२
नियन्तृ १.	२७१३८
नियम १.	३६११४
" १.	३६१२०९
" १.	५२१३७
" १.	७११४०
नियमोज्झति २.	५२१६
नियामक १.	४२११८
नियुत ३.	३३१२३२
" ३.	५११२८
" ३.	५११३०
" ३.	५११३२
नियुद्ध ३.	३७१२०७
नियोग १.	५२१२५
नियोज्य १.	३९१२
निर् ( निस् ) ४.	८७१५
निरञ्जन १.	३१११२
निरञ्जना २.	११११६
" २.	२११७२

## निरन्तर ]

निरन्तर १. २. ३.	५४१२६
निरय १.	१२१३७
निरर्थक ३.	५२१६
निरवग्रह १. २. ३.	५४१२७
निरसन ३.	३११२१३
निरस्त १. २. ३.	७३११३
निराकरिण्यु १. २. ३.	५४१४०
निराकार १.	५२१२३
निराकृति २.	३६१९
निरामय १. २. ३.	४११४३
निरायस १.	३११६३
निरास १.	५२१२३
निरिणा २.	३६१४६
निरीष १.	३८१२८
निरुक्त ३.	३६१२८
" ३.	३६१३१
निरूपण १. २. ३.	८५१२
निरोध १.	७११३३
निर्भृति २.	१२१४२
निर्गमन ३.	५२११३
निर्गीत ३.	३९१११०
निर्गण्डी २.	३३१११८
" २.	३३११८६
निर्ग्रन्थ १. २. ३.	५४११६
" १. २. ३.	७३११३
निर्ग्रन्थन ३.	३७१२३
निर्घात १.	२२१६
निर्ज १.	१११३
निर्हर १.	३२१७
निर्णय १.	३६११७६
निर्णिक १. २. ३.	५४१६६
निर्णेक १.	३११४५
निर्दय १. २. ३.	७३११५
निर्देश १.	३७१४७
निबन्ध १.	५२११४

## शब्दानुक्रमणिका

निर्भर १. २. ३.	५४१३१
निर्भर्त्सन ३.	८३१८
निर्मद १.	३७१६८
निर्माल्य ३.	४३११५६
निर्मुक्त १.	४११२०
निर्माक १.	४११२१
निर्याण ३.	५२११३
" ३.	७३११९
निर्यातन ३.	८३१७
निर्याम १.	४२११९
निर्यास १.	३३१११
निर्यूह १.	४३१३१
" १.	४११४१
" १.	७११३८
निर्लज्जा २.	३६१४६
निर्लङ्ग ३.	८७११
निर्लेप ३.	४२१३८
निर्वपण ३.	३६११८
निर्वहण ३.	३९११०९
निर्वान ३.	७३१२०
निर्वाद १.	२४१३३
निर्वापण ३.	३७१२३
निर्वार्य १. २. ३.	५४१७३
निर्वासन ३.	३७१२२
निर्विष १.	४११११
निर्विषा २.	४१११७
निर्वीरा २.	४३१२८
निर्वृति २.	७२११०
निर्वृत्त १. २. ३.	५४१११
निर्वेद १.	३६११६७
" १.	५२१३४
निर्वेश १.	७११३९
निर्व्यथन ३.	४११२
निर्हरण २.	३७११९२
निर्हार १.	५२११७
निर्हाद १.	२४११
निलय १.	४३११८
निलम्प १.	१११२
निलम्पिका २.	३६१४२
निलम्बनी २.	४११२१
निवर्तन ३.	३११६०

## [ निश्शलाक

निवर्तना २.	५२११७
निवसथ १.	४३१२
निवसन ३.	४३११८
" ३.	४३११६
निवह १.	५११२
" १.	७११३४
निवहा २.	३३११८६
निवात १. २. ३.	७३११४
निवाप १.	३३१६४
निवीत ३.	३३१२१
" १. २. ३.	४३१२२०
निवृत्त १. २. ३.	५४११०८
निवृत्ति २.	७२१११
निवेश १.	५२११४
" १.	७११३३
निशरण ३.	३७१२१२
निशा २.	२११५७
निशाकर १.	२११२४
निशाकेतु १.	२११२५
निशाचर १. २.	८५११२
निशात १. २. ३.	३७११९७
निशादक्षिन् १.	२३१२२
निशानाथ १.	२११२४
निशान्त १. २. ३.	७५१५१
निशामणि १.	२३१४७
निशार १.	४३११२७
निशित १. २. ३.	३७११९७
निशीथ १.	२११६६
तिशिथिनी २.	२११५८
निशिथ्या २.	२११५८
निशुम्भन ३.	३७१२२
निश्रय १.	३६११७६
निश्वारक १. २. ३.	८५१११
निश्रेणि २.	४३१५१
निश्वास १.	३६१२०४
निश्शलाक १. २. ३.	५४११६०



निशेष ]	वैजयन्तीकोषः	[ नीलवृष
निशेष १. २. ३.	निष्ठा २. ६।२।२१	निस्स्पृहा २. ३।६।५०
५।४।८६	निष्ठान ३. ४।३।८५	निस्त्राव १. ४।३।७९
निशेष्य १. २. ३.	" ३. ४।३।१०	निस्त्राव्याय १. २. ३.
५।४।६६	निष्ठीव १. ३. ५।२।३६	३।६।९
निश्रेयस ३. ८।३।८	निष्ठीवन ३. ५।२।३६	निहत १. २. ३. ३।६।३७
निश्वास १. ३।६।२०४	निष्ठुर १. २. ३. २।४।२१	" १. २. ३. ७।४।१३
निषङ्ग १. ३।७।१७८	" ३. ३।२।२७	निहनन ३. ३।७।२१२
" १. ७।१।३४	" १. ५।३।५	निहित १. २. ३.
निषङ्गिन् १. २. ३.	निष्ठेवन ३. ५।२।३६	५।४।१०४
३।७।१४३	निष्ठ्या २. २।१।४०	निह्व १. ७।१।३९
निषद्या २. ४।३।३४	निष्ठ्यूत १. २. ३.	नीच १. २. ३. ३।६।३७
निषद्वर १. ३।८।२६	७।४।१४	" १. २. ३. ५।४।२२
" १. २. ८।५।११	निष्ठ्यूति २. ५।२।३६	" १. २. ३. ५।४।६०
निषध ७।१।३८	निष्णात १. २. ३.	" १. २. ३. ५।४।८१
निषाद १. ३।५।४	५।४।१९	" १. २. ३. ६।४।२०
" १. ३।५।६९	निष्पक्क १. २. ३.	नीचुदार १. ३।३।५४
" १. ३।५।७०	५।४।११५	नीचैः (-स्) ४. ८।८।१९
" १. ३।५।७२	निष्पतिसुता २. ४।४।२०	नीड १. ३. २।३।४९
" १. ३।५।८४	निष्पत्राकृति २. ५।२।३८	" १. ३. ८।५।३६
" १. ३।९।१३२	निष्पन्न १. २. ३.	नीडज १. २।३।४
निषादिन् १. ३।७।८७	५।४।४६	नीडिन् १. २।३।२
निषिद्धैकरुचि १. २. ३.	निष्पाव १. ४।२।४६	नीडोद्भव १. २।३।२
३।६।१२	" १. ४।२।४६	नीप १. ३।३।६०
निषूदन ३. ३।७।२१२	निष्प्रवाणि १. २. ३.	नीर ३. ४।२।१
निष्क १. ५।१।४१	४।३।१२०	नील १. १।२।६१
" १. ३. ५।१।४६	निष्प्रभ ४. ८।८।१३	" १. ३।४।१७
" १. ३. ६।५।२०	निसर्ग १. ५।२।१	" १. ५।३।११
निष्कला २. ४।४।१६	" १. ८।५।३५	नीलक १. १।२।२९
निष्कासित १. २. ३.	निस्पृष्ट १. २. ३.	नीलकण्ठ १. ३।३।१५५
५।४।७१	५।४।११६	" १. ८।६।२२
निष्कुट १. ३।३।३	निस्तरुह ३. ५।१।२१२	नीलकेशी २. ३।३।११०
" १. ३।३।१४	निस्तल १. २. ३.	नीलग्रीव १. १।१।४२
निष्कुटी २. ३।८।८७	५।४।८२	" १. ८।६।२२
निष्कोटित १. ३.	निष्पिंश १. ३।७।१६०	नीलजम्बूर १. ३।३।१५४
३।९।१२२	" १. २. ३. ७।५।५१	नीलदंष्ट्र १. १।१।६७
निष्कोश १. ३।७।७७	निस्वन १. २।४।१	नीलपीतल १. ५।३।२१
निष्क्रम १. ७।१।३६	निस्वान १. २।४।१	नीलपुष्प १. ३।८।५८
निष्ठङ्क १. ३।३।६२	निस्सङ्ग १. २. ३.	नीललोहित १. १।१।४०
निष्ठय १. ३।५।४६	३।४।२०	" १. ५।३।१९
निष्ठयान्ता २. ३।३।१३५	निस्सङ्गजा २. ३।३।१८७	नीलवासस् २।१।३६
निष्ठा २. ३।९।१०९	निस्सारण ३. ३।५।४१	नीलवृष १. ३।६।१२३

नीलशीर्ष ]	शब्दानुक्रमणिका	[ पञ्चक
नीलशीर्ष १. ३।४।४१	नृपति १. ३।७।१	नौ २. ४।२।१५
नीलसितश्याम १. ५।३।१३	नृपलक्ष्मन् ३. ३।७।१६	" २. ८।२।१७
नीला १. २।३।५	नृपात्मज १. ३।३।१७०	नौजीविन् १. ३।९।४२
नीलाङ्गा २. ४।१।३९	नृपात्मजा २. ३।३।१६७	नौतार्य १. २. ३. ४।२।२०
नीलाब्ज ३. ४।२।३५	नृपार्हक ३. ३।८।१५६	नौशिरस् ३. ४।२।१७
नीलाम्बर १. १।१।२४	नृलिङ्गक १. ३।९।११२	नौस १. २. ३. ३।६।१२७
नीलिक १. ३।५।१९	नृशंस १. २. ३. ५।४।२४	न्यक्ष १. २. ३. ६।४।९
नीलिका २. ३।३।१८६	नृसिंह १. १।१।१८	न्यग्रोध १. ३।३।२७
नीलिङ्गी २. ३।१।४२	नृसेन २. ३. ८।९।३४	" १. ४।४।८२
नीलिनी २. ३।३।११०	" २. ३. ८।९।३५	न्यग्रोधी २. ३।३।११३
नीली २. ३।३।११०	नेतृ १. ३।३।३७	न्यङ्कु १. ३।४।१५
नीलीराग १. २. ३.	" १. २. ३. ५।४।५७	" १. ६।१।३३
४।२।३४	नेत्र ३. ६।३।१७	न्यच् १. २. ३. ५।४।८५
नीलोत्पल ३. ४।२।३४	नेत्रपिण्ड १. ४।४।९५	" १. २. ३. ५।४।९३
नीवलक १. ३।५।२४	नेत्ररुज् २. ४।४।३२	न्यर्बुद ३. ५।१।२८
नीवाक १. ३।८।६६	नेम १. २. ३. ५।४।८६	न्यस्त १. २. ३.
नीवार १. ३।८।५७	" १. २. ३. ६।५।४७	५।४।१०४
नीवि २. ४।३।१३०	नेमि १. ३।४।६६	न्यस्तक १. ३. ३।८।१२
नीवी २. ३।८।७०	" २. ३।७।३५	न्याद १. ४।३।१०२
नीघृत् १. ३।१।२१	" २. ४।२।८	न्याय १. ३।७।४८
नीम ३. ४।३।३७	" २. ६।२।२१	" १. ३।८।१५
नीहार १. २।२।९	नेनिन् १. ३।३।४७	न्यायगण १. ३।३।२९
नु ४. ८।७।६	नेमीय १. ३।३।४७	न्याय्य १. २. ३.
नुत १. २. ३. ५।४।१०६	नेरिन् १. १।२।५२	५।४।१०३
नुति २. ३।१।३५	नैकृत १. २. ३. ५।४।२२	न्यास १. ३।८।१२
नुत्त १. २. ३. ५।४।९७	नैकृतिक १. २. ३.	न्युङ्क्त १. २. ३. ५।४।३५
नुन्न १. २. ३. ५।४।९७	५।४।२२	न्युञ्ज १. ३।३।३७
नूतन १. २. ३. ५।३।८६	नैगम २. ३।८।७२	" १. २. ३. ५।४।११
नूतना २. २।१।१८	" १. ७।१।३७	" १. २. ३. ५।४।९०
नून १. २. ३. ५।४।८६	नैगमेय १. १।१।५७	" १. २. ३. ६।५।४६
नूनम् ४. ८।७।२२	नैचिकी २. ३।४।४६	प
नूपुर १. ३. ४।३।१४५	" २. ३।४।६०	पक्ति २. ६।२।२२
नृ १. ३।५।१	नैपथ्य ३. ४।३।१३२	पक्तिका २. ३।८।४२
" १. ४।४।३	नैपाली २. ३।२।१७	पक्ष ३. ३।८।१४३
नृगालिक १. ३. ३।१।२८	नैयग्रोध १. ३।३।२२	" १. २. ३. ४।३।९३
नृङ्ग ३. ४।३।३	नैर्द्धत १. १।२।४०	" १. २. ३. ४।३।९५
" ३. ४।३।४	नैर्द्धती २. २।१।४	पक्षण १. ३. ३।९।३२
नृत्त १. ३।९।६३	नैल ३. ३।१।८	पक्ष १. २।१।७९
नृत्त ३. ३।९।७३	नैषध ३. ३।१।६	" १. २।३।४९
नृप १. ३।७।१	नैषिक १. ३।७।२१	" १. ६।१।३५
	नैष्ठिक १. ३।७।२१	पञ्चक १. ४।३।२४



[ पञ्चक ]

पञ्चक ३.	४१३४२
पञ्चचर १. २. ३.	८१५१३
पञ्चति २.	२११७०
” २.	७२११३
पञ्चद्वार ३.	४१३४२
पञ्चभाग १.	३१७८१
पञ्चरचना २.	३१७१८६
पञ्चशाला २.	४१३२४
पञ्चाङ्ग ३.	२११५५
पञ्चान्त १.	३११७३
पञ्चिका २.	८११३
पञ्चिणी २.	२११५९
पञ्चिन् १.	२१३११
पञ्चिपोत १.	२१३४
पञ्चिवन्धन ३.	३१९४२
पञ्चिल १.	३१४१५९
पञ्चिशाला २.	४१३२१
पञ्चमन् ३.	४१३४५
” ३.	४१३९५
” ३.	६१३१९
पञ्च १.	३१८२६
” १.	६१५४८
पञ्चक्रीडनक १.	३१४६
पञ्चज ३.	४१२३७
” ३.	८१९४०
पञ्चरस १.	३१९४७
पञ्चिल १. २. ३.	३११४३
पञ्चरुह ३.	४१३२९
पञ्चि २.	५११२४
” २.	५११२६
” ३.	५११३३
” २.	६१२२२
पञ्चु १. २. ३.	५१४१४
पञ्चुल १.	३१७१०४
पञ्चन ३.	३१९२७
” ३.	५१२३२
पञ्चम्पच १.	३१३८२
पञ्चम्पचा २.	३१३२१३
पञ्चा २.	५१२३२
” २.	८१९४

वैजयन्तीकोषः

पचि २.	११२१८
” २.	२१३१८२
पज्ज १.	३१९११
पञ्चक ३.	३१७१०
पञ्चकृत्वः (-स्) ४.	८१८१६
पञ्चकोल ३.	३१८१८३
पञ्चखार १. २. ३.	८१९१५४
पञ्चगृह १.	४१११६
पञ्चचीरोद्धित ३.	३१६१५
पञ्चचूड १. २. ३.	३१६१२
पञ्चजन १.	३१५११
पञ्चजनीन १.	३१७२३
( पञ्चजनिनः )	
पञ्चत्व ३.	३१६२०२
पञ्चदशी २.	२११७३
पञ्चभद्र १.	३१७९३
पञ्चम १.	३१९१३२
” १. २. ३.	५११२०
पञ्चलक्षण ३.	३१४३८
पञ्चलोह ३.	३१२२८
पञ्चवक्त्र ३.	८१६२२
पञ्चवायु १. २. ३.	३१६२०३
पञ्चशाख १.	४१४७३
पञ्चष १. २. ३.	५११२६
पञ्चसुगन्ध ३.	४१३१५२
पञ्चहस्त १.	३११५८
पञ्चाङ्गी २.	३१७२१३
पञ्चाङ्गुल १.	३१३६५
पञ्चामृत ३.	४१३९१
पञ्चाशत् ५११२६	
पञ्चास्य १.	३१४११
पञ्चिका २.	३१९१५९
पञ्चेषु १.	१११२८
पञ्चोषण ३.	३१८८९
पञ्चर ३.	२१३४९
पञ्चिका २.	११२३६
पट १.	३१३५७
” १. ३.	४१३११६
” १. २. ३.	८१९३७

[ पणव ]

पटकुटी २.	४१३१२५
पटचर १ व.	३११४१
” १.	३१९५७
” ३.	४१३१२७
पटचोर १.	३१९५७
पटल ४.	४१३३७
” १.	७१५५२
पटली २. ३.	५१११६
पटवासक १.	४१३१५७
पटह १. ३.	३१९१३४
” १.	३१९१३८
पटी २.	८१९३७
पटु १.	३१३१६५
” १. २. ३.	३१७१४७
” ३.	३१८१२०
” ३.	३१८१२३
” १. २. ३.	४१४१४३
” १.	५१३२६
” १. २. ३.	५१४५४
पटुच्छद १.	३१३१६४
पटुञ्जिका २.	३१४१४९
पटोलक १.	३१३१६५
पटोली २.	३१३१५९
पट्ट १.	३१७१५४
” १.	४१४१४०
” १.	६११३४
पट्टन ३.	४१३३
” ३.	४१३३
पटबन्ध १.	३१५६२
पट्टस १.	३१७१६४
पठि १.	३१६२३
पट्वीश १.	३१७८६
पण १.	३१८६९
” १.	३१९६०
” १.	५११३८
” १.	५११३८
” १.	५११३९
” १.	५११४५
” १.	६११३४
पणव १.	३१९१३४
” १.	७११५२

पणिक ]

पणिक ३.	३१६१८८
” १.	४१३३४
पणित १. २. ३.	५१४१०६
पणितव्य १. २. ३.	३१८६९
पणायित १. २. ३.	५१४१०६
पण्ड १. २. ३.	३१४५९
” १.	४१३३
पण्डा २.	३१६१६४
” २.	३१६१६५
पण्डित १.	३१६१३४
पण्य १. २. ३.	३१८६९
पण्यभू २.	४१३३५
पण्यवीथी २.	४१३३५
पण्यस्त्री २.	४१३२४
पण्याजीव १.	३१८७२
पतग १.	२१३११
पतङ्ग १.	२१३११
” १.	२१३४३
” १.	४११४०
” १.	७११४०
पतङ्गना २.	३१८४९
पतङ्गी २.	२१३४८
पतञ्जलि १.	३१६१५७
पतत् १.	२१३११
पतत्र ३.	२१३४९
” ३.	३१३१७
” ३.	७१३२२
पतत्रि १.	२१३११
पतत्रिन् १.	२१३११
पतद्ग्रह १.	४१३१६०
पतन ३.	३१३१६
” ३.	३१६११६
पतयालु १. २. ३.	५१३३८
पताक १.	४१३७९
पताका २.	३१७१३३
” २.	३१७१९३
पताकिन् १. २. ३.	३१७१४५

शब्दानुक्रमणिका

पताकिनी २.	३१७५५
पति १.	४१३३७
” १.	५१४५८
पतिवरा २.	४१३७
पतिघ्नी २.	३१६१३३
पतित १. २. ३.	३१७२१९
पतितोत्पन्ना २.	३१६४९
पतिवन्नी २.	४१३१४
पतिव्रता २.	४१३७
पतेर १.	४१३३
पत्तन ३.	४१३४
पत्ति २.	३१७५७
” १.	३१७१३९
” २.	४१३१४९
पत्तिच्छेद १.	४१३१४८
पत्तर १.	३१३१५६
पत्नी २.	४१३२५
पत्नीसङ्ग्रहण ३.	३१६१८९
पत्र १.	३१३१६
” १.	६१३२०
” १. २. ३.	८१९३२
पत्रक ३.	३१८१२८
” ३.	४१३१४९
पत्रकूट १.	३१८१८४
पत्रणा २.	३१७१८६
पत्रताली २.	३१३२२४
पत्रपरशु १.	३१९३५
पत्रपाश्या २.	४१३१३६
पत्रफला २.	३१७१६४
पत्रमध्यसिरा २.	३१३४३
पत्ररथ १.	२१३११
पत्ररेखा २.	४१३१४९
पत्रल ३.	३१८१४३
पत्रला २.	३१३२२४
पत्रसारक १.	३१८१२८
पत्राङ्ग ३.	३१८११५
पत्राङ्गुलि २.	४१३१४९
पत्रिणी २.	४१३२८
पत्रिन् १.	२१३११
” १.	३१७१७९
” १.	६११३२

[ पञ्चाख ]

पत्री २.	८१९३२
पत्रोर्ण १.	३१३१६८
” १.	४१३११८
पथिकृत् १.	११२२५
पथिन् १.	३११४९
पथ्या २.	३१३१७८
पद् १.	४१३५६
पद् ३.	२११७
” ३.	४१३५६
” ३.	६१३१८
पदपणिका २.	३१३१३६
पदभञ्जना २.	३१६३१
पदवल्मीक १.	४१३१३३
पदवी २.	३१६४९
पदाजि १.	३१७१३९
” १.	७११५४
पदाति १.	३१७१३९
पदातिक १.	३१७१३९
पदिक १.	३११५१
पद्म १.	३१७१४०
पद्मति २.	५११२४
” २.	७१२१५
पद्म १.	११२६०
” १. ३.	३१३१९५
” ३.	३१७८२
” १. ३.	४१२३६
” ३.	५११३२
” ३.	५१३१२
” १. २. ३.	६१५४८
” १.	८१६१२
पद्मकर्कटी २.	४१२४६
पद्मकासनिन् १.	३१६२११
पद्मचारिणी २.	३१८८९
पद्मनाभ १.	११११५
पद्मपत्र ३.	३१८८८
पद्मबन्धु १.	२११११
” १.	२११५६
पद्मा २.	३१३१००
” २.	३१८८१
” २.	३१८८९
पद्माक्ष ३.	४१२४६



पञ्चालया ]		वैजयन्तीकोषः		[ परिचिप्त	
पञ्चालया २.	१२३६	परजात १	३१२२	पराचल १.	३२३
पञ्चामन ३.	१११७	" १. १. ३.	पा३४९	पराचीन १. २. ३.	पा३४९१
" ३.	३६२०५	परतन्त्रक १. २. ३.	पा३४२८	पराजक १.	३१५६
पञ्चासनिन् १. २. ३.	३६१३४	परन्तप १. २. ३.	पा३६९	पराजित १. २. ३.	३१७२१९
पङ्क्ति १.	४२३३	परपिण्डाद १. २. ३.	पा३४९	पराजन १.	पा३४४
पङ्गोत्तर ३.	३६१९१	परभाग १.	पा२३	पराधीन १. २. ३.	पा३४२८
पद्य १. २. ३.	३११४७	परभृत १.	२३१६	पराज्ञ १. २. ३.	पा३४९
" १.	३१९१	परमन्थु १.	१२१५	पराभव १.	८१२६
पद्यमात्रिका २.	२४१४२	परमम् ४.	८८१७	पराभूत १. २. ३.	३१७२१९
पद्या २.	३११४९	परमात्मन् १.	३६१६१	परायण ३.	३६१६५
पनस १.	३३३७४	परमान्न ३.	४३१७७	" ३.	८१५३
पनायित १. २. ३.	पा३१०६	परमेश्वर १.	१११४१	परारि ४.	८८१७०
पनित १. २. ३.	पा३१०६	परमेष्ठिन् १.	१११८	परारिका २.	३३२०७
पन्न १. २. ३.	पा३१०२	परमेष्ठिनी १.	१११६०	पराधीन २.	३१३७
" १. २. ३.	पा३११५	परम्पर १.	३११५	पराध्व १. २. ३.	पा३६४
पन्नग १.	४११६	" १.	४११६	पराध्व १. २. ३.	पा३१२९
पन्नगारि १.	१११३८	" १.	४११६	परालिनी २.	४३१४४
पपा २.	४११३६	परम्परा २.	पा२३९	परावसु ३.	३६१४५
पय १.	३११२४	परम्पराक २.	३६१९४	पराविद्ध १.	१२१५७
पयस् ३.	३६१४५	परम्परावाहन ३.	३१७२३७	" १.	३१५१८
" ३.	४२३२	परवत् १. २. ३.	पा३२८	" १.	४३३६
" ३.	६३२०	परशु १.	३६१३१	पराशक १.	३३२३०
पयस्या २.	३६१९८	" १.	३६१३५	पराशर १.	३६१५५
पयस्विनी २.	४२३२२	परशुभृत् १.	१११५४	परास ३.	३२३३१
पयोगर्भ १.	२२३२	परश्वः (-स्) ४.	८८१९	परासन ३.	३१७२१४
पयोण्ड १.	३३३७४	परश्वध १.	३६१३५	परासु १. २. ३.	३१७२२०
पयोधर १.	८११२७	परस्पर १. २. ३.	पा३१२३	परास्कन्दिन् १.	३१५६
पयोवहा २.	४२३२०	परस्वत् १.	३६१११	परि ४.	८१७२५
पयोव्रत ३.	३६११४७	परा २.	३३३३४	परिकर १.	८१३३
पर १.	३६१६१	" २.	३३३२१	परिकर्मन् ३.	४३११२
" १.	३१७४१	" ४.	८१७२६	परिकर्मिन् १.	३९३
" ३.	३६१०५	पराक १.	३६१४४	परिकर्ष १.	३१७७२
" ३.	पा१२९	पराकार १.	पा२२१	परिकल्पना २.	३६१९६
" १. २. ३.	पा३१४२	पराक्रम १.	३१७२०९	परिक्रम १.	पा२२८
" १. २. ३.	६१५४९	" १.	८११५०	परिक्रूरा २.	३३१०५
परकुल १.	४११५४	पराग १.	७११४२	परिक्रोणा २.	३३३२२१
परच्छन्द १. २. ३.	पा३२७	पराच् ४.	पा३९१	परिचिप्त १. २. ३.	पा३१०८

परिचेष ]		शब्दानुक्रमिका		[ परेत	
परिचेष १.	८११३०	परिपेलव ३.	३३२०१	परिव्याण ३.	३६१०५
परिखा २.	४३१३३	परिप्लव १.	२३३२२	परिव्याध १.	३३३३०
परिगत १. २. ३.	८११७	" १. २. ३.	पा३७६	" १.	३३३७२
परिग्रह १.	२११३०	परिप्लविन् १.	२३३६	परिवाज १.	३६१६०
" १.	४११५१	परिवर्ह १.	४३१५८	परिशाय १.	४३१६८
" १.	८११३०	" १.	८११२८	परिशुष्क ३.	४३१८८
परिघ १.	३१७१७१	परिवृढ १. २. ३.	पा३५८	परिषद् २.	३६१३३
" १.	७११४१	परिभक् १.	३६१७१	परिष्कार १.	४३१३३
परिघातन १.	३१७१७१	परिभाषण ३.	८३१५	परिष्वङ्ग १.	४३१६९
परिचय १.	३१७१५५	परिभोक्तृ १. २. ३.	पा३२५	परिसर १.	४३१२
" १.	पा२३१	परिमण्डल १.	३१७१९९	परिसर्प १.	पा२२८
परिचर १. २. ३.	३१७१४१	" १. २. ३.	पा३८२	परिसर्पा २.	पा२२८
परिचर्या २.	३६३८	परिमल १.	पा३५२	परिस्कन्द १.	३९३२
परिचारक २.	३९३२	" १.	८११२८	परिस्कन्ध ३.	४३१५८
परिचारिका २.	३१७३६	परिमोचिन् १.	३१५५	परिस्तोम ३.	४३१६६
परिच्छद १.	३५८	परियष्ट १.	३६७४	परिस्पन्द १.	४३१५१
" १.	४३१५५	परिरम्भ १.	४३१९४	परिस्त्रावी २.	४३१३१
परिजन १.	४३१५१	परिवत्सर १.	२११९०	परिस्तुत २.	३९३५
परिजम्बन् १.	२११२४	परिवर्जन ३.	३१७११४	परिस्तुता २.	३९३५
परिणत १.	३१७७८	परिवर्त १.	३६७१	परिहार १.	पा२१७
परिणय १.	३६१५४	" १.	८११२९	परिहृक् १. २. ३.	पा३३०
परिणाम १.	पा२२४	परिवसथ १.	४३२	परिच्छा १.	३६१२२
परिणाय १.	३९६१	परिवसित १. २. ३.	पा३१०५	परिचक्र १. ३.	४३११३
परिणाह १.	पा२५	परिवाच २.	२४३५	" १. ३.	८९३१
परितः (-स्) ४.	८१७३२	परिवाद १.	२४३२	परिवाप १.	८११२९
" ४.	८८३	" १.	३९१२१	परिवार १.	३१७१६८
परिताप १.	४३१२२	परिवादिनी २.	३९११७	परिवाह १.	४२३१
परित्राण ३.	४३१०५	परिवापण ३.	३६१४	परिष्ठ १.	३६१७४
परित्राणी २.	३३१०९	परिवार १.	४३१५१	परिष्टि २.	७२१५
परिदेवन ३.	२४२९	" १.	८११२८	परिसार १.	पा२२८
परिधान ३.	४३१२१	परिवारक १.	४३१६८	परिहास १.	३९१८८
परिधि १.	३९१९	परिवित्त १.	३६१४३	परु १.	३३२९
" १.	७११४१	परिवित्ति १.	३६१४३	परुका २.	३३१०३
परिधिस्थ १. २. ३.	३१७१४१	परिवी २.	३९१६०	परुत् ४.	८८११०
परिपण ३.	३६१७०	परिवृत्ति २.	३१७३१	परुल १.	३१७९१
परिपत् १.	३६१२६	परिवेत्तृ १.	३११४२	परुष १. २. ३.	२४२१
परिपत्र ३.	४३११०३	परिवेष १.	३११५९	" १.	३३२२२
परिपन्थिन् १.	३१७४२	परिवेषक १.	२११३१	" १.	पा३३
परिपाटी २.	३६१११४	परिवेषण ३.	४३१००	" १. २. ३.	७३२०
				परुस् १.	३३१११
				परेत १.	१२३३८



[ परेत ]

परेत १. २. ३.	६।५।५२
परेतराज १.	१।२।३४
परैद्यवि ४.	८।८।९
परैष्टुका २.	३।५।४९
परैधित १.	३।९।२
" १. २. ३.	५।४।४९
परोक्ष १. २. ३.	५।४।३३
परोवण्ट १.	३।७।१९८
परोष्णी २.	२।३।४४
पर्कट १.	२।३।३१
" ३.	३।३।२१७
पर्कटिन् १.	३।३।२८
पर्जन्य २.	३।३।२१२
पर्जन्य १.	७।१।४२
पर्ण ३.	३।३।१७
" १.	३।३।२९
" १.	८।६।१२
पर्णश १. २. ३.	३।६।१३१
पर्णशबर १.	३।५।४७
पर्णशाला २.	४।३।२६
पर्णादा २.	३।४।६३
पर्णास १.	३।३।११९
पर्णिका २.	३।३।१२४
पर्दन ३.	२।४।८
पर्पट १.	२।४।१२८
पर्पटी २.	३।२।४१
" २.	३।३।२१३
पर्पण १.	३।३।१०७
पर्परा २.	३।३।२१३
पर्परी २.	४।४।९९
पर्परीक १.	८।१।२५
पर्यङ्क १.	३।६।२१३
" १.	४।३।१६५
" १.	७।१।५२
पर्यटन ३.	५।२।११
पर्यलुयोग १.	२।४।३७
पर्यन्तपर्वत १	३।१।७
पर्यन्तम् २.	४।३।१२
पर्यव १.	३।६।११४

वजयन्तीकोषः

पर्यवस्था २.	५।२।३०
पर्यवस्थात् १.	३।७।४२
पर्यस्ति २.	३।६।१५०
पर्याण ३.	३।७।११४
पर्याधात् १.	३।६।७४
पर्यास ३.	४।३।१०५
" १. २. ३.	७।५।५३
पर्यासम् ४.	४।३।१०४
पर्याय १.	३।६।११३
" १.	७।१।५५
पर्याहार १.	३।७।४५
पर्याहित १.	३।६।७४
पर्युद्वञ्चन ३.	३।८।४
पर्येषणा २.	३।६।१२१
पर्वत १.	३।२।१
पर्वन् ३.	२।१।७३
" ३.	३।३।११
" ३.	३।६।६२
" ३.	६।३।१९
" १. ३.	८।९।३१
पशु १. ३.	४।४।११५
पल ३.	४।४।१०६
" ३.	५।१।४५
" ३.	५।१।४६
" ३.	५।१।५१
पलगण्ड १.	३।९।१४
पलगण्डक १.	३।५।४८
पलङ्कष १.	३।८।११२
पलङ्कषा २.	३।३।१४१
पलतेजस् ३.	४।४।१०७
पलल १.	३।३।६९
" ३.	४।४।१०६
" ३.	७।३।२१
पलशत ३.	५।३।६०
पलशीनक १.	५।३।५०
पलाण्डु १.	३।३।२०५
" १.	३।३।२०७
पलाण्डुक १.	३।३।१५३
पलान्न ३.	३।७।२१०
पलाल १. ३.	३।८।६४

[ पवित्र ]

पलाश ३.	३।३।१६
" १.	३।३।२९
" १.	३।३।२०३
पलाशिका २.	३।३।१९५
पलाशिन १.	७।१।५४
पलिकिनी २.	३।४।६३
पलिकनी २.	३।४।४६
" २.	४।४।२१
पलित ३.	३।८।७९
" ३.	५।४।१४४
" १. ३.	७।५।५२
पलिन १.	३।५।१९
पलिपादक ३.	३।७।७५
पलुष १.	५।३।४२
पलोद्भव ३.	४।४।१०७
पल्यङ्क १.	४।३।१६५
पल्ययन ३.	३।७।११४
" १.	४।४।४६
पल्ल १.	३।५।१४
पल्लव १. ३.	३।३।१७
" १.	४।४।३९
" १. ३.	७।५।५८
पल्लवाङ्कुर १.	३।३।१५
पल्ली २.	४।१।३०
" २.	४।३।२७
" २.	६।२।२३
पव १.	३।८।४६
( पल )	
" १.	५।२।३१
पवन १.	१।२।४९
" १.	१।२।५३
" ३.	४।३।६६
" ३.	५।२।३१
पवमान १.	१।२।२४
" १.	१।२।४८
" १.	८।१।२७
पवि १.	१।२।१३
" १.	६।१।३३
पवित्र ३.	३।२।२२
" ३.	३।६।२०
" १.	३।८।५२

पवित्र ]

पवित्र ३.	४।२।४०
" १. २. ३.	५।४।६५
" १. २. ३.	७।५।५८
पशु १.	३।४।३०
" १.	३।४।६२
" १.	३।४।७२
" १.	३।६।८४
" १.	३।६।११२
" ४.	८।८।२१
पशुगोयुग १.	५।१।१८
पशुपति १.	१।१।३८
" १.	८।१।२६
पशुबन्ध १.	३।६।८४
पशुसंस्कार १.	३।६।९३
पश्चात्ताप १.	३।६।१८५
पश्चात्सुन्दर १.	३।३।१५७
पश्चिम १. २. ३.	५।४।७७
पश्चिमाङ्ग ३.	४।४।६९
पश्यतोहर १.	३।९।५७
पशौही २.	३।४।४७
पांसु १.	३।८।२५
पांसुचन्दन १.	१।१।३८
पांसुज ३.	३।८।२३
पांसुलवण ३.	३।८।२२
पांसुला २.	४।४।१०
पाक १.	३।३।८३
" १.	३।८।४५
" ३.	५।२।४१
" १.	६।१।३३
" १.	८।९।१४
पाककृष्ण १.	३।३।८३
पाककृष्णफल १.	३।३।८३
पाकपुटी २.	४।३।२३
पाकफल १.	३।३।८३
पाकफलकृष्ण १.	३।३।८३
पाकमण्डल ३.	३।९।२७
पाकयज्ञ १.	३।६।८३
पाकयज्ञिक १.	१।२।२७
पाकल १.	३।७।९१
" ३.	३।८।९९
पाकवर्तन ३.	५।२।४१

शब्दानुक्रमणिका

पाकशासन १.	१।२।३
पाकशुक्ला २.	३।२।१३
पाकु २.	८।९।३
पाक्य ३.	३।८।२२
" ३.	३।८।२४
पागल १.	३।५।१५
पाचन १.	५।३।२६
पाज १.	४।३।७६
पाञ्चजन्य १.	१।१।१७
पाञ्चमिक १.	५।१।५९
पाञ्चालिका २	३।९।१४
पाट ४.	८।८।२
पाटल १.	५।३।१७
" १. २. ३.	७।५।५६
पाटला १. २. ३.	३।३।२३
पाटलि १. २.	३।३।९०
पाटलिङ्गिका २.	३।८।४९
पाटली २.	३।६।६२
पाटव ३.	४।४।१४२
पाटूर १.	२।१।७०
पाठक १.	३।३।२३
पाठा २.	३।३।१३१
पाठीन १.	४।१।४२
पाणि १.	४।४।७३
" १.	५।१।४९
" १.	८।६।९
पाणिक १.	५।१।३८
पाणिगृहीती २.	४।४।३५
पाणिग्रह १.	३।६।५५
पाणिघ १.	३।७।१
पाणिनि १.	३।६।१५४
पाणिन्युपज्ञ ३.	३।९।२१
पाणिपात्र १. २. ३.	३।६।१३२
पाणिमुक्त ३.	३।७।१९५
पाणिमूल ३.	४।४।७३
पाणिरुह १.	८।५।७६
पाणिवाद १.	३।९।७१
पाणिश १.	३।५।२०
पाण्डर १.	५।३।१०
" १.	५।३।१२

[ पाद ]

पाण्डिय १ ब.	२।१।३३
पाण्डु १.	३।३।२२२
" १.	५।३।१२
पाण्डुक १.	३।५।२७
पाण्डुकम्बलिन् १. २. ३.	३।७।१२९
पाण्डुभूम १. २. ३.	३।१।४५
पाण्डुल १.	५।३।१४
पाण्डुवर्णक १.	४।४।१३७
पाण्डुसोपाक १.	३।५।४३
" १.	३।५।१०६
पाण्ड्य १ ब.	३।१।३३
पात २.	४।४।५४
पातक ३.	३।६।१६८
पातन ३.	३।७।१७४
पाताल ३.	४।१।१
" ३.	७।४।२२
" ३.	८।३।१८
पातालमूलिक १. २. ३.	३।६।१२९
पाताली २.	७।२।१७
पातिक १.	३।७।१४०
पातुक १. २. ३.	५।४।३८
पात्म १.	२।१।८८
पात्र ३.	२।३।२६
" ३.	३।६।१४६
" ३.	३।९।६८
" ३.	४।२।३२
" ३.	५।१।५५
" ३.	६।३।२१
" १. २. ३.	८।९।३८
पाथस ३.	४।२।२१
" ३.	६।३।२०
पाथि १.	२।१।१३
पाथिस ३.	६।३।२१
पाथेय ३.	३।९।७
पाथोवका २.	३।३।२१९
पाद १.	२।१।१६
" १.	३।२।७
" १.	४।४।५६



पाद ]

वैजयन्तीकोषः

[ शालग्र

पाद १.	५२१७	पाप्मन् १.	३१६१७८
पाददण्ड १.	३१७१८३	पाप्मन् १.	४१४१२३
पादप १.	७११४५	पाप्मन् १. २. ३.	४१४१४५
पादपच्छाय १. २. ३.	८११३४	पाप्मन् १.	३१५५०
पादपाश १.	३१७११२	" १. २. ३.	५१४२२
पादपुटी २.	३१७११५	" १. २. ३.	७१४२०
पादप्रसार १.	३१६११७	पाप्मन् २.	४१४१२३
पादफली २.	३१७११५	पाप्मन् १.	३१२१४
पादरक्षणी २.	३१७१५५	पाप्मन् ३.	३१८१०९
पादरक्षणी २.	४१३१६२	" ३.	४१३७७
पादवाहिक १.	४१११८	पाप्मन् १.	४१४१०
पादस्फोट १.	४१४१२२	पाप्मन् १.	५११३४
( पादः, स्फोटः )		पाप्मन् १.	४१२३२
पादात १.	३१७१३९	पाप्मन् १.	३१२४४
" ३.	५११११	पाप्मन् १. २.	३१२८८
पादायुध १.	२३११४	पाप्मन् १.	३१५२२
पादावर्त १.	४१२२१	" १.	३१५८४
पादिक ३.	३१७१४०	पाप्मन् १.	३१६१६०
" १.	५११३८	पाप्मन् १.	३१२३४
" ३.	५११५२	" १.	३१५४
पादिका २.	४१३३९	" १.	३१६८
( पालिका )		" १.	३१७३
पादिकाशीर्ष ३.	४१३४०	" १.	३१७६
( पालिकाशीर्ष )		" १.	८११३२
पादुका २.	३१७५०	पाप्मन् १. २. ३.	३१७१४४
" २.	४१३१६२	पाप्मन् १.	३१७९४
पादू २.	६१२२४	" १.	३१७९४
पादूकृत १.	३१९४३	पाप्मन् १.	३१११९
पादोपवेश १.	३१६१२२	पाप्मन् १.	३१११९
पान १.	३१६२०४	पाप्मन् १.	३१११९
" ३.	४१३१०	पाप्मन् १.	८१३१९
पानगोष्ठिका २.	३१९५०	पाप्मन् १.	३१३१४
पानीय ३.	४१२२	" १.	३१५१०
पानीयशालिका २.	४१२२३	" १. २. ३.	८१५१५
पानीयसम्भव ३.	३१८१२२	पाप्मन् १.	३१३१४०
पाप १.	३१३१७७	पाप्मन् १.	३१५९४
" १.	३१६१६८	पाप्मन् १.	४१२१२
" १. २. ३.	६१५५०	पाप्मन् १.	३१६१६०
पापचेली २.	३१३१३०	पाप्मन् १.	१११३२

पालन ]

शब्दानुक्रमिका

[ पितृव्य

पालन १.	४११४६	पिङ्गल १.	४११२७
पालाश १.	५१३२२	" १.	५१३१८
पालि १.	३१६५०	पिङ्गलकेशाक्षी २.	३१६५२
" २.	३१८२६	पिङ्गला १.	२११९
" २.	४१४२३	" २.	२१३२१
" २.	६१२२२	पिङ्गाण १.	५१३१३
पालिकाष्ट ३.	४१३१०	पिच्छण्ड १.	७११५७
पाली २.	३१६४९	पिच्छिण्ड १. २. ३.	५१४७
" २.	३१९१२६	पिच्छिण्ड १.	४१३८९
पालुखञ्जन १.	३१५१०	पिच्छिण्डिका २.	३१९५८
पालुषी २.	४१४३५	पिच्छु १.	३१९९
पालक १.	३१९५५	" १.	५११४९
पालकवा २.	८१९६	पिच्छुमन्द १.	३१३७५
पावक १.	११२१५	पिच्छुल १.	३१३५०
" १.	३१३८६	" १.	३१३७६
" १.	३१६९२	पिच्छुल ३.	५११४७
पावन १.	३१८१११	पिच्छुल ३.	३१३३०
पावनक १.	३१८१३०	पिच्छुनन्द १.	३१३२०६
पावनी २.	३१६१५	पिच्छुनन्दका २.	४१३३१
पाश ३.	३१९३०	पिच्छा २.	४१३८०
" १.	६१३३७	पिच्छित १. २. ३.	५१४८३
पाशक १.	३१९६०	पिच्छिल १. २. ३.	५१३४
पाशबन्धन २.	३१४६१	पिच्छिला २.	३१९९२
( पादबन्धन )		पिच्छीला २.	३१९१२६
पाशिन १.	११२४५	पिच्छु ३.	२१३३९
पाशुपत १.	३१३१९४	" ३.	६१३२१
पाशुपाक्य ३.	३१७४	पिञ्ज १.	५१३१३
पाशुबन्धिक १.	११२२५	पिञ्जा २.	३१३२११
पाश्चात्य १. २.	३१३३	पिञ्जप १.	५१३२४
" १. २. ३.	५१४७६	पिट १.	४१३६४
पाश्या २.	५१११४	पिटक १.	४१३६३
पाषण्ड १.	३१६२३८	" १.	४१३६४
" १.	३१६२३९	" १. २. ३.	४१३१२३
पाषाण १.	३१२८	" १. २. ३.	८१३३७
पाषाणदारक १.	३१९२२	पिटका २.	४१३१२३
पाषाणपुष्प १.	३१८९६	" २.	८१३३७
पासि १.	२१११४	पिठर १.	४१३५५
पिक १.	२१३२६		
पिङ्ग १.	४१११४		
" १.	५१३१८		
पिङ्गल ३.	३१३२०२		



[ पितृवस्त्रीय ]

पितृवस्त्रीय १.	४४४४२	पीठर ३.	३३३२००
पित्त ३.	४४४१२१	पीठीव ३.	४४४६०
पित्तल ३.	३३३२६	पीडन ३.	३३३२०७
पित्या २.	२११७२	पीडा २.	३३३१८७
पित्सत् १.	२३३१	" २.	६३३२५
पिधान ३.	२११६४	पीडित १. २. ३.	४४४११५
" ३.	४३३५५	पीत १.	३३३११४
पिनद्ध १. २. ३.	३३३१४२	" १.	५३३१११
पिनाक १.	१११५०	पीतकङ्कु २	३३३१५६
" १. ३.	७५५५७	पीतघोषा २.	३३३१६२
पिनाकिन् १.	११३३९	पीतचन्दन ३.	३३३११३
पिपतिपत् १.	२३३१	पीततण्डुला २.	३३३१५५
पिपासा २.	३३३१८१	पीतदारु ३.	३३३१७१
पिपासित १. २. ३.	५३३३७	" १.	३३३१२२
पिपासु १. २. ३.	५३३३७	" ३.	३३३११४
पिपीलिका २.	४१३३६	पीतधातु १.	३३३१११
पिप्पल ३.	३३३२०	पीतधूमल १.	५३३२०
" १.	३३३२७	पीतन ३.	३३३११४
" ३.	४३३६८	" १.	३३३३३१
पिप्पलक १.	३३३१२	" ३.	३३३११७
पिप्पली २.	३३३७३	पीतपुष्प १.	३३३१७०
" "	३३३७६	पीतमुण्ड १.	२३३१९
पिप्पलीमूल ३.	३३३९१	पीतरक्त १.	५३३१७
पिप्पिका २.	२३३२४	पीतरसा १.	३३३१३९
पिप्पु १.	४३३९७	पीतल ३.	५३३११
पिलाट १.	३३३७३	पीतलिका २.	३३३७३
पिल्ल १.	६३३५	पीतलोह ३.	३३३२५
पिशङ्ग १.	५३३१८	पीतलोहित १.	५३३२०
पिशाच १.	१३३३४	पीतश्यामल १.	५३३२०
" १.	७३३५७	पीतसागर १.	३३३१५१
पिशित ३.	४३३१०७	पीतशाल १.	३३३३९
पिशुन १. २. ३.	५३३२५	पीतसितासित १.	५३३१२
पिष्ट १.	५३३५५	पीतहरित १.	५३३२१
पिष्टक १.	४३३७२	पीता २.	३३३२११
पिष्टपचन ३.	४३३५७	पीताम्बर ३.	१३३११
पिष्टपिण्डका २.	४३३७२	पीताम्लान १.	३३३१८८
पिष्टात १.	४३३१५७	पीति १.	३३३७९
पीठ ३.	४३३१६४	" १. २.	६३३५१
पीठबन्धन १.	४३३८०	पीतु १.	२३३३
पीठमर्द १.	३३३७०	पीथ १.	१३३१९

वैजयन्तीकोषः

[ पुञ्जील ]

पीथ ३.	३३३१३८	पीथ ३.	३३३१३८
" ३.	३३३१४५	" ३.	३३३१४५
" ३.	६३३२२	" ३.	६३३२२
पीन १. २. ३.	५३३६	पीनकोशी २.	३३३१६५
पीनस १.	४३३१४	पीनस १.	४३३१४
" १.	४३३१२१	पीनस्कन्ध १.	३३३१५
पीनस्तनी २.	३३३१४९	पीनस्तनी २.	३३३१४९
पीनाह १.	४३३२८	पीनोष्णी २.	३३३१४९
पीनोष्णी २.	३३३१४९	पीयु १.	६३३३२
पीयु १.	६३३३२	पीयूष ३.	३३३१४६
पीयूष ३.	३३३१४६	" ३.	७३३२३
" ३.	७३३२३	पीलु १.	३३३१४५
पीलु १.	३३३१४५	" १.	६३३३२
" १.	६३३३२	पीलुक १.	२३३३४
पीलुक १.	२३३३४	पीलुकुण १.	८३३१४
पीलुकुण १.	८३३१४	पीलुनी २.	३३३११४
पीलुनी २.	३३३११४	पीलुपर्णिका २.	३३३११४
पीलुपर्णिका २.	३३३११४	पीलुपर्णी २.	३३३११७
पीलुपर्णी २.	३३३११७	पीवन् १. २. ३.	५३३६
पीवन् १. २. ३.	५३३६	पीवर १.	३३३३९
पीवर १.	३३३३९	" १.	५३३६
" १.	५३३६	पीवरी २	३३३१४२
पीवरी २	३३३१४२	पुञ्जली २.	४३३९
पुञ्जली २.	४३३९	पुंस् १.	४३३२
पुंस् १.	४३३२	" १.	८३३६१
" १.	८३३६१	पुंसवन ३.	३३३३
पुंसवन ३.	३३३३	" ३.	३३३१४५
" ३.	३३३१४५	पुंहुल १.	४३३१२५
पुंहुल १.	४३३१२५	पुङ्ग १.	३३३१८५
पुङ्ग १.	३३३१८५	" १.	६३३३३
" १.	६३३३३	पुङ्गर्भः १.	४३३३९
पुङ्गर्भः १.	४३३३९	पुङ्गव १.	७३३५७
पुङ्गव १.	७३३५७	पुङ्गाह १.	३३३१००
पुङ्गाह १.	३३३१००	पुच्छ १. ३.	३३३७४
पुच्छ १. ३.	३३३७४	पुच्छभाग १.	३३३८१
पुच्छभाग १.	३३३८१	पुञ्ज १.	५३३३
पुञ्ज १.	५३३३	पुञ्जिका २.	२३३७
पुञ्जिका २.	२३३७	पुञ्जील १.	३३३३३

[ पुट ]

पुट २.	३३३२८	पुनरुद्धा २.	३३३४५
" १. २. ३.	३३३३३	पुनर्नव १.	४३३७६
" १.	४३३१	पुनर्नवा २.	३३३१४६
" १.	४३३१४	पुनर्भव १.	४३३७६
" १. २. ३.	८३३३७	पुनर्भू २.	३३३४५
पुटकिनी २.	४३३४४	पुनर्भूज १.	४३३४५
पुटभेद १.	४३३३०	पुनर्भुवन् १.	२३३२५
पुटभेदन ३.	४३३३	पुनर्वसु १.	२३३३९
पुटानिल १.	१३३५३	" १.	३३३१५८
पुटी २.	३३३३३	पुत्राग १.	३३३७०
" २.	८३३३७	पुष्पिका २.	४३३३३
पुष्ट १.	६३३३२	पुर् २.	३३३१६३
पुष्टक १.	५३३१०	" २.	४३३१
पुष्टरीक १.	२३३१८	" २.	८३३१६
" ३.	३३३१२३	पुर् १.	३३३५४
" १.	४३३१५	" ३.	३३३२३४
" १.	४३३१९	" १.	३३३२७
" ३.	४३३२३	" ३. २.	४३३१
" ३.	४३३४०	पुर्ः(-स्) ४.	८३३११
" १.	८३३१६	पुर्क्षक १ ब.	३३३३०
पुष्टरीका १.	१३३१०	पुर्तः(-स्) ४.	८३३११
पुष्ट १ ब.	३३३३०	पुर्द्वार ३.	४३३१५
" १.	३३३२२६	पुर्न्दर १.	१३३२
पुष्टलक्षण २.	३३३३०	पुर्न्ध्री २.	४३३२१
पुष्टा २.	३३३४३	पुर्मद १.	३३३१०८
पुष्ट ३.	३३३१६८	पुर्रचिन् १.	३३३१८
" १. २. ३.	६३३५०	पुर्स्कृत १. २. ३.	८३३१९
पुष्टगन्धिक ३.	४३३४०	पुर्स्तात् ४.	८३३३३
पुष्टजन १.	८३३२६	पुर्स्सर १. २. ३.	३३३१४५
पुष्टजनेश्वर	१३३५८	पुरा ४.	८३३२३
पुष्टाह ३.	२३३६७	पुराज १.	१३३८
" ३.	८३३२२	पुराण ३.	३३३३८
पुत्तिका २.	२३३४८	" ३.	३३३२९
पुत्र १.	४३३३९	" १. २. ३.	५३३८७
" १.	४३३४८	पुराणान्त १.	१३३३५
" १.	८३३३३	पुरातन १. २. ३.	५३३८७
पुम्जीव १.	३३३७९	पुरावृत्त ३.	२३३३८
पुद्गल १.	८३३३३	पुरी २.	४३३७
पुनःपुनः (रू) ४.	८३३११	" २.	४३३१
पुनर् ४.	८३३२४	पुरीष ३.	३३३२४

शब्दानुक्रमणिका

[ पुत्कस ]

पुरीष ३.	४३३११८	पुत्कस १.	३३३४८
पुरु १. २. ३.	५३३८५	" १.	३३३४८
पुरुष १.	१३३१८	" १.	३३३४८
" १.	४३३२	" १.	७३३४६
" १.	७३३४६	पुरुषव्याघ्र १.	२३३३०
पुरुषव्याघ्र १.	२३३३०	पुरुषाद १.	१३३४१
पुरुषाद १.	१३३४१	पुरुषोत्तम १.	१३३१२
पुरुषोत्तम १.	१३३१२	पुरुह १. २. ३.	५३३८५
पुरुह १. २. ३.	५३३८५	प्रकृत १.	१३३२
प्रकृत १.	१३३२	पुरोगा १. २. ३.	३३३१४५
पुरोगा १. २. ३.	३३३१४५	पुरोगम १. २. ३.	३३३१४६
पुरोगम १. २. ३.	३३३१४६	पुरोगामिन् १.	३३३७०
पुरोगामिन् १.	३३३७०	" १. २. ३.	३३३१४६
" १. २. ३.	३३३१४६	पुरोडाश १.	३३३९९
पुरोडाश १.	३३३९९	पुरोधस् १.	३३३२४
पुरोधस् १.	३३३२४	पुरोनुवाक्या २.	३३३१२
पुरोनुवाक्या २.	३३३१२	पुरोभागिन् १. २. ३.	५३३३४
पुरोभागिन् १. २. ३.	५३३३४	पुरोवचस् ३.	२३३४१
पुरोवचस् ३.	२३३४१	पुरोवात १.	१३३५४
पुरोवात १.	१३३५४	पुरोहित १.	३३३२४
पुरोहित १.	३३३२४	पुरोहिन् १.	३३३३४
पुरोहिन् १.	३३३३४	पुलक १.	३३३४१
पुलक १.	३३३४१	" १.	३३३१६३
" १.	३३३१६३	" १.	७३३४७
" १.	७३३४७	पुलकिन् १.	३३३६०
पुलकिन् १.	३३३६०	पुलाक १.	७३३४७
पुलाक १.	७३३४७	पुलाकिन् १.	३३३३५
पुलाकिन् १.	३३३३५	पुलिन ३.	४३३३३
पुलिन ३.	४३३३३	पुलिन्द १.	३३३४७
पुलिन्द १.	३३३४७	" १.	३३३४७
" १.	३३३४७	" १.	३३३८३
पुलिन्दक १.	४३३१६	पुलोमजा २.	१३३११
पुलोमजा २.	१३३११	पुलोमशत्रु १.	१३३३
पुलोमशत्रु १.	१३३३	पुत्कस १.	३३३४८
पुत्कस १.	३३३४८	" १.	३३३४८
" १.	३३३४८	" १.	३३३४८
" १.	३३३४८	" १.	३३३४८



[ पुष्कस ]

पुष्कस १.	३१५८९
" १.	३१५९१
पुष्प १.	४१४६१
पुष्पित १. २. ३.	५४१११४
पुष्कर १.	३१८८८
" ३.	७३१२४
पुष्करसार १.	४१११६
पुष्कराह्वय १.	२३३३३
पुष्करिणी २.	४२१५
पुष्कल १.	३१६१५
" ३.	३१६१६
" १.	४३११२
" १. २. ३.	७४११९
पुष्ट १. २. ३.	५४१११४
पुष्टि २.	११११६
पुष्टिवर्धन १.	२३३२८
पुष्प १.	३३३१८
" ३.	४४११६
" ३.	८१११५
पुष्पक १. ३.	३१५५४
" १.	४१११८
पुष्पकाल १.	२११८८
पुष्पकेतु १.	३३३३३
पुष्पदन्त १.	२११८
पुष्पधन्वन् १.	१११२८
पुष्पफल १.	३३३३२
पुष्पफलित् १.	३३३३६
पुष्परजस् ३.	३१८११७
पुष्पलोलुप १.	२३३३२
पुष्पव १.	३१५५४
" १.	३१५५९
पुष्पवत् १.	२११२९
पुष्पवती २.	४१११५
पुष्पवाटी २.	३३३३४
पुष्पवीर्या २.	३३३१२८
(पुष्पी, वीर्या)	
पुष्पसारण १.	२११८७
पुष्पाब्ज १. २. ३.	३३३१२८
पुष्पाभिकीर्णक १.	४११११

वैजयन्तीकोषः

पुष्पाभिकीर्णक १.	४१११६
पुष्पिका २.	३१९१२७
पुष्पित १. २. ३.	३३३८
पुष्प १.	२१३३९
" १.	२१३९१
पुष्पफल १.	३३३१७०
पुष्पस्थ १.	३७१२६
पुष्पल १.	३१८८५
पुस्त ३.	३१९१६
पुस्तक ३.	४३३१०९
पू २.	३३३१६३
पूग १.	३३३१७७
" १.	५११११
पूगतिथ १. २. ३.	
पूगपट्ट १.	५१११९
पूगपुष्पिका २.	३३३२२२
पूगावपनी २.	४३३१०८
पूजा २.	३३३३९
पूजित १. २. ३.	
पूज्य १. २. ३.	६१५५१
पूज्यपाद १. २. ३.	
पूत १. २. ३.	३१८६७
" १. २. ३.	५१४६५
पूतना २.	२१११८
पूति १. २.	३१५३५
" १.	५३३५७
पूतिक १.	३३३३२
पूतिकरज १.	३३३३२
पूतिकाष्ठ ३.	३३३७१
पूतिकाष्ठक ३.	३३३७४
पूतिपुष्पी २.	३३३३४
पूतिफली २.	३३३१०८
पूत्यण्ड १.	२३३४८
पूप १.	४३३७२
पूय ३.	४१११८
पूर १.	४२३३०
पूरक १.	३३३३३
" १.	३१८४४

[ पृतना ]

पूरक १.	३१९६४
पूरणा २.	३३३१४५
पूरणी २.	३३३१०
" २.	३३३१४७
पूरित १. २. ३.	५४१८६
पूरी २.	३३३१४५
" २.	३१८१२५
पूरुष १.	४१४३
पूरुष ३.	३७११९१
" १. २. ३.	५४१८६
" १. २. ३.	५४१८६
पूरुणकलश १. ३.	३३३५८
पूरुणकुम्भ १.	४३३६१
पूरुणकूट १.	२१३३२
पूरुणकूटक १.	२१३३२
पूरुणपात्र ३.	३३३६१
पूरुणपात्रक ३.	३३३१७
पूरुणमासी २.	२१३७२
पूरुणा २.	२१३७२
पूरुणनिक ३.	३३३६१
पूरुणि २.	४२१३३
पूरुणिका २.	२१३७२
पूरुणिमा ३.	२१३७२
पूरुत ३.	३३३११५
पूरुव १. २. ३.	५४१४०
" १. २. ३.	६१५४७
पूरुवगन्धिक १.	३११८
पूरुवज १.	४१४३१
" १. २. ३.	५४१४
पूरुवद्विपाल १.	१३३२
पूरुवदेव १.	१३३१०
पूरुवद्वज १.	३३३३९
पूरुवद्वि १.	२१३६४
पूरुवद्विः (-स्) ४.	८१३२
" ४.	८१३८
पूल १. ३.	३१८६४
पूलक १.	४१११५
पूलन् १.	२१११०
पूकथ ३.	३१८७३
पूच्छा २.	२१३३७
पृतना २.	३१७५५

[ पृतना ]

पृतना २.	३१७५८
पृतनासाह १.	१३३२
पृथक् ४.	८१८४
पृथक्क्रया २.	२१४४०
पृथक्कर्णी २.	३३३३३६
पृथग्जन १.	८१३२६
पृथक् १ ब.	३११४०
पृथिवी २.	३१३३
पृथिवीपति १.	८११५३
पृथु १.	३३३४०
" २.	३१८८५
" २.	३१८१३२
" १. २. ३.	५४१८०
पृथुक् १.	४३३६८
" १.	७११५८
पृथुचित्र १.	३३३४१
पृथुच्छुद १.	३३३७६
पृथुरोमन् १.	४११४१
पृथुल १. २. ३.	५४१८०
पृथुशालिका २.	३१८८५
पृथुसूय १.	३१८४०
पृथुहस्त १.	३७७१
पृथिवका २.	३१८८५
" २.	३१८१३२
पृथ्वी २.	३१३३
" २.	३१८८५
पृथ्वीका २.	३१८८७
पृदाकु १.	७११५८
पृथि १. २. ३.	४१५५
पृथिपर्णी २.	३३३३३६
पृथक् २. ३.	२३३८
पृथक् १.	२३३८
" १.	३३३३३
" १.	३३३९९
पृथक्ता २.	३३३४७
पृथक्क १.	३७१७९
पृथक्दशक १.	३३३७१
पृथक्दश १.	१३३५०
पृथक्दाज्य ३.	३३३९९
पृष्ठ ३.	४३३६९
पृष्ठग्रन्थि १.	४३३३३

शब्दानुक्रमणिका

पृष्ठचक्र १.	४११४६
पृष्ठमध्यास्थि ३.	४३३९१
पृष्ठमासादन ३.	५३३८
पृष्ठवाह्य १. २. ३.	३३३५६
पृष्ठस्थ १. २. ३.	३७१४१
पृष्ठ्य १. २. ३.	३३३५६
" ३.	५११४४
पेचक १.	२३३२२
" १.	७१५३
पेचिका २.	२३३३१
पेट १. २. ३.	८१३३७
पेटक १.	४३३३३
" ३.	५१३३
पेटा २.	४३३३३
पेटी २.	८१३३७
पेत्व १.	३३३६४
पेय ३.	४३३९१
पेरा २.	३३३४
पेराल १.	५३३२०
पेरु १.	२१३३३
" १.	५३३३२
पेलव १.	३३३८५
" ३.	३३३७९
" १. २. ३.	५४१३६
पेशल १. २. ३.	५४१५४
" १. २. ३.	५४१३७
" १. २. ३.	७४१९९
पेशि २.	३३३८९
" २.	४३३१२
पेशी १.	२३३५०
पैङ्गराज १.	४१११७
पैठर १. २. ३.	४३३९४
पैण्ड १. ३.	४३३९३
पैण्डसेय १.	४३३४२
पैण्डिकी २.	३३३५०
पोगण्ड १. २. ३.	५४१११
पोटकी २.	४३३२४
पोटगल १.	४११३६
" १.	८१३२७
पोटना २.	२३३२६
पोटरूप १.	३३३५५

[ पौष ]

पोटा २.	४३३३
पोत १.	३३३६६
" १.	४३३४०
" १.	४३३३५
" १.	६३३३३
पोतकी २.	२३३१९
पोतवणिज् १.	४३३१८
पोतवाह १.	४३३१८
पोताधान ३.	४३३४५
पोत्र ३.	६३३२२
पोत्रिन् १.	३३३६
" १.	३३३९
पोथ १.	४३३५५
पोलिक १.	४३३७१
पोलिन्द १.	४३३३६
पोषी २ ब.	२३३१२
पोहित्थ ३.	४३३५५
पौश्चलेय १.	४३३४३
पौसन ३.	३३३३
" १. २. ३.	५४११८
पौण्ड्र १.	३३३५०
पौतव १.	५३३६४
पौत्तिक ३.	३३३३५
पौत्र १.	४३३४५
पौनर्भव १.	४३३४५
पौपिक १. २. ३.	४३३९२
पौर १.	१३३२२
पौरस्थ १. २. ३.	५४३६
पौरुष १. २. ३.	४३३८३
" ३.	४३३११
" ३.	७३३५८
पौरुषेय १. २. ३.	८३३१०
पौरिन्द्र १.	२३३३२
पौरोगव १.	३३३२१
पौरहित ३.	३३३२७
पौरिमासी २.	२३३७२
पौरिपथ ३.	३३३१३
पौलस्थ १.	१३३५६
" १.	७३३५९
पौलोमी २.	१३३११
पौष १.	२३३८२



[ पौषी ]

पौषी २.	२११७४
पौष्टिक ३.	३१६११९
पौष्पक ३.	३१२४३
पौष्यक ३.	३१२४१
सा २.	४४११०१
प्याट् ४.	८८८२
प्र ४.	८१७६
प्रकट १.	३१९१३७
" १. २. ३.	५४११३४
प्रकरपन १.	११२५०
प्रकर ३.	३१८१०७
" १.	५१११
प्रकरण ३.	३१९१००
प्रकाण्ड ३.	८१९४२
प्रकाण्डकम् ३.	३३३१२
प्रकामम् ४.	४३३१०४
प्रकार १.	५२२२३
" १. २. ३.	५४११२२
" १.	७११५६
प्रकाश १.	१२३३१
" १. २. ३.	५३१३३४
" १. २. ३.	७५५४४
प्रकीर्णक १.	३१७९०
" ३.	४३११५९
प्रकीर्य १.	३३३६२
प्रकुञ्ज ३.	५११५१
प्रकृति २.	३१६१६१
" २.	३७३
" २.	५२२२
" २.	७२११२
प्रकोटी २.	३३१११३
प्रकोष्ठ १.	४४४७२
" १.	७११५२
प्रक्रम १.	५२११५
प्रक्रय १.	३१८६९
प्रक्रिया २.	७२११४
प्रक्षण १.	२४११२
प्रकाण १.	२४११२
प्रचुर १.	३१७११५
प्रचुराङ्गी २.	३१४४४
प्रचवेलन १.	३१७१८०

[ वैजयन्तीकोषः ]

प्रखर १. ३.	३१७११५
प्रख्य १. २. ३.	५४११२२
प्रयणिका २.	४३३३३
( प्रगणिता )	
प्रगण्ड १.	४४१७२
प्रगतजानुक १. २. ३.	
	५४११०
प्रगल्भ १. २. ३.	५४११७
प्रगाल १. २. ३.	७४३२०
प्रगुण १. २. ३.	५४११२४
प्रगो ४.	८८११०
प्रग्रह १.	२११४८
" १.	३१९५७
" १.	७११४९
प्रग्राह १.	७११४९
प्रग्रीव १. ३.	७५५५६
प्रघण १.	४३३४५
" १.	७११५२
प्रघाण १.	३३३१५
" १.	४३३४५
प्रघात १.	३१७२०५
प्रघार १.	५२३३४
प्रचक्र ३.	३१७२०१
प्रचक्षस् १.	२११३४
प्रचल १. २. ३.	५४११८
प्रचालक १.	२३३३९
प्रचार १.	३१७१५८
प्रचुर १. २. ३.	५४१८४
प्रचूडक १.	३१८१४८
प्रचेतस् १.	१२१४६
" १.	७११५६
प्रच्छदपट १.	४३३१६६
प्रच्छन्नद्वार ३.	४३३१२६
प्रच्छदिका २.	४३३४२
" २.	८१९५
प्रजनन ३.	४४१६२
प्रजनिष्णु १. २. ३.	
	५४११४
प्रजल्पन ३.	२४३३९
प्रजा २.	४४१४१
" २.	६२२३३

[ प्रति ]

प्रजागम १.	३१६८६
प्रजागर १.	३१७१५८
प्रजाता २.	४४१४२
प्रजानुक १.	४४१५३
प्रजापति १.	१११६
" १.	८११३४
प्रजापतिहस्तक १.	
	३११५५
प्रजावती २.	४४३३६
प्रज्ञा २.	४४२२१
" २.	६२२३३
प्रज्ञान ३.	७३२२२
प्रज्ञु १. २. ३.	५४११०
प्रज्वलित १. २. ३.	
	८११४४
प्रणय १.	३१८७०
" १.	७११४४
प्रणव १.	३१६२३३
प्रणष्ट १. २. ३.	३१७२१९
प्रणाद १.	२४३९
प्रणाम १.	५२२२४
प्रणाय १. २. ३.	
	७४११५
प्रणाल १. २. ३.	४२२२०
प्रणिधि १.	७११५५
प्रणिपात १.	५२२४८
प्रणिहित १. २. ३.	
	५४११०९
" १. २. ३.	८१४९
प्रणीत ३.	४३३९४
प्रणीति २.	४३३३८
प्रणेत्य १. २. ३.	५४३३२
प्रतति २.	७२११५
प्रतल १.	४४१७७
प्रतानिनी २.	३३३७
प्रताप १.	७११५४
प्रतापन ३.	५३३८
प्रतापस १.	३१४१४
प्रतारण ३.	५२३३५
प्रतारिका २.	४४३६६
प्रति ४.	८१७२५

[ प्रतिकर्मन् ]

प्रतिकर्मन् ३.	४३३१३२
प्रतिकूल १. २. ३.	
	५४१२७
प्रतिकृति २.	३१९२०
प्रतिकृष्ट १. २. ३.	
	५४१७५
प्रतिनिक्ष १. २. ३.	८१४८
प्रतिख्याति २.	५२२२९
प्रतिग्रह १.	८१३३९
प्रतिग्राह १.	४३३१६०
प्रतिघ १.	७११५४
प्रतिघातन ३.	३१७२१४
प्रतिच्छन्द १.	५११२१
प्रतिच्छाया २.	५११२०
प्रतिजागर १.	५२२२९
प्रतिज्ञा २.	५२३३७
प्रतिज्ञात १. २. ३.	
	५४११०६
प्रतितर्जन ३.	२४३३९
प्रतिताली २.	४३३४९
प्रतिदान ३.	८३३९
प्रतिध्वान १.	२४३१२
प्रतिध्वानदन्तुर १. २. ३.	
	२४३१४
प्रतिनप्तृ १.	४४३४५
प्रतिनिधि १.	३१९२१
प्रतिपक्ष १.	३१७४२
प्रतिपत्ति २.	८२३७
प्रतिपद २.	२११६९
" २.	७२११६
प्रतिपादन ३.	३१६११८
प्रतिबन्ध १.	५२३३३
प्रतिबिम्ब ३.	३१९२१
प्रतिभ १.	३१९६९
प्रतिभय १. २. ३.	
	३१९७८
" १. २. ३.	८१५१७
प्रतिभा २.	३१६१७६
प्रतिभातवाच् १. २. ३.	
	५४३४७

( प्रतिभासवाच् )

[ शब्दानुक्रमणिका ]

प्रतिभायुक्त १. २. ३.	
	५४११७
प्रतिभास १.	३१६१७६
प्रतिभू १. २. ३.	३१८१०
प्रतिम १. २. ३.	५४१२१
प्रतिमा २.	३१९२०
प्रतिमुक्त १. २. ३.	
	३१७१४२
प्रतियज्ञ १.	८१३३१
प्रतियातना २.	३१९२०
प्रतिरवि १.	४११२८
प्रतिरूपक ३.	३१९२१
प्रतिरोधक १.	३१९५६
प्रतिरोधिन् १.	३१९५६
प्रतिलम्भ १.	५२२२०
प्रतिलोम १.	३१५११८
" १.	३१५११९
" १. २. ३.	
	५४१२७
प्रतिलोमज १.	३१५८९
" १.	३१५१०९
प्रतिवसथ १.	४३३२
प्रतिवाक्य ३.	२४३३७
प्रतिविषा २.	३१८१०
प्रतिशासन ३.	५२३३५
प्रतिशिष्ट १. २. ३.	८१४८
प्रतिश्रय १.	४४१२१
प्रतिश्रय १.	८१३३१
प्रतिश्रव १.	५२२२९
" १.	५२३३७
प्रतिश्रुत् २.	२४३१२
प्रतिष्कश १. २. ३.	
	८१५१४
प्रतिष्टम्भ १.	५२३३३
प्रतिष्ठा २.	७२११५
प्रतिसञ्चर १.	२११९५
प्रतिसर १.	३१६१५
" १. २. ३.	८१५१४
प्रतिसर्ग १.	२११९५
प्रतिसारण ३.	४४११४०
प्रतिसारा २.	४३३१२४

( ९७ )

[ प्रत्यादेश ]

प्रतिहत १. २. ३.	८१४८
प्रतिहारी २.	३१७३८
प्रतिहास १.	३३३१९२
प्रतीक १.	४४१५५
" १. २. ३.	७१५५४
प्रतीकार १.	३१७२०९
प्रतीक्ष्य १. २. ३.	७४११७
प्रतीच १.	३१८१७
प्रतीची २.	२११५
प्रतीचीन १. २. ३.	
	५४१९१
प्रतीच्छा २.	४३३१००
प्रतीत १. २. ३.	७४११६
प्रतीप १. २. ३.	५४११२७
प्रतीपदर्शिनी २.	४४१५
प्रतीवाप १.	३१८१४४
प्रतीहार १.	८११२७
प्रतोद १.	३१८२९
प्रतोली २.	४३३१६
प्रतन १. २. ३.	५४१८७
प्रत्यक्च्छेणी २.	३३३११३
" २.	३३३१३३
प्रत्यक्पर्णी २.	३३३११५
प्रत्यक्ष १. २. ३.	५४११३३
प्रत्यगाशापति १.	१२१४६
प्रत्यगृष्टि २.	३१६१७५
प्रत्यग्र १. २. ३.	५४१८९
प्रत्यग्रथ १ ब.	३११२६
प्रत्यच् १. २. ३.	५४१९१
प्रत्यनीक १.	३१७४१
प्रत्यय १.	७११५१
प्रत्ययित १. २. ३.	३८८९
( प्रत्ययिक )	
प्रत्ययिन् १.	३१७४२
प्रत्यवसान ३.	४३३१०२
प्रत्यवसित १. २. ३.	
	५४११०७
प्रत्यवस्कन्द १.	३१८१६६
प्रत्याकार १.	३१७१६८
प्रत्याख्यान ३.	५२२३३
प्रत्यादेश १.	५२२३३



[ प्रत्यालीढ ]

प्रत्यालीढ ३.	३१७१८८
प्रत्यासार १.	३१७५९
प्रत्याहार १.	३१६२३१
" १.	३१९१४०
" १.	५२११८
प्रत्युत्क्रम १.	५२११५
प्रत्युत्पन्नमति १. २. ३.	५४३११
प्रत्युष १.	२११६८
प्रत्युष ३.	२११६८
प्रत्युषडम्बर १.	२१११५
प्रत्यूह १.	५२१४
प्रथन ३.	३१७२०४
" १.	३१८३६
" ३.	५२१३४
प्रथम १. २. ३.	५११२१
" १. २. ३.	५४३७६
" १. २. ३.	५४१४०
" १. २. ३.	७४११७
प्रथा २.	५२१३४
प्रथिक ३.	३१६१८
प्रथिमन् १.	८१९१४
प्रदर १.	४२१९
" १.	७११५७
प्रदीप्त १. २. ३.	८१४१४
प्रदेशन ३.	३१७४६
( प्रदर्शन )	
प्रदेशिनी २.	४१४७३
प्रदेष्टु १.	३१७२३
प्रदोष १. ३.	२११६५
" १.	७११५५
प्रद्युम्न १.	१११२७
प्रद्योतन १. ३.	८१५१७
प्रद्राव १.	३१७२११
प्रधान १. ३.	५४३६२
प्रधानधातु १.	४१४१११
प्रधि १.	३१७१३५
" १.	८१९१३
प्रपञ्च १.	७११५६
प्रपतित १. २. ३.	५४११५

वैजयन्तीकोषः

प्रपद ३.	४१४५७
प्रपदव्यापिन् १. २. ३.	४३१२२१
प्रपा २.	४३२२३
प्रपाठक १.	३१६३२
प्रपात १.	३२१६
" १.	४२३२२
" १.	७११५३
प्रपातिन् १.	३२१२
प्रपितामह १.	४४२९
प्रपुञ्जाट १.	३३१५८
प्रपौत्रक १.	४४४५
प्रफुल्ल १. २. ३.	३३१९
प्रबर्ह १. २. ३.	५४३६२
प्रबल १. २. ३.	३१७१५१
" १. २. ३.	५४३६
प्रबोधन ३.	४३११४७
प्रभ १. २. ३.	५४१२१
प्रभञ्जन १.	१२१४९
प्रभव १.	७११५०
प्रभवन्ती २.	५२१२
प्रभवविणुता २.	५२१२
प्रभा २.	२११२२
" २.	२११२३
" २.	६२२३
प्रभाकर १.	२१११४
प्रभात ३.	२११६९
प्रभाव १.	५२१२
" १.	७११५६
प्रभावती २.	३१९१२०
प्रभास ३.	३२१२८
प्रभिन्न १.	३१७६८
प्रभु १. २. ३.	५४१५७
" १. २. ३.	६४११०
प्रभुता २.	५२१२
प्रभूत १. २. ३.	५४१८४
प्रभृष्टक ३.	४३१५५
प्रमथ १.	१११५१
" १.	३१७२११
प्रमथन ३.	३१७२१३
प्रमथाधिपति १.	१११४१

[ प्रलम्बाण्ड ]

प्रमदा २.	४४१५
प्रमदावन ३.	३३३३
प्रमनस् १. २. ३.	५४३३३
प्रमा २.	५२३३३
प्रमाण ३.	७३२३
प्रमातामह १.	४४३०
प्रमाथ १.	३१७१८९
प्रमाथित ३.	३१८१४३
प्रमाद १.	३३१७८
प्रमापण ३.	३१७२१३
प्रमिति २.	५२३३३
प्रमीत १. २. ३.	३१७२२०
प्रमीला २.	३३१९७
प्रमुख १. २. ३.	५४३६२
" १. २. ३.	५४३७६
प्रमृत ३.	३१८३
प्रमेह १.	४४१२८
प्रमेहनुद् १.	३३१०६
प्रमोद १.	३३१८८
प्रयत १. २. ३.	५४३५
" १. २. ३.	७४११८
प्रयत्त १. २. ३.	५४३९९
प्रयत्नवत् १. २. ३.	५४११४
प्रयम १.	३३११४
प्रयस्त १. २. ३.	४३१९४
प्रयाण ३.	७३२१
प्रयाम १.	३१८६६
प्रयुत ३.	५११२८
" ३.	५११२९
प्रयोक्तृ १. २. ३.	३१८८
प्रयोग १.	५२११५
" १.	७११४४
प्रयोजन ३.	३३२३६
" ३.	८३१८
प्ररूढ १.	३१८५२
प्ररोचना २.	३१९१४२
प्ररोह १.	३३१११
प्ररोहक १.	३१७१५५
प्रलम्बाण्ड १. २. ३.	५४३८

[ प्रलम्बारि ]

प्रलम्बारि १.	१११२३
प्रलय १.	२११९५
" १.	३१९८९
" १.	७११४३
प्रलाप १.	२१४३०
प्रलोभिन् १.	३३१८९
प्रलोभ्य ३.	४४१०१
प्रवक १.	३१९६४
प्रवण १. २. ३.	७५५३
प्रवयस् १. २. ३.	५४३३
प्रवर १.	३१८३४
" १.	३१८३७
" ३.	३१८१९९
" १. २. ३.	५४३६२
" १. २. ३.	८१९५३
प्रवर्ग्य १.	१२१२९
प्रवर्हिता २.	२१४३९
प्रवह १.	७११४३
प्रवहण ३.	३१७२७
" ३.	४२११५
प्रवापण ३.	३३१२०
प्रवाल १. ३.	३२३३९
" १.	३३३१५
" १.	३३३१५४
" १. ३.	७५५५
प्रवासन ३.	३१७२३३
प्रवाह १.	४२३३०
" १.	५२३३९
" १.	७११४५
प्रवाहि १.	३१७२५
प्रवाहिक १.	१२१४१
प्रवाहिका २.	४४१२९
प्रविदारण ३.	३१७२०४
प्रविसर १.	२११६८
प्रविसारण ३.	३१७२१५
प्रवीण १. २. ३.	५४३१९
प्रवीरा २.	४३१११
प्रवृत्ति २.	३१७८२
" २.	३१८४८
" २.	७२११६
प्रवृद्ध १. २. ३.	७४११८

शब्दानुक्रमणिका

प्रवेक १. २. ३.	५४३६३
प्रवेणी २.	७२११६
प्रवेल् १.	३१८३६
प्रवेश १.	५२११४
प्रवेष्ट १.	३१७७२
" १.	४४३७२
प्रव्याल १.	२११३२
प्रवजित १.	३३१६०
प्रशंसा २.	२१४३५
प्रशसन ३.	३१७२१४
प्रशस्तमृद् २.	३१८२४
प्रशान्ताचिस् १.	१२३३२
प्रशान्तिक ३.	३३१८२
प्रश्न १.	२१४३७
" १.	८१९१४
प्रश्नवादिनी २.	४४३११
प्रश्नय १.	५२३३८
प्रश्नित १. २. ३.	५४३३२
प्रष्ट १. २. ३.	३१७१४५
प्रष्टवाह १. २. ३.	३१७५६
प्रसञ्चा २.	३१९१५
प्रसम्भ १.	१२१५५
" १. ३.	३१७२०९
प्रसम्भा २.	३३१६६
प्रसरणी २.	३१७२०१
प्रसर्पक १.	३३१८१
प्रसव १.	२११८७
" १.	३३३२०
" १.	४४३४०
" १.	७११४८
प्रसव्य १. २. ३.	५४३२८
" १. २. ३.	७४११८
प्रसहनी २.	३३११०४
प्रसहा २.	३३३१०४
प्रसह्य ४.	८१८१८
प्रसाद १.	७११५५
प्रसादन १.	३३३३८
( प्रसाधन )	
" १.	४३३२९
" ३.	४३३७५
प्रसाधन १.	४३३११२

[ प्रस्नाव ]

प्रसाधन ३.	४३३११२
" ३.	४३३१३२
प्रसित १. २. ३.	५४३३०
प्रसिति २.	५२२२८
प्रसिद्ध १. २. ३.	७४३१९
प्रसू २.	६२२२४
प्रसूता २.	४४३१७
प्रसूताता १ द्वि.	४४३४७
प्रसूति २.	४४३४१
" २.	७२११६
प्रसूतिका २.	४४३१७
प्रसूतिज ३.	१२३३९
प्रसून ३.	३३३१८
" ३.	७३३२४
" १. २. ३.	७५५५
प्रसूत १.	४४३७७
" १. ३.	५११५२
प्रसूता २.	४४३५८
प्रसूत्वन् १. २.	८१५२९
प्रसेवक १.	३१९१२०
" १.	४३३६४
प्रस्कन्न १. २. ३.	३३३२१९
प्रस्तर १.	३२३८
" १.	३३३९१
" १.	४३३१६५
" १.	७११५१
प्रस्तार १.	३३३२
प्रस्ताव १.	२४३४१
प्रस्तुता २.	३३३४९
प्रस्थ १.	५११५३
" १.	५११६३
" १.	६१५४६
प्रस्थान ३.	५२११०
प्रस्फोटन ३.	४३३६५
" ३.	४३३६६
प्रस्मरण ३.	३३३१७७
प्रस्वण १.	३३३४
" ३.	३३३७
प्रस्नाव १.	४३३७८



प्रस्ताव ]	वैजयन्तीकोषः	[ प्रासाद	प्रास्थित ]	शब्दानुक्रमिका	[ फलिनी
प्रस्ताव १. ४१११२०	प्राच्छ १. ३१६२४	प्रान्तर ३. ३११५०	प्रास्थित १. २३१६	प्रेत्य ४. ८११५	प्लुन १. २. ३. ३१७१२३
प्रहत १. २. ३. ३१८१८	प्राच्य १. ३११२२	" ३. ४३११२	प्राहुण १. ३१६६८	प्रेमन् १. ३. ३१६१८६	प्लुषि १. २३१४८
" १. २. ३. ५१४१९	प्राजन ३. ३१८२९	प्रापणिक १. ३१८७२	प्राहु १. २११६४	" १. २. ५१५५१	प्लुसत १. २. ३. ५१४१०७
" १. २. ३. ७१४१८	प्राजापत्य ३. ३१६२	प्रापणिका २. ३१६५०	प्रिय १. ३३३३१	प्रेष्य १. ३१९२	फ
प्रहर १. २११६७	" १. ३१६१८	प्राप्त १. २. ३. ५१४१९	" १. २. ३. ३१७४३	प्रेष १. ६११३३	फक्किका १. ३१६३३
प्रहरण ३. ८३१८	" ३. ३१६१३६	" १. २. ३. ५१४१०३	" १. ३१७३७	प्रोक्षण ३. ३१६९४	( पत्तिका )
प्रहसन ३. ३१९१००	" १. ३१६२०७	" १. २. ३. ५१४१०९	" १. २. ३. ५१७०	प्रोक्षणासादन ३. ३१६८४	फण १. २. ४११२१
प्रहसन्ती २. ३३३१८७	प्राजितृ १. ३१७१३८	" १. २. ३. ६१४१०	" १. २. ३. ५११३५	प्रोन १. २. ३. ३१९१२	फणिन् १. ३३३४९
( प्रसहन्ती )	प्राज्ञ १. ३१६२३४	प्रासरूप १. २. ३. ८१५१५	प्रियंवद १. २. ३. ५१४४४	प्रोथ १. ३. ३१७१०९	" १. ४११५
प्रहस्त १. ११२४४	प्राज्ञा २. ४१४२१	प्रास्तु २. ४१४८	प्रियक १. ३३३३९	प्रोथिन् २. ३१७१०	फणिर्जक १. ३३३१२०
" १. ४१४७७	प्राज्ञी २. ४१४२१	प्रासार्थ १. २. ३. ३१९५३	" १. ३३३६६	प्रोन्द् १. ५३१९	फरुण्ड १. ३३३२०५
प्रहार १. ५२११९	प्राज्य १. २. ३. ५१४८४	प्रासि २. ५२११३	" १. ३३११७	प्रोष्टपद १. २. ३. २११४१	" १. ३३३२०७
प्रहासिन् १. ३१९१६९	प्राड्विपाक १. ३१८१४	" २. ६१२२४	" १. ७११५३	प्रोष्टपदा २. ४. ८११५७	फल ३. ३३३२०
प्रहि १. ४२१७	प्राण १. १२१४८	प्राभृत ३. ३१७४६	प्रियङ्गु २. ३१८५५	प्रोष्टी २. ४११४४	" १. ३३३८३
" १. ८१११०	" १. ३२११५	प्राय १. ४१४५३	" ३. ३१८११७	प्रौह १. ३१७४६	" ३. ३१७१८६
प्रहित ३. ४३१८६	" १. ३१६२०३	" १. ६१३३६	प्रियङ्गुवाख्या २. ३३३६६	प्रौढ १. २. ३. ५१११७	" १. ३१७१९२
" १. २. ३. ५१४९७	" १. ३. ५१४६१	प्रायः ( -स् ) ४. ८१८१६	प्रियनादिका २. ३१९१३८	प्रौढि २. ३१६१६६	" १. ३१८१७०
प्रहृष्ट १. २. ३. ८१४१३	" १. ३. ६१३३८	प्रायण ३. ७३३३४	प्रियापत्य १. २३३३१	प्रौष्टपद १. २११८५	" ३. २. ६१५५२
प्रहेलिका २. २३३३९	प्राणद १. १११९	प्रायणीय १. २. ३. ३१६८८	प्रियाला २. ३३३१८१	प्रौष्टपदी २. २११७६	" ३. २. ६१५५३
प्राशु १. २. ३. ५१४८१	" ३. ४१४१०६	प्रार्थित १. २. ३. ५१४११२	प्रियाल १. ३३३१५७	प्लक्ष १. ३३३२७	फलक ३. २. ३१७१९७
प्राकार १. ४३३१४	प्राणदा २. ३१८८३	" १. २. ३. ७३११६	प्रियैलिका २. ३१८४६	" १. ३३३२८	" १. ३१८४५
प्राकारमूलिक १. ४३३१३	प्राणनाथ १. २. ३. ८१५१६	प्रालम्ब ३. ४३३१५५	प्रीत १. २. ३. ५१४९९	प्लक्षक १. ३३३५९	" १. २. ७१५६०
प्राक्तन १. २. ३. ५१४८७	प्राणयम १. ३३३२२९	प्रालम्बिका २. ४३३१३७	प्रीति २. ५३३८	प्लक्षद्वीप १. ३३३११	" १. २. ८१२२७
प्राक्पादरज्जु २. ३१७११३	प्राणायाम १. ३३३२२९	प्रालेय ३. २३३९	प्रुव १. ५३३८	प्लव १. २३३१३	फलकिन् १. ४११४३
प्राग्जालिक १. ३. ३३३२९	प्राणिक ३. ३३३९२	प्राचार १. ४३३१२३	प्रुव २. ५३३८	" ३. ३३३२०१	फलकी २. ८१२२७
प्राग्योतिष १. ३. ३३३२९	प्राणिद्युत ३. ८३३१०	मावृत १. २. ३. ४३३१२०	प्रुव ३. ५३३८	" १. ३३३१४७	फलकृष्ण १. ३३३८३
प्राग्मार १. ५२३३	प्राणिन् १. ४३३१	मावृष्ट २. २३३८९	प्रुव ४. ५३३८	" १. ४३३१६	फलपाककृष्ण १. ३३३८३
प्राग्र १. २. ३. ५१४६३	प्राणिफल १. ३३३२८	मावृष्टपायणी २. ३३३१२९	प्रुव ५. ५३३८	" १. ४३३१७	फलपाकान्ता २. ३३३२२४
प्राग्रहर १. २. ३. ५१४६३	प्राणिस्वन १. २३३३	" २. ८३३१३	प्रुव ६. ५३३८	" १. ५३३१२	फलस १. ५३३४०
प्रागाढ ३. ३१८१४४	प्रातिहारिक १. ३३३३३	मावृष्टेय १. ३३३६०	प्रुव ७. ५३३८	" १. ६३३३७	फला २. ३३३२६
प्राग्वंश १. ३३३१५१	" १. २. ३. ५१४२४	प्रावेशनिक १. ३३३५९	प्रुव ८. ५३३८	" १. ७३३३२	" २. ३३३१६१
प्राच १. २. ३. ५१४९१	प्राथमकल्पिक १. ३३३२४	प्राशिक १. २. ३. ३३८१९	प्रुव ९. ५३३८	" १. ८३३३२	फलाङ्कुरा २. ३३३३५
प्राचिका २. २३३२०	प्राहु (-स्) ४. ८१८१८	प्रास १. ३३३१६५	प्रुव १०. ५३३८	" १. ९३३३२	फलाध्यक्ष १. ३३३४३
प्राची २. २३३१५	प्रादेश १. ४३३८०	प्रासङ्ग १. ३३३१३३	प्रुव ११. ५३३८	" १. १३३३२	फलाशन १. २३३२५
प्राचीन १. २. ३. ५१४९१	प्रादेशन ३. ३३३१९९	प्रासङ्ग १. ३३३१३३	प्रुव १२. ५३३८	" १. २३३२२	फलिक १. ३३३२
प्राचीनतिलक १. २३३२७	प्राध्व १. २. ३. ६३५४७	प्रासङ्ग १. ३३३१३३	प्रुव १३. ५३३८	" १. ३३३११	फलित १. २. ३. ३३३८
प्राचीनवर्हिष १. ८३३५४	प्राध्वम् ४. ८१८१६	प्रासङ्ग १. ३३३१३३	प्रुव १४. ५३३८	" १. ३३३११	फलित १. २. ३. ३३३८
प्राचीना २. ३३३१३१	प्रान्त १. ४३३१३२	प्रासाद १. ४३३२९	प्रुव १५. ५३३८	" १. ३३३११	फलित १. २. ३. ३३३८
प्राचीनावीत ३. ३३३२१			प्रुव १६. ५३३८	" १. ३३३११	फलित १. २. ३. ३३३८
प्राचीर ३. ४३३१४			प्रुव १७. ५३३८	" १. ३३३११	फलित १. २. ३. ३३३८
प्राचेतस १. ३३३१५३			प्रुव १८. ५३३८	" १. ३३३११	फलित १. २. ३. ३३३८



[ फलिनी ]

वैजयन्तीकोषः

[ बलयु ]

बलरिपु ]

शब्दानुक्रमिका

[ बाला ]

फलिनी २.	३३१५८	फेरुण्ड १.	३३१३८	बन्धुता २.	५११९
" २.	३३१२०३	फेरुविज्ञा २.	३३१३७	बन्धुर १. २. ३.	५११८३
फली २.	३३१६६	फेला २.	३३१०६	" १. २. ३.	७११२१
" २.	३३११५८	फेलुक १.	३३१६३	बन्धुरा २.	३३११३२
" २.	३३११९८			बन्धुल १.	३३११४४
" २.	३३१५५३	ब		बन्धूक १.	३३११८५
फलीकृत १.	३३१६६	बक १.	२३११०	बन्धु १.	११११०
फलीहस्त १.	३३१७१	" १.	३३११३	" १.	३३११२८
फलेग्राहि १. २. ३.	३३१३८	" १. २. ३.	३३११३	" १. २. ३.	३३११७७
फलेपाकिन् १.	३३१५९	बकपुष्प १.	३३११९३	" १.	५३११८
फलेरुह १.	३३१२१६	बकोट १.	२३११०	बर्कर १.	३३१७३
फलेरुहा २.	३३१९०	वडवा २.	३३११७७	बर्बर १.	३३१५०
फलोदय २.	१११११	वडवागण १.	५१११९	" १.	३३१९८
फल्गु २.	३३११११	वडवापति १.	३३१६६	" १. २. ३.	५११२२
" १. २. ३.	५११७६	वडवामुख १.	८११५५	बर्ह १.	२३१३९
फल्गुनाल १.	२११८३	वत ४.	८११२६	" ३.	३३११७
फल्गुनी २.	२११४३	बदर १.	३३१९९	" ३.	६३१२२
फाणित ३.	३३११३४	बदरी १.	३३१८७	बर्हचन्द्रक १.	२३१३९
फाण्ट १.	३३११४१	" २.	३३११४८	बर्हिण १.	२३१३६
" ३.	५११४३	बद्ध ३.	५११३०	" ३.	३३११९
फारी ३.	३३१८५	" १. २. ३.	५११६७	बर्हिध्वजा २.	१११६०
फाल १.	३३१२८	" १. २. ३.	५११९७	बर्हिन् १.	२३१३६
" ३.	३३११०६	बद्धदर्भ १.	३३१२४	बर्हिपुष्प ३.	३३१२२
" १. २. ३.	३३१११७	बद्धभूमि २.	३३१३२	बर्हिमुख १.	१११४
" १.	६११३९	बद्धम्बु ३.	३३१२९	बर्हिष्ठ ३.	३३१२०२
फालगलालेप १.	३३१६७	बन्दी २.	३३१५७	बर्हिस् १.	६११५३
फालाकली २.	३३१३२	बन्ध १.	३३१७०	बल १.	१११२४
फाल्गुन १.	२११८२	" १.	३३१३१	" ३.	३३१३
फाल्गुनिक १.	२११८२	" १.	३३१५३	" ३.	३३१५५
फाल्गुनी २.	२११७५	" १.	५११२८	" ३.	३३१७१०
कुल्ल १. २. ३.	३३११९	" १.	६११३९	" १.	३३१५३
" १. २. ३.	३३१७८	बन्धकी २.	३३१३५	" ३.	३३११४२
" १.	३३१११	" २.	३३११०	बलिसदमन् ३.	३३१११
कुल्लक १.	३३१३९	" २.	७१११७	बलीवर्द १.	३३१५३
कुल्लरीक १.	३३१५५	बन्धन ३.	३३१२०	बलबज १ ब.	३३१२३०
फेन १.	३३११३	" ३.	३३१२१	बलकयणी २.	३३१४८
फेनक १.	३३१७४	" ३.	५११२८	बस्त १.	३३१६२
फेनिल १.	३३१३२	बन्धनी २.	३३१३०	बहल १. २. ३.	५११८४
" १. २. ३.	७११६०	बन्धाकि १.	३३११२	" १. २. ३.	५११८४
फेरव १.	३३१३८	बन्धु १.	१११२९	" १. २. ३.	७११२१
फेर १.	३३१३८	" १.	३३१५१	बहिः-(स्) ४.	८१११४
		बन्धुजीव १.	३३११८५	बहिर्ग १.	३३१५७

बलरिपु १.	११२२	बहिर्गीत ३.	३३१११०	बाडब ३.	५१११९
बलवत् ४.	८११४	बहिर्गार ३.	३३१४२	बाडवेय १.	३३१५३
बला २.	३३१६६	बहिर्गारप्रकोष्ठ १.		बाडव्य ३.	५१११७
" २.	३३११२७			बाड १. २. ३.	५११३२
" २.	३३१७६	बहिर्कर्ष १.	३३१७०	" १. २. ३.	६११५५
" २.	३३१११४	" १.	३३१७८	बाडम् ४.	८११२६
" २.	३३११०७	बहु १.	११२२७	बाण १.	१११५२
बलाका २.	२३११०	" १. २. ३.	५११८०	" १.	३३३३९
बलाङ्ग १.	३३१३६	" १. २. ३.	५११८४	" १.	३३११७९
बलाङ्कार १.	३३१२०९	" १. २. ३.	६१११०	" १.	३३११८३
बलारोहा २.	३३१८२	बहुकर १. २. ३.	३३१६७	बाणाभ्यास १.	३३११५५
बलास १.	३३११२१	बहुवीरा २.	३३१४५	बादर १.	३३१११७
बलि १.	३३१४५	बहुगर्हर्वाच १. २. ३.		बाधा ३.	६१२२५
" १. २.	३३११३८			बान्धकिनेय १.	३३१४४
" १.	६११३९	बहुजाली २.	३३१६१	बान्धव	३३१५१
बलिक १. २. ३.		बहुतिथ १. २. ३.	५१११९	बाभ्रवी २.	१११५९
बलिकण्टक १.	११११९	बहुपाद् १.	३३१२७	बार्हत ३.	३३१२२
बलिन् १.	१११२२	बहुप्रज १.	३३१६	बाल ३.	३३१२०२
" १.	१११२३	बहुरूप १.	१११४७	" १.	३३१६६
" १.	३३११६५	" १.	३३११११	" १.	५३१३७
" १.	३३११८९	बहुल ३.	३३११२४	" १. २. ३.	५३१२
" १.	३३१२२१	" १. २. ३.	५३१८०	" १. २. ३.	६३१११
" १. २. ३.		" १. २. ३.	५३१८४	" १. २. ३.	६३१५७
		" १. २. ३.	७३१६१	बालक १.	३३१३३
		बहुला २.	३३१५२	" ३.	३३११४०
" १.	३३१३५	बहुलीकृत १. २. ३.		बालगर्भिणी २.	३३१४६
" १.	३३११०			बालचूतक १.	५३१३५
बलिपुष्ट १.	२३११६	बहुवक्र १.	३३१६७	बालजात ३.	३३११४०
बलिभुज १.	२३११८	बहुवार १.	३३१५५	बालतृण ३.	३३१२३५
बलिश ३.	३३१६०	बहुव्यय १. २. ३.		बालनायिका २.	३३१६०
" ३.	३३१४२			बालपत्र १.	३३१६३
बलिसदमन् ३.	३३१११	बहुसारक १.	३३१२८	बालपुष्कल १.	३३१८०
बलीवर्द १.	३३१५३	बहुसुता २.	३३१२४	बालभीरु १.	३३१३०
बलबज १ ब.	३३१२३०	बहुसुति २.	३३१५०	बालमूषिका २.	३३१३२
बलकयणी २.	३३१४८	बहुसूतिका २.	३३१२०	बालवत्स १.	२३१२३
बस्त १.	३३१६२	बहुसूदन ३.	३३१२४	बालशाकट १. २. ३.	
बहल १. २. ३.	५३१८४	बहुस्वन १.	२३१२२		३३१२१
" १. २. ३.	५३१८४	बहुदित ३.	२३१३९	बालशाकिन १. २. ३.	
" १. २. ३.	७३१२१	बहेटक १.	३३११७६		३३१२१
बहिः-(स्) ४.	८१११४	बाडब १.	११२२१	बालहस्त १.	३३१७४
बहिर्ग १.	३३१५७	" १.	३३११९	बाला २.	३३११८५



[ बाला ]

बाला २.	३१३२१२
बालागल १.	५३३३५
बालिश १. २. ३.	७४३२०
बालेय १.	३१४६५
बाल्य ३.	४१४५४
बाष्प १.	६११४०
बाष्पी १.	३१८३२२
बाह १. २. ३.	५१४२०
बाहा २.	४१४७१
बाहु १. २.	४१४७१
बाहुज १.	३१७११
बाहुदन्तेय १.	११२१७
बाहुदर २.	४१२२६
बाहुमूल ३.	४१४६९
बाहुयुद्ध ३.	३१७२०७
बाहुरक्षा २.	३१७१५५
बाहुल १.	२११८६
" ३.	३१७१५५
बाहुलेय १.	८११३५
बाह्यनृत्त ३.	३१७७३
बाह्यलिङ्गिन् १.	३१६२३८
बाह्यिक १ व.	३११२७
बाह्यिक १ व.	३११२७
" १.	३१७१५५
" ३.	३१८११३
" ३.	७३३२६
बिडाल १.	३१४७१
बिडालक १.	४१४९५
बिडीजस् १.	११२१४
बिन्दु १.	२१२८
" २.	४१४२०
" १.	८१११०
बिन्दुक १.	५११३८
" ३.	५११४९
बिन्दुभेद १.	३१६२२३
बिम्बोक १.	३१९९४
बिम्बेण १.	३१५४९
बिम्ब १.	४११२९
" १. ३.	६१५५५
बिम्बसारक ३.	३१७१७५

वैजयन्तीकोषः

बिम्बसारक १. ३१७१८५	( बिम्बसारक )
बिम्बोष्ठी २.	३३११४७
बिल ३.	४११२
बिलेशय १.	८१५१८
बिलेशया २.	३१४२६
बिलौकस् १.	४११६
बिल्व १.	३३३३०
" १.	५११५१
बिल्वक १.	४११४७
बिस ३.	४१२४३
बिसकण्टिका २.	२३३१०
बिसखण्ड ३.	४१२३९
बिसनाभिज ३.	४१२३८
बिसप्रसून ३.	४१२३८
बिसिनी २.	४१२४३
बिसिर ३.	३१८१२०
बीज ३.	२११८६
" ३.	४१४१११
" ३.	६३३२३
बीजकोश १.	४१२४५
बीजपुष्पिका २.	३१८१७
बीजपूर १.	३३३३३
बीजवर १.	३१८३५
बीजसू २.	३११४
बीजाकृत १. २. ३.	३१८२३
बीजिन् १.	४१४२९
बीज्य १.	४१४५०
बीभत्स १.	३१९७५
" १.	३१९७७
" १. २. ३.	३१९७८
" १. २. ३.	७३३२१
बुक्कन ३.	२१४६
बुद्ध १.	१११३१
" १.	१११३२
" १. २. ३.	५१४१०१
बुद्धि २.	३१६१६३
बुद्धिमत १.	२३३२७
बुद्धुद १.	४१२१३
बुध १.	२११३२

[ बृहन्नाय ]

बुध १.	३१६२३२
बुधा २.	३३३१२५
" २.	३१६१६३
" २.	३१८१९४
बुधित १. २. ३.	५१४१०१
बुधन १.	३३३१२
बुन्दिर ३.	४३३१८
बुभुक्षा २.	३१६१८२
बुभुक्षु १. २. ३.	५१४३६
बुम्बिका २.	४३३७०
बुम्बी २.	४३३७०
बुरुल १.	३१५३०
बुलि २.	४१४६०
" २.	४१४६१
बुलकी २.	४११५५
बुशाली २.	४३३२६
( बुशाली )	
बुषा २.	३१९१७
बुस १.	३१८६४
" ३.	३१८१४२
बुसा २.	३१६९७
" २.	३१९१०७
बुस्तक १. २. ३.	३३३१५५
बृंहित ३.	२१४७
बृन्द ३.	५११३
" ३.	५११२८
" ३.	५११३०
" ३.	५११३१
बृन्दाक १.	११११३
बृन्दारक १. २. ३.	८१५१८
बृहच्छुद १.	३३३२०९
बृहत् १. २. ३.	५१४८०
बृहत्तिका २.	४३३१२३
बृहती २.	३३३१०४
" २.	३१९११९
" २.	७२१७
बृहत्कर्कोटक १.	३३३१६५
बृहद्गृह १ व.	३१३३६
बृहन्नाय १.	११२१४

[ बृहस्पति ]

बृहस्पति १.	२११३३
बृहाणक १.	५११५४
बेन १.	३१५३४
बेर ३.	३१९२१
बोक्काण १.	३१७११५
बोध १. २. ३.	५१४१०१
बोधकर १.	३१७३०
बोधन ३.	३१६१६४
बोधनीया २.	३१८१९४
बोधान १.	३१६२२
बोधि १.	६१५५७
" २.	८११५
बोधिसत्त्व १.	१११३२
बोधी २.	५११३७
बोल १.	३१२१५
" १.	५३३१६
" १. २. ३.	६१५५६
बोसर १.	५३३३४
बसी २.	३१६१४९
ब्रह्मगर्भ ९.	१११५६
ब्रह्मघोष १.	४११२३
ब्रह्मचर्य ३.	३१६१४
" ३.	३१६२०९
ब्रह्मचारिणी २.	८१५३०
ब्रह्मचारिन् १.	१११५६
" १.	३१६१७
" १.	८१५३०
ब्रह्मजटा २.	३३३१२२
ब्रह्मदण्ड ३.	३१७१७५
ब्रह्मदण्डी २.	३३३१००
ब्रह्मदर्भा २.	३१८१०२
ब्रह्मधारा २.	४३३१०
ब्रह्मन् १.	१११६
" १.	३१५३
" ३.	३१६२७
" १.	३१६७९
" ३.	३१६१६१
" १.	३१६१६३
" १.	६१५१०३
" १.	८१९३०
ब्रह्मनाभ १.	११११५

शब्दानुक्रमिका

ब्रह्मपुत्र १ व.	२३३३७
" १.	४११२४
" १.	८११३५
ब्रह्मवन्धु १. २. ३.	८१४१०
ब्रह्मविन्दु ३.	३१६२६
ब्रह्मभाव १.	३१६२३७
ब्रह्मभूय ३.	३१६२३७
ब्रह्ममेखल १.	३३३२२९
ब्रह्मरात्रिक १.	३१६१५५
ब्रह्मरीति २.	३२२२६
ब्रह्मलोक १.	३१६२०८
ब्रह्मवर्चस् ३.	३१६११६
ब्रह्मवालुक ३.	४११२३
ब्रह्मविष्णुमहेश्वर १ व.	१११५
ब्रह्मवृत्त १.	३३३२९
" १.	८१६१९
ब्रह्मवेदि २.	३११२३
ब्रह्मसंज्ञ १.	३३३८०
ब्रह्मसू १.	१११२९
ब्रह्मसूत्र ३.	३१६२०
ब्रह्मस्थली २.	४३३१०
ब्रह्महत्या २.	८१९१७
ब्रह्माञ्जलि १.	३१६२६
ब्रह्मी २.	३३३१४४
ब्रह्मोद्य ३.	८१९१६
ब्रह्मौदनाभि १.	११२२६
ब्राह्म १.	२११६७
ब्राह्मण १.	३१६११
" १.	३१६३३
" १. २. ३.	७१५६०
ब्राह्मणव्रत १. २. ३.	३१६१०
ब्राह्मणयष्टिका २.	३३३१००
ब्राह्मणी २.	३२२२७
" २.	४११२९
" २.	४११३६
ब्राह्मण्य ३.	७३३२५
ब्राह्मिक १.	३१६२२

[ भट ]

ब्राह्मी २.	१११९
" २.	१११६४
" २.	२११६
" २.	३३३१४४
भ	
भ ३.	२११३८
भक्त ३.	४३३७५
" १. २. ३.	६१५६०
भक्तमण्डक १. ३.	४३३७८
भक्ति २.	३१६३८
" २.	६२२२६
भक्तक १. २. ३.	५१४१५०
भक्तकार १. २. ३.	४३३९२
भक्तन ३.	३१९५२
" ३.	४३३१०४
भक्तणी ३.	३१६१०
भक्तित १. २. ३.	५१४१०८
भग ३.	४१४६१
" १. ३.	६१५५८
भगनेत्रान्तक १.	१११३३
भगन्दर १.	४१४१३०
भगवत् १. २. ३.	८१५३१
" १. २. ३.	८१९१६
भगिनी २.	४१४२६
भगिनीपति १.	४१४३८
भगिनीआत् १.	४१४४७
भग्न १. २. ३.	३१७१४८
भग्नस्थिचन्ध १.	४१४१३९
भङ्ग १.	४२१४४
भङ्गि २.	५२२३४
भङ्गुर १. २. ३.	७३३२१
भङ्ग्य १. २. ३.	३१८२०
भजमान १. २. ३.	३१४१०३
भञ्जना २.	२१४२६
भञ्जिका ३.	३३३१००
भट १.	३१५९
( नट )	



[ भट ]

वैजयन्तीकोषः

[ भाण ]

भाण्ड ]

शब्दानुक्रमणिका

[ भुवन

भट १.	३१७१३९	भन्दना २.	२१११९	भव १.	६११४१
भट्टि १. २. ३.	४३१९४	भम्भराली २.	२३१४४	भवत् १. २. ३.	८११४६
भट्टोद्योग १.	३१७२०२	भम्भा २.	३१९१३३	भवन १.	३१४७०
भट्ट १. २. ३.	८१९४६	भय ३.	३६१८५	" ३.	४३१७७
भट्टरक १. २. ३.	८१९४६	भयङ्कर १. २. ३.	३१९७८	भविक १. २. ३.	५४१४२
भट्टारक १.	३१९१०३	भयद्रुत १. २. ३.	३१७२१८	भवितव्यता २.	३६१८९
" १. २. ३.	८१९४६	भयन ३.	३६१८५	भवित् १. २. ३.	५४१४१
भट्टारिका २.	३१९१०४	भयानक १.	३१९७५	भविल १. २. ३.	७५१६२
भट्टिनी २.	३१९१०४	" १.	३१९७७	भविल्ल १. २. ३.	५४१४१
भण्डन ३.	७३१२६	" १. २. ३.	३१९७८	भव्य १.	३३३३७
भण्डाकी ३.	३३३१०२	भर १.	५१२३	" १. २. ३.	५४१४२
भण्डिल १.	३३३७२	" १.	६११४१	" १. २. ३.	६११४१
भण्डिरी २.	३३३१४५	" १.	६११४२	भषण ३.	२१४६
भदन्त १.	३१९१०७	भरण ३.	३१९५	" १.	३३३६८
भद्र १.	३३३६२	भरणी २.	२११४१	भषित ३.	२१४६
" १. २. ३.	५४१८०	भरण्य ३.	३१९५	भसत् १.	२३३२
" १. २. ३.	५४१४३	भरत १.	११२२६	भसद् २.	६१२२६
" १. २. ३.	६५१६०	" १.	३३३७८	भसल १.	२३३४२
" ३.	८१९२४	" १.	३१९६२	भसित ३.	११२३३
भद्रकाली २.	१११६१	भरथ १.	११२१९	भस्त्रा २.	३१९१७
भद्रकुम्भ १.	४३३६१	भरद्वाज १.	२३३१९	भस्मगन्धिनी २.	३१८९५
भद्रदारु ३.	३३३७१	भरित १. २. ३.	५४१८६	भस्मगर्भा २.	३३३९२
भद्रपदा १. २. ३.	२११४१	भरुज १.	३३३३७	भस्मन् ३.	११२३३
भद्रपणिका २.	३३३५८	भरुटा २.	४३३८६	भा २.	२११२२
भद्रमन्द १.	३३३५४	भर्ग १.	१११४०	भाग १.	४४१५५
भद्रमन्दमृग १.	३३३६४	भर्तृ १.	४४३३७	" १.	५१२३
भद्रमुक्त १.	३३३२२८	भर्तृदारक १.	३१९१०५	" १.	६११४१
भद्रमुस्तक १.	३३३१९९	भर्तृदारिका २.	३१९१०४	भागधेय १.	३३३४५
भद्रमृग १.	३३३६४	भर्त्सन ३.	२३३३४	" १. २. ३.	८१९१९
भद्रयव १. ३.	३३३७३	भर्मन् ३.	३१९५	भागवत १.	३३३१०५
भद्रलक्षण ३.	३३३६३	" ३.	६३३२३	" १.	३३३१०५
भद्रचन्दन १.	१११२४	भर्मिन् १.	३१९११	भागिनेय १.	४४३४१
भद्रश्री १.	३३३११२	भल्लुह १.	३३३७०	मागीरधी २.	४२३२४
भद्रसुत १.	३३३१५९	भल्ल १.	३३३१८२	भाग्य ३.	३३३१८९
भद्रा २.	३३३१३९	भल्लाट १.	३३३७	" ३.	६३३२४
भद्राकरण ३.	३३३१४	भल्लातक १. २. ३.	३३३१५	भाङ्गीन १. २. ३.	३३३२०
भद्राङ्ग १.	१११२४	भल्लुक १.	३३३४०	भाजन ३.	४३३६२
भद्राथ ३.	३३३१७	भल्लुक १.	३३३६८	भाङ्गी २.	३३३१००
भद्रासन ३.	३३३१५	" १.	३३३७	भाण १.	३३३१००
भद्रेश्वर १.	१११३९				

भाण्ड ३.	३३३४४	भावजा २.	३३३६७	भिन्नकूट ३.	३३३५६
" ३.	४३३६२	भावना २.	४३३१५८	भिया २.	३३३१८५
" ३.	६३३२३	" २.	८१९४	भिन्न १.	३३३४६
भाण्डागारिक १.	३३३२३	भावित १. २. ३.	५४१९९	भिषज् १. २. ३.	४४३१४३
भाण्डी २.	३३३१४५	" १. २. ३.	८१९२२	भिस्सा २.	४३३७६
भातु १.	२१११०	भावुक १. २. ३.	५४३४१	भिस्सिता २.	४३३७७
भानु १.	२१११०	भाषणी २.	२३३३५	भी २.	३३३१८५
" १.	२११५५	भाषा २.	१११९	भीत १. २. ३.	५४३१८
" १.	६११४०	" २.	३३३१६	भीति २.	३३३१८५
भाद्र १.	२११८५	" २.	३३३१०२	" २.	३३३७६
भाद्रपद १.	२११८५	भास १.	२३३३२	भीम १.	१११४३
भामिनी २.	४४३५	भासन्त १.	७११५८	" १. २. ३.	३३३७८
" २.	४४३१०	भासुर १. २. ३.	५४३४२	भीमर १.	३३३२६
भार १.	५११६१	भास्कर १.	२११२२	भीरु १.	३३३७८
" १.	६११४१	" १.	७११५८	" २.	३३३१६६
भारत ३.	३३३१५	भास्वत् १.	२११२२	" २.	४४३५
भारती २.	१११९	" १. २. ३.	६५१५९	" १. २. ३.	५४३१८
" २.	३३३११९	भास्वर १. २.	१३३८	भीरुक १. २. ३.	५४३१८
" २.	३३३१०१	भित्ता २.	३३३१५	भीरुचेतस् १.	३३३११
" २.	३३३१०२	" २.	३३३१२१	भीरुपर्णी २.	३३३१४२
भारद्वाज ३.	४४३१०९	" २.	६३३२६	भीरुवाल १.	३३३३०
भारद्वाजी २.	३३३१९	भिक्षाचार १. २. ३.	३३३१७	भीलुक १. २. ३.	५४३१८
भारयष्टि २.	३३३१६	भिक्षु १. २. ३.	३३३१२६	भीषण १. २. ३.	३३३७९
भारवह १. २. ३.	३३३२२२	" १.	३३३१६०	भीष्म १. २. ३.	३३३७८
भारवाह १.	३३३१६	" १.	३३३१२७	भुक्त १. २. ३.	५४३१०८
भारसह १.	३३३१६	भिक्षुकी २.	४४३१०	भुम्भ १. २. ३.	५४३१२४
भारिक १.	३३३१६	भिक्षुलोचक ३.	३३३१५	भुज १.	३३३१४५
भारित ३.	५११६२	भिक्षुसङ्घाटी २.	४३३१२८	" १.	३३३१९३
भारुष १.	३३३१५८	भिक्षुपाल १.	३३३१६६	" १. २.	४४३७१
" १.	३३३१०३	भित्त ३.	४४३१५	भुजग १.	४४३१५
भार्गव १.	२११३४	भित्तिका २.	४३३३७	भुजगाह्वय ३.	३३३२९
भार्गवी २.	१११३६	" २.	७२३१८	भुजङ्ग १.	४४३१५
" २.	३३३२३३	भिदा २.	५२३४१	" १.	४४३३९
भार्गी २.	३३३१८१	भिदु १.	१२३१३	भुजङ्गम १.	४४३१५
भार्या २.	४४३३४	भिदुर १.	१२३१३	भुजङ्गारि १.	२३३३७
भालुक १.	३३३३३	" १.	३३३७८३	भुजि १.	१२३१८
भाव १.	३३३१७४	भिद्य १.	४२३२९	भुजिष्य १.	३३३१२
" १.	३३३१८०	भिद्य १. २. ३.	५४३१११	" १.	३३३१४
" १.	३३३१९७	" १. २. ३.	६४३१११	" १. २. ३.	७४३२२
" १.	६३३३३	भिक्षुम्भ १.	३३३१४	भुरग्यु १.	७४३१५९



[ भुवन ]

भुवन ३.	४११२
" ३.	४२१२
भुवन्य १.	७११५९
भुवस् १. ४.	३११२०६
भुसुण्डी १.	३१७१७०
( भुसुण्डी )	
भू २.	३११४
" २.	८२११६
" २.	८११४
भूधन १.	४११५३
भूत १. ३.	१११२
" ३.	३११२०६
" ३.	४१११
" १. २. ३.	५११२९
" १. २. ३.	६११५९
" १. ३.	८११३०
भूतग्राम १.	५१११७
भूतग्री ३.	३१११२१
भूतदमनी २.	१११४९
भूतधात्री २.	३११२
भूतपुष्प १.	३११६९
भूतफल १.	३१११६६
भूतलोद्धव ३.	३११३०
भूतवास १.	३१११७६
भूतसम्भव १.	२११९४
भूतसारी २.	३१८८२
भूतात्मन् १.	७११६०
भूतापुत्र १.	१११२
भूति २.	११२३३
" २.	४११८७
" २.	६१२२७
" २.	८११३४
भूतिक ३.	७११२६
भूतेश १.	१११४३
भूतेश्वर २.	२११७०
" २.	२११८०
भूदार १.	३११६
भूदेष १.	३१६१
भूधर १.	३१२१
भूनामन् २.	३१११७
भूप १.	३१७१

वैजयन्तीकोषः

भूतदी २.	३१११८३
भूतग १.	३११२१९
भूभुज् १.	३१७१
भूभुत्सभ ३.	८११२०
भूमि २.	३१११
" २.	६१२२७
भूमिकन्दर ३.	३१११५३
( भूमिकन्दक )	
भूमिका २.	३११६८
भूमिकागत १.	३११६८
भूमिकूरमाण्ड १.	
" ३.	३१११९५
भूमिमयी २.	२११२३
भूमिलाभ १.	३११२०१
भूमिस्पृश १	३१८१
" १.	७११५९
भूमिष्ठ १. २. ३.	५११८५
भूरद १.	३१११३३
भूरि १. ३.	३१२२०
" १. २. ३.	५११८५
भूरिमाय १.	३११३८
भूरिलोह ३.	३१२२९
भूरिश्रवस् १.	११२१५
भूरुह १.	३११४
भूरुह १.	३११४
भूर्ज १.	३११४५
भूर्जषत्र १.	३११४५
भूलता २.	४११५९
भूलवण २.	३१८१२२
भूवल्लर ३.	३११५३
भूशक्र १.	३१११
भूश्वभ्र ३.	४११३
भूषण ३.	४११३३
भूष्ण १. २. ३.	५११४१
भूस्त्वण ३.	३११२३४
भूस्पृश १.	६११४२
भूस्फोट ३.	३११५३
भूकुंस १.	३११६७
भूकुटि २.	३११९१
भूगु १.	३१२६
भृङ्ग १.	२११२७

[ भेल ]

भृङ्ग १.	२११४२
" ३.	३१८१०४
" ३.	३१८१०७
भृङ्गराज ३.	३१११०७
" १.	८११३६
भृङ्गरिडि १.	१११५२
भृङ्गा २.	३१८१५१
भृङ्गाण १.	३११४२
भृङ्गार १.	४१११०८
भृङ्गारी २.	२११४७
भृङ्गिन् १.	१११५२
भृङ्गिरिडि १.	१११५२
भृङ्गकण्ठ १.	३१५५३
" १.	३१५६६
भृङ्गकण्ठक १.	३१५१००
भृङ्गत १. २. ३.	३११५
भृङ्गि १.	३११५
भृङ्गिभुज् १. २. ३.	३११५
भृङ्ग्य १.	३११२
भृङ्ग्या २.	३११६
भृङ्ग्य १.	४११५०
भृङ्ग १. २. ३.	५११३१
भृङ्गकोपन १. २. ३.	
भृङ्गशङ्गत १. २. ३.	५११३२
भृङ्ग १. २. ३.	३१७१४९
भृष्ट १. २. ३.	४११९३
भृष्टयव १.	४११७१
भेक १.	३१५२९
" १.	४११४७
" १. २. ३.	६१५५९
भेटक १.	३१८१६९
भेद १.	३१७१३
" १.	६११४२
भेदित १. २. ३.	५११११
भेन १.	६११४२
भेय १.	५११२
भेरी २.	३११३३
भेरीनाद १.	२११११
भेल १.	३११३
" १.	४१११६

[ भेल ]

भेल १. २. ३.	६१५५७
भेलन ३.	५१११२
भेलुक १.	१११५२
भेषज ३.	४११४१
भेष ३.	३१८२
" ३.	५११३३
भैमरथी २.	२११६१
भैरव १. २. ३.	३११७९
" १.	८११६०
भैषज्य ३.	४११४१
भोः ( -स् ) ४.	८१८२
भोग १.	४११२१
" १.	६११४४
भोगभूमि २.	११११
भोगवती २.	४११४
" २.	४१२२५
भोगिन् १. २. ३.	७११३१
भोगिनी २.	७११३२
भोज १ ब.	३११३७
" १.	३१५६२
भोजन ३.	४१११०२
भोजनीय ३.	३१८११९
भोज्य ३.	३१३६२
भोल १.	३१२२१
भौम १.	११२३२
भौरिक १ ब.	३११३१
" १.	३१७२१
भ्रकुंस १.	३११६७
भ्रकुञ्ज १.	३१५५५
भ्रकुटि २.	३११९१
भ्रम १.	३१११७७
" १.	३१११८
" १.	४१२११
" १.	५१२१०
भ्रमन्त १.	५१२५१
( गृहकोल्हक )	
भ्रमर १.	२११४२
" १. २. ३.	७१५६२
भ्रमरक १.	३१८१३५
" १.	४११९९
भ्रमरालक १.	४११९९

शब्दानुक्रमणिका

भ्रमरेष्ट १.	८११५९
भ्रमि २.	५१२१०
भ्रष १.	५१११०२
भ्रष्ट १. २. ३.	५१११०२
भ्राज् १.	११३११
भ्राणञ्जक	३१५२५
भ्रातृ १.	४११३१
" १.	४११४७
भ्रातृव्य १.	७११५९
भ्रात्र १.	३१८११
भ्रात्रीय १.	४११४२
भ्रान्ति २.	५१२१०
भ्रामकादि १.	३१२३८
भ्रामर ३.	३१८१३५
भ्रामरी २.	१११५९
भ्राष्ट्र १.	५१२५६
भ्रुकुंस १.	३११६७
भ्रुकुट १.	३१११६७
भ्रुकुटि २.	३११९१
भ्रू २.	४११९६
" २.	८११२
भ्रुकुंस १.	३११६७
भ्रुकुटि २.	३११९१
भ्रूण १.	६११४०
भ्रणि २.	४१२२१
भ्रेण १.	३१५१५
भ्रेणक १.	३१५३१
म	
मक १.	३१५२९
मकर १.	११२६०
" १.	४११५१
" १.	८११३३
" १.	८११५५
मकरध्वज १.	१११२७
मकरन्द १.	३१३१९
मकरवाहन १.	११२४५
मकरालय १.	४१२११
मकुट १. ३.	४११३५
मकण १.	३१७६७
मचिका २.	२१३४४
मचुण ३.	५११४८

[ मञ्जूषा ]

मख १.	३१६८२
मगध १ ब.	३११३१
मघवत् १.	११२२
मघा १ ब.	२११४३
मङ्क १.	४११२६
मङ्कश १.	३१५७०
मङ्कु ४.	८१८१
मङ्ग १. ३.	३१२१७
मङ्गल १.	२११३१
" १.	५१३४८
मङ्गलध्वनि १.	३१६५७
मङ्गलमालिका २.	
" ३.	३१६५७
मङ्गलालिक ३.	३१६५८
मङ्गल्य १.	३१३३०
" ३.	३१८४०
" ३.	३१८१४९
" ३.	४१११४
मङ्गल्या २.	३१३१९८
" ३.	३१८१०८
" २.	५१३५८
मङ्गिनी २.	४१२१५
मचचिका २.	८११४२
मज्ज १.	४१११०
मज्जा २.	३१३१४
" २.	४१११०
मज्जाकर ३.	४१११०९
मञ्च १.	४१३३२
मञ्चक १.	४१३१६४
मञ्जन ३.	३१५२४
मञ्जरि २.	३१३२०
मञ्जरी २.	३१३११९
मञ्जरीक १.	३१३२०
मञ्जिष्ठा २.	३१३३५
मञ्जी २.	३१३२०
" २.	३१३६२
मञ्जीर १. ३.	४१३१४५
मञ्जु १. २. ३.	५१३३४
मञ्जुल १. २. ३.	
मञ्जूषा २.	४१३६३



[ मञ्जूषा ]

मञ्जूषा २.	७२११
मट १.	३१५१८
मटची २.	२१२७
मठ १.	४३१२७
" १. २. ३.	८११३९
मठर १.	५३३३
मठी २.	८११३९
मट्टिका २.	३१६५१
( मट्टिका, मट्टिका )	
मट्टु १.	३११३५
मट्टुकैरिक १.	३१५३१
मणि १. २.	३१२३६
" १. २.	४३१६२
" १. २.	४३१७३
" १. २.	६५६२
मणिक १.	४३१५६
मणिकण्ठ १.	२३१२९
मणिकार १.	३१५६३
" १.	३१९१५
मणित ३.	२४१७
मणिबन्ध १.	४३१७३
मणिल १. २. ३.	५४१८
मणिसानु १.	१३११२
मणिसोपान ३.	४३११४२
मणीच ३.	७३१२७
मणीचक ३.	३३११८
मण्टप १. ३.	४३१२८
मण्डजात ३.	३१८१४०
मण्ड १. ३.	४३१७७
" १.	५११४७
मण्डन ३.	४३१३३
" १. २. ३.	५४१४१
मण्डपीठिका २.	२११७
मण्डल १.	३१६९
" ३.	३१७४९
" ३.	३१७१८७
" ३.	४३१२४
" १. २. ३.	७५६५
मण्डलपत्रिका २.	३३१९२
मण्डलाग्र १.	३१७१६०
मण्डलिन् १.	३१७१२

वैजयन्तीकोषः

मण्डलिन् १.	४११७
" १.	४११८
" १.	४१११०
" १.	४१११३
" १.	७११६०
मण्डलेश्वर १.	३१७२
मण्डहारक १.	३१५४४
मण्डिका २.	४३१७८
मण्डकी २.	३१७७९
मण्डक १.	३१७५१
" १.	४११४८
मण्डकपर्ण १.	३३१६८
मण्डकपर्णी २.	३३११४४
मण्डूर ३.	३२१३६
मत ३.	३१६१७४
" ३.	३१८१०७
मतङ्ग १.	३१७६०
मतल्लिका २.	८११४२
मति २.	३१६२३३
" २.	६२१२७
मत्कुण ३.	३१७१५४
" १.	४११३५
मत्त ३.	३१७६७
" १. २. ३.	५४१३७
मत्तकाशिनी २.	४१११२
मत्तवारण ३.	४३१३१
" ३.	४३११६४
मत्त ३.	३१८३०
मत्सर १. २. ३.	७५६३
मत्स्य १.	११११८
" १.	४११४१
मत्स्यगु १.	३१६१५७
मत्स्यण्डी २.	३१८१३३
मत्स्यधानी २.	२११४२
मत्स्यनाशन १.	२३१३४
मत्स्यपित्ता २.	३१८६८
मत्स्यराज् १.	४११५१
मत्स्यवेधन ३.	३१९४२
मत्स्यव्रतिन् १. २. ३.	३१६१३१
मत्स्यसङ्घात १.	४११४५

[ मधु ]

मत्स्याक्षी २.	३३११४४
" २.	३३११५६
मथित ३.	३१८१००
मथिन् १.	३१९३१
मथुरा २.	४३३६
मद १.	३३११८८
" १.	३१७८२
" १.	५२१३२
" १.	८१५३६
मदकल १.	३१७६८
मदकोहल १.	३१४५४
मदन १.	२३३३
" १.	३३३४९
" १.	३३३६१
" १.	३१८५५
" १.	३१८१३७
" १.	७११६१
मदनध्वजा २.	२११७५
मदना २.	३१९४६
मदनी २.	३१४३६
मदवृन्द १.	३१७६२
मदमत्तक १.	३३३७७
मदयन्ती २.	३३३१८३
मदस्थान ३.	३१७७३
मदिरा २.	३१९४५
मदिष्टा २.	३१९४६
मदुर १.	३३३३
मदोत्कट १.	२३३१४
" ३.	३१९४८
मदोदका २.	३१८८२
मदगु १.	२३३११
" १.	३१५५२
" १.	३१५७१
" १.	३१५८४
" १.	३१५९३
मदलध्वनि १.	२४११०
मद्य ३.	३१९४४
मद्यबीज ३.	३१९५०
मद्यलालस १.	३३३२६
मद्यसन्धान ३.	३१९५१
मधु १.	२११८३

[ मधु ]

मधु १.	२११८७
" १.	३३३६१
" २.	३३३१४३
" १. ३.	३१८१३४
" ३.	३१८१४५
" १.	५३३३३
" १.	६५६१
मधुक १.	३१५३७
" १.	३१७३०
" ३.	३१८१३४
" १.	५३३३२
मधुकर् १.	२३३४३
मधुका २.	३१८५६
मधुकुक्कुटी २.	३३३३४
मधुकर्म १.	३१९५२
मधुकीर १.	३३३२२२
मधुच्छद १. २.	३३३३८
मधुतृण १.	३३३२२५
मधुप १.	२३३४२
मधुपर्क १.	३३३६२
मधुपर्णी २.	८३३८
मधुपुष्प १.	३३३४३
मधुबीज १.	३३३७४
मधुबोल १.	५३३३८
मधुमक्षिका २.	२३३४५
मधुमद्य ३.	३१९४८
मधुमालक १.	५३३३७
मधुयष्टिका २.	३१८१०३
मधुर ३.	३१८१०३
" ३.	३१९११२
" १. २. ३.	४३३८२
" १.	५४३२५
" १.	५४३२७
" १. २. ३.	७३३२२
मधुरवाच् १. २. ३.	५४३४४
मधुरस १.	३३३११०
मधुरसा २.	८३३८
मधुरस्वन १.	४११५५
मधुरा २.	३११२५
" २.	४३३६

शब्दानुक्रमणिका

मधुराङ्गक १.	५३३२७
मधुराङ्गक ३.	३१८१३६
मधुलिह् १.	२३३४२
मधुवाच् १.	२३३२७
मधुवार १.	३१९५२
मधुव्रत १.	२३३४३
मधुशिष्ट १.	३३३५६
मधुश्रेणि १.	३१५४४
मधुष्टील १.	३३३४३
मधुसख १.	१११२८
मधुसारथि १.	१११२९
मधुसूदन १.	११११५
मधुस्रव १.	३३३४३
मधुस्रवा २.	३३३१४०
मधूक १.	३३३४३
मधूच्छिष्ट ३.	३१८१३७
मधूपद्मा २.	४३३६
मधूल ३.	३१८१३७
" १.	५३३३३
मधूलक १.	३३३४४
" १.	५३३२५
" १. २. ३.	८११३३
मधूलिक १.	५३३३३
मधूषिका २.	४३३६
मध्य ३.	३१९१२३
" १. ३.	४३३६७
" १. २. ३.	५११२९
" १. २. ३.	६५६३
मध्यदन्त १.	४३३८९
मध्यदेश १.	३११२२
मध्यन्दिन १.	२११६५
मध्यम १.	३१९१३२
" १.	४३३६७
" १. २. ३.	५४३७७
मध्यमा २.	४३३७४
मध्यमीय १. २. ३.	५४३७७
मध्यमांस्वात १.	३३३२३०
मध्यरात्र १.	२११६६
मध्यस्थ १. २. ३.	३१८१९
मध्याह्न १.	२११६५

[ मन्थर ]

मध्वालुक १.	३३३२१०
मध्वासव १.	३१९४९
मनश्शिला २.	३३३११
" २.	३३३२११
मनस् ३.	३३३१७२
मनसिज १.	१११२७
मनस्कार १.	३३३१७४
मनाक ४.	८१८१२
मनाका २.	७२११९
मनित १. २. ३.	५४३१०१
मनीषा २.	३३३१६३
मनीषिन् १.	३३३२३५
मनुज १.	३१५१
मनुज्येष्ठ १.	३१७१५८
मनुष्य १.	३१५१
मनुष्यधर्मन् १.	१२१५६
मनोजव १.	३१५५
मनोजवा २.	१२३३०
मनोज्ञ १. २. ३.	५४३३४
मनोज्वला २.	३३३१८२
मनोमिधा २.	३३३१२
मनोरथ २.	३३३१७९
मनोरम १. २. ३.	५४३३५
मनोविकार १.	३३३८०
मनोहर १. २. ३.	५४३३५
मनोहरी २.	३३३७७
मन्तु १.	३३३४७
मन्त्र १.	३३३३३
" १.	६५३४५
मन्त्रजिह्व १.	१२३१७
मन्त्रज्ञ १.	३३३२६
मन्त्रिन् १.	३३३१८
" १.	३३३१९
" १.	८१३४५
मन्थ १.	३३३३१
" १.	४३३७१
मन्थपात्र ३.	३३३३२
मन्थर १. २. ३.	३३३१५०



मन्थर ]	वैजयन्तीकोषः	[ मलय	मलयज ]	शब्दानुक्रमिका	[ महाबुस
मन्थर १. २. ३. ७।५।६४	मयु १. १।३।३	मर्कट १. ३।४।३९	मलयज १. ३।८।११२	मविघटी २. ३।९।२५	महाग्राम १. ४।३।२
मन्थविष्कम्भ १. ३।९।३२	मयूक १. २।३।३७	” ३. ४।३।४८	मलयद्वीप ३. ३।९।१४	मसुर १. ३।८।४०	महाग्रीव १. ३।४।६७
मन्थान १. ३।९।३१	मयूख १. २।१।१६	मर्कटक १. ३।८।६२	” ३. ३।९।१६	मसूरक १. ३।८।४०	महाघोण्टा २. ३।३।७८
मन्थोदधि १. ३।१।११	” १. २. ३. ८।९।२५	” १. ४।१।३४	मलयवासिनी २. १।१।६३	मसूरिका २. ३।८।४०	महाचण्डी २. १।१।६४
मन्द १. १।२।३४	मयूर १. २।३।१४	मर्कटास्य ३. २।२।२४	मलयद्वाशस् २. ४।४।१५	मसूरी २. ४।४।१३७	महाचारी २. ३।९।१४२
” १. २।१।३५	” १. २।३।३६	मर्कटी २. ४।३।४८	मलवारिन् १. २. ३.	मसृण १. ५।३।४	महाजम्बू २. ३।३।९२
” ३. ३।८।१४०	मयूरक ३. ३।२।४२	मर्कस १. ३।९।५१	” ५।४।१६	मसृणत्व ३. ५।३।१	महाजाली २. ३।३।१६२
” १. २. ३. ५।४।५५	” १. ३।३।११५	मर्कटपिपीलिका २. ४।१।३७	मलयविष्टम्भ १. ४।४।१२८	मसृणी २. ३।८।४५	” २. ३।८।१२३
” १. २. ३. ६।५।६०	” १. ३।३।१२०	मर्त १. ३।६।२०६	मल्लुति २. ४।४।१२८	मस्कर १. ३।३।२१५	महाज्वाला २. १।२।२९
मन्दगामिन् १. २. ३.	मरकत ३. ३।२।३८	मर्त्य १. ३।५।१	मलहारक १. ३।७।८७	मस्करिन् १. ३।६।१६०	महाझष १. ४।१।५५
” ३।७।१५०	मरण ३. ३।६।२०२	मर्त्यलोक १. ३।६।२०६	मलिन ३. ४।२।१	मस्तक १. ३. ४।४।८६	महाटवी २. ३।३।२
मन्दर १. ४।३।१४०	मरणालस ३. ३।६।२१७	मर्द १. ३।६।१६७	” १. २. ३. ५।४।६६	मस्तिक १. ४।४।८५	महातेजस् १. १।१।५५
मन्दरमणि १. १।१।४६	मरन्द १. ३।३।१९	मर्दन ३. ५।२।३०	मलिना २. ४।४।१५	मस्तिक १. ४।४।११२	महात्मन् १. २. ३.
मन्दरवासिनी २. १।१।६३	” १. ३।३।१९२	मर्दनी २. ३।७।१५५	मलिनाम्बु ३. ३।९।२५	मस्तु ३. ३।८।१४४	” ५।४।५६
मन्दाकिनी २. १।१।१३	” १. ३. ५।३।१७	मर्दल १. ३।९।१३४	मलिग्लुच १. ३।३।४४	मस्तुलङ्ग १. ३. ८।५।१९	महादंष्ट्र १. ३।४।४
मन्दाक्ष ३. ३।६।१९४	मरिच ३. ३।८।७९	मर्दलध्वनि १. २।४।१०	” १. ३।६।७७	मस्तुलङ्गक १. ४।४।११२	महादेव १. १।१।४१
मन्दागा २ ब. २।१।४१	मरिष्टक १. ३।२।३८	मर्मभेदन १. ३।७।१७९	” १. ३।९।५५	मह १. ३।६।६१	महादेवी २. १।१।५८
मन्दार १. १।३।१४	मरीच ३. ३।८।७९	मर्मर २. २।४।८	” १. ३।९।५५	महः ३. ३।६।२०७	” २. ३।७।३१
” १. ३।३।४४	मरीचि १. २. २।१।१६	” १. ५।४।१४४	मलीमस १. २. ३.	महत् १. ३।६।१६३	महाधन १. २. ३.
मन्दिर ३. ४।३।१८	मरीचिका २. २।१।२२	मर्मरा २. ४।३।७०	” ५।४।६६	” ३. ३।६।२०७	” ४।३।११८
” ३. ७।३।२७	” २. ५।१।४२	मर्मस्पृश १. २. ३.	मलुक १. ३।४।७२	” १. २. ३. ६।५।६३	महाधातु १. ४।४।१०४
मन्दुपाल २. ३।५।३१	मरु १ ब. ३।१।३८	मर्यादा २. ३।९।१५	” १. ४।६।६७	” ३. ८।३।१८	महानट १. १।१।४४
मन्दुरा २. ४।३।२१	” १. ३।१।४२	” २. ४।२।१३	मल्ल १. ३।५।५५	महती २. ३।३।१३८	महानर्मन् १. ३।५।७१
मन्दोत्खात १. ३।६।२३०	मरुक १. ३।४।११	” २. ४।३।११	” १. ४।४।८८	” २. ३।९।११९	महानस ३. ४।३।५४
मन्दोष्ण ३. ५।३।९	मरुजा २. ३।४।२२	” २. ७।२।१९	मल्लक १. २।३।३१	” ३. ३।६।२०७	महानाद १. ३।४।१
मन्द्र १. २. ३. २।४।१३	मरुत् १. १।१।२	मर्ष १. ३।६।१८४	मल्लनाग १. ३।६।१५९	महत्विज् १. ३।६।७९	महानील ३. ३।२।४०
” १. ३।७।६२	” १. १।२।३९	मल ३. ३।२।२९	मल्लि २. ६।२।२७	महस् ३. ६।३।२४	महानेमि १. २।३।१५
मन्द्रभद्रमृग १. ३।७।६५	” २. ३।३।११७	” १. ३।५।२४	” १. ८।९।२६	महाकदम्बक १. ३।३।६०	महापत्त १. २।३।११
मन्द्रलक्षण ३. ३।७।६३	मरुत्वत् १. १।२।४	” १. ४।१।३२	मल्लिका २. ३।३।१८३	महाकन्द ३. ३।३।२०४	महापत्तिन् १. ३।३।२३
मन्मथ १. १।१।२७	मरुद्रण १ ब. १।३।८	(अल)	मल्लिकाकुसुमप्रिय १. ३।३।३५	” ३. ३।८।७६	महापत्र १. ३।३।२१६
” १. ३।३।३२	” १ ब. १।३।१०	” १. ३. ४।४।११९	मल्लिकाक्ष १. २।३।७	महाकाय १. ३।७।६१	महापद्म १. १।२।६०
मन्मथसख १. २।१।८३	मरुन्धव १. ३।३।६३	” १. ३. ४।४।१२०	” १. ३।७।९२	महाकार १ ब. ३।१।३९	” १. ४।१।१२
मन्या ३।७।८५	मरुन्माला २. ३।३।११७	” १. ५।४।१४४	मल्ली २. ४।३।५७	महाकाल १. ८।१।३७	” ३. ४।२।४०
” २. ४।४।११७	मरुल १. ३।४।७३	” १. ६।५।६५	” २. ८।९।२६	महाकाली २. १।१।६१	महाप्रलय १. २।१।९४
मन्यु १. ३।६।१८३	” ३. ४।२।१	मलद १ ब. ३।१।३६	मशक १. २।३।४४	महाकीर्तन ३. ४।३।१९	महाफला २. ३।३।८८
” १. ६।१।४५	मरुवक ६. ३।३।४९	” १. ३।८।३५	मशकहरी २. ४।३।१२४	महाकोशातकी २. ३।३।१५९	” २. ३।३।९२
मन्वन्तर ३. २।१।९३	मरुक १. ७।१।६२	मलना २. ३।३।१६०	मशकिन् १. ३।३।२८	महागण १. ५।१।३१	” २. ३।३।१७०
मय १. १।३।७	मरुद्धव १. ३।३।६४	मलय १. ३।२।३	मशन ३. २।४।२	महागन्धा २. १।१।६४	महाबल २. १।२।५०
” १. ३।४।६७	मर्क १. १।२।४९	” १. ७।५।६३	मशाक १. २।३।३	महाग्रहायणी २. २।१।७८	” २. ३।८।१३१
मयष्टक १. ३।८।३८	” १. ६।१।४७				महाबुस २. ३।८।३४



[ महाबुस ]

महाबुस २.	३८१५१
महाभूत ३.	३६१२०६
महामात्र १.	३७७८८
" १. २. ३.	५४१५६
महामुख १.	४११५३
महामुनि १.	३३३७९
महामूल्य १. २. ३.	४३११८
महामृग १.	३७६१
महामेरु १.	१३१२२
महाम्बुज ३.	५११३२
महायज्ञ १.	३६६३३
महायव १.	३८१५२
महारजत ३.	३२११८
" ३.	३८१९१
महारण ३.	३७२०६
महारस १.	३३३२२२
" १.	३३३२२५
महारसा २.	३३३११०
" २.	३३३१२३
महाराज १.	३९११०३
" १.	४१७७६
" १.	८११२६
महारात्र १.	२११६६
महारात्री २.	१११६१
महाराष्ट्र १ ब.	३११३३
महालय १.	८११३६
महालोभ १.	३३३५२
महावस १.	४११५४
महाविड ३.	३८११२३
महाविष्णु १.	१११३१
महावीर १. २. ३.	८१५२०
महावृष १.	३८१३५
महावेग १.	३१५४०
महाव्यसनसप्तक ३.	३७७११
महाव्रत १.	१११४५
महाशय १. २. ३.	५४११६
महाशक्त १.	४११४४

वैजयन्तीकोषः

महाशक्त २.	३३३३४
महाशालि १.	३८१३२
महाशिला २.	३७७१६९
महाशूद्र १.	३९१२८
महाश्रावणिका २.	३९१९४
महाश्वेता २.	३३३१३५
" २.	३३३१९६
महासना २.	३२१११
महासन्धा २.	३३३१०५
महासर्प १.	४११११
महासहा २.	३३३१०७
" २.	३३३१८८
" २.	८२११५
महासुप्ति २.	२११९४
महासेन १.	१११५५
महास्नायु २.	४१११७
महाहस १.	३९१८४
महित १.	३२१५
( महिक )	
महिमत १.	१२१२७
महिमन् १. ३.	८९१३१
महिला २.	४१४४
महिष १.	३३४८
" १.	३५१३३
महिषवाहन १.	१२१३३
महिषाक्ष १.	३८११२
महिषी २.	२११७४
" २.	३७३१
" २.	७२११९
मही २.	३११३
महीपति १.	३३३३७
महेच्छ १. २. ३.	५४११६
महेन्द्र १.	१२१७
महेन्द्रजित् १.	१११३७
महेश्वर १.	१११३८
" १.	३३३५३
महेश्वरी २.	३२१२६
महोत्त १.	३३१५५
महोत्पल ३.	४२१३७
महोदधि १.	४२११२
महोदय १.	४३३७

[ माणव्य ]

महोदया २.	४१४६
महोदरी २.	३३३१९९
महोद्रेक १.	५११५४
महौजस् १.	१११५६
महौषध १.	३३३२०६
" ३.	८३३१०
मा २.	१११३६
" २.	८७११०
" २.	८९१२
मांस ३.	४१११०६
मांसकर ३.	४१११०५
मांसकील १.	४१११३३
मांसनिष्काथ १.	४३३८७
मांसल १. २. ३.	५४१६
मांसलता २.	४१११२
मांसविक्रयिन् १.	३९१३७
मांसि १.	५३१५६
मांसिक १.	३९१३७
मांसी २.	३८११००
माकन्द १.	३३३२५
माक्षिक ३.	३२११५
" ३.	३८१३५
मागध १.	३५११६
" १.	३५७९
" १.	३५८०
" १.	३५८७
" १.	३७३०
" १.	३८८४
मागधी २.	३३३१६०
" २.	३८१७६
मागवी २.	३८१५६
माघ १.	२११८२
माघी २.	२११७४
माघ्य १.	३३३१९१
माटङ्क १.	४३३३४
माठि २.	३७१५३
माठि २.	३३३१८
माण १.	३३३२०९
माणव १.	४३३१४०
माणवक १. २. ३.	५४३
माणव्य ३.	५११७

माणिक्य ]

माणिक्य ३.	३२१४१
माणिक्या २.	४११३०
माणिचरि १.	१३३३
माणिमन्थ ३.	३८१२०
मातङ्ग १.	३७१५४
मातङ्गी २.	८२११४
मातरपितर १ द्वि.	४१४४७
मातरिश्चन १.	१२१४७
मातलि १.	१२१९
मातापितृ १ द्वि.	४१४४७
मातामह १.	४१४३०
" १ ब.	४१४४९
मातुल १.	४१४३३
" १.	७११६१
मातुलपुत्र १.	८११५४
मातुलानिका २.	३८१५१
मातुलानी २.	४१४३६
मातुलाहि १.	४१११९
मातुली २.	४१४३६
मातुलुङ्ग १.	३३३३३
" १.	३३३३३
मातुलुङ्गी २.	३३३३४
मातृ २.	२११७४
" २.	४३३१६३
" २.	४४२६
" २.	६२१२८
" २.	८६१८
" २.	८९१४४
मातृका २.	४१४२१
मातृमुख १. २. ३.	५४१४६
मातृशिष्ट १. २. ३.	५४२१
मातृष्वसेय १.	४१४४२
मातृष्वस्त्रीय १.	४१४४२
मात्र १. २. ३.	५४१३६
मात्रा २. ३.	६५१६२
" २. ३.	६५१६३
मात्सर्य ३.	३६११८४
माथ १.	४११३८

शब्दानुक्रमणिका

माथिक १.	३३३७५
माद १.	५२१३२
माधव १. ३.	३९१४९
" १.	७११६१
माधवी २.	३३३१८७
" २.	३९१४५
माधुर १.	३६११०८
" १.	५३३३२
माधवी २ ब.	२११२१
माध्वीक ३.	३९१४८
मानमन्दिर १.	१२१४२
( मानमन्दर )	
मानव १.	३५११
मानवी २.	३३३१८२
मानस ३.	३६१७२
मानसौकस्य १.	२३३६
मानिन् १.	३३३१५०
मानी २.	५११५३
मानुष १.	३५११
मानुष्यक ३.	५११८
मान्दा २ ब.	२१११९
मान्द्य ३.	४११३८
मान्धीर १.	२३३२८
मान्धीलव १.	२३३२८
माभीद १.	३३३७९
माया २.	११११६
" २.	३३३१३८
" २.	३६१६१
" २.	३७१२
मायाविन् १. २. ३.	५४१२४
मायिक १. २. ३.	५४१२४
मायिन् १. २. ३.	५४१२४
मायु १.	४११२१
मायूरी २.	३९१३३
मार १.	१११२७
मारक १. ३.	३६१२०२
( मरक )	
मारजित् १.	१११३३
मारण ३.	३७१२४
मारि २.	३६१२०२

[ मार्षक ]

मारि २.	४११३७
मारिष १.	३३३१५०
" १.	३९११०६
मारुङ्ग १.	५३३१
मारुत १.	१२१५०
मारुती २.	२११५
मार्कव १.	३३३१०७
मार्ग १.	३९१४९
" १.	६११४६
मार्गण ३.	३७१७४
" १. २. ३.	५४१६०
" १.	७५१६४
मार्गणा २.	३६१२१
मार्गनिवेश १.	४३१५
मार्गर १.	३५३३२
" १.	३५११००
" १.	३९१४२
मार्गशीर्ष १.	२११८१
मार्गायणी २.	२११३८
मार्गित १. २. ३.	५४१९८
मार्ज १.	५३३१
मार्जन १.	३३३५२
" १.	५३३१
मार्जना २.	२१११०
" २.	३९१३०
मार्जा ३.	४३३९९
मार्जारी १.	३३३१८
" १.	३३३१५६
" १.	३३३७१
मार्जारकण्ठ १.	२३३३८
मार्जारकणिका २.	
	१११६३
मार्जारिका २.	३३३३६
मार्जारी २.	३३३३४
मार्जालीय १. २. ३.	
	८१५२०
मार्जिता २.	४३३९८
मार्तण्ड १.	२१११३
मार्तण्ड १.	२१११०
मार्दङ्गिक १.	३९१७०
मार्षक १.	३९११०६



## [ माष्टि ]

माष्टि २.	४३११४७
माल ३.	३१११३
" १.	३१११२२
" १.	३११२५
मालती २.	३१११८२
मालतीतीरसम्भव १.	३१८१३०
मालव ३.	३१११६
" १ ब.	३११३७
" १.	३१११०६
मालवक १.	३१५६३
माला २.	४३११५४
मालाकार १.	३१९३३
मालातृणक ३.	३३१२३४
मालिक १.	३१९३३
मालिका २.	३३११८६
" २.	४३१२९
" २.	५११२४
मालुक १. २. ३.	२४१२०
" १.	३१५१९
मालुधान १.	४१११९
मालुवा २.	३३१२१०
मालूर १.	३३१३०
मालोजर् १.	३३११२०
माल्य ३.	६३१२५
माल्यजीविन् १.	३१९३३
माल्यवत् १.	३२१४
माष १.	३१८३५
" १.	५११४३
" १.	५११४४
" १.	५११४५
" १.	५११६३
माषपर्णी २.	३३११०७
माषाश्विन् १.	३१७९१
माषीण १. २. ३.	३१८२०
माष्य १. २. ३.	३१८२०
मास १.	८११६१
मास १.	२११८०
मासतम १. २. ३.	५१११९
मासर १.	३१९५१

## वैजयन्तीकोषः

मासर १.	४३१७८
मासिक ३.	३१६६५
माहामलय ३.	३१११६
माहिर १.	१२१६
माहिष १. २. ३.	३१११४
माहिषाडुक १.	३१५४८
माहिष्मती २.	४३१९
माहिष्य १.	३१५१२
" १.	३१५६९
माहेन्द्री २.	३३११७५
माहेयी २.	३१४४२
माहेश्वरी २.	१११६४
मित १. २. ३.	५४१३६
मितद्रु १.	४२११२
मितम्पच १. २. ३.	५४१५९
मित्र १.	२१११५
" ३.	३१७३९
" ३.	३१७४३
" ३.	३१८१२
" ३.	८१९४७
मिथस् ४.	८१७२७
मिथिला २.	४३१७
मिथुन ३.	४३११००
" ३.	४४१४८
" ३.	५१११५
" १. २. ३.	५१११६
" ३.	५१११६
" ३.	८१६१४
मिथुनत्व ३.	४३११७१
मिथुनिन् १.	२३१२४
मिथ्या ४.	८१८१३
मिथ्याचर्या २.	३१६१९६
मिथ्याभियोग १.	३११३२
मिर्मिर १. २. ३.	५१११९
मिश्र १. २. ३.	५११०८
मिश्रक ३.	३१६१२
मिष १.	३१५१४
" ३.	३१६१९५
मिषत् १. २. ३.	५४१६१
मिहिका २.	२११९

## [ मुखरा ]

मिहिर १.	२१११५
" १.	७११६२
मीढ १.	३१४६४
" १. २. ३.	५४११३
मीढा २.	३१६१६
मीन १.	४११३१
" १.	८१६१४
मीना २.	३१६१२३
मीनाङ्क १.	१११२७
मीमांसा २.	३१६१२९
" २.	३१६१७५
मीलिका २.	३२१२७
( नीलिका )	
मुक १.	५३१५६
मुकुन्द १.	११११३
" १.	१२१६१
मुकुन्दक १.	३३१२०५
मुकुर १.	४३११६२
मुकुल १. ३.	३३११९
मुक्तकञ्चुक १.	४११२०
मुक्तबन्धना २.	३३११८३
मुक्ता २.	४११५६
" २.	६२१२९
मुक्ताफल ३.	४११५७
मुक्तामुक्त ३.	३१७१९६
मुक्तावली २.	४३११३८
मुक्तास्फोट १.	४११५६
मुक्ति २.	३१६१२८
मुख ३.	३१८१२१
" ३.	४३११५
" ३.	४४१८६
" ३.	६३१२५
मुखज १.	३१६११
मुखबन्धन ३.	३१८१४१
मुखभूषण ३.	३२१३१
" ३.	३३११०६
मुखभेद १.	३१९१८८
मुखमण्डन १.	३३१६९
मुखर १. २. ३.	५४१४६
मुखरज्जु २.	३१७११२
मुखरा २.	२३१२०

## [ मुखावास ]

मुखावास १.	३१७१४८
मुखावासन १.	५३१५३
मुखशाला २.	४३१२४
मुखशोभा २.	३१६३५
मुख्य १. २. ३.	५४१६३
मुख्योपाय १.	३१७१२
मुग्ध १. २. ३.	६४११२
मुचिर १. २. ३.	७५१६६
मुचुटि १. २.	४४१७९
मुचुटी २.	३१७१९३
मुचुलिन्द १.	३३१३६
मुज १.	३३१२२८
" १.	३३१२२९
मुजकेशिन् १.	११११३
मुजन ३.	२४१२
मुण्ड १. २. ३.	३१६१६
" १. ३.	४४१८६
मुण्डन ३.	३१६१४
मुण्डा २.	३३११२५
" २.	४४११०
मुण्डित १. २. ३.	३१६१६
मुण्डितिका २.	३३११२५
मुण्डी २.	३३११२५
मुण्डीर १.	२१११३
मुद् २.	३१६१८८
मुदित १. २. ३.	५४१३३
" १. २. ३.	५४१९९
मुदिर १.	२२१२
मुद्र १.	३१८३६
मुद्रर १.	३१६१०२
" १.	३१७१७१
मुद्ररक १ ब.	३११२९
मुद्रित १. २. ३.	५३१९७
" १. २. ३.	५४११०
मुधा ४.	८१८१२
मुनय १. ३.	३१६१६८
मुनि १.	१११३४
" १.	३३११२३
" १.	३३११५८
" १.	३३१२२७
" १.	३३११५०

## शब्दानुक्रमणिका

मुनि १.	३१६१५२
मुनिपिष्टकिन् १. २. ३.	३१६१३४
मुनिप्रिय १.	३१८५८
मुनिवृक्ष १.	८१६१९
मुतिव्रतिन् १. २. ३.	३१६१३३
मुनिसेवित १.	३१८५७
मुनीन्द्र १.	१११३४
मुर ३.	३१८९८
मुरज १.	३१९१२९
मुरजध्वनि १.	२४११०
मुररिपु १.	११११३
मुरली २.	३१९१२५
" २.	३१९१२७
मुरुङ्गी २.	३३१५६
( मुरुङ्गी )	
मुरुण्ड १ ब.	३११२५
मुरुर् १.	१२१२०
" १.	५३१६
मुषित १. २. ३.	५४१११६
मुष्क १. ३.	४४१६३
मुष्कर १. २. ३.	५४१८
मुष्टि १.	३१७१६८
" १. २.	४४१७९
" १. २.	५११५१
" १. २.	५११६३
मुष्टिक १.	३११५४
मुष्टिमान्ध ३.	३१७१९२
मुष्ट्यष्टक ३.	३१६१६
मुष्ट्यायोजन ३.	३१७१८९
मुसल १. ३.	४३१६५
मुसलयष्टिक १.	३१७१७१
मुसलिन् १.	१११२३
" १.	३१७१७
मुसली २.	३३१२०३
" २.	३१८५०
" २.	४११२६
" २.	४११३०
मुसल्य १. २. ३.	५४१७१
मुसुटी २.	३१८५६

## [ मूल ]

मुस्त १.	४११२५
" १. २. ३.	८१९३८
मुस्तक १. ३.	३३१२००
मुस्ता २.	३३१२००
" २.	८१९३८
मुस्तु १. २.	४४१७९
मुहुः ( -र ) ४.	८१७२७
" ४.	८१८११
मुहुःश्रोत १. २. ३.	२४१२२
मुहूर्त १. ३.	२११५४
मूक १.	३१७१०८
" १. २. ३.	५४११४
मूका २.	३१९१७
मूढ १. २. ३.	३१७२९९
" १. २. ३.	५४१२१
" १. २. ३.	६४११२
मूत १.	६११४६
मूतक ३.	३१८१४४
मूत्र ३.	४४११२०
मूत्रकृच्छ्र ३.	४४११२८
मूत्राशय १.	४४१६६
मूत्रित १. २. ३.	५४११३३
मूर्ख १. २. ३.	५४१११
मूर्च्छन १. २. ३.	३१९१३१
मूर्च्छना २.	३१६१००
" २.	३१९११०
मूर्च्छा २.	३१६१००
मूर्च्छाल १. २. ३.	३१७२१९
मूर्च्छित १. २. ३.	३१७२१९
" १. २. ३.	७४१२२
मूर्ति २.	६२१२८
मूर्धन् १.	४४१८५
मूर्धाभिषिक्त १. २. ३.	८५१२७
मूर्धावसिक्त १.	३१५६५
मूर्धावसिक्तक १.	३१५३३
मूर्वा २.	३३१११४
मूल ३.	२११४०



[ मूल ]

वैजयन्तीकोषः

[ मेघवाहिन् ]

मूल ३.	३१३१३	मृगया २.	३११३८
२.	३१३२६	मृगयु १.	३११३८
मूलक १. ३.	३१३१५५	मृगरिपु १.	३१३२
मूलकर्मन् ३.	३१३११७	मृगरोमज १. २. ३.	३१३११८
मूलकशाकट १. २. ३.	३१३२१	मृगलक्ष्मन् १.	२११२५
मूलकशाकिन् १. २. ३.	३१३२१	मृगवीथी २.	२११३८
मूलकादिसुत १. २. ३.	३१३२३	मृगव्य ३.	३११३८
मूलकारण ३.	३१३१६१	मृगशिरस् ३.	२११३८
मूलकृच्छ्र ३.	३१३१४०	मृगशीर्ष ३.	२११३८
मूलधातु १.	४११०४	मृगसिंहक १.	३१३२
मूलपुष्पिका २.	३१३१२४	मृगाजीव १.	३१३४
मूलवर्हणी २.	२११४०	मृगाद् १.	३१३३
मूलरस १.	५१३२८	मृगादन १.	३१३४
मूलसस्य ३.	४१३१०	मृगादी २.	३१३१७२
मूलिक १. २. ३.	३१३१२९	मृगारि १.	३१३३
मूलिन् १. २. ३.	३१३१९	मृगित १. २. ३.	५१३१८
मूल्य ३.	३१३१७०	मृगेन्द्र १.	३१३१
२.	३१३२५	१.	८१३५
मृषिक १.	४१३३१	मृड १.	११३४०
मृषिकपर्णी २.	३१३११३	मृणाल १. २. ३.	४१३४३
मृषिका २.	४१३३४	१. २. ३.	८१३३८
मृग १.	३१३११	मृणाली २.	४१३४३
१.	३१३३०	२.	८१३३८
१.	३१३१२१	मृत १. २. ३.	३१३२०
१.	३१३१६२	३.	३१३२
१.	३१३१६४	३.	५१३१६
१.	३१३१४७	मृतस्नान ३.	३१३६४
मृगणा २.	३१३१२१	मृतस्नन ३.	३१३१११
मृगतृष्णा २.	२१३२२	मृत्तिका २.	३१३२४
मृगदंशक १.	३१३१६८	मृत्तिकाचूर्ण ३.	३१३२४
मृगधूर्त १.	३१३३८	मृत्यु १. २.	३१३२०२
मृगनाभि १.	३१३१०४	मृत्युञ्जय १.	११३४०
मृगपालिका २.	३१३३५	मृत्युपुष्प १.	३१३२१४
मृगबन्धनी २.	३१३३९	१.	३१३२२५
मृगमत्तक १.	३१३३७	मृत्युसंयमन १.	३१३२३
मृगमद १.	३१३१०४	२.	३१३२७
मृगमात्रिका २.	३१३२६	मृत्सा २.	३१३२४
		मृत्सना २.	३१३२४
		मृद् २.	३१३२४
		मृदङ्ग १.	३१३१५९

( ११८ )

मृदङ्ग १.	३१३१६०	मृषासाक्षिन् १. २. ३.	३१३१०
१.	३१३१२९	मृष्ट १. २. ३.	५१३९१
मृदाह्वया २.	३१३१७	मेकल १ ब.	३१३३७
मृदु १.	५१३५	१ ब.	३१३४०
१. २. ३.	३१३१२	१.	५१३६
मृदुकण्टक १.	४१३४३	मेखलकन्यका २.	४१३२६
मृदुत्वच् १.	३१३४५	मेखला २.	३१३१७
१.	३१३२२९	२.	४१३४६
मृदुरोमन् १.	३१३३१	२.	४१३१८
मृदुल ३.	३१३१०७	मेघ १.	२१३१
१.	५१३५	१.	८१३३
मृदुवात १.	११३५१	मेघज ३.	४१३१
मृदङ्ग ३.	३१३३१	मेघनाद १.	११३४४
मृद्वीका २.	३१३१८१	१.	३१३१५१
मृध ३.	३१३२०३	२१३३८	
मृषा ४.	८१३१३	मेघपुष्प ३.	४१३१
मृषार्थक १. २. ३.	२१३१७	मेघमाला २.	२१३२
		मेघवर्मन् ३.	२१३२
		मेघवह्नि १.	११३२०
		मेघवाहन १.	८१३५४
		मेघवाहिन् १.	११३२८

[ मेघाख्य ]

शब्दानुक्रमणिका

[ यच्च ]

मेघाख्य ३.	३१३१५	मेघशृङ्ग ३.	४१३२५	मोरट १.	३१३१४९
मेघाभ १.	३१३१९३	मेघाण्ड १.	१३२६	१.	७१३६५
मेघक १.	२१३३९	मेघी २ ब.	२१३१९	मोरटा २.	३१३१२४
२.	४१३६८	२.	४१३६५	मोषक १.	३१३१५६
१.	५१३११	मेहन ३.	४१३१७१	मोह १.	३१३२०९
मेघटिक १.	५१३५७	( मोहन )		१.	३१३१८१
मेट १.	४१३२९	२.	४१३६१	१.	६१३४५
मेढी २.	४१३४०	मेहल १.	५१३५७	मोहकालिका २.	३१३१६
मेढ १.	४१३६१	मेहिन् १.	३१३३	मोहनी २.	११३१६
मेणक १.	३१३१९	मैत्र ३.	३१३५७	मौकलि १.	३१३१५
मेथि १. ३.	३१३३१	१.	३१३१	मौकल्य १.	३१३५९
मेथिक १.	३१३१०६	मैत्रक १.	३१३१०४	मौक्तिक ३.	३१३४०
मेद १.	३१३३५	मैत्रावरुणि १.	३१३१५२	३.	४१३५६
१.	३१३५२	मैत्री २.	८१३३५	मौजी २.	३१३४२
१.	३१३५३	मैत्रेय १.	३१३३४	मौडी २.	४१३७०
१.	३१३११७	मैत्रेयक १.	३१३५४	मौढय ३.	३१३२००
मेदक १.	३१३५०	मैत्र्य ३.	८१३३५	मौण्डिक २.	३१३४
मेदस् ३.	४१३१०७	मैथिल १.	२१३६५	मौद्गिन १. २. ३.	३१३१९
मेदस्कर ३.	४१३१०७	मैथुन ३.	७१३२७	मौनिन् १.	३१३१५०
मेदस्तेजस् ३.	४१३१०९	मैथुनिन् १.	२१३३३	मौरजिक १.	३१३१७०
मेदिनी २.	३१३३	मैन १.	३१३१३	मौर्विका २.	३१३१७८
मेदुर १. २. ३.	५१३४३	मैनाक १.	३१३४	मौर्वी २.	३१३१७
मेदोभव १.	४१३१०९	मैनाकभगिनी २.	११३१६२	मौलि १. २.	४१३३५
मेधजित् १.	३१३१५८	मैनाकस्वस् २.	११३१६२	१. २.	६१३६४
मेधा २.	३१३१६५	मैरैय ३.	३१३४९	मौलिक ३.	३१३४२
मेधाविन् १.	२१३२५	मोक १.	३१३७२	मौष्टिक १.	३१३१६
१.	३१३२३४	१.	३१३२५	मौह्निक १.	२१३८३
मेध्य १.	३१३२२९	मोक्ष १.	३१३२३८	मौहूर्त १.	३१३१५
१. २. ३.	५१३६५	१.	६१३७	मौहूर्तिक १.	३१३२५
मेघ्या २ ब.	२१३१८	मोक्षण ३.	३१३१९२	म्लान १.	४१३४८
२ ब.	२१३२०	मोक्षालम्बिन् १.	३१३२३८	म्लिष्ट १. २. ३.	६१३११
मेनात्मजा २.	११३५८	मोक्ष १. २. ३.	५१३२९	म्लेच्छ ३.	३१३२५
मेरु १.	११३१२	मोक्ष १. २. ३.	६१३६४	१.	३१३११५
मेरुगण्ड १ ब.	११३१३	मोक्षक १.	३१३१५६	१.	३१३११६
मेलन ३.	५१३२७	मोक्षा २.	३१३१७५	म्लेच्छभोज्य १.	३१३१३
( मेलक )		मोक्षयित ३.	३१३१५५	म्लेच्छास्य ३.	११३२५
मेलामणि १. २.	३१३२५	मोक्ष १.	३१३१८८	य	
मेलामन्द १.	३१३२५	मोक्षक १. २. ३.	८१३६६	यकृत ३.	४१३११३
मेलाम्बु ३.	३१३६४	मोरक ३.	३१३१४६	यच्च १.	११३१५
मेघ १.	८१३१४	मोरट ३.	३१३१४६	१.	११३११
१.				१.	३१३६९

( ११९ )



[ यत् ]

वैजयन्तीकोषः

[ यव्य ]

यकाःपटह ]

शब्दानुक्रमिका

[ योग ]

यत् १.	८११५८	यति २.	६२२२९	यमस्वस्व २.	१११६२	यकाःपटह १.	३११३३४	यान ३.	३१०१२३	युगमध्य ३.	३१०१३१
यत्तकर्म १.	४३११५३	यतिन् १.	३१११६०	" २.	४२२२५	यकास् ३.	२११३६	" ३.	३१३२६	युगल ३.	५१११५
यत्तधूप १.	३१८१११	यत्त १. २. ३.	५११११४	यमी २.	४२२२५	यष्टि १. २.	३११३२३	यानमुख १.	३१०१३०	युगवर्तक १.	२११३५
यत्तराज १.	१२२१५५	यत्न १.	३१११६७	यमुना ३.	४२२२५	" २.	३१०१६२	यापन १.	७३२२८	युगान्त १.	२११९४
यत्तम १.	४१११२४	यत्न ४.	८१८२१	यमुनाभ्रातृ १.	१२२३४	" १. २.	८१२२५	याप्य १. २. ३.	५११७५	युगालिक १ ब.	३११२५
यत्तमन् १.	४१११२४	यथा ४.	८१८२७	ययु १.	६११४८	यष्टिमधुका २.	३१८१०३	" १. २. ३.	६११३३	युगावर्त १.	११११४
यज १.	३१६१८३	" ४.	८१८२०	" १. २. ३.	६१५६५	यष्ट १.	३१६१७६	याप्ययान ३.	३१०१३६	युगासार ३.	२११९२
यजत्र ३.	३१६१९४	यथातथम् ४.	८१८१३	यर्हि ४.	८१८१५	यस्त १. २. ३.	५११११६	याम १.	२११६७	युगाह्वया २.	३१८१९४
यजन ३.	३१६१९४	यथायथम् ४.	८१८१४	यव १.	३१८१५१	याग १.	३१६१८२	" १.	५२२३०	युगिन् १.	३१६१८२
यजमान १.	३१६१७६	यथार्थम् ४.	८१८१३	" १.	५११३३	यागकण्टक १.	३१६१८०	यामक १.	२११३९	युग्म ३.	५१११५
यजुरादेष्टृ १.	३१६१७६	यथार्हवर्ण १.	३१७२६	" १ ब.	८१२१५६	याचक १. २. ३.	५११३६०	यामिनी २.	२११५६	" १. २. ३.	५११२३
यजुस् ३.	३१६१२६	यथासुख १.	२११२६	यवक १.	३१८१५३	याचनक १. २. ३.	५११३६०	यामुन ३.	३१२४२	युग्य १.	१११५०
यज्ञ १.	३१६१६३	यथास्वम् ४.	८१८१४	यवक्य १. २. ३.	३१८१९	याचना २.	३१६१२०	याम्या २.	२११५६	" १. २. ३.	३१६१५८
" १.	३१६१८२	यथेप्सित १. २. ३.	४३११०४	यवक्रीत १.	३१६१५६	याचित ३.	३१८१२	यायजूक १.	३१६१७५	" ३.	३१७१२३
" १.	६११४७	यथोद्धत १. २. ३.	५११२१	यवक्षार १.	३१८१२७	याच्चा २.	३१३१२०	यायावर १.	३१६१४२	युग्मशानप्रसेव १.	३१७११५
यज्ञकर्मार्ह १. २. ३.	५१११७	यद् १. २. ३.	५११२१	यवचूर्णक १.	४३१६८	याच्चा २.	३१३१२०	" १.	३१६१५६	युज १. २. ३.	५११२३
यज्ञक्रतु १.	३१६१८६	" १. २. ३.	८१७११	यवद्वीप ३.	३१११४	याजक १.	३१६१७८	याव १.	४३११५३	युजिन १.	११२४८
यज्ञजागर १.	३३२२२७	यदा ४.	८१८१५	" ३.	३१११५	याजन ३.	३१६१६३	यावक ४.	३१८१५३	युजान १.	७११६३
यज्ञत्यागिन् १.	३१६१७७	यदि ४.	८१८१४	यवन १ ब.	३११२४	" ३.	३१८१७	यावत् ४.	८१७२८	युत १. २. ३.	६११३३
यज्ञपूरुष १.	११११२	यदृच्छा २.	५२२६	" १.	३१५१२	याज्ञवल्क्य १.	३१६१५५	यावतिथ १. २. ३.	५११२०	युतक ३.	५१११५
यज्ञलिह १.	३१६१७८	यज्ञविष्य १. २. ३.	५११३०	" १.	३१५७२	याज्ञिक १.	३१८१५२	यावनाल १.	३१८१५६	" १. २. ३.	७१५६७
यज्ञवराह १.	३१११८	यज्ञवद् १. २. ३.	५११३०	" ३.	३१८१२३	याज्य १.	८१९१४४	यावशादन १.	३१५१८	युद्ध ३.	३१७२०३
यज्ञवह १.	११३१६	यन्तृ १.	३१७१३८	यवनिका २.	४३१२२४	याज्या २.	३१६११२	यावशूक १.	३१८१२८	युद्धध्वान १.	२१११०
यज्ञाग्नि १.	१२२२३	" १.	६११४७	यवनेष्ट ३.	३१२३०	याज्यापुट १.	३१६११२	यावशूक १.	३१८१२८	युध् २.	३१७१५६
यज्ञाङ्ग १.	३१४१२	यन्त्र ३.	३१७१०	" १.	३१३२०७	यात ३.	३१७८९	याष्टीक १. २. ३.	३१७१४४	युधिष्ठिर १.	१२२१५
यज्ञाढ्य १.	३१६१५५	यन्त्रक ३.	३१९१८	यवपिष्टक १.	४३१७२	यातना २.	१२२३९	यास १.	३३१२६	युवति २.	४११८
यज्ञिय १.	२११९२	यन्त्रगृह ३.	४३२२४	यवफल १.	३३२२१५	यातयाम १. २. ३.	८११११	युक्त १. २. ३.	५११०३	युवन् १. २. ३.	५११३
" १.	३३२२२९	यन्त्रमुक्त ३.	३१७१९५	यवफलक १.	८११५५	यातु ३.	१२२४०	" १. २. ३.	६११३३	युष्मद् १. २. ३.	८१९४९
" १. २. ३.	५१११७	यम १.	१२२३३	यवमत्त १. २. ३.	५१११९	यातुक १.	२११६७	युग १.	३११५७	यू १.	४३११००
यज्ञोपकरण ३.	३१६१९४	" १.	३१६२०९	यवस १.	४११७४	यातुधान १.	१२२४१	" ३.	३१७१३०	यूक १.	४११३८
यज्ञोपवीत ३.	८३११७	" १.	३१७१७	यवागू २.	४३१८०	यातुगति १.	१२२४३	" १.	५१११५	यूथ १. ३.	५११४
यज्ञोपवीतक ३.	३१६२०	" १. २. ३.	३१७१२२	यवाग्र १.	५११४३	यातृ २.	४११३७	" १. ३.	६१५६६	यूथनाथ १.	३१७१७७
यज्वन् १.	३१६१७६	" ३.	५१११५	यवाग्रज १.	३१८१२८	यात्य १.	१२२३८	युगकीलक ३.	३१८२८	यूथप १.	३१७१७७
यज्वर १.	७११६२	" १.	५२२३०	यवानिका २.	३१८१०२	यात्रा २.	५२२१०	युगच्छद १.	३३१७७	यूथिका २.	३३११८२
यत ३.	३१७८९	" १. २. ३.	६१५६५	यवान्वित १. २. ३.	५१११९	" २.	६२२२९	युगद्वय ३.	२११९२	यूप १. ३.	३३११०३
" १. २. ३.	५११३२	यमक ३.	४३१९९	यवास १.	३३१२३	यादस् ३.	४११४०	युगान्धर १ ब.	३११७९	यूपमध्य ३.	३३११०४
" १. २. ३.	६१११२	यमभगिनी २.	१११६२	यविष्ट १.	१२२३६	यादसाध्याथ १.	१२२४६	" १.	३१७१३२	यूपाग्र ३.	३३११०४
यतः (-स्) ४.	८१८२१	यमरथ १.	३३११०	यवीयस् १. २. ३.	५११४४	यादसाप्ति १.	८११५७	युगपत् ४.	८१८६	यूष १. ३.	४३११००
यतस्तु १.	३१६१७८	यमराज १.	१२२३४	यवीयस ३.	३३२३३	यादस्पति १.	८११५८	युगपार्श्वग १. २. ३.	३३१५६	यूषज ३.	३३१२८
यति १.	३३११६०	यमल ३.	५१११५	यव्य १. २. ३.	३३८१९	यान ३.	३३१६			योग १.	३३१२०८



[ योग ]

योग १.	६११४८
योगपट्ट १.	३१६१५०
योगवाही २.	३१८१२९
योगाजि १.	३१६१५५
योगावाप १.	३१७१८८
योगिन् १.	३१३३६
" १.	३१८१२८
योगिनी २.	१११६०
योगियान १.	२११४५
योगेश १.	३१६१५५
योगेष्ट ३.	३१२२९
योग्य १.	२११३९
" ३.	३१७१२४
" ३.	३१८१४५
" १. २. ३.	६१५६७
" १. २. ३.	३१५६७
योग्या २ ब.	२११४१
" २.	३१६१४६
" २.	३१७१९५
" २.	३१८१९४
" २.	६१५६७
योग्यारथ १.	३१७१३०
योजन ३.	३११६३
" १.	३१३२१८
योजनगन्धा २.	८१२१२
योजनबल्ली २.	३१३१४५
योजना २.	३११६३
योत्र ३.	३१८१८८
योधन ३.	२१४१०
योनि १. २.	४१४६१
" १. २.	६१५६६
योषा २.	४१४४
योषित् २.	४१४४
यौतक ३.	३१६१५५
" १. २. ३.	७१५६७
यौतुक ३.	३१६१५५
यौध १.	३१७१३९
यौधक १.	३१७१३९
यौधेय १ व.	३११२८
यौन ३.	३१६१२
यौनिक १.	११२५२

वैजयन्तीकोषः

यौवन ३.	४१४५३
" ३.	५११८
यवागुली २.	४१३७८
यवागुल्या २.	४१४७८
र	
रहस्य ३.	११२५५
रक्त ३.	३१२२४
" १.	३१३४०
" ३.	३१८११५
" ३.	३१८११६
" ३.	४१४१६
" ३.	४१४१०५
" १.	५१३११
" १. २. ३.	६१४१४
रक्तक १.	३१३१८५
रक्तकुण्डल ३.	४१२४४
रक्तग्रह १.	११२४१
रक्तचन्दन ३.	८१६२३
रक्ततेजस् ३.	४१४१०७
रक्तदन्ती २.	१११६१
रक्तदृष्टि १.	२१३१४
रक्तपाणिक ३.	४१२३५
रक्तपीतासितश्चेत् १.	
" ३.	५१३१६
रक्तपुच्छिका २.	४११२९
रक्तपुष्प १.	३१३३९
" १.	३१३४७
रक्तफला २.	३१३१४७
रक्तभव ३.	४१४१०७
रक्तशालि १.	३१८३२
रक्तशीर्षक १.	३१८१०९
रक्ता २.	३१३१५३
रक्तात् १.	७१२६३
रक्ताङ्ग १.	३१३१५
रक्तिका २.	३१३१७९
रक्तस् ३.	११२४०
रक्तस्सभ ३.	८१९२०
रक्तित १. २. ३.	५१४१००
रक्तोघ्न १.	३१८४१
" ३.	४१३८२

[ रट्टास ]

रङ्गुटी २.	३१८४४
रङ्ग ३.	३१२३०
" ३.	३१२३१
" १.	६११५१
रङ्गाजीव १.	३१९१२
" १.	३१९६३
रङ्गावतारिन् १.	३१९६३
" १.	३१९६५
रङ्गोपमर्दिन् १.	३१९६६
रचना २.	४१३१५८
" २.	५१२१४
" २.	५१२३९
रजःपुष्प १.	३१३२२३
रजःपूता २.	३१४४२
रजक १.	३१५३८
" १.	३१५४५
रजत ३.	३१२२३
" १. २. ३.	७१५७०
रजताद्रि १.	३१२५
रजनी २.	२११५६
" २.	३१८८९
" २.	७१२२०
रजस् ३.	३१२३२
" ३.	३१३१६२
" ३.	३१८२५
" ३.	६१२२८
" ३.	८१५३६
रजसानु १.	८११३७
रजस्वल १.	३१४९
रजस्वला २.	४१४१५
रज्जु २.	३११५८
" २.	३१९३०
" २.	८१२३
रज्जुदाल १.	३१३५४
रज्जन ३.	३१८११५
" ३.	३१९६०
रज्जनवल्ली २.	३१३१६४
रज्जनी २.	३१२११
" २.	३१३११०
" २.	३१३२११
रट्टास १.	३१५१३

[ रण ]

रण ३.	३१७२०४
" १. ३.	६१५६८
रणरणक १.	३१६१७९
रणसङ्कुल ३.	३१७२१७
रण्डा २.	३१३११३
" २.	६१२३१
रत्त ३.	४१३१७०
रत्तद्विक ३.	८१३११
रत्तार्थिनी २.	४१४११
रत्ति २.	३१३१७८
" २.	३१९७६
" २.	४१३१७०
रत्तिपति १.	१११२८
रत्तेमदा २.	११३११
रत्न ३.	३१२३६
" ३.	६१३२६
" ३.	८१३१७
रत्नगर्भ १.	११२५८
रत्नगर्भा २.	३११४
रत्नवर ३.	३१२२०
रत्नसू २.	३११४
रत्नहस्त १.	११२५८
रत्नाकर १.	४११११
रत्नि १.	३११५४
रथ १.	२१३९
" १.	३१३३१
" १.	३१७१२४
रथकट्या २.	५१११३
रथकार १.	३१५४८
" १.	३१५७५
" १.	३१५७५
" १.	३१५९०
" १.	३१९३४
रथकारक १.	३१५३३
रथगरुत १.	३१६१०७
रथगर्भक १.	३१७१२७
रथगुप्ति २.	३१७१३२
रथनीड १.	३१८१३२
रथपद ३.	३१७१३४
रथरेणु १. २.	५११४२

शब्दानुक्रमणिका

रथवारक १.	३१५२५
( रथकारक )	
रथाङ्ग ३.	३१७१३४
" ३.	३१७१३५
रथायुधक १.	३१७१७४
रथाश्मन् १.	३१५२०
रथिक १. २. ३.	३१७१४०
रथिन् १. २. ३.	३१७१४०
रथिन १. २. ३.	३१७१४०
रथ्य १. २. ३.	६१४१४
रथ्या २.	४१३१६
" २.	५१११३
रथ्यावाद १.	२१४२७
रद १.	४१४७८
" १.	६११५०
रदन १.	४१४७८
रदिन् १.	३१७६०
रन्तिदेव १.	११११४
रन्धक १. २. ३.	४१३१०८
रन्धन ३.	५१२३२
रन्धित १. २. ३.	४१३१९३
रन्ध्र १.	३१५७
" ३.	४११२
" ३.	८१६१९
रभस १.	५१४१४४
" १.	७११६३
रभू १.	३१७२९
( रत्तु )	
रमणी २.	४१४६
रमति १.	८११६३
रमा २.	१११३६
रम्भण ३.	२१४५
रम्भा २.	२१४५
" २.	३१३१७३
" २.	३१३१७४
" २.	३१६११८
रम्भित ३.	२१४५
रम्यक ३.	३११८
रय १.	११२५५
रयि १. २.	८१९२७
रयक १.	४१३१२९

[ रसगर्भक ]

रव १.	२१४४
रवण १.	२१४१
" ३.	३१२२९
" १.	३१३१६५
( द्रवण )	
" १.	३१४६७
" १. २. ३.	५१४४८
" १. २. ३.	७१५७०
रवा २.	३१३९९
रवि १.	२११४०
रविग्रावन् १.	३१२३७
रविध्वज १.	२११५५
रशना २.	४१३१४६
रशिम १. २.	२१११६
" १. २.	६११५०
" १. २.	८१९२५
रश्मिकलाप १.	४१३१३९
रश्मिमालिन् १.	२१११३
रस १.	४१४२
" १.	३१२१५
" १.	३१२४४
" १.	३१३४९
" १.	३१३१५१
" १.	३१३२०५
" १.	३१३३०
" १.	३१८१११
" १.	३१९७४
" १.	३१९७५
" १.	४१३१००
" १.	४१४१०४
" १.	४१४११४
" १.	५१३२
" १.	५१३४५
" १.	६११४९
रसक १.	३१२३५
" १.	३१६१९८
" १.	३१८१२८
" १.	४१३१८७
रसकोप १.	५१३४०
रसक्रिया २.	४१४१४२
रसगर्भक ३.	३१२४१



## [ रसज्ञ ]

## वैजयन्तीकोषः

## [ राङ्गान्त ]

रसज्ञ १.	३१२३५	रागशालव १.	५३३३१
रसज्ञा २.	४११९०	रागसूत्रक ३.	५११६४
रसज्येष्ठ १.	५३३२५	राघव १.	१११२०
रसतेजस ३.	४११०५	राङ्गव १. २. ३.	४३३११८
रसन ३.	७५१६८	राज १.	३१७१
रसना २.	४११९०	राजक ३.	५११८
रसनेत्री २.	३२१११	राजकर्कट २.	३३३१६७
रसयोनि १.	३१८१३०	राजकोशातकी २.	३३३१६१
रसवती २.	४३१५४	राजजम्बू २.	२३१९३
रसवर १.	३२३३५	राजदन्त १.	४११८९
रसविद्ध ३.	३२३२२	राजधानी २.	४३३१४३
रसा २.	३११२	राजन् १.	३१७१
" २.	३३३१३१	" १.	६११५०
" २.	३३३१८१	" १.	८१११२
" २.	४११२	राजन्य १.	३१७१
रसागोह १.	१३३१०	राजन्यक ३.	५११८
रसाग्र १.	४३३१७७	राजन्वत् १. २. ३.	३११४६
रसाञ्जन ३.	३२३१४१	राजपटोल १.	३३३१६६
रसाख्य १.	३१८१२८	राजपुत्री २.	८१२८
रसातल ३.	४१११	राजफल १.	३३३१६६
" १.	४३३११०	राजवीजिन् १.	४११५०
रसादान ३.	४३३१०३	राजभृङ्ग १.	२३३२७
रसायन ३.	३१८१४८	राजमार्ग १.	४३३१६
रसाल १.	३३३१४१	राजमाष १.	३१८१४६
" १.	४३३१९८	राजमुद्ग १.	३१८३८
रसिक १.	३१९१७७	राजराज १.	११२५७
रसोज्ज्वल ३.	४१११०५	राजरीति २.	३२३२६
रसोन १.	३३३२०४	राजवंश्य १.	४११५०
रहस ३.	५१११२०	राजवत् १. २. ३.	३११४६
" ३.	६३३२७	राजवर्त १.	४३३११९
रहस्य १. २. ३.	५१११२०	राजवल्ली २.	३३३१६४
राक १.	६११५१	राजवाह्य १.	३१७३९
राका २.	२११७३	राजविहङ्गम १.	२३३२९
" २.	४११८	राजवृक्ष १.	८१२०
राक्षस १.	१२१४०	राजवेश्मन् ३.	४३३३०
राक्षसघ्न १.	१११२१	राजसर्षप १.	३१८१४२
राग १.	३३३१८१	" १.	५११४२
" १.	३१९११४	राजसी २.	२११६०
" १.	६११५१		
रागवत् १.	३३३२१७		

( १३४ )

राजहंस १.	२३३७
राजादन १.	३३३४३
" १.	८१५२१
राजावर्त १.	४३३११९
राजि २.	४३३१४८
" २.	४११९०
" २.	६१२३०
राजिका २.	३१८१४२
राजिमत् १.	४११७
" १.	४११९
राजिल १.	४११९
" १.	४१११५
" १.	४१२०
" १. २. ३.	५११७
राजीफल १.	३३३१६६
राजील १.	४११९
" १.	४१११०
राजीव १.	३३३१३
" ३.	४१२३८
राजीवक १.	४११४६
राजीवत् १.	३३३१६५
राज्ञी २.	३२३२७
राज्यलौक्य ३.	३३३१८२
राज्याङ्ग ३.	३१७३
राठ १.	३३३१५०
राढा २.	३१२२१
" २.	३१३३०
" २.	४३३१५०
राण १. ३.	२११७
रातप ३.	५३३३१
राता २.	३३३१२
रात्रि २.	२११५७
रात्रिचर १.	१२१४०
" १.	३१९५६
रात्रिज ३.	२११३८
रात्रिजागर १.	३३३१७०
रात्रिश्चर १.	१२१४०
रात्रिद्विष् १.	२१११४
रात्र्याख्या २.	३३३२११
राथन्तरि १.	१२१२२
राङ्गान्त १.	३३३२५

## [ राध ]

## शब्दानुक्रमिका

## [ रूप्य ]

राध १.	२११८३	रिष्टि २.	३१७१५९	रुद्रपुष्प ३.	३३३१९५
राधा २.	२११४०	रीढा २.	३३३१७२	( ओढूपुष्प )	
राम १.	१११२०	रीण १. २. ३.	५१११०९	रुद्रव्रतित् १. २. ३.	३३३१३१
" १.	१११२०	रीति २.	३३३२५	रुद्रसख १.	१२१५८
" १.	१११२२	" २.	५२३२	रुद्रा २ व.	२११२१
" १.	३३३३२	" २.	६२३३०	रुद्राक्ष १.	३३३१७९
" १. २. ३.	६३३१४	रीतिपुष्प ३.	३२३१३	रुद्राणी २.	१११५८
रामक १.	३१५७९	रुक्म ३.	३२३१८	रुधिर १.	२११३२
" १.	३१५८२	" ३.	६३३२७	" ३.	४३३१०५
रामठ ३.	३१८१३१	" १.	८३३१०	रुमा २.	३२३१०
रामदुती २.	३३३१०९	रुम्भेद १.	४३३१३७	रुमाभव ३.	३१८१२१
रामपूग १.	३३३२१८	रुच् २.	२११२२	रु १.	३३३१४
रामभगिनी २.	१११६२	" २.	४३३१५०	रुच १.	७११६४
रामस्वस्त २.	१११६२	" २.	८२३१९	रुचु १.	३३३१५
रामा २.	४३३१६	रुचक १.	३३३३३	रुचुक १.	३३३१५
राम्भ १.	३३३१८	" ३.	३१८१२५	रुशती १. २. ३.	२१११८
रालि १.	८१११०	" १.	८११६४	रुष् २.	३३३१८३
रावण १.	१२३४२	रुचि २.	२११२२	रुपा २.	३३३१८३
रावणसूदन १.	१११२०	" २.	३३३३३२	रुच ३.	३३३३४
राशि १.	२११५०	" २.	३३३१८३	" १.	३३३१५
" १.	५११३	" २.	६३३१४	" ३.	३३३१४२
" १.	५२३५४	रुचित १.	३३३१४	" १.	५३३३
राष्ट्र ३.	३३३३	रुचित १. २. ३.	५३३१६	" १.	५३३१६
" ३.	३३३४८	रुचिर १. २. ३.	५३३१३४	" १. २. ३.	५३३१४
" ३.	६३३१५	रुचिष्य ३.	३३३१२५	" १. २. ३.	६३३१३
राष्ट्रिका २.	३३३१०६	रुचु १.	३३३२८	रुचणीय १.	३३३१४७
राष्ट्रीय १.	३३३१०५	रुच्य १.	४३३३७	रुचणीया २.	३३३१६१
रास १.	३३३१७३	" १.	५३३३८	रुचवालुक ३.	३३३१३५
रासभ १.	३३३१६५	" १. २. ३.	५३३३३४	रुचस्वर १.	३३३१६४
" १.	८३३१५	रुज् २.	४३३३३८	रुढ १. २. ३.	३३३१७७
रास्ना २.	३३३१८८	रुजा २.	३३३१६५	" १.	३३३१५१
राहु ३.	२१३३७	" २.	४३३३३८	रूप ३.	३३३१०१
रिक्त १.	२१३७९	" २.	६३३२९	" ३.	५३३१
रिक्तक १. २. ३.	५३३१८७	रुण्ड १.	३३३१०८	" ३.	५३३२
रिक्थ ३.	३३३१७३	" १.	३३३२१६	" ३.	६३३२८
रिङ्ग १.	३३३१३६	रुण्डक १.	३३३१२८	रूपजीवना २.	४३३२४
रिङ्गोल ३.	३३३१३६	रुत ३.	२३३१४	रूप्य ३.	३३३२३
रिङ्गोलन ३.	३३३१३६	रुदित ३.	३३३१८७	" ३.	३३३१७४
रिपु १.	३३३१४१	रुद्ध १. २. ३.	५३३१६६	" १. २. ३.	६३३१६८
रिरी २.	३३३२५	रुद्र १.	११३३९	" ३.	८३३११
रिष्ट ३.	६३३२७	" १ व.	१३३८		

२३ वै०

( १२५ )



[ रूप्यमास ]

रूप्यमास १.	पा११४४
रूप्यशतमान ३.	पा११६०
रूप १.	पा३१२९
रूपित १ र. ३.	पा१११३
रेक १.	पा११४६
रेखा २.	३१२४४
" २.	६२३२२
रेचक ३.	८१११५
रेचनी २.	३३११३८
रेचित १. र. ३.	३३१११८
" १. र. ३.	३३११२२
" ३.	३११९२
रेटि २.	६२३२२
रेणु १.	३३८२५
" १. र.	पा११४२
" १. र.	८१२२६
रेणुका २.	३३८१९५
रेतसू ३.	पा१११११
" ३.	६३२२७
रेफ १. र. ३.	पा११७५
रेभटि २.	३३११९६
रेभण ३.	२१४२
रेरिहण १.	१११४४
रेवट १. ३.	७५६९
रेवती २.	१११५९
" २.	३३११०९
" २.	३३११८२
" २.	७२२२०
रेवतीकान्त १.	१११२३
रेवा २.	४२२२६
रेशी २ व.	२११२०
रेशण ३.	२१४६
रेषा २.	२१४६
रै १. र.	८१३३८
रोक ३.	पा११२
" १. ३.	६१५६७
रोक्य ३.	पा११०५
रोग १.	पा११३८
रोगहारिन् १.	पा११४३
रोगाख्य ३.	३३८१९९
रोचक १.	पा३१२९

वैजयन्तीकोषः

रोचन १.	३३१९१
" १. र. ३.	पा११४२
रोचना २.	७२२२०
रोचनी २.	३२२११
" २.	३३१९५
" २.	३३११३८
" २.	३३२२११
रोचिष्णु १. र. ३.	पा११४२
रोचिस् ३.	२१११६
रोदन ३.	३३१८७
रोदनी २.	३३११२५
रोदस २ द्वि.	३११५
रोदसी २ द्वि.	३११५
रोध १.	३३११८०
रोधस् ३.	४२३३१
रोधोवक्त्रा २.	४२२२२
रोपण १.	३३११७९
रोमकर्ण १.	३३३३१
रोमज ३.	पा३११७
रोमन् ३.	३३३७५
" ३.	पा३१९७
रोमन्थ १.	३३३७५
रोमन्थन ३.	३३३७५
रोमश १.	३३३७५
" १.	३३३६४
" १. र. ३.	पा१४८
रोमशपुच्छक १.	पा११२७
रोमशी २.	पा११२७
रोमहर्ष १.	३३१८२
रोमहृत् ३.	३२२१४
रोमाङ्क १.	३३१८२
रोमाञ्च १.	३३१८२
रोमोद्गम १.	३३१८२
रोष १.	३३१८३
" १.	पा२१४
रोषाण १.	३३१९९
" १. र. ३.	७५७१
रोहणद्रुम १.	३३११२
रोहणी २.	पा११२९
रोहिणी २.	३३१४४
" २.	३३८८६

[ लक्ष्मणा ]

रोहिणी २.	७२२२१
रोहिणीकान्त १.	२११२४
रोहित् १.	३३११४
" १.	८११११
रोहित ३.	२२२३
" १.	३३१४०
" १.	३३११६
" १.	३३१५६
" १.	पा३१११
रोहिताश्व १.	१२२१५
रोहिन् १.	३३१४०
रौच्य १.	३३११६
रौद्र ३.	२११२२
" ३.	३३१७५
" १. र. ३.	३३१७९
रौद्री २.	१११४९
" २.	१११५८
" २.	३३११९२
" २.	८२२१४
रौमक ३.	३३८१२१
रौरव १.	१२२३७
रौहिण्य १.	८११३७
रौहितक १.	३३१४०
रौहिष १.	३३१४०
" १.	३३११६
" १. ३.	७५७१
ल	
लकुच १.	३३१७५
लक्ष १.	३३३३५
" ३.	३३११९४
" ३.	पा११३२
" १. र. ३.	६१५६९
लक्ष्मण ३.	२११२९
" ३.	३३११९४
" ३.	पा२११
" ३.	७३२२८
लक्षा २.	पा११३२
लक्ष्मणा १. र. ३.	पा११५६
लक्ष्मणा २.	२३३३३

[ लक्ष्मन् ]

लक्ष्मन् ३.	२११२९
" ३.	६३२२९
लक्ष्मी २.	११११६
" २.	१११३६
" २.	३३११९१
" २.	३३८१३
" २.	३३८१९
" २.	८२२१९
लक्ष्मीनिकेतन ३.	पा३११४
लक्ष्मीपति १.	८११३८
लक्ष्मीपुत्र १.	८११३८
लक्ष्मीवत् १.	३३३४२
" १. र. ३.	पा११५६
लक्ष्य ३.	३३११९४
लक्ष्यग्रह १.	३३११९०
लगणा २.	३३३३३९
लगुड १.	३३१२९
लगुडवैशिका २.	३३३२१६
लग्न १.	३३१६८
लग्नक १. र. ३.	३३८१०
लघु १.	३३३५३
" २.	३३३११६
" ३.	३३८१०७
" १. र. ३.	पा११७६
" १. र. ३.	पा११२४
" १. र. ३.	पा११५५
लघुक १.	३३३२१९
लघुकाष्ठ १.	३३११९९
लघुग १.	१२२४८
लघुहस्त १. र. ३.	३३११४९
लघ्वचरक १.	२११५२
लङ्का २.	६२३२२
लङ्कायिका २.	३३३११७
लङ्केश्वर १.	१२२४३
लङ्गन ३.	पा३१२२
लङ्गनी २.	पा३१५३
लङ्गन ३.	३३१२२३
" ३.	पा११३९

शब्दानुक्रमणिका

लङ्गन ३.	पा२१२२
लङ्गा २.	३३११९४
लङ्गाळ २.	३३३१४८
" २.	३३३१४८
लङ्गाशील १. र. ३.	पा११४०
लज्जित १. र. ३.	पा११५१
लट् १.	पा३१५६
लडह १. र. ३.	पा११३५
लण्ड १. ३.	पा१११९
लता २.	३३३१७
" २.	३३३६६
" २.	३३३१०४
" २.	३३३११७
" २.	३३३१८७
" २.	८११३
लताकुश १.	३३३२२८
लताकोलि २.	३३३७८
लताङ्कुर १.	३३३२१९
लतापूग ३.	३३३२१८
लतामारिष १.	३३३१५२
लतार्क १.	३३३२०५
" १.	३३३२०७
लताबृहती २.	३३३१०४
लब्ध १. र. ३.	पा११६४
लब्धवर्ण ४.	३३३२३५
लभ्य १. र. ३.	पा११५५
लम्पट १. र. ३.	पा११३६
लम्पा २.	३३३१६
लम्पाक १ व.	३३३२५
लम्बकर्ण १.	३३३६२
लम्बन ३.	पा३१३७
लम्बा २.	३३३१६
लम्बोदर १.	१११५३
लम्भन ३.	पा२२०
लय १.	३३३२००
" १.	३३३१९२
" १.	३३३१२२
लयनालिक १.	पा३३२८
लल ३.	६३३२९
ललना २.	पा११४

[ लस्तकग्रह ]

ललनाक्ष १.	३३३३४
ललन्तिका २.	पा३३३३६
लकाट ३.	पा११९६
ललाटिका २.	पा३३३३६
" २.	पा३३३३९
ललाम १. र. ३.	पा११७२
ललामक ३.	पा३३३५५
ललामन् १. ३.	पा११७२
ललित ३.	३३१९६
लल्लर १. र. ३.	पा३३१५
लव १.	पा३३५३
" १.	पा३३२९
लवङ्ग ३.	३३८१०३
लवण ३.	३३८१२६
" १. र. ३.	पा३३९३
" १.	पा३३२६
" १.	पा३३२७
लवणक्रीतक १.	३३५८८
लवणलायिका २.	३३७११६
लवणाकर १.	३३३१०
लवणापण १.	पा३३३४
लवणोत्कट १. र. ३.	पा३३९३
लवणोद् १.	३३११०
लवन १.	पा३३२९
लवली २.	३३३२६
लवित्र ३.	३३८३०
लवेटिका २.	३३८३१
लश १.	३३३११
लशुन ३.	३३३२०४
" ३.	३३३२०६
लषित १. र. ३.	पा११९६
लस ३.	३३८११५
" १.	पा३३३५
" १.	पा३३५४
लसिका २.	पा३३११८
लसीका २.	पा३३११८
लस्तक १.	३३७१७७
( लस्तक )	
लस्तकग्रह १.	३३७१८९



लहरी ]

लहरी २.	४२११४
लाक्षा २.	४३११५३
लाङ्गल ३.	३८१२७
लाङ्गलषद्धति २.	३८१३०
लाङ्गलिन् १.	३३१२२०
लाङ्गली २.	३३११९७
लाङ्गूल ३.	३११४७४
" ३.	७३१२९
लाङ्गूली २.	३३११३६
लाज १ ब.	४३१६८
लाजमण्ड १.	४३१७९
लाजि २.	३११२४
लान्छन ३.	२११२९
लाङ्गीक १.	३११३
लातक १.	३३११८९
लाभ १.	३८१७०
लामज ३.	३३१२३१
लाल १.	३३१३६
" ३.	६३१२९
लालक १. २. ३.	२१११५
लालन १.	३८११११
लालस २. ३.	५११३६
लालसा १. २. ३.	७११७२
लाला २.	३३१२६
" २.	४१११२०
लालाटिक १. २. ३.	८११११
लालिका २.	३११११२
लाव १.	२३१४०
लावण १.	३१११०
लावली २.	३३१२६
लास्य ३.	३११७३
लिकुच १.	३३१७५
लिङ्गा २.	४११४२
लिङ्गु १.	३३१११
" १.	६११५१
लिङ्ग ३.	५१११७
" ३.	६३१३०
लिङ्गज्येष्ठ ३.	३३११६३
लिङ्गवृत्ति १. २. ३.	३३११९
लिङ्गशोफ १.	४११३२

वैजयन्तीकोषः

लिच्छिवि १.	३११५४
लिपि	३११२४
लिपिकर १.	३११२३
लिपिसन्नाह १.	३११५४
लिप्ता १. २. ३.	६१११५
लिप्तिका २.	२११५३
लिप्ता २.	३३११८०
लिप्ता १. २. ३.	५११३५
लिपि २.	३११२३
लिष्ट १. २. ३.	५१११५
लिह १.	११२५१
लीला २.	३११८८
" २.	३११९२
" २.	३११९३
" २.	३११९७
" २.	६१२३३
लीसुष १.	५३१३८
लुङ्ग १.	३३१३३
लुञ्जना २.	२११२६
लुठित १. २. ३.	३१११०७
लुण्ठित १. २. ३.	५११११६
लुब्ध १. २. ३.	५११३५
लुब्धक १.	३११३८
लुम्बिका २.	३११३५
लुलाय १.	३१११९
लुलित १. २. ३.	५१११०३
लुष १.	३११३१
(युष)	
लुस्त ३.	३१११७७
लुत्त १. २. ३.	५११४४
लुता २.	४११३४
लुतात १.	४११३६
लुतापट्ट १.	४११३५
लुतिका २.	४११३४
लुन १. २. ३.	४१११०२
लुनदोस् १.	१११५२
लुमन् ३.	३११७४
लेख १.	१११३
" १.	३१११२

[ लोपामुद्रा

लेखक १.	३११२३
लेखनी २.	३१११३
लेखा २.	३११२४
" २.	४३११४९
" २.	५११२४
लेख्य ३.	३१११२
लेह १.	११२५१
लेप १.	४३११०२
" १.	६११५२
लेपकार १.	३१११४
लेप्य ३.	३१११३
लेलिहान १.	४१२५
लेश १.	२११५४
लेष्टु १.	३११२४
लेहन ३.	४३११०३
लेह्य ३.	४३१९१
लैङ्गिक १.	३१११६३
लैङ्गधूम १.	३११८०
लोक १.	३११२०६
" १.	६११५२
लोकजित् १.	१११३३
लोकपाल १.	२१११४
" १.	८११३८
लोकान्ताद्रि १.	३१२३
लोकालोक १.	३१२३
लोचक १. २. ३.	३१११३४
" १. २. ३.	७११७३
लोचन ३.	४११९४
लोचना २.	२११२८
लोचमस्तक १.	३१११०२
लोचमालक १.	३३११९९
लोठन ३.	५१२४२
लोठना २.	२११२८
लोठभू २.	३११११२
लोत १.	३११८७
लोघ्न १.	२११८७
" १.	३३१५२
" १.	३३१५२
लोपा २.	२३१२५
लोपामुद्रा २.	३३११५३

लोपायिका ]

लोपायिका २.	२३१२५
लोपास १.	३११३९
लोपत्र ३.	३११५८
लोभन ३.	३२११९
" १.	३८१३६
लोमन् ३.	४११९७
" १. ३.	८११३१
लोमश १. २. ३.	५११८
लोमशी २.	३१११००
लोल १.	३११२०६
" १. २. ३.	५११३६
" १. २. ३.	६१११६
लोलम्ब १.	२३१४२
लोलिका २.	३११५८
लोलुप १. २. ३.	५११३६
लोलुभ १. २. ३.	५११३६
लोष्ट १. ३.	३११२४
लोष्टभञ्जन १.	३११२९
लोह ३.	३१२३३
" ३.	३१२३६
" १. ३.	६११६९
लोहकारक १.	३१११६
लोहकार्पापण १.	५११३९
लोहज ३.	३१२२९
लोहदण्ड १.	३१११६७
लोहपृष्ठ १.	२३१३१
लोहमात्र १.	३१११५६
लोहमारक १.	३३११५६
लोहमालक १.	३११३६
लोहल १. २. ३.	५११४७
लोहशृङ्खल १.	३११८५
लोहसंश्लेषक १.	३११३०
लोहाख्य ३.	३११८०
" १.	३१११०७
लोहाभिसार १.	३११२००
लोहित १. २.	३१११२६
" १.	४११४३
" ३.	४११०५
" १.	५३१११
लोहितक ३.	३३१३९

शब्दानुक्रमणिका

लोहितचन्दन ३.	३८१११६
लोहिता २.	१२१३०
लोहिताक्षक १.	४१११५
लोहिताङ्ग १.	३११३१
लोहिताहि १.	४१११२
लोहिनीक ३.	५११४७
लोह्य १.	३१११७
लोह्य ३.	३१२२६
(लोभ्य)	
लोह ३.	३१२३३
व	
व ४.	८१११५
वंश १.	३३१११
" १.	३३१२१४
" १.	३३१२२६
" १.	३१११२५
" १.	४११४९
" १.	४११६६
" १.	६११५२
वंशक ३.	३८११०७
वंशज १.	४११५०
वंशपत्र ३.	३२११४
वंशरोचना २.	३८१९०
वंशवर्ण १.	३८१४३
वंशिक १.	३११६१
" १.	३११२३
" ३.	३८११०७
वंशिका २.	३१११२५
वंश १-	४११५०
वंश्या २.	३८१५०
वकुल १.	३३१२६
वक्तव्य १. २. ३.	८१११५
वचत् १. २. ३.	५११४५
वचन ३.	४११८६
वचनपट्ट १.	३१११४३
वक्र १.	२११३६
" १.	४११९१
" १. २. ३.	५१११२३
वक्रकील १.	३११८५
वक्रदंष्ट्र १.	३११५

[ वञ्चक

वक्रपद ३.	४३१११९
वक्राख्य ३.	३१२३१
वक्राङ्ग १.	२३१३६
वक्रोष्ठक १. २. ३.	३१२८३
वचरक्षद १.	३१११५३
वचस् ३.	४११६८
वचसिज १.	४११६८
वङ्कित १.	४१११५५
वङ्कण १.	४११५९
वङ्ग १ ब.	३११३१
" ३.	३१२३१
वङ्गजीवन २.	३१२२४
वङ्गसेनक १.	३३११५६
वचन ३.	२११२१
" ३.	२११३४
वचनेस्थित १. २. ३.	
वचस् ३.	२११२१
वचा २.	३३११९७
वचाच्छद १.	३३११२१
वज्र १. ३.	१२११३
" १. ३.	२३१३६
" १. ३.	३३१२०२
" १. ३.	३३११४६
" १. ३.	६११६८
" १. ३.	८११३
वज्रदक्षिण १.	१२१७
वज्रधारण ३.	३३१२२
वज्रनिषेध १.	२३१३६
वज्रपाणि १.	१२१५
वज्रपुष्प ३.	३८१४०
वज्रा २.	३३१९७
वज्रांशुक ३.	४३१११९
वज्राभिषवण ३.	३३११४७
वज्रासन ३.	३३१२१८
वज्रिन् १.	१२११
वज्री २.	३३१९८
वञ्चक १. २. ३.	५११२४



[ वक्षक ]

वक्षक १. २. ३.	७५१७४
वक्षति १.	१२११८
वक्षथ १.	७५१६४
वक्षन ३.	५२१३५
वक्षुल १.	२३१११
" १.	२३१२६
" १.	३३१३१
" १.	३३१३०
" १.	३३१३६
वक्षुला २.	३३१३५
वट १.	३३१२७
" १.	३३१५७
" १. २. ३.	३३१३०
" १. २. ३.	८११३७
वटक ३.	५११४८
वटाश्रय १.	१२१५६
वटी २.	३३१३०
" २.	८११३७
वटु १. २. ३.	५११३
वटुकृति २.	३३१९
वडबा २.	३३१७०७
" २.	४११२६
" २.	७२१२२
वडबामुख ३.	४१११
" १.	८११५५
वणिग्गृह ३.	४१३३४
वणिज् १.	३३८७२
यणिजा २.	३३८३
वणिज्य ३. २.	८११३२
वणिज्या २.	३३८३
वण्ट १.	५२१७
वण्टफ १.	३३८३०
वतंस १.	४३११५४
" १.	८११५९
वत्स १.	२११९१
" १.	३३३७३
" १.	३३४५१
" १. २. ३.	५११२
" १. २. ३.	६५७३
वत्सकामा २.	३३४४७
वत्सतर १.	३३४५४

वैजयन्तीकोषः

वत्सनाभ १.	१११२४
वत्सर १.	२११९०
वत्सरान्ता ३.	२११७७
वत्सल १. २. ३.	५१११८
वत्सला २.	३३१४७
वत्सादनी ३.	३३१३२
वत्सीय १. २. ३.	३३१२८
वद १. २. ३.	५११४५
वदन ३.	४११८६
वदान्य १. २. ३.	७११२६
वदाल १.	४११४३
वदावद १. २. ३.	५११४५
वध १.	३३७२११
" १. २. ३.	६५७७
वधरत १. २. ३.	३३१११
वधस्थान ३.	३३१३७
वधा २.	३३११४९
वधिर. १. २. ३.	५११३३
वधू २.	४११४
" २.	४११७
" २.	४१३५
" २.	४१३६
" २.	४१३६
वधूटी २.	४११९
वधोद्यत १. २. ३.	
वन ३.	३३११
" ३.	४२१२
" ३.	६३३१
वनकोद्रव १.	३३८५५
वनगव १.	३३४३३
वनच्छाग १.	३३४६३
वनज १.	२३३४१
" ३.	४२३६
वनतक्तिका २.	३३३३०
वनद्रुम १.	३३८१०८
वनन १.	३३४११
वनप्रिय १.	२३३२७
वनमाय १.	३३८१०८
वनमालिन् १.	१११२५
वनमुद्ग १.	३३८३८

[ वमति ]

वनस्पति १.	३३३६
" १.	८११४२
वनायुज १.	३३८८५
वनालु १.	३३३१५०
वनाश १.	३३८५२
वनिता २.	४११४
" २.	७२१२५
वनी २.	३३३१
वनीपक १. २. ३.	
	५११६०
वनेवासिन् १.	३३३१२४
वनोद्भवा २.	३३३१८४
वनौकस् १.	३३४४०
वन्दन ३.	३३३३९
वन्दनमाला २.	३३३५९
वन्दा २.	३३३८४
वन्दाक १.	३३३८४
वन्दार १. २. ३.	५११४३
वन्दिन् १.	३३५७८
" १.	३३५८१
" १.	३३३३०
वन्दीक १.	१२१७
वन्ध्य १. २. ३.	३३३८
वन्ध्या २.	३३४४७
वन्थ १.	३३३३३
" ३.	४२३६
वन्था २.	३३३१६१
" २.	५१११४
वपन ३.	३३३४
" ३.	३३३२६
वपनी २.	४३३२५
वपा २.	४११२
" २.	६२३३३
वपुस् ३.	६३३३०
" ३.	८३३१७
वप्तु १.	४११२९
वप्र १. ३.	३३२७
" १. ३.	३३८२६
" १. ३.	४३३१३
" १. ३.	६५७९
वमति १.	८१११०

[ वमथु ]

वमथु १.	३३७८२
" १.	४११२६
" १.	८११३३
वमि १.	१२११८
" २.	४११२६
वम्र १. २. ३.	४१३८
वयस् ३.	४१५३
" ३.	४१५३
" ३.	६३३३०
वयस्य १. २. ३.	३३७४३
वयस्या २.	३३३११२
" २.	४११२५
वयस्स्थ १. २. ३.	५११३
वयस्स्था २.	७५७८
वर १.	२३३१८
" ३.	३३१५४
" ३.	३३३५४
" १.	३३३१५२
" ३.	३३३१९९
" १.	३३८११०
" ३.	३३८११७
" १.	३३८१२७
" ३.	४११११
" १. २. ३.	५११६४
" १. २. ३.	६५७२
वरक १.	३३८३८
" १.	३३८५४
" १.	४३३१२७
वरट १. २.	८११२६
वरटा २.	२३३८
" २.	२३३४६
वरण ३.	२११६३
" १.	३३३४१
" १.	४३३१४
वरण्ड १.	४३३६५
" १.	४११२५
वरत्रा २.	३३७८४
" २.	३३१४४
वरनिमन्त्रण ३.	३३३५६
वरप्रदा २.	३३३५३
वरयात्रा २.	३३३५६

शब्दानुक्रमणिका

वरयितृ १.	४१३७
वररुचि १.	३३३५८
वरला २.	२३३८
वरवर्णिनी २.	८२३३
वरवाहन १ द्वि.	१३३५
वरा २.	३३३०५
" २.	३३३७९
" २.	३३३२३
" २.	३३३२३
वराङ्ग ३.	३३३०४
" ३.	७३२९
वराङ्गना २.	३३३२४
वराङ्गा २.	३३४५
वराट १.	३३३३०
वराटक १.	४११५७
" १.	४२१४५
वराणक १.	३३५५०
" १.	३३३५९
वराधि १.	३३३३९
वरान्तक १.	१३३६
वराभ १.	३३३६१
वराम्ल १.	३३३३३
वरारोहा २.	३३३१८४
" २.	३३३१९९
" २.	४१३१२
वरार्गल १.	३३३७९
वराल १.	५३३१४
वरालक ३.	३३८१०३
वराला २.	२३३८
वराश्रि १.	५३३२८
वरासि २.	४३३२६
वराह १.	३३३५
वराहकन्द १.	३३३३०
वराहकर्णक १.	३३३६७
वराहद्वीप ३.	३३३१४
" ३.	३३३१८
वरिवसित १. २. ३.	
	५११०५
वरिवस्या २.	३३३३८
वरिष्ठ १.	२३३३५
" ३.	३३३२५

[ वर्णिनी ]

वरिष्ठ १. २. ३.	७३२५
वरीयस् १. २. ३.	
	७३२६
वरुट १.	३३५५५
वरुण १.	१२३४५
वरुणकाष्ठिका २.	
	३३३०८
वरुणकृच्छुक ३.	३३३१४१
वरुणग्रह १.	४३३३४
वरुणप्रिया २.	१२३४६
वरुणावास १.	४२३११
वरुथ १.	३३३३२
वरुथिनी २.	३३७५५
वरेणुक १.	३३३३१
वरेण्य १. २. ३.	५११६३
वरेन्दी २.	३३३२१
" २.	३३३३०
वरोत्कट १.	३३३४
वरोत्पल ३.	४२३३५
वर्ग १.	५११४
" १.	५१३६
वर्चस् ३.	६३३३१
वर्चस्क १.	४१११९
वर्जन ३.	५२३४०
" ३.	७३३२९
वर्ण १. ३.	२३३२१
" १.	३३३२
" १.	४३३५६
" १. २. ३.	६५७०
वर्णक ३.	३३३५६
" ३.	४३३४७
" १. २. ३.	७३३७९
वर्णतर्णक १. २. ३.	
	८१३२२
वर्णन ३.	५२३२९
वर्णा २.	३३३४९
वर्णि १.	८१११०
वर्णित १. २. ३.	
	५१३०६
वर्णिन् १.	३३३३७
वर्णिनी २.	३३३२१२



वर्णिलिङ्गिन् ]	वैजयन्तीकोषः	[ वशीकार	वश्य ]	शब्दानुक्रमणिका	[ वातमृग
वर्णिलिङ्गिन् १. २. ३.	वर्षमुख १. २।१।८१	वलीमुख १. ३।१।४०	वश्य १. २. ३. ५।१।३२	वस्त्रान्त १. ४।३।३१	वाच्य १. २. ३. ८।१।१५
वर्ण्य ३. ३।८।११६	वर्षवर १. ३।१।२३	" ३. ३।८।१४१	वषट् ४. ८।८।३	वस्न १. ३।८।७०	वाज १. २।३।४९
वर्तक ३. २।३।४०	वर्षा २ ब. २।१।८९	वल्क ३. ३।३।१४	वसति २. ७।२।२३	" ३. ३।८।१२२	" १. ३।७।१८५
" ३. ३।३।२०१	" २. ३।३।११७	वल्कल १. ३. ३।३।१३	वसन ३. ४।३।११६	वस्वौकसारा २. १।२।५९	" १. ४।३।७६
" १. ७।१।६४	वर्षाभी १. ४।६।१८	वल्गन ३. ३।७।१२२	वसन्त १. २।१।८७	वह १. १।२।४८	वाजिदन्तक १. ३।३।१०१
वर्तन ३. २।४।२२	वर्षाभू १. २. ७।५।७७	वल्गा २. ३।७।११४	वसन्तघोष १. २।३।२७	" १. ६।१।५३	वाजिन् १. ६।१।५५
" ३. ३।७।१११	वर्षाभूवी २. ३।३।१४५	वल्गित १. २. ३. ३।७।११८	वसा २. ४।४।११४	वहन ३. ३।७।१२४	वाजिन ३. ३।६।९८
" ३. ३।८।१	वर्षामिद १. २।३।३७	" १. २. ३. ३।७।११८	वसिक १. २. ३. ३।३।१३४	वहा २. ४।२।२३	वाजिशाला २. ४।३।२१
" ३. ५।२।४१	वर्षायस् १. २. ३. ५।४।४	" १. २. ३. ३।७।१२२	वसित ३. ४।३।११६	वहि १. ६।१।५३	वाञ्छा २. ३।६।१७९
" १. २. ३. ५।४।४०	वर्षमन् १. ३. ६।५।८१	वल्गु ३. ४।४।९५	वसिष्ठ १. ३।६।१५५	वहिन ३. ३।७।१२४	वाञ्छित १. २. ३. ५।४।९६
वर्तनी २. ७।२।२१	वल् १. ६।१।५३	" १. २. ३. ६।४।१६	वसीर १. ३।८।७८	वहिनृ १. ३।४।५२	वाट १. ३।५।२१
वर्ति २. ४।३।१६१	वल्क्ष १. ४।४।६७	वल्मीक १. ३. ३।१।४८	वसु १ ब. १।३।८	वह्नि १. १।२।१४	" १. ३. ४।३।१४
" २. ४।३।१६१	वल्ज १. ५।३।४०	वल्की २. ३।९।११६	" १. ३।१।५४	वह्निक १. ५।३।८	" १. २. ३. ८।९।३७
वर्तिष्णु १. २. ३. ५।४।९०	" ३. ७।५।७८	वल्गभ १. २. ३. ५।४।७०	" ३. ३।२।३६	वह्निशिख ३. ३।८।९१	वाटक १. ३. ४।३।५
वर्तुल १. २. ३. ५।४।८२	वल्जा २. ३।८।६५	" १. २. ३. ७।४।२५	" १. ३।३।५	वह्निमुत १. ४।४।१०४	वाटधान १. ३।५।५३
वर्तुलान्न १. २।३।३०	" २. ३. ७।५।७८	वल्गरि २. ३।३।२०	" १. ३।३।१९४	वा ४. ८।८।६	" १. ३।५।१०१
वर्त्म ३. ४।४।९५	वल्न ३. ३।९।११	वल्गरीका २. ४।४।९९	" १. २. ३. ३।८।११	" ४. ८।८।५५	वाटिका २. ३।३।२१७
वर्त्मन् ३. ४।४।९५	" १. ५।३।५२	वल्गव १. ३।९।२८	" १. ३।८।३६	वाक्पति १. ५।४।४५	वाटी २. ३।३।४
वर्द्धी २. ३।९।४४	वल्ना २. २।४।२५	" १. २. ३. ४।३।९२	" ३. ३।८।७३	वाक्य ३. २।४।२१	" २. ३।३।२३०
(वर्द्धी)	वल्भी २. ४।३।३१	वल्गा २. ३।८।४८	" १. ६।५।७८	वाक्यट् ४. ८।८।३	" २. ८।९।३७
वर्धकि १. ३।९।३४	" २. ४।३।३९	वल्गार १. ३।५।५२	वसुदेव १. १।१।२६	वागीश १. २. ३. ५।४।४५	वाटवपुष्पी २. ३।३।१२७
वर्धकिहस्त १. ३।९।५६	वलय १. १।२।५१	वल्गी २. ३।३।७	वसुधा २. ३।१।२	वागुर १. ३।५।१७	वाटवमण्ड १. ४।३।७९
वर्धन ३. ४।३।१००	" १. ३।३।२५	वल्गीपद ३. ४।३।११९	वसुन १. ३।६।८३	वागुरा २. ३।९।३९	वाटया २. ३।३।२७
" १. २. ३. ५।४।४०	" १. ३।३।१९९	वल्गूर ३. ४।२।३	वसुन्धरा २. ३।१।२	वागुरिक १. ३।९।३८	वाटयाल १. ३।३।१२८
" ३. ७।३।२९	" ३. ४।३।१४४	" १. २. ३. ४।३।८९	वसुभट्ट १. ३।३।१९४	वागूजी २. ३।३।१०८	" १. ३।८।५४
वर्धनी २. ४।३।५७	वलयित १. २. ३. ५।४।९६	वश १. ३।३।८३	वसुमती २. ३।१।२	वागुद १. २।३।२८	वाडबेय १. ८।१।३९
वर्धमान १. ४।३।५९	वल्रिपु १. १।२।२	" १. ३।५।१९	वसुरेतस् १।२।१६	वागिन् १. २।३।२५	वाण ३. २।४।११
" १. ८।१।४४	वल्ज १. २।१।८७	" १. २. ३. ५।४।२८	वसुवह्निका २. ३।३।१०८	" १. २. ३. ५।४।४५	वाणि २. ३।९।८
वर्धिष्णु १. २. ३. ५।४।४०	वल्हाक १. २।२।१	" १. २. ३. ५।४।३२	वसुव्रत ३. ३।६।१४९	वाघत् १. ३।६।७८	वाणिज १. ३।८।७२
वर्धी २. ६।२।३४	" १. ३।३।७८	" १. २. ३. ६।५।७१	वस्त ३. ४।३।१७	वाच् २. १।१।१	वाणिज्य ३. ३।८।३
वर्मन् ३. ३।७।१५२	" १. ४।१।१२	" १. २. ३. ६।५।७१	(वस्न)	वाचंयम् १. ३।६।१५०	वाणिनी २. ७।२।२३
वर्मि १. ८।९।१०	" १. ४।१।१७	वशा २. ३।३।८६	वस्ति १. २. ४।३।१३१	वाचस्पति १. २।१।३३	वाणी २. १।१।९
वर्मित १. २. ३. ३।७।१४२	" १. ४।१।१७	" २. ३।४।४७	" १. २. ४।४।६६	वाचाट १. २. ३. ५।४।४६	वात १. १।२।४७
वर्य १. २. ३. ५।४।६३	वल्हाका २. ३।७।१९८	" २. ४।४।४	वस्तिशुण्डक ३. ३।६।२१७	वाचाल १. २. ३. ५।४।४६	वातगामिन् १. २।३।४
वर्या २. ४।३।७	वलि २. ६।२।३३	" २. ६।५।७१	वस्त्र ३. ४।३।१७	वाचाला २. २।३।२०	वातघ्न १. ३।३।६५
वर्ष १. ३. २।१।९१	वलिन् १. २. ३. ५।४।७	वशाकु १. २।३।३	वस्त्र ३. ४।३।११६	वाचिक ३. २।४।२५	वातपात १. २।२।६
" १. ३. २।२।७	वलिभ १. २. ३. ५।४।७	वशामख १. ३।५।२७	वस्त्रकोश ४।३।६३	" ३. २।४।३६	वातपोथ १. ३।३।२९
" १. ३. २ ब. ६।५।७९	वलिर् १. २. ३. ५।४।१३	वशिक १. २. ३. ५।४।८७	वस्त्रग्रन्थ १. ३. ४।३।१३०	" १. २. ३. ३।९।९९	वातप्रमी १. ३।४।१६
वर्षकारी २. ३।६।५२	वलीक ३. ४।३।३७	वशिन् १. ४।१।५४	वस्त्रचारणी २. ४।३।५३	वाचोयुक्तिपटु १. २. ३. ५।४।४५	" १. ८।१।३८
वर्षण ३. २।२।७	वलीनक १. ३।३।२२३	वशीकार १. ३।६।११७			वातमृग १. ३।४।१६



## [ वातल ]

वातल १. २. ३. ४।४।१४५
वातसख १. १।२।१७
वातसञ्चार १. ४।४।१२७
वातसारथि १. १।२।१७
वातसुत १. ३।१।७०
वातापिसूदन १. ३।६।१५२
वातायन ३. ४।३।५४
वातायु १. ३।४।१६
वाताहार १. २. ३. ३।६।१३१
वाति २. १।२।४८
वातिक १. ४।१।२५
वातिङ्गन १. ३।३।१०२
वातुल १. ३।८।४३
वातूल १. २. ३. ७।५।८०
वात्या २. २।१।५१
" २. ५।१।१४
वात्सक ३. ५।१।१०
वात्स्यायन १. ३।६।१५९
वादन ३. ३।९।११४
" ३. ३।९।१२१
" ३. ३।९।१३१
" ३. ३।९।१३६
वादर १. २. ३. ४।३।११७
वादित्र ३. ३।९।११४
" ३. ३।९।१३६
वादित्रलगुड १. ३।९।१३६
वाद्य ३. ३।९।११४
वाद्यनिर्घोष १. ३।९।१३६
वाद्यवादकसामग्री २. ३।९।१४०
वान १. २. ३. ३।३।१०
" ३. ३।९।८
" १. २. ३. ६।५।८०
वानक ३. ३।६।१४
वानदण्डक १. ३।९।८
वानप्रस्थ १. ३।३।१४३
" १. ३।६।१२४
" १. ८।१।४०

## वैजयन्तीकोषः

वानर १. ३।४।३९
" १. ८।६।७
वानवासिक १. ३।५।२०
वानस्पत्य १. ३।३।६
वानरी १. ३।३।३१
वान्ताशिन १. २. ३. ३।६।९
वान्ति २. ४।४।१२६
वापिम १. ३।६।६४
वापी २. ४।२।६
वाप्य ३. ३।८।९९
वाम १. १।१।२९
" १. १।२।५५
" १. २. ३. ६।४।१६
वामदेव १. १।१।४२
वामन १. १।१।१९
" १. १।२।८
" १. २. ३. ५।४।८१
वामलूर १. ३।१।४८
वामलोचना २. ४।४।५
वामा २. १।१।४८
" २. ४।४।५
वामी ३. ३।७।१०७
वायव्य १. २।१।९१
" १. २. ३. ३।६।१०१
वायस १. २।३।१६
" १. ८।६।६
वायसाली २. ३।३।२२६
वायसी २. ३।३।११२
" २. ३।३।१४९
वायु १. १।२।४७
वायुन १. १।१।२
( वायुन )
वायुवर्मन् ३. २।१।१
वायुसम्भवा २. ३।४।४४
वार २. ३. ४।२।३
वार १. ५।१।१
" १. ५।२।७
वारक ३. ३।७।५०
वारट १. ५।१।५१

## [ वार्ताहर ]

वारण १. १।२।७
" १. ३।७।६१
" १. ४।२।१०
वारणावत ३. ४।३।९
वारणासी २. ४।३।७
वारबुसा २. ३।३।१७३
वारसुख्या २. ४।४।४२
वारवाण १. ३. ८।५।२२
वारवाणि १. ८।१।४२
वारखी २. ४।४।२४
वाराणसी २. ४।३।७
वाराह ३. ३।१।१८
वाराही २. १।१।६४
" २. ३।३।२१०
वारि ३. ४।२।१
" २. ६।५।८२
वारिकूट १. ४।३।१५
वारिज ३. ३।८।११९
वारिधर १. २।२।१
वारिपर्णी २. ४।२।४६
वारिपिण्ड १. ४।१।४८
वारु १. ३।७।९०
" २. ६।२।३७
वारुणपाशक १. ४।१।५२
वारुणी २. १।१।५९
" २. ३।३।१०९
" २. ३।९।४६
वार्च ३. ३।३।१
वार्त ३. ४।४।१४२
" १. २. ३. ४।४।१४३
वार्ता २. २।४।३९
" २. ३।८।१
" २. १. ३. ६।५।२५
वार्ताकशाकट १. २. ३. ३।८।२१
वार्ताकशाकिन १. २. ३. ३।८।२१
वार्ताकी २. ३।३।१०२
" २. ३।३।१०४
वार्ताकु २. ३।३।१०२
वार्ताहर १. ३।९।६

## [ वार्तिक ]

वार्तिक ३. ३।६।५६
" १. ३।७।२९
वार्त्तिक ४. ७।३।३०
" ३. ८।९।१७
वार्त्तुष ३. ३।९।५
वार्त्तुषिक १. २. ३. ३।९।८
वार्त्तुषिन् १. २. ३. ३।९।८
वार्त्तुष्य ३. ३।९।५
वार्त्तुषिणस १. ३।४।८
( वाधनीणस )
वार्मण ३. ५।१।१३
वार्मिक १. ३।५।४०
वार्षी २. २।१।८९
वाल १. ३. ४।३।१६०
" १. ४।४।९८
" १. ६।१।५४
वालक ३. ७।३।३१
वालकूर्चा १. ४।४।१००
वालकेशी २. ३।३।२३०
वालधि १. ३।४।७४
वालनाटक १. ३।८।५४
वालपाशक १. ३।७।८१
वालपाश्या २. ५।३।१३६
वालमृग १. ३।४।२९
वालवायज १. ३।२।४०
वालवीज्य १. ३।४।६३
वालहस्त १. ३।४।७४
वालिका २. ४।३।१३५
वालिनी २. २।१।४२
वालुक ३. ३।८।९६
" ३. ४।१।२३
वालुका २ ब. ४।२।३३
" २. ७।२।२४
वालुकी २. ३।३।१६७
वालक १. २. ३. ४।३।११७
वालमीक १. ३।६।१५३
वालमीकि १. ३।६।१५३
वावदूक १. २. ३. ५।४।४५
वावाता २. ३।७।३२
वाशन ३. २।४।४

## शब्दानुक्रमणिका

वाशा २. ३।३।१०२
वाशित ३. २।४।४
वाशिता २. ७।२।२२
वाशी २. २।१।२०
वास १. ३।३।१९१
" १. ३।७।१८
वासक १. ३।३।१०१
वासतेयी २. २।१।५७
वासन १. ४।३।४५
" ३. ४।३।१६७
" ३. ५।४।४९
वासना २. ४।३।१५८
वासनी २. ३।३।१६८
वासनीयक ३. ३।८।११६
वासन्त १. ३।३।६१
" १. ३।८।३७
वासन्ती २. ३।३।१८२
" २. ३।३।१८७
वासयोग १. ४।३।१०७
वासर १. ३. २।१।५५
" १. ७।१।७२
वासव १. १।२।१
" १. ३।६।१०८
वासस् ३. ४।३।११६
" १. ८।६।१६
वासगार ३. ४।३।२०
वासिक ३. ४।३।४१
वासिष्ठ ३. ४।४।१०६
वासी २. ३।९।३६
वासुकि १. ४।१।३
वासुदेव १. १।१।१२
" १. ८।१।३९
वासू २. ३।९।१०७
वास्तु १. ३. ४।३।१०
" १. ३. ६।५।८०
वास्तुक १. ३।३।१५४
वास्तुकशाकट १. २. ३. ३।८।२१
वास्तुकशाकिन १. २. ३. ३।८।२१
वास्तुमध्य ३. ४।३।१०

## [ विकराल ]

वास्तोष्पति १. १।२।२
वास्त्र १. २. ३. ३।७।१२९
वाह १. ३।४।५२
" १. ३।४।६५
" १. ५।१।५६
" १. ५।१।५८
" १. ५।१।५८
वाहन ३. ३।७।१२३
वाहनी २. ४।३।१७
वाहवारण १. ३।४।३३
वाहस १. ४।१।१९
" १. ७।१।६५
वाहि १. ८।९।१०
वाहिक १. ५।१।५३
वाहित १. ३।७।८७
" ३. ५।१।६४
वाहित्य ३. ३।७।७३
वाहिनी २. ३।७।५५
" २. ३।७।५८
" २. ४।२।२३
वाहिनीपति १. २. ३. ३।७।१४१
वाहीक १ ब. ३।१।२७
वाह्य १. ३।४।५२
" ३. ३।७।१२३
वि १. ३।२।२
" १. ८।१।६०
" ४. ८।७।६
विश १. २. ३. ५।१।२२
विशति २. ५।१।२६
विशतितम १. २. ३. ५।१।२२
विशतिभुज १. १।२।४२
विकङ्कत १. ३।३।३८
विकच १ ब. १।२।३७
" १. २. ३. ३।३।९
विकट १. २. ३. ५।४।२६
" १. २. ३. ७।४।२६
विकटा २. ३।७।४७
विकराल १. ३।४।७



विकराल ]

विकराल १. २. ३. ५४८२
विकरालिन् १. ५३१९
विकर्ण १. ३१७१८२
विकर्तन १. २११११
विकर्मन् ३. ३६११७
विकल १. २. ३. ५४८६
विकला २. ३६१५०
विकलाङ्ग १. २. ३. ५४१११
विकल्पना २. २४१४०
विकसा २. ३३१३५
विकार १. ५२२२२
" १. ७१६६
विकालक १. २११६५
विकिर १. २३३३
" १. ४२१८
" १. ७१७०
विकिष्कु १. ३११५६
विकुण्ठना २. ३६१७५
विकुर्वाण १. २. ३. ५४३३
विकृत १. २. ३. ३१९७८
" ३. ३१९५५
" १. २. ३. ४११४४
" १. २. ३. ७४२५
विक्र १. ३१६६
विक्रम १. ५२११६
" १. ५२११७
विक्रय १. ३१८६९
विक्रयिक १. २. ३. ३८६८
विक्रान्त १. २. ३. ३१७१४७
" ३. ३१९४८
विक्रायिक १. २. ३. ३८६८
विक्रेतु १. २. ३. ३८६८
विक्रय १. २. ३. ३८६९
विकलव १. २. ३. ५४१६७

वैजयन्तीकोषः

विद्युभा २. २११२३
विद्याभ १. ३१७७४
विगण्डीर ३. ३३१५१
विगत १. २. ३. ७४२४
विगतनासिक १. २. ३. ५४१२
विगता २. ३६१४८
विगन्धिका २. ३१२१२
विगन्धिन ३. ४२३६
विगम १. ५२२२७
विगर्वा २. २४२२८
विगीत १. २. ३. ३६१११
विग्रक १. ३३१८४
विग्र १. २. ३. ५४१२
विग्रह १. ३१७६
" १. ५२३३
" १. ७१६८
विघन १. ३११०२
विघस १. ३६६७
विघसासिन् १. ३६६१
विघूणिका २. ४१९१
विघ्न १. ५२३४
विघ्नेश १. १११५३
विचकिल १. ३३१७८
विचक्षण १. ३६२३४
विचक्षणा २. ३८१७७
विचयन ३. ५२३२
विचर्चिका २. ४११२३
विचारिका २. ३१३७
विचारोक्ति २. २८२८
विचिकित्सा २. ३६१७७
विचुल १. ३३१५०
विचोलक १. १२१४३
विच्छिन्ति २. ३१९३
विच्युत १. २. ३. ५४१०२
विजन १. २. ३. ५४११९
विजन्मन् १. ३१५०४
( द्विजन्मन् )
विजय १. ३११५९
" १. ३१२०९

[ विताली

विजयच्छन्द १. ४३१३९
विजविल १. २. ३. ५३१४
विजाता २. ४११७
विजाति २. ३१२६
विजिज्ञासा २. ४६१७५
विज्ञ १. २. ३. ५४१९
वित १. २१७०
" १. ४१३९
वितका २. ४३३८
वितकान्ता २. ३३२१२
वितङ्क १. ३३१७२
" १. ४२१५४
वितप १. ३३१६
" १. ३८१७३
" १. ७१६२
वितपिन् १. ३३३४
विटाटिका २. ३३१४६
" २. ४३३८
विटाश्रय १. ४३२७
विट्खदिर १. ३३६४
विट्चार १. ३१७१
विट्पति १. १११४
विड १. ३८१२४
विडङ्ग १. ३. ३८१९७
" १. २. ३. ८१३८
विडु ३. ४११०८
वितंस १. ३१९४१
वितत ३. ३१११५
" ३. ३१११६
वितथ १. २. ३. २११७
वितरण ३. ३६११८
वितर्क १. ३६१७६
वितर्दिका २. ४३३६
वितस्ति २. ३११५३
" २. ४१८०
" १. २. ८१२७
वितान ३. ३११९०
" १. ३. ४३१२३
" १. २. ७१७६
विताली २. ३११२४

वितुन्नक ]

वितुन्नक ३. ३२१४२
वित्त ३. ३८१७३
" १. २. ३. ६१७४
वित्तेश १. १२१५७
विदग्ध १. ५३१९८
" १. २. ३. ५४२०
विदण्ड १. ४३१५०
विदर १. ५२१४१
विदल १. २. ३. ३३१४४
विदा २. ३६१६३
विदारक १. ४२३१
विदारण ३. ८३१२
विदारी २. ३३२३
" २. ३३१९५
विदित १. २. ३. ५४१०१
" १. २. ३. ७४२३
विदिश २. २१३३
विदुर १. २. ३. ५४४३
विदुल १. ३३३३
( अम्बुप्रिय )
विदूषक १. ३१६९
विदूषिका २. ३६५३
विदेह १. ३. ३१३०
विद्ध १. २. ३. ५४१९७
" १. २. ३. ५४१११
" १. २. ३. ६४१७
विद्धकर्णी २. ३३१३१
विद्धायुध ३. ३१७७३
विद्या २. ३६२७
" २. ३६३०
विद्याधर १. १३१४
विद्युत् २. २२३३
" २. ३२१२
विद्रधि १. २. ४११३७
विद्रव १. ३१२११
विद्रुत १. २. ३. ४३१५५
विद्रुम १. ३२३९
" १. ७१६५
विद्रुमलता २. ३८१५५
विद्रुस् १. ३६२३४

शब्दानुक्रमणिका

विद्वेष १. ३६१८४
विधवा २. ४११४
विधा २. ३६३५
" २. ६२३४
विधातृ १. १११६
विधान ३. ७३३३
विधि १. १११९
" १. ३६३३
" १. ३६११३
" १. ३६१८९
" १. ५२२५
" १. ६१५५
विधु १. २११२४
" १. ६१५५
विधुत १. २. ३. ५४१०१
" १. २. ३. ७४२३
विधुन्तु १. २१३६
विधुर १. १२१४१
" १. २. ३. ७४२७
विधुवन ३. ५२१४०
विधूनन ३. ५२१४०
विधेय १. २. ३. ५४२८
" १. २. ३. ५४३२
विनय १. ७१७०
विनयग्राहिन् १. ३१७६७
विना ४. ८१४३
विनायक १. ११३२
" १. १११५३
विनिमय १. ३८१७१
विनियोग १. ५२२५
विनीत १. २. ३. ७१७७
विनोद १. ३६१८७
विन्दु १. २. ३. ५४१४३
विन्ध्य १. ३२३३
विन्ध्यकूटक १. ३६१५१
विन्ध्यवासिन् १. २६१५८
विन्ध्यवासिनी २. १११६३
विन्न १. २. ३. ५४१९९
" १. २. ३. ६४१७

[ विप्रव

विपक्षक १. ३१७४२
विपक्षी २. ३१९१६
" २. ७२२४
विपण १. ३८६९
विपणि २. ४३३५
" २. ७२२४
विपत्ति २. ३६१९१
विपथ १. ३१५०
विपद् २. ३६१९१
" २. ३१७४
विपर्यय १. ५२३५
विपर्यास १. ५२३५
विपश्चित् १. ३६२३४
विपाक १. ३६१८९
" १. ७१६७
विपाकिन् १. २३३२७
विपादिका १. ४११२२
( विपाटिका )
विपाश २. ४२२७
विपाशा २. ४२२७
विपिन ३. ३३३१
विपुल १. २. ३. ५४१८०
विपुला २. ३१३२
विप्र १. ३६३५
विप्रकार १. ५२२२
विप्रकण्ड १. ३६६२
विप्रकृष्ट ३. ५४१४२
विप्रतिसार १. ३६१८५
विप्रप्रिय ३. ३८१३९
विप्रयाण ३. ३१७१०
विप्रयोग १. ५२३६
विप्रलम्भ १. ५२२०
विप्रलाप १. २१२९
" १. ८१४१
विप्रशेषित ३. ३६६७
विप्रशिका २. ४११११
विप्रिय ३. ३१७४७
" १. २. ३. ५४६९
विप्रु २. २२३८
विप्रुष १. २३३२
विल्लव १. ३६१९०



[ विभुक्त ]

विभुक्त १.	३१५२०
विभुध १.	७११६६
विभण्ड १.	३१५२६
विभञ्जन ३.	५२१३९
विभाकर १.	२१११४
विभाग १.	५२१७
विभाजन ३.	३१३१५१
विभात ४.	२११६८
विभाव १.	३१५८०
विभावनी २.	३१३१८५
विभावरी २.	२११६७
विभावसु १.	८११३९
विभाषण ३.	२११२४
विभीतक १. २. ३.	३१३१७५
विभीदक १.	३१३१७६
विभीषण १.	११२५
विभु १. २. ३.	६१५८१
विभृति २.	८१५३४
विभूषण ३.	५१३१३३
विभ्रम १.	३१२१९६
" १.	७११६९
विमनस १. २. ३.	५१४३४
विमल १.	३१२४१
" १. २. ३.	५१४६६
विमातृज १.	४१४३३
विमान १. ३.	७१५८१
वियत् ३.	२११११
वियद्गङ्गा २.	११३१३
वियम १.	५२१३०
वियात १. २. ३.	५१४१७
वियाम १.	५२१३०
वियुन १.	११२६
वियोग १.	५२१२६
विरजा २.	३१३१९२
विरत ३.	३१७२०२
विरति २.	५२१३६
विरल १. २. ३.	५१४१२५
विरह १.	५२१२६
विराग १.	३१६१६७

वैजयन्तीकोषः

विरागार्ह १. २. ३.	५१४५४
विराज् १.	३१७११
विराव १.	२१४३३
विरावृत्त ३.	३१८१७९
विरिञ्च १.	१११७
विरुक्तकोद्व १.	३१८५५
विरुक्तण ३.	२१४३३
विरूप १. २. ३.	५१४१२६
विरूपाक्ष १.	१११४२
विरोचन १.	८११४२
विरोध १.	३१६१८४
विरोधन ३.	५२१३०
विरोधिन् १.	३१७४२
विरोधोक्ति २.	२१४२९
विलक्ष १. २. ३.	५१४२९
विलम्बित ३.	३१९१२३
" १. २. ३.	८१४१२
विलम्भ १.	५२११९
विलाप १.	२१४२९
विलाव १.	५२१२९
विलास १.	३१९१३
विलिष्ट १. २. ३.	५१४८४
विलीन १. २. ३.	४१३१५
" १. २. ३.	७१४२३
विलेपी २.	४१३८०
विलेप्या २.	४१३८०
विलोमिका २.	३१३१११
विल्वगन्ध १.	३१३१२१
विविध १. ५	७११७१
विवरण ३.	२१४२६
विवर्ण १.	३१५२
" १. २. ३.	७१४२४
विवर्णता २.	३१९८१
विवश १. २. ३.	७१५२७
विवस्वत् १.	१११३
" १.	२१११२
विवाद १.	२१४२४
विवाह १.	३१६५४
विवाहाम्नि १.	११२१७
विविक्त १. २. ३.	५१४११९

[ विशुन्धलवण ]

विविक्त १. २. ३.	७१४२४
विचुत्तान् १.	२१३१३
विवेशिका २.	४१३१४
विवेष्टन ३.	५२१४२
विश १.	३१५२
" १.	३१८११
" २. ३.	४१४११९
" १. २.	८१५३९
विशङ्कत १. २. ३.	५१४८२
विशद १.	५१३१०
" १. २. ३.	५१४१३४
" १. २. ३.	७१४२५
विशय १.	३१६१७७
विशर १.	३१७२११
विशल्या २.	३१३१३१
विशस् १.	३१७२११
विशसन १.	३१७१५८
" ३.	३१७२१४
विशास्त्र १.	१११५७
" १.	७१५८३
विशाखा २.	२११४०
" २.	८१५५७
विशाखिका २.	३१६१२३
विशारद १. २. ३.	८१४१२
विशाल १.	४१३१२९
" १. २. ३.	५१४८०
" १. २. ३.	५१४८२
विशालता २.	५२१५
विशालत्वच् १.	३१३१७
विशाला २.	३१३१०३
" २.	३१३१७२
विशिख १.	३१७१७९
" १. २. ३.	७१५८१
विशिखा २.	४१३१६
विशिखाश्रय १.	३१७१७८
विशीर्णपाद् १.	११२३५
विशीर्णाङ्गी २.	३१६५१
विशुन्धलवण २.	३१८१२१

[ विशेष ]

विशेष १.	३१६२०५
विशेषक १. ३.	४१३१४८
" १. ३.	८१९३०
विशेषभाग १.	३१७७६
विशोक १.	२१३२९
विश्राणन ३.	३१६११८
विश्लिष्ट १. २. ३.	५१४१२५
विश्लेष १.	५२१२६
विश्व १. २. ३.	११३८
" १. २. ३.	५१४८६
" १. २. ३.	६१५७८
विश्वकद्रु १.	३१३३९
विश्वकर्मन् १.	११३६
" १.	८११४१
विश्वगोप्त् १.	८११३९
विश्वभृत् २. ३.	२११२१
विश्वभेषज ३.	३१८७५
विश्वम्भर १.	८१५२२
विश्वरुचि २.	११२३०
विश्वरूप १.	११११५
विश्वरेतस् १.	१११८
विश्वविस्ता २.	२११७५
विश्वस्ता २.	४१४१४
विश्वहयंक १.	३१६८३
( विश्वहयंत )	
विश्वा २.	३११३
विश्वात्मन् १.	१११६
" १.	७११६७
विश्वावसु १. २.	८१५२३
विष ३.	३१२३३
" ३.	३१२४४
" ३.	४१२१
विषघ्न १.	३१३५५
विषघ्नी २.	३१३१००
" २.	३१३१२७
" २.	३१३१३२
विषजित् ३.	३१८१६६
विषधर १.	४११६
विषपुष्पक १.	३१३५०
विषम १.	३१३२१६

शब्दानुक्रमणिका

विषमच्छद १.	३१३४७
विषमस्पृहा २.	३१६१७९
विषमालुध १.	१११२८
विषमोज्जत १. २. ३.	५१४८३
विषय १.	३१७४८
" १.	५१३२
" १.	७११२२
विषयग्राम १.	५१११७
विषयिन् १. २. ३.	७१५७५
विषवृत्त १.	८१६१९
विषवैद्य १.	४११२५
विषा २.	३१८९०
विषाण १. २. ३.	७१५८२
विषाणिका २.	४१३२२
विषाणिन् १.	३१४५२
" १. २. ३.	७१५७७
" १.	८१६१४
विषाणी २.	३१३११६
विषाद् १.	३१६१९१
विषुव १. ३.	२११९०
विषुवत् १. ३.	२११९०
विषुचीन १. २. ३.	५१४९१
विष्कम्भ १.	७१६७
विष्किर १.	२१३३८
" १.	७१६६
विष्ट ३.	३१६२०६
विष्टर १.	३१३४
" ३.	४१३१६४
" १.	७१६९
विष्टरश्रवस् १.	११११०
विष्टि १.	३१५५५
विष्टा २.	३१३१००
" २.	४१४११९
विष्टाख्य ३.	३१३३६
विष्टिका २.	३१८८१
विष्णु १.	११११०
" १.	१११२०
विष्णुकान्ता २.	३१३१२३

[ विस्मय ]

विष्णुकान्ता २.	३१३१३४
विष्णुगुप्त १.	३१६१५९
विष्णुपद ३.	२१११
विष्णुपदी २.	४१२२४
विष्णुरथ १.	११३३८
विष्णुशक्ति २.	११३१६
विष्णार १.	२१४९
विष्णुलिङ्गिनी २.	११२३०
विष्य १. २. ३.	५१४७१
विष्वक् ४.	८१८३
विष्वक्सेन १.	१११११
विष्वक्सेना २.	३१३६६
विष्वच् १. २. ३.	५१४९१
विष्वदीचीन १. २. ३.	५१४९३
विष्वद्यच् १. २. ३.	५१४९३
विसंवाद १.	५२१२०
विसर १.	५१११
" १.	५१३२६
विसर्ग १.	११२८९
" १.	३१६३७
" १.	७११७०
विसर्जन ३.	३१६११८
विसर्जिका २.	२११९१
विसार १.	४११४२
विसृत् १. २. ३.	५१४११०
" १. २. ३.	७१४२६
विस्त १.	५११५१
विस्तर १.	५२१३
विस्तार १.	३१३१६
" १.	५२१३
विस्तीर्ण १. २. ३.	५१४८०
विस्तीर्णजालु २.	३१६१४७
विस्त्रुत १. २. ३.	५१४११०
विस्फोट १.	४१४१२३
विस्मय १.	३१६१८१
" १.	३१९७६
" १.	७१६५



[ विस्मरण ]

विस्मरण ३.	३१६१७७
विस्मृत १. २. ३.	५४११०९
विस्म ३.	४४११०६
" ३.	४४११०८
विस्मसजा २.	४४११४
विस्मव्य १. २. ३.	५४११२
विस्मम्भ १.	७११६६
विहग १.	२३३२
विहगाधिप १.	१११३८
विहङ्ग १.	२३३२
विहङ्गम १.	२३३२
विहङ्गिका २.	३११६
विहनन ३.	३१११०
विहसित ३.	३११८३
विहस्त १. २. ३.	५४१६८
विहान १. ३.	२११६८
विहापन ३.	३१११९८
विहायस् १. ३.	७११८०
विहायस ३.	२१११
विहार १.	४१३२८
" १.	७११६८
विहारिणी २.	३११६२
विहास १. २. ३.	७११८३
विहल १. २. ३.	५४१६७
वीकाश १.	७११६७
वीक्षा २.	३११८१
वीचि २.	४१११४
" २.	६१२३५
वीज्य १.	३१८३१
" १.	३१८३२८
वीणा २.	३११११६
वीणावंशशलाका २.	३१११२०
वीणावाद १.	३११७०
वीत ३.	३१७८९
( पीत )	
" १. २. ३.	६११७५
वीतक ३.	४१३११०
वीतराग १.	१११३५
वीतिहोत्र १.	११११४

वेजयन्तीकोषः

वीथि २.	३१११००
वीथिका २.	५१२४६
वीथी २.	२११४४
" २.	६१२३५
वीथ १. २. ३.	५४१६६
वीनाह १.	३१३२२७
वीर १. २. ३.	३१७१४७
" १.	३१९७५
" १. २. ३.	६११८२
वीरजयन्तिका २.	
वीरण ३.	३१७२०८
वीरतृण ३.	३१३२३१
वीरपत्नी २.	४४११३
वीरपाण ३.	३१७२०२
वीरभद्र १.	१११५३
वीरभार्या २.	४४११३
वीरमातृ २.	४४११३
वीरल १.	४११५५
वीरविप्लावक १.	
वीरवृक्ष १.	३१६७२
वीरशङ्कु १.	८१११८
वीरशाक १.	३१७१८०
वीरसू २.	४४११३
वीरस्कन्ध १.	३४१९
वीरस्नाना २.	४१३१११
वीरहन् १.	३१६७१
वीराशंसन ३.	३१७२०६
वीरासन ३.	३१६२२७
वीरधू २.	६१२३५
वीरोज्ज १.	३१६७०
वीरोपजीवक १.	३१६७१
वीर्य ३.	३१७२१०
" ३.	४४११११
" ३.	६१३३२
वीर्यकर १.	४४१११०
वीलक १.	३१५२८
वीवध १.	७११७१
वृक १ ब.	३११४०
" १.	३१४८

[ वृद्ध ]

वृकधूप १.	३१८११०
" १.	३१८११२
वृकधूर्तक १.	३१४७
" १.	३१४३८
वृकधोरण १.	३१४३२
वृकवाला २.	४१३४४
वृकस्थली २.	४१३९
वृकाम्लिका २.	३१३३४
वृक्कण १. २. ३.	५४११०२
वृक्कवहिसू १.	३१३७८
वृक्क १.	४४१११२
वृक्ष १.	३१३४
" १.	८११११
वृक्षक १.	३१३८३
वृक्षगृह १.	८१११८
वृक्षमूलिन् १. २. ३.	
वृक्षरुहा २.	३१३८५
वृक्षदानी २.	३१३८५
वृक्षाम्ल ३.	३१८१३२
वृक्षोत्पल १.	३१३७२
वृजिन १. २. ३.	५४११२३
" १.	७११८४
वृत्तिद्रुम १.	४१३१४
वृत्तिमार्ग १.	३११५१
वृत्त ३.	३१६११५
" १. २. ३.	५४१८३
" १. २. ३.	६११७६
वृत्ताङ्गी २.	३१३६७
वृत्तान्त १.	२१४३९
" १.	७११७१
वृत्ति २.	३१८११
" २.	३१८७
" २.	३१९१०२
" २.	६१३३६
वृत्र १.	६११५६
वृत्रारि १.	११२११
वृथा ४.	८१७२८
वृथाजात १.	३१६७७
वृद्ध ३.	३१८९६
" १. २. ३.	५४१११६

[ वृद्ध ]

वृद्ध १. २. ३.	६११८०
वृद्धकाक १.	२१३१७
वृद्धगोनस १.	४१११३
वृद्धनाभि १. २. ३.	
वृद्धप्रपितामह १. ४१३०	४४११४६
वृद्धप्रमातामह १. ४१३०	
वृद्धवयस् १. २. ३.	
वृद्धश्रवस् १.	११२११
वृद्धा २.	४४१२१
वृद्धि २.	३१८१५
" २.	३१८१५४
" २.	४४११३१
" २.	५१२३३
" २.	६१२३७
वृद्धोत्त १.	३१४१५५
वृद्धयाज्ञाव १. २. ३.	
वृन्त ३.	३१३२०
" १.	३१३१६८
" ३.	३१४१५१
" ३.	४१४६८
वृन्ततुम्बी २.	३१३१६८
( वृत्ततुम्बी )	
वृन्ता २.	३१३६६
वृश्चिक १.	३१३१४६
" १.	४११३२
" १. २.	४११३३
" १.	४११३३
वृश्चिकच्छदा २.	३१३१२७
वृश्चिकाली २.	३१३१२६
वृष ३.	४१३३६
" १.	४१३२
" १. २. ३.	६११७७
वृषण १.	४१४६३
वृषणश्च १.	११२१०
वृषणवसु १.	११२८
वृषध्वज १.	१११४२
वृषन् १.	११२११
" १.	६११५६

शब्दानुक्रमणिका

वृषपर्णी २.	३१३१४३
वृषपूतन १.	३१६१२२
वृषभ १.	३१२१५
" १.	३१४५२
वृषल १.	३१४५२
" ३.	३१८७६
" १.	३१९११
वृषलक्षणा २.	३१६१२
वृषली २.	७१२२४
वृषवाहन १.	१११४६
वृषसानु १.	८११४०
वृषस्थन्ती २.	४४१११
वृषा २.	३१३११३
" २.	३१३१७३
" २.	३१८१५४
वृषाकपायी २.	८१११३
वृषाकपि १.	८११४०
वृषाक्रान्ता २.	३१४५१
वृषाण १.	१११५२
वृषावाह १.	३१८१५७
वृष्णि १.	३१४६४
वृष्टि २.	२१२७
वृष्य १.	३१३२२५
" १.	३१८३५
वृष्यकन्द ३.	४१२४७
वृष्या २.	३१८१५४
वेग १.	११२१५५
" १.	६११५६
वेगसर १.	३१७१०८
वेगिन् १.	११२५०
वेङ्कट १.	३१२१५
वेङ्कर १.	३१६१६९
वेजन १.	३१६१०८
वेटी २.	४१२१५
वेण १.	३१६१८
" १.	३१६१८
वेणि २.	४१२३०
वेणिनी २.	४१४६
वेणी २.	३१३८६
" २.	३१४६५
" २.	६१२३६

[ वेन ]

वेणु १.	३१३२१४
" १.	६११५४
वेणुक १.	३१५१३
" ३.	३१७८२
वेणुका २.	३१९१२५
वेणुधमा १.	३१९७१
वेणु ३.	४१३२७
वेतन ३.	३१९५
वेतस १.	३१३३१
वेतस्वन् १. २. ३.	
वेताल १.	११३३८
वेतालासन ३.	३१६२२१
वेज १.	३१३१३३
वेत्रधर १.	३१७२४
वेत्रवती २.	४११२८
वेद १.	३१६२७
वेदगर्भ १.	३१६१
वेदन १. २. ३.	७११८३
वेदपठितृ १.	२१६२३
वेदयष्टि २.	३१६१२४
( देवयष्टि )	
वेदाङ्ग ३.	३१६२८
वेदि २.	३१६१०९
" २.	३१६११०
वेदिका २.	४१३३६
" २.	७१२२५
वेदितृ १. २. ३.	५४१४३
वेदिपर १ ब.	३१३३७
वेद्यास्तरण ३.	२१६९१
वेधक १.	३१८१२०
वेधनिका २.	३१९१८
वेधमुख्यक १.	३१३११७
वेधमुख्या २.	३१४३६
वेधस् १.	११११९
" १.	६११५७
वेधित १. २. ३.	५४११११
वेध्य ३.	३१७१९४
वेध्या २.	३१९१३५
वेन १.	३१५८४
" १.	३१५९७



वेन ]		वैजयन्तीकोषः	[ वैश्वदेवाग्नि
वेन १.	३।५।९९	येहत् २.	३।४।४७
वेपथु १.	३।९।८५	वै ४.	८।७।७
" १.	३।९।८९	" ४.	८।७।११
वेमन् १.	३।९।८	वैकच्य ३.	४।३।१२३
वेल १.	३।३।२५	" ३.	४।३।१५६
वेलज १.	५।३।३६	वैकरञ्ज १.	४।१।९
वेलव १.	३।५।२२	" १.	४।१।१०
( पेलव )		" १.	४।१।१६
वेला २.	४।२।१३	वैकुण्ठ १.	१।१।१२
" २.	४।२।३३	" १.	३।३।१२१
" २.	६।२।३६	" १.	७।१।७२
वेलान १.	५।३।३६	वैकृन्त १.	३।२।३५
वेष्ट ३.	३।८।९७	वैखानस १.	३।६।१३४
वेष्टन ३.	३।८।७९	वैखारक १.	५।३।३०
वेष्टित १. २. ३.	५।४।९५	वैघटिक १.	३।९।१५
" १. २. ३.	७।४।२३	वैचित्य ३.	३।६।२००
वेश १.	३।५।१८	वैजनन १.	४।४।१९
( उग्रवेश )		वैजयन्त १.	१।१।५५
" १.	४।३।३५	" १.	१।२।९
वेशनी २.	४।३।२४	" १.	१।२।९
वेशन्त १.	४।२।६	वैजयन्तिक १. २. ३.	३।७।१४५
वेशवार १.	४।३।८७	वैजयन्ती २.	३।३।९६
" १.	४।३।९०	" २.	८।२।९
वेशमन् ३.	४।३।१८	वैज्ञानिक १. २. ३.	५।४।१९
वेशमस्थूणा २.	४।३।३९	बेङ्गूर्य ३.	३।२।४०
वेश्य ३.	३।३।१८४	वैणव ३.	३।२।२१
वेश्या २.	४।४।२४	" १.	३।३।२२
वेश्यागृह ३.	४।३।३३	" १.	३।५।३८
वेश्याचार्य १.	३।९।७०	वैणविक १.	३।९।७१
वेश्याजनाश्रय १.	४।३।३५	वैणिक १.	३।९।७०
वेश्यापति १.	४।४।३९	" १.	५।३।५७
वेप १.	३।९।६८	वैतसिक १.	३।९।४०
" १.	४।३।१३२	वैतनिक १. २. ३.	३।९।५
वेष्ट १.	३।८।१०९	वैतालिक १.	३।५।८१
" ३.	६।३।३२	" १.	३।७।३०
वेष्टन ३.	३।६।१०५	वैदिक १.	३।६।८
" ३.	४।४।२३	वैदेह १.	३।५।८७
" ३.	७।३।३४	" १.	३।५।११६
वेष्टावार ३.	३।८।१२३	वैदेहक १.	३।५।१६
वेष्टित १. २. ३.	५।४।२६		
वैसर १.	३।७।१०८		

[ श्रीमानर ]	शब्दानुक्रमणिका	[ पृष्ठ ]
श्रीमानर १.	११११४	व्यवहार १. ८११४३
" ३.	२११४९	व्यवहित ३. ५११४२
श्रीमानरी २.	२११४८	व्यवाय १. ७११६५
व्यवधिकी २.	३१७३५	व्यष्ट ३. ३११२४
व्यवणव १.	३१६१०८	व्यसन ३. ७३३३२
व्यवणवी २.	११११६	व्यसनार्त १. २. ३. ५११६८
" २.	१११६५	व्याकरण ३. ३१६२८
व्यवणुत ३.	३१६१५	" ३. ८३१११
व्यवसारिण १.	४११४१	व्याकुल १. २. ३. ५११६८
व्यवहायस ३.	३१७१८८	व्याकृति २. ५१३३४
व्यवहासिक २.	३१७१७	व्याकोच १. २. ३. ३१३१९
व्यवहान १.	३१७१०२	व्याघात १. ३१३४८
व्यवपाट ४.	८१८३	व्याघ्र १. ३१३३
व्यवपट्ट ४.	८१८३	व्याघ्रक १. ३. ४३३४३
व्यवपट्ट ४.	८१८३	व्याघ्रनख ३. ३१८१९
व्यवसंक १. २. ३. ५१३२४		व्याघ्रपाद १. ३१३३८
व्यवक्त १. ५१३८		व्याघ्रपुच्छुक १. ३१३६५
" १. २. ३. ६१५७२		व्याघ्राट १. ३१३१९
व्यवज्ञा २. ३१६५०		व्याज १. ३१६१९५
व्यवजन ३. ४३३१५९		" १. ६११५४
व्यवज्ञक १. ३१९१८		व्यादीर्घस्थि १. ३१३११
व्यवज्ञन १. ३३३२२३		व्याध १. ३१३३८
" १. ३. ३६३३६		व्याधाम १. १३३३३
" १. २. ३. ३६३९३		व्याधि १. ४३३३८
" ३. ४३३८५		" १. ८६३८
" ३. ४३३१०३		व्याधित १. २. ३. ४३३१४४
" ३. ७३३३०		व्यापन १. ५३३३१
व्यतिकर १. ८११४१		व्यापलण्डिका २. ४३३८४
व्यतिहार १. ५३३३६		व्यापादन ३. ३१७२१५
व्यत्यय १. ५३३३५		व्याप्य १. ४३३३८
व्यत्यास १. ५३३३६		व्यप्व १. २१३२७
व्यथा २. ३१६१८७		व्याम १. ४३३८२
व्यध्व १. ३११५०		व्यायत १. २. ३. ७३३२४
व्यन्तर १. ४३३१९		व्यायाम १. ४३३८२
व्यय १. ३१७३४		" १. ७३३६८
व्यर्थ १. २. ३. ५३३१२९		व्यायोग १. ३१३१०१
व्यलीक ३. ५३३३५		व्याल १. ३१३३३
" १. २. ३. ७३३७९		" १. ४३३१४
व्यवच्छेद १. ३१७१९२		" १. २. ३. ६३३७३
व्यवधि १. १३३३३		" १. ३. ३१३३३
व्यवहार १. ३१८१५		" १. ३१३३३



## व्रतति ]

## वैजयन्तीकोषः

## [ शतभिषज्

व्रतति २.	३३३७	शकुन ३.	८३११६
व्रतती ३.	३३३७	शकुनि १.	२३३३
व्रतसङ्ग्रह १.	३३६८७	शकुन्त १.	२३३३
व्रतिन् १.	३३६७	" १.	२३३३२
" १.	३३७९०	" १.	७११७४
व्रश्चन १.	३३९३५	शकुन्ति १.	२३३३
व्राजिक ३.	३३६१४८	शकुलाक्ष १.	३३३२००
व्रात १.	३३५१	शकुलादनी २.	३३३१९७
" १.	३३५५९	" २.	३३८८६
" १.	५१११	शकुलार्भक १.	४११४५
व्रात्य १.	३३५५९	शकुलिन् १.	४११४१
" १.	३३५१०२	शकुत् ३.	४११११८
" १.	३३१११९	शक्ति २.	१११३६
व्रीड १. २.	८१९२७	" २.	३३६१६१
व्रीला १.	३३६१९४	" २.	३३७५
व्रीहि १ व.	३३३२३	" २.	६३३३८
" १.	३३८३१	शक्तिपाणि १.	१११५५
" १.	३३८३२	शक्र १.	६३१५७
" १.	३३८६३	शक्रवृत् १.	८३६१८
" १.	८१९५७	शक्राख्य १.	३३३७३
व्रीहिकङ्क १.	३३८४०	शक्ल १. २. ३.	५३४४४
व्रीहिन् १. २. ३.	५३४११९	शकरी २.	२३१२१
व्रीहिमत् १. २. ३.	५३४११९	" २.	७३२२५
व्रीहेय १. २. ३.	३३८१९	शङ्कर १.	१११३९
श		शङ्का २.	६३२३८
शंसा २.	२३३३५	शङ्किल १.	३३७८७
" २.	६३२४१	शङ्कु १.	१३२४१
शंस्य १.	१३२४४	" १.	२३३६
शक १.	३३३७४	" १.	३३७८५
" १.	३३५७४	" १.	३३७६७
" १.	६३५९१	" १.	३३७६७
शकट १.	३३३२०९	" १. ३.	८३१३०
" १. ३.	३३७१२५	शङ्कुकर्ण १.	८३१४४
शकटाविल १.	२३३१२	शङ्कुमूली २.	२३१७३
शकल १. ३.	४३४५६	शङ्कुला २.	३३३१७०
" ३.	७३३३४	शङ्कु १.	१३२६०
शकलज्योतिस् १.	४३११८	" १.	३३३४१
शकुटा २.	३३७७९	" १.	३३८१०१
शकुन १.	२३३३	" १. ३.	४३१५५

## शतभिषज्

## शब्दानुक्रमणिका

## [ शरि

शतभिषज् १.	३३३१८३	शब्द १. २. ३.	५३४४८
( शतभिषज् )		शम् ४.	८३८१७
शतमन्यु १.	१३२५	शम् १.	३३१७६
शतमान ३.	५३१४५	" १.	५३२२७
" ३.	५३१५०	शमथ १.	५३२२७
शतमुखी २.	१३१६०	शमन १.	१३२३५
शतमूर्धन् १.	३३१४८	" ३.	३३६९४
शतमूली २.	३३१४२	" १.	७३५८७
शतवीर्या ३३३२३३		शमल ३.	४३१११८
शतवेधिन १.	३३८१३३	" ३.	७३३३४
शतद्वार २.	२३२४	शमित १. २. ३.	
शताङ्ग १.	३३७१२४		५३११४
शतानन्द १.	१३१८	शमिता २.	४३३६८
" १.	१३११४	शमी २.	३३३८९
" १.	३३६१५६	" २.	३३८६५
शतावरी २.	३३३१४२	शमीधान्य ३.	३३८६२
शतावर्त १.	१३११४	शमीफला २.	३३३१४८
शतावर्त २.	२३२४	शम्फली २.	४३४२५
शत्रु १.	३३७३९	शम्ब १.	६३१५८
" १.	३३७४०	शम्बर १.	३३४१३
" १. २.	८३९४७	" १.	४३१४२
शत्रुघ्न ३.	३३७१५७	" १. ३.	७३५८४
शनक १.	३३५३०	शम्बरारि १.	१३१२८
शनकैः (-स्) ४.	८३८१६	शम्बरी २.	३३३११३
शनि १.	२३१३६	शम्बल १. ३.	३३९७
शनैः (-स्) ४.	८३८१६	शम्बाकृत १. २. ३.	
शनैश्चर १.	२३१३५		३३८२३
शपथ १.	७३१७३	शम्बूक १.	४३१५७
शफ १.	३३४९९	" १.	४३३४७
शफरी २.	३३३९४	" १.	४३३६७
" १. २.	४३१४४	शम्बूकावर्त १.	४३१३०
शबर १ व.	३३१३४	शम्बर १.	३३३१८८
" १.	३३५२३	शम्भल १.	३३७९६
शबल १.	५३३२३	शम्भु १.	६३१५७
शबली २.	३३४४४	" १.	८३६१
शब्द १.	२३४१	शम्या २.	३३८२८
" १.	५३३१७	शम्याक १.	३३३४८
" १.	६३१५९	शय १.	४३१२८
शब्दकार १. २. ३.		" १.	४३३१२८
	५३४४८	" १.	४३१२३
शब्दग्रह १.	४३४९२	शयणढक १.	४३१२६

शयथ १.	७३५८५
शयन ३.	४३३१६५
" ३.	४३३१६७
" १. ३.	७३५८५
शयनीय ३.	४३३१६५
शयान १.	४३१२८
शयालु १.	३३३३८
" १. २. ३.	५३३३९
शयित १. २. ३.	५३३३९
शयीचि १.	१३३६
शयु १.	४३३१९
शय्य ३.	४३३१८
शय्या २.	४३३१६५
" २.	६३२४१
शर १.	१३२५४
" १.	३३३२२८
" १.	३३७१८०
" १.	३३८१४७
" १.	६३१५८
" १.	८३६१६
शरज १.	१३१५४
शरजालक	३३७१८३
शरण ३.	८३३१७
शरद् २.	२३१८९
" २.	२३१९१
" २.	६३२३८
शरदण्ड १ व.	३३३३९
शरभ १.	३३३३२
शरभा १.	३३६५१
" २.	३३७५२
शरण्य १. २. ३.	
	३३७१९४
" १. २. ३.	८३९३२
शराटिका २.	२३३११
शरादान ३.	३३७१८९
शरायुध ३.	३३७१७३
शरारु १. २. ३.	५३४४२
शराव १.	४३३५९
शरावती २.	४३३३०
शरासन ३.	३३७१७२
शरि १.	३३४७३



[ शरि ]

वैजयन्तीकोषः

[ शान्तिगृह ]

शरि १.	३१४७४	शशादन १.	२३३३०	शाक्य १.	१११३४
( चरि )		शशिन् १.	२११२४	शाक्यसिंह १.	१११६४
शरीर ३.	४१४५२	शशिभूषण १.	१११३९	शकर १.	३१४५३
शरु १.	२३३२०	शशिसेखर १.	१११३९	शाख १.	१११५७
शर्करा २.	३१८१३४	शशोर्ण ३.	३१८११८	शाखा २.	३३३१५
" २.	७२१२६	" ३.	८१२२२	" २.	६२३२९
शर्करिल १. २. ३.		शशवत् ४.	८१२२८	शाखापुरी २.	४३३१
	३११४४	" ४.	८१८६	शाखामृग १.	३१३३९
शर्मन् ३.	३१६१८९	" ४.	८१८११	शाखारण्ड १. २. ३.	
शर्व १.	१११४०	" ४.	८१८१२		३१६१३
शर्वर १. २.	७५५८४	शकुली २.	४३३७५	शाखास्थि ३.	४३३११६
शर्वरी २.	२११५७	" २.	४२३२६	शाखि १ ब.	३११२७
" २.	८१६५	शष्प ३.	३३३२३५	शाखिन् १.	३३३५
शर्वाणी २.	१११५८	शस्त १. २. ३.	५४११०६	शाखोट १.	३३३७७
शल १.	१११५४	शस्त्र ३.	३३३१११	शाङ्गिक १.	३३३१७
" ३.	३३३३७	" ३.	३३३१५७	शाट १.	४३३२७
" १.	३३३६६	" ३.	३३३१९६	" १. २.	८१२२६
शलक १.	२३३४	" ३.	३३३२२६	शाटिका २.	४३३१२७
शलभ १.	२३३४३	" ३.	६३३३३	शाटी २.	८१२२६
शलल ३.	३३३३७	शस्त्रक १.	३३३१३१	शाडव १.	५३३२८
" २. ३.	३३३३७	शस्त्रचार १.	३३३१३१	शाडविक १.	५३३४०
शलाका २.	३३३१९९	शस्त्रमार्ज १.	३३३१५	शाण १.	३३३१९
" २.	३३३१९	शस्त्रमुख ३.	३३३१८६	" १.	५३३४७
शलाट १.	५३३६१	शस्त्राख्य ३.	३३३३३	" १.	५३३६३
शलाट्ट १. २. ३.	३३३१०	शखिका २.	३३३१६३	शाणी २.	४३३१३०
शलक ३.	६३३३२	शाक १.	३३३७६	शात ३.	३३३१८९
शलमलि १. २.	३३३१०	" १.	३३३६२	शालकुम्भ ३.	३३३२०
शल्य १.	३३३३७	" १. ३.	४३३१०	शातर १.	२३३८२
" १. ३.	३३३१६७	शाकट १. २. ३.	३३३५८	शान्नव १.	३३३४१
" १. ३.	३३३४१	" १.	५३३६१	शाद १.	३३३२३५
शल्यक १.	३३३६३	" ३.	५३३६१	" १.	३३३२६
शल्लक १. २.	८१२२६	शाकटीन १.	५३३६१	" १.	६३३५७
शलव १. ३.	३३३२१६	शाकफला २.	३३३१७०	शाहल १. २. ३.	३३३४३
शलवयान ३.	३३३२१६	शाकशाकट १. २. ३.		शानक १.	२३३८२
शलवर १.	३३३५२		३३३२०	शान्त १.	३३३१४९
शलवशीर्षक १.	३३३१०७	शाकशाकिन १. २. ३.		" १.	३३३७५
शलश १.	३३३१५		३३३२०	" १. २. ३.	५३३११४
" १.	३३३३१	शाकुनिक १.	३३३४०	शान्ति २	५३३२७
शलशब्द १.	२३३२४	शाकोल १.	३३३१५२	" २.	६३३२९
शललोमन् ३.	३३३११८	शाक्तीक १. २. ३.		शान्तिक ३.	३३३१२०
शल्लाङ्ग १.	२३३२७		३३३१४४	शान्तिगृह ३.	४३३२०

( १४६ )

[ शान्तियात्रा ]

शब्दानुक्रमणिका

[ शित्तिचन्दन ]

शान्तियात्रा २.	३३३५६	शालाजिर १.	५३३५९	शित्तर ३.	३३३८
शाप १.	२३३३२	शालि १.	३३३३२	" ३.	३३३१५
शापटिक १.	२३३३७	शालिजात १.	३३३३५	शित्तरिणी ३.	४३३९८
शाब ३.	५३३६	शालियष्टिक १.	३३३३४	शित्तरिन् १.	२३३५
" १. २. ३.	५३३२	शालिहोत्रि १.	३३३९०	" १.	८३३५८
शाम्बरी २.	३३३१२	शालीन १.	३३३१५६	शित्तरि २.	३३३११५
शार १.	३३३६१	" १.	३३३४१	शित्तरा २.	१३३२९
" १.	५३३२९	" १. २. ३.	५३३१७	" २.	३३३१५
" १.	५३३२५	शालु १.	४३३४७	" २.	४३३६८
" १. २. ३.	६३३९१	शालुक ३.	४३३४४	" २.	४३३१०४
शारद १.	३३३४७	" ३.	७३३३४	" २.	६३३४०
" १.	३३३३६	शालूर १.	४३३४७	" २.	८३३१५
" १. २. ३.	५३३८९	शालेय १. २. ३.	३३३१९	शिखावत् १. २. ३.	
" १.	७३३८६	शाशवत् १. २. ३.	५३३८८		३३३६
शारदी २.	३३३१९७	शाकुलिक ३.	५३३११	शिखावत् १.	३३३३६
शारि २.	२३३२०	शासन ३.	३३३४७	शिखिग्रीव १.	३३३४२
" १.	३३३६०	" ३.	७३३३५	शिखिन् १ ब.	२३३३७
" १. २.	६३३८८	शासि १.	८३३१२	" १.	२३३३३
शारिका २.	३३३१३६	शास्ति १.	८३३१२	" १.	२३३३७
शारिवा २.	३३३१३९	शास्त्र १.	१३३३२	" १.	६३३६०
शार्कर १. २. ३.	३३३४४	" १.	३३३१५९	शिखिवाहन १.	१३३५५
" १.	३३३४९	शास्त्र ३.	६३३३३	शिखीन्द्र १.	३३३९४
शार्ङ्ग ३.	१३३१७	शास्त्रविद् १. २. ३.		शिमु १.	३३३५६
" १.	२३३२४		४३३४४	" १.	४३३९०
" ३.	६३३३३	" १. २. ३.	५३३३१	शिमुज ३.	३३३९०
शार्ङ्गवत् ३.	३३३१९	शिशपा २.	३३३९१	शिङ्गिन् ३.	४३३१०३
शार्ङ्गिष्ठा २.	३३३१११	शिशुमार १.	४३३५४	शिङ्गाण १.	४३३९२
" २.	३३३१४४	शिक्य ३.	३३३१७	" ३.	४३३१०३
" २.	३३३१७९	शिकियत् १. २. ३.		शिङ्गाणिन् १. २. ३.	
शार्ङ्गिन् १.	१३३११		५३३११६		४३३९१
शार्ङ्गल १.	३३३११	शिचा २.	३३३२८	शिक्षित ३.	२३३९
" १.	३३३३३	शिक्षित १. २. ३.		शिक्षिनी २.	४३३१४५
शार्वर ३.	२३३६२		३३३१४८	" २.	७३३२६
" १. २. ३.	७३३८७	" १. २. ३.	५३३१९	शिष्टाकी २.	४३३८४
शार्वी २.	२३३१५	शिखण्ड १.	२३३३९	शित १. २. ३.	६३३८३
शाल १.	३३३१५६	" १.	४३३१०२	शितशिव ३.	३३३९६
शाला २.	३३३१५	शिखण्डक १.	४३३१०२	" ३.	३३३१२०
" २.	३३३८८	शिखण्डिक १.	२३३३३	शितशूक १.	३३३५१
" २.	६३३३७	शिखण्डिन् १.	२३३३७	शिति १. २. ३.	६३३१७
शालाक ३.	३३३३३६	शिखण्डिनी २.	८३३१९	शितिकुम्भ १.	३३३१९५
शालावा २.	२३३१५	शिखण्डी २.	४३३१०२	शितिचन्दन ३.	३३३३६

( १४७ )



[ शितिसारक ]

शितिसारक १.	३३१५१
शितपुट १.	२३३४३
शितिल १. २. ३.	३३११६
शितिली २.	३३१३८
शितिविष्ट १. २. ३.	३३११७
" १. २. ३.	३३११५
" १. २. ३.	३३११८
शिता २.	३३११२
" २.	३३११०
" २.	३३११५
शितिका २.	३३१३६
शितिर ३.	३३११०
शित्वा २.	३३११५
( शित्वा )	
शित्विक १.	३३१३७
शिर १.	३३१७८
" १.	३३१९१
शिरःपीठ १.	३३१८४
शिरस् ३.	३३११५
" ३.	३३१८५
" ३.	३३१११
शिरसिज १.	३३१९७
शिरसिसिच् २.	३३१२४
शिरस्थ १. २. ३.	३३११७
( शिरस्थ )	
शिरस्थ ३.	३३१०१
शिरिष १.	३३१७२
शिरोगेह ३.	३३१३४
शिरोगरा २.	३३१८४
शिरोगि २.	३३१८४
शिरोरत्न ३.	३३१२६
शिरोरुह २.	३३१९८
शिरोरुहा २.	३३११२
शिरोवर्तिन् १. २. ३.	३३११०
शिरोऽस्थि ३.	३३११५
शिल ३.	३३१९२
शिला २.	३३१८८
" २.	३३११२

वैजयन्तीकोषः

शिला २.	३३१४०
" २.	३३१४५
" २.	३३१४३
शिलाजतु ३.	३३११६
शिलाह्वय ३.	३३१९६
शिली २.	३३१५२
" २.	३३१४०
शिलीमुख १.	३३१८१
" १.	३३१४५
शिलोच्चय १.	३३११७
शिलोद्भव ३.	३३११८
शिल्प ३.	३३११८
शिल्पा २.	३३१२५
शिल्पिन् १.	३३११७
" १.	३३१४७
शिल्पशाला २.	३३१२२
शिव १.	१११११
" १.	३३११४९
" ३.	३३११५५
" १.	३३११६
" ३.	३३१९६
" १.	३३१४७
" ३.	३३११४३
" १. २. ३.	३३१८४
शिवङ्कर १.	३३११५८
" १. २. ३.	३३११५
शिवताति १. २. ३.	३३११५
शिवपार्श्वग १.	१३१२
शिवपुरी २.	३३१७
शिवप्रिय १.	३३११२
शिवमल्लिका २.	३३११२
शिवव्रतिन् १. २. ३.	३३१३०
शिवा २.	१११४९
" २.	१११५८
" २.	३३१११९
" २.	३३११७७
" २.	३३११६०
" २.	३३१८४

[ शीरा ]

शिवेष्ट १.	३३१८३
शिशिर १.	२११८७
" १.	३३१७
शिशु १. २. ३.	३३१२
शिशुक १.	३३१७३
शिशुकृच्छ ३.	३३११७
शिशुकृच्छातिकृच्छ ३.	३३११८
शिशुत्व ३.	३३१४५
शिशुप्रिय ३.	३३१३५
शिशुवर्जिता २.	३३१२०
शिश्व ३.	३३१६१
शिश्वदान १. २. ३.	३३११२
शिष्टि २.	३३१४८
शिष्य १.	३३१२५
" १. २. ३.	३३१४४
शीकर १. ३.	२३१७
" १.	३३१६
शीघ्र १.	१३१५०
" १. २. ३.	३३१२५
शीघ्रगमन ३.	३३१११
शीत १.	३३१३१
" १.	३३१६
" १. २. ३.	३३१९३
शीतक १. २. ३.	३३१५५
शीतकङ्क २.	३३१५६
शीतकृच्छक ३.	३३११४०
शीतपङ्क १.	३३१४७
शीतपङ्कव १.	३३१९३
शीतल १.	१३१४५
" १.	३३१८२
" ३.	३३१४
" १.	३३१६
शीतला २.	३३११३४
" २.	३३१४४
शीथु ३.	३३१४५
" १.	३३१४७
शीन १. २. ३.	३३१९५
शीरा २.	३३१९९

[ शीरी ]

शीरी २.	३३१२२८
शीर्णक १. २. ३.	३३१२२
शीर्णपर्णाशिन १. २. ३.	३३१२२
शीर्णवृन्त १.	३३१७१
शीर्ष ३.	३३१७७
" ३.	३३१८५
शीर्षक ३.	३३१५६
शीर्षण्य ३.	३३१५६
" ३.	३३१०१
शीर्षत्राण ३.	३३१५६
शील ३.	३३१३३
शीवाल ३.	३३१४९
शुक १.	२३१२
" १.	२३१२५
" ३.	३३१९२
शुककूट १.	३३१५८
शुकनास १.	३३१५७
शुकनासक १.	१३१६८
शुकपोत्र १.	३३११७
शुक्त ३.	३३१८२
" ३.	३३१८५
" १.	३३१२६
" १.	३३१२९
" १. २. ३.	३३११८
शुक्तित्तकषायक १.	३३१३५
शुक्ति २.	३३१८१
" २.	३३१०१
" २.	३३११३२
" २.	३३१५६
" २.	३३१५८
" २.	३३१५०
" २.	३३१३७
शुक १.	१३१२३
" १.	२३१३४
" १.	२३१८४
" १.	३३११९
" १. २. ३.	३३१८६
शुकशिष्य १.	१३११०

शब्दानुक्रमिका

शुकसृष्टा २.	३३१७८
शुक्रा २ ब.	२३१२१
शुक्ल १.	२३१७९
" ३.	३३१११
" १.	३३११०
शुक्लकार ३.	३३१४७
शुक्लधातु १.	३३१३३
शुक्लपुष्प १.	३३१६१
" १.	३३१९१
शुक्लहरित १.	३३१२४
शुक्लापाङ्ग १.	२३१३६
शुक्ल १. २. ३.	३३११७
शुक्ला २. १. ३.	३३१३७
शुक्ल २.	३३१८३
शुक्लि १.	२३१८४
" १.	२३१८८
" १.	३३१३५
" १.	३३११०
" १. २. ३.	३३१६५
" १. २. ३.	३३१८५
शुक्लिकर्णिक ३.	३३१४०
शुण्ठ १.	३३१८९
शुण्ठि २.	३३१७५
शुण्ठा २.	३३१४०
शुण्ठापान ३.	३३१५३
शुण्ठाल १.	३३१६२
शुण्ठि २.	३३१२७
शुण्ठ ३.	३३१८५
" १. २. ३.	३३१६५
" १. २. ३.	३३१९१
" ३.	३३११८
शुण्ठजड १.	३३१७२
( शुण्ठ, जड )	
शुण्ठान्त १.	३३१३६
" १.	३३१७४
शुण्ठि २.	३३१८९
शुण्ठ १.	३३१६९
शुण्ठक १.	३३१६८
शुण्ठासीर १.	१३१११
शुण्ठि १.	३३१६९

[ शुद्धी ]

शुद्धी २.	३३१७१
शुभ १.	३३११३
" १. २. ३.	३३११७
" १.	३३११६
शुभयु १. २. ३.	३३१२९
शुभक १.	३३१४१
शुभदती २.	२३११९
शुभा २.	३३१४१
शुभान्वित १. २. ३.	३३१२९
शुभ्र ३.	३३१२४
" १.	३३११०
" १. २. ३.	३३११८
शुभ्रि १.	३३१९२
शुभ्रक १. ३.	३३१८९
शुभ्रव ३.	३३१२४
" ३.	३३१३४
शुभ्रवा २. ३.	३३१३०
( शुभ्रपा )	
शुभ्रपा २.	३३१३८
शुभ्रषित १. २. ३.	३३११०५
शुष १.	३३१५०
शुषिका २.	३३१८१
शुषिल १.	१३१४७
शुष्कगोमय १.	३३१६०
शुष्कमांस ३.	३३१८९
शुष्मन् १.	१३११५
" ३.	३३१२१०
शुष्मि १.	१३१५०
शूक १.	३३१५८
" १.	३३१६५
शूककीट १.	३३१३३
शूकधान्य ३.	३३१६२
शूकशिखि २.	३३१२९
शूद्र १.	३३११७
" १.	३३१११
" १.	३३१११
शूद्रकुण्ड १.	३३१६३
शूद्रा २.	३३१२३
शूद्रि २.	३३१२९



## [ शून्य ]

शून्य १. २. ३.	२५१२०
" १. २. ३.	३११४५
" १. २. ३.	५४१८७
शूर १. २. ३.	३७१२८
" १. २. ३.	३७१४७
" १.	३८१३३
" १. २. ३.	६५१९२
शूरसेन १ व.	३११२४
शूरसेन १ व.	३११२४
शूर्प १. ३.	४३१६५
" १. ३.	५११५६
शूर्पकर्ण १.	३७१६१
शूर्पकारि १.	१११२८
शूर्पावर ३.	५११५५
शूल १.	४४१३७
" १. ३.	६५१९२
शूलनाशक ३.	३८१२५
शूलकृत १. २. ३.	४३१९४
शूलिक १.	३४१३१
" १.	३५१५
" १.	३५११२
" १.	३५१६९
" १.	३५१७३
शूलिका २.	३८१२३
शूलिन् १.	१११४१
शून्य १. २. ३.	४३१९४
शृङ्गल १. २. ३.	३७१८३
" १. २. ३.	४३१४६
शृङ्गलक १.	३४१६८
शृङ्ग ३.	३१२८
" १. ३.	६५१८७
शृङ्गवर्जित १.	३४१७३
शृङ्गवाद्य ३.	३९१२५
शृङ्गाट १.	३११५१
" १.	३७१५१
शृङ्गाटक १.	४२१४७
शृङ्गार १.	३७१८६
" १.	३९१७५
" १.	४३१६९
शृङ्गारगर्व १.	३६१६९

## वैजयन्तीकोषः

शृङ्गिणी १.	३४१६४
शृङ्गिणी २.	३४१४१
शृङ्गिन् १.	३४१९
" १.	३४१५२
" १.	३७१९६
" १.	४११४४
" १.	८११६०
शृङ्गिवेर ३.	३३१२१४
" ३.	३८१७६
शृङ्गी २.	३८१९०
" २.	४११४४
शृङ्गीकनक ३.	३२१२२
शृन् १. २. ३.	४३१९५
शेखर १.	४३१५३
शेफ १.	४४१६१
शेफस् ३.	४४१६१
शेफालिका २.	३३१८६
शेमुषी २.	३६१६३
शेवधि १. ३.	१२१६०
शेवाल ३.	४२१४९
शेष १.	१११३०
" १.	४११३
" १. २. ३.	६५१८७
शैच १.	३६१२४
शैख १.	१२१८७
" १.	३५१५३
" १.	३५१००
शैखरिक १.	३३११५
शैखालीक १.	३६१०७
शैग्रव ३.	३६१२२
शैनि १.	१११२६
शैव्या २.	४२१२७
शैल १.	२११८६
" १.	३२११
" १.	८११११
शैलमूल ३.	३३१२०३
शैलालिन् १.	३९१६२
शैलूष १.	३९१६२
शैलेय ३.	३२१४१
" ३.	३८१९६

## [ शौण्ड ]

शैवल १.	४२१४९
शैवल्लिनी २.	४२१२३
शैवाल ३.	४२१४९
शैशव ३.	४४१५४
शोक १.	३६१८३
" १.	३९१७६
शोचिष्केष १.	१२११५
शोचिस् ३.	६३१३४
शोण १.	३३१६८
" १.	३७१००
" १.	५३११७
" १.	५३१५१
शोणरत्न ३.	३२१३९
शोणिक १.	५३१३१
शोणित ३.	४४१०६
" ३.	५३१९१
" ३.	८६१८
शोथ १.	४४१२२
शोथशत्रु १.	३३१२०९
शोधन १.	३३१४१
शोधनी २.	४३१५२
शोधित १. २. ३.	५४१६६
शोध्य ३.	४४१०५
शोफ १. ३.	४४१२२
शोफली २.	३३१४५
शोभ १.	३६१२३
शोभन ३.	३२१३२
" १. २. ३.	५४१३५
शोभा २.	४३१४९
शोभाजन १.	३३१५६
शोष १.	४४१२४
शोषु १.	३६१८१
शौक ३.	५११६
शौक्तिकेय ३.	४११५७
शौक्लिकेय १.	४११२४
शौच ३.	३६१२०९
शौटीर्य ३.	३६१६९
शौण्ड १.	२३११४
" १. २. ३.	५४१३७

## [ शौण्ड ]

शौण्ड १. २. ३.	६५१९०
शौण्डिक १.	३५१४४
" १.	३९१४४
शौण्डी २.	३८१७६
" २.	६५१९०
शौद्धोदनि १.	१११३४
शौभिक १.	३६११०३
शौरि १.	१११२६
शौर्य ३.	५११५६
शौर्य ३.	३७१२१०
शौर्यकरण ३.	५२११६
शौक्तिक १. २. ३.	५४१५०
शौखिक १.	३९११५
श्च्योति २.	५२१३४
श्मशान ३.	३९१४८
श्मश्रु ३.	४४१०३
श्मश्रुल १. २. ३.	५४१९
श्याम १.	३३१४५
" ३.	३८१७९
" १.	५३१११
" १.	५३११४
श्यामकङ्कु २.	३८१५६
श्यामल १.	५३१११
श्यामलक १.	३३१२६
श्यामवल्ली २.	३८१८०
श्यामा २.	२३११९
" २.	३३१३८
" २.	३८१७७
" २.	४४१८
" २.	६२१३९
श्यामाक १.	३८१५६
श्यामाङ्ग १.	२११३२
श्यामाङ्गी २.	४२१२६
श्यामिका २.	३४११९
श्याव १.	५३११८
" १.	५३१३१
श्येत १.	५३११०
श्येन १.	२३११९
" १.	२३१३०
श्येना २.	२३१२०

## शब्दानुक्रमिका

अद्धा २.	३६११८०
" २.	६२१३८
अद्धाल १. २. ३.	५४१३७
अन्धन ३.	५२१३९
अपणी २.	३६११००
( अयणी )	
अपाय १.	७११७४
अमण १. २. ३.	५४११५
अमणी २.	३३१२५
" २.	३४११०
अमस्थान ३.	३७१९४
अयण ३.	४२१३३
अवण ३.	२११४०
" ३.	४४१९३
अवस् ३.	४४१९२
अविष्टा २ व.	२११४०
आणा २.	४३१८०
आद्ध ३.	३६१६४
" १. २. ३.	५४१३७
आद्धदेव १.	१२१३४
आन्त १. २. ३.	५४१३६
आमणी २.	३३१२५
आय १.	५२१३३
आवक १.	३९११११
आवण १.	२११८५
आवणिक १.	२११८४
आवणी २.	२११७६
" २.	३८१९३
श्री २.	३६११९१
" २.	८२११९
" २.	८११३२
श्रीकण्ठ १.	१११३८
श्रीकर्णायक १.	२३१४०
श्रीकृच्छ्र ३.	३६११४०
श्रीखण्ड १.	३८११३
श्रीगर्भ १.	३७१५९
श्रीघन १.	१११३२
" १.	३८१३९
श्रीधर १.	११११२
श्रीपति १.	१११११
श्रीपथ १.	४३११६

## [ श्रेष्ठिन् ]

श्रीपर्णी २.	३३१५८
" २.	३३१५८
" २.	७११८६
श्रीपुष्प ३.	४२१४१
श्रीफल १.	३३१३०
श्रीफली २.	३३१११०
श्रीवेर ३.	३३१२०२
श्रीमकुट ३.	३२११९
श्रीमत् १ व.	२११३७
" १.	२३१२५
" १.	३३१५३
" १.	३३१६०
" १.	३३१६९
" १.	३४१५३
श्रील १. २. ३.	५४१५६
श्रीवत्स १.	१११११
" १.	११११७
श्रीवत्सपिण्याक १.	३८११०९
श्रीवत्साङ्ग १.	१११११
" १.	८११४५
श्रीवास १.	३८११०९
श्रीवृक्ष १.	३३१२७
" १.	८६११९
श्रीवृक्षकिन् १.	३७१९२
श्रीवेष्ट १.	३८११०९
श्रीसंज्ञ ३.	३८११०३
श्रुत १. २. ३.	६५१८९
श्रुतकर्मन् १.	२११३६
श्रुति २.	३६१२७
" २.	४४१९३
" २.	६२१४०
श्रूषा २.	३३११५४
श्रेणि २.	६५१९०
श्रेयस् १. २. ३.	५४११४३
" १. २. ३.	८११३२
श्रेयसी २.	३३१३१
" २.	८११३३
श्रेष्ठ ३.	३२१२५
" १. २. ३.	५४१६३
श्रेष्ठिन् १.	३५१७१



श्रौण ]

वैजयन्तीकोषः

[ षण्मातुर

श्रौण १. २. ३.	पा४११४	श्रपाक १.	३१५५१
श्रौणा २.	२११४०	श्रपामन १.	३१३१०७
श्रौणि २.	४१४६४	श्रभीरु १.	३१४३७
श्रौत्र ३.	४१४९३	श्रभ्र १. ३.	४११२
श्रौत्रकान्ता २.	३१८९३	श्रयथु १.	४१४१२२
श्रौत्रिय १.	३१६८१	श्रवृत्ति २.	३१८१७
" १.	८१९४५	श्रशुर १.	४१४३०
श्रौषट् ४.	८१८३	" १ द्वि.	४१४४८
श्रौषि २.	३१६१६६	श्रशूर्य १.	७११७४
श्रयाख्य ३.	३१८१०९	श्रश्रू २.	४१४३०
श्रयूष १.	पा३१२८	श्रश्रूश्रशुर १ द्वि.	४१४४८
श्रचण १.	पा३१४	श्रश्रयस १. २. ३.	पा४११४३
" १. २. ३.	पा४११३६	श्रसन १.	११२४७
श्रचणपत्रक १.	३१४९४	श्रसित ३.	३१६१२०४
श्रचणवाच् १. २. ३.	पा३१४४	श्रस्तन १. २. ३.	पा४१८९
श्रावा २.	२१४३५	श्रापद १.	३१४७३
श्रिकु २. ३.	३१६१९१	श्राली १.	३१४७१
श्रीपद १.	४१४१३३	श्राविध् १.	३१४३७
श्रीमन् १.	४१४१२१	श्रास १.	३१६१२०४
श्रीमफल १.	३१३१५५	श्रासहेति २.	३१६१२००
श्रीमल १.	३१८१५३	श्रासा २.	३१३१३८
" १. २. ३.	४१४१४६	श्रित्र ३.	४१४१२५
श्रीमसू १. २. ३.	४१४१४६	" १. २. ३.	पा४११४४
श्रीमातक १. २. ३.	३१३१५५	श्रेत ३.	३१८१३९
श्रीमिन् १.	३१३१५३	" १.	पा३१०
श्रोक १.	६११६०	" १. २. ३.	६१५९२
श्रः (-स्) ४.	८१८१९	श्रेतकन्द १.	३१३१२०५
श्रकण्टक १.	३१५५८	श्रेतकाक १.	२१३११८
" १.	३१५१०६	श्रेतक्षार १.	३१८१२७
श्रचण्डाल १.	३१५८	श्रेतच्छाण ३.	३१८१४९
श्रदंष्ट्रा २.	३१३१४२	श्रेततण्डुल १.	३१८३२
" २.	३१७५१	श्रेतपिङ्गल १.	३१४११
श्रदयित ३.	४१४१०९	श्रेतबिन्दुका २.	पा३१५५
श्रन् १.	३१४८६	श्रेतमध्य १.	३१३१२००
" १.	८१६५	श्रेतमरिच ३.	३१८१९०
श्रनिश ३. २.	३१५३४	श्रेतरक्त १.	पा३११७
श्रपच १.	३१५३९	श्रेतशाल १.	३१८३३
" १.	३१५४७	श्रेतशिखिका २.	३१८१४६
श्रपाक १.	३१५३८	श्रेतसुरसा २.	३१३११९
		" २.	३१३१८७

( १५२ )

श्रेता २.	३१९५०
श्रैत ३.	३११९
श्रौववीयस ३.	पा४११४२
ष	
षट्क ३.	३१७१०
षट्कर्मन् ३.	३१६६३
षट्पद १.	२१३१३
षट्सस १. २. ३.	पा११२६
षडभिज्ञ १.	१११३२
षडश्रा २.	३१३१११
" २.	३१३१७७
षडानन १.	१११५६
षडवण ३.	३१८८१
षडगुण १.	३१७६
षडग्रन्थ १. २.	७१५८७
षडग्रन्था २.	३१३१९८
षडज १.	३१९१३२
षड्द १. २. ३.	३१४५७
षड्स १.	पा३१४५
षडसासव १.	४१४१०४
( षडसावस )	
षण्ड १.	३१४५३
" १.	३१६१२२
" १.	३१७३३
" १. ३.	४१४३
" १.	६११६०
षण्डतायोग्य १.	३१४५५
षण्माससङ्ग्रहिन् १.	३१६१२५
षष्टि २.	पा११२७
षष्टिक १.	३१८३४
षष्टिक्य १. २. ३.	३१८१९
षष्टितम १. २. ३.	पा११२२
षष्टिहायन १.	३१७६४
षष्ट १. २. ३.	पा११२१
षष्टकालिन् १. २. ३.	३१६१२७
षष्टी २.	१११५९
षण्ड १.	१११४६
षण्मातुर १.	१११५६

षण्मासी ]

षण्मासी २.	३१६६६
षाष्टिक ३.	३१६१४६
षिद्र १.	३१९७०
" १.	४१४३९
षोडत् १. २. ३.	३१४५७
षोडशक १. २. ३.	८१५२४
षोडशाङ्घ्रि १.	४११४७
षोडशावर्त १.	४११५६
षोडशाह १.	३१६१४४
ष्यम १.	६११६१
स	
संयत् २.	३१८२०६
संयत् १. २. ३.	पा४६७
संयता २.	३१८१६८
संयम १.	३१६१२३
" १.	पा२३०
संयोज्य १.	३१६११२
संयाम १.	पा२३०
संयाव १.	४१४७३
संयुग १.	३१८२०४
संयोग १.	पा२२६
संरम्भ १.	३१९८९
संराव १.	२१४४
संरोध १.	७१७६
संवत् ४.	८१८१०
संवत्सर १.	११२९०
संवत्सरतम १. २. ३.	पा११९
संवदन ३.	२१४२५
संवन्न ३.	३१६११७
संवर १.	४१२१०
" १.	४१२१२
संवर्त १.	३१३१७७
" १.	३१८४३
" १.	३१९७६
संवर्तक ३.	१११२४
" १.	११२२१
संवर्तिका २.	४१२४५
संवसथ १.	४३१२
संवादन् ३.	२१४२५
संवाप १.	४३११६७

शब्दानुक्रमणिका

संवाल १.	२११२८
" १.	३१७८०
संवास १.	४३१४
" १.	४३३५
" १.	४३१६७
संवासन ३.	४३२३
संवाहक १.	३१९१५
संवाहन ३.	पा२३०
संवित्ति २.	३१६१६४
" २.	७१२९
संविद् २.	पा२३७
" २.	६१२४१
संवीक्षण ३.	पा२४२
संवीत १. २. ३.	पा४१९६
संवृत १.	२११४५
संवृतता २.	३१६३५
संवेश १.	४३१६८
( सवोस )	
संव्यान ३.	४३१२२
संसप्तक १.	३१७१५२
संशय १.	३१६१७७
" १.	३१६१९७
( संश्रय )	
संशयालु १. २. ३.	पा४३८
संशित १. २. ३.	पा४१९४
संश्रव १.	पा२३७
संश्लेष १.	पा२२६
संसद् २.	३१८१३
संसरण ३.	४३११६
" ३.	८३१२२
संसिद्धि २.	७१२९
संसृष्ट १. २. ३.	७१४२८
संसृष्टिन् १.	पा४५
संस्कार १.	३१६१२
संस्कृत १. २. ३.	७१४२८
संस्कृतस्तम्भ १.	३१६१०३
संस्कृति १. २.	७१५८८
संस्तर १.	४३११६५
" १.	७१७६

( १५३ )

[ सगोत्र

संस्तव १.	पा२३१
संस्ताव १.	३१६११०
संस्त्याय १.	७११७८
संस्था २.	३१६८७
" २.	३१८१५
" २.	६१२४३
संस्थाचर १.	३१७२७
संस्थान ३.	पा२२१
" ३.	७३३३७
संस्थित १. २. ३.	३१७२२०
संस्पृष्टमैथुना २.	३१६१८
संस्फोट १.	३१७२०४
संहतजानु १. २. ३.	पा४११०
संहतल १.	४१४७८
संहनन ३.	४१४५२
संहार १.	२११९५
संहारी २.	४३३३८
संहिता २.	७१२८
संहृति २.	२१४३१
सकल १. २. ३.	पा४१८५
सकाश १. २. ३.	पा४१३३
सकृत् ४.	८१७२९
" ४.	८१८६
सकृत्प्रज १.	२३११७
" १.	८११४५
सकृप १. २. ३.	३१९७९
सक्तु १.	४३३७०
" १. ३.	८१९३१
सक्तुफला २.	३३३८९
सक्थि ३.	३१७७९
" ३.	४१४५९
सखि १. २. ३.	३१७४३
" १. २. ३.	६१५९८
सखी २.	४१४२५
सख्य ३.	३१६१८७
सगर ३. २.	८१९३३
सगर्भ १.	४१४३४
सगोत्र १.	४१४१०



[ सन्धि ]

वैजयन्तीकोषः

[ सदागति ]

सन्धि २.	४३१०३	सङ्ग्रह ३.	४३१०३	सतत १. २. ३.	४३१३०
सङ्कट १. २. ३.	४३१२६	सङ्ग्रह १.	७११७८	सतस्व ३.	४३१२१
सङ्कर १.	४३१२२	सङ्ग्राम १.	३१७२०६	सती २.	१११५९
सङ्करज १. २. ३.	३१७६२	सङ्ग्रह १.	३१७२००	" २.	३१२१६
" १. २. ३.	३१७६५	" १.	४३१७९	" २.	४३१७७
" १. ३.	३१९११	सङ्घ १.	४३११४	सतीनक १.	३१८४४
सङ्कर्षण १.	१११२२	सङ्घचारिन् १.	४३१४२	सतीर्थ्य १.	३१६२४
सङ्कलित १. २. ३.	४३१०९	सङ्घतिथि १. २. ३.	४३११९	सन्तुष्ट १. २. ३.	४३१३७
सङ्कल्प १.	३१६१७३	सङ्कर्ष १.	७११७७	तिरक ३.	२११८६
सङ्कीर्ण १.	३१५२	सङ्ज्ञात १.	४३१०९	सत्किंशु १.	३११५७
" १. २. ३.	४३११०	" १.	४३१११	सत्त्व ३.	३१६१६२
सङ्कुचित १.	२१३६	सङ्ज्ञातिका २.	३१६१०८	" ३.	३१९१७
सङ्कुल १. २. ३.	२१४१७	सचिव १.	७११७५	" १. ३.	६१५९३
" १. २. ३.	४३११०	सञ्जः (-प्) ४.	८१८१७	सत्त्वक १.	११२३८
सङ्कुसुम १. २. ३.	४३१६८	सज्ज १. २. ३.	३१७१४२	सत्पथ १.	३११४९
सङ्कीच ३.	३१८११७	सज्जन ३.	३१७५९	सत्य ३.	१११४७
सङ्कन्दन १.	११२३	सज्जना २.	३१७७०	" ३.	३१६२०९
सङ्क्रम १.	३११५२	सञ्जय १.	४३१११	" ३.	४३१३३
सङ्क्रा २.	११२१५	सञ्जर १.	४३१५३	" १. २. ३.	६१५९५
सङ्क्षेप १.	२१४४०	सञ्चार १.	३१७२८	सत्यङ्कार १.	३१८७१
सङ्ख्य ३.	३१८२०४	सञ्चारिका २.	३१७३६	सत्ययुग १.	२११९१
सङ्ख्यान ३.	४३१३६	सञ्चारिणी २.	४३१२४	सत्ययौवन १.	११३४
सङ्ख्यावत् १.	३१६२३४	सञ्चारित १.	३१९३३	सत्यलोक १.	३१६२०८
सङ्ग ३.	३१८१२१	सञ्चारिन् १.	३१९८१	सत्यवती २.	३१३१४४
" ३.	४३१६१	सन्ध्यादनी २.	४३१०३	सत्यवतीसुत १.	१११३१
" १.	४३२२७	सन्ध्या ३.	४३२३१	सत्याकृति २.	३१८७१
सङ्गत १.	२११६४	सङ्गवन ३.	४३२३६	सत्याग्नि १.	३११५२
" १.	३१६१४७	सङ्गावन ३.	३१८१४४	सत्यानृत ३.	३१८३३
" ३.	३१६१८६	सङ्गपन ३.	३१७२१५	सत्यानृत ३.	३१८७१
सङ्गति २.	४३२२१	सङ्गा २.	२११२३	सत्र ३.	३१६१८५
सङ्गम १.	३१६१४७	" २.	६१२४३	" ३.	३१६१८५
" १.	४३२२७	सङ्गु १. २. ३.	४३११०	" ३.	६१३३५
सङ्गर १.	३१७२०५	सङ्ग्वर १.	११२३१	सत्रशाला २.	४३२२६
" १.	७१५९२	सट १.	३१५७	सत्रा ४.	८१८१७
सङ्गव १.	२११६४	सट्ट ३.	४३१४४	सत्वर १. २. ३.	४३१२४
सङ्गाली २.	३१३१८९	सट्टक ३.	४३१९८	सदस् २. ३.	३१८१४४
सङ्गीतक ३.	३१९७२	सणि १.	४३१५५	सदसदात्मक ३.	३१६१६४
सङ्गीर्ण १. २. ३.	४३१०६	सण्डीन ३.	२११५०	सदस्य १.	२१६१८१
सङ्गूढ १. २. ३.	४३१०९	सत् ३.	११२३८	" १.	३१८१३
		" ३.	३१६२३४	सदा ४.	८१८१५
		" १. २. ३.	८३११६	सदागति १.	११२५०

( १५४ )

[ सदागति ]

शब्दानुक्रमिका

[ ससला ]

सदागति १.	२११५५	सन्तान १.	१३१४४	सन्धिबन्धन ३.	४३११७
सदागत १. २. ३.	४३१८८	" १.	४३१४०	सन्ध्या २.	२११६९
सदाफल १.	३३२२२	" १.	४३१४९	सन्न १. २. ३.	४३१५५
सदाश १. २. ३.	४३१२२	सन्तानिनी २.	३१८१४७	" १. २. ३.	६३१५९
सदाश १. २. ३.	४३१२२	सन्ताप १.	११२३१	सन्नद्ध १. २. ३.	३१७१४२
सदाश १. २. ३.	४३१२२	" १.	४३१३८	सन्नय १.	७११८२
सदाश १. २. ३.	४३१२२	सन्तापित १. २. ३.	४३१२८	सन्नाम १.	४३२२४
सदाश्रि १.	११११८	सन्तोष १.	३१६१६६	सन्नाह १.	३१७१५३
( सधि )		" १.	३१६२०९	सन्नाहित १. २. ३.	४३१९७
सधन् ३.	४३११८	सन्देश १.	३१९१७	सन्नाहय १.	३१७६९
सधः (-स्) ४.	८१८७	" १.	४३११०	सन्निकृष्ट १. २. ३.	४३१४१
सधःपाक १.	३१६१९९	सन्देशित १. २. ३.	३१८११	सन्निधि १.	७११८०
सधःप्रचालिताक्षक १.	३१६४२	सन्दर्भ १.	४३२३९	सन्निपात १.	४३२२६
सधस्तन १. २. ३.	४३१८९	सन्दष्ट १.	३१९११३	सन्निभ १. २. ३.	३१९२१
सधुचि १. २. ३.	३१७४३	सन्दान ३.	३१९२९	" १. २. ३.	४३१२२
सधर्मचारिणी २.	४३३३५	सन्दानिनी २.	४३३२२	सन्निवेश १.	४३३३१
सध्रीचीन १. २. ३.	४३१९३	सन्दानभाग १.	३१७७६	" ३.	४३२२१
सधयच १. २. ३.	४३१९३	" १.	३१७७९	सन्निहित १. २. ३.	४३१३३
सन्कुमार १.	११३१७	सन्दाल १.	२११५१	सन्न्यास १.	३१६१४४
सनल १. २. ३.	३११४४	सन्दित १. २. ३.	४३१९७	सन्न्यासपल्ली २.	४३३२८
सना ४.	८१८६	सन्देष्ट १. २. ३.	४३३३८	सपट्टी २.	४३३४४
सनात् ४.	८१८६	सन्देश १.	२१४२५	सपत्न १.	३१७४१
सनातन १.	११३१७	सन्देशगिर २.	२१४३६	सपत्राकृति २.	४३२३८
" १. २. ३.	४३१८८	सन्देशहर १.	३१७२९	सपदि ४.	८१८१३
" १. २. ३.	८१५२५	सन्देह १.	३१६१७७	" ४.	८१८११
सनाभि १.	४३१५०	सन्दोह १.	४३११२	सपर्या २.	३१६३९
सनालिङ्ग १.	३१५२०	सन्द्रव १.	३१७२११	सपिण्ड १.	४३१५०
सनि १. २.	३१६१२१	सन्द्राव १.	३१७२११	सपीति २.	३१९५३
" १.	८१९१०	सन्धा २.	२११६९	ससकी २.	४३३१४६
सनिष्टीव १. २. ३.	२१११८	" २.	६१२४४	ससजिह्व १.	११२१७
सनीडक १. २. ३.	४३१४१	सन्धान ३.	४३३८२	ससतन्तु १.	३१६१८२
सन्त १. २. ३.	४३१४१	सन्धानी २.	३१३१०५	ससति २.	४३१२७
सन्तति २.	४३१४१	" २.	४३३२१	ससपर्ण १.	३१३१७
" २.	७३२२८	सन्धि १.	३१७६	ससम १. २. ३.	४३१२०
सन्तमस ३.	२११६२	" १.	६१६३३	ससमात् २.	१११६५
		सन्धिकाष्ठ ३.	४३३४१	ससर्षि १ ब.	२११५०
		सन्धित १.	४३१०९	ससला २.	३३३१८५
		सन्धिनी २.	३१४५१		

( १५५ )



सप्तसप्त]

वैजयन्तीकोषः

[ समुद्रनवनीतक

सप्तसप्त १.	२११११	समन्तात् ४.	८१८३	समाहार १.	५१२१८
सप्तार्चिस् १.	११२१६	समन्तिक १. २. ३.		" १.	८११४७
सप्ति १.	३१७९०		५११३३	समाहित १. २. ३.	
सप्तह्यचारिन् १.	३१६२४	समपद ३.	३१७१८७		२१४१३
सभा २.	३१८१३	समम् ४.	८१८१७	" १. २. ३.	२१४१४
" २.	५११५	समय १.	७११८२	समाह्वय १.	८११४७
" २.	६१२४२	समया ४.	८१७३३	समिक ३.	३१७२०३
सभाजन ३.	३१६१८६	" ४.	८१८१५	" १.	७११७७
सभासद् १.	३१८१३	समर १. ३.	३१७२०६	मिति २.	७१२१७
सभास्तार १.	३१८१३	" १. ३.	८१६१७	समिदाधान ३.	३१६११
समिक १.	३१९५९	" १. ३.	८१६१८	समिध् २.	३१६१६
सभ्य १.	११२२५	समर्थ १. २. ३.	७१३३०	" २.	३१७२०६
" १.	३१८१३	समर्थन ३.	३१८१५	समीक १.	५१३१६
" १. २. ३.	६१४१८	समर्थाद् १. २. ३.		" १.	७११७५
सम् ४.	८१७८		५११३१	समीकरण ३.	३१८३०
सम १.	३११५२	समलेपनी २.	३१९१४	समीचीन ३.	५१३३
" ३.	५११६१	समवकारक १.	३१९१००	समीप १. २. ३.	५१३४०
" ३.	५११६२	समवर्तिन् १.	११२३४	समीर १.	११२४९
" १. २. ३.	५१४८६	समवाय १.	५१११	समीरण १.	११२४७
" १. २. ३.	५१४१२१	समशन १.	५१३५४	" १.	३१३१२०
" १. २. ३.	६१५९५	समष्टि २.	५१३४८	समुच्चय १.	५१२१८
समक ३.	५११६२	समसुप्ति २.	२११९४	समुच्छ्रय १.	८१६१६
समकम् ४.	८१८१७	समस्त १. २. ३.	५१४८५	समुज्झित १. २. ३.	
समक्ष १. २. ३.	५१४१३३	समस्थान ३.	३१६२२४		५१४१०१
समग्र १. २. ३.	५१४८५	समस्या २.	२१४४०	समुत्थान ३.	५१२२५
समङ्ग १.	३१९६०	समा २ ब.	२११९१	समुत्पिञ्ज १. २. ३.	
समङ्गा २.	३१३१३५	" २.	६१५९५		५१४९४
समज १.	५११५	समांसमीना २.	३१४४८	समुद् १. २. ३.	५१३३३
समज्ञा २.	२१४३६	समाघात १.	३१७२०४	समुद्य १.	३१७२०५
समज्या २.	३१८१४	समाज १.	५११५	" १.	५११२
समक्षस ३.	३१७४८	समादान ३.	३१६१०४	समुदस्त १. २. ३.	
समतट १ ब.	३११३१	समाधि १.	३१६२३२		५१४११२
समधिक १. २. ३.		" १.	३१९६०	समुदाय १.	३१७२०५
	५१४१३७	" १.	७११८१	" १.	५११२
समनीपद १.	११२४४	समान १. २. ३.	५१४१२१	समुद्र १.	४१३६४
समन्त १. २. ३.	५१४१३३	" १. २. ३.	७१५८८	समुद्धत १. २. ३.	
समन्ततः (-स्) ४.		समानोदर्य १.	४१४३४		५१३३१
	८१८३	समापन ३.	८१३१३	समुद्र ४.	४१२११
समन्तदुग्धा २.	३१३१७	समालम्भन ३.	४१३१४७	" १. २. ३.	५११२९
समन्तभद्र १.	१११३३	समास १.	२१४४०	समुद्रनवनीतक ३.	
समन्तभुज् १.	११२१४	" १.	५१२१८		२११२७

( १५६ )

समुद्रान्ता ]

शब्दानुक्रमणिका

[ सर्वज्ञ

समुद्रान्ता २.	८१२१०	सम्भोग १.	३१७७०	सरस्वती २.	१११९
समुन्दन ३.	५१२२९	" १.	७११८०	" २.	४१२२८
समुन्नति २.	३१३१६	सम्भ्रम १.	३१९८९	" २.	८१५३०
समुन्नद्ध १. २. ३.	८१४१२	" १.	७११७९	सरि २.	२११२
समूह १.	३१४२०	सम्मति २.	७१२२९	सरित् २.	४१२२२
समूह १.	५११२	सम्मद १.	३१६१८८	सरिताम्पति १.	४१२११
समूहन ३.	३१७१८९	सम्मर्द १.	३१७२०५	सरिस्पति १.	४१२१२
समुद्ध १. २. ३.	५१४५७	सम्मार्जनी २.	४१३५२	सरी २.	३१७९८
समुद्धि २.	३१८९३	सम्मासा २.	३१३१२७	सरीस्प १.	४११४
समोलक १.	५३१४५	( समांसा )		" १.	४११४०
समोलुक ३.	३१२३०	सम्भुज् १. २. ३.	५१४४७	सरुज् २.	३१६५०
सम्पत्ति २.	३१६१९१	सम्भूर्च्छन ३.	५१२४१	सरुहाह १.	३१७१०६
" २.	३१७४	सम्भृच ३.	५३३	सरोज २.	४१२३७
सम्पद् २.	३१६१९१	सम्भ्राज् १.	६११६१	सरोरुह ३.	४१२३६
" २.	८१९५	सर १.	११२४८	सर्ग १.	३१६३२
सम्पात १.	५१२२६	" १.	३१३४२	" १.	५१२११
सम्पातपाटव ३.	५१२१९	" ३.	३१८१४५	" १.	६११६२
सम्पुट १.	४३३६४	" १.	५१३२६	सर्ज १.	३१३३८
सम्पूर्ण १. २. ३.	५१४८७	सरक ३.	३१९५३	सर्जक १.	३१८१४०
सम्पृक्त १. २. ३.	५१४७८	" ३.	७३३३८	सर्जन १.	३१८१११
सम्प्रति ४.	८१८५	सरघा २.	२१३४५	सर्प १.	४११४
सम्प्रधारण ३.	३१८१५	सरट् १.	६११६४	" १.	८१६१५
सम्प्रयोग १.	५१२२६	सरट् १.	४११२८	सर्पजाति २.	४११११
" १.	८११४५	सरटी २.	३१२२७	सर्पदंष्ट्री २.	३१३१२७
सम्प्रहार १.	३१८१५	सरणी २.	४१२२१	सर्पभुज् १.	४१११६
सम्प्रेष १.	५१२२५	सरण्यु १.	७११७६	" १.	८१६२१
सम्प्रेषणी २.	३१६६५	सरमा २.	३१४७१	सर्पभृता २.	३१११
सम्फाल १.	३१४६४	सरल १.	३१३७४	सर्पराज १.	४११३
सम्फुल्ल १. २. ३.	३१३९	" १. २. ३.	५१४२०	" १.	४१११५
सम्बन्ध १.	५१२१३	सरलद्रव १.	३१८१०९	" १.	४१११६
सम्बाध १. २. ३.		सरलशीणिक १.	५३५१	सर्पशफरी २.	४११४४
	५१४१२६	सरलिक १.	५३५२	सर्पाञ्चर १.	४११२१
" १. २. ३.	७१५२२	सरस् ३.	४१२६	सर्पारि १.	८१६२१
सम्भरी २.	३१८१२१	" ३.	६१३३४	सर्पिस् ३.	३१८१३८
सम्भव १.	७११७९	सरपिज् ३.	४१३७	" ३.	६१३३५
सम्भाल १ ब.	३११२४	सरसी २.	४१२६	सर्व १.	५१३३१
सम्भावना २.	३१६१७६	सरसीज् ३.	४१३७	" १.	५१४८५
सम्भाषण ३.	२१४२३	सरसीरुह ३.	४१३७	सर्वसहा २.	३११३
सम्भेद १.	४१२३१	सरस्वत् १.	४१२९	सर्वगन्ध ३.	४१३१५१
" १.	५१२२६	" १.	८१५३३	सर्वजनप्रिया २.	३१८१९३
		" १.	८१५३४	सर्वज्ञ १.	१११३३

२५ वै०

( १५७ )



[ सर्वज्ञ ]

वैजयन्तीकोषः

[ साज्य ]

सर्वज्ञ १.	१११४४	सवितृ १.	२१११०
सर्वज्ञः ( -स् ) ४.	८१८३	" १.	७११७८
सर्वतोभद्र १.	४१३३०	सविध १. २. ३.	पा४१२१
सर्वतोमुख १.	१११८	" १. २. ३. पा४१४१	
" ३.	८१३१८	सविस्मय १. २. ३.	४१४२९
सर्वदा ४.	८१३५	सवेध १. २. ३. पा४१४१	
सर्वधुरीण १. २. ३.	३१४५८	सवेश १. २. ३. पा४१४१	
सर्वभक्त १. २. ३.	पा४५०	सव्य १.	११२२८
सर्वभक्ता २.	३१४६२	" १. २. ३. ६१४१८	
सर्वमङ्गला २.	१११५८	सव्येष्ट १.	३१७१३८
सर्वला २.	३१७१६६	सस्य ३.	३१३२०
सर्वलोचना २.	३१८१८	" ३.	३१८३१
सर्वविद् २.	३१८२३३	सस्यसंवर १.	३१३३८
सर्वविद्या २.	३१८३१	सह ४.	८१८१७
सर्ववेदस् १.	३१८७७	सहकारक १.	३१३२५
सर्ववेशिन् १.	३१९६३	सहचर १. २. ३.	३१३१९१
( सर्वकेशिन् )		सहचरी २.	४१४३४
सर्वसन्नहन ३.	३१७१५७	सहज १.	४१४३१
सर्वसस्यभू २.	३१८१७	" ३.	पा२११
सर्वसह १.	३१३५३	सहधर्मिणी २.	४१४३४
सर्वाङ्गीन १. २. ३.	पा४५०	सहन १. २. ३. पा४३३	
सर्वाभिसार १.	३१७१५७	सहपानक ३.	३१९५३
सर्वार्थसिद्ध १.	१११३४	सहभोजन ३.	४१३१०३
सर्वौघ १.	३१७१५७	सहरक्षस् १.	१११२१
" ३.	३१८१३६	" १.	१११२२
सर्षप १.	३१८४१	सहस् १.	२११८१
सर्षपी २.	३१३६७	" ३.	३१७२१०
सलज्ज १.	३१३१२२	सहसा ४.	८१७३४
सलवण ३.	३१२३२	सहसानु १.	३१६८३
सलिल ३.	४१२११	" १.	७१५४५
सल्लकी २.	३१३९६	सहस्य १.	२११८२
सल्लाप १.	२१४२९	सहस्र ३.	पा११२८
सव ३.	३१६८२	सहस्रतम १. २. ३.	पा११२३
सवन १.	३१६६९	सहस्रदंष्ट्र २.	४११४२
सवर्ण १.	३१५३	सहस्रपत्र ३.	४१२३८
" १.	३१५७०	सहस्रवीर्या २.	३१३२३३
" १. २. ३. पा४१२१		सहस्रवेधिन् ३.	३१८१३१
सविक्रम १.	३१७११		

( १५८ )

सहस्रवेधिन् १.	३१८१३३
सहस्रांशु १.	२१११५
सहस्राक्ष १.	११२११
सहस्रिन् १. २. ३.	३१७१४१
सहा २.	३१३१०६
" २.	३१३१२८
" २.	३१३१८८
" २.	३१३१९०
" २.	३१३१९१
सहाध्यायिन् १.	३१६१२४
सहाय १.	३१७१६
" १. २. ३. ३१७४३	
सहायता २.	पा११९
सहित ३.	३१७१७६
सहितोद्ग ३.	३१७१७७
सहिष्णु १. २. ३. पा४३३	
सहुरि १.	११२१८
" १.	७१७७५
सांयात्रिक ३.	११२६८
" ३.	३१७१२३
" १.	४१२१८
सांयुगीन १. २. ३.	३१७१४९
सांराविण ३.	८१९१७
सांस्तर १.	११२१८०
" १.	३१७२५
" १.	३१८३३
आंस्तर २.	३१६६६
साकम् ४.	८१८१७
साकेत ३.	४१३५
साक्षात् ४.	८१७३०
साक्षिन् १. २. ३. ३१८१९	
सागर १.	४१२१०
साङ्कारिका २.	३१६५२
साङ्ग्रामिकगुण १.	३१७४
" १.	३१७५
साचि १.	११२१८
" ४.	८१८१९
साज्य ३.	३१६५५

[ साति ]

साति २.	६१२४४
सातिसार १. २. ३.	४१४१४६
सात्त्वत १.	१११२३
" १. २. ३. ३१५५७	
" १. २. ३. ३१५१०५	
सात्त्वती २.	३१९१०१
सात्त्विक ३.	३१६११९
" १. २. ३. ३१९१९	
सात्त्विकी २.	२११६०
साद् १.	३१६१९१
सादिन् १.	६११६५
साद्यस्क १. २. ३.	पा४१८९
साधन ३.	७१३३६
साधारण १. २. ३.	पा४१२९
साधिका २.	३१३१७८
साधीयस् १. २. ३.	७१४२९
साधु १. २. ३. पा४१३५	
" १. २. ३. ६१५९६	
साधुवाद १.	२१४३६
साध्य १ ब.	११३८
साध्वस ३.	३१६१८५
साध्वी २.	४१४७
सानु १. ३.	३१२७
" १.	३१६८३
सानुनासिक १. २. ३.	२१४१६
सानुमत् १.	३१२११
सान्व १. २. ३. २१४१६	
" ३.	३१७१३
" ३.	६१३३५
सान्वन ३.	३१७१३
" ३.	पा२३८
सान्वष्टिक ३.	३१६२३६
सान्वेशिक १.	३१७२९
सान्द्र १. २. ३. पा४१२६	
सान्द्रसिन्ध १. २. ३.	पा४४३

शब्दानुक्रमणिका

सान्व १.	२१११६
सान्नाय ३.	३१६१९
सासपदीन ३.	३१६१८७
सामज १.	३१७६१
सामन् ३.	२१४२३
" ३.	३१६२६
" ३.	३१६१११
" ३.	३१७१३
सामन्त १.	३१७१८
सामर्थ्य ३.	७१३३८
सामाजिक १.	३१८१३
सामान्य १. २. ३.	पा४१२९
सामि ४.	८१७२९
सामिक ३.	३१६१३
सामुद्र १.	३१५४२
" ३.	४१४५४
सामुना ३.	३१४२०
साम्पराय १.	८११४८
साम्परायिक १.	३१७१२६
" १.	३१७२०३
साम्प्रतम् ४.	८१७३४
" ३.	८१८५
साम्बाधिक १.	२११६६
सायक १.	७११७७
सायन्तूर्य ३.	३१९१३७
सायम् ४.	८१८१०
सायाह १.	२११६५
सायुज्य ३.	३१६२३७
सार १.	३१३१४
" १.	४१४१०९
" १. २. ३. ६१५९७	
सारघ ३.	३१८१३५
सारङ्ग १. २. ३. ७१५८९	
सारण १.	११२५४
" १. २. ३. ३११४६	
" १. २. ३. ३१६६	
" ३.	३१८१४९
" ३.	पा२११
सारणी २.	२१४४२
सारथि १.	३१७१३८

( १५९ )

[ सिंह ]

सारपर्णी २.	३१३१००
सारमेय १.	३१४६८
सारस १.	२१३३३
" ३.	४१३३७
" १.	७११८३
सारसन ३.	३१७१५६
" ३.	४१२१४६
सारसप्रिया २.	२१३३३
सारस्वत १.	३१६१९
सारिका २.	३१९१२८
सारी २.	३१९११
सार्थ १.	पा११४
सार्थवाह १.	३१८७२
सार्द्र १. २. ३. पा४१०७	
सार्धम्	८१८१७
सार्पिक १. २. ३. ४१३९५	
सार्धभौम १.	२११८
" १.	३१७२
सार्ष्टि २.	३१६२३७
साल १.	३१३३८
" २.	४१३१४
" २.	६१६५
सालभञ्जिका २.	३१९१४
सालातुरीयक १.	
	३१६१५४
सालावृक १.	८११४६
साल्व १ ब.	३१३३२
" १ ब.	३१३३८
सावन १.	२११८१
सावित्र १.	३१६४१
सावित्री २.	४१४७४
सावित्रेय २.	११२३४
साष्टी २.	३१३१७५
सारना २.	३१६६०
साहस १. ३.	३१७४६
साहस्र १. २. ३.	
	३१७१४१
" ३.	पा११३
साहायक १. २.	८१९३५
सिंह १.	३१२१५
" १.	३१४११



[ सिंह ]

सिंह १.	८१६१४
सिंहकर्णी २.	३१७१२३
सिंहकेसर १.	३३३२६
सिंहपुच्छी २.	३३३१३७
" १.	८२११५
सिंहमल ३.	३२१२८
सिंहल ३.	३१११९
" ३.	३२३३१
" ३.	३०८७५
सिंहवाहना २.	१११६२
सिंहसहनन १. २. ३.	५४१६
सिंहाण ३.	३२३३६
सिंहासन ३.	३०७१५
सिंहास्य ३.	३३३१०१
सिंहिका २.	३६१४७
सिंही २.	३३३१०२
" २.	३३३१०६
सिकता २ ब.	४२३३३
सिकताप्राय ३.	४२३३३
सिकतावत् १. २. ३.	३११४४
सिकतिल १. २. ३.	३११४४
सिक्थ १.	६११६६
सिच् २.	४३३११६
सिचय १.	४३३११६
सित १.	५१११०
" १. २. ३.	५४१९७
सितकाच १.	५३३१३
सितकाचर १.	५३३१३
" १.	५३३२४
सितकुञ्जर १.	११२४
सितकृष्ण १.	५३३२४
सितच्छद् १.	२३३५
सितपिङ्गण १.	५३३१४
सितपीतहरित्रील १.	५३३१५
सितलोहित १.	५३३२५
सितश्याम १.	५३३१२
" १.	५३३१५

वैजयन्तीकोषः

सिता २.	३०८१३४
सिताङ्ग १.	३०८१०५
सितायुध १.	४११४४
सितासित १.	१११२४
सितोदर १.	११२५८
सिद्गुण्ड १.	३३३९८
" १.	३१५९
सिद्ध १.	१३३२
" १. २. ३.	४३३९३
" १. २. ३.	५३३१११
सिद्धसेन १.	१११५५
सिद्धान्त १.	३६३२५
सिद्धार्थ १.	३०८४१
सिद्धि २.	३०८९३
सिद्धम ३.	४१४१२६
सिद्धमन् १.	५४११४४
सिद्धमल १. २. ३.	४१४१४६
सिध्य १.	२१३३९
सिन ३.	४१४५२
सिनीवाली २.	२११७१
" २.	८२११०
सिन्दुक १.	३३३११८
सिन्दुवार १.	३३३११८
सिन्दूर ३.	३०८११८
सिन्धि ३.	३०८१२१
सिन्धु १ ब.	३११२७
" १.	३३३९८
" २.	४२३२३
" १.	६१५९७
सिन्धुर १.	३०८६१
सिन्धुसर्ज १.	३३३३९
सिन्धुज्व ३.	३०८१२१
सिरा २.	४१४११६
सिराल १. २. ३.	५४१८
सिल ३.	३०८१२
सिलिन्ध्र १.	३३३१५३
सिह १.	३०८११०
सीता २.	३०८३०
" २.	६२३४५
सीत्य १. २. ३.	३०८२२

[ सुगन्धि ]

सीम १.	५३३७
सीमन् २.	४३३११
" २.	६२३४४
सीमन्त १.	४१११००
सीमन्तिनी २.	४१४४
सीमन्तोन्नयन ३.	३६३३
सीमा २.	४३३११
" २.	६२३४४
सीर ३.	३०८२७
सीवन ३.	३०९१२
सीवनी २.	३०९११
" २.	४१४६२
सीस १. ३.	३२३२९
सु ४.	८०८८
" ४.	८०८४
" ४.	८०८१३
सुकर १. २. ३.	३०७१०७
सुकुमार १.	५३३५
सुकृत ३.	३६३६८
" ३.	७५३९४
सुकृतिन् १. २. ३.	५४१५६
सुख ३.	३६३१८९
" ३.	५४१४४
" ३.	६३३३५
सुखकर १.	१११२१
सुखङ्घुण १.	१११५०
सुखदोषा १.	३४१४९
सुखवर्चक १.	३०९१२९
सुखवास १.	३३३१७१
सुखसुसिका २.	३६३२००
सुखा २.	१११४९
सुखोदय १.	३०९४८
सुगत १.	१११३४
सुगन्ध १.	३३३६९
" १.	३३३२००
" १.	४३३१५३
सुगन्धक १.	३३३१६४
सुगन्धा २.	३३३१८६
" २.	३०८१७
सुगन्धि २.	३३३११९

[ सुगन्धि ]

सुगन्धि १.	३४३२
" १.	३०९८४
सुगन्धिक १.	३०८३२
सुगन्धिका २.	३३३१३९
सुगन्धिन् ३.	३०८१५
सुगन्धी २.	३३३१७५
सुग्रीव १.	४११५५
सुचरित्रा २.	३०८५०
सुत १.	१३३३
" १.	४१४४०
" १.	६१६६
सुतङ्ग १.	३३३२२०
सुतश्रेणी २.	३३३१३३
सुतापुत्र १ द्वि.	४१४४८
सुताह्वा २.	३३३१४४
सुतेजित १. २. ३.	५४१९४
सुत्रामन् १.	१२३४
सुत्वन १.	३६३७५
सुदर्शन ३.	११११७
" ३.	१२३१०
" १.	२३३३०
सुदर्शना २.	३३३१४३
सुदारु १.	३२३४
सुदिनाह ३.	८०९२२
सुदुष्प्रभ १.	४११२९
सुधन्व १.	३६३१०७
( युन्धान )	
सुधन्वन् १.	३५५६
सुधन्वाचार्य १.	३५५७
" १.	३५१०४
सुधर्मन् २.	१३३११
सुधा २.	४३३१०५
" २.	६२३४५
सुधी १.	३६३२३४
सुनन्दा २.	१११६०
" २.	३४३४३
सुनाल ३.	४२३४२
सुनासीर १.	१२३५
सुनिषण्णक १.	३३३१५०
सुन्दर १. २. ३.	५४१३३४

शब्दानुक्रमणिका

सुन्दरी २.	४१४६
सुपथिन् १.	३११४९
सुपर्ण १.	१११३८
" १.	३३३४९
सुपर्णक १.	२३३१९
सुपर्णाण्ड १.	३५२५
सुपर्णातिनय १.	१११३७
सुपर्वन १.	१११४
सुपार्थ १.	३३३५९
सुप्त १.	२३३२४
" ३.	३६३१९७
" १.	४१४३४
सुप्रतीक १.	२११८
सुफल १.	३३३३३
" १.	३३३९३
सुब्रह्मण्य १.	१११५७
सुभग १. २. ३.	५४१७०
सुभजन १.	३३३५६
सुभद्रा २.	३३३१७०
सुभिच्चा २.	३३३९७
सुभीरुक ३.	३२३२४
सुम ३.	३३३१८
सुमदा २.	१३३१
सुमन १.	३०८५३
सुमनस् २ ब.	३३३१८
" १. २.	७५३९०
सुमना २.	३३३४४
सुमानस १. २. ३.	५४१५७
सुमुखी २.	३३३१२३
सुमेरु १.	१३३१२
सुयमा २.	३३३६७
सुर १.	१११२
सुरगायन १.	१३३२
सुरज्येष्ठ १.	१११७
सुरदीर्घिका २.	१३३१३
सुरपणिका २.	३३३७०
सुरभि १.	१२३२६
" १.	२११८७
" २.	३३३९६
" १.	३३३१२२

[ सुवृत्त ]

सुरभि २.	३४३४३
" १.	५३३४७
" १.	५३३४९
" १. २. ३.	७५३९३
सुरभिच्छद् १.	३३३९३
सुख १.	५३३५४
सुरवर्त्मन् ३.	२१११
सुरवत्सल १.	३३३७०
सुरवेता २.	४१३३१
सुरसा २.	३३३९३
" २.	३०८१७
सुरा २.	३०९४५
सुराचार्य १.	२१३३३
सुराजन् १. २. ३.	३११४६
सुराजिका २.	४१३३१
सुराधिप १.	१२३२
सुरामण्ड १.	३०९५२
सुरालय १.	१३३१२
सुरावास १.	११११
सुराष्ट्र १.	३०८३७
सुराष्ट्रजा २.	३२३१७
सुराह्वय ३.	३३३७१
सुरूप २.	३३३१८४
सुरूहक १.	३०९१०२
सुरोत्तम १.	११११४
सुलभ १.	१२३२७
सुललिक १.	३५३२७
सुलवणा २.	३०८६०
सुलोह ३.	३२३३४
सुलोहक ३.	३२३२५
सुवर्चला २.	२१३२३
" २.	३०८४५
सुवर्चिका २.	३०८१२९
सुवर्ण १.	३२३१९
" १. ३.	५३३४१
" १.	५३३४९
सुवहा २.	३०८१८
सुवासक १.	३३३१७१
सुवासिनी २.	४१४८
सुवृत्त १. २. ३.	५४१८९



[ सुवेल ]

सुवेल १.	३१२२
सुवता २.	३१४१९
सुषम १. २. ३.	५४१३५
सुषमा २.	४३१५२
सुषवी २.	३३१६३
" २.	३१८८५
सुषि १. २.	४११२
सुषिक १.	५३३६
सुषिम १.	५३३६
सुषिर १.	३३३२२८
" ३.	३१११५
" ३.	४११२
" १. ३.	७५१०
सुषिरच्छेद १.	३१११२७
सुषिरा २.	३१८१००
सुषुप्ति २.	३३३२००
सुषुम्ना २. १.	८११२५
सुषेण १.	३३३८४
सुषेणी २.	३३३१३८
सुषु ४.	८८८४
" ४.	८८८१३
सुसंस्कृत १. २. ३.	४३१९४
सुसाम १.	३३३३७
सुस्निग्धा २.	३३३१०४
सुहस्त १. २. ३.	३१७१४८
सुहित १. २. ३.	४३३१०५
" १. २. ३.	५३१९९
सुहृद् १.	३१७३
" १. २. ३.	३१७४३
" २.	४३१२५
" १. २. ३.	६३१२०
सुहृदय १. २. ३.	५४११६
सुहृ १ ब.	३१११५
सुकर १.	३१४५
" १.	३१८३३
सुकरी २.	४३३४१
सूक्ष्म ३.	४३३१२२
" ३.	४३३११०
" १. २. ३.	५४३१३६

वैजयन्तीकोषः

सूक्ष्म १. २. ३.	६५१९८
"	८११११०
सूक्ष्मदर्शिन १. २. ३.	५४१२९
सूक्ष्मा २.	११११६
सूचक १.	३३३३८
" १.	३५१४०
" १.	३११६८
" १. २. ३.	५४३२५
सूचना २.	८२११४
सूचा २.	३११११
" २.	८२११४
सूचि १.	३५१२९
" १.	३५१२९
" २.	३११११
" २.	४३३४८
सूचिसूत्र ३.	३१११२
सूची २.	४३३४८
सूचीमुख ३.	३३३२१४
सूत १.	३२३४४
" १.	३५११२
" १.	३५१७७
" १.	३५१७७
" १.	३१७१३८
सूता २.	३३३७३
सूति १.	२३३६
सूतिकागृह ३.	४३३२०
सूतिकामास १.	४३३१९
सूस्थान १. २. ३.	५४३५४
सूत्र ३.	३३३२०
" ३.	३११११
" ३.	३१११४२
" ३.	६३३३६
सूत्रक ३.	३१७१५३
सूत्रधार १.	३११६८
सूत्रवेष्टन १.	५११९
सूत्रसङ्ग्रह १.	३१७११७
सूद १.	४३३८६
" १. २. ३.	४३३९२
सून ३.	३३३१८
" ३. २.	६५१९९

[ सुप्र ]

सूना २.	३१७८४
" २.	४३३९०
सूनातटि २.	३१९३७
सूनु १. २.	४३३३९
सूनुत ३.	५४३१४३
" १. २. ३.	७४३२९
सूप १. ३.	४३३८६
" १. २. ३.	४३३९३
सूपकार १. २. ३.	४३३९२
सूर १.	२१११०
सूरण १.	३३३२०८
सूरि १.	३३३२३४
सूर्मि १. २.	३११२२
" १. २.	८११२५
सूर्य १.	२१११०
सूर्यकान्त १.	३३३३७
सूर्यभ्रातृ १.	१२३१२
सूर्या २.	३३३१३४
सूर्याचन्द्रमस १ द्वि.	२११२९
सूर्यारक १ ब.	३३३३५
सूर्यावर्त १.	३३३१२४
सूर्योद १.	३३३६८
सूक्था २.	४३३५८
सूक्न ३.	४३३८८
सृग १.	३१७१६६
सृगाल १.	३३३३७
" १.	८५१७
सृगालकोलि २.	३३३८९
सृगालवास्तुक १.	३३३१५४
सृजया २.	३३३१०
" २.	४३३३०
सृणि १. २.	३१७८४
सृणिका २.	४३३१२०
सृति २.	३३३४९
सृदाकु १.	१२३१९
" १.	७११७७
सृपाट १. २.	८११२५
सृपाटिका २.	२३३५७
सृप्र १.	२११२७

[ सुमर ]

सुमर १.	३३३२९
सृष्टा २.	३१८९४
" २.	३१९१२९
सृष्टि २.	८५३३५
से १. २. ३.	८५३४०
सेकपात्र ३.	४३३१८
सेकमिश्रान्न ३.	४३३१०६
सेकिम ३.	३३३१५५
सेवतृ १.	४३३३७
सेचन ३.	४३३१८
सेतु १.	३३३४१
" १.	४३३१०
सेतुज १ ब.	३३३३४
सेना २.	३१७५५
सेनानी १.	१११५५
" १. २. ३.	३१७१४१
सेनामुख ३.	३१७५८
सेनारक्ष १. २. ३.	३१७१४०
सेनास्थ १. २. ३.	३१७१४०
सेभ्य १.	५३३७
सेराल ३.	५३३२०
सेराह १.	३१७१०४
सेहराह १.	३१७१०६
सेलिस १.	३३३२४
सेलु १.	३३३५५
सेवक १.	३१७१७
" १. २. ३.	७५१९३
सेवन ३.	३३३३८
" ३.	३१११२
" ३.	७३३३७
सेवनी २.	३३३१८४
सेवा २.	३३३३८
" २.	३१८३७
सेव्य १.	२३३१८
" ३.	३३३२३१
" ३.	३१८११५
" ३.	३१८१२०
" ३.	३१८१४२
" १.	३१९४९

शब्दानुक्रमणिका

सेव्य ३.	८३३१८
सेव्या २.	३३३८५
" २.	३३३१७७
" २.	३१८५८
सेहिका २.	५३३५४
सेहिकेय १.	२३३३६
सेकत १. २. ३.	३३३४४
" ३.	४३३३३
सेतवाहिनी २.	४३३२६
सेता २.	४३३२६
सेध १.	२३३८२
सैनिक १. २. ३.	३१७१४०
" १. २. ३.	३१७१४०
सैन्धव ३.	३१८१२०
" ३.	३१७७२
" १.	७५१९१
सैन्य ३.	३१७५५
" १. २. ३.	३१७१४०
सैर १ ब.	३३३४०
सैरन्धी २.	४३३२५
सैराभ १.	५३३१५
सैरिक १. २. ३.	३३३५८
सैरिन्ध १.	३३३११२
" १.	३३३११५
सैरिन्धजाति २.	३३३११३
सैरिभ १.	४३३८
सैरेयक १.	३३३१९०
सोढ १. २. ३.	५४३११५
" ३.	४३३३३
सोढ १. २. ३.	४३३११२
सोख १.	३३३७६
सोदर १.	४३३३४
सोदर्य १.	४३३३४
सोन्माद १. २. ३.	५४३४१
सोपाक १.	३३३४५
" १.	३३३१०६
सोपान ३.	४३३५१

[ सौमिक ]

सोम १.	३३३१६९
" १.	३३३८४
" १.	६३३६६
सोमप १.	३३३७५
सोमपान ३.	३३३९२
( सोममान )	
सोमपीथिन् १.	३३३७५
सोमभवा २.	४३३२६
सोमयोनि १.	८३३४९
सोमरसोद्धव ३.	३३३१४५
सोमराजि २.	३३३१०८
सोमल १.	५३३८
सोमवल्लरी २.	३३३१४४
सोमवल्लरी २.	३३३१०८
" २.	३३३१३२
सोमाल १.	५३३४
सोमिन् २.	३३३८३
सोर १.	५३३१२
सोरण १.	५३३३८
सोरावास १.	४३३८८
सोल १.	५३३६
" १.	५३३३५
सोलिक १.	५३३६
सोवाल १.	५३३१३
सौख्य ३.	३३३१८९
सौगन्धिक १.	३३३१४
" ३.	३३३२३४
" ३.	४३३३५
सौचिक १.	३३३११
सौदामनी २.	२३३५
सौध ३.	३३३३४
" १. ३.	४३३२९
सौधात १.	३३३७
सौनन्द ३.	१३३२५
सौसिक १.	३३३२०३
सौभागिनेय १.	४३३३३
सौमनस १.	५३३४९
सौमिक ३.	३३३१०१
( सोमक )	
" १. २. ३.	३३३१२७



सौमिकी ]	वैजयन्तीकोषः	[ स्थल
सौमिकी २.	३६१८७	स्कन्ध १.
सौमेरव ३.	३११७	१.
सौम्य १.	२११३२	१.
॥ ३.	२११९१	१.
॥ १.	३६१८४	स्कन्धवह १.
॥ १.	३६११०८	स्कन्धवाहक १.
॥ ३.	३६११४५	१.
॥ १. २. ३.	६१५९८	स्कन्धशाखा २.
सौम्यकृच्छ्र ३.	३६११३२	स्कन्धशृङ्ग १.
सौम्या २.	८१२१५	स्कन्धाग्नि १.
सौरत १.	११२५१	स्कन्धावार १.
सौरभेय १.	३१४५३	स्कन्धिक १. २. ३.
सौरभेयी २.	३१४४१	३१४५६
सौरसा २.	३३३८८	स्कन्ध १. २. ३.
सौराष्ट्र ३.	३१२२९	स्खलित ३.
सौराष्ट्रिक १.	४११२४	स्नन १.
( सारोष्ट्रिक )		१.
सौराष्ट्री २.	३२११६	स्तनन्धय १. २. ३.
॥ २.	३१८४८	५१४२
सौरि १.	२११३५	स्तनप १. २. ३.
सौरिक १.	११११	स्तनयिस्तु १.
सौर्य १.	२११९१	८११४६
सौवर्चल ३.	३१८१२५	स्तनाग्र ३.
॥ ३.	३१८१२६	स्तनित ३.
सौवस्तिक १.	३१७२४	स्तन्य ३.
सौवास १.	३३१२०	३१८१४५
सौविद १.	३१७२२	स्तबक १.
सौविद्वह १.	३१७२२	३३३२०
सौविष्ट ३.	३६१११२	स्तब्ध १. २. ३.
सौवीर १ व.	३११२८	५१४२०
॥ ३.	३१२४२	स्तब्धरोमन् १.
॥ ३.	४१३८१	३१४१५
॥ १. ३.	७१५९१	स्तब्धलोचन १. २. ३.
सौशमिकन्ध ३.	८१९१९	५१४९
सौष्टव ३.	३१७२०८	स्तभ १.
सौहार्द ३.	३६११८६	३१४६२
सौहित्य ३.	४३११०५	स्तभि २.
सौहृद ३.	३६११८६	८१९१०
स्कन्द १.	१११५४	स्तम्ब १.
॥ १.	६१९६५	३३३१६
स्कन्दोल १.	५३३६	३१८६३
		१.
		स्तम्बकरि १.
		३१८३२
		स्तम्बज ३.
		३३३२२
		स्तम्बरम १.
		३१७६०
		स्तम्भ १.
		३११६४
		स्तम्भि १.
		४१२१२
		स्तम्भिन् १.
		४१२१२
		स्तरण ३.
		३६१९१
		स्तव १.
		२१४३५
		स्तितमित १. २. ३.
		४१७३०
		स्तुत १. २. ३.
		५१४१०६
		स्तुति २.
		२१४३५
		॥ २.
		३६११११
		स्तुतिपाठक १.
		३१७३०
		स्तूप १.
		६११६७
		स्तूपपृष्ठ १.
		४११५०
		स्तेन १.
		३१९५६
		स्तेम १.
		५१२२९
		स्तेय ३.
		३१९५८
		स्तैन्य ३.
		३१९५८
		स्तोक १.
		२१२८
		॥ १. २. ३.
		५१४३६
		स्तोकक १.
		२१३३२
		स्तोकपाण्डु १.
		५३१४४
		स्तोत्र ३.
		२१४३५
		॥ ३.
		३६११११
		स्तोम १.
		३११६१
		॥ १.
		३१४८२
		॥ १.
		५१११
		स्थान १. २. ३.
		४३१९५
		स्त्री २.
		४१४४
		॥ २.
		८१२१६
		॥ २.
		८६१५
		स्त्रीधर्मिणी २.
		४१४१५
		स्त्रीपुंसलक्षणा २.
		४१४३
		स्त्रीप्रिय १.
		३३३४०
		स्त्रीभूषण १.
		३३३२३३
		स्त्रीवास १.
		३११४८
		स्त्रीव्यञ्जनाकृता २.
		४१४८
		स्त्रैण १. २. ३.
		५१४११८
		स्थायिका १.
		३३३६७
		स्थगणा २.
		३१११
		स्थण्डिलश १. २. ३.
		३६१३२
		स्थपति १.
		३१५८६
		॥ १.
		७११८०
		॥ १.
		८१९४५
		स्थपुट १. २. ३.
		५१४८३
		स्थल ३.
		३११४२

स्थल ]	शब्दानुक्रमणिका	[ स्फिच्
स्थल १. २.	८१९३२	स्थिति २.
स्थलशृङ्गाट १.	३३११४१	२.
स्थली २.	३११४२	स्थिर १.
॥ २.	८१९३२	२११३६
स्थविर १. २. ३.	५१४३	स्थिरगति १.
स्थाणु १.	१११४३	२११३५
॥ १. ३.	३३११३	स्थिरजिह्व १.
स्थान ३.	३१७१८६	४११४२
॥ ३.	३१९१११	स्थिरप्रेमन् १. २. ३.
॥ ३.	६३३३६	५१४२६
स्थानिक १. २. ३.	३१९१९	स्थिरा २.
स्थानीय ३.	४३११	३११२
॥ ३.	४३१२	॥ १.
स्थाने ४.	८१८१४	३३३१००
स्थापत्य १.	३१७२३	॥ १.
॥ १.	८१९४५	४३३२५
स्थापनी २.	३३३१३०	स्थूल ३.
स्थाप्य १.	३१८१२	३१७२२
स्थामन् ३.	३१७२०	॥ २.
स्थायिन् १.	३१९८१	६१२४६
॥ १. २. ३.	५१४४२	॥ २.
स्थायिभाव १.	३१९७६	३१९३५
स्थायुक १.	३१७२१	५१४५८
॥ १. २. ३.	५१४४२	स्थूललक्ष १. २. ३.
स्थाल १.	१११४५	५१४५८
॥ ३.	४३३६१	स्थूलशाटिका २.
स्थाला २.	३१८२७	४३३१२६
स्थालिक १.	५३३५७	स्थूलहस्त १.
स्थाली २.	४३३५५	३१७७१
स्थावर १. २. ३.	५१४६२	स्थूलोच्चय १.
स्थाविर ३.	४१४५४	८११४८
स्थासक १.	३१७८७	स्थेय १.
॥ १.	४१२१३	३१८१३
॥ १.	४३१४८	स्थेयस १. २. ३.
स्थानु १. २. ३.	५१४४२	५१४७९
॥ १. २. ३.	५१४७९	स्थेष्ट १. ३.
स्थित १. २. ३.	६३३२०	५१४७९
स्थितासन ३.	३६३२२६	स्थौण्य ३.
स्थिति २.	३१८१५	३१८९२
॥ २.	५१२३	स्थीर १ व.
		३११३६
		स्नपित १. २. ३.
		५१४१०७
		स्नव १.
		५१२३२
		स्नसा २.
		४१११७
		स्नातक १.
		३६३४०
		स्नान ३.
		४३३१३
		॥ ३.
		६३३३६
		स्नायु २. ३.
		३१४११७
		स्नाव १.
		३३३१४
		॥ १.
		३१९३३
		स्नाव १.
		४१११७
		स्निग्ध १.
		३३३५३
		॥ १. २. ३.
		३१७४३
		॥ १. २. ३.
		५३३१८
		स्तु १.
		३३३७
		स्तुम्भिका २.
		३१८१२९
		स्तुत १. २. ३.
		५१४१०९
		स्तुपा २.
		४१४३६
		स्तुह् २.
		३३३९७
		स्तुही २.
		३३३९७
		स्नेह १. ३.
		३६११८६
		॥ १. ३.
		३१८१३७
		॥ १.
		५३३११
		॥ १. ३.
		६१५९९
		॥ ३.
		८३३१८
		स्नेहपात्र ३.
		४३३६०
		स्नेहपूर १.
		३१८४५
		स्नेहचर ३.
		४१४१०८
		स्नेहु ३.
		४१४११३
		स्पन्द १.
		२११२६
		स्पन्दित ३.
		३१९९१
		स्पर्ध्व १. २. ३.
		५१४६४
		स्पर्श १.
		११२४९
		॥ १.
		३६३३६
		॥ १.
		५३३२
		॥ १. २. ३.
		६१५९६
		स्पर्शन ३.
		३६३११८
		॥ १. ३.
		७१५८९
		स्पर्शानन्दा २.
		१३३११
		स्पश १.
		३१७२०५
		॥ १.
		६११६४
		स्पशा २.
		३६३८९
		स्पष्ट १. २. ३.
		५१४१३४
		स्पृक्का २.
		३३३११७
		स्पृष्टता २.
		३६३३५
		स्पृष्टा २.
		३६३१७९
		स्फटा २.
		४११२१
		स्फटिक १.
		३३३३७
		स्फाति २.
		५३३३३
		स्फार १. २. ३.
		५३३८०
		स्फिच् २.
		४१४६५



स्फीत ]		वैजयन्तीकोषः		[ स्वर्नदी	
स्फीत १.	पा३१७	संसिन् १.	३३३४५	स्वधिति १.	३११३६
स्फुट १. २. ३.	३३३९	सक्ति २.	४३३५२	स्वन १.	२१११
" १. २. ३.	पा३१३४	सज् २.	४३३५४	" १. २. ३.	पा३१४८
" १. २. ३.	६११९	स्रव १.	४३३९३	स्वप्न १.	३३३१९७
स्फुटन ३.	पा३१४१	" १.	पा३३२	" १.	३३३१९७
स्फुटवल्ली २.	३३३१४०	स्रवण १.	३३३४२	स्वप्नज् १. २. ३.	पा३३२९
स्फुटित १. २. ३.	३३३१४६	स्रवत्पाणिपादा २.	३३३५२	स्वप्नतिष्ठ १.	पा३३२७
स्फुरण ३.	पा३३३३	स्रवद्भर्मा २.	३३३४७	स्वभाव १.	पा३३२
स्फुरित ३.	३३३१९१	स्रवन्ती २.	४३३२२	स्वभू १.	११११२
स्फुलन ३.	पा३३३३	स्रष्ट १.	१११६	स्वमनीषिका २.	३३३१७४
स्फुलिङ्ग १. २. ३.		स्रष्टृत्व ३.	१११४८	स्वयंवरा २.	४३३७
	११३३१	स्रस्त १. २. ३.	पा३१०२	स्वयम् ४.	८८११८
स्फूर्जक १.	३३३५५	स्राक् ४.	८८११	स्वयम्भू १.	१११८
स्फूर्जधु १.	२३३६	स्रावस्ती २.	३३३२१	स्वर १.	३३३११०
स्फोटक १.	४३३१२३	" २.	३३३३०	" १.	३३३१३२
स्फ्य १.	३३३१०२	स्रगासादन ३.	३३३८९	" १.	६३३६३
स्म ४.	८३३७	स्रगिज्झ १.	१३३१७	स्वरकम्प १.	३३३८५
" ४.	८३३११	स्रुच् २.	३३३१००	स्वरभेद १.	३३३८५
स्मय १.	३३३१६९	" २.	८३३१८	स्वराष्ट्रचिन्ता २.	
स्मयाक १.	३३३५८	स्रुत १. २. ३.	पा३१०९		३३३१४
स्मर १.	१३३२७	स्रुव ३.	३३३१००	स्वरिङ्गण १.	१३३५२
स्मराङ्कुश १.	४३३७६	स्रुवा २.	३३३११४	स्वरित १. २. ३.	३३३३७
स्मित १. २. ३.	३३३९	स्रोतस् ३.	४३३९३	स्वरु १.	६३३६४
" ३.	३३३८३	" ३.	६३३३७	स्वरुमोचन १.	३३३१०६
" ३.	८३३१६	स्रोतस्विनी १.	४३३२२	स्वरूप ३.	पा३३१
स्मृति २.	३३३२९	स्रोतोञ्जन ३.	३३३४२	स्वरेणु २.	२३३२३
स्यद १.	१३३५५	स्व १. २. ३.	८३३३८	स्वर्ग १.	१३३११
स्यन्द १.	२३३२६	स्वः ( -र ) ४.	१३३२	स्वर्जि २.	३३३१२९
स्यन्दन १.	३३३१२४	" ( -र ) ४.	३३३२०७	स्वर्जिका २.	३३३१२९
स्यन्दनध्वनि १.	२३३९	" ( -र ) ४.	८३३७	स्वर्ण ३.	३३३१८
स्यन्दिनी २.	४३३१२०	स्वकुलक्षय १.	४३३४१	" १.	३३३२२१
स्यज १. २. ३.	पा३१०९	स्वङ्ग १. २. ३.	पा३३६	स्वर्णकार १.	३३३१६
स्यमीक १.	७३३७५	स्वच्छन्द १. २. ३.		स्वर्णचूड १.	२३३२९
स्याल १.	४३३३२		पा३३२७	स्वर्णद्वीप ३.	३३३१९
स्यालिका २.	४३३२८	स्वज १.	४३३२०	स्वर्णराज ३.	४३३४१
स्यूत १.	४३३६४	" १.	४३३४५	( स्वर्णराग )	
" १. २. ३.	पा३११२	स्वजन १.	४३३५१	स्वर्णरीति २.	३३३२६
स्यूति २.	३३३१२	स्वतन्त्र १. २. ३.	पा३३७	स्वर्णशुक्तिका २.	३३३२१
स्यूना २.	६३३४५	स्वतन्त्रवृत्ति २.	पा३३२०	स्वर्णाद्रि १.	१३३१२
स्यूम १.	६३३६१	स्वदन ३.	पा३३०३	स्वर्नदी २.	१३३१३
स्योनाक १	३३३६८	स्वधिति १.	३३३३६	( स्वर्णदी )	

स्वर्भानु ]		शब्दानुक्रमणिका		[ हरिकेलीय	
स्वर्भानु १.	२३३३६	स्वामिन् १.	३३३१५९	हठ १.	६३३६८
स्वर्वापी २.	४३३२४	" १.	३३३३	हड्डिक १.	३३३४८
स्वर्वेश्या १.	१३३१	" १.	३३३१०५	हड्डक १. ३.	३३३१३४
स्वल्पदेहा २.	३३३५१	" १. २. ३.	पा३३५८	हण्डा २.	३३३१०८
स्वल्पफला २.	३३३१६०	" १. २. ३.	६३३९४	हतक १. २. ३.	३३३१४७
स्वप्न १.	४३३३१	स्वामिनी २.	३३३३२	" १. २. ३.	पा३३६७
स्वप्न २.	३३३१४	" २.	३३३१०३	हना २.	३३३५०
स्वप्न ३.	४३३२६	स्वाराज् १.	१३३४	हनन ३.	पा३३३६
स्वप्नकन्द १.	३३३१४	स्वास्थ्य ३.	४३३१४२	हनु १.	३३३३४
( स्वप्नकन्ध )		स्वाहा २.	१३३१९	" २.	३३३१०१
स्वप्न १.	३३३६६	स्वित् ४.	८३३६	" १. २.	४३३९०
स्वप्न २.	८३३२९	स्वेद १.	३३३८१	हन्त ४.	८३३३०
स्वप्निक १.	२३३२८	स्वेदचूषक १.	१३३५२	" ४.	८३३२
" १.	३३३१४९	स्वेदज १. २. ३.	४३३२	हन्तकार १.	३३३१५
" १.	३३३२२४	स्वेदनी २.	४३३५६	हज्ज १. २. ३.	पा३३१३
" १.	४३३३०	स्वैर १. २. ३.	६३३२०	हय १.	३३३९०
" १.	४३३१३६	स्वेरिणी २.	४३३९	हयन ३.	६३३२७
स्वस्थयन ३.	३३३५८	स्वेरिन् १. २. ३.	पा३३२७	हयपुच्छी २.	३३३१०७
स्वस्थीय १.	४३३४१	ह		हयशिरस् १.	१३३३०
स्वाती २.	२३३४०	ह ४.	८३३८	हर १.	६३३६७
स्वादु १.	पा३३५	" ४.	८३३११	हरक १.	३३३१६२
" १. २. ३.	६३३१९	हंस १.	२३३५	हरण १.	३३३८२
" ३.	८३३१८	" १.	३३३२००	" ३.	३३३१९३
स्वादुकण्ठक १.	८३३५५	" १.	६३३६८	" ३.	३३३१९८
स्वादुगन्धा २.	३३३५७	" १.	८३३६	" १.	४३३७१
स्वादुतिक्तकषाय १.	पा३३३३	" १.	४३३१४४	" ३.	७३३३९
स्वादुमुस्ता २.	४३३४८	हंसक १.	४३३१४४	हरणि २.	४३३२१
स्वादुरसा ३.	८३३२९	हंसकान्ता २.	२३३८	हरणेश्वरा २.	४३३२४
स्वाद्य १.	पा३३३०	हंसकालीसुत १.	३३३१०	हराजि १.	३३३१५
स्वाद्वल्लित्तुवर १.	पा३३३९	हंसच्छत्र ३.	३३३७६	हरानत १.	१३३४२
स्वाद्दी २.	३३३१८१	हंसपद ३.	पा३३५०	हराक्षय १.	३३३८०
स्वाध्याय १.	७३३८३	हंसपाद ३.	३३३४५	हरि १.	१३३१५
स्वान १.	१३३११	हंसवाहन १.	१३३८	" १.	३३३१२
" १.	२३३१	हंससाधि १.	२३३९	" १.	३३३३९
स्वान्त ३.	३३३१७३	हकार १.	२३३३१	" १.	३३३२९
स्वाप १.	३३३१९७	हजा २.	३३३१०८	" १.	३३३६९
" १.	४३३१६७	हङ्ग १.	४३३३५	" १.	३३३१०५
स्वापतेय ३.	३३३८३	हङ्गविलासिनी २.	३३३१०१	" १.	३३३३६
स्वामिन् १.	१३३५६	हठ १.	३३३२९	" १. २. ३.	३३३१००
		" १.	४३३४६	हरिकेलीय १ क.	३३३१३१



## हरिचन्दन ]

हरिचन्दन १. ३.	१३११४
" ३.	३१११३
" १. ३.	८११२७
हरिण १.	३११२२
" १.	५३१२२
हरिणी २.	३११२२
" २.	७२१३०
हरित् २.	२११२
" १.	५३१२२
" २.	६५१०१
हरित १.	३११२
" १.	३१८३६
" १.	४३१९०
" १.	५३१२१
" १.	५३१२२
हरिताल ३.	३११२३
हरितालिका २.	३३१२३२
हरिद्व १.	२११११
हरिद्रा २.	३३१२११
हरिद्रारागक १. २. ३.	५३१२६
हरिद्विष १.	१३११०
हरिन्मण १. २.	३२१२८
हरिपर्ण १.	३३११५५
हरिप्रिया २.	८१११०
हरिमन् २.	७११८४
हरिमन्थ १.	३१८३७
हरिमन्थज १.	३१८३७
हरिया १.	३१७१०४
हरिरोमन् १.	८११४९
हरिलोचन १.	२३१२२
हरिवत् १.	११२३
हरिवर्ण ३.	३११६
हरिवालुक ३.	३१८१५
हरिवाहन १.	११२४
हरिहय १.	११२३
हरीतक १. २. ३.	८११३८
हरीतकी २.	३३१२१
" २.	३३११७८
" २.	८११३८

## वैजयन्तीकोषः

हरेणु २.	३१८१५
" १. २.	८११२६
हरेणुक १.	३१८१४
हर्तु १.	६११६७
हर्ष ३.	४३११९
हर्षज १.	७११८४
हर्ष १.	३३११८७
हर्षज ३.	४३११११
हर्षमाण १. २. ३.	५३१३३
हर्षवेणुक १.	३३६६१
हर्षुल १.	२११३२
" १. २. ३.	७५१९४
हर्षुला २.	३३६५०
हल ३.	६१८२७
हलभूति १.	३३६५४
हला २.	३१९१०८
हलाभ १.	३१७१०२
हलायुध १.	१११२२
हलाहल १.	२११२४
हलिन १.	१११२३
हलीचण १.	३३१२
हलीम १.	३३१२२३
हलीमक १.	३३६०
" १.	३३३७६
हलुराह १.	३१७१०५
हल्य १. २. ३.	३१८२३
हल्या २.	५१११४
हव १.	१२११८
" १.	२३१३०
" १.	६११६७
हवन १.	१२११८
" ३.	३३६६९
हवनी २.	३३६१००
" २.	३३६१०९
हवित्री २.	३३६१०९
हविर्मन्थ १.	३३६८६
हविर्यज्ञ १.	२३६८३
हविशशाला २.	४३१२२
हविस् ३.	३१८१३८
" ३.	६३३३७

## [ हस्तिमल्ल ]

हव्ययोनि १.	११११४
हव्यवाहन १.	१२११७
" १.	१२१२२
" १.	१२१२४
हस १.	३३६१९४
हसन ३.	३३६१९४
हसनी २.	४३३५५
हसन्ती २.	४३३५५
हसित ३.	३१८१३
हस्त १.	१२१४३
" १.	३११५४
" १.	४३१७३
हस्तकोहलि २.	३३६५९
हस्तम १.	३१७१५५
हस्तत्रय ३.	३११५७
हस्तद्वय ३.	३११५७
हस्तपर्ण १.	३३३६४
हस्तविम्ब १.	४२११४८
हस्तलेपन ३.	३३६६०
हस्तवारण ३.	४३११०५
हस्तसूत्र ३.	३३६५९
हस्तावाप १.	३१७१८९
हस्तिकर्कोटक ३.	३३३१६५
हस्तिकर्ण १.	३१७१९८
" १.	४३३१२९
हस्तिकर्णद्वल १.	३३३२९
हस्तिकोलि २.	३३३८८
हस्तिघोष १.	३३३१६२
हस्तिचार १.	३१७१७०
हस्तिन् १.	३३६६०
" १.	८३६५
हस्तिनापुर ३.	४३३८
हस्तिनी २.	४३३८
हस्तिपक १.	३१७८८
हस्तिपर्णिनी २.	३३३१७१
हस्तिपादिका २.	३१८१३
हस्तिपिप्पली २.	३१८१७८
हस्तिपूरणी २.	३३३१४७
हस्तिप्रिया २.	३३३९६
हस्तिमकर १.	४३१५२
हस्तिमल्ल १.	८११४९

## हस्तिमुख ]

हस्तिमुख १.	४३११५
हस्तिराज १.	१११५३
हस्तिवातिङ्गन १.	३३३१०३
हस्त्य १. २. ३.	५३१११७
हस्त्यगना २.	३३३९६
हस्त्यारोह १.	३१७८८
हहाल १ ब.	३१३३६
हा ४.	८१७८
हाटक १. ३.	३२१२०
" १.	३१७१६५
हाकृत ३.	२३१८
हान ३.	५२१४०
हायन १.	३१८३४
" १.	७११८४
हार १.	४२११३८
" १.	४२११३९
हारफल ३.	४२११४०
हारभूरा २.	३३३१८१
हारित १.	१२१५२
हारिता २.	३३३४९
हारिद्र १.	४३१३६
" ३.	५३१११
हारिन् १. २. ३.	५३११३५
हारी २.	३३३४८
हारीत १.	२३३४०
हार्द ३.	३३३१८६
हार्या २.	३१८११४
हालक १.	३१७१०३
हाला २.	३३३४५
हालाहल १.	४३१२९
हालिक १. २. ३.	३१५५८
हाली २.	४३१२८
हाव १.	३३३९२
" १.	३३३९७
हास १.	३३३१९४
" १.	३३३७६
" १.	३३३८३
हासनिक १.	३१७१७
हासिका २.	३३३१९३
हास्तिक ३.	५३३१०

## शब्दानुक्रमणिका

हास्तिनपुर ३.	४३३८
हास्य ३.	३३३१९४
" १.	३३३१७५
" १.	३३३१७७
हि ४.	८१७९
" ४.	८१७११
हिंसन ३.	३१७४१
हिंसा २.	३१७२१५
" २.	६२१४६
हिंसाकर्मन् ३.	३३३११२
हिंसारु १.	३३३३
हिंस्र १.	३३३७३
" १. २. ३.	५३३४२
हिंस्रा २.	३३३८९
हिंका २.	२३३२१
" २.	४३३१२७
हिक्कि २.	४३३१३१
हिङ्गु ३.	३३३१३१
हिङ्गुदी २.	३३३१०४
हिङ्गुनिर्यास १.	८११५६
हिङ्गुल १.	३३३४४
" ३.	३३३४५
हिङ्गुल २.	३३३१०२
हिङ्गीर १.	३१७८५
हिण्डीकान्त १.	१११४४
( चण्डीकान्त )	
हित १. २. ३.	३३३४३
" १. २. ३.	५३३१०४
हिन्ताल १.	३३३२२०
हिम् ४.	८१७९
हिम ३.	२३२९
" १.	५३३७
हिमजा २.	३३३२०३
हिमघृति १.	२३३२४
हिमवत् १.	३३३४
हिमवालुका २.	३३३१०५
हिमसंहति २.	२३२९
हिमा २.	१११५९
हिमाचल १.	३३३४
हिमानिल १.	१२३५४
हिमानी २.	२३२९

## [ हम् ]

हिमारी १.	७११८३
हिरण्य ३.	३३३१९
हिरण्य १.	३३३१७४
" ३.	७३३३९
हिरण्यकशिपुद्विपत् १.	१३३१८
हिरण्यगर्भ १.	१३३१७
हिरण्यनाभ १.	३३३४
हिरण्यबाहु १.	१३३५६
हिरण्यरेतस् १.	१३३१६
हिरण्यवर्णा २.	४३३२२
हिरुक् ४.	८१७३०
" ४.	८१८४
" ४.	८१८१५
ही ४.	८१८१६
हीन १.	३३३८२
" १. २. ३.	५३३२२
" १. २. ३.	५३३१०१
" १. २. ३.	६३३२०
हीनवर्ण १.	३३३३
हीर १.	६३३६९
हीरक १.	३३३३९
हुङ्कु १.	३३३१३४
हुङ्कुहिक्का २.	२३३११
हुण १.	१३३११
हुण्ड १.	३३३३
हुताशन १.	१३३१६
हुति २.	३३३६९
" २.	३३३९०
हुम् ४.	८१७९
हुरिङ्क १.	३३३४४
हुर्टक १.	३३३८५
हुरुकर १ ब.	३३३१४
हुल ३.	३३३१६८
हुलमात्रिका २.	३३३१६४
हुलिक १ ब.	३३३३९
हुलिलुली २.	३३३५७
हुलु १.	३३३५४
हुलुत १.	३३३११२
हुति २.	३३३३०
हुम् ४.	८१७९



हृच्छय ]	वैजयन्तीकोषः	ह्लादीनि
हृच्छय १. १११२९	हेति २. ६१२४६	होतृ १. ३६१७९
" १. ११२२१	हेतु १. ५३३३७	होत्र १. ३६१६९
हृणिया २. ३६१९३	" १. ६११६९	होत्वन् १. ३६१७६
(मृणिया)	हैमकरक १. ४३१५८	होम १. ३६१६९
हृणीया २. ३६१९३	हैमकुश ३. ३१११९	होमकाष्टी २. ६६१९५
हृद् ३. ३६१७३	हैमघ्न ३. ३२३३०	होमधूम १. ३६१९५
" ३. ४११६८	हैमघ्नी २. ३३३२११	होमधेनु २. ३६१९५
" ३. ४११११४	हैमज ३. ३२३३२	होमभस्मन् ३. ३६१९५
हृदय ३. ४११६८	हैमदुग्धक १. ३३३२८	होमयूप १. ३६१९०३
" ३. ४११११४	हैमधारण ३. ५११५९	होमन्धन ३. ३६१९६
" ३. ७३३३८	हैमन् ३. ३२३२०	होरा २. २११५१
हृदयालु १. २. ३. ५१११६	" ३. ६३३३७	होल १ ब. ३१२२६
हृष १. ३३३३२	हैमन्त १. २११८७	हयः (-स) ४. ८८१९
" ३. ३६१६३९	हैमपुष्प १. ३३३३४१	हयस्तन १. २. ३. ५३३८९
" ३. ३९१४८	" १. ३३३८९	हृद् १. ३३३६४
" १. २. ३. ५३३९६	हैमपुष्पिका २. ३३३१८२	" १. ४११५
" १. २. ३. ५३३३५	हैमप्रतिमा २. ३९१२२	हृस्व १. २. ३. ५३३८१
" १. २. ३. ६१११००	हैममाष १. ५११५	" १. २. ३. ६१११०१
हृद्यगन्ध १. ३६१८४	हैमा २. ३११३	हृस्वगवेधुका २. ३६१६१
हृद्या २. ३२१११	हैरम्ब १. ३११९	हृस्वनिर्वशक १. ३६११५९
" २. ३३३६३	" १. ७३१८४	हृद् १. २११२
" २. ३६१९४	हैरुक १. ३६१२३९	हृदिनी २. ४१२३
हृद्यांशु १. २११२६	हैलक ३. ५११६२	" २. ७३२२९
हृल्लेख १. ३६१७७	हैला २. ६१२४६	हृदुनि २. २१२५
हृषित १. २. ३. ८१११३	हैलि २. ३६१५७	ह्री २. ३६१९४
हृषीक ३. ३६१२०३	" १. ६११६९	ह्रीक १. २. ३. ६११०१
हृषीकेश १. १११११	हैषा २. २११६	ह्रीण १. २. ३. ५३१५१
हृष्ट १. २. ३. ५३१९९	है ४. ८८१२	ह्रीत १. २. ३. ५३१५१
" १. २. ३. ८१११३	हैमकूट ३. ३११६	हैषा २. २११६
हृष्टि २. ३६१८८	हैमवत ३. ३११३	ह्लाद १. ३६१८८
है ४. ८८१२	हैमवती २. ८११११	ह्लादिनी २ ब. २११५९
हैका २. ४१११२७	हैयङ्गवीन ३. ३६१३८	
हैति १. २. ३६११५७	हैड ३. ५११६२	

समाप्तश्चाऽयं ग्रन्थः

जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

(स्थापित सन् १९७१)

१. **रासपञ्चाध्यायी-श्रीसुबोधिनी**। सचित्र (वेदान्त-शुद्धाद्वैत) महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य विरचिता श्रीमद्भागवत-दशमस्कन्ध-रासपञ्चाध्यायी की हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार जगन्नाथ (मुनमुन जी) चतुर्वेदी। शुभाशंसक गोस्वामी श्री दीक्षित जी महाराज।
२. **वैजयन्तीकोषः** (कोश)। यादव प्रकाशचार्य विरचित। सम्पादक-हरगोविन्दशास्त्री
३. **नाटकलक्षणरत्नकोशः** (कोश)। सागर नन्दी प्रणीत। 'प्रभा' हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री
४. **राजतरङ्गिणी जोनराजकृत**। हिन्दी अनुवाद। व्याख्याकार-रघुनाथ सिंह
५. **कालिकापुराणम्** (पुराण)। संपादक-श्रीविश्वनारायण शास्त्री। प्रस्तावना-बलदेव उपाध्याय
6. **New Light on the Sun Temple of Konarka.**  
Four unpublished Manuscripts relating to Construction, History and Ritual of this Temple. Translated into English and annotated by Alice Boner and Sadāśiva Rath Sharma with Rajendra Prasad Das. Introduction by Alice Boner. Technical Drawings by Sadāśiva Rath Sharma. With many Plates and Illustrations.
7. **Kāvya-prakāśa of Mammata-bhaṭṭa** - काव्यप्रकाश मम्मट-भट्ट (Kāvya). An Introduction to Indian Literary criticism. By S. N. Ghoshāl - Śāstri  
**Part I** Principle, Technique and History of Literary Criticism.  
**Part II** The Kāvya-Prakāśa the central work of Indian Literary Criticism, with its Commentaries Rasa-Prakāśa and the critical explanation of the Texts.
८. **भास्करोदया**। तर्कसंग्रहदीपिका-प्रकाशस्य (नीलकण्ठ्याः) व्याख्या पदवाक्य-प्रमाणपारावारीणनीलकण्ठभट्टसूनुपण्डितेन्द्र श्रीमल्लक्ष्मी- नृसिंहशर्मकृत। म. म.ज्ञोपाख्यपण्डित श्रीमुकुन्दशर्मणा संस्कृता-परिष्कृता-संशोधिता च।
९. **तिलकमञ्जरी**। श्रीधनपालविरचिता। म. म. पण्डितशिवदत्तशर्मतनूज पण्डितभवदत्तशास्त्रिणा, मुम्बापुरवासिपरबोपाहव पाण्डुरङ्गात्मज काशिनाथशर्मणा च संशोधिता।
१०. **काव्यमाला**। सम्पादक-पं. दुर्गा प्रसाद तथा काशीनाथ पाण्डुरङ्गपर्व तथा केदारनाथ वासुदेव शास्त्री पणशीकर। (सम्पूर्ण सेट १-१४ भाग)
११. **संस्कृत साहित्य का इतिहास**। डॉ० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'
१२. **सेतुबन्धम्** महाकवि प्रवरसेन विरचित। हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित। डॉ. आशाकुमारी



Mahākavi Pravarsena's

सेतुबन्धम्

**Setubandham**

*Text with Hindi & English Translation*

Dr. Asha Kumar

'Setubandham' also named as 'Rāvaṇavaho', 'Dahamuhavaho' and 'Rāmasetu' is the oldest and 'most monumental court epic' of Mahārāṣṭrī Prakrit. It is one of the most beautiful works of not only Prakrit but entire ancient Indian literature. It is only its poetic perfection that lead not only its erudite commentator Rāmdāsa Bhūpati but some other scholars also to attribute its authorship to kavikulaguru Kālidāsa. Though the internal and external evidences are enough to prove that it has been composed by Pravarsena II of the Vākāṭaka dynasty.

The perspicuity of language, the picturesque and colourful style of descriptions, portrayal of not only external actions or gestures but also the innermost feelings of all the living beings, excellent uses of figures of speech, highest flight of poetic fancy and above all the aesthetic perfection of the epic are the features that are enough to attract astonished appreciation of aesthets be he Ācārya Daṇḍī or Vāṇabhaṭṭa.

Unfortunately this marvellous epic could not get the attention of modern day scholars which it deserves. Absence of any fully annotated bilingual translation was the main force behing presentation of this work. The meticulous translation and annotations will particularly be useful for non Prakrit knowing scholars and students who intend to relish the beauties of Pravarsena's superb poesy.



## जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

(स्थापित सन् १९७१)

रासपञ्चाध्यायी-श्रीसुबोधिनी। सचित्र (वेदान्त-शुद्धाद्वैत) महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य विरचिता श्रीमद्भागवत-दशमस्कन्ध-रासपञ्चाध्यायी की हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार जगन्नाथ (मुनमुन जी) चतुर्वेदी। शुभाशंसक गोस्वामी श्री दीक्षित जी महाराज

वैजयन्तीकोषः (कोश)। यादव प्रकाशाचार्य विरचिता। सम्पादक-हरगोविन्दशास्त्री

नाटकलक्षणरत्नकोशः (कोश)। सागर नन्दी प्रणीता। 'प्रभा' हिन्दी व्याख्या।

व्याख्याकार-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री

राजतरङ्गिणी जोनराजकृत। हिन्दी अनुवाद। व्याख्याकार-रघुनाथ सिंह

कालिकापुराणम् (पुराण)। संपादक-श्रीविश्वनारायण शास्त्री। प्रस्तावना-बलदेव उपाध्याय

**New Light on the Sun Temple of Konarka.** Four unpublished Manuscripts relating to Construction, History and Ritual of this Temple. Translated into English and annotated by Alice Boner and Sadāśiva Rath Sharma with Rajendra Prasad Das. Introduction by Alice Boner. Technical Drawings by Sadāśiva Rath Sharma. With many Plates and Illustrations.

**Kāvya-prakāśa of Mammata-bhaṭṭa** - काव्यप्रकाश मम्मट-भट्ट (Kāvya).

An Introduction to Indian Literary criticism. By S. N. Ghoshāl - Śāstrī  
Part I Principle, Technique and History of Literary Criticism.

Part II The Kāvya-Prakāśa the central work of Indian Literary Criticism, with its Commentaries Rasa-Prakāśa and the critical explanation of the Texts.

भास्करोदया। तर्कसंग्रहदीपिका-प्रकाशस्य (नीलकण्ठ्याः) व्याख्या पदवाक्यप्रमाणपारावारीण-नीलकण्ठभट्टसूनूपण्डितेन्द्र श्रीमल्लक्ष्मीनृसिंहशर्मकृता। म. म.झोपाख्यपण्डित श्रीमुकुन्दशर्मणा संस्कृता-परिष्कृता-संशोधिता च।

तिलकमञ्जरी। श्रीधनपालविरचिता। म. म. पण्डितशिवदत्तशर्मतनूज पण्डितभवदत्तशास्त्रिणा, मुम्बापुरवासिपरबोपाहव पाण्डुरङ्गात्मज काशिनाथशर्मणा च संशोधिता।

काव्यमाला। सम्पादक-पं. दुर्गा प्रसाद तथा काशीनाथ पाण्डुरङ्गपर्व तथा केदारनाथ वासुदेव शास्त्री पणशीकर। (सम्पूर्ण सेट १-१४ भाग)

संस्कृत साहित्य का इतिहास। डॉ० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

सेतुबन्धम्। महाकवि प्रवरसेन विरचिता। हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित। डॉ. आशाकुमारी

शाखा :

**चौखम्भा बुक्स**

**Chaukhambha Books**

5 UA, Jawahar Nagar (Behind Jawahar Nagar Post Office)  
Malkaganj Chowk, Delhi-110007 (India)